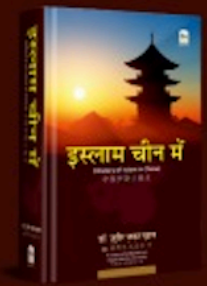
EDITION: 2026

ISLAM CHEEN MEIN

By:
Dr. Zubair Zafar Khan





Dr. Zubair Zafar Khan is a distinguished academic and researcher serving as Assistant Professor in the Department of Islamic Studies at Aligarh Muslim University, India, known for his prolific scholarship and academic leadership. With 10 books, 44 research articles (including 20 ISSN-indexed and 9 UGC-listed journals), and 2 major translation works to his credit, his contributions have earned wide recognition, including scholarly works published by others based on his research with 04 citations on google scholar. A reviewer for 15 academic journals, he has evaluated over 60 theses as an external examiner and reviewed 124 research papers, reflecting his strong academic credibility. Actively engaged in the global academic community, he has attended one international conference abroad (Malaysia), 12 international conferences in India, 13 national conferences, 4 national workshops, and delivered 2 invited lectures, making him a respected voice in contemporary Islamic studies.

	Other books by Dr. Zubair Zafar Khan	Price	Available on
1	Thought of Maulana Abul Hasan Ali Nadwi	550	amazon.in
2	Some inspiring stories of coexistence and cooperation between Muslims and Jews	2494	amazon.in
3	Muslim Progress Index A	500	drzubairzafar@gmail.com
4	Cheen aur Islam (Urdu)	500	drzubairzafar@gmail.com
5	Insaan Ki Teen Yaddashten (Urdu)	100	drzubairzafar@gmail.com
6	Islam Cheen Mein (Urdu)	1250	drzubairzafar@gmail.com
7	Tawaifon ki Toba ke Ajeeb o Ghareeb Waqeaat (Urdu)	100	drzubairzafar@gmail.com

FBD
فردین بک ڈپو
FARDEEN BOOK DEPOT
Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2
Ph : 011-23289786, 011-23289159, 011-23278956, 011-23279998
NASIR KHAN : +91-9250963999 Mob : +919560070828
E-mail : faridbookcorner@gmail.com Whatsapp : +91-9717960328
₹ 1100/-
ISBN: 978-81-984270-7-6

इस्लाम चीन में (History of Islam in China) 中国伊斯兰教史

डॉ. ज़ुबैर ज़फ़र ख़ान
Dr. 祖拜尔 扎法尔 汗



इस्लाम चीन में

(History of Islam in China)

中国伊斯兰教史

डॉ. ज़ुबैर ज़फ़र ख़ान
Dr. 祖拜尔 扎法尔 汗
drzubairzafar@gmail.com
Aligarh Muslim University
阿里格尔穆斯林大学

इस्लाम चीन में

(History of Islam in China)

中国伊斯兰教史

डॉ. ज़ुबैर ज़फ़र ख़ान

DR。 祖拜尔扎法尔汗

drzubairzafar@gmail.com

Aligarh Muslim University

阿里格尔穆斯林大学

अल्लाह के नाम से, जो अत्यधिक दयालु और कृपा वान है|

मेरे वालिद जनाब ज़फ़र अहमद ख़ान साहब के नाम

Title	इस्लाम चीन में
Title in English	Islam Cheen Mein
Author	Dr. Zubair Zafar Khan
Institution	Department of Islamic Studies, Aligarh Muslim University
Language	Hindi
Year of Publishing	2026
ISBN	9788198427076
No. of Pages	824
Publisher	Fardeen Book Depot, Corp. Off. 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2, 110006. WhatsApp: 9717968328
Price	INR 1100
Copyright	© Author
To buy please contact:	
Email	drzubairzafar@gmail.com
Mobile/Whatsapp	9911054633

प्रस्तावना

समीक्षाधीन किताब में चीन के डेढ़ हजार वर्षों के इतिहास को शामिल किया गया है, जिसमें लगभग 25 मिलियन मुस्लिम जनसंख्या की परिस्थितियों तथा इस्लामी सभ्यता के विकासात्मक चरणों को बहुत विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक न केवल इस्लामी इतिहास को कवर करती है, बल्कि इसमें चीन की सांस्कृतिक विविधता, लोक रीति-रिवाज और परंपराएं, जनजातीय जीवन, कुश्ती और मार्शल आर्ट सहित पारंपरिक खेल, साथ ही सरकारों और आक्रमणकारी राष्ट्रों के उत्थान और पतन के ऐतिहासिक विवरण भी शामिल हैं। इसमें विभिन्न धर्मों और मान्यताओं, क्षेत्रीय साहित्यिक कृतियों और चीन में इस्लामी और राजनीतिक नेतृत्व के विकास सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई है। लेखक का गहन शोध 200 पुस्तकों, 65 पत्रिकाओं और मैगजीनों के अलावा अनेक प्रतिष्ठित वेबसाइटों और समाचार पत्रों के उपयोग से स्पष्ट है, साथ ही साथ चित्रों का विवरण, प्रयास की व्यापकता और गहराई को और अधिक उजागर करती है। जिसका संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार किया जा सकता है।

इस्लाम का उदय चीन में सातवीं शताब्दी ईस्वी के बीच हुआ, जब यह शुद्ध धर्म अरब व्यापारियों और मिशनरियों के माध्यम से चीनी मुख्य भूमि तक पहुंचा। यह वह धन्य काल था जब टांग राजवंश का तीसरा राजा गाओज़ोंग सिंहासन पर था, जो तीसरे खलीफा हजरत उस्मान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) का समकालीन था। इस्लामी सेनाओं का प्रारंभिक दल 713 ई. में कुतैबा बिन मुस्लिम के नेतृत्व में शिनजियांग के काश्गर शहर तक पहुंचा, हालांकि उन्हें शीघ्र ही वापस बुला लिया गया।

चंगेज खान के आक्रमणों और युआन साम्राज्य की स्थापना ने चीनी इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। चंगेज खान ने चीन की सत्ता की बागडोर अपने पोते कुबलाई खान को सौंप दी, जिसके शासनकाल में चीन 12 प्रांतों में विभाजित था। आश्चर्य की बात यह है कि इनमें से 8 प्रांतों में मुस्लिम गवर्नर नियुक्त किये गये, जबकि अन्य 4 प्रांतों के उप-गवर्नर भी मुस्लिम थे। कुबलाई खान के शासनकाल की विस्तृत झलक प्रसिद्ध यात्री मार्को पोलो और इब्न बतूता के यात्रा वृत्तांतों में मिलती है। मिंग राजवंश (1368 ई. से 1644 ई.) को चीन में इस्लाम का स्वर्ण युग माना जा सकता है, जिसमें मुसलमानों ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।यह किताब चीन में मुसलमानों के संघर्ष की कड़वी वास्तविकताओं को भी उजागर करती है। शिया-सुन्नी दंगों और सूफी आंदोलनों के आपसी संघर्ष के अलावा, इसमें मातृभूमि की रक्षा के लिए चीन के मुस्लिम जनरलों और सैनिकों के प्रयास भी दर्शाये गये हैं।

चीन-जापान युद्ध के दौरान मुसलमानों की बहादुरी और देशभक्ति की कहानियां भी शामिल हैं। इन बलिदानों को मुस्लिम विद्वानों ने जिहाद घोषित कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप मुसलमानों के नरसंहार, महिलाओं के साथ अभद्रता और चीन-जापान युद्ध के दौरान उनकी क्रूर हत्या की भयावह और चौंकाने वाली तस्वीरें सामने आईं, जो इस कार्य का हिस्सा हैं।इसमें कम्युनिस्ट नेता माओ जेडोंग की उपलब्धियों और साम्यवाद के प्रखर विरोध में मुस्लिम विद्रोहों का भी विस्तृत उल्लेख है। माओ के शासनकाल सभी धार्मिक मूल्यों पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए गए थे। नमाज़, कुरान और अज़ान पर प्रतिबंध तथा मस्जिदों पर ताला लगाने जैसे विवरण पाठक को एक कठिन और दर्दनाक दौर की याद दिलाते हैं। हालाँकि, माओ की मृत्यु के बाद, डेंग

शियाओपिंग के शासनकाल के दौरान, इन घटनाओं के लिए माफ़ी मांगी गई और धार्मिक मूल्यों और अनुष्ठानों की स्वतंत्रता बहाल की गई। यह अवधि आंतरिक मुस्लिम मतभेदों के परिणामस्वरूप पहली और दूसरी पूर्वी तुर्किस्तान लोकतांत्रिक सरकारों [(1932-1934) और (1944-1946)] के पतन के बाद एक नई सुबह का अग्रदूत साबित हुई। आज, इस्लाम चीन में पाँच मान्यता प्राप्त धर्मों (बौद्ध धर्म, ताओवाद, इस्लाम, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकवाद) में से एक है। धार्मिक स्वतंत्रता की बहाली के बाद, लोगों ने मस्जिदों में सामूहिक रूप से नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया, टोपी, दाढ़ी, बुर्का और मदरसा शिक्षा को पुनर्जीवित किया गया। चीन में कुल 56 जातीय समूह हैं, जिनमें से 10 मुस्लिम हैं, जिनमें हुई, उइग़ूर, कज़ाख, डोंगशियांग, किर्गिज़, सालार, ताजिक, उज़्बेक, बोनान और तातार शामिल हैं।
मेरा मानना है कि इस पुस्तक का चीनी, अंग्रेजी और अरबी में अनुवाद और प्रकाशन निश्चित रूप से एक अच्छा कदम होगा। अंत में लेखक डॉ. ज़ुबैर ज़फ़र ख़ान को इस सराहनीय कार्य के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ और प्रार्थना व्यक्त करता हूँ कि अल्लाह उनकी इस पुस्तक को सफलता और लोकप्रियता प्रदान करे।

Prof. Akhtarul Wasey
Professor Emeritus
Department of Islamic Studies
Jamia Millia Islamia
New Delhi, 110025

अभिस्वीकृति

सभी प्रशंसाएँ अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए हैं जिसने इस ब्रह्मांड को बनाया और हम मनुष्यों को इसमें सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया। यह कार्य उसी की कृपा और देन से सम्पन्न हुआ और आपके हाथ में जो पुस्तक "इस्लाम चीन में" है वह ईश्वर की कृपा का परिणाम है। क्योंकि जीवन उसी का दिया हुआ है, यदि जीवन ही साथ न दे तो मनुष्य एक शब्द भी नहीं लिख सकता। उसके बाद, शांति और कृपा हो उसके दूत हजरत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ पर, जिनके माध्यम से अल्लाह ने अपना मार्गदर्शन हमारे लिए भेजा और उन्हें हमारे लिए एक उदाहरण बनाया। उसके बाद, मैं अपने माता-पिता श्री ज़फ़र अहमद खान साहब और नाज़िमा परवीन साहब का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे बहुत करुणा और दयालुता के साथ पाला और शिक्षित किया। इसके बाद मैं अपनी नानी मरहूम बदर जहां साहिबा का आभारी हूं, जिनकी छाया में मैंने अपना बचपन बिताया और नर्सरी से पीएचडी तक की शिक्षा पूरी की। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खान, भी आभार के पात्र हैं, जिन्होंने ऐसे महान संस्थान की स्थापना की और उसके लिए बलिदान दिया और लाखों लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला, और विश्वविद्यालय प्रशासक जो इस संस्थान को अच्छी तरह से चला रहे हैं, जैसे कि कुलपति प्रोफेसर नईमा गुलरेज़, डीन सोशल साइंसेज प्रोफेसर इकराम हुसैन साहब, इस्लामी अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर अब्दुल हमीद फ़ाज़िली आदि। उसके बाद, मैं अपने शिक्षकों और सहकर्मियों जिनकी शिक्षा और प्रशिक्षण से शैक्षणिक क्षेत्र से परिचित हुआ और शिक्षा की सेवा करने का अवसर मिला। जैसे प्रोफेसर अख्तरुल वासे साहब, यासीन मज़हर सिद्दीकी साहब, अब्दुल अली साहब, आजम क़ासमी साहब, सैय्यिद अहसन साहब, जफरुल इस्लाम

साहब, इस्माइल साहब, उबैदुल्लाह फ़हद साहब, एहसानुल हक साहब, आदम मलिक खान साहब, अब्दुल मजीद खान साहब, मरहूम तौकीर साहब, ज़ियाउद्दीन मलिक साहब, एजाज़ अहमद साहब, निघत रशीद साहिबा, बिलाल कट्टी साहब, इम्तियाज़ुल हुदा साहब, अर्शी, लुबना नाज़, रहमतुल्लाह, आयशा सिद्दीका आदि शामिल हैं।

इस अवसर पर, मैं जामिया मिल्लिया इस्लामिया के साथियों जनाब रज़ी कमाल साहब, इक्तेदार मुहम्मद खान साहब, इसहाक़ साहब, सैयद शाहिद अली साहब, जुनैद हारिस साहब, अरशद साहब, मुफ्ती मुश्ताक साहब, मुहम्मद खालिद खान साहब, उमर फारूक साहब, खुर्शीद आफ़ाक आदि को नहीं भूल सकता। इसके अलावा हमारे विभाग के गैर-शिक्षण कर्मचारी जो हमेशा मदद के लिए तैयार रहते हैं जैसे डॉ. मुहम्मद परवेज़ साहब, अली सादिक नक़वी, मुहम्मद आरिफ़, शाह नवाज़ और पुस्तकालय कर्मचारी अनवारुद्दीन बल्खी साहब, सैयद अनीस साहब, मुहम्मद अनीस साहब, बदर-उल-ज़मान साहब, नज़ीर साहब, कल्लू आदि।

मेरे दादा; हाजी अब्दुल बासित खान, नाना; मेंहदी हसन, मामू; अनवर मेंहदी, अख्तर मेंहदी, मोसी; नजमा, अंजुम, तबस्सुम, मुमानियां; शगुफ़ता, कहकशां, ताया; रईस अहमद खान, फूफियां; कौसर, रानी, परवीन भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस अवसर पर मैं अपने भाई-बहनों को भी नहीं भूलना चाहता जिनके नाम हैं फ़ातिमा, जुनैद, सफ़िया, आसिया, उबैद, ख़ुबैब, सादिक़ा, फ़ुजैल और मामू ज़ाद भाई-बहन जिनके साथ मैंने अपना बचपन बिताया, उमैर, रुकय्या, उज़ैर, हलीमा, सईद, उसैद, जुवेरिया, उवैस, वलिया, लबीबा, अरीबा आदि। उन सैकड़ों लेखकों को धन्यवाद देना अनिवार्य है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में मदद ली गयी है। इसके अलावा, मैं इंटरनेट विशेषज्ञों, विशेषकर गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, आर्काइव, विकिपीडिया और www.chinaknowledge.de जैसी वेबसाइटों का भी आभारी हूं, जिन्होंने आधुनिक संचार प्रणाली विकसित की है और लेखक ने इस विषय से संबंधित सैकड़ों लेख,

किताबें और ज्ञान सामग्री डाउनलोड की हैं। इस पुस्तक को पूरा करने में कई लोगों और संस्थाओं का सहयोग रहा, लेकिन उनका नाम नहीं बताया जा सका, मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूं। यह लेखन मेरी जीवनसाथी हुमैरा खातून और बच्चों साद, उमर और सुंदुस को धन्यवाद दिए बिना अधूरा होगा जिन्होंने मेरा पूरा समर्थन किया। मैं उन पाठकों को भी पहले से धन्यवाद देता हूं जो इस पुस्तक को पढ़ने के लिए अपना कीमती समय निकालेंगे। पुस्तक पाठकों को विषय के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करने का प्रयास करती है ताकि चीन में मुसलमानों के इतिहास की तस्वीर स्पष्ट हो सके। यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि टाइपिंग की गलतियाँ न हों, लेकिन यदि पाठकों को कोई गलती मिले तो कृपया सूचना दें। अंत में, मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना करता हूं कि वह इस पुस्तक को लोकप्रियता प्रदान करे और इसे अपनी खुशी के लिए स्वीकार करे।

आमीन

डॉ. ज़ुबैर ज़फ़र ख़ान

前言

中国是仅次于印度的第二人口大国，拥有独特的文化。从语言上可以看出，中国是最古老的文明之一。汉语被称为普通话，它是最古老的语言之一，它不像其他语言那样有字母表，而是有不同的形状符号。它是人类开始书写时的语言之一，他曾经为一切事物制作不同的符号。除此之外，中国还做出了许多伟大的发明和发现，造纸、丝绸、印刷、火药、车轮、茶叶、足球等，使全世界受益。但中国的历史文化对外界来说仍然是陌生的，因为它与外界的接触很少。然而，伊斯兰教在中国唐朝统治初期就进入了中国。 随后是宋、元、明、清等各个政府，以及民主政府，最后是仍然统治中国的共产主义政府。在这些时期，穆斯林经历了不同的阶段，有时与政府关系密切，在政府中担任要职，有时又受到政府的歧视和训斥。 《伊斯兰教在中国》一书试图记录穆斯林的历史。虽然以前也有关于中国伊斯兰历史的书籍，但本书试图更深入地介绍它，并用通用语言来呈现。

祖拜尔· 扎法尔· 汗
阿里格尔穆斯林大学
印度

आवश्यक स्पष्टीकरण

सभी फ़ुटनोट अंग्रेजी भाषा में हैं। ग्रंथ सूची (Bibliography) में पुस्तकों और लेखों का पूरा विवरण दिया गया है। पुस्तकों की सूची अंग्रेजी वर्णमाला क्रम में व्यवस्थित है। पुस्तकों की सूची में लेखक के नाम के पहले शब्द के आधार पर किसी भी कृति का विवरण पाया जा सकता है।

- कहीं पर ब्रैकट में 'r.' है इस का मतलब शासनकाल है।
- कहीं पर ब्रैकट में 'h.' है इस से भी शासनकाल मुराद है।
- कहीं पर ब्रैकट में 'L.' है इस से मुराद जीवन काल है।
- कहीं पर ब्रैकट में 'd.' इसका अर्थ है मृत्यु की तारीख या मृत्यु का साल।

Table of Contents



अध्याय 1
इस्लाम चीन में

第一章
伊斯兰教在中国

Chapter One
Islam in China

चीनी इतिहास की एक संक्षिप्त रूपरेख

चीनी इतिहास की शुरूआत हज़ारों साल पहले पीली नदी Yellow river के किनारे हुई। प्राचीन चीनी इतिहास को कई युगों में बाँटा जाता है जैसे पत्थरों का पुराना दौर Palaeolithic age, पत्थरों का नया युग Neolithic age और कांस्य युग Bronze Age वग़ैरह। इस दौर में कई सभ्यताएं गुज़री हैं जैसे यांगशाओ सभ्यता, बानपो, लियांगजू और लौंग शान सभ्यताएं वग़ैरह. Yangshao, Banpo, Liangzhu and Longshan cultures etc. उनके बाद चीनी बादशाहत का दौर शुरू होता है।

इस में सबसे पहले तीन सम्राट और पाँच राजाओं Three Sovereigns and Five Emperors का युग आता है। जिनमें सबसे मशहूर पीला शहंशाह Yellow Emperor है जो चीनी सभ्यता का जनक माना जाता है। बाद के ज़्यादातर राजा उसी से अपना वंश जोड़ते थे और उसी के अंदाज में पीले कपड़े पहनते थे। लेकिन इन प्राचीन राजाओं के अस्तित्व को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ लोगों का कहना है कि यह काल्पनिक पात्र हैं और कुछ का कहना है कि इनका अस्तित्व वास्तविक है। याद रहे चीन में राजा पीले कपड़े पहनता था और उस के आला अहलकार जामनी Purple कपड़े पहनते थे। लेकिन सबसे पहला राजवंश Dynasty जो चीन में स्थापित हुआ वह शिया हुकूमत (2070–

1600 BC) Xia Dynasty थी जिसका अस्तित्व इतिहासकारों द्वारा वास्तविक माना जाता है और जिसके अवशेष भी खोजे गए हैं। शिया हुकूमत के बाद शांग हुकूमत (1600–1046 BC) Shang Dynasty आई उसके के बाद ज़ाओ हुकूमत Zhou dynasty स्थापित हुई।

ज़ाओ हुकूमत सबसे से लंबा समय चलने वाली हुकूमत है जिसका ज़माना 1046 BC–256 BC तक है यानी 790 साल। पहली ज़ाओ हुकूमत 1046–771 BC तक रही उस को पश्चिमी ज़ाओ Western Zhou कहा जाता है। उस के बाद दूसरी ज़ाओ हुकूमत क़ायम हुई जिसको पूर्वी ज़ाओ Eastern Zhou कहा जाता है उस का ज़माना 770–256 BC तक माना जाता है। लेकिन अपने पूरे काल में ज़ाओ राजाओं के हाथ में सत्ता नहीं रही, बल्कि एक समय में उसकी जागीरें (रियासतें) उस से अधिक शक्तिशाली हो गईं, जिसे वसंत और शरद काल Spring and Autumn Period (770 to 403 BC) कहा जाता है। उस दौर में ज़ाओ हुकूमत 100 से ज़्यादा छोटी बड़ी रियासतों में बट गई। जिनमें, जिन् रियासत (11^{th} century BC–369 BC) Jin State सबसे ताक़तवर रियासत बन कर उभरी लेकिन कुछ वक़्त बाद उस का भी पतन होने लगा और अख़ीर में वो 403 BC में तीन रियासतों में बट गई जिनके नाम हैं हान, ज़ाओ (यह रियासत अलग है जबकि ज़ाओ हुकूमत अलग थी) और वी Han, Zhao and Wei.

जिन् रियासत के विभाजन (403 BC) को वसंत और शरद काल का अंत और युद्धरत राज्यों का काल (403–221 BC) Warring States period की शुरुआत माना जाता है। इन दोनों कालों में यह चीज़ अंतर पैदा करती है कि वसंत और

शरद काल में सारी रियासतें ज़ाओ को अपना संरक्षक मानती थीं और ज़ाओ हुकूमत केंद्रीय हुकूमत थी हालाँकि सत्ता की शक्ति उस वक़्त भी ज़ाओ के पास नहीं थी। लेकिन युद्धरत राज्यों के काल में रियासतों ने ज़ाओ की अधीनता से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली और अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। युद्धरत राज्यों के काल (बरसर पैकार रियासतों के दौर) में बड़ी रियासतों ने छोटी रियासतों को जीतकर कर अपने में मिलाना शुरू कर दिया। इस लिए अख़ीर में सारी छोटी रियासतें ख़त्म हो गईं और सिर्फ 7 बड़ी रियासतें बची जिन को 7 युद्धरत राज्य (403 to 221 BC) Seven Warring States कहा जाता है। लेकिन उनमें ज़ाओ Zhao और चिन Qin दो सबसे शक्तिशाली रियासतें थीं, जिन के बीच वर्चस्व की लड़ाई शुरू हो गई, बिल-आख़िर 260 BC में चिन ने ज़ाओ को चांगपिंग की जंग Battle of Changping में निर्णायक रूप से हरा दिया। चांगपिंग की जंग इस लिए उस युग का एक मील का पत्थर माना जाता है जिसमें चिन ने ज़ाओ को हरा दिया और चिन सबसे शक्तिशाली रियासत बन कर उभरी और उसने एक एक कर के बाक़ी रियासतों को भी हरा कर अपनी हुकूमत में मिला लिया। इस तरह पूरा चीन पहली बार 221 BC में एक साम्राज्य के तहत एकजुट हुआ, और वो चिन साम्राज्य Qin Empire (221 BC–206 BC) कहलाया। चिन के राजा ने चिन शी हुआंग Qin Shi Huang का लक़ब इख़्तियार किया जिसका मतलब होता है चिन का पहला शहंशाह, उस को हुआंगडी Huangdi भी कहा जाता है। इसी लिए ईरानी लोग उस देश को चीन कहते हैं और अरबी में 'च' अक्षर नहीं होता, इस लिए अरब उस को 'अल-

सीन' कहते हैं। लेकिन बहैसीयत साम्राज्य चिन सिर्फ 15 साल बाक़ी रही। इसी के दौर में चीन की महान दीवार Great Wall of China के बड़े हिस्से का निर्माण किया गया।

हुआंगडी के बाद देश फिर से अफ़रा-तफ़री का शिका रहो गया जिसके बाद हान साम्राज्य Han Empire (202 BC–AD 9 CE) क़ायम हुआ। हान हुकूमत चीन की सबसे लोकप्रिय हुकूमत मानी जाती है इसी लिए चीनी लोग अपने आपको गर्व से 'हान' कहते हैं। हान हुकूमत ने कन्फ्यूशियस मत Confucianism को बढ़ावा दिया, इसी लिए हान जाति के लोग ज़्यादातर कन्फ्यूशियस मत Confucianism या उस की एक शाख़ा डाओ या टाओ मत Daoism के पैरोकार हैं। लेकिन बाद में हान हुकूमत का भी पतन हो गया और वांग मांग Wang Mang नाम के एक हान अफ़सर ने हान सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपनी नई शिन हुकूमत Xin Dynasty (9 CE–23 CE) स्थापित की। लेकिन लोग उस को पसंद नहीं करते थे इस लिए उस को ख़त्म कर के दोबारा हान हुकूमत स्थापित की लेकिन उस को पूर्वी हान Eastern Han (25–220 CE) कहा गया जब कि पहली को पश्चिमी हान Western Han कहा गया।

पूर्वी हान भी बाद में गृहयुद्ध का शिकार हो कर ख़त्म हो गई और उस के बाद फिर से देश में अफ़रा-तफ़री फैल गई। हान हुकूमत टूटने के बाद तीन हुकूमतें बनीं जिन के नाम हैं काओ वी, शू हान और पूर्वी वू, Cao Wei, Shu Han, and Eastern Wu. उनमें सबसे ताक़तवर काओ-काओ Cao Cao की काओ वी हुकूमत थी लेकिन उसी हुकूमत के एक वज़ीर सीमा यान Sima Yan ने बाद में

वी हुकूमत का तख़्ता पलट कर अपनी हुकूमत स्थापित की जिसको जिन् हुकूमत Jin Dynasty (266–316 CE) का नाम दिया। इस के बाद दोबारा जिन हुकूमत क़ायम हुई जिसको पूर्वी जिन (317–420 CE) Eastern Jin कहा जाता है। पूर्वी जिन के बाद फिर से चीन की हुकूमत बिखर गई और चीन 16 छोटी छोटी हुकूमतों में बट गया। उनको 16 बादशाहतें Sixteen Kingdoms कहा जाता है। उनका ज़माना 304 to 439 CE है। बाद में यह हुकूमतें दो हिस्सों में बट गईं जिनको उत्तरी और दक्षिणी हुकूमतें Northern and Southern dynasties (386–589 CE) कहा जाता है। अख़ीर में उनमें से 6 हुकूमतें बाक़ी रह गईं इस लिए इस युग को ६ हुकूमतों 6 dynasties का दौर कहा जाता है। उनका ज़माना 220–589 CE या 222–589 CE तक माना जाता है। उनमें सबसे अख़ीर में चेन हुकूमत (557–589 CE) Chen Dynasty बची जिसको बाद में स्थापित होने वाली सुई हुकूमत ने 589 CE में क़ब्ज़ा कर के अपनी हुकूमत में मिला लिया। सुई हुकूमत (581–618 CE) भी बहुत कम समय रही, उस के बाद टांग हुकूमत Tang Empire क़ायम हुई। टांग हुकूमत चीन की सबसे महान हुकूमतों में शुमार होती है जिसका ज़माना 618 to 907 CE तक है यानी 289 साल। इस में बीच में एक महिला शासक वू जेटियान Wu Zetian भी हुई जिसने अपनी हुकूमत का नाम ज़ाओ रखा लेकिन उस को वू ज़ाओ Wu Zhou dynasty कहा जाता है जिसका ज़माना 690-705 CE है, हालाँकि उस हुकूमत की वह इकलौती शासक थी। टांग हुकूमत के तीसरे राजा गाओज़ोंग Emperor Gaozong of Tang (628 683) के दौर में इस्लाम सबसे पहले चीन में दाख़िल

हुआ। टांग के ख़ातमे के बाद फिर देश में बहुत सी छोटी छोटी हुकूमतें क़ायम हो गईं जिस को पाँच ख़ानदानों और दस सल्तनतों का दौर Five Dynasties and Ten Kingdoms period कहा जाता है जिसका ज़माना 907-979 CE है। उनमें से एक बाद की ज़ाओ Later Zhou dynasty (951–960 CE) भी थी जिसके एक अहलकार ज़ाओ कुआँग यिन Zhao Kuangyin ने सत्ता पर क़ब्ज़ा कर के अपनी नई हुकूमत स्थापित की जिस का नाम सोंग हुकूमत रखा। बाद में सोंग हुकूमत (960–1279 CE) Song Empire ने सारी हुकूमतों को जीतकर कर अपनी हुकूमत में मिला लिया और फिर से चीन एक-बार एकजुट हो गया। लेकिन यह हुकूमत भी ख़त्म हो गई और नई सोंग हुकूमत स्थापित हुई जिसको दक्षिणी सोंग Southern Song (1127–1279 CE) कहा गया जब कि पहली को उत्तरी सोंग Northern Song कहा गया। उस के बाद जल्दी जल्दी हुकूमतें बदलती रहीं यहां तक कि चंगेज़ ख़ाँ ने चीन पर हमला कर के अपनी हुकूमत स्थापित की और अपने पोते क़ुबलाई ख़ां को सौंप दी। उस को युआन हुकूमत Yuan Dynasty (1271–1368 CE) कहा जाता है। उस के बाद दूसरी युआन हुकूमत क़ायम हुई जिसको उत्तरी युआन Northern Yuan (1368-1635 CE) कहा जाता है। उत्तरी युआन के बाद मिंग हुकूमत Ming Dynasty (1368–1644 CE) क़ायम हुई जब कि मंचूरिया के इलाक़े में बाद की जिन हुकूमत (1616–1636 CE) Later Jin क़ायम हुई, जिसने बाद में मिंग हुकूमत को भी जीत लिया और अपना नाम बदल कर चिंग हुकूमत Qing Dynasty (1636–1912 CE) कर दिया। मिंग सल्तनत में मुसलमान हुकूमत में बहुत प्रभाव रखते थे इसी लिए

मिंग दौर को चीन में इस्लाम का सुनहरी युग कहा जा सकता है। उसी हुकूमत के योंगले राजा ने एक मुसलमान अफ़सर ज़ेंग हा Zheng He को दूसरे देशों से अच्छे संबंध बनाने के लीए पानी के जहाज़ों का एक बेड़ा देकर यात्रा पर भेजा जो बहुत कामयाब रहा और इस को ज़ेंग हा की यात्राएं या अभियान Expeditions of Zheng He के नाम से जाना जाता है। मिंग हुकूमत को ख़त्म कर के चिंग हुकूमत क़ायम हुई। चिंग हुकूमत Qing Dynasty (1636–1912 CE) चीन की आख़िरी सल्तनत मानी जाती है जो 1912 CE में ख़त्म हुई। उस की वजह यह थी कि 1911 CE में चीन में सुन यातसेन Sun Yat-sen की अगुवाई में लोकतांत्रिक क्रांति आई जिसके बाद 1912 CE में चिंग राजा को सत्ता से बेदख़ल कर दिया गया और नई लोकतांत्रिक सरकार बनी जिसको बेयांग हुकूमत (1912–1928 CE) Beiyang Government कहा गया और उस का प्रमुख युआन शिकाई Yuan Shikai बना लेकिन बेयांग हुकूमत के ख़ातमे के बाद चीन फिर से छोटी छोटी हुकूमतों में बट गया जिनको क्लीक़ clique कहा जाता है। क्लीक़ का मतलब होता है 'मंडली' या ‘टोली’। उस दौर को जंगी सरदारों का युग Warlord Era (1916-1949) कहा जाता है। इसी दौरान 1937 CE में जापान ने चीन हर हमला कर दिया जिसको दूसरी चीन-ओ-जापान जंग Second Sino-Japanese War (1937–1945) कहा जाता है। उस दौर में चीन में दो पार्टियाँ सत्ता संघर्ष में लगी हुई थीं, एक लोकतांत्रिक पार्टी थी जो चीन में लोकतंत्र की स्थापना करना चाहती थी। इस पार्टी का नाम क्योमिनटांग Kuomintang (KMT, alternatively known as the Chinese Nationalist

Party) था और दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी Chinese Communist Party (CCP) थी। शुरू में क्योमिनटांग ज़्यादा शक्तिशाली थी जिसका नेतृत्व पहले सुन यातसेन (1866-1925 CE) कर रहे थे और उनके बाद चियांग काई शेक Chiang Kai-shek (31 October 1887 – 5 April 1975) उस के प्रमुख बने। जब कि कम्युनिस्ट पार्टी कमजोर थी जिस का नेतृत्व माओ ज़ेडोंग Mao Zedong (26 December 1893 – 9 September 1976) कर रहे थे। लेकिन माओ ज़ेडोंग ने (16 October 1934 – 22 October 1935) के दरम्यान पूरे देश का दौरा किया जिसको लॉग मार्च Long March कहा जाता है जिस की अगुवाई पहले ज़ांग गोटाओ Zhang Guotao (November 26, 1897 – December 3, 1979) कर रहे थे बाद में माओ ज़ेडोंग उस के नेता बने जिसकी वजह से माओ ज़ेडोंग की लोकप्रियता चीन में बहुत ज़्यादा बढ़ गई। उन्होंने डेमोक्रेटों पर विजय प्राप्त की और उन्हें हराकर 1949 ई. में चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार की स्थापना की, जबकि पराजित क्योमिनटांग ने चीन के एक द्वीप, फॉर्मोसा Formosa पर अपनी हुकूमत स्थापित की, जो बाद में ताइवान Taiwan कहलाया। तब से चीन पर कम्युनिस्ट पार्टी का शासन है।

चीन में इस्लाम: थोड़ा परिचय

चीन में इस्लाम का इतिहास बहुत लंबा और जटिल है जिसको पूरा यहां बयान नहीं किया जा सकता। इस लिए यहां पर संक्षेप में मुसलमानों के हालात बयान किए जा रहे हैं। चीन में इस्लाम सबसे पहले टांग हुकूमत के ज़माने में पहुंचा। उस वक़्त अरब में हज़रत उसमान रज़ी अल्लाहु अनहु का दौर-ए-ख़िलाफ़त

था। टांग हुकूमत सुई हुकूमत Sui Dynasty के बाद स्थापित हुई। टांग हुकूमत का शुमार चीन की सबसे महान हुकूमतों में होता है। उस का दौर 618 - 907 CE है। उस का संस्थापक ली युआन Li Yuan था जो राजा गाओज़ू Emperor Gaozu of Tang के लक़ब से तख़्तनशीन (राजसिंहासन पर बैठा/राजा बना) हुआ। उस की पहली राजधानी चांगान Chang'an थी बाद में लोयांग Luoyang हो गई। टांग हुकूमत के तीसरे राजा गाओज़ोंग Emperor Gaozong of Tang (628- 683) के दौर में इस्लाम सबसे पहले चीन पहुंचा। हालाँकि गाओज़ोंग का पिता ताइज़ोंग Emperor Taizong of Tang; हज़रत मुहम्मद ﷺ हज़रत अबूबकर और हज़रत उमर के दौर का शासक था। लेकिन उस के दौर में चीन में इस्लाम नहीं पहुंच पाया, लेकिन हज़रत उमर के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जब मुसलमानों ने ईरान पर विजय प्राप्त की तो ईरान के पराजित राजा यज़दगर्द III Yazdegerd III ने ताइज़ोंग से मुसलमानों के ख़िलाफ़ मदद मांगने अपने राजदूतों को भेजा, तो ताइज़ोंग ने उनसे मुसलमानों के बारे में कई प्रश्न किए, जिनका ज़िक्र आएगा।

इस्लाम पर किसी चीनी इतिहासकार का पहला लेखन

इस्लाम के बारे में किसी चीनी इतिहासकार का सब से पहला लेख जो मिलता है वो डू हुआन Du Huan का है। यह डू हुआन अपने साथियों के साथ तलास की जंग में चीन की सेना में शामिल था। लेकिन जब चीन हार गया, तो वह भी

अरबों द्वारा पकड़े गए चीनी कैदियों में से एक था और 751 CE [शायद यह पहले अब्बासी खलीफा अबुल अब्बास अल-सफ़्फ़ाह (25 जनवरी 750 - 8 जून 754) का शासनकाल होगा] में बग़दाद ले जाया गया जहां कुछ साल क़ैद में रहने और सैर करने के बाद वह 762 CE में चीन वापस हुआ और अपने हालात लिखे। उस के साथ कलाकार फ़ान शू Fan Shu और लियू ची Liu Ci भी थे और कपड़ा बुनने वाले ली वी Le Wei और लू ली Lu Li भी थे। शायद इन्हीं कलाकारों ने अरबों को काग़ज़ बनाना और रेशम बनना सिखाया होगा। क्योंकि डू हुआन ने अपने सफ़र (यात्रा) से वापसी पर टांग राजा को लिखा कि मैं ने अरबों को काग़ज़ बनाना और कपड़ा बुनना सिखा दिया है। हालाँकि डू हुआन का पूरा लेख बाक़ी नहीं रह सका लेकिन उस के लेख के कुछ अंश मिले हैं जो चीनी संस्थानों के इतिहास की किताब टोंगडियान Tongdian के खंड 192 और 193 में पाये गए हैं। यह टोंगडियान, डू हुआन के चचा डू हू (735-812 CE) Du Hu ने लिखी थी। उस को चेन युनरोंग Chen Yunrong ने 1911 CE में दोबारा एकत्रित किया। इस में डू हुआन ने, इन शब्दों में अरबों के बारे में बताया है। 'अरब और ईरानी आपस में मिल-जुल कर रहते हैं dashi bosi canza juzhi 大食波斯參雜居止। हम मोलिन Molin पहुंचे जो यरूशलेम के दक्षिण पश्चिम (शायद उत्तर पूर्व अफ्रीका) में है। यहां पर किसी को पहुंचने के लिए सिनाई रेगिस्तान Sinai Desert पार करना पड़ता है। यह यात्रा लगभग 2000 ली (1000 कि.मी) लंबी है। यहां के लोग काले हैं और उनके रीति-रिवाज अलग हैं। यहां चावल और दाल बहुत कम हैं और घास

और पेड़ नहीं हैं। यहां घोड़ों को सूखी मछलियाँ खिलाई जाती हैं और लोग गुमांग Gumang (ईरानी खजूर) खाते हैं। यहां पर मलेरिया बहुत आम है। कुछ शहरों को पार कर के एक ऐसा देश है जहां कई धर्मों के लोग पाए जाते हैं। एक अरब (मुसलमान) दूसरे बाज़नतीनी (ईसाई) और तीसरे ज़िमज़िम Zimzim (यहूदी)। यहूदी हराम रिश्ते बनाते Incest हैं (यानी क़रीबी रिश्ते की औरतों से शादी करते हैं)। इस मामले में वो सबसे ख़राब वहशी (विदेशी) हैं। अरब लोग क़ानून (शरीयत) की पासदारी करते हैं और पीड़ितों की मदद करते हैं। वो सूअर, कुत्ते, गधे और घोड़े का मांस नहीं खाते। वह अपने राजाओं और पूर्वजों का सम्मान नहीं करते (याद रहे चीनी लोग अपने राजाओं और पूर्वजों की पूजा करते हैं इसी को वो सम्मान करना समझते हैं), वह अंधविश्वास में विश्वास नहीं करते हैं, और सिर्फ आसमान (अल्लाह) के लिए क़ुर्बानी करते हैं, याद रहे चीन में आसमान और अल्लाह एक ही अर्थ में इस्तेमाल होता है। हफ़्ते में जुमे के दिन वो कोई कारोबारी मामला नहीं करते।[1] बाज़नतीनी आबादियों में बहुत अच्छे चिकित्सक पाए जाते हैं। जो दस्त (Diarrhoea) का बहुत अच्छा इलाज जानते हैं, वो बीमारी होने से पहले उस के बारे में बता देते देते हैं और वो दिमाग़ खोल कर जरासीम को निकाल देते हैं।[2] इस के अलावा उसने कूफ़ा के हालात बहुत विस्तार से बयान किए हैं जबकि बग़दाद अभी आबाद नहीं हुआ था।

एक दूसरे लेख में डू हुआन लिखता है 'यहां के मर्द और औरतें बहुत लंबे और ख़ूबसूरत हैं। वो साफ़ सुथरे कपड़े पहनते हैं और उनके तौर-तरीक़े नरम और आकर्षक हैं। जब महिलाएं घर से बाहर जाती हैं तो अपने चेहरे को हिजाब से

ढाँकती हैं। वो लोग ग़रीब हों या अमीर, दिन में पाँच बार आसमान (अल्लाह) की पूजा करते हैं। वो अपने त्योहारों पर मांस खाते हैं और जानवरों की क़ुर्बानी करना सम्मान की बात मानते हैं। वो चांदी की बैलट (कमरबंद) पहनते हैं जिसमें चांदी की छुरी सजी होती है। वह संगीत और शराब से परहेज़ करते हैं। जब वो झगड़ा करते हैं तो हातापाई नहीं करते। वहां इबादत (पूजा) के लिए एक हॉल (मस्जिद) होता है जहां हज़ारों लोग जमा होते हैं। हर हफ़्ते राजा पूजा में भाग लेता है और एक ऊंची कुर्सी पर बैठता है और लोगों के सामने धार्मिक नियम बयान करता है और कहता है, [मनुष्य का जीवन कठिनाइयों से भरा है और यही स्वर्ग का मार्ग है जो नहीं बदलेगा। यदि आप इनमें से कोई भी अपराध करते हैं जैसे बद-कारी, अपहरण, डाका, ओछी हरकत, गाली देना, अपनी तारीफ़ करना, ग़रीब को धोका देना, कमज़ोर पर अत्याचार, तो यह बहुत ही जघन्य अपराध हैं। जो जंग में दुश्मन के हाथ से मारे जाएंगे वो जन्नत में दोबारा ज़िंदा होंगे और जो दुश्मन को मारेंगे वो अमर सुख प्राप्त करेंगे]।[3]

इतिहासकार जिया डान का इस्लामी इतिहास का विवरण

टांग दौर का मशहूर इतिहासकार जिया डान Jia Dan जो राजा डेज़ोंग Dezong (r. June 12, 779 – February 25, 805 CE) का चांसलर भी था, उसने अपनी किताब में अरब का कुछ इतिहास लिखा है। वो लिखता है 'सूई हुकूमत के काई हुआंग दौर Kaihuang reign में[4] अरब में क़ुरैश क़बीले के एक शख़्स ने पुरानी

हुकूमत को बेदख़ल कर के अपनी हुकूमत क़ायम करली। उस के क़बीले में दो ख़ानदान थे। एक का नाम बनू मरवान (बनू उमय्या) और दूसरे का नाम हाशिम (बनू हाशिम) था। उस ख़ानदान में बाद में मुहम्मद ﷺ नाम का एक बहादुर और बुद्धिमान व्यक्ति हुआ जिसने लोगों में जागरूकता पैदा की। पूर्व और पश्चिम में उसने अपनी सेनाएँ भेजीं और 3000 ली भूमि पर सरकार स्थापित की।[5] सीरिया और दमिश्क पर क़ब्ज़ा किया। उसकी 14 वीं पीढ़ी में मरवान (मरवान बिन अलहकम, बनू उमय्या का आख़िरी बादशाह) नाम का एक राजा हुआ जिसने अपने भाई यज़ीद (यज़ीद बिन अल-वलीद) को मार डाला और अपना शासन स्थापित किया। वह बहुत क्रूर और अत्याचारी आदमी था इसलिए लोग उसे नापसंद करते थे। इस लिए ख़ुरासान के एक आदमी अबू मुस्लिम ख़ुरासानी ने नेक लोगों की एक फ़ौज तैयार की। जो लोग उनकी बात मानते थे वे काले कपड़े पहनते थे। इसके बाद उन्होंने तबला बजाते हुए पश्चिम की ओर मार्च किया और ज़ाब की जंग में मारवान को मार डाला और अबू अल-अब्बास अल-सफ्फाह को राजा बनाया, जो हाश्मी ख़ानदान से था। बनू उमय्या के दौर तक अरब लोग सफेदपोश (सफेद कपड़े पहनने वाले) डाशी कहलाते थे लेकिन अबू अल-अब्बास के दौर में वो स्याह पोश (काले कपड़े पहनने वाले) डाशी कहलाने लगे। याद रहे अरबों को चीन मे ताशी या डाशी कहा जाता था। उस के बाद उस का छोटा भाई अबू जाफ़र अलमंसूर राजा बना। ज़ीडे दौर Zhide reign (टांग राजा सूज़ोंग का दौर, 756–758 CE) में अलमंसूर ने अपने राजदूत चीन बेजे। जिसने शाही दरबार में तोहफ़े पेश किए। बाओयिंग दौर Baoying

reign 寶應 (टांग राजा डाईज़ोंग का दौर 762–763) में भी एक और सिफ़ारत अरब से आई। अलमंसूर के बाद उस का बेटा अल-महदी राजा बना। उस के बाद उसका बेटा अल-हादी उस के बाद उसका बेटा हारून अल-रशीद राजा बना।[6]

एक अरब चिकित्सक और ज़ुग़राफ़ियादां (geographer/ भूगोलिक) शरफ़ अल-ज़माँ अल-मरज़ावी (मृत्यु 1129 ई.) ने बयान किया है कि बनू उमय्या के आख़री दौर (740 CE) में ख़ुरासान के बहुत से शिया बनू उमय्या की प्रताड़ना से बचने के लिए चीन में आकर आबाद हुए। हालाँकि इस की पुष्टि किसी तारीख़ी हवाले से नहीं होती।

कहा जाता है कि एक अरबी प्रतिनिधि मंडल ने राजा से इस तरह से अपना इतिहास बताया कि 'ताशी (अरब लोग) क़बीलों की शक्ल में रहते थे। जिनमें सबसे बड़े क़बीले का नाम कूली ली Ku lie (क़ुरैश) था जिस पर ख़ानदानी सरदार हुकूमत करते थे। जिनको बाई यी दाशी Baiyi da shi (सफेदपोश अरब) कहा जाता था। इस के बाद कूली क़बीला दो टुकड़ों में बट गया। एक पैन नीमो हुआन Pen ni mo huan (बनू उमय्या) और दूसरा पेन नी सी शेन Pen ni si shen (बनू हाशिम) कहलाया। इस के बाद उस कबीले में एक बहुत होशियार शख़्स पैदा हुआ जिसका नाम मो हो मो Mo ho mo (मुहम्मद ﷺ) था। लोगों ने उस को अपना शासक चुन लिया। तो उसने अपनी हुकूमत 3000 ली तक फैला दी और हिया ला Hia la (हिरा) तक विजय प्राप्त की।[7] उसकी 14 वीं पीढ़ी में राजा मो हुआन Mo huan (मरवान II) ने अपने भाई जी की Ji ki

(यज़ीद III) को क़त्ल कर के हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लिया। वो बहुत ही क्रूर आदमी था और लोग उस से नाख़ुश थे। चुनांचे हू लोसान Hu lo san (ख़ुरासान) नाम के स्थान से मू लू Mu lu (Sulayman ibn Kathir el-Khuzai) नाम के एक शख़्स ने पो सी लीन Po si lin (अबू मुस्लिम ख़ुरासानी) के साथ मिलकर मो हुआन का तख़्ता उलट दिया। उन्होंने ऐलान किया कि जो भी हमारे साथ है वो काले कपड़े पहने। इस लिए उन का नाम ही यी ताशी Hei yi ta shi (काले कपड़े पहनने वाले, अरब) पड़ गया। उन्होंने बहुत जल्दी 20 हज़ार फ़ौज जमा कर ली और मो हुआन को क़त्ल कर दिया। इसके बाद सी शेन si shen (हाश्मी) ख़ानदान का अपोलो पा A po lo pa (अबू अल-अब्बास अल-सफ्फाह) नाम का एक शख़्स उनका राजा बना। उस की मौत के बाद उस का भाई अपु चा फ़ू Apu cha fo (अबू जाफ़र अलमंसूर) राजा बना। 756 CE में उसने चीन अपना प्रतिनिधिमंडल भेजा। टांग राजा सूज़ोंग Emperor Suzong of Tang (r. 756 – 762) ने उस की सेना की मदद से अपनी दोनों राजधानियों (अनलूशान विद्रोह के बाद) को फिर से जीत लिया।[8] अपु चा फ़ू के दूत जब चीनी राजा से मिलने पहुंचे तो महल के दरवाज़े पर उनकी मुलाक़ात, हुई हो (उइग़ूर) Hui ho Uyghur सरदारों से हुई, वो भी राजा से मिलने आए थे। दोनों में काफ़ी देर तक इस बात पर बहस होती रही कि कौन पहले, राजा के दरबार में हाज़िर होगा। बिल-आख़िर तक़रीबात के वज़ीर (समारोह मंत्री) ने यह निर्णय लिया कि दोनों एक ही वक़्त में दरबार में दाख़िल होंगे मगर अलग अलग दरवाज़ों से। यह वाक़िया भी टांग राजा सूज़ोंग के दौर का है। याद रहे अनलूशान विद्रोह के

दौरान राजा सूज़ोंग ने बहुत से राजाओं से मदद मांगी थी जिनमें अब्बासी ख़लीफ़ा और उइग़ूर क़बीले भी शामिल थे। दोनों ने अपनी अपनी फ़ौजें राजा की मदद के लिए भेजीं लेकिन संयोग से दोनों एक ही वक़्त में महल के बाहर पहुंचीं। तो दोनों में झगड़ा हो गया कि कौन पहले राजा के दरबार में पहुंचेगा। यह घटना उसी बारे में है। अपु चा फ़ू के बाद मी टी Mi ti (महदी बिन अलमंसूर) उस का उत्तराधिकारी बना। उसके बाद उसका बेटा आलुन A lun (हारून अल-रशीद) राजा बना।

ताइज़ोंग के मुसलमानों के बारे में सवालात

जब ईरान की सासानी हुकूमत का आख़िरी राजा यज़दगर्द III (Yazdegerd III) मुसलमानों से हार गया, तो उसने चीन के राजा से मदद मांगने के लिए अपना प्रतिनिधिमंडल चीन भेजा। शायद ताइज़ोंग उस समय का राजा रहा होगा क्योंकि ताइज़ोंग का शासनकाल 626 से 649 ई. तक है और अल्लामा इब्न जरीर अल-तबरी ने इसे अपनी किताब "तारीख-ए-तबरी" में 22 हिजरी यानी 642 ई. की घटनाओं में नक़ल किया है।

तो वह लिखते हैं 'जब ख़ाक़ान ने दरिया पार किया और उस के साथ ईरान के राजा के नौकर और सहयोगी भी थे तो उनकी मुलाक़ात यज़दगर्द III के राजदूत से हुई जिसको यज़दगर्द III ने चीन के राजा के पास भेजा था और वो शाहे चीन का जवाबी ख़त लेकर वापस आ रहा था। राजदूत ने बताया कि जब मैं पत्र और तोहफ़े ले कर शाहे चीन (ताइज़ोंग Emperor Taizong of Tang) के पास पहुंचा, तो उसने अच्छा बदला दिया और यज़दगर्द III को उत्तर लिखने

से पहले मुझसे बात की। उसने कहा मुझे मालूम है कि बादशाहों पर दुश्मन के मुक़ाबले में दूसरे बादशाहों की मदद करना ज़रूरी है लेकिन तुम मुझे उस क़ौम के हालात बताओ जिसने तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दिया है। क्योंकि तुम यह बताते हो कि उनकी संख्या कम और तुम्हारी संख्या ज़्यादा है। लिहाज़ा उनकी छोटी संख्या ने तुम्हारी बड़ी संख्या को इस लिए हरा दिया होगा क्योंकि उन में गुण होंगे और तुम में बुराइयां मौजूद होंगी'। मैं ने कहा 'जो आप को ठीक लगे पूछिए'। शहंशाह चीन ने पूछा क्या वह लोग वादा निभाते हैं? मैं ने कहा हाँ। फिर पूछा 'वो तुमसे जंग करने से पहले क्या क्या शर्तें रखते हैं? मैं ने कहा 'वो हमें तीन शर्तों में से एक शर्त को स्वीकार करने की पेशकश करते हैं। वो तीन शर्तें यह हैं;

1. या तो हम उनका धर्म अपना लें और अगर हम उनका धर्म क़बूल कर लेंगे तो वो हमें अपना भाई समझेंगे।
2. या फिर उनको जिज़िया अदा करें तो वो हमारी सुरक्षा करेंगे।
3. या फिर वो हमसे जंग करेंगे।

उसने फिर पूछा यह लोग अपने अधिकारियों (नेताओं) की आज्ञा का कितना पालन करते हैं? मैं ने कहा वो उनका उस क़ौम से ज़्यादा पालन करते हैं जो क़ौम अपने किसी मुर्शिद (गुरु) का पालन करती है। उसने फिर पूछा वो किन चीज़ों को हलाल समझते हैं और किन चीज़ों को हराम समझते हैं। इस पर मैं ने विस्तार से बताया। फिर पूछा, क्या वो हलाल को हराम और हराम को हलाल में बदलते हैं? मैं ने कहा, नहीं। इस पर वो बोला यह क़ौम कभी तबाह नहीं

होगी। जब तक कि वो हराम को हलाल और हलाल को हराम न कर लें। फिर पूछा, मुझे उनके कपड़ों के बारे में बताओ, तो मैं ने उनके कपड़ों के बारे में बताया। उसने उनकी सवारियों के बारे में पूछा तो मैं ने कहा 'वो अरबी घोड़े हैं'। फिर मैं ने उनका हाल बयान किया, इस पर उसने कहा 'वो निहायत अच्छे क़िले हैं'। फिर मैं ने उनके उठने, बैठने और चलने का हाल बयान किया। इस पर उसने कहा यह लंबी गर्दन वाले मवेशियों की विशेषताएँ हैं। इस के बाद उसने शाह यज़दगर्द III को ख़त लिखा। मुझे आपकी तरफ़ एक ऐसी महान सेना को भेजने से जिसका एक हिस्सा मर्व (आज के तुर्कमानिस्तान का एक शहर) में हो और दूसरा हिस्सा चीन में हो। सिर्फ इस बात ने रोक रखा था कि मैं उस क़ौम के बारे में जानकारी लूँ। मगर जैसा कि आपके दूत ने बताया मैं इस नतीजे पर पहुंचा, कि यह क़ौम ऐसी है कि अगर वो पहाड़ों का मुक़ाबला करे तो वो उनको भी पाश पाश कर दे। अगर उनके लश्कर को आज़ाद छोड़ दिया जाए तो वो मुझे भी हटा सकते हैं। बशर्तये कि उनमें वह गुण बाक़ी रह गए हों। आप उनसे समझौता कर लें और समझौता करने को अपना सम्मान समझें और उनसे तब तक न लड़ें जब तक वे आपसे न लड़ें।[9]

चीन में सहाबा की आमद वाक़यात

चीनी मुसलमानों में सहाबा (मुहम्मद ﷺ के साथी) के चीन पहुँचने के कुछ वाक़ियात मशहूर हैं जिनकी क़ब्रों की मौजूदगी का भी दावा किया जाता है लेकिन इस्लामी इतिहास से उनमें से किसी की भी पुष्टि नहीं होती। कहा जाता है की उनकी क़ब्रें गुआंगज़ू, यांगज़ु और क़ुआनज़ू Guangzhou, Yangzhou

and Quanzhou में मौजूद हैं। उनमें से एक वाक़िया मिंग हुकूमत के आख़री दौर में 1619 CE में मिन शू Min Shu नाम की एक पत्रिका में छपा था जिसको फ़ुजियान गजेटियर Fujian Gazetteer भी कहा जाता है। इस दस्तावेज़ का लेखक ही चियाओ युआन He Qiaoyuan है जिसने मस्जिद अस्हाब Qingjing si के एक निवासी से इंटरव्यू लिया था और उससे प्राप्त जानकारी प्रकाशित की थी।



मस्जिद अस्हाब

याद रहे मस्जिद अस्हाब चीन की एक प्राचीन मस्जिद है जो गुआंगज़ू शहर के दक्खिन में लगभग 693 किलोमीटर दूर, लिंगशान (बाबरकत) नाम के पहाड़ की जड़ में स्थित है। माना जाता है कि यह मस्जिद सहाबा ने बनाई थी। वाक़िया कुछ इस तरह है 'मदीना शहर में एक शेंगरेन Shengren (नबी या संत) हुकूमत करता था जिसका नाम मोहम्मदﷺ था। वो सूई हुकूमत Sui dynasty के काईहुआंग दौर Kaihuang reign के पहले साल में पैदा हुआ। उस की रुहानी

शक्ति और आकर्षण के कारण राजा ने उसे अपना अधिकारी बना लिया। पद संभालने के 20 साल बाद उस के ऊपर एक आसमानी किताब उतरी जो लोगों को नेकी करने और बुराई छोड़ने की शिक्षा देती है। उसने खुदा की मदद से एक सरकार की स्थापना की ताकि वो इन शिक्षाओं को फैला सके। उस को सूरज नहीं जलाता, न ही बारिश उस को भिगोती है। अगर वो आग में प्रवेश करता है तो आग उस को नहीं जलाती न पानी उस को डुबोता है। उस के पुकारने पर पेड़ उस के पास आजाते हैं। कुछ ही दिनों में उस का क़ानून पूरे देश में लागू हो गया। उस के मानने वालों में चार बड़े बाबा (खुलफ़ाए राशिदीन) हुए। टांग हुकूमत के वूडे दौर Wude reign of the Tang dynasty (618-626 CE) में उस के मानने वाले चीन आए ताकि उस के धर्म का प्रचार करें। पहला बाबा गुआंगज़ू Guangzhou में बस गया, दूसरा यांगज़ू Yangzhou में और तीसरा और चौथा क़ुआनज़ू Quanzhou में ठहरे, जहां बाद में वो लोग दफ़न किए गए। जिस पहाड़ पर वो लोग दफ़न हुए वहां से रोशनी निकलती है जिसको देखकर लोग उस को पवित्र मानते हैं। इस लिए इस जगह को बुज़ुर्गों का मक़बरा कहा जाता है क्योंकि यह पश्चिमी बुज़ुर्गों की आख़िरी आरामगाह है।[10]

याद रहे इस कहानी में मुहम्मद ﷺ के हालात को कन्फ्यूशियस Confucius के हालात से मिला दिया गया है क्योंकि मुहम्मद ﷺ ने किसी राजा की मुलाज़मत नहीं की बल्कि कन्फ्यूशियस ने की थी। दूसरी बात यह है कि यहां पर नबी के लिए शेंगरैन का शब्द इस्तेमाल किया गया है जिसका अर्थ है बुज़ुर्ग या संत। यह शब्द भी सोंग हुकूमत के ज़माने में लीशु विद्वान lixue scholars

कन्फ्यूशियस के लिए इस्तेमाल करते थे। इस में मुहम्मद ﷺ की पैदाइश का जो साल बताया गया है वो काईहुआंग दौर का पहला साल है यानी 590 CE जब कि इस्लामी इतिहास में पैगंबर के जन्म का साल 571 CE माना जाता है। याद रहे यह सारे मोजज़ात (चमत्कार) क़सीदा बुरदा में मोजूद हैं और चीन में क़सीदा बुरदा (पैगंबर ﷺ मुहम्मद की प्रशंसा में एक कविता) काफ़ी लोकप्रिय है और कई लोगों ने इसका चीनी भाषा में तर्जुमा भी किया है।

याद रहे जिस समय मुहम्मद ﷺ पैदा हुए (571 CE में), उस वक्त चीन में उत्तरी और दक्षिणी राजवंशों Northern and Southern dynasties (386–589) का दौर था और चीन में 4 हुकूमतें क़ायम थीं। जिन के नाम हैं उत्तरी ज़ाओ Northern Zhou (557-581) उत्तरी ची Northern Qi (550-577) चेन Chen (557-589) और पश्चिमी लिआंग Western Liang (555–587)। उत्तरी ज़ाओ का राजा वू Emperor Wu of Northern Zhou (r. 560–578) था और उत्तरी ची का राजा गाओ वी Gao Wei (r. 565-577) था, चेन का राजा बादशाह शुआन Emperor Xuan of Chen (r. 569–582) था और पश्चिमी लिआंग का राजा शियाओ कुई Xiao Kui (r. 562–585) था।

शायद मस्जिद अस्हाब के उस व्यक्ति ने जो जानकारी ही चियाओ युआन को प्रदान की थी वो ज़्यादातर क़सीदा बुरदा से ली गई है। तीसरी समस्या इस लेख में यह है कि, क्योंकि ही चियाओ युआन पूरे इस्लामी इतिहास को नहीं जानता था, इस लिए उसने ख़ुलफ़ाए राशिदीन को चीन में आने वाले चार मुसलमान

बुज़ुर्ग समझ लिया। हालाँकि चीन में आने वाले बुज़ुर्ग कोई दूसरे थे जिनके सटीक नामों का पता नहीं है। जब कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से कोई भी चीन नहीं गया। लेकिन शुरू के मुसलमानों में 'वक्क़ास' नाम के कोई बुज़ुर्ग चीन आए जिनका मक़बरा हुआइशेंग मस्जिद Huaisheng Mosque में मौजूद है जिन्हें लोग साद बिन अबी वक्क़ास समझते हैं लेकिन साद बिन अबी वक्क़ास का चीन जाना किसी भी इस्लामी इतिहास की किताब में नहीं मिलता। इसके अलावा दावा किया जाता है कि हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास की कब्रें दो और जगहों पर मौजूद हैं, एक तुरफ़ान में और एक मदीना में।[11]

लेकिन टांग ख़ानदान के दौर में चीन में खासतौर पर बंदरगाही शहरों में मुसलमान ताजिरों के वजूद के खुले सबूत मौजूद हैं। इस दौर का चीनी विश्लेषक analyst (713-742 CE) लिखता है कि "पश्चिम के वहशी सैलाब की तरह, कम अज़ कम 1000 ली के फ़ासले से और 100 से ज़्यादा सल्तनतों से पूर्व की बादशाहत (चीन) में आए। उनकी धार्मिक किताबें, शाही महल में धार्मिक और परंपरागत किताबों के तर्जुमे के लिए अलग अलग हाल में प्राप्त की गईं और जमा की गईं। इस दौर से उन विभिन्न देशों के मज़हबी अक़ाइद और धार्मिक शिक्षाओं को टांग सल्तनत में फैलाया गया और खुले आम रिवाज दिया गया। एक अरब भूगोलिक Geographer (d. 851), उन बस्तियों और मस्जिदों को बयान करता है जिनको इन ताजिरों को अपनी मज़हबी रस्मों के लिए तामीर करने की इजाजत दी गई थी।[12]

चीन में इस्लाम का प्रवेश

चीन के साथ अरबों के व्यापारिक संबंध इस्लाम से पहले से थे, और रेशम मार्ग Silk Road और समुद्र के रास्ते बहुत से लोग चीन आया जाया करते थे। चीन में काग़ज़ बनता था और वो अरब में बिकने आता था। लेकिन यह बहुत महंगा होता था, इस लिए बहुत अमीर लोग ही उसे ख़रीद पाते थे। इसी लिए आम तौर पर अरब लिखने के लिए जानवरों की खाल या अन्य सामग्री इस्तेमाल करते थे। चीनी मुसलमानों का मानना है कि चीन में सबसे पहले इस्लाम का परिचय कराने वाले सहाबी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (Sahaba Saadi Gangesi 撒哈八撒阿的乾葛思) हैं[13] जो तीसरे इस्लामी खलीफ़ा हज़रत उस्मान ग़नी के दौर में चीन आए। यह भी कहा जाता है कि उनके साथ वहब बिन अबी कबशा भी थे। शायद यह हारिस बिन अब्दुल उज्जा के बेटे थे क्यों कि हारिस बिन अब्दुल उज्जा का लक़ब भी अबू कबशा था और यह दाई हलीमा के पति थे। इस तरह वहब बिन अबी कबशा, हुज़ूर ﷺ के दूध शरीक भाई (सह भाई) हुए। यह लोग 629 CE में इस्लामी प्रतिनिधि मंडल के रूप में चीन पहुंचे। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ (अनुसार) हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के साथ हज़रत उवैस क़रनी और हज़रत हस्सान बिन थाबित भी थे, जो 637 CE में मणिपुर (भारत), चिट्टागोंग (बांग्लादेश) और युन्नान (चीन) के रास्ते चीन पहुंचे और चीनी शासक युंग वेई Yung-Wei को इस्लाम की दावत दी। युंग वेई को गाओजोंग Emperor Gaozong भी कहा जाता है।[14] हालाँकि चीनी राजा ने इस्लाम तो स्वीकार नहीं किया लेकिन उनका उत्साहपूर्वक

स्वागत किया और उनके सम्मान में कैंटन Canton (Guangzhou) में एक मस्जिद बनवाई जो चीन की सबसे पुरानी मस्जिद मानी जाती है, उस का नाम हुवाई शेंग मस्जिद Huaisheng Mosque है। एक रिवायत में यह भी है कि चीनी राजा को इस्लाम की शिक्षाएँ पसंद तो आईं लेकिन शराब छोड़ना उसे कठिन लगा। इस लिए उसने इस्लाम स्वीकार नहीं किया।

बदरुद्दीन चीनी लिखता है कि हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास के बाद दूसरा धर्म-प्रचारक जो चीन पहुंचा उसने यांग चाव (यांगज़ू) में सुकूनत इख़्तियार कर ली थी, उस वक़्त ये शहर बहुत गुमनाम था लेकिन बाद में वो एक बड़ी तिजारती बंदरगाह बन गई और पूरी दुनिया से तिजारती जहाज़ वहां आने जाने लगे। यहां इतने ताजिरों के जहाज़ आते थे कि यहां की चुंगी की आमदनी कई गुनाह बढ़ गई थी। ये शहर यांग्त्ज़ी नदी (Yangtze River) के किनारे था। चुनांचे यहां बहुत तेज़ी से इस्लाम फैला। तीसरा और चौथा मुबल्लिग़ चवान चाव (Chuan Chow) (गुआंगज़ू) में आबाद हुए। ये भी सबसे पहले इस्लाम से मुतआरिफ़ होने वाले शहरों में से हे। आज जो लोग चीन में इस्लाम की तारीख़ का अध्ययन करने आते हैं वो इसी शहर का दौरा करते हैं ताकि उन्हें कोई पुरानी यादगार मिल जाये। यहां अरबों की बहुत सी यादगारें पाई जाती हैं मिनजुम्ला उनके वो पत्थर भी हैं जो दीवारों और बाज़ारों पर लगे हैं जिनमें से कुछ पर अरबी कुंदा है।[15]

जो मुसलमान समुद्री रास्ते से चीन आए उनको दो जमातों में तक़सीम किया जा सकता है। याद रहे बदरुद्दीन चीनी ने जो नाम इस्तेमाल किए हैं वो हमारी

किताब के नामों से अलग हैं इस लिए ब्रैकेट में हमने अपना तलफ़्फ़ुज़ भी लिख दिया है। एक जमात शहर केंटन (Canton) में रही और वहां से सूबे कुवांग सी (Kuang Si) (ग़ालिबन जियांगशी) (होपे Hupeh) (Hubei) और होनान (Hunan) (Henan) में तौहीद की आवाज़ पहुंचाई। और जो लोग मध्य एशिया पार कर के उत्तरी चीन पहुंचे, सूबा कांसू (Kansu/Gansu) शंसी (Shansi) और मग़रिबी मंचूरिया में बस गए, उत्तरी चीन में यही इस्लाम का केन्द्र बना जहां से इस्लामी तालीम सूबा हानान (Honan) चिली (Chili) शान टुंग (Shan Tung) (शानडोंग), मंचूरिया और मंगोलिया (Mongolia) में फैली। इन मुक़ामात में मुसलमानों का ख़ास असर बाक़ी है, और उनकी क़ुव्वत ज़ाइल नहीं हुई है।[16] चीन का इतिहासकार प्रोफ़ैसर चिनयुआन (Chinyuan) कहता है कि मुसलमानों ने सरकारी तौर पर 651 CE में अपने वफ़द शाह-ए-चीन के पास भेजे और वो चीन की राजधानी चांगान Chang'an में हाज़िर हुए। अगर हम 651 को हिजरी सन के साथ मुक़ाबला करें तो हिजरी का 29 वां साल पाएंगे। इस क़ौल के मुताबिक़ हमारा अनुमान ग़ालिबन ग़लत नहीं होगा, कि मुसलमान बहैसियत मुबल्लिग़ 651 CE से पहले ही चीन में पहुंच चुके थे, और बहैसियत सरकारी सफ़ीर के साल-ए-मज़कूर में चीन में हाज़िर हुए। मुसलमानों के पहले वफ़द के रईस हज़रत साद बिन अबी विक़ास ही थे[17] क्योंकि पहले वो एक अरसा तक शहर केंटन में रह चुके थे और चीन के हालात से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे। हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा-ए-सालिस ने उनको वफ़द का रईस (प्रमुख) बनाया होगा और दरबार-ए-चीन में हाज़िर होने के बाद वो केंटन वापस

आए और बादशाह से अनुमति लेकर उन्होंने "यादगार नबी मस्जिद" बनाई ताकि मुसलमान सुबह-ओ-शाम इस में अल्लाह की हमद-ओ-सना कर सकें, ये मस्जिद इस्लामी संस्कृति की यादगार थी जिसको साद बिन अबी वक्कास ने बनाया था और उसी वक़्त से चीनी मुसलमान हज़रत साद बिन अबी वक्कास का नाम सम्मान के साथ लेते हैं।[18]

थॉमस आर्नल्ड की किताब में

हज़रत उसमान के ज़माने में चीन की तरफ़ सिफ़ारत भेजने का ज़िक्र थॉमस आर्नल्ड की किताब में भी मिलता है, ताहम सिफ़ारत कारों के नाम का तज़किरा नहीं है। वो लिखता है कि, चीन और मुसलमानों के संबंधों से मुताल्लिक़ क़दीम तरीन रिकार्ड जिस पर हम भरोसा कर सकते हैं वो ये है कि जब फ़ारस का आख़िरी सासानी बादशाह यज़्दगर्द हलाक हुआ तो उस के बेटे फ़िरोज़ ने चीन से अरब हमलावरों के ख़िलाफ़ मदद की अपील की। लेकिन शहंशाह ने जवाब दिया कि वो इतनी दूर फ़ारस के लिए आवश्यक सेना भेजने में असमर्थ है। लेकिन कहा जाता है कि फिर भी उसने भागे हुए राजकुमार की सिफ़ारिश पर और शायद पश्चिम में पैदा होने वाली नई बादशाहत की सीमा और शक्ति का पता लगाने के लिए, अपना एक राजदूत अरब दरबार में भेजा। कहा जाता है कि ख़लीफ़ा उसमान ने 651 CE में चीन के राजदूत की वापसी पर उस के साथ अरब जनरल को बतौर राजदूत चीन भेजा और इस पहले मुसलमान दूत का शहंशाह ने शानदार स्वागत किया।[19] लेकिन इस राजदूत का नाम थॉमस आर्नल्ड की किताब में मज़कूर नहीं है।

ताहम हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास का चीन के सफ़र पर जाना किसी भी ऐतिहासिक स्रोत से साबित नहीं होता। लेखक का मानना है कि ये हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास नहीं थे बल्कि कोई दूसरे साहिब थे जिनका नाम भी 'वक़्क़ास' था लेकिन बाद में लोगों ने उनको साद बिन अबी वक़्क़ास समझा।
एक चीनी इतिहासकार लिखता है कि 651 CE में ताशी का बादशाह जिसका नाम 'हान मी मोमोनी' Han mi momo ni (शायद ये लफ़्ज़ अमीरुल मोमिनीन है) था, उसने एक वफ़द चीन के बादशाह के पास भेजा। इस वफ़द के पास बादशाह के नाम एक ख़त था जिसमें उसने लिखा था कि 'हमारी हुकूमत क़ायम हुए 34 साल हो चुके हैं और तीन बादशाह हुए हैं।
इस के बाद इतिहासकार लिखता है कि जब ताशी Ta Shi लोगों ने आस-पास की सारी हुकूमतों पर विजय प्राप्त की तो उनके कमांडर मो यी Mo yi (हज़रत मुआविया) ने Fo lin फो लिन (बाइजेंटाइन साम्राज्य) Byzantine Empire की घेराबंदी कर ली। यिन यो Yin yo नाम का व्यक्ति जो दोनों के दरम्यान समझौता करा रहा था उसने तै करवाया कि फो लिन (बाइजेंटाइन हुकूमत) ताशी हुकूमत को सालाना लगान अदा किया करेगी जो सोने और रेशम की शक्ल में होगा।
उसके बाद 713 CE में (शायद यह वलीद बिन अबदुल मलिक का शासनकाल रहा होगा क्योंकि उस का शासनकाल 705-713 CE तक है) एक और ताशी प्रतिनिधिमंडल आया जो अपने राजा की तरफ़ से चीनी राजा के लिए बहुत से उपहार लाया था जिनमें सुंदर घोड़े और क़ीमती कमरबंद थे। जब यह प्रतिनिधिमंडल राजा के सामने पेश हुआ तो उन्होंने रिवाज के मुताबिक़ राजा

को झुक कर सलाम (kowtow) करने से यह कहते हुए इनकार कर दिया कि हम अपने ख़ुदा के अलावा किसी के आगे नहीं झुकते। जिसकी वजह से राजा तैश में आ गया और उनकी हत्या के दरपै हो गया। लेकिन उस के एक मंत्री ने यह कहते हुए उसे रोक लिया कि शाही शिष्टाचार में अंतर को अपराध नहीं माना जा सकता। उसके बाद 726 CE में एक और अरब दूत चीन आया जिसका नाम सू ली पू Su li pu (यह किसी अरबी नाम का चीनी उच्चारण है) था। उसने शाही शिष्टाचार के अनुसार राजा को सलाम किया और राजा से खिलअत में एक बैंगनी Purple वस्त्र और कमरबंद प्राप्त किया।

हज़रत मुआविया के नुमाइंदों की शाही त्योहार में शिरकत

दूसरा सब से पुराना ज़िक्र जो अरबों का चीन के इतिहास में मिलता है वो हज़रत मुआविया के प्रतिनिधियों की चीन के राजा के उत्सव में शिरकत का मिलता है। चुनांचे 665 में टांग राजा गाओज़ोंग, लोयांग Luoyang गया ताकि ताई पहाड़ Mount Tai पर आसमान और ज़मीन के लिए बलि दे। यह एक विशाल धार्मिक उत्सव होता था, जिसको फेंगशान क़ुर्बानियां Fengshan Sacrifices कहा जाता था। इस में बड़ी संख्या में लोग भाग लेते थे और बहुत भारी ख़र्चा किया जाता था और विदेशी मेहमानों को भी इस में आमंत्रित किया जाता था। इस अवसर पर इन सरकारों के प्रतिनिधि भी थे: जापान, भारत, ईरान की जिलावतन हुकूमत Persian court in exile, गोगुरियो Goguryeo, बेकजे Baekje, सिल्ला Silla,

तुर्क, खोतान Khotan, खमेर Khmer और ख़िलाफ़त-ए-बनू उमय्या के हज़रत अमीर मुआविया के प्रतिनिधि।[20]

इतिहासकारों की राय

ताहम इतिहासकारों के अनुसार चीन में सबसे पहले मुसलमान व्यापारी के रूप में पहुंचे। जो आम तौर से रेशम मार्ग silk route के रास्ते जाया करते थे और कुछ लोग पानी के रास्ते भी जाते। सबसे पहली मुस्लिम बस्तियाँ चीन में टांग ख़ानदान की हुक्मरानी के ज़माने में मिलती हैं। उस ज़माने में चीन में मुसलमानों को डाशी Dashi या ताशी Tashi कहा जाता था[21], जो शायद ताज़ी का बिगड़ा हुआ रूप है, क्यों कि ईरानी लोग अरबों को ताज़ी कहा करते थे। शुरू के मुसलमानों में अरब और ईरानी दोनों लोग चीन पहुंचे और चीन के तटीय शहरों में अपनी बस्तियाँ और मस्जिदें स्थापित कीं। कहा जाता है कि ज़्यादातर ईरानी लोग ईरान के शहर हुर्मुज़ और सिराफ़ से आए थे।[22] चुनांचे टांग हुकूमत के अंत तक कैंटन Canton (Guangzhou) और क़ुआनज़ू Quanzhou में कई मुस्लिम आबादियां बन चुकी थीं। अरब लोग क़ुआनज़ू को ख़ानफ़ू कहा करते थे। टांग हुकूमत के ज़माने में ही 755 CE में अनलूशान नामी एक विद्रोह हुआ उस वक़्त सू सुंग Su-Tsung (Emperor Suzong of Tang) टांग का राजा था। इस मौक़े पर चीन के राजा ने ख़िलाफ़त अब्बासिया से मदद का अनुरोध किया तो अबू जाफ़र अलमंसूर ने मदद के लिए एक अभियान भेजा जो टांग हुकूमत की राजधानी चांगान Chang'an पहुंचा।[23] इसका उल्लेख बाद में किया जाएगा।

चीन में पहली मुस्लिम बस्तियाँ

टांग दौर में चीन आने वाले विदेशियों को विशेष मोहल्लों या क्वार्टरों में रहने की अनुमति दी जाती थी। इन विदेशियों को फ़ानके Fanke कहा जाता था। उनमें से ज़्यादातर वापस चले जाते थे लेकिन कुछ हालात से मजबूर हो कर वहीं रुक जाते थे और वहीं रहने लगते, वहीं शादियां करते थे। उनको ज़ू टांग Zhu Tang 住唐 कहा जाता था जिसका मतलब होता है टांग में रहने वाले विदेशी। यह विदेशी आवास दो प्रकार के होते थे। एक कहलाते थे फ़ानफ़ांग Fanfang और दूसरे जिमिज़ू Jimizhou 羈縻州। जिसका मतलब होता है ढीली रास Loose-rein. जिमिज़ू उन बस्तियों को कहा जाता था जिनमें विदेशी लोग बसते थे और जिन पर राजा प्रत्यक्ष Direct रूप से शासन न करके अप्रत्यक्ष Indirect रूप से शासन करता था। राजा उन विदेशियों में से एक को अपना अधिकारी नियुक्त कर देता था और उसे कुछ अधिकार दे दिए जाते थे ताकि वो अपनी आबादी को कंट्रोल कर सके और टांग हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी गतिविधि को न होने दे। इस अधिकारी को जिमिफ़ू Jimifu या डूडूफ़ू Dudufu कहा जाता था। इन आबादियों में ज़्यादातर तुर्क जन जातियाँ रहती थीं। उनको इस विचार पर बनाया गया था कि वहशियों के ख़िलाफ़ वहशियों को इस्तेमाल करो to check the barbarians by barbarian [methods]" (yi yi zhi yi 以夷治夷). कभी कभी इन तुर्कों के अलग प्रीफ़ेक्चर (प्रान्त) भी होते थे जिन्हें फ़ानज़ू fanzhou 蕃州 "barbarian prefectures" या बियानज़ू bianzhou 邊州 "border prefectures" कहा जाता था। जब कि हान (चीनी) लोग जिन प्रीफ़ेक्चरों में

रहते थे उन को जेंगजू Zhengzhou 正州 "regular prefectures" कहा जाता था।[24] और जिन आबादियों में अरब और ईरानी रहा करते थे उनको फ़ानफ़ांग fanfang 蕃 (番) 坊 कहा जाता था। फ़ान fan का मतलब होता है विदेशी और फ़ांग fang का मतलब होता है रहने की जगह। इस तरह फ़ानफ़ांग fanfang का मतलब हुआ विदेशियों के रहने की जगह। इन फ़ानके लोगों में बड़ी तादाद अरब और ईरानी मुसलमानों की होती थी, हालाँकि थोड़ी संख्या में ईसाई, यहूदी, मजूसी और मानी मज़हब के मानने वाले भी पाए जाते थे। यह फ़ानफ़ांग आमतौर पर रेशम मार्ग के किनारे बाज़ारों में स्थित होते थे जहाँ विदेशी व्यापारी रुकते थे। फ़ानफ़ांग का सबसे पहला ज़िक्र चीनी इतिहास में फ़ांग चियानली Fang Qianli की किताब टू हुआंगलू Touhuanglu में मिलता है। फ़ांग चियानली एक सरकारी अहलकार था जिसको किसी जुर्म में डेमोट demote कर के गुआंगज़ू भेज दिया गया था जहां वो 827-835 CE के दरम्यान नियुक्त रहा। यह फ़ानफ़ांग बाद की सोंग हुकूमत Song Empire के दौर में भी क़ायम रहे। हुकूमत उन्हीं लोगों में से किसी को अपना अफ़सर नियुक्त कर देती थी जिसको 'फ़ानज़ांग' fanzhang कहा जाता था और अरबी फ़ारसी में 'क़ाज़ी' कहा जाता था। इस का तरीक़ा यह होता था कि पहले यह लोग अपने में से किसी का नाम फ़ानज़ांग के लिए पेश करते थे जिसको राजा मंज़ूर कर देता था। यह फ़ानज़ांग, हुकूमती पोशाक पहनता था। फ़ानज़ांग की हैसियत एक हुकूमती अफ़सर और एक धार्मिक और सामाजिक लीडर की होती थी जो आपस के छोटे छोटे मुक़द्दमों का फ़ैसला देता था, ईद के चांद का ऐलान करता था और ईद की नमाज़ पढ़ाता था, इस लिए समाज में उस को सम्मान

दिया जाता था। किताब "अखबार अल-सीन वालहिंद" में भी सुलेमान ताजिर ने इस का ज़िक्र किया है। इन मुक़द्दमों में अगर दोनों पक्ष विदेशी होते तो फ़ैसला फ़ानज़ांग करता और अगर एक पक्ष हान होता, तो राजा फ़ैसला करता। चीन में सज़ा के 5 स्तर होते थे। पहला ची chi (डंडे से हल्की पिटाई), दूसरा ज़ांग zhang (लाठी से गंभीर पिटाई), तीसरा टू tu (कारावास), चौथा लियू liu (जिलावतनी) और पांचवा सी Si (सज़ा-ए-मौत)। फ़ानज़ांग पहले दो स्तरों (ची और ज़ांग) की सज़ाएं दे सकता था बाक़ी बड़े 3 दर्जों की सज़ाएं राजा दे सकता था। इसके अलावा वो तिजारती मामलात भी तै करता था और विदेशियों को चीन के साथ व्यापार करने के लिए प्रेरित करना भी उस की ज़िम्मेदारी होती थी। चुनांचे इतिहासकार ज़ू यू Zhu Yu ने 1110 CE में लिखी अपनी किताब पिंगज़ू केतन Pingzhou ketan 萍洲可談 (पिंगज़ू से बात) में ज़िक्र किया है कि पू शीमी Pu Ximi (यह किसी अरबी नाम का चीनी उच्चारण है) नाम के एक अरब जहाज़रां को गुआंगज़ू के फ़ानज़ांग ने 933 CE में, गुआंगज़ू आमंत्रित किया।[25] विशेषज्ञों का मानना है कि चीन में इस्लाम सब से पहले इन्हीं फ़ानफ़ांग fanfang आबादियों में पनपा था। सबसे बड़ा फ़ानफ़ांग गुआंगज़ू Guangzhou में था। जियू टांग शू के बयानिए Jiu Tang shu accounts के मुताबिक़ जब ली मियान Li Mian को 769 CE में गुआंगज़ू का गवर्नर बनाया गया तो साल भर में 4 या 5 अरब व्यापारी गुआंगज़ू आते थे लेकिन ली मियान के बेहतर शासन के कारण यह संख्या बढ़कर 4000 हो गई। इससे पता चलता है कि 8 वीं शताब्दी ईस्वी में गुआंगज़ू में मुस्लिम आबादी कितनी तेजी से बढ़ी थी।

अध्याय 2

चीन के शाही दौर में मुसलमानों के हालात

第二章

中国帝国穆斯林的条件

Chapter Two

Conditions of Muslims in Imperial China

नी साम्राज्यों के अधीन मुसलमानों की सामाजिक-धार्मिक स्थिति

हू Hu शब्द भी विदेशियों के लिए इस्तेमाल होता था जो बाद में बदल कर हुई Hui हो गया चुनांचे आज चीन में मुसलमानों को हुई कहा जाता है जबकि शुरू में अरबों को डाशी 大食 Dashi और ईरानियों को बोसी 波斯 Bosi कहा जाता था। चीनी इतिहास में बनू उमय्या को सफेदपोश डाशी Baiyi Dashi 白衣大食 कहा गया क्योंकि बनू उमय्या सफ़ैद कपड़े पहना करते थे और अब्बासियों को स्याह पोश डाशी Heiyi Dashi 黑衣大食 (काले कपड़े पहनने वाले) कहा गया क्योंकि वो काले कपड़े पहना करते थे।

फ़ानके की जीवन शैली

चीनी इतिहासकार पिंगज़ू की किताब में फ़ानके की जीवन शैली का भी थोड़ा तज़किरा मिलता है। उसके अनुसार फ़ानके इस्लाम की हलाल की हुई चीज़ें ही खाते हैं। ख़ासकर वो सुअर का मांस खाने से बहुत बचते हैं जबकि दूसरे चीनी इसका बहुत इस्तेमाल करते हैं। ताहम वो मछली और कछुआ खाते हैं। इसके अलावा वो मोलासिस Molasses (राब), खजूर और अरीका areca (सुपारी/छाली) बहुत शौक़ से खाते हैं। वो शतरंज खेलते हैं और पक्षी पालते हैं। हालाँकि फ़ानके लोगों में शिक्षा हासिल करने का रिवाज नहीं है न ही वो चीनी भाषा और संस्कृति में रुचि रखते हैं। ताहम कुछ लोगों ने चीनी भाषा

सीखी और सिविल सेवा परीक्षा पास कर के सरकारी नौकरियां भी हासिल कीं। उदाहरण के लिए ली यानशेंग 李彥升Li Yansheng नाम के एक डाशी (अरब) ने 848 CE में सिविल सर्विस इम्तिहान पास किया और जिंशी Jinshi की डिग्री हासिल की। उत्तरी सोंग के इतिहासकार काई टाओ ने अपनी किताब टीवीशान कोंगटान Tieweishan congtan 鐵圍山叢談 की दूसरी जिल्द में लिखा है कि डागुआन और ज़ेनगडे काल (1107-1117 CE) में यी yi लोगों ने चीनी ज़बान सीखना शुरू कर दी और उन्होंने गुआंगज़ू और क़ुआनज़ू में फ़ांशू नाम के बच्चों के लिए स्कूल खोलने का अनुरोध किया। ज़ोंगवू जीवेन Zhongwu jiwen नाम की किताब में गोंग मिंगज़ी Gong Mingzhi ने लिखा है कि दक्षिणी सोंग के ज़माने में जब चैंग शीमेंग Cheng Shimeng गुआंगज़ू का इंचार्ज था तो उसने वहां बहुत से स्कूल बनाए क्योंकि फ़ानके के सभी बच्चे शिक्षा लेना चाहते थे।

कुतैयबा बिन मुस्लिम का चीन में प्रवेश

पहली मुस्लिम सेना कुतैयबा बिन मुस्लिम Qutayba ibn Muslim के नेतृत्व में बनू उमय्या काल के दौरान चीन पहुंची, चुनांचे 713 और 714 CE के दरम्यान कुतैयबा बिन मुस्लिम पूर्व की ओर विजय प्राप्त करते हुए चीन के शहर काशग़र तक पहुंच गए।[26] उनका इरादा आगे बढ़ने का था, लेकिन इसी बीच उन्हें हज्जाज बिन यूसुफ की मौत की खबर मिली तो वे वापस लौट आए क्योंकि हज्जाज ने ही उन्हें भेजा था और हज्जाज के आक़ा, वलीद बिन अबदुल मलिक के बाद जब सुलेमान बिन अबदुल मलिक राजा बना तो हालात

कुतैयबा के पक्ष में नहीं रहे चुनांचे उनके साथियों ने ही उनकी हत्या कर दी। यह मुस्लिम सेना का पहला क़दम था चीन में।

दूसरी रिवायत में है कि 713 में कुतैयबा बिन मुस्लिम ने जब चीन तक का इलाक़ा फ़तह कर लिया तो उसने अपना राजदूत चीन के बादशाह के पास भेजा जिसने उसको कीमती तोहफ़े देकर वापस किया। 726 में हिशाम बिन अबदुल मलिक ने सुलेमान नाम का एक राजदूत चीन भेजा, शायद ये शुआनज़ोंग 712-756 CE) का शासनकाल होगा।[27]

रफीक खान अपनी किताब "इस्लाम इन चाइना" "Islam in China" में लिखते हैं कि 713 ई. में कुतैयबा बिन मुस्लिम ने चीन पर हमला किया। तत्कालीन सम्राट शुआनज़ोंग ने अपने भतीजे को 200,000 की सेना के साथ उनसे लड़ने के लिए भेजा, लेकिन वह हार गया। इसके बाद दोनों पक्षों के बीच पत्रों का आदान-प्रदान हुआ। अंत में, चीनी राजा ने अपने चार राजकुमारों, मिट्टी का ढेर और कीमती पत्थरों का एक बड़ा उपहार कुतैयबा को भेजा।[28] कुतैयबा ने उनकी बात मान ली और आक्रमण स्थगित कर दिया। राजकुमारों को इसलिए भेजा गया ताकि वह राजकुमारों को अपने सामने झुकाकर अपनी शपथ पूरी कर सके और मिट्टी इसलिए भेजी गई ताकि वह चीनी भूमि को अपने पैरों तले रौंद कर अपनी शपथ पूरी कर सके। लेकिन अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि वालिद बिन अब्दुल-मलिक की मृत्यु के कारण उन्हें वापस लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा।[29]

बदरुद्दीन चीनी जो 1930 की दहाई में भारत आया और जामिआ मिल्लिया इस्लामीया और फिर नदवतुल उलमा से तालीम हासिल की, इस के बाद जामिआ अल-अज़हर का रुख किया। वो अपनी किताब "चीनी मुस्लमान" में लिखता है "चीन का एक क़बीला क़ुतेबा बिन मुसिलम के ज़माने में मुस्लमान हुआ, उस का नाम 'हुई छी' था। आज चीनी ज़बान में मुस्लमानों को 'हुई हुई' कहते हैं इस की असलियत हुई छी है। और यह नाम ग़ैरम मुस्लिमों ने उनके लिए रखा था, जो टांग दौर में इस्लाम लाए थे। लेकिन युआन दौर में मुस्लमानों ने हुई छी के नाम नकारा और उसे 'हुई हुई' कर दिया क्योंकि ये लफ़्ज़ उनके नज़दीक इस्लाम का पर्याय है। क़बीला हुई छी जब मुस्लमानों के गिरोह में दाख़िल हुआ तो उन्होंने अपनी नक़ल-ओ-हरकत मग़रिबी चीन तक महिदूद रखी थी और सिपाही या धर्म-प्रचारक बन कर वह चीन नहीं गए। यही वजह है कि आठवीं सदी तक इस्लाम चीन के अंदर नही फैला। ये बिलकुल सही है कि क़ुतेबा बिन मुसिलम ने 713 CE में एक वफ़द शाह-ए-चीन के पास रवाना किया था और इस से मुतालिबा किया, कि या तो इस्लाम क़बूल करे या जिज़्या अदा करे। अगर वलीद बिन अबदुल मलिक उमवी की मौत और सुलेमान की ख़िलाफ़त, मुस्लिम फ़ौजों और जनरलों के दिलों में तशवीश पैदा ना करती तो बहुत मुम्किन था कि क़ुतेबा बिन मुसिलम चीन में आगे बड़ता। लेकिन वाक़िया ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि जब वलीद बिन अबदुलमलिक की मौत की ख़बर फैली तो इस्लामी फ़ौजों ने जो चीन के फाटक पर पहुंच चुकी थीं, शाहे चीन से

सुलह कर ली, और शाह चीन के बेशुमार तोहफ़े और हदिये क़बूल कर के ख़ुश ख़ुश आमू-पार वापस हो गई"।[30]

तलास के युद्ध

इस के बाद तलास की जंगें हुईं, तलास की जंगें भी चीन में इस्लामी इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं। यह युद्ध तलास नहर के तट पर हुए। तलास नहर वर्तमान किर्गिस्तान Kyrgyzstan में स्थित है। उस समय चीन पर टांग राजवंश का शासन था। रेशम मार्ग silk road एक ऐसा मार्ग था जिस पर चीन अपना नियंत्रण बनाए रखना चाहता था और इसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहता था। चुनांचे 97 BC में चीन के जनरल बान चाओ Ban Chao ने 70 हज़ार फ़ौज के साथ मर्व Merv तक, रेशम मार्ग पर लूट मार करने वाले क़बीलों का पीछा किया। चीनी हुकूमत की एक बड़ी विरोधी तिब्बती सरकार थी जिसकी स्थापना सोंगत्सान गामपू Songtsan Gampo ने की थी। इसके अलावा चीन को उइग़ूर और तुरफ़ान क़बीलों की आक्रामकता का भी सामना करना पड़ता था।[31] चीन का बहुत ज़माने पहले से मध्य एशिया के इस इलाक़े में दख़ल रहा था। चुनांचे सासानी बादशाहों Sassanid Emperors और उनसे पहले के पार्थियन Parthians बादशाहों से भी चीन के दरबारी संबंध रहे थे। चीन के उज़्बेकिस्तान Uzbekistan के तत्कालीन सोग्डियन साम्राज्य Sogdian Empire (or Sughd Sultanate) के साथ भी संबंध थे। लेकिन इस्लाम के आगमन के बाद एशिया की राजनीति में बड़े बदलाव आए। इस प्रकार, अमीरूल-मूमिनीन उमर बिन

अल-खत्ताब के समय में, सासानी साम्राज्य समाप्त हो गया और अंतिम सासानी राजा, यज़दगर्द III, 651 ई. में मर्व में मारा गया। उसके दो बेटे फ़िरोज़ सालिस और बहराम हफ़्तुम अपने बहुत से आदमियों के साथ चीन के टांग शहंशाह गाओज़ोंग की पनाह में चले गए। फ़िरोज़ सालिस 670-674 CE तक चीनी शासित ज़रंज क्षेत्र का गवर्नर रहा और चीनी शहंशाह ने उसे ज़ूवीवी जियांगज़ुन Zuoweiwei Jiangjun की उपाधि दी थी।

तलास की पहली जंग

715 CE में अरबों और चीनियों के दरम्यान तलास की पहली जंग हुई। युद्ध का कारण यह था कि फ़र्ग़ाना घाटी Fergana Valley के शासक, जिसकी उपाधि इख़्शीद Ikhshid थी, को 715 ई. में अरबों और तिब्बतियों ने मिलकर बेदख़ल कर दिया और अलूतार Alutar नाम के एक शख़्स को तख़्तनशीन करा दिया। इख़्शीद ने भागकर चीन के कूचा Kucha क्षेत्र में शरण ली, जो वर्तमान चीन के शिंजियांग इलाक़े में है। और चीनी राजा से मदद की गुहार लगाई। चीनी राजा शुआनज़ोंग Emperor Xuanzong of Tang (r. 8 September 712– 12 August 756) ने जनरल ज़ांग शियाओसोंग Zhang Xiaosong की अगुवाई में 10 हज़ार का लश्कर इख़्शीद की मदद के लिए भेजा जिस ने अलूतार को नामंगान Namangan के मुक़ाम पर (जो आज के उज़्बेकिस्तान में स्थित है) शिकस्त दी (हरा दिया) और इख़्शीद को दोबारा तख़्तनशीन करा दिया। इसी के साथ ही चीनी सेना ने उस इलाक़े के तीन शहरों को तबाह कर दिया।

अक्सू की जंग Battle of Aksu (717 CE)

दूसरा मुक़ाबला 717 CE में तब हुआ जब अरबों ने तुर्गेश Turgesh और तिब्बती इत्तिहादियों (सहयोगियों) के साथ मिल कर शिंजियांग के अक्सू Aksu के इलाक़े के 4 चीनी सैन्य क़िलों पर क़ब्ज़ा कर लिया। यह क़िले थे कूचा Qiuci (Kucha), खोतान Yutian (Khotan), काशग़र Shule (Kashgar) and कारा शहर Yanqi (Karashahr)। उनके मुक़ाबले के लिए चीनी कमांडर टांग जिया हुई Tang Jiahui, 10,000 फ़ौज के साथ निकला[32] और कारलुक़ क़बीले की मदद से जिसका नेतृत्व अशीना शिन Ashina Xin कर रहा था और चीनी फ़ौजों का नेतृत्व टांग जिया हुई ख़ुद कर रहा था, मुख़ालिफ़ फ़ौजों को हरा दिया।[33] यह युद्ध शायद सुलेमान बिन अबदुलमलिक के ज़माने में हुआ होगा क्यों कि उसका शासनकाल 23 February 715-24 September 717 CE तक है। या फिर हज़रत उमर बिन अबदुलअज़ीज़ के शासनकाल में। युद्ध के बाद, अरब सेना उत्तरी ट्रान्सोक्सियाना Northern Transoxiana से निकल गई और उन के बहुत से सैनिक क़ैदी बना लिए गए जिनको बाद में सोना फिरौती में देकर छुड़ाया गया।[34] यह जंग भी राजा शुआनज़ोंग Emperor Xuanzong of Tang (r. 8 September 712– 12 August 756) के ज़माने में हुई। तुर्गेश ने टांग की अधीनता स्वीकार कर ली और टांग की शह पर फ़र्ग़ाना में अरबों के ख़िलाफ़ हमले शुरू कर दिए। बदले में, टांग ने तुर्गेश के प्रमुख को तुर्गेश ख़ान सुलुक Turgesh Khagan Suluk की उपाधि से सम्मानित किया और उसे सूयाब Suyab शहर दिया।

तलास की दूसरी जंग

ऐसी ही एक घटना सन 750 CE में फिर घटी, जब फ़र्ग़ाना के शासक का अपने पड़ोसी चाश के शासक के साथ कुछ सीमा विवाद हो गया। फ़र्ग़ाना के शासक ने चीनी शासक टांग राजा शुआनज़ोंग Emperor Xuanzong of Tang (r. 8 September 712– 12 August 756) से मदद तलब की इस लिए चीनी राजा ने जनरल काओ General Kao के नेतृत्व में फ़र्ग़ाना के शासक की मदद के लिए एक फ़ौज भेजी।[35] जनरल काओ ने पहले तो चाश के शासक को बच निकलने का मौक़ा दिया, बाद में धोके से उस को पकड़ लिया और उसका सिर काट दिया। चाश के शासक के बेटे ने इस की शिकायत ख़ुरासान के अब्बासी गवर्नर अबू मुस्लिम ख़ुरासानी से की और मदद मांगी। इस लिए अबू मुस्लिम ने चीनियों के मुक़ाबले के लिए एक फ़ौज रवाना की जो दूसरे अब्बासी कमांडर ज़ियाद बिन सालिह की फ़ौज से आ मिली और दोनों फ़ौजें मिलकर जनरल काओ के मुक़ाबले के लिए रवाना हुईं। जुलाई 751 CE में दोनों फ़ौजों का सामना तलास नहर के तट पर हुआ।[36] दोनों फ़ौजों की तादाद लगभग एक एक लाख थी। चीनी फ़ौज का बड़ा हिस्सा कारलुक़ क़बीले के रज़ाकारों Karluk mercenaries पर आधारित था। लेकिन युद्ध से ठीक पहले या युद्ध के दौरान यह कारलुक़ रज़ाकार चीनी फ़ौज का साथ छोड़कर अब्बासियों से आ मिले जिसकी वजह सी चीनी फ़ौज के क़दम उखड़ गए और चीनी फ़ौज को शिकस्त हुई। जनरल काओ अपनी हार को निश्चित देखकर, अपने कुछ साथियों के साथ भाग निकला और बड़ी संख्या में चीनी सैनिक मारे गए और कई बंदी बना लिए

गए, जिन्हें समरकंद लाकर रखा गया। इन क़ैदियों में बहुत से ऐसे लोग थे जो काग़ज़ बनाने की कला जानते थे जिनमें डू हुआन Du Huan भी था जो कुछ साल बग़दाद में भी रहा और जब वो चीन वापस लौटा तो उसने चीनी राजा को लिखा कि मैं ने और मेरे कुछ साथियों ने अरबों को काग़ज़ बनाने, कपड़ा (रेशम) बुन्ने और सोने का काम करने की तरकीबें सिखा दी हैं। इसका विस्तार से ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। इसी के बाद सबसे पहले समरकंद में काग़ज़ बनाने के कारखाने स्थापित किए गए जो धीरे-धीरे पूरे अरब में फैल गए और बाद में उंदलुस (Spain) तक गए और फिर यूरोप में फैले। अरब में चीनी मिट्टी porcelain का आयात (import) भी किया जाता था, जो वहां बहुत महँगे दामों पर बेचा जाता था। ताहम तलास की जंगों के बाद भी अब्बासियों और टांग हुकूमत के बीच सिफ़ारतों की आमद-ओ-रफ़्त का ज़िक्र मिलता है। चुनांचे मशहूर इतिहासकार चीफ़ू युआंगुई Cefu Yuangui ने कुछ अरब सफ़ीरों (दूतों) का चीनी हुकूमत के पास आने का ज़िक्र किया है। उस के अनुसार 753 CE में 4 अरब सिफ़ारतें (प्रतिनिधिमंडल) चीनी हुकूमत के पास आईं। इस लिए जापानी इतिहासकार को डोटसाका Kodo Tasaka ने अपनी किताब में लिखा है कि तलास की जंगों के बाद भी चीन-ओ-अरब के बीच संबंध बहुत ख़राब नहीं हुए थे बल्कि और मधुर हुए थे।[37]

अनलूशान विद्रोह के दौरान अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफ़र अलमंसूर की चीन को मदद

अनलूशान विद्रोह, टांग राजा शुआनज़ोंग के शासनकाल के अंत में हुआ था। इस विद्रोह का नेतृत्व अनलूशान नाम के एक टांग जनरल ने किया था, इसलिए इसे अनलूशान विद्रोह या अंशी विद्रोह कहा जाता है, क्योंकि अंशी 661 ईस्वी में स्थापित हुआ एक सर्किट (क्षेत्र) था। यहां से ही विद्रोह की शुरुआत हुई थी। इसका आरंभ 16 December 755 CE को हुआ और 17 February 763 CE को समाप्त हुआ। यानी तलास की दूसरी जंग के पाँच साल बाद इस विद्रोह का आरंभ हुआ। इस विद्रोह में (13,000,000-36,000,000) लोग मारे गए। इस विद्रोह ने पूरी टांग हुकूमत को उथल पुथल कर दिया। शुआनज़ोंग को अपनी राजधानी चांगान छोड़कर चैंगडू Chengdu भागना पड़ा। यात्रा के दौरान, शुआंगज़ोंग का बेटा ली हेंग Li Heng तख़्तनशीन हुआ और राजा सूजोंग Emperor Suzong का लक़ब इख्तियार किया। सूजोंग ने अनलूशान विद्रोह के दौरान अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफ़र अलमंसूर Abu Jafar al-Mansur (r. 10 June 754 – 6 October 775) को लिखा कि हमारी मदद करो। इसलिए अलमंसूर ने 756 CE में 4000 सैनिकों की एक सेना सूजोंग की मदद के लिए भेजी।[38] जिसके बदले में सूज़ोंग ने विद्रोह के बाद मुसलमानों को चीन में बसने की अनुमति दे दी, इस तरह पहली बार मुसलमान चीन में बस गए और कई अरब सैनिकों ने स्थानीय महिलाओं से शादी की, जिससे एक नई पीढ़ी का

जन्म हुआ, जिसे बाद में हुई Hui कहा गया।[39] यह भी कहा जाता है कि अरबों और उइग़ूर (Uyghur or Uighur) में लड़ाई हो गई इस बात पर कि कौन पहले राजा के दरबार में प्रवेश करे और राजा का क़रीबी बने।[40] अब हम साथ ही सूजोंग के उस अभियान का ज़िक्र कर देते हैं जिसमें सूजोंग ने अनलूशान की फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए अपने बेटे ली चू (जो गुआंग पिंग का शहज़ादा था और बाद में डाईज़ोंग Daizong के नाम से राजा बना) के नेतृत्व में चांगान फ़ौज भेजी उस वक़्त चांगान अनलूशान के क़ब्ज़े में था। ली चू की इस फ़ौज में कई जगहों के लोग थे जिसमें डाशी Dashi (अरब) भी थे। चुनांचे प्रसिद्ध इतिहासकार ज़ांग चेंगज़ी Zhang Chengzi अपने इतिहास में लिखता है कि विद्रोह को कुचलने के लिए टांग हुकूमत ने अरबों और दूसरे विदेशियों से मदद मांगी। विद्रोह के बाद टांग हुकूमत ने अरबों को चांगान के दक्षिण में रहने के लिए एक क्षेत्र दिया, जिसे शायुआन Shayuan कहा जाता था। जब से आज तक हुई लोग (मुसलमान) शायुआन में आबाद हैं।[41]

एक रिवायत में है कि जब सूज़ोंग ने मुसलमानों की मदद से अपनी दोनों राजधानियों पर कब्ज़ा कर लिया, तो वह मुसलमानों की मदद के लिए इतना आभारी था कि मुसलमानों को राजा द्वारा कई दिनों तक खाने पर आमंत्रित किया गया। और जब उन्हें पेशकश की गई कि वे चीनी महिलाओं से शादी कर सकते हैं, तो उनमें से कई ने ऐसा किया।

उन्हें चीनी सेना में महत्वपूर्ण पद दिए गए और शाही अतिथि गृह में एक बड़ा हॉल उनकी पूजा करने के लिए आवंटित किया गया और बाद में उन्हें चीन में बसने की अनुमति दी गई।[42]

चीनी इतिहासकार तोंग जियान Tong Jian अपनी किताब History of the Tang Dynasty में लिखता है कि "टांग दौर में हज़ारों मुसलमान चांगान में बतौर मेहमान रहते थे। वो ग़ैर मुल्की कपड़े पहनते थे और चीनियों के साथ बहुत सम्मान से पेश आते थे। जितने मेहमान थे इस से दोगुनी तादाद में अरब ताजिर थे चांगान में। शाह-ए-चीन ने उनके लिए ख़ुसूसी सराय बनाई थी। इस मेहमान ख़ाने की शान-ओ-शौकत को अलफ़ाज़ में बयान नहीं किया जा सकता। वो इतनी भव्य इमारत थी कि शहर की अज़मत और बाज़ारों की शान में चार चांद लगा दिए थे। इस इमारत में मुस्लिम मेहमान रहा करते थे और इस का पूरा ख़र्च बादशाह के खज़ाने से आता था।[43]

ये भी कहा जाता है कि फ़तह के बाद बादशाह सूज़ोंग ने चांगान शहर में मुसलमान फ़ौज के लिए एक ख़ास दारुलज़ियाफ़ा (महमानखाना) तामीर कराया और इमारत के मुकम्मल होने के बाद तमाम शहरों और बाज़ारों में एलान करा दिया कि वो मुसलमान जिन्हों ने जंग में बहादुरी के जोहर दिखाए हैं वो बादशाहे चीन के मेहमान हैं, वो मेहमान ख़ाने में रहेंगे। इस में उनके लिए इबादत खाना भी है जिसमें वो इबादत कर सकते हैं"।[44]

ये लोग अरब वापस क्यों नहीं गए?

इस बारे में भी इतिहासकारों ने मुख़्तलिफ़ राय पेश की हैं कि ये लोग वापस अरब क्यों नहीं गए। एक रिवायत में ये है कि उनके लोगों ने उनको अपने यहां दाख़िल होने की इजाज़त नहीं दी क्योंकि वो ऐसे देश में लंबे समय रहे थे जहां सुअर का गोश्त खाया जाता है इस लिए उनको वापस कर दिया गया। दूसरी रिवायत में ये है कि वो लोग केंटन में अपने जहाज़ पर सवार होने की तैयारी कर रहे थे तो उन पर लोगों ने फ़िक़रा कसा कि इस अभियान के दौरान उन्होंने सुअर का गोश्त खाया है। तो उन्होंने सोचा कि हम अगर अपने वतन वापस जाएंगे तो और ज़्यादा लोग हमें सुअर का गोश्त खाने के ताना देंगे इस लिए उन्होंने वापस जाने से इनकार कर दिया और वहीं रुक गए और अरब और ईरानी ताजिरों के साथ रहने लगे। जब केंटन के गवर्नर को ये पता चला तो उसने उन पर वापस जाने के लिए दबाओ डाला इस लिए उन्होंने ईरानी और अरब ताजिरों के साथ मिलकर उसके ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और शहर के अहम व्यापार केन्द्रों को लूटा। गवर्नर ने शहर की फ़सील में पनाह लेकर ख़ुद को बचाया। और जब उसने बादशाह से उनके शहर में रुकने की इजाज़त ले ली तब लौट सका। उन्हें देश में मुख़्तलिफ़ शहरों में रहने के लिए ज़मीनें दी गईं जहां वो आबाद हो गए और मुक़ामी औरतों से ब्याह रचा लिए।[45]

एक अन्य इतिहासकार, यांग हुआइज़ोंग Yang Huaizhong ने लिखा है कि टियानबाओ (शुआनज़ोंग के अंतिम शासनकाल) के 14 वें साल में अनलूशान ने विद्रोह किया और दोनों राजधानियों (चांगान और लोयांग) पर क़ब्ज़ा कर

लिया। चुनांचे ज़ीडे दौर (सूज़ोंग के शासनकाल) के पहले साल अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफ़र अलमंसूर ने चीनी राजा के अनुरोध पर अपनी फ़ौज भेजी ताकि सूज़ोंग, पूर्वी राजधानी लोयांग और पश्चिमी राजधानी चांगान से विद्रोहियों को निकाल सके। यह सेना वहीं बस गई और वहाँ की महिलाओं से विवाह कर लिए।[46] चीनी इतिहास कि प्रसिद्ध किताब ज़ीज़ी टोंगजियान Zizhi Tongjian में एक दिलचस्प अंश इस प्रकार है: 'हालाँकि उस (सूज़ोंग) ने शुफांग में अपनी सेना मज़बूत कर ली थी लेकिन सूज़ोंग चाहता था कि विदेशों से भी मदद हासिल की जाए। चुनांचे उसने शूली, जो बिन का शहज़ादा Prince of Bin था के बेटे चैंगकाई Chengcai जो डुनहुआंग का शहज़ादा Prince of Dunhuang था को पूगू हुवाईन Pugu Huaien के नेतृत्व में एक सिफ़ारत हुई (मुसलमानों) के पास भेजी कि वो उनसे कुमक भेजने का अनुरोध करे। चुनांचे फ़र्ग़ाना और अन्य क्षेत्रों से मुस्लिम सेना एकत्र की गई और चीन भेजी गई।[47] राजा सूज़ोंग को ख़बर दी गई कि विदेशी फ़ौजें, अंशी Anxi, बीडिंग Beiding, फ़र्ग़ाना Ferghana और डाशी Dashi (अरब) से, लियांगज़ू Liangzhou और शानशान Shanshan में पहुंच चुकी हैं।[48] कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह फ़ौज अबू जाफ़र अलमंसूर ने नहीं भेजी थी बल्कि ख़ुरासान के गवर्नर ने ख़लीफ़ा के ईमा behalf पर भेजी थी। दूसरे इतिहासकारों का मानना है कि यह फ़ौज अलमुक़न्ना की बाग़ी फ़ौज ने भेजी थी क्यों कि यह लोग सफ़ैद कपड़े पहनते थे इस लिए उन्हें सफ़ैद जामिगान Sepid jamegan कहा जाता था और चीनी ज़बान में उन्हें बाई यी baiyi कहा गया। याद रहे सफ़ैद जामिगान उन लोगों

को कहा गया जो अबू मुस्लिम ख़ुरासानी के मानने वाले थे और जब अबू जाफ़र अलमंसूर ने अबू मुस्लिम को क़त्ल कर दिया तो उन लोगों ने अब्बासी हुकूमत के ख़िलाफ़ अलमुक़न्ना के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। यह लोग अबू मुस्लिम की विलायत (sainthood) के मानने वाले थे और ख़ुरासान के इलाक़े में आबाद थे जो चीन से क़रीब था। चुनांचे डाईज़ोंग ने अपने बाप सूजोंग के शासनकाल में 757 CE में अनलूशान के बेटे अनचिंगशू की फ़ौज को चांगान से मार भगाया और चांगान पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया।[49]

अरब समुद्री डाकुओं का गुआंगज़ू पर हमला

चीनी सूत्रों के मुताबिक़ 758 CE में कुछ अरब और ईरानी समुद्री लुटेरों ने गुआंगज़ू की बंदरगाह पर हमला कर दिया। गोदामों को लूट लिया, शहरों को आग लगा दी। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ यह लोग अरब और ईरानी सैनिक थे जिन्होंने शहर को लूटा, वहां का प्रीफेक्ट (प्रीफेकचर का गवर्नर) वी लीजियान Wei Lijian शहर से फ़रार हो कर छिप गया। इतिहासकारों ने इसकी जांच करने की कोशिश की है कि यह लोग कौन थे। कुछ लोग कहते हैं कि वे अरब और ईरानी समुद्री डाकू थे, कुछ कहते हैं कि वे सैनिक थे, और कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह लोग हायनानी जंगी सरदार Hainanese warlord फेंग रुफांग Feng Ruofang के आदमी थे। क्योंकि फेंग रुफांग हर साल कुछ ईरानी जहाज़ों पर हमला कर के उनको अपना ग़ुलाम बना लिया करता था। चुनांचे चीनी बौद्ध भिक्षु गांजिन Ganjin ने अपने सफ़र (यात्रा) की डायरी में तहरीर किया है कि 748 CE में उसका जहाज़ दक्षिणी हायनान Southern

Hainan में टूट गया तो वो हायनान में ठहरने पर मजबूर हो गया जहां उसे पता चला कि यहां का सरदार हर साल 2 या 3 ईरानी जहाज़ों पर हमला कर के मुसाफ़िरों को ग़ुलाम बना लेता है।[50]

यांगज़ू में मुसलमानों का नरसंहार 760 CE

760 CE में हुआईनान Huainan सर्किट में लियु ज़ान Liu Zhan नाम के एक शख़्स ने अपने भाई लियु यिन Liu Yin के साथ बग़ावत कर दी। शुरू में तो उन्होंने गवर्नर डेंग जिंगशान Deng Jingshan की फ़ौज को शूचैंग काउंटी Xucheng County में हरा दिया। लेकिन बाद में गो ज़ीयी Guo Ziyi के मशवरे पर डेंग जिंगशान ने पिंगलू Pinglu के एक जनरल टियान शेंगगोंग Tian Shengong को भर्ती कर लिया ताकि वो विद्रोह को कुचल सके। टियान शेंगगोंग की फ़ौज ने हांगज़ू खाड़ी Hangzhou Bay के जिनशान Jinshan स्थान पर पड़ाव डाला और विद्रोहियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई शुरू कर दी। शुरू में उसे शिकस्त हुई लेकिन बाद में उसने गुआंगलिंग Guangling के मुक़ाम पर लियु ज़ान की 8000 फ़ौज को शिकस्त दी। लियु ज़ान की आँख में एक तीर लगा जिससे वो ज़ख़मी हो गया और उस को पकड़ कर उसका सिर काट दिया गया। अब टियान शेंगगोंग इस इलाक़े का सबसे ताक़तवर आदमी बन चुका था। याद रहे अंशी विद्रोह के दौरान वो अनलूशान की तरफ़ से टांग हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ा था, इस वजह से वो टांग का एक मुजरिम बन चुका था और वो इस मौक़े का लाभ उठा कर टांग राजा को ख़ुश करना चाहता था। चुनांचे उसने यांगज़ू को अपना नया केंद्र बनाने के लिए चुना जो यांग्ज़ी Yangtze नदी और बड़ी

नहर के संगम Yangtze River and the Grand Canal पर था। यांगज़ू को अपना केंद्र बनाने कि वजह यह भी थी कि यांगज़ू में बड़ी संख्या में अमीर अरब और ईरानी व्यापारी रहते थे। जिनके पास विदेशी क़ीमती सामान होता था और टियान शेंगगोंग यह सामान लूट कर टांग राजा को तोहफ़े में देना चाहता था, ताकि टांग राजा उस से खुश हो जाए। इस लिए टियान शेंगगोंग ने अपनी फ़ौज के साथ यांगज़ू पर हमला कर दिया और हज़ारों अरब और ईरानी ताजिरों को मार कर उन का माल लूट लिया। एक वजह यह भी बताई कि दो साल पहले 758 CE में अरब और ईरानी व्यापारियों ने गुआंगज़ू में लूट मार की थी जिसका बदला लेने के लिए यह कार्रवाई की गई। चुनांचे टियान शेंगगोंग ने वो लूटा हुआ क़ीमती सामान जिसमें सोना चांदी भी था, चांगान जा कर टांग राजा को उपहार के तौर पर दे दिया। इस घटना को हम चीन में मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहला दंगा कह सकते हैं जिसमें हज़ारों मुसलमान मारे गए थे।

राजा वूज़ोंग के शासनकाल के दौरान

टागं के सम्राट वूज़ोंग (r. 2 जुलाई, 814-अप्रैल 22, 846) के शासनकाल के दौरान, हजारों मुसलमानों ने पश्चिमी सीमाओं से चीन में प्रवेश किया और सम्राट से विनती की, कि राजा उन्हें अपनी प्रजा के रूप में स्वीकार करे। राजा ने स्वीकार कर लिया और उन्हें गांसू और शानक्सी क्षेत्रों में बसने की अनुमति दी।[51]

गुआंगज़ू में मुसलमानों का नरसंहार 878 CE

बाद में, जब टांग साम्राज्य का पतन हुआ, तो टांग सरकार के ख़िलाफ़ कई विद्रोह हुए, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध विद्रोह का नेतृत्व हुआंग चाओ नामक व्यक्ति ने किया था, इसलिए इसे हुआंग चाओ विद्रोह Huang Chao Rebellion कहा जाता है। चुनांचे हुआंग चाओ की सेना ने 878 या 879 ई. में गुआंगज़ू शहर में प्रवेश किया और वहां मुसलमानों का भी नरसंहार किया।[52] उस समय गुआंगज़ू में मुसलमानों की एक बड़ी आबादी थी, जो सभी व्यापारी और समृद्ध थे[53], लेकिन वहां की चीनी आबादी के मन में यह धारणा बन गई थी कि इन विदेशी व्यापारियों ने हमारे देश के व्यापार पर कब्ज़ा कर लिया है, और वह इस बात पर भी गुस्सा थे कि मुसलमानों को टांग शासकों का संरक्षण प्राप्त है। इस कारण विद्रोही, जो कि सरकार के शत्रु थे, मुसलमानों को भी अपना शत्रु मानने लगे। इसलिए, विद्रोहियों ने विदेशियों का अंधाधुंध नरसंहार शुरू कर दिया, जिसमें बड़ी संख्या में अरब (दाशी) और ईरानी (बोसी) मुसलमानों को निशाना बनाया[54], जबकि थोड़ी संख्या में ईसाई और पारसी भी मारे गए।[55] ऐसा कहा जाता है कि 120,000 से 200,000 B.C के बीच अमीर अरब और ईरानी व्यापारी मारे गए।[56] इसे आम तौर पर कैंटन नरसंहार Canton Massacre कहा जाता है।

राजा शुआनज़ोंग 宣宗 के दौर में

टांग राजवंश में शुआनज़ोंग नाम के दो सम्राट हुए हैं। पहला है ली लोंगजी Li Longji, जो रुई ज़ोंग का उत्तराधिकारी बना और टांग राजवंश के 6 वां राजा बना जिस ने 713 से 756 ईस्वी तक शासन किया। इसी के ज़माने में अंशी या अनलूशान विद्रोह हुआ। दूसरा शुआनज़ोंग वह है (810-859 ईस्वी), जिसका वास्तविक नाम ली चेन Li Chen था। वह टांग राजवंश के 14 वें सम्राट के रूप में वूज़ोंग का उत्तराधिकारी बना। लेकिन चीनी भाषा में दोनों के लिए अलग-अलग शब्द हैं, ली लोंगजी का लक़ब 玄宗 (Mysterious Zong/ xuán zōng) है जबकि ली चेन का लक़ब 宣宗 (Declare Zong/ xuān zōng) है।



Sailing across the Indian Ocean. From Hariri's *Maqamat*.

मुक़ामात हरीरी में मुस्लिम जहाज़रानी की एक तस्वीर

ली चेन के दौर में, व्यापारी सुलेमान अल-ताजिर Sulaiman al-Tajir चीन आया और गुआंगज़ू में रहा। उस ने देखा कि चीनी लोग बाहर से आए लोगों की पहचान करने के लिए अंगूठे के निशान का इस्तेमाल करते हैं। विदेशियों से उनके माल पर भी कर (tax) वसूला जाता है। उस ने यह भी लिखा है कि चीन का समुद्री मार्ग असुरक्षित है क्योंकि वहां समुद्री डाकू मिलते हैं और बारिश बहुत होती है। उस ने लिखा कि गुआंगज़ू में स्थानीय मुसलमानों की मस्जिदें और बाज़ार हैं और उनके अपने न्यायाधीश और इमाम हैं। उस ने वहां चीनी मिट्टी के कारखाने, अनाज भंडारण व्यवस्था और चाय का प्रयोग देखा, तथा वहां की नगरपालिका व्यवस्था का भी उल्लेख किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार ओटो फ्रैंक लिखता है कि 798 ई. में, हारुन अल-रशीद ने टांग दरबार में एक प्रतिनिधिमंडल भेजा था, लेकिन इसके अलावा और कुछ भी दर्ज नहीं है कि यह दूत राजा को प्रणाम करने के लिए झुके थे या नहीं, जिसे चीनी भाषा में को टो Kowtow कहा जाता है।[57] 966 ई. में सोंग सरकार ने अरब में भी एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। 924-1207 ई. के दौरान 55 अरब प्रतिनिधिमंडलों के चीन आने का उल्लेख चीन के इतिहास में मिलता है।[58]

बग़दाद से गुआंगज़ू तक समुंदरी रास्ते

कई यात्री और इतिहासकारों ने अपनी किताबों में चीन और अरब के बीच के समुद्री मार्गों का भी उल्लेख किया है। जॉर्ज होरानी George Hourani ने अपनी किताब Arab Seafaring 'अरबों की समुद्री यात्रा' में लिखा है कि ईरान की खाड़ी से मोती नदी Pearl River होता हुआ जो रास्ता था वो अरब-और-चीन

के बीच सफ़र (यात्रा) के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होता था। 16 वीं सदी (16 century CE) तक जहाज़ों की सबसे ज़्यादा यातायात इसी रास्ते पर थी। इसके बाद यूरोपीय लोगों ने जहाज़रानी में तरक़्क़ी की। चीनी इतिहासकार जिया डान ने अपनी किताब में दो रास्तों का तज़किरा किया है। एक रास्ता दक्षिणी भारत के तट के पास से होता हुआ, अल-उबुल्लाह al-Ubullah (Apologus) तक जाता था, जो फ़ारस की खाड़ी Persian Gulf की एक बंदरगाह थी। और दूसरा मार्ग अफ्रीका के पूर्वी तट के साथ-साथ अल-उबुल्लाह तक जाता था। इसका मतलब अल-उबुल्लाह पर दोनों रास्ते मिल जाते थे।
एक और ज़िक्र चीन के रास्ते का इब्न खोरदाबेह (d.912 CE) की किताब 'किताब अल-मसालिक वा अल-मामालिक' (सड़क और राज्यों की पुस्तक) में मिलता है। यह इब्न खोरदाबेह, अब्बासी ख़लीफ़ा अल-मुतामिद का ख़ुफ़िया अधिकारी था। उसके अनुसार यह मार्ग बसरा से शुरू होकर फ़ारस की खाड़ी Persian Gulf, ओमान, अदन, भारत के तट, सीलोन, कंबोडिया, मलेशिया से होकर ख़ानफू (आज का गुआंगज़ू) तक पहुँचता था। उस के मुताबिक़ बग़दाद से गुआंगज़ू तक पहुंचने में 90 दिन लगते थे।

प्रमुख जहाज़ों के मलबे Major Shipwrecks

चीन में कई जगह समुद्र के किनारे दुर्घटना ग्रस्त जहाज़ों के मलबे मिले हैं जिनमें मिलने वाले समान से भी चीन-ओ-अरब के बीच व्यापारिक संबंधों का पता चलता है। चुनांचे जब अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफ़र अलमंसूर ने दजला नदी के किनारे अपनी नई राजधानी बग़दाद की स्थापना की तो कहा कि “अब हमें

चीन से कोई अलग नहीं कर सकता" और इसके बाद अरब-ओ-चीन के बीच व्यापारिक आमद-ओ-रफ़्त (यातायात) कई गुना बढ़ गई। इसी दौरान कई जहाज़ दुर्घटनाओं के भी शिकार हुए जिनमें से कई के मलबे हाल ही में मिले हैं। उनमें सबसे मशहूर बेलितुंग द्वीप Belitung Island का मलबा है जो 1998 CE में मिला था। बेलितुंग Belitung, इंडोनेशिया का एक द्वीप है जो सुमात्रा Sumatra और बोर्नियो Borneo द्वीपों के बीच स्थित है।[59] यह मलबा बेलितुंग जज़ीरे से एक समुंदरी मील nautical mile की दूरी पर मिला है। बुनियादी तौर पर यह एक माल बर्दार जहाज़ था जो लकड़ी के तख़्तों से बना हुआ था जिनको आपस में बाँधा गया था।[60] इस के मलबे से लगभग 60 हज़ार चीनी मिट्टी के बर्तन या उनके टुकड़े मिले हैं जिनसे चीन-ओ-अरब के दरम्यान बड़े पैमाने पर व्यापारिक गतिविधियों का पता चलता है। दूसरा मलबा मोती नदी Pearl River की एक नहर में मिला है इस में भी बड़ी संख्या में चीन के बर्तन मिले हैं। इस को इंतान मलबा Intan Wreck कहा जाता है। यह मलबा सुमात्रा से 40 समुद्री मील की दूरी पर स्थित है। कार्बन डेटिंग से उसका ज़माना 10 वीं शताब्दी ई.पू. 10^{th} century CE पता चलता है। इस में चीनी मिट्टी के बर्तन, सिक्के, चांदी की ईंटें silver ingots, आईने, लोहे का सामान, टिन की ईंटें, मलाई जज़ीरे के सिक्के और बढ़िया पेस्टवेयर वाली कैंडी और बोतलें fine-paste-ware kendis and bottles मिली हैं।

निष्कर्ष

टांग शासनकाल में मुसलमानों के हालात दोनों तरह के रहे मुवाफ़िक़ (अनुकूल) भी और मुख़ालिफ़ भी। कभी मुसलमानों का स्वागत हुआ। उनको चीन में आमंत्रित किया गया और रहने के लिए स्थान दिए गए और तरह तरह की सुविधाएँ दी गईं और कभी उनके ख़िलाफ़ दंगे भी हुए। इसी दौर में मुसलमानों और चीनियों के दरम्यान तलास के युद्ध हुए। इस दौर में चीनी मुसलमान, टांग शासकों से बहुत क़रीब थे और उनको विशेषाधिकार प्राप्त थे। हालाँकि मुसलमानों के साथ सबसे ज़्यादा दोस्ताना रवैया मिंग सरकार ने अपनाया इस लिए यह कहा जा सकता है मिंग सरकार के बाद मुसलमान सबसे ज़्यादा ख़ुशहाल टांग दौर में रहे।

अध्याय 3
सोंग राजवंश के दौरान मुसलमानों की स्थिति

第三章
宋代回民状况

Chapter Three
Conditions of Muslims during the Song Dynasty

परिचय

सोंग हुकूमत (960–1279 CE) के ज़माने में मुसलमान चीनी व्यापार पर छाए हुए थे, विशेषकर आयात निर्यात Import and Export में उनको ख़ास महारत हासिल थी। चुनांचे सोंग हुकूमत के ज़माने में गुआंगज़ू की बंदरगाह जो उस वक़्त चीन की सबसे बड़ी बंदरगाह थी उस का डायरेक्टर जनरल Director General of Shipping हमेशा कोई मुसलमान होता था। इस दौर में बड़ी संख्या में अरब और चीन के दरम्यान तिजारत होती और जहाज़ आया जाया करते। कुछ अरब ताजिर अरब वापस जाकर अपनी यात्रा की रोचक कहानियां कहानियां सुनाते थे, जिनमें से कुछ को अरब कहानीकारों ने अपनी कहानियों में शामिल किया जैसे क़मर उल-ज़मान और बुदूर की दास्तान Tale of Qamar al-Zaman and Budur, अल्फ़ लैला' One Thousand and One Nights (Arabian Nights) में बयान की गई। इसी तरह शहज़ादे सैफुलमुलूक की दास्तान Story of Prince Sayf al-Muluk और कुबड़े की दास्तान The Hunchback's Tale.[61]

बक़रा ख़ां

सोंग ख़ानदान के दूसरे राजा ताई चोंग (Taichong/Taizhong r. 976–997) के ज़माने में काशग़रिया का हाकिम बक़रा ख़ां था वो उस ज़माने में वाली ख़ुरासान के मातहत था। उसने चीनी तुर्किस्तान पर हमला कर के उस को अपने मा तहत कर लिया। वहां के बाशिंदों को ग़ुलाम बनाया और "तियान शान पहाड़" के शुमाल-ओ-जुनूब को उनकी सुकूनत के लिए नियुक्त कर दिया। चूँकि उनमें से

अक्सर मुसलमान थे, इस लिए उनको आज़ाद कर दिया और उनको ये इख़्तियार दिया गया कि जहां उनका जी चाहे रह सकते हैं। आज चीनी तुर्किस्तान और गान्सू में एक मुस्लिम क़बीला जो तूनगान दल (दोनग़ान) (डुंगन या टुंगन) के नाम से मशहूर है। मौजूदा लोगों का बयान है कि ये क़बीला उन लोगों की औलाद है जिनको बकरा ख़ां ने क़ैद किया था।[62]

चीन की तरफ़ मुसलमानों का प्रवास (हिजरत)

सोंग दौर (1031 CE) में अब्बासी हुकूमत का एक राजदूत और व्यापारी अबू अली, सोंग राजा रैनज़ोंग Emperor Renzong of Song (r. 24 March 1022–30 April 1063) के दरबार में पहुंचा और उस को उपहार भेंट किए। इस के बदले राजा रैनज़ोंग ने उसको 50,000 चांदी के औंस silver ounce दिए। इस के बाद अबू अली गुआंगज़ू में बस गया और एक चीनी जनरल की बेटी से शादी की। बाद में अली के वंशजों का पारिवारिक नाम पू Pu हो गया, उनको सोंग और युआन हुकूमतों में ऊंचे पद दिए गए, जैसे मंत्री, विधायक, सैन्य जनरल और कन्फ्यूशियस विद्वान और सौदागर व अन्य।[63]

सफ़र ख़ां का ख़ानदान

1028 में सफ़र ख़ां हाकिम-ए-बुख़ारा जो ग़ज़ तुर्क के क़बीले से था, चीन की राजधानी में आया और शाह-ए-चीन से मिला जिस की वजह से बादशाह-ए-चीन और मुसलमानों के ताल्लुक़ात और मज़बूत हो गए। रैनज़ोंग (Renzong r. 1022 –1063) जो कि ख़ानदान-ए-सोंग का चौथा राजा था, उसने सफ़र ख़ां

का शानदार इस्तिक़लाल किया और दरबार में उस को ख़ास मेहमान के तौर पर रखा। उनकी दोस्ती और ताल्लुक़ात ऐसे बंध गए कि बाद में कभी नहीं टूटे। सफ़र ख़ां के दो लड़के थे एक का नाम मेसरी और दूसरे का सैफ़ुद्दीन। बादशाह रैनज़ोंग ने मेसरी को रियासत "लू (Lu) का हाकिम नियुक्त कर दिया [रियासत लू आज का सूबा शांडोंग (Shandong) है] और उस को "लू कुआ कोन" (अमीर रियासत लू) का ख़िताब दिया और सैफ़ुद्दीन को "चू झिंग" (साहिब अल-बराका वल-करामा) के ख़िताब से नवाज़ा। सैफ़ुद्दीन का एक लड़का था शमस शाह के, उस को 'तातारियों' का रक्षक का ख़िताब दिया गया। शमस शाह की औलाद में से एक का नाम जमालुद्दीन था, ख़ानदान-ए-सोंग के दसवें राजा गाओजोंग (Gaozong r. 1127–1162) ने उस को सेना प्रमुख बनाया और कमालुद्दीन के बेटे महमूद को रियासत जीयोन चोंग (जो आजकल सूबा सिचुआन है) का शासक नियुक्त किया। महमूद को इस रियासत का हाकिम बनाने की वजह ये थी कि इस ज़माने में जुनूबी मग़रिबी चीन में एक क़बीला "कुन" का ज़हूर हुआ। ये क़बीला चीन की मग़रिबी सरहद पर बराबर हमले करता रहता। बादशाह को ख़ूब मालूम था कि सिर्फ़ मुसलमान ही इन सरकशों को ठीक कर सकते हैं। चुनांचे उसने महमूद को रियासत जीयोन चोंग का हाकिम बना दिया, और उस को हुक्म दिया कि इन सरकशों की शक्ति तोड़ने की तरकीब करे। महमूद ने ये हुक्म पाते ही एक हज़ार सवार तैयार किए और क़बीला "कुन" के मुक़ाबले के लिए रवाना हुआ। ये अपना लश्कर मग़रिबी चीन की जानिब ले गया और क़बीला कुन पर हमला कर दिया। फ़तहयाब हो

कर वो राजधानी आया और दरबार में हाज़िर हुआ और ख़ुद बादशाह-ए-चीन गाओजोंग से वो जंगी वाक़ियात बयान किए। गाओजोंग ने उस के कारनामों से ख़ुश हो कर उस को हाकिम-ए-हानियान (सूबा शंसी) के पद से सरफ़राज़ किया। महमूद के दो लड़के थे एक का नाम नासिरुद्दीन और दूसरे का हुसैन था। पहले को "हाफ़िज़ुल-अमन" (शांति बनाए रखने वाला) और दूसरे को "दाफ़े उल-मुल्क" (देश का रक्षक) के ख़िताब से नवाज़ा। नासिर के दो लड़के हुए "बयान" और "निसार"। बयान, "वयान वांग" (राष्ट्र का भरोसा) के लक़ब से मशहूर था और दूसरा "फॉन युआन वांग" (राष्ट्र सेवक) के ख़िताब से। बयान का लड़का "सैदुल (ये शायद सय्यिद अजल शम्सुद्दीन का नाम है) था, वो रियासत तियानया (मौजूदा युन्नान Yunnan) पर शासक बना।[64]

ग़रज़ कि ख़ानदान-ए-महमूद की हर पीढ़ी को सोंग राजाओं की तरफ़ से बड़ा एज़ाज़ो-इकराम मिलता रहा, उनको बड़े बड़े पदों पर नियुक्त किया जाता और वो सल्तनत के अरकान और बादशाहों के करीबी सहयोगी होते थे।

जब ये ख़बर चीनी तुर्किस्तान (शिंजियांग Xinjiang) के मुसलमानों के कानों में पड़ी कि चीन के राजा मुसलमानों के साथ बेहद अच्छा व्यवहार करते हैं तो उनमें से बहुत से लोग राजधानी पहुंचे, ताकि वो शाही फ़ौज में दाख़िल हो जाएं और बादशाह से एज़ाज़ो इकराम हासिल करें। इस तरह से बहुत से मुसलमान चीनी तुर्किस्तान से हिजरत कर के उत्तर पश्चिमी चीन आए और वहां के मुसलमानों की हैसियत को मज़बूत किया।[65]

राजा शेनज़ोंग के ज़माने में

1070 CE में सोंग राजा शेनज़ोंग Emperor Shenzong of Song (25 May 1048–1 April 1085) के ज़माने में लगभग (5300) मुसलमान बुख़ारा से चल कर चीन पहुंचे। शायद सोंग राजा ने उनको अपनी दुश्मन लियाओ हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए बुलाया था।[66] बाद में इन लोगों को सोंग की राजधानी काईफ़ेंग Kaifeng और येन्चिंग Yenching के बीच बसा दिया गया।[67] येन्चिंग को आज बीजिंग कहा जाता है। कहा जाता है कि सोंग ने उनको अपने और लियाओ हुकूमत Liao dynasty के बीच आड़ buffer zone के तौर पर बसाया था। बाद में 1080 CE में भी लगभग 10,000 लोग जिनमें मुसलमान मर्द और औरतें शामिल थे चीन आए और उत्तरी और उत्तर पूर्वी प्रांतों में बस गए, जैसे गान्सू Gansu, चिंगहाई Qinghai और निंगशिया Ningxia में।[68] इन बुख़ारा के लोगों के अमीर, शहज़ादा सय्यिद "सो-फ़ी-एर" Prince Amir Sayyid "So-fei-er" थे।[69] उनको चीन में मुसलमानों का सरदार माना जाता था। उनसे पहले इस्लाम को टांग और सोंग दौर में डाशी फ़ा Dashi fa 大食法 कहा जाता था जिसका मतलब है अरबों का क़ानून Law of the Arabs लेकिन सय्यिद "सो-फ़ी-एर" ने उसे बदल कर हुई हुई जियाओ Huihui-jiao 回回教 कर दिया जिसका मतलब है हुई हुई का धर्म The religion of the Huihui. इसी लिए बाद में मुसलमानों को हुई Hui कहा जाने लगा।[70] कहा जाता है कि उस ज़माने में कुछ सोंग अहलकारों ने अरब औरतों से शादियां भी कीं।[71] सोंग दौर में एक मुस्लिम चिकित्सक था जिसका नाम लियांग जी गू Liang Jie Gu था, वो

अपनी चिकित्सा महारत के लिए मशहूर था। उस का ख़ानदानी नाम लियांग Liang था उस के पूर्वज सोंग दौर में अरब से चीन आए थे और काईफ़ेंग में बस गए थे।[72]

ख़ानदान-ए-सोंग के ज़माने में बहुत से अक़्वाल अरबों के मुताल्लिक़ पाए जाते थे जैसे "मुसलमानों की आदत है कि वो अपने बेटों को फ़ुलां इब्न-ए-फ़ुलां के नाम से पुकारते हैं और अपनी बेटियों को फ़ुलां बिंत-ए-फ़ुलां के नाम से।[73]

अध्याय 4
युआन राजवंश के दौर में इस्लाम

第四章
元代伊斯兰教

Chapter Four
Islam during the Yuan Dynasty

ख़ानदान-ए-सोंग के ज़वाल के बाद जब मुग़ल लोग चीन के शासक बने तो मुसलमानों की तादाद ज़्यादा बढ़ने की वजह से उनका असर भी बढ़ गया। चंगेज़-ख़ाँ के चीन में दाख़िल होते वक़्त उस के मातहत जो फ़ौज थी उनमें से अक्सर क़बीला डुंगन के मुसलमान थे और उस के उत्तराधिकारी ओगदाई ख़ान (Ögedei Khan) के फ़ौजी तक़रीबन सब मुसलमान थे। ये लोग चीनी तुर्किस्तान आकर बस गए। तियानशान के उत्तर पश्चिम में जिन मुसलमानों ने सुकूनत इख़्तियार की वो चुग़ताई ख़ानदान से थे जिसकी असलियत मुग़ल थी। युआन दौर के रईसों में मुसलमानों के तादाद काफ़ी थी, तारीख़-ए-युआन में दर्ज है कि राजा रेंजोंग Buyantu Khan (Emperor Renzong) ने 1312 CE में एक शख़्स "हसन" नामी को अपना वज़ीर बनाना चाहा, मगर उसने पहले क़बूल नहीं किया, क्योंकि हसन मुग़ल दस्तूर से वाक़िफ़ था कि दरबार में उमूमन दो वज़ीर होते थे, एक वज़ीर एमन (दाएँ हाथ वाला) और दूसरा वज़ीर ऐसर (बाएँ हाथ वाला)। वज़ीर एमन का पद वज़ीर ऐसर से छोटा था, चूँकि बादशाह को इसरार था कि हसन को वज़ीर बनाया जाये इस लिए हसन ने सिर्फ वज़ीर ऐसर का ओहदा क़बूल किया, वज़ीर एमन के लिए बादशाह ने एक दूसरे शख़्स “बताश” नामी तुर्क को चुना।

तारीख़-ए-युआन में ये भी लिखा है कि मजलिस-ए-शूरा जो सूबाई हुकूमत से संबंधित थी, बादशाह उमूमन इस में मुग़ल मुसलमानों को नियुक्त करता था, अगर उनमें कोई क़ाबिल और लायक़ आदमी ना मिलता तो तुर्क मुसलमान चुने जाते, और अगर उनमें भी न मिलता तो हान को शामिल किया जाता।

आम तौर पर हान को चीनी कहते हैं। 1258 CE में ख़िलाफ़त-ए-अब्बासिया का ख़ातमा हो चुका था, और बग़दाद हलाकू के हाथों तबाह हो चुका था। बग़दाद में इलमी ज़िंदगी बिलकुल ख़त्म हो चुकी थी ऐसी हालत में किसी के गुमान में भी ये नहीं आ सकता था कि अरबी उलूम और फ़नून जैसे इल्म-ए-तिब्ब, इलम-ए-नुजूम और फ़न-ए-सिपहगरी वग़ैरा की तरबियत के लिए कहाँ जाया जाए।

युआन दौर की किताब "तज़किरतुल उमरा" में लिखा है कि "बादशाह शीजू" की तख़्तनशीनी के पहले साल 1227 में "इतिहास विभाग" क़ायम हुआ। बाद में जब इस महकमे का काम बढ़ गया तो बादशाह ने चीनियों और मुसलमानों में से पाँच अफ़सर चुन कर इस में नियुक्त किए ताकि इतिहास लेखन में मदद करें। महकमा फ़ौज में भी हज़ारों मुसलमानों के लिए दारुल इसतिफ़ता (जनमत संग्रह विभाग) की बुनियाद डाली जिसमें योग्य मुसलमान नियुक्त होते। महकमा फ़ौज में हज़ारों मुसलमान काम करते थे, जो फ़न-ए-सिपहगरी (युद्ध-कौशल) से वाक़िफ़ थे। 1346 CE में तोपची का ओहदा मुसलमानों के सुपुर्द किया गया, 1353 CE में सैन्य और नौसेना विभाग क़ायम किया गया, इस में तमाम फ़ौजियों के लिए ख़ास ख़ास पस्तियां होती थीं। दर्जा आं अव्वल की पस्ती वो थी जिसमें फ़ौजी आदमियों के दस हज़ार घर होते थे, दर्जा दोम की पस्ती में एक हज़ार घर होते थे और दर्जा सोम में की पस्ती में सिर्फ 300 घर होते थे। मुसलमान फ़ौजों के लिए दर्जा-ए-अव्वल की एक पस्ती और दर्जा-ए-दोम की भी एक पस्ती और दर्जा-ए-सोम की आठ पस्तियां थीं।

इन महकमों के अलावा खगोल (Astronomy) का विभाग भी था, बादशाह शीचू ने खगोल के माहिर जमालुद्दीन को 1258 CE में अपनी राजधानी में बुलाया और उस को खगोल विभाग का नाज़िम नियुक्त किया। जमालुद्दीन ने राजधानी में एक बेध शाला Observatory भी बनाई जिसमें तारों और आकाशगंगाओं की गति का अध्ययन किया जाता था।

शाही अस्पताल में "उपचार और दान का अफ़सर" का ओहदा था जो मरीज़ों के इलाज और दवा बांटने का नाज़िम था। दवाएं उमूमन फ़ौजियों, बेकसों, ग़रीबों और यतीमों में बांटी जाती थीं। 1284 CE में दो मुस्लिम अफ़सर भी शाही अस्पताल में नियुक्त हुए जो दारुल इलाज के ज़िम्मेदार थे। दारुल इलाज दो विभागों में बटा हुआ था। दवा बनाने वाला विभाग और दवा बांटने वाला विभाग, इन दोनों मुस्लिम अफ़सरों में से एक पहले विभाग का निगरां था और दूसरा दूसरे विभाग का।

जहां तक अदालत का ताल्लुक़ है "तारीख़-ए-युआन से मालूम होता है कि मुसलमानों के लिए खास अदालत थी, चुनांचे ये ज़िक्र मिलता है कि

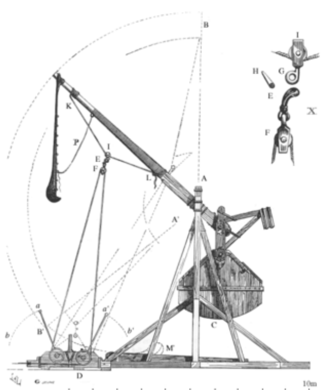
"शेख़ अल-हादी का काम ये है कि मज़हबी रुसूम अदा करे, दुआ-ओ-नमाज़ में मशग़ूल रहे और क़ुरान लोगों को सुनाए और क़ाज़ी मुक़द्दमों का फ़ैसला करे"।

इन बातों से मालूम होता है कि युआन हुकूमत में बादशाह अहम और ज़रूरी मामलात में मुसलमानों से मशवरा करता और उनको बड़े बड़े पदों पर नियुक्त करता था।

पू शूगैंग

जब युआन राजवंश (1271-1368 ई.) ने सोंग राजवंश पर विजय प्राप्त की और चीन पर अपना शासन स्थापित किया, तो कहा जाता है कि एक मुसलमान जिसका नाम पू शूगैंग Pu Shougeng था।[74] उस का ख़ानदान मध्य एशिया से आकर सिचुआन में आबाद हो गया था। उस का ख़ानदानी नाम पू था शायद यह अरबी का "अबू" है। चुनांचे 1250 CE में उस को सोंग हुकूमत ने क़ुआनज़ू में जहाज़रानी व्यापार का अधीक्षक Superintendent of Shipping Trade in Quanzhou बना दिया। इस पद पर वो 30 साल रहा और बहुत मालदार हो गया।[75] लेकिन जब मंगोलों ने सोंग हुकूमत पर हमला किया तो सोंग हुकूमत ने जब उस की दौलत ज़ब्त करना चाही ताकि जंग में उस का प्रयोग कर सके तो वो पाला बदल कर मंगोलों से जा मिला, भले ही मंगोलों ने अभी तक इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया था। और उसने जियांगशी के सहायक सिविल पार्षद Assistant Civil Councillor पर हमला कर दिया जिसमें सोंग सरकार हार गई और जियांगशी में उसकी आखरी चौकी भी युआन सरकार के हाथ लग गई। दूसरी रिवायत में है कि उसने अरब और ईरानी ताजिरों की एक फ़ौज के साथ सोंग शाही ख़ानदान पर हमला कर दिया और सोंग राजा के कई रिश्तेदारों को मार डाला।[76] बाद में जब मंगोलों ने अपनी हुकूमत स्थापित की जिसको युआन हुकूमत कहा जाता है तो उन्होंने पू शूगैंग को इस का इनाम दिया और उसे फ़ुजियान Fujian में प्रांतीय सचिवालय के 2 कार्यकारी सहायकों में से एक बना दिया executive assistants to the provincial secretariat. दूसरी रिवायत में है

कि उस को फ़ुजियान और गुआंगडोंग Guangdong का सैन्य आयुक्त Military commissioner बना दिया। उस का ख़ानदान मशहूर ख़ानदानों में था जिसको बाद में इसपाह विद्रोह Ispah Rebellion के दौरान हिंसा का निशाना भी बनाया गया और मिंग हुकूमत ने भी उस के ख़ानदान वालों को कोई पद नहीं दिया क्यों कि उन्होंने सोंग हुकूमत को धोका दिया था।[77] युआन हुकूमत के दौरान मुसलमान बड़ी संख्या, में चीन पहुंचे और ऊंचे ओहदों पर रहे। चुनांचे युआन दौर में हुई मुसलमानों की संख्या 50,000 से बढ़कर 400,000 हो गई थी।



"Muslim trebuchet" in China (Huihui Pao)

युआन हुकूमत के दौर में मुसलमानों का सियासी मुक़ाम

चंगेज़ ख़ाँ की हुकूमत जब चीन में क़ायम हुई तो उसने अपने पोते क़ुबलाई ख़ान को चीन का राजा बना दिया और ख़ुद वापस लौट गया। चूंकि मंगोलों का संबंध चीन से नहीं था इस लिए क़ुबलाई ख़ान, हान बहुसंख्यक समुदाय से डरता था कि कहीं वो हमारे ख़िलाफ़ विद्रोह न कर दें इस लिए वो हान लोगों को ऊंचे पद देना नहीं चाहता था। इस लिए क़ुबलाई ख़ान ने मध्य एशिया से अपने मफ़्तूहा इलाक़ों (विजित क्षेत्रों), जैसे बुख़ारा, समरक़ंद, नीशापूर से बहुत बड़ी संख्या में मुसलमानों को चीन बुलाया ताकि उन्हें सरकारी पद दे सकें। चुनांचे युआन दौर में चीन को 12 सूबों (प्रांतों) में बाँटा गया। ईरानी इतिहासकार रशीदुद्दीन हमदानी के मुताबिक़ क़ुबलाई ख़ान के ज़माने में 12 में से 8 के गवर्नर मुसलमान थे और बाक़ी 4 के उप गवर्नर मुसलमान थे। युआन हुकूमत के ज़माने के ऐतिहासिक दस्तावेजों में 10,000 मुसलमानों के नाम पाए जाते हैं। उस ज़माने में मुसलमानों को हुई हुई कहा जाता था और उनके के सरदार का नाम अमीरुद्दीन था जिसको चीनी ज़बान में Yeheidie'erding (Amir al-Din) कहते थे, जिनको ख़ान बलीक़ Khanbaliq भी कहा जाता है। 1244 में अब्दुर्रहमान नाम के शख़्स को शाही ख़ज़ाने का कार्यकारी नियुक्त किया गया और उसे चीनी लोगों पर लगाए गए टैक्स को इकट्ठा करने की अनुमति दी गई।

चुनांचे क़ुबलाई ख़ान के ज़माने के एक चीनी इतिहासकार ने इस बात की शिकायत की, कि क़ुबलाई ख़ान सिर्फ़ अरबों, तुर्कों और ईरानियों को ऊंचे पद देता है जबकि हान लोगों को वो ऊंचे ओहदे नहीं देता। मार्को पोलो जो क़ुबलाई ख़ां के ज़माने में 1275 से 1292 तक चीन में रहा उसने लिखा है कि युन्नान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में मुस्लिम आबादियां मौजूद थीं। इसी तरह 14 वीं सदी के एक इतिहासकार ने लिखा है कि युन्नान की राजधानी तालिफ़ू Talifu के सारे निवासी मुसलमान थे। इब्न-बतूता जिसने 14 वीं सदी के बीच में चीन का दौरा किया वो लिखता है कि तटीय शहरों में उसके हम मज़हबों ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया और हर कस्बे में मुसलमानों के विशेष क्वार्टर या बस्तियाँ थीं जहाँ उनकी मस्जिदें भी थीं। और चीनी लोग उनका बहुत सम्मान करते थे।

शाहरुख मिर्ज़ा के पत्र

थॉमस अर्नाल्ड ने अपनी किताब में लिखा है कि युआन हुकूमत के शहंशाहों ने आस-पास की सल्तनतों से दोस्ताना ताल्लुक़ात भी बनाए, जिनमें तैमूरी शासक भी थे जो चीन की उत्तरी सीमाओं पर थे। उनमें से एक दफ़ा जब 1412 में चीनी सिफ़ारत (प्रतिनिधि मंडल) तैमूरी शहज़ादे शाहरुख बहादुर की तरफ़ गई जो समरक़ंद का शासक था, तो उसने सिफ़ारत की वापसी पर टांग बादशाह को ख़त लिखा और अपना एलची भी साथ भेजा। लेकिन लेखक की तहक़ीक़ के मुताबिक़ 1412 में युआन हुकूमत नहीं थी हालाँकि थॉमस अर्नाल्ड ने युआन हुकूमत लिखी है। बल्कि चीन में उस समय दो हुकूमतें क़ायम थीं। एक तो उत्तरी

युआन Northern Yuan जिसमें 1412 में दो बादशाह हुए, एक तो अलजेई तैमूर खान Öljei Temür Khan (r. 1408-1412) और दूसरा था उसका उत्तराधिकारी दिलबेग ख़ान Delbeg Khan (r. 1412-1415) और दूसरी हुकूमत थी मिंग सल्तनत Ming dynasty जिसका राजा था योंगले शहनशाह (r.1402-1424)। अब यक़ीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता कि इन तीनों में से किस बादशाह के पास ये ख़त गया था लेकिन संभवत योंगले बादशाह के पास ही गया होगा क्योंकि वो ही ज़्यादा-तर आस-पास के बादशाहों के पास सिफ़ारतें भेजा करता था ख़ासकर मुस्लिम शासकों के पास और उसी ने ज़ेंग हा Zheng He को भी इसी मक़सद से समुंद्री यात्राओं पर भेजा था जिसका ज़िक्र तफ़सील से बाद में दिया जाएगा।

याद रहे ये शहज़ादा शाहरुख मिर्ज़ा (r. 1405-1477) सल्तनत तैमूरिया का बादशाह था और उलुग़ बेग जो मशहूर खगोल विज्ञानी था, उस का पिता था। ये दो पत्र थे जिनमें से एक अरबी में था और एक फ़ारसी में था, जिनको हम यहां नक़ल कर देते हैं, जो थॉमस अर्नाल्ड ने अपनी किताब में ज़िक्र किए हैं।

“शुरू ईश्वर के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम करने वाला है। कोई ईश्वर नहीं सिवाए अल्लाह के, और मुहम्मद (स.), उस के ईशदूत हैं। ईशदूत मुहम्मद (स.) ने कहा: 'मेरी मस्जिद में ईश्वर के निर्देशों का पालन करने वाले लोग रहेंगे। जो कोई उनकी मदद करने में नाकाम रहे या उनका का विरोध करे वो कभी सफलता नहीं पाएगा जब तक कि ईश्वर का संकेत न आजाए'। जब ईश्वर ने आदम (अ.) और उन की पीढ़ी को पैदा करने का इरादा किया तो उसने

कहा कि, 'मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना था, लेकिन ये मेरी इच्छा और ख़ुशी थी कि मैंने इनसान को इसलिए पैदा किया, कि वो मुझे पहचाने'। उसकी शक्ति महान है और उसका वचन पक्का है। इंसान की रचना का मक़सद ईश्वर को पहचानना और सही मार्गदर्शन और आस्था का झंडा ऊंचा करना है। इसलिए उसने अपने ईशदूत को सच्चे धर्म के मार्गदर्शन साथ भेजा ताकि वो सब पर विजय प्राप्त करे। हालाँकि अज्ञानी लोग उस से मुँह मोड़ लेते हैं। ईशदूत के आने का मक़सद ये है कि वो ईश्वर का क़ानून बताए और जायज़ और नाजायज़ का पालन बताए। और उसने उसे क़ुरान चमत्कारिक तौर पर दिया ताकि उस के ज़रिये अज्ञानी लोगों को ख़ामोश कर दे। और जब वो उस के साथ वाद-विवाद करें तो उनका मुँह-बंद कर दे। उस ने अपनी पूर्ण कृपा, अपने सर्वव्यापी मार्गदर्शन और अपनी शक्ति से हर युग में सच्चे धर्म को स्थापित किया है। ईशदूत ने दुनिया के कई हिस्सों में, पूर्व और पश्चिम में शक्तिशाली सेना के साथ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। लोगों को अच्छे काम करने का आदेश देना और बुरे कामों से रोकना उस का मक़सद था। और वो एकेश्वरवाद पर आस्था के ज़रिये उनमें से बुतपरस्ती और अज्ञानता को दूर करता है। ताकि न्याय कायम हो और शांति स्थापित हो और लोगों के सिर पर ईश्वर का आशीर्वाद स्थापित हो। इस प्रकार सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे दिलों को अपनी दया और कृपा से और शुद्ध धर्म के नियमों से उज्ज्वल मार्ग की ओर निर्देशित करता है। वह हमें अपने सभी मामलों और विवादों में ईशदूत के धर्म और उपदेशों के अनुसार न्याय करने का आदेश देता है और मस्जिदों, स्कूलों, मठों

और पूजा स्थलों का निर्माण करने का भी आदेश देता है। ताकि न तो धर्म के विद्यालय समाप्त हों और न ही धर्म की याददाश्तें ख़त्म हों। यह देखते हुए कि सांसारिक समृद्धि और वर्चस्व और सरकार का अस्तित्व सत्य और धार्मिकता के समर्थन और मूर्तिपूजा और अविश्वास के कारण पृथ्वी में पैदा हुई बुराइयों के विरोध पर निर्भर है। हम ईश्वरकृपा की आशा करते हैं। इसलिए आशा है कि महामहिम और आपके देश के उच्च वर्ग के लोग इन मामलों में हमसे सहमत होंगे और स्थापित क़ानून (इसलाम) की नींव को मजबूत करने में हमारा समर्थन करेंगे।[78]

फ़ारसी में लिखा गया दूसरा पत्र, बिना किसी उपाधि या शिष्टाचार के सीधी अपील करता है। ईश्वर ने अपने ज्ञान की गहराई और अपनी शक्ति के चमत्कार के साथ हज़रत-ए-आदम को पैदा किया। उनके कुछ बेटों को सन्देश वाहक और दूत बनाया, जैसे इबराहीम, मूसा, दाऊद और मुहम्मद (स.) को अपने दूत के रूप में लोगों के पास भेजा, और हर सन्देश वाहक लो एक किताब और एक क़ानून दिया। उन्होंने अपने अपने समय के लोगों को उस क़ानून और धर्म का पालन करने का आदेश दिया, मूर्तियों की पूजा करने से मना किया और यद्यपि इनमें से प्रत्येक दूत के पास एक अलग क़ानून था, पर वे सभी एकेश्वरवाद पर सहमत थे। लेकिन जब पैगंबर का पद मुहम्मद (स.) को दिया गया, तो सभी पिछले कानूनों को निरस्त कर दिया गया। वह आखिरी समय के दूत और संदेश वाहक थे, और दुनिया के सभी राजा और मंत्री, अमीर और गरीब, छोटे और बड़े, इस क़ानून का पालन करने और सभी पूर्व मान्यताओं और कानूनों को

त्यागने के लिए बाध्य हैं। यही सच्चा और पूरा धर्म है और इसी को इस्लाम कहते हैं। कुछ साल पहले, चंगेज खान ने हथियार उठाए और अपने बेटों को विभिन्न देशों और साम्राज्यों में भेजा। जोची Jochi को सराय Saray, क़रिम Qrim और दश्त क़फ़्चाक़ Dasht Qafchaq की तरफ़, जहाँ कुछ राजा, जैसे उज़्बेक खान, चानी खान और उरुस खान (Uzbek Khan, Chani Khan and Urus Khan) मुस्लिम बन गए, और मुहम्मद (स.) के क़ानून के पाबंद हो गए। हलाकू खान ने ख़ुरासान, इराक और पड़ोसी देशों पर शासन किया और उसके कुछ बेटों ने अपने दिलों में मुहम्मद के क़ानून की रोशनी पाई और मुसलमान बन गए। इसके बाद राजा, ग़ज़ान खान Ghazan Khan, और ओल्जेतू Öljeitü सुल्तान और भाग्यशाली राजा अबू सईद बहादुर खान Abu Sa'id Bahadur Khan ने इस्लाम का आशीर्वाद प्राप्त किया। यहां तक कि मेरे पिता माननीय अमीर तैमूर गुर्गान Temur Gurgan सिंहासन पर बैठे। उन्होंने अपने शासनकाल के दौरान सभी देशों में मुहम्मद (स.) के क़ानून का पालन किया और लोगों ने उनके शासनकाल में पूर्ण समृद्धि का आनंद लिया। अब, ईश्वर की कृपा से ख़ुरासान, इराक, नील नदी के पार आदि का यह साम्राज्य मेरे हाथों में आ गया है, पूरा राज्य शुद्ध इस्लाम के कानूनों के अनुसार शासित है। मेरी सरकार में अच्छाई का आदेश दिया गया और बुराई को वर्जित किया गया। यार्गू Yarghu और चंगेज खान की संस्थाओं को समाप्त कर दिया गया।

तब से, यह निश्चित है कि न्याय के दिन मुक्ति और वर्तमान दुनिया में राज्य और समृद्धि, सच्चे विश्वास, इस्लाम और सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा पर निर्भर है।

यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी प्रजा के साथ निष्पक्षता और न्यायपूर्ण व्यवहार करें। मुझे आशा है कि ईश्वर की कृपा और दया से, आप भी ईश्वर के दूत मुहम्मद (स.) के क़ानून का पालन करेंगे और इस्लाम धर्म को मजबूत करेंगे, ताकि आप इस दुनिया की अस्थायी संप्रभुता के बदले परलोक की शाश्वत संप्रभुता प्राप्त कर सकें।"

इतिहासकारों का मानना है कि शायद इसी वजह से चीन में यह अफवाह फैल गई थी कि चीनी राजा मुसलमान बन गया है। सैय्यद अली अकबर, एक मुस्लिम व्यापारी जो 15 वीं सदी के अंत और 16 वीं सदी की शुरुआत में पीकिंग में रहा था, उस ने लिखा है कि चीनी शहर केनजानफ़ू Kenjanfu में 30,000 मुस्लिम परिवार रहते थे। जिन्हें राजा का पूर्ण संरक्षण प्राप्त है तथा टेक्स से पूर्ण छूट प्राप्त है। इसके अलावा राजा ने उन्हें जागीरें भी दीं। उन्हें अपने धर्म का पालन करने की पूरी आज़ादी है और लोगों को इस्लाम अपनाने की पूरी आज़ादी है। राजधानी में चार बड़ी मस्जिदें हैं और अन्य सभी प्रांतों में 90 से अधिक मस्जिदें हैं, जो सभी राजा के खर्च पर बनाई गई हैं।[79]

वैज्ञानिक गतिविधियाँ

14 वीं सदी ईसवी में एक ईरानी खगोल शास्त्री जमालुद्दीन ने क़ुबलाई ख़ान को उपहार के रूप में 7 फ़ारसी खगोलीय उपकरण Seven Persian astronomical instruments भेंट किए। क़ुबलाई ख़ान जिसे राजा शीज़ू Emperor Shizu भी कहा जाता है उसने ईरान से कुछ खगोल शास्त्रियों को बीजिंग में एक वेधशाला observatory बनाने के लिए आमंत्रित किया। इसी दौर में एक मुस्लिम

जुग़राफ़िया दां (भूगोल-शास्त्रज्ञ) की किताब चीन पहुंची जिस की मदद से बाद में मिंग हुकूमत के दौर में दुनिया का पहला नक़्शा बनाया गया जिसको डा मिंग हुन यी टू Da Ming Hun Yi Tu कहा जाता है। मुसलमानों की चिकित्सा की किताबें भी उस दौर में चीन पहुंची जैसे शरीर रचना विज्ञान anatomy, औषध शास्त्र pharmacology और नेत्र विज्ञान ophthalmology।[80] इब्न सीना Ibn Sina की चिकित्सा उत्कृष्ट कृति Medical masterpiece “अल- क़ानून” Al-Qanun fi'l-tibb (The Canon of Medicine) भी इस दौरान चीन पहुंची और उसका एक बड़ा हिस्सा चीनी भाषा में अनुवादित कर के चीनी चिकित्सा पुस्तक हुई हुई याओ फांग Hui Hui Yao Fang में शामिल किया गया। उसके अनुवाद के लिए क़ुबलाई ख़ान ने सीरिया के नसतूरी ईसाई अनुवादक “ईसा तर्जुमान” को नियुक्त किया।[81] इस अवधि के दौरान गुआंगज़ू चीन की सबसे बड़ी कारोबारी (commercial) बंदरगाह बन गई थी, क्योंकि मुस्लिम देशों से व्यापारी जहाज़ बड़ी संख्या में यहाँ आते-जाते थे।

युद्ध विज्ञान

क़ुबलाई ख़ान ने वसती एशिया के मुस्लिम इलाक़ों से नए हथियार चीन मंगवाए जिनमें सबसे मशहूर फ़ुनूने हर्ब के माहिरीन इस्माईल और अलाउद्दीन की तैयार की हुई मंजनीक थी जिसको चीन में "मुस्लिम ट्रेबुचेट" हुई हुई पाओ Huihui Pao कहा जाता था, चुनांचे उस का इस्तेमाल मंगोल फ़ौज ने 1273 CE में शियांगयांग की जंग Battle of Xiangyang में किया।

ख़ान बलीक़

ख़ान बलीक़ को हान वास्तुकला (Han Architecture) का विशेषज्ञ माना जाता था। उनका असली नाम अमीरुद्दीन (Amir al-Din) है जिसका चीनी उच्चारण Yeheidie'erding है लेकिन उनको आम तौर पर ख़ान बलीक़ Khanbaliq कहा जाता है, उनकी मृत्यु 1312 ईस्वी में हुई थी।[82] जब युआन राजवंश की स्थापना हुई तो क़ुबलाई ख़ान ने अपनी नई राजधानी बनाने कि योजना बनाई जिसका नाम ज़ोंगडू Zhongdu रखा गया जिसका मतलब होता है केंद्रीय राजधानी, और उस को दादू Dadu भी कहा जाता है। उस शहर का मुख्य वास्तुकार Chief architect लियू बिंगज़ोंग Liu Bingzhong था लेकिन सहायक वास्तुकार Assistant architect के तौर पर अमीरुद्दीन ने उस का डिज़ाइन बनाया और उस के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[83] इस शहर का निर्माण 1274 ई. में शुरू हुआ था। इस का डिज़ाइन प्राचीन कन्फ्यूशियस सिद्धांतों पर रखा गया था जिसको ज़ूली कहा जाता है। इसके अनुसार सामने महल और पीछे दुकानें बनाई गईं। देवताओं के पूजा स्थल दाहिने हाथ पर और पूर्वजों के पूजा स्थल उल्टे हाथ पर बनाए जाते थे। बाद में, क़ुबलाई ख़ान ने शहर का नाम बदलकर 'ख़ान बलीक़' रख दिया, हालाँकि इसका निर्माण 1293 ई. तक पूरा नहीं हुआ था। जब मिंग राजवंश के पहले सम्राट ज़ू यूआनजांग Zhu Yuanzhang ने 1368 ई. में ख़ान बलीक़ पर हमला किया, तो अंतिम युआन सम्राट शांगडू Shangdu भाग गया और शहर को तहस-नहस कर दिया गया, उसके बाद मिंग सम्राट होंगवू Hongwu Emperor ने उसका नाम बदल बदलकर बीपिंग Beiping कर दिया जिसका मतलब होता है "शांत उत्तर" Pacified North। होंगवू शहंशाह की जगह उस के नौजवान पोते जियान वैन शहंशाह Jianwen

Emperor ने संभाली। अपने ताक़तवर चचाओं की जागीरों पर लगाम लगाने की उस ने कोशिश की तो उसके चाचाओं ने उस के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया जिस को जिंगनान विद्रोह Jingnan Rebellion कहते हैं जिस के नतीजे में उस के चचा, यान के शहज़ादे Prince of Yan ने उस को शिकस्त देकर बीपिंग पर क़ब्ज़ा कर लिया और योंगले राजा Yongle Emperor के लक़ब से तख़्तनशीन हो गया। उसने फ़ौरी तौर पर अपनी राजधानी यिंगटियान Yingtian {नानजिंग (Nanjing)} से बीपिंग Beiping ले जाने का फैसला किया। इस लिए उस ने बीपिंग शहर की उत्तरी सीमा को छोटा कर दिया और एक नया और अलग दीवारों वाला दक्षिणी शहर बनाया। जिसमें ताईये झील Taiye Lake {वर्तमान नानहाई (the present Nanhai)} के ऊपर 'वर्जित नगर' (फॉरबिडन सिटी, Forbidden City) का निर्माण किया गया। उस ने इस नए शहर का नाम बीजिंग (北京Beijing) रखा, जिसका अर्थ है दक्षिणी राजधानी। बीजिंग में एक बेइहाई पार्क Beihai Park है, जिसके बीच में एक चियोगंहुआ द्वीप Qionghua है, इसका वास्तुकार भी ख़ान बलीक़ को माना जाता है।[84]



पगोडा शैली

मुसलमानों के सियासी हालात और बग़ावतें

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि क़ुबलाई ख़ान ने बड़ी संख्या में मध्य एशिया से मुसलमानों को चीन बुलाया और उनको बड़े बड़े पद दिए इस लिए चीन में मुसलमानों की बड़ी आबादियां बस गईं जिनमें युन्नान Yunnan की मुस्लिम आबादी सब से अहम थी। बाद में चंगेज़ ख़ान ने मुसलमानों के कुछ रीति रिवाजों पर प्रतिबंध लगा दिया, जैसे हलाल किए हुए गोश्त पर और खतना कराने पर और उनको आदेश दिया कि वो मंगोल तरीक़े पर पशु वध slaughter करें।[85] इन प्रतिबंधों से मुसलमानों में मंगोल सरकार के ख़िलाफ़ बहुत गुस्सा पैदा हो गया। जिसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों ने हान लोगों के साथ मिलकर युआन सरकार के ख़िलाफ़ गठबंधन बना लिया। इस के बाद एक हान जनरल ज़ू युआनज़ांग के साथ एक मुसलमान जनरल लान यू ने मंगोल हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और उसे बे दखल कर के ज़ू युआनज़ांग ने अपनी नई हुकूमत बनाई जिस का नाम मिंग हुकूमत Ming Dynasty रखा और खुद होंगवू राजा Hongwu Emperor का लक़ब इख्तियार किया।

लान यू और मू यिंग

लान यू एक मुसलमान जनरल था जिसने ज़ू युआनज़ांग के साथ मिलकर मिंग राजवंश की स्थापना की। बाद में ज़ू युआनज़ांग, राजा होंगवू Hongwu Emperor के रूप में सिंहासन पर बैठा। मिंग इतिहास के मुताबिक़ लान यू, युआन हुकूमत के आख़री दौर में बाग़ी सरदार चांग यूचुन Chang Yuchun की

सेना में था। लान यू, चांग यूचुन की बीवी का छोटा भाई भी था। लेकिन लान यू की क्षमताओं से चांग यूचुन बहुत प्रभावित था और अक्सर उस की तारीफ़ अपने दोस्त विद्रोही सरदार ज़ू युआनज़ांग से किया करता था। इस लिए ज़ू युआनज़ांग ने उस को अपनी सेना में शामिल कर के कमांडर इन चीफ़ के कार्यालय commander-in-chief's office का प्रशासी अधिकारी administrative officer बना दिया जिसको गुआनजुन ज़ेनफ़ू Guanjun zhenfu (管軍鎮撫) कहा जाता था। 1371 CE में लान यू ने फ़ू यूडे Fu Youde के साथ मिलकर मियानज़ू Mianzhou पर विजय प्राप्त की जो आज के मियानयांग Mianyang के पास कहीं था। 1372 CE में उसने शू डा Xu Da के साथ उत्तरी युआन हुकूमत Northern Yuan के ख़िलाफ़ अभियान में हिस्सा लिया और युआन फ़ौज को लुआन पहाड़ी Mount Luan के पास हरा दिया। 7 साल बाद उसने मू यिंग Mu Ying के साथ तिब्बत पर हमला किया, इस दौरान उसने कई कबीलों के सरदारों को गिरफ़्तार किया और हज़ारों आम लोगों को पकड़ा। इन उपलब्धियों के बदले उसे योंगचांग का मार्किस Marquis of Yongchang बना दिया गया और २५०० डान 2500 dan (石) अनाज और एक शि चुआन Shiquan मिला जो एक तरह का पदक होता था।

युन्नान की फ़तह

1381 CE में लान यू को दक्षिण पर विजय प्राप्त करने वाला उप सेनापति Left Deputy General Who Conquers the South बनाया गया। इस के बाद लान यू, फ़ू यूडे और मू यिंग Mu Ying के नेतृत्व में 250,000 से 300,000 फ़ौज को

दक्षिण की तरफ़ युन्नान फ़तह करने भेजा गया।[86] युन्नान में इस सेना का सामना युआन और हुई मुसलमानों की संयुक्त सेना से हुआ जो उत्तरी युआन Northern Yuan की वफ़ादार थी लेकिन लान यू और फ़ू यूडे Fu Youde ने उस को शिकस्त दी। इस के नतीजे में युआन शहज़ादा बासलवरमी Basalawarmi जो लियांग का शहज़ादा Prince of Liang था उसने 6 जनवरी 1382 को ख़ुदकुशी (आत्महत्या) करली[87], इस तरह युन्नान पर मिंग फौज का क़ब्ज़ा हो गया। युन्नान की विजय के बाद होंगवू राजा ने मू यिंग को अपना मुंह बोला बेटा बना लिया और उस को कई सम्मान भी दिए और उस को नए जीते गए युन्नान प्रांत का गवर्नर बना दिया गया, जो एक वंशानुगत पद था जो मिंग राजवंश के शासनकाल के अंत तक मू यिंग के वंशजों को दिया जाता रहा। चुनांचे 1650 CE में जब मिंग हुकूमत का ख़ातमा हुआ तो मू यिंग के वंशजों का प्रमुख मू टियान बाओ Mu Tianbao था जो योंगली राजा Yongli Emperor का क़रीबी समर्थक था और जब मिंग के आखरी शासक योंगली राजा ने बर्मा में पनाह ली तो मू टियान बाओ भी उस के साथ था।

डाली हुकूमत का अंत

युन्नान के अभियान के दौरान मिंग फ़ौज ने युन्नान की डाली हुकूमत (937-1253) Dali Kingdom के शासक डुआन गोंग Duan Gong से भी आत्मसमर्पण की मांग की।[88] याद रहे डाली हुकूमत अलग है और डाली सल्तनत (1864-1873) अलग है जिसको पिंग नान गो Pingnan Guo भी कहा जाता है जो मुसलमानों की हुकूमत थी। लेकिन यहां पर डाली हुकूमत का ज़िक्र

चल रहा है। चुनांचे डुआन गोंग ने हथियार डालने से साफ़ इनकार कर दिया और कह दिया कि डाली केवल मिंग की लगानदारी बन सकती है। चुनांचे एक ज़बरदस्त जंग के बाद मिंग फ़ौज ने डुआन गोंग को शिकस्त दी और डुआन भाइयों को गिरफ़्तार कर के मिंग राजधानी भेजा दिया गया। डुआन गोंग की फ़ौज में बहुत से मुसलमान भी थे वो भी गिरफ़्तार कर के लाए गए। लान यू और फ़ू यू डे ने, डुआन गोंग की फ़ौज में से 380 आदमियों को किन्नर (नपुंसक) eunuch बना दिया जिनमें से बहुत से बाद में मिंग हुकूमत के दरबारी किन्नर नौकर eunuch servant बने जिनमें ज़ेंग हा Zheng He भी था।[89]

युन्नान विजय के बाद लान यू

अब हम लान यू की तरफ़ लोटते हैं। युन्नान विजय के बदले लान यू को 500 डान अनाज दिया गया और उस की बेटी को शू की रानी शहजादी Princess Consort of Shu का लक़ब दिया गया। 1387 CE में उत्तरी युआन हुकूमत के जनरल नाहाचू Nahachu ने लियाओडोंग पर आक्रमण कर दीया, होंगवू राजा ने फेंग शेंग Feng Sheng के नेतृत्व में लान यू और फ़ू यूडे को 200,000 फ़ौज देकर भेजा। चुनांचे नाहाचू हार गया और उसने आत्मसमर्पण कर दिया। लान यू ने जी ज़ू Jizhou क़े फ़ौजी क़िले में अपनी फ़ौज को ठहराया।[90] 1388 CE में होंगवू राजा ने लान यू को कमांडर-इन-चीफ़ बना कर 150,000 फ़ौज देकर उत्तरी युआन हुकूमत के शासक उशकाल ख़ान Uskhal Khan से लड़ने भेजा। चुनांचे बूइर झील Buir Lake के पास लान यू ने उशकाल को शिकस्त दी। उस को उस के ख़ानदान के साथ गिरफ़्तार कर लिया जिनकी की

संख्या 100 से ज़्यादा थी। इस के अलावा 770,000 आम लोग और 150,000 मवेशी हाथ आए। और सैकड़ों कीमती चीज़ें भी हाथ आईं जिनमें उशकाल की शाही मोहर भी शामिल थी। उशकाल ख़ान ने मंगोलों की पुरानी राजधानी काराकोरम Karakorum भागने की कोशिश की, लेकिन मारा गया। होंगवू इस कामयाबी से बहुत ख़ुश हुआ और लान यू को लियांग का ड्यूक बनाने का इरादा किया लेकिन उस को जब पता चला की लान यू ने मंगोल की एक सम्मानित महिला को अपने लिए जब्त कर लिया और उसका उल्लंघन किया। तो उसने इरादा तर्क कर दिया और उस का लक़ब लियांग गूगोंग 梁國公 (Liang Guogong) से बदल कर 涼國公 (Duke Liang) कर दिया जिस से उस का पद भी छोटा हो गया और जागीर भी थोड़ी छोटी कर दी। फिर भी उस ने लान यू की प्रशंसा की और उसकी तुलना हान सरकार के वी चिंग Wei Qing से की। याद रहे वी चिंग ने भी हान राजा वू Emperor Wu के ज़माने में शियोंगनू Xiongnu के ख़िलाफ़ बड़ी जीत हासिल की थी।

लान यू की हत्या

1392 CE में एक युआन जनरल युल्टिमोइर Yuelutiemu'er ने मिंग के ख़िलाफ़ जियान चांग Jianchang में बग़ावत कर दी, मिंग ने लान यू के फ़ौज देकर भेजा जिसने विद्रोह को कुचल दिया, उस के इनाम में लान यू को क्राउन प्रिंस का शिक्षक नियुक्त किया गया। लेकिन लान यू को यह पद छोटा लगा क्यों कि उस का मानना था कि उस को ड्यूक ऑफ सोंग Duke of Song या ड्यूक ऑफ यिंग Duke of Ying के बराबर पद दिया जाना चाहिए था, इसलिए उस ने यह

कहते हुए पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि वह राजकुमार का उस्ताद बनने के क़ाबिल नहीं है। इस से होंगवू राजा नाराज़ हो गया। चूकि लान यू क्राउन प्रिंस ज़ू बियाओ Zhu Biao का वफ़ादार था, एक दफ़ा जब लान यू, मंगोलों के ख़िलाफ़ किसी मुहिम से वापस आया तो उसने उत्तराधिकारी (corwn prince/ राजकुमार) ज़ू बियाओ को आगाह किया कि ज़ू डी Zhu Di उसके सिंहासन के लिए के लिए ख़तरा बन सकता है (बाद में यही हुआ कि ज़ू डी जिसको शहज़ादा यान भी कहा जाता था, ने तख़्त बर क़ब्ज़ा कर लिया और योंगले राजा Yongle Emperor के रूप में सिंहासन पर बैठा)। लेकिन जब यह बात ज़ू डी को पता चली तो वो लान यू का दुश्मन हो गया और उस को रास्ते से हटाने के मंसूबे बनाने लगा। चुनांचे 1392 CE में ज़ू बियाओ का इंतकाल हो गया तो ज़ू डी ने होंगवू राजा के लान यू के ख़िलाफ़ कान भरने शुरू कर दिए। उसने राजा से कहा कि जितने जनरलों ने मिंग हुकूमत की स्थापना में अहम भूमिका निभाई है वो आगे चल कर मिंग हुकूमत के लिए ख़तरा बन जाएंगे इस लिए उनको ख़तरा बनने से पहले ही रास्ते से हटाना होगा। चुनांचे होंगवू राजा ने सबको हटाने के मंसूबे बनाने शुरू कर दिए। इसी दौरान उसने ज़ू बियाओ के बेटे ज़ू युनवेन Zhu Yunwen को उत्तराधिकारी बना दिया जो बाद में जियान वैन राजा Jianwen Emperor के लक़ब से तख़्तनशीन हुआ और लान यू को उस का उस्ताद Crown Prince's Tutor नियुक्त कर दिया। चुनांचे 1393 CE में जिनवी ख़ुफ़िया पुलिस Jinyiwei (secret police) के एक अधिकारी जियांग हुआन Jiang Huan ने लान यू पर तख्ता पलट की साजिश

रचने का आरोप लगाया और उस के घर की तलाशी ली जहां से उसे 10,000 जापानी कटाना तलवारें मिलीं। चुनांचे होंगवू राजा ने उसे फ़ौरन सज़ा-ए-मौत दे दी और उसकी संपत्ति जब्त कर ली।[91] और उस के परिवार को भी तीसरे दर्जे तक exterminated to the third degree ख़त्म कर दिया गया था। [याद रहे इस सज़ा में आरोपी के 9 रिश्तेदारों को भी क़त्ल किया जाता है इस को मीज़ू miezu कहा जाता है। इस में आरोपी के साथ उस के माता-पिता, उसके बच्चे अगर वे जवान हैं तो और उनकी पत्नी या पति और अगर वह बच्चे होते, तो उन्हें गुलाम बना लिया जाता है, उसके पोते-पोतियाँ अगर जवान हैं तो, भाई-बहन, दामाद, चाचा और चाची, चचेरे भाई और आरोपी की पत्नी या पति के माता-पिता]।[92] इस को लान यू केस case कहा जाता है यह उन 4 केसों में से एक केस है जो मिंग हुकूमत के शुरुआती दौर में पेश आए। यह भी कहा जाता है कि होंगवू राजा ने लान यू को मुजरिम ठहराने के लिए ख़ुद ही यह करवाया था। इस के अलावा दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ भी इसी तरह के आरोप लगा कर क़त्ल कर दिया गया। इस दौरान 15,000 लोगों पर इसी तरह के आरोप लगा कर हत्या की गई जिनमें 12 मार्किस marquises और 2 काउंट count भी शामिल थे।[93]

इसपाह विद्रोह Ispah rebellion

इसे इसपाह विद्रोह Ispah Rebellion कहा जाता है, जो संभवतः फ़ारसी शब्द 'स्पा' का संशोधित रूप है जिसका मतलब है सेना, क्योंकि इसमें अधिकतर ईरानी लोग थे। यह विद्रोह 1357-1368 CE के दरम्यान हुआ। कहा जाता है कि

मंगोल हुकूमत ने अपने आख़री दौर में विदेशी लोगों पर कई प्रतिबंध लगाए थे। इसी के चलते 1311 CE में क़ाज़ियों की तादाद बहुत कम कर दी गई और 1368 CE में क़ाज़ी का पद पूर्णतया समाप्त कर दिया गया, जो मुसलमानों का प्रमुख माना जाता था। याद रहे क़ाज़ी को चीनी ज़बान में फ़ानज़ांग कहा जाता था। 1329 CE में यह आदेश जारी किया कि किसी भी धार्मिक व्यक्ति को टेक्स में छूट (exempted) नहीं दी जाएगी। जबकि पहले धार्मिक व्यक्तियों को कर से छूट मिलती थी। 1340 CE में युआन हुकूमत ने आदेश दिया कि तमाम शादियां कन्फ्यूशियस रीति-रिवाजों के अनुसार होंगी। इस से मुसलमान युआन हुकूमत से हताश हो गए और वह विद्रोही सरदारों के साथ गठबंधन बनाने लगे जिन्होंने ने बाद में युआन शासन को उखाड़ फेंका और अपना स्वयं का मिंग शासन स्थापित किया।

ऐसा कहा जाता है कि उस समय क़ुआनज़ू में विदेशियों की एक बड़ी आबादी थी, जिनमें मुस्लिम, यहूदी, तुर्क और पारसी शामिल थे। उन्हें सेमू Semu कहा जाता था जिसका अर्थ है रंगीन आंखों वाले। ये लोग अधिकतर समुद्री व्यापार में लगे हुए थे और क़ुआनज़ू में व्यापार पर हावी थे और काफी समृद्ध थे। इस प्रकार, इब्ने बतूता ने अपने सफ़रनामे में क़ुआनज़ू में बड़ी संख्या में मुसलमानों की उपस्थिति का उल्लेख किया है, जब उन्होंने स्पा विद्रोह से पहले चीन का दौरा किया था। ऐसा कहा जाता है कि उस समय क़ुआनज़ू की जनसंख्या 2 मिलियन से अधिक थी। इस नगर की लम्बाई 30 मील थी। इसकी बंदरगाह जिनजियांग Jinjiangनदी पर बनायी गयी था, जो विशाल थी और आमतौर पर

10,000 से अधिक जहाजों को समायोजित करती थी। क़ुआनज़ू से रेशम, चीनी मिट्टी की चीज़ें, तांबा, लोहा और रेशम Silk जैसे मूल्यवान सामान निर्यात किए जाते थे, जबकि आयात किए गए सामान होते थे मोती, हाथी दांत, गैंडे के सींग, लोबान, मसाले और जड़ी-बूटियाँ थीं।[94]

इस विद्रोह का नेतृत्व अमीरुद्दीन 阿迷里丁 (Amiliding) और सैफ़ुद्दीन 賽甫丁 (Saifuding) नाम के दो शिया कर रहे थे। उन्होंने क़ुआनज़ू Quanzhou में एक सैन्य क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसपाह फ़ौज असल में शिया मुसलमानों की फ़ौज थी जो उन्होंने सुन्नी मुसलमानों के ख़िलाफ़ बनाई थी क्यों कि क़ुआनज़ू में शिया लोगों की संख्या बहुत कम थी और वो लोग सुन्नियों के ख़िलाफ़ विरोध करना चाहते थे। कहा जाता है कि शिया लोग जो ज़्यादातर ईरानी थे, वह इस बात से नाराज़ थे कि क़ुआनज़ू पर सुन्नी लोगों का क़ब्ज़ा है, युआन हुकूमत ने सुन्नी अहलकार पू शूगैंग Pu Shougeng (蒲寿庚) को फ़ुजियान और गुआंगडोंग Guangdong का सैन्य आयुक्त Military commissioner बना रखा था। इसके अलावा सुन्नी लोगों की जनसंख्या भी अधिक थी और व्यापार में उनकी भागीदारी भी ज़्यादा थी। हालाँकि 1282 में युआन सरकार ने क़ुआनज़ू में 3000 शियाओं की एक सेना तैनात की थी, फिर भी उनकी संख्या कम थी। चुनांचे विद्रोहियों ने क़ुआनज़ू और पूतियान Putian शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और वो प्रांतीय राजधानी फ़ूज़ू Fuzhou तक पहुंच गए। लेकिन इसपाह बाग़ी फ़ौज 1362 CE में आपसी लड़ाई से कमज़ोर हो गई, बिल-आख़िर 1362 CE में उन दोनों को नवूना Nawuna नाम के अकादमी

ने मार डाला और क़ुआनज़ू के सैन्य किले पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद जिन जिया Jin Jia नाम के एक शिया कमांडर ने उनका साथ छोड़कर युआन कमांडर चेन यूडिंग Chen Youding से गठबंधन कर लिया, जिसकी वजह से इसपाह विद्रोहियों को शिकस्त हुई, चुनांचे 1366 CE में युआन जनरल चेन यूडिंग Chen Youding ने इस विद्रोह को कुचल दिया।[95] दूसरी रिवायत में उस का नाम यवूना Yawuna बताया गया है जो पू ख़ानदान का दामाद था। उसने अमीरुद्दीन और सैफ़ुद्दीन को क़त्ल कर के क़ुआनज़ू की हुकूमत सँभाल ली लेकिन 1368 CE में युआन सेना ने उसे शिकस्त दी। उस के बाद युआन हुकूमत ने क़ुआनज़ू में मुसलमानों का नरसंहार किया ख़ासकर पू शूगैंग के पूरे ख़ानदान को क़त्ल कर दिया गया। उसके बाद, कई मुस्लिम और अन्य विदेशी व्यापारी क़ुआनज़ू से भाग गए और यूगांग Yuegang और जिनजियांग Jinjiang जैसे अन्य स्थानों में शरण ली। कुछ लोग अपनी पहचान छिपाने के लिए होक्कीन समुदाय Hokkien community में शामिल हो गए। क़ुआनज़ू बंदरगाह कई साल के लिए बंद कर दी गई, इस के अलावा विदेशियों का चीन में दाख़िला भी लगभग बंद हो गया। क़ुआनज़ू बंदरगाह को बंद कर के रयूक्यू Ryukyu और गुआंगज़ू Guangzhou बंदरगाहों पर तिजारती जहाज़ों के आने जाने अनुमति दी गई। इसके अलावा 16 वीं शताब्दी ई. तक निजी व्यापार भी बंद कर दिया गया था।[96] यहां तक कि 1407 CE में मिंग हुकूमत के योंगले राजा Yongle Emperor ने इस्लाम के साथ रवादारी hospitality के क़ानून बनाए और वहां के स्थानीय लोगों को मुसलमानों के प्रति सहिष्णु tolerant रहने को कहा,

क्योंकि कुछ मुस्लिम जनरलों ने योंगले सम्राट का शासन स्थापित करने में उसकी सहायता की थी। और इन कानूनों को मस्जिदों की दीवारों पर चिपकाया गया.

लिन नु की घटना

सेमू लोगों के ख़िलाफ़ हान लोगों के गुस्से का एक कारण लिन नु घटना भी थी, जिसके कारण सेमू लोगों की सामूहिक हत्या हुई। ऐसा कहा जाता है कि लिन लू Lin lu नाम का एक व्यापारी था जिसका 30 वर्षीय बेटा लिन नु Lin nu 1376 में किसी सिलसिले में ईरान के हुर्मुज़ Hormuz शहर गया और वहां उसने एक मस्जिद में इस्लाम धर्म अपना लिया और एक ईरानी लड़की से शादी कर ली। जिसको वो वापस क़ुआनज़ू ले आया।[97] लेकिन उस का ख़ानदान और हान जाति के लोग उस से बहुत ग़ुस्सा हो गए क्यों कि वो किसी भी हान व्यक्ति के धर्म बदलने और दूसरे समुदाय में शादी करने से सख़्त नफ़रत करते थे।[98] उन लोगों पर दबाओ इतना बढ़ा कि ख़ानदान वालों ने उनको अपने ख़ानदान से निकाल दिया और लिन नू के घर वालों ने अपना ख़ानदानी नाम लिन Lin से ली Li कर लिया। इन विरोध करने वालों में प्रमुख लिन नु का भतीजा ली गुआंगची Li Guangqi था, जिस ने अपने सहयोगियों के साथ सेमू लोगों पर हमला कर के उनकी हत्या करनी शुरु कर दी। उन्होंने कहा कि इस्लाम और अन्य विदेशी धर्म चीनी संस्कृति के अनुकूल नहीं हैं और उनकी भाषा उल्लू के बोलने जैसी है और उनकी लिपि केंचुओं Worms जैसी है। उन्होंने बर्बर लोगों के बारे में प्राचीन चीनी ग्रंथों का हवाला दिया और कहा कि उनके

चाचा को सेमू संस्कृति ने "अजीब और विदेशी" बना दिया है। उन्होंने अनुरोध किया कि इस घटना को पारिवारिक वंशावली Family Genealogy में शामिल किया जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि परिवार में कोई भी सेमू परिवार में शादी के अपराध को दोबारा नहीं दोहराएगा। ऐसा कहा जाता है कि मिंग काल का प्रसिद्ध दार्शनिक ली ज़ी Li Zhi (1527-1602), लिन नू का वंशज था, लेकिन वे मुस्लिम नहीं था क्योंकि उसके दादा के समय से ही उसके परिवार ने इस्लाम छोड़ दिया था।[99]

मुसलमानों का नरसंहार

कहा जाता है कि मुस्लिम फ़ौज जिस क़िले में छपी हुई थी युआन सेना ने उस के गेट बंद कर दिए और तीन दिन तक उनका नरसंहार किया। एक चीनी इतिहासकार लिखता है कि 'सभी पश्चिमी लोग मारे गए, जिनमें कुछ लंबी नाक वाले निर्दोष लोग भी शामिल थे। तीन दिनों तक दरवाजे बंद रहे और नरसंहार जारी रहा। पू शूगैंग के परिवार की लाशें नग्न अवस्था में पड़ी थीं और उनका चेहरा पश्चिम की ओर था। उन्हें पाँच अंग-भंग करने वाली सज़ाएँ Five mutilating punishments दी गईं और उन्हें मार डाला गया और उनके शवों को सुअर के बाड़े में फेंक दिया गया। याद रहे कि 5 अंग-भंग की सजा, उस को कहते थे जिसमें आरोपी को दाग़ा जाता था, नाक काटी जाती थी, एक या दोनों पैर काटे जाते थे, किन्नर बनाया जाता था और हत्या की जाती थी। involved tattooing, cutting off the nose, amputation of one or both feet, castration and death.[100]

इसपाह विद्रोह के बाद, कई मुसलमान क़ुआनज़ू से अलग-अलग क्षेत्रों में भागे, उनमें से कुछ जावा Java, इंडोनेशिया भाग गए, जहां उन्होंने इस्लाम का प्रसार किया। कुछ मुसलमानों ने मस्जिदों में छिपकर अपनी जान बचाई।[101] इसी तरह, कई मुसलमान गुआंगडोंग Guangdong क्षेत्र में बस गए और शिन कुन Xin Cun नामक एक नया गांव स्थापित किया। इसकी सूचना मा हुआन Ma Huan ने दी जो 15 वीं शताब्दी में ज़ेंग हा Zheng He के साथ जावा की यात्रा पर गया था। कुछ मुसलमान मनीला खाड़ी Manila Bay, ब्रुनेई Brunei, सुमात्रा Sumatra, और चंपा Champa की ओर भी भागे। इसलिए, इंडोनेशिया के 9 वली सांगा Wali Sanga क़ुआनज़ू के भागे हुए मुसलमानों के वंशज थे और चीनी बोलते थे, जिन्होंने इंडोनेशिया में बड़े पैमाने पर इस्लाम का प्रसार किया। इसपाह विद्रोह के बाद जब मिंग सरकार की स्थापना हुई तो स्थिति मुसलमानों के लिए कुछ हद तक अनुकूल थी क्योंकि मिंग सरकार का मुसलमानों के साथ बहुत दोस्ताना संबंध था।

अध्याय 5
मिंग राजवंश के दौर में इस्लाम

第五章
明代伊斯兰教

Chapter Five
Islam during the Ming Dynasty

मिंग सल्तनत में मुसलमानों के प्रभाव का इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि 1333 CE में चिनशि (Chinshee/ Civil Service) का इम्तिहान हुआ जिसमें कामयाब होने वालों में से दस मुसलमान थे। 1368 CE में अबदुल्लाह नाम के एक शख़्स को मिंग बादशाह टाई चू (होंग वू) ने खगोल विज्ञान विभाग का प्रबंधक बनाया। इस के साथी इलयास और 14 लोगों ने साल की जंतरी तर्तीब देने का काम किया। जब बादशाह ने चिन युआन (Chin Yuan) के मुक़ाम पर एक बेध शाला (Observatory) बनाई तो अली नाम के एक शख़्स को इस का डायरेक्टर नियुक्त किया। 1369 CE में बादशाह ने अली और उस के दस साथियों को राजधानी बुलाया और उनसे जंतरी के बारे में मशवरा लिया और उनको ग्रहों की तहक़ीक़ का हुक्म दिया। 1371 CE में इस इदारे का नाम "अलमुशाहिदा" कर दिया गया, उस के चार शोबे थे (1) इलम-ए-नुजूम (2) अल-साआ अलमियता (घंटा) (3) विश्व कैलेंडर (Universal Calander) और (4) हिजरी कैलेंडर। 1383 CE में बादशाह-ए-चीन मैनटाई (होंग वू) ने हु पेह चोंग (Hei Peh Chong) जो एक बहुत बड़ा विद्वान था और उस का साथी ली जिन, को ये हुक्म दिया कि अरबी की जो किताबें पृथ्वी का माप और हिजरी कैलेंडर से मुताल्लिक़ हैं उनका चीनी ज़बान में तर्जुमा करे। बात ये थी कि जब होंग वू बादशाह ने युआन हुकूमत का तख़्ता उलट कर अपनी हुकूमत क़ायम की तो युआन हुकूमत की लाइब्रेरी में बहुत सी किताबें मिलीं जो ग़ैर मुल्की ज़बान में थीं और लोगों में ये मशहूर था कि ये क़दीम उलमा की किताबें हैं जिनमें ज्ञान और बुद्धि भरी हुई है लेकिन कोई चीनी उनको नहीं समझ सकता।

इस लिए बादशाह होंग वू ने उनके तर्जुमे का हुक्म दिया। ये सारी किताबें अरबी में थीं। ये वाक़िया तारीख-ए-मिंग के 37 वें हिस्से में दर्ज है। लेकिन अब उनमें से कोई किताब नहीं पाई जाती।[102]

मिंग दौर का एक ख़त और एक प्रस्तावना

मिंग की राजधानी चांगान (Changan) की शाही लाइब्रेरी में अरबी किताबों का ज़ख़ीरा था, जिसकी अक्सर किताबें इलम-ए-नुजूम (तारा विज्ञान) से मुताल्लिक़ थीं। चुनांचे मिंग सल्तनत का पहला राजा ताईज़ू (Taizu) (r. 1368-1399) जब तख़्त नशीन हुआ तो उसने अरबी किताबों का तर्जुमा करने के लिए, मुसलमानों के शेख़ुल मशाइख़ को एक फ़रमान लिखा और तर्जुमा होने के बाद वज़ीर मारिफ़ वू चोंग पे (Wuchongpeh) ने इस पर एक मुक़द्दमा लिखा। हम दोनों को यहां पर नक़ल किए देते हैं।

ताईज़ू का फ़रमान शेख़ुल मशाइख़ के नाम

"मुझे अच्छी तरह मालूम है कि अक्लमंद की तरीक़त जब कामयाब होती है तो वो ख़ुशनसीब समझे जाते हैं वरना बदनसीब। इस का मतलब ये नहीं कि अपने आप में तरीक़त में कोई ख़राबी है बल्कि उस की वजह ये है कि साहिब तरीक़त की लियाक़त अधूरी है यहां तक कि उनके ख़्यालात किसी मामूली वजह से रुक जाते हैं और फैल नहीं पाते। हमारे देश की शब्दावली संकेतों और हाव-भावों से शुरू हुई। फिर पाकुआई ने उनकी जगह ली। पाकुआई से चियानमैन और चियानमैन से दफ़्तर की सूरत में तबदील हुई। दफ़्तर के ज़रिये

से प्राचीन शासकों एवं विद्वानों की बातें सुरक्षित रखी जाती थीं। फिर रफ़्ता-रफ़्ता हिक्मत का ज़ख़ीरा जमा हो गया और उलूम-ओ-फ़ुनून की इशात हुई। मिंग सल्तनत की इब्तिदा में मेरा जनरल जब राजधानी में दाख़िल हुआ तो शाही कुतुब ख़ाने में बहुत सी किताबें जिनकी तहक़ीक़ की ज़रूरत थी पाई गईं, ख़बर मशहूर थी कि वो हुकमा और उलमा की यादगार हैं, जिनमें हिक्मत और अक़्ल की बातें मदफ़ून हैं, लेकिन वे सभी विदेशी भाषा में हैं। दरबार में उनको कोई नहीं समझ सकता। मैंने सुना था कि तुम इस ज़बान को जानते हो, और उन किताबों से तुम्हें ख़ास दिलचस्पी है इसलिए तुमको हुक्म दिया था कि तर्जुमा कर डालो। अब कई महीने हो गए हैं जो कुछ तर्जुमा हो चुका है इस से मालूम हुआ कि आसमान के ऊपर और धरती के नीचे की बातें सब इस में मौजूद हैं, गहरे विचार उनमें छिपे हैं। तारों और ग्रहों के हिसाब सब इस में लिखे हैं। इदारा नुजूम का नाज़िम तुम्हारे बग़ैर कैसे उनको समझ सके और तुम को बग़ैर कमाल दिखाए क्यूँ-कर उस्ताद ज़माना कहलाए? इस वास्ते तुम्हें "हुनलेन" का ख़िताब दिया जाता है और तुम को अनुवाद संस्थान का निदेशक नियुक्त किया जाता है, उम्मीद है क़बूल करोगे (1383 CE)"।[103]

जब शेख़ुल मशाइख़ ने शाही फ़रमान के मुताबिक़ इन किताबों का तर्जुमा कर दिया तो वज़ीर मारिफ़ वू चोंग पे ने अपने हाथ से जो मुक़द्दमा लिखा वो ये है। "बादशाह-ए-ज़माना, आसमानी हुक्म के मुताबिक़ चीन की निगरानी करता है और भाईचारे का उपदेश देता है, इस लिए तलवार और कलम के लोग उस के गिरवीदा होते हैं, होंग वू के शुरू के दौर में जब फ़ौजी जनरल ने राजधानी पर

क़बज़ा किया तो बहुत सी किताबें बरामद हुईं, जो पुराने लोगों के विचार हैं, ये कई हज़ार किताबों का एक ज़ख़ीरा था, जो युआन दौर के शाही कुतुब ख़ाना में सुरक्षित था। सुना है कि ख़ाली समय के वक़्त उलमा और हुकमा जमा हो कर उनका मुताला करते थे, और उन पर बहस करते थे, उनका इरादा था कि इन में से मवाद लेकर हुकूमत का संविधान तैयार किया जाये, इन किताबों में से जो राजधानी में बरामद हुईं, कई सौ अरबी किताबें भी थीं, शब्द अजनबी और ज़बान ग़ैर थी, यहां उनका कोई जानने वाला नहीं था। 1383 CE के पतझड़ में बादशाह ताई ज़ू ने एक दरबार किया जिसमें "हुनलेन" (सिविल सेवा में द्वितीय श्रेणी रैंक /Second Class Rank in Civil Service) ली चुन (Lee Chun) और मुझको खासतौर पर बुलाया, और हमसे फ़रमाया "स्वर्गीय मार्ग छिपा हुआ और रहस्यमय है, वो इनसानों को बतलाता है कि समय का शासक आसमानी हुक्म से हुकूमत करता है और इस के मुताबिक़ अमल करने से कामयाब होता है"। क़दीम ज़माना के शासक, सितारों के चलने फिरने को देखते थे, और मौसमों की तबदीली की हक़ीक़त दरयाफ़्त करते थे, ताकि उनसे सबक़ सीखें और इनसानियत की तरबियत करें, चीजों में हम-आहंगी और तनासुब पैदा करें, उनकी बदौलत इल्म-ए-नुजूम का उदय हुआ। वर्तमान समय में अरब ज्योतिषियों की ग्रहों की परिक्रमा और काली रात की चाल के बारे में गहरी राय है और उनके अनुभवों और अवलोकनों में सच्चाई है। नक्षत्रों और ज्योतिष की जानकारी जो इन किताबों में मिल सकती है और किताबों में नहीं मिल सकती। यह एक महत्वपूर्ण ज्ञान है जिसमें मानवीय और स्वर्गीय संबंधों का

रहस्य छिपा है। इन किताबों का तर्जुमा होना चाहिए, ताकि आसानी से उनको पढ़ा जा सके और हम उनकी मदद से अलामात-ए-नुजूम को देख सकें, इन संकेतों के अनुसार विपत्तियों और विपत्तियों से मुक्ति, अच्छे कर्मों का प्रकाशन और स्वर्गीय आदेश का पालन, और स्वर्गीय भावनाओं पर विचार कर सकें।" इस ज़रूरत को महसूस करते हुए, बादशाह ने एक फ़रमान लिखा और लेन टाई (इस मुक़ाम का नाम जहां रसद गाह थी) के इदारा-ए-नुजूम के नाज़िम हैदर अतफ़ुद्दीन क़ाज़ी अल-मुस्लिमीन व शेख़ुल मशाइख़ महमूद वग़ैरा को दरबार में बुलाया, उन्होंने शाही पुस्तकालय से पुस्तकों का संग्रह निकाला और उन पुस्तकों का अनुवाद करने का काम सौंपा, जो ज्योतिष और सौर और चंद्र प्रणालियों से संबंधित थीं, और उन्होंने कहा: तुम लोग मुसलमान हो, ममालिक-ए-मग़रिब के बाशिंदे हो, अरबी ज़बान से वाक़िफ़ हो, चीनी ज़बान भी समझ सकते हो, ज़बान से लोगों को समझा सकते हो, क़लम से मतलब बयान कर सकते हो, तैयार हो जाओ, इनका तर्जुमा कर डालो, नाग़ा न करो, ग़फ़लत में न पड़ो, मुझ पर तुम्हारा एहसान होगा। तुम्हारे लिए मेरी तरफ़ से इनाम है। उन्होंने फ़रमान के मुताबिक़ "यून शून मिन" (नानजिंग शहर का एक दरवाज़ा) के दहाने पर एक इदारा क़ायम किया, और तर्जुमे का काम शुरू कर दिया, किताबों का मग़ज़ निचोड़ कर एक जगह जमा कर दिया, यहां तक कि तर्जुमे का काम मुकम्मल हो गया। मसौदा साफ़ करने के बाद शाह ताईज़ू की ख़िदमत में पेश किया, फिर वू चोंग पे को ये हुक्म हुआ कि इस किताब का मुक़द्दमा लिखो, मैंने यूं लिखना शुरू किया "रिवायत है कि फ़ोनी (याफ़िस का

बिगड़ा हुआ नाम) ने पाकुआई बनाया, टांन-यू (Tan-Yoo) ने जंतरी बनाई शुन (Shun) आज़म ने सात रियासतों को मुत्तहिद किया, और मुक़द्दस यू (Yu) ने नहरें खुदवाई। बाद के युगों की परंपराएँ और प्रत्येक युग का ज्ञान, सभी इन दफ़तरों में दर्ज किया गया, जिसमें पृथ्वी और आकाश, सूर्य और चंद्रमा और सितारों के परिवर्तन भी शामिल थे। परिसंचरण, नर और मादा तत्वों की अनुकूलता, सर्दी और गर्मी का संयोजन, दिन और रात का क्रम, मनुष्य के सुख और दुख और वस्तुओं के अस्तित्व और विनाश के बारे में प्रकाश डाला गया है। अब अरबों के इल्म-ए-नुजूम का मुताला करने से हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इस में जो बातें हैं अगर उनका चीनी रिवायात से मुक़ाबला किया जाये तो हमारी राय ये है कि उनकी असल एक है और शाखाएँ अलग हैं, क्यों कि दुनिया का हर कोना हक़ायक़ से लबरेज़ है, और हक़ की बारीकियां तमाम चीज़ों में जल्वा-अफ़रोज़ हैं, उनमें न मशरिक़-ओ-मग़रिब की ख़ुसूसियत है, न चीन-ओ-अरब की। ख़ुदा करे हमारे बादशाह का दिल मसरूर हो, उस का सीना इलम-ओ-हिक्मत की शराब से लबरेज़ हो, नियत में ख़ुलूस हो, अमल में जोश हो, क़ौल में सदाक़त और काम में सच्चाई हो, ये बात सब पर रोशन है कि वो पुरखों के नक़्श-ए-क़दम पर चलता है और आसमानी हुक्म के मुताबिक़ जो सरापा दानिश-ओ-हिकमत है, हुकूमत करता है, अब बादशाह को हुकूमत का एक ख़ज़ाना मिला है, ये ख़ज़ाना क्या है? अरब की हिकमत-ए-नुजूम है, जिसके ज़रिये से इनसान और आसमान के ताल्लुक़ात मालूम हो सकते हैं, ख़ुदा हमारे बादशाह को इस के मुताबिक़ अमल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

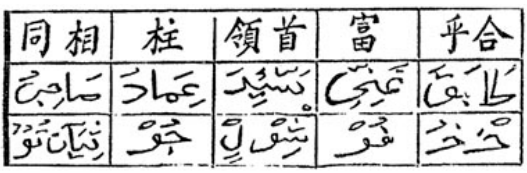
अज़ वूचोंगपे, वज़ीर-ए-मारिफ़

मिंग काल में मुसलमानों ने आना क्यों बंद हुआ?

लेकिन मिंग दौर (1368–1644 AD) में चीन में बाहर से मुसलमानों का आना बंद हो गया क्यों कि इसपाह विद्रोह Ispah rebellion के बाद क़ुआनज़ू बंदरगाह बंद कर दी गई थी और क़ुआनज़ू बंदरगाह ही चीन में मुसलमानों के आने का सबसे बड़ा ज़रिया थी। मिंग हुकूमत में यह भी फ़रमान जारी किया गया कि मानी मज़हब और ईसाई धर्म पर प्रतिबंध लगाया जाता है क्यों कि यह दोनों गुमराह कुन और अवैध धर्म हैं जब कि इस्लाम और यहूदी धर्म को कानूनी रूप से मान्यता दी जाती है क्यों कि यह दोनों कन्फ्यूशीवाद Confucianism से समानता रखते हैं।[104] इसी के साथ ही मिंग सरकार ने समुद्री व्यापार पर कोई ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण समुद्री व्यापार भी नाममात्र को रह गया। चूँकि अधिकांश मुस्लिम आबादी समुद्री व्यापार से जुड़ी थी, और अधिकांश मुस्लिम आबादी बंदरगाहों के पास रहती थी, लेकिन मिंग काल में इस आबादी में भारी गिरावट आई क्योंकि समुद्री व्यापार बंद होने के बाद मुसलमानों को दूसरे रोजगार खोजने पड़े। इस काल में नानजिंग इस्लामी संस्कृति का केंद्र बन गया। चूंकि इसपाह विद्रोह के बाद मुसलमानों को हिंसा का शिकार होना पड़ा था, इसलिए चीनी समाज से खुद को बचाने के लिए मुसलमानों ने खुद को चीनी समाज में ढालना Sinicize शुरू कर दिया।[105] उन्होंने चीनी भाषा बोलना शुरू कर दी, चीनी कपड़े, चीनी व्यवहार और यहां तक कि चीनी खाने भी अपना लिए। उन्होंने चीनी नामों को भी अपनाना शुरू कर दिया और कई इस्लामी नामों के लिए चीनी संक्षिप्ताक्षरों abbreviations का उपयोग करना

शुरू कर दिया, जैसे 'मा' मुहम्मद के लिए, 'मो' मुस्तफा के लिए, 'माई' मसूद के लिए, 'हा' हसन के लिए, 'हू' हुसैन के लिए, 'स' सईद के लिए आदि। Ma for Muhammad, Ha for Hasan, Hu for Hussain and Sa'i for Said and so on. कहा जाता है कि सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उमर (1211-1269) Sayyid Ajjal Shams al-Din Omar जो युन्नान के पहले मुस्लिम गवर्नर थे उन के बड़े बेटे थे नसरुद्दीन (Nasruddin) जिनको चीनी ज़बान में Na-su-la-ding कहा जाता था। तो उनकी औलाद में चार ख़ानदान हुए सबने उनके नाम के एक एक टुकड़े को अपना ख़ानदानी नाम बना लिया एक ने न Na, दूसरे ने सू su, तीसरे ने ला la और चौथे ने डिंग ding.[106] इसका एक कारण यह भी था कि युआन सरकार ने अपने अंतिम समय में विदेशियों पर कई प्रतिबंध लगाए थे, जिससे उन्हें अपनी जीवनशैली बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा था, जैसा कि ऊपर बताया गया है। इस काल में चीनी मुसलमान बाहरी दुनिया के मुसलमानों से अलग लगने लगे थे। इस्लाम अपनाने वाले हान लोगों ने भी अपने पारिवारिक नाम कोंग, ज़ांग आदि कर लिए थे। चीनी शैली के खानों को भी अपनाया गया, जिसमें भोजन बिल्कुल चीनी शैली में तैयार किया जाता था, केवल मांस में हलाल मांस प्रयोग किया जाता था। इसीलिए इस्लामी भोजन को अक्सर बीजिंग के व्यंजनों Beijing cuisine में शामिल किया जाता है।[107] इसी तरह, मुसलमानों ने अरबी लिपि में चीनी लिखना शुरू कर दी जिसे शियाओ एरजिंग Xiao'erjing या शियाओजिंग xiaojing के नाम से जाना जाता है।

इसी प्रकार, अपनी अलग अनूठी अरबी लिपि बनाई, जिसका उपयोग मस्जिदों और अन्य धार्मिक स्थानों पर अरबी ग्रंथों को उकेरने के लिए किया जाता था, इसे सीनी लिपि Sini (script) कहा जाता है। आज, इसके सबसे प्रसिद्ध सुलेखक हाजी नूर दीन मी गुआंग जियांग Hajji Noor Deen Mi Guangjiang हैं। इसी प्रकार मस्जिदों तथा अन्य इमारतों के निर्माण में भी चीनी निर्माण शैली को अपनाया गया, जिसे पगोडा pagoda शैली कहा जाता है।[108]



सबसे आख़िरी लाईन में शियाओ एरजिंग लिखाई मौजूद है

सालार मुसलमान Salar Muslims

सालार मुसलमानों के पूर्वज 1370 CE में मिंग हुकूमत के ज़माने में समरक़ंद (आज का उज़्बेकिस्तान) के इलाक़े से चीन पहुंचे। कहा जाता है कि यह दो भाई थे जो स्थानीय शासक के उत्पीड़न से बचने के लिए तियानशान पर्वत Tian Shan के जियायूगुआन दर्रे Jiayuguan pass के रास्ते सूज़ू, गुआंगज़ू, निंगशिया, चिनज़ू, गांगू Suzhou District, Ganzhou District, Ningxia, Qinzhou District, Gangu County होते हुए शियाही काउंटी Xiahe County में आकर बस गए। इस के बाद कुछ और लोग समरक़ंद से तियानशान Tian Shan के रास्ते होते हुए चिंगहाई Qinghai में आकर बसे, उनकी संख्या 12 थी।

कहा जाता है कि वो अपने साथ एक क़ुरान भी लाए थे जो अभी तक शुनहुआ Xunhua शहर की जीज़ी मस्जिद Jiezi Mosque में सुरक्षित है। इन आने वालों ने मिंग हुकूमत की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली, उनके सरदार का नाम हान बाओयुआन Han Baoyuan या हान पाओ युआन Han Pao-yuan था। मिंग ने हान बाओयुआन को सेंचुरियन के कार्यालय office of centurion का प्रभारी बना दिया। कहा जाता है उस के ख़ानदान की 4 शाखाएं हुईं। उस के वंशजों ने अपना ख़ानदानी नाम 'हान' Han रखा।[109] दूसरा सालार ग्रुप जिसका सरदार हान शानबा Han Shanba था उस के ख़ानदान की भी 4 शाख़ें हुईं, उन्होंने अपना ख़ानदानी नाम 'मा' Ma रखा। मिंग हुकूमत ने उस को भी वही पद दिया जो हान बाओयुआन को दिया था।[110] कहा जाता है कि हान बाओ युआन के पिता का नाम उमर Omar था और उमर के पिता का नाम हरामान Haraman था। यही हरामान सालार क़ाफ़िले का सरदार था, जब वे लोग मध्य एशिया से स्थानांतरित होकर चीन आए थे।[111]



क़ुरआन जो सालार 1371 में समरक़ंद से लाए थे

विवाह की व्यवस्था

मिंग हुकूमत ने यह क़ानून लागू किया था कि हान जाति के मर्द या औरत किसी दूसरी जाति के मर्द या औरत से शादी नहीं कर सकते, जब कि हुई और सालार मुसलमान अपनी जाति में शादी नहीं कर सकते बल्कि दूसरी जाति में शादी करनी पड़ेगी।[112] इस का मक़सद शायद यह था कि ग़ैर चीनी लोगों को शादियों के ज़रिये चीनी सभ्यता में ढाला जाए। कहा जाता है कि हुई और सालार लोग आपस में शादियां कर लेते हैं क्यों कि दोनों का मज़हब एक है। शुरू में जो बड़े सालार थे उन्होंने तिब्बती औरतों से शादियां कीं, जब कि जो जवान थे उन्होंने सालार औरतों से ही शादियां कीं। हान और सालार लोगों के बीच शादियां नहीं होतीं लेकिन तिब्बती और सालार लोगों के बीच शादियां हो जाती हैं, हालाँकि सालार लोग अपना ख़ानदानी नाम 'हान' रखते हैं। सालार लोग दूसरी जाति की औरतों से शादियां कर लेते हैं जैसे तिब्बती औरतों से लेकिन अपनी औरतों की शादी दूसरी जाति के मर्दों से नहीं करते। ताहम वो हुई मर्दों से अपनी औरतों की शादी कर देते हैं।

इसी लिए पहले जो सालार लोग शुनहुआ Xunhua पहुंचे जो तिब्बत के पास है तो उन्होंने तिब्बती महिलाओं से शादियां कीं। शुरू में 2000 तिब्बती महिलाओं से सालार लोगों ने शादियां कीं। यह शादियां विमडो घाटी Wimdo valley में रहने वाले तिब्बती क़बाइली सरदारों और सालार मुहाजिरों के दरम्यान एक समझौते के बाद हुईं। समझौते में तिब्बती बुद्ध धर्म के लोगों ने

सालार लोगों से 4 शर्तें रखीं। पहली यह कि अपनी छतों पर चारों कोनों पर बौद्ध प्रार्थना के झंडे लगाएंगे, दूसरी यह कि बौद्ध इबादत के पहिये Tibetan Buddhist prayer wheels के साथ प्रार्थना करेंगे, इबादत (पूजा) के दौरान वो बौद्ध मंत्र पढ़ेंगे जिसकी शुरूआत 'ओम मनी पदमा हुम' om mani padma hum से होती है, और चौथी यह कि वो बुद्ध की मूर्ति के सामने झुकेंगे और पूजा करेंगे। लेकिन सालार लोगों ने उनकी तीनों शर्तों को मानने से इनकार कर दिया क्यों कि उनका कहना था कि वो मुसलमान हैं और सिर्फ एक अल्लाह की पूजा करते हैं, ताहम वो झंडे की जगह चारों कोनों पर पत्थर रख सकते हैं।[113]

ऐसा भी मिलता है कि पूर्वी चिंगहाई और गान्सू के इलाक़े में कुछ तिब्बती औरतों ने मुसलमान मर्दों से शादियां कीं लेकिन अपने बुद्ध धर्म को नहीं छोड़ा। उनके कुछ बच्चे बौद्ध हो गए और कुछ मुसलमान हुए। इस क्षेत्र में आफ़ाक़ ख़ोजा के हाथों कई लोगों ने इस्लाम अपनाया।[114]

1996 CE तक विमडो घाटी में सालार का सिर्फ एक घर बचा था।[115] इसी लिए बहुत से तिब्बती रिवाज सालार लोगों में भी आ गए जैसे शादी के मौक़े पर दुल्हन घोड़े पर सवार हो कर लोगों में दूध और अनाज बाँटती है यह रस्म तिब्बती लोगों से आई है।[116] चुनांचे चिंग दौर के सालार जनरल हान यूवेन Han Youwen की माँ ज़िलीहा Ziliha तिब्बती थी और उस का बाप आएमा Aema, सालार था। सालार लोगों ने चिंगहाई में पुराने हुई लोगों का सुन्नी तर्ज़ का इस्लाम अपनाया जिसको गदीमू Gedimu (Gedem) कहा जाता है शायद

यह क़दीम قديم की बिगड़ी हुई शक्ल है। और इस्लामी शिक्षा के लिए हुई लोगों का तरीक़ा अपनाया जिसे जिंगटांग जियाओयू Jingtang Jiaoyu तर्ज़ की शिक्षा कहा जाता है। इस के अलावा सालार लोगों की अपनी भी कुछ किताबें थीं जिनमें से सबसे मशहूर ज़ाशू बैन-बेन 雜學本本 Zaxue Benben थी जो चीनी ज़बान में लिखी हुई थी। इस का तर्जुमा विविध अध्ययन की पुस्तक Book of Diverse Studies किया जा सकता है। बहुत से सालार लोगों ने हुई ख़ानदानों में भी शादियां कीं, इस वजह से हुई और सालार की जीवनशैली बहुत समान है। चुनांचे हुई लोगों ने नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले की दो शाखाएं शुरू कीं जिनके नाम हैं जहरिय्या Jahriyya और खाफ़ियया Khafiyya सूफ़ी सिलसिले। इन दोनों में सालार लोग भी काफ़ी बड़ी तादाद में शामिल हुए। मा लाईची Ma Laichi वो शख़्स हैं जिन्हों ने सालार लोगों में खाफ़ियया सूफ़ी सिलसिला शुरू किया।[117] सालार लोगों के राबते में आकर तिब्बती कारगान Kargan Tibetans लोग बड़ी तादाद में मुसलमान हुए।

मिंग सम्राटों का मुसलमानों से व्यवहार

होंगवू राजा के शासनकाल में

होंगवू राजा (1368-1398 AD) मिंग हुकूमत का पहला राजा था जिसने मिंग राजवंश की स्थापना की। चूँकि होंगवू राजा का रवैया मुसलमानों के साथ बहुत दोस्ताना था इस लिए बहुत से मुसलमान इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए अरब से चीन आए, जिनमें सबसे मशहूर मुहम्मद और जमालुद्दीन हैं जिनको चीन में

महामोदे Mahamode और ज़नमालूदिंग Zhanmaluding कहते हैं। होंगवू राजा ने मुसलमानों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया।[118] उनको बड़े बड़े पद दिए, शायद इस की वजह यह थी कि हुकूमत क़ायम करने में बहुत से मुस्लिम जनरलों ने उस की मदद की थी जैसे लान यू, हू डहाई Hu Dahai, चांग यूचुन Chang Yuchun, फेंग शेंग Feng Sheng, डिंग डेशिंग Ding Dexing, मू यिंग Mu Ying, चेन यू Chen You आदि। तुरपान के एक मुस्लिम उइग़ूर जनरल हाला बाशी Hala Bashi ने मियाओ विद्रोहियों Miao Rebellions के ख़िलाफ़ मिंग हुकूमत की मदद के लिए विद्रोहियों से लड़ाई की और विद्रोह ख़त्म करने के बाद हुनान Hunan में चांगडे Changde की टाओयूआन काउंटी Taoyuan County में बस गया[119]। इसी तरह युआन हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई में होंगवू राजा का सबसे क़रीबी कमांडर एक मुस्लिम जनरल फेंग शेंग Feng Sheng था जिसने युआन हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई में प्रमुख भूमिका निभाई थी। लेकिन बाद में होंगवू ने इन मुस्लिम जनरलों में से कुछ को मरवा भी दिया जैसे लान यू, हालाँकि उस की कोई बड़ी ग़लती नहीं थी। 1384 CE में उसने मुसलमानों की चिकित्सा पुस्तक का चीनी में तर्जुमा करवाया जिसको चीनी ज़बान में हुई हुई लीफ़ा Huihui Lifa (Muslim System of Calendrical Astronomy) कहा जाता है। इस का तर्जुमा करने वालों में एक मुसलमान मुतर्जिम माशाईही Mashayihei और चीनी अनुवादक वू बोज़ोंग Wu Bozong थे जिनको होंगवू ने यह काम सौंपा था। 1800 CE तक इस किताब के कई अंक छप चुके थे।[120] होंगवू ने ही यह क़ानून लागू किया था कि हान जाति के मर्द या औरत किसी

दूसरी जाति के मर्द या औरत से शादी नहीं कर सकते जब कि हुई और सालार मुसलमान अपनी जाति में शादी नहीं कर सकते बल्कि दूसरी जाति में शादी करनी पड़ेगी।[121] इस का मक़सद शायद ग़ैर चीनी लोगों को विवाह के माध्यम से चीनी सभ्यता में शामिल करना था। उसने कई मस्जिदें भी बनवाईं जैसे नानजिंग, युन्नान, गुआंगडोंग और फ़ुजियान प्रांतों में।[122] इन मस्जिदों में नक़्क़ाशी भी करवाई जिनमें हज़रत मुहम्मद ﷺ की तारीफ़ की गई थी। उसने नानजिंग में जिनजू Jinjue मस्जिद को दोबारा बनवाया जिसका मतलब होता है "शुद्ध ज्ञान की मस्जिद"। इस लिए बहुत से मुसलमान नानजिंग में जा कर बस गए।[123] होंगवू राजा ने हज़रत मुहम्मद ﷺ की प्रशंसा में 100 चीनी शब्दों वाली एक कविता भी लिखी, जिसे 100 अक्षर प्रशंसा (百字讃 bìizìzan) 100 character praise कहा जाता है। चीन की कई मस्जिदों में इसका प्रदर्शन किया जाता है।[124] कहा जाता है कि होंगवू ने मुसलमानों के पक्ष में एक फ़रमान भी जारी किया जिसको पत्थर के कतबों पर उकेर कर कई मस्जिदों में लगाया गया। चुनांचे फूजू और क़ुआनज़ू की मस्जिदों में जो कतबे लगे हैं उनमें यह लिखा है "में आपके घरों की रक्षा के लिए एक फरमान जारी करता हूं। कोई भी अधिकारी, चाहे सेना हो या सरकार, आपको परेशान नहीं कर सकता, यदि वह ऐसा करेगा तो उसे अपराधी की तरह दंडित किया जाएगा"।[125]

होंग ज़ी राजा के दौर में

अली अकबर ख़ताई ने अपनी किताब ख़ताई नामा में लिखा है कि होंगज़ी राजा Hongzhi Emperor (1487-1505) ने न सिर्फ बहुत से मुसलमानों को अपने यहां मुलाज़िम रखा बल्कि मुस्लिम अधिकारियों को अपने महल में अपने धर्म का पूरी तरह से पालन करने की अनुमति भी दी। इसी लिए लोगों को लगा कि वह मुसलमान बन गया था या मुसलमान बनना चाहता था। अली अकबर ने होंगज़ी राजा को ख़ान लिखा है।[126] ताहम उस के बारे में यह भी कहा जाता है कि उसने 1200 मुसलमानों को जो समरक़ंद से आए थे और गान्सू में रह रहे थे, तो गान्सू के गवर्नर को हुक्म देकर उन्हें वापस समरक़ंद भिजवा दिया था।[127]

योंगले राजा के दौर में

योंगले राजा के दौर में मुसलमान सबसे ज़्यादा खुश हाल रहे क्योंकि वह हुकूमत में बहुत प्रभाव रखते थे। उसी ने एक मुसलमान, ज़ेंग हा Zheng He को राजदूत के रूप में समुद्री यात्रा पर भेजा था जो चीन में इस्लामी तारीख़ (इतिहास) का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, इस का उल्लेख अलग से किया जाएगा। योंगले ने बहुत सी नई मस्जिदें बनवाईं और पुरानी मस्जिदों का विस्तार किया। उस ने नानजिंग में एक और शियान Xian में एक मस्जिद बनवाई, जो आज भी खड़ी हैं।[128] उस ने यह भी फरमान जारी किया कि मस्जिदों का इस्तेमाल किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जा सकता।[129]

ज़ेंगडे राजा के दौर में

ज़ेंगडे राजा Zhengde Emperor (1505 to 1521 AD) के दौर में भी मुसलमान हुकूमत के बहुत क़रीब थे, उस को राजा वूज़ोंग Wuzong भी कहा जाता है। उसका दरबार मुस्लिम अधिकारियों, सलाहकारों, किन्नर अहलकारों eunuch और राजदूतों से भरा रहता था।[130] इस के अलावा उस के दरबार में जो क़ालीन बिछाए जाते थे वो ज़्यादातर मुस्लिम कारीगरों के हाथों से बने होते थे जिनमें सफ़ैद और नीले रंगों में अरबी, फ़ारसी और इस्लामी नक़्क़ाशी होती थी।[131] वो कभी-कभार मुस्लिम पोशाक जैसे पगड़ी और जुब्बा आदि भी पहनता था। मध्य एशियाई व्यापारी 'अली अकबर खताई' द्वारा लिखित एक यात्रा वृत्तांत 'खताईनामा' में दर्ज है कि बीजिंग में एक भव्य मस्जिद थी और सम्राट वहां जाता और प्रार्थना करता।[132] जिससे लोगों के बीच यह बात फैल गई कि राजा मुस्लिम बन गया है या मुस्लिम बनना चाहता है। उसके आधिकारिक कार्य अधिकतर मुस्लिम किन्नर अहलकारों द्वारा संचालित होते थे।[133]

उसने सूअर के मांस के सेवन पर रोक लगाने वाला एक आदेश भी जारी किया था।[134] उस के दरबार के कुछ मुस्लिम किन्नर अहलकारों ने आपस में चंदा कर के 1496 CE में न्यूजी मस्जिद Niujie Mosque की मरम्मत कराई।[135]

ज़ेंगडे की अय्याशी

लेकिन ज़ेंगडे एक निहायत अय्याश आदमी भी था और वो शराब और महिलाओं का शौक़ीन था। उसने सुरूर की महफ़िलें सजाने के लिए एक अलग

हाल बनाया था जहां अक्सर नृत्य और भोज आयोजित होते थे, और राजा उनमें शामिल होता था। इस हाल को बाओफ़ांग Baofang कहा जाता था जिसका मतलब होता है 'तेंदुए का कक्ष' The Leopard's Chamber[136]. इस वजह से उस ने सरकारी मामलों को अपने वरिष्ठ किन्नर अहलकारों, जिनमें से कई मुस्लिम थे, पर छोड़ दिया था। इस की वजह से किन्नर बहुत शक्तिशाली हो गए थे।

एक मुसलमान गार्ड जिसका नाम सय्यिद हुसैन था जिसको यू योंग Yu Yong भी कहा जाता है उस का संबंध हामी Hami से था। उसने राजा को कई मुस्लिम उइग़ूर युवतियां भी भेंट कीं, जिन्हें राजा ने अपने हरम में भर्ती कर लिया।[137] कहा जाता है कि इसी वजह से उसने सूअर के मांस पर प्रतिबंध लगाया था।[138] जॉन डार्डेस John Dardess लिखता है जिस तरह शुआंडे राजा को कोरियाई महिलाएं पसंद थीं, इसी तरह ज़ेंगडे राजा को मध्य एशिया की मुस्लिम महिलाएं पसंद थीं।[139] शायद इसी वजह से ज़ेंगडे राजा ने फ़ारसी भाषा भी सीखी थी। कहा जाता है कि ज़ेंगडे का कमांडर-इन-चीफ़ एक सेमू मुसलमान था जिसका नाम चांग ज़ुओ Chang Zuo था। यू योंग ने एक अनौपचारिक आदेश जारी किया जिसमें उसने चांग ज़ुओ से अपने परिवार की 12 महिलाओं को ज़ेंगडे राजा के पास भेजने की मांग की। उसने ज़ेंगडे से यह भी अनुरोध किया कि वह अपने सेमू मारकिस Marquess और अरल earl अधिकारियों को अपने-अपने परिवारों की महिलाओं को नृत्य सीखने के लिए महल में भेजने का आदेश दे। उसने उन महिलाओं को नृत्य सिखाया, जिससे महल के अंदर और बाहर दोनों

जगह लोग उस से नफ़रत करने लगे। बाद में ज़ेंगडे राजा ने यू योंग की बेटी को भी पेश करने का हुक्म दिया तो यू योंग ने अपने पड़ोसी की बेटी को अपनी बेटी बना कर पेश कर दिया। लेकिन बाद में उसे डर हुआ कि कहीं राजा को इसके बारे में पता न चल जाए, इसलिए उसने त्यागपत्र दे दिया। कहा जाता है कि ज़ेंगडे की एक मुस्लिम बांदी का नाम नी'एरगन Ni'ergan 你兒干 था।[140] लेकिन जैसे ही ज़ेंगडे राजा का इंतकाल हुआ तो 8 मुसलमान औरतों को आज़ाद कर के गुआंगज़ू भेज दिया गया, जिनको ज़ेंगडे ने अपनी बांदी बना कर महल में क़ैद किया हुआ था उनमें नी'एरगन भी थी जो उन सब की सरदार थी। इस के अलावा ज़ेंगडे की एक और सेमू मुस्लिम बांदी का नाम माजी Maji था जो मा अंग Ma ang की छोटी बहन थी। मा अंग पिछली फ़ौज का सहायक आयुक्त Assistant Commissioner of Rear Army था। मा जी की शादी पहले बी चुन Bi Chun से हुई थी और वो गर्भवती भी हो गई थी बाद में उस के भाई ने उसे ज़ेंगडे को पेश कर दिया। वह घुड़सवारी और तीरंदाजी में भी बहुत कुशल थी और संगीत भी जानती थी और मंगोलियाई भाषा भी बोल सकती थी। 25 July 1521 CE को एक फ़रमान जारी किया गया जिसमें यू योंग का बीजिंग में सार्वजनिक रूप से सर क़लम कर दिया गया और उस की संपत्ति ज़ब्त कर ली गई।

ज़ेंगडे का दौरा

ज़ेंगडे को सियासी मामलात में बिलकुल दिलचस्पी नहीं थी उस को शिकार करने और घूमने फिरने का शौक़ था इस लिए वो जुलाई 1518 CE में एक दौरे

पर निकल गया। उसने अपने अहलकार ज़ू शू Zhu Shou को हुक्म दिया कि वह फ़ौज इकट्ठी कर के उस के दुश्मनों के ख़िलाफ़ लड़ने जाए। उसने ज़ू शू को एक जागीर भी दी और उसके सैन्य कारनामों के लिए उसे ताईशी Taishi की उपाधि दी और वार्षिक वेतन तय किया। वू ज़ोंग के इस दौरे को 'दक्षिण का दौरा' कहा जाता है। जो कोई भी उसका विरोध करता उसे तब तक कोड़े मारे जाते जब तक वह मर न जाता। इस दौरे के दौरान उसने अपने कई अधिकारियों की महिलाओं को अपनी खुशी के लिए हासिल किया। 1521 CE में वो बीजिंग वापस लौटा लेकिन फ़ौरन उस का इंतकाल हो गया।

इस्लाम की प्रशंसा

ज़ेंगडे ने कई लेखों में इस्लाम की प्रशंसा की है। एक मुस्लिम विद्वान, वांग डाईयू Wag Daiyu, ने अपनी पुस्तक जेंगजियाओ ज़ेनचुआन Zhengjiao Zhenquan में जिक्र किया है कि ज़ेंगडे ने इस्लाम के प्रति अच्छी राय व्यक्त की है। यह याद रखना चाहिए कि वांग डाईयू के पूर्वज मध्य एशिया से थे जिन्हें नानजिंग में स्थापित खगोलीय वेधशाला Astronomical Observatory से संबंधित सेवाएं प्राप्त करने के लिए बुलाया गया था। उस अंश का अर्थ कुछ इस प्रकार है [सम्राट वू ज़ोंग ने एक बार अपने अधिकारियों से कहा था, कन्फ्यूशीवाद, हालाँकि एक देश प्रणाली की स्थापना के लिए सहायक है, लेकिन इसमें आध्यात्मिक शिक्षा की कमी है। बौद्ध धर्म और डाओवाद, में हालाँकि आध्यात्मिक शिक्षाएं प्रचुर मात्रा में हैं। लेकिन किसी व्यक्ति की आत्मा प्रकृति में कब लौटती है, इस पर मार्गदर्शन प्रदान नहीं करते हैं। केवल इस्लाम की सच्ची शिक्षाएँ मजबूत

तर्कसंगत तर्कों पर आधारित हैं। इसीलिए इस्लाम की शिक्षाएँ सदैव कायम रहने वाली हैं। वू ज़ोंग ने इस बारे में एक कविता भी लिखी, जिसका अनुवाद इस प्रकार है कि, एक शिक्षा (इस्लाम की शिक्षा) सही है और कई शिक्षाएँ (कई धर्मों की शिक्षाएँ) गुमराह करने वाली हैं। यदि आप अपने सच्चे निर्माता (अल्लाह) का सम्मान नहीं करेंगे, तो आप किसका सम्मान करेंगे?][141]

वूज़ोंग ने चेन यू Chen You जो एक मुस्लिम जनरल, के पर-पोते चेन डेस Chen Dace को एक जागीर भी दी थी और उस को मियान का ड्यूक Duke of Mian का लक़ब भी दिया था क्यों कि चेन यू Chen You ने मियाओ विद्रोहियों के ख़िलाफ़ मिंग सेना का नेतृत्व किया था और विद्रोह को कुचल दिया था। उस के दौर में एक वाक़िया यह भी पेश आया कि हामी का चीफ़ मिलिट्री कमिश्नर सय्यिद हुसैन Saiyid Husain था, जो हामी की पूरी तरह रक्षा नहीं कर पाया। इस लिए हामी तुरफ़ान हुकूमत के क़ब्ज़े में चला गया। इस लिए वूज़ोंग ने सय्यिद हुसैन को साज़िश करने के इल्ज़ाम में सज़ा-ए-मौत सुना दी लेकिन सय्यिद हुसैन, वूज़ोंग के अहलकार चियान निंग Qian Ning को रिश्वत देकर सज़ा से बच गया। चुनांचे सय्यिद हुसैन, और उस का बेटा महमूद (Maheimu) और भतीजी का शौहर मीर मुहम्मद (Mi'er Maheima) को हुईटोंग गुआन Huitong Guan नाम के एक मेहमान ख़ाने में रख दिया गया जो विदेशियों के लिए बनाया गया था। 1519 CE में वूज़ोंग ने सय्यिद हुसैन और मीर मुहम्मद को ज़ू Zhu का ख़ानदानी नाम दिया।

अध्याय 6

ज़ेंग हा

第六章

郑和

Chapter Six
Zheng He

ज़ेंग हा

मिंग हुकूमत के योंगले राजा के शासन काल के दौरान, ज़ेंग हा ने एक आधिकारिक राजदूत के रूप में पूर्वी एशिया का दौरा किया। इसके बारे में विस्तार से बताया जा रहा है। ज़ेंग हा (1371-1435 ई.) मिंग सम्राट योंगले के शासनकाल के दौरान एक मुसलमान चीनी जनरल, किन्नर अधिकारी, राजदूत, नौसैनिक एडमिरल था। योंगले सम्राट ने कुछ विदेशी हुकूमतों के साथ मिंग के संबंधों को बेहतर बनाने के लिए 1405 से 1433 के बीच दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया और पूर्वी अफ्रीका के राज्यों में, ज़ेंग हा को एक राजदूत के रूप में एक बेड़े के साथ भेजा। चूँकि उस समय इन क्षेत्रों की अधिकांश सरकारें मुस्लिम थीं, इसलिए योंगले राजा ने ज़ेंग हा को अपना राजदूत चुना, क्योंकि ज़ेंग हा भी एक मुस्लिम था। वह योंगले राजा का सबसे भरोसेमंद अधिकारी था जिसने जियानवेन राजा को उखाड़ फेंकने में योंगले की मदद की थी। यह याद रखना चाहिए कि जियानवेन राजा को उखाड़ फेंकने के बाद योंगले सिंहासन पर बैठा था, जिस का विस्तार से ऊपर जिक्र किया गया है। बाद में, ज़ेंग हा को योंगले राजा द्वारा दक्षिणी राजधानी नानजिंग का कमांडर बनाया गया। ज़ेंग हा का असली नाम ‘मा हा’ Ma He (馬和) था। याद रखें कि 'मा' 'मुहम्मद' का संक्षिप्त रूप Abbreviation है और ‘हा’ he का अर्थ है 'और'। और 'ज़ेंग' सम्मान की उपाधि है। उसका परिवार युन्नान के कुनयांग Kunyang और कुनमिंग Kunming में बस गया था। उस का एक बड़ा भाई और 4 बहनें थीं। ज़ेंग हा एक लंबा आदमी था, जिसकी ऊंचाई 7 ची और कमर

की परिधि 5 ची थी, उसका माथा और गाल उभरे हुए थे, छोटी नाक, चमकदार आंखें और सीप जैसे चमकीले दांत और घंटी जितनी ऊंची आवाज थी। एक ची लगभग 13.1 इंच का होता है, इस लिए उसकी लंबाई 7 फुट 6 इंच हुई। वह मार्शल आर्ट का माहिर था।[142] हालाँकि वह एक मुस्लिम था, लेकिन उसकी मान्यताएँ मिली जुली थीं। वह देवी तियानफ़ेई Tianfei का अनुयायी भी था, जिसे नाविकों की देवी माना जाता था, इसलिए जब वह यात्रा पर निकलता था, तो सुरक्षा के लिए उस से प्रार्थना करता था। उस ने अपनी यात्रा के दौरान मुस्लिम सूफी मज़ारों का भी दौरा किया, जैसे लिंगशान पहाड़ और गुआंगज़ू के मज़ार। ज़ेंग हा के दादा के दादा, प्रसिद्ध संत सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उमर (1211-1279) Sayyid Ajjal Shams al-Din Omar थे जो मंगोल शासन के प्रारंभिक काल में युन्नान के गवर्नर थे। और उस के दादा के पिता बायान Bayan युन्नान के मंगोल सैन्य किले के प्रभारी रहे होंगे। उस के दादा को हाजी कहा जाता था जबकि उस के पिता को 'मा हाजी' Ma Hajji कहा जाता था। 1381 ई. में, जब मिंग सेना ने युन्नान पर आक्रमण किया, तो युन्नान का शासक युआन राजकुमार बसालवर्मी था, जिसे प्रिंस लियांग के नाम से भी जाना जाता था। 1381 ई. में ज़ेंग हा के पिता मा हाजी युआन और मिंग की लड़ाई में मारे गए, उस समय उन की उम्र 37 या 39 साल थी, लेकिन यह ज्ञात नहीं है कि वह मंगोल सरकार की ओर से लड़ रहे थे या दुर्घटनावश मारे गए थे। ज़ेंग के बड़े भाई वेनमिंग Wenming ने उन्हें कुनमिंग Kunming के बाहर दफनाया। जब ज़ेंग हा एक एडमिरल बन गया, तो उसने अपने पिता की कब्र पर एक शिलालेख

लगाया, जिसे योंगले राजा के तीसरे वर्ष में डुआनवु महोत्सव Duanwu Festival के अवसर पर संस्कार मंत्री ली ज़ीगाँग Li Zhigang ने खुदवाया था।

ज़ेंग हा की गिरफ्तारी

उसी वर्ष, 1381 ई. में, ज़ेंग हा को मिंग सेना द्वारा पकड़ लिया गया। हुआ यह था कि मिंग जनरल फू यूडे ने मा हा (ज़ेंग हा) को सड़क के किनारे खड़ा पाया और उससे एक मंगोल भगोड़े के बारे में पूछा, "क्या तुमने उसे देखा है?" मा हा ने संदेहास्पद अंदाज़ में से उसे बताया कि वह झील में कूद गया है। तो फू यूडे ने मा हा को गिरफ़्तार कर लिया। दूसरी रिवायत में है कि जब मिंग फ़ौज ने युन्नान की डाली हुकूमत (937-1253) Dali Kingdom को शिकस्त दी और उसके शासक डुआन भाइयों को गिरफ़्तार कर के मिंग राजधानी भेजा दिया गया। डाली की फ़ौज में बहुत से मुसलमान भी थे वो भी गिरफ़्तार कर के लाए गए। लान यू और फ़ू यूडे ने, डाली की फ़ौज में से 380 आदमियों को किन्नर eunuch बना दिया जिनमें से बहुत से बाद में मिंग हुकूमत के दरबारी किन्नर नौकर eunuch servant बने जिनमें ज़ेंग हा Zheng He भी था।

उसे 10 से 14 वर्ष की उम्र के बीच गुलाम बना लिया गया और एक सिविल सेवक के रूप में राजकुमार यान की सेवा में लगा दिया गया। यह राजकुमार यान, जिसे ज़ू डी के नाम से भी जाना जाता है, बाद में योंगले राजा के रूप में सिंहासन पर बैठा। प्रिंस यान मा हा से 11 साल बड़ा था। मा हा अपनी ईमानदारी के कारण प्रिंस यान का सबसे भरोसेमंद नौकर बन गया। चूँकि 1380 ई. से प्रिंस यान बीपिंग (बाद में बीजिंग हो गया) के गवर्नर के रूप में कार्यरत था, जो मिंग

साम्राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित था और अक्सर मंगोलों द्वारा उस पर हमला किया जाता था। इसलिए, मा हा ने शुरू में उत्तरी सीमा पर एक सैनिक के रूप में कार्य किया और मंगोल सरकार के ख़िलाफ़ कई लड़ाइयाँ लड़ीं। 2 मार्च 1390 ई. को उस ने प्रिंस यान के साथ अपना पहला अभियान शुरू किया, जिसमें मंगोल कमांडर नागाचू Naghachu ने प्रिंस यान के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। मा हा, प्रिंस यान के इतना करीब हो गया कि लोग उन्हें सानबाओ Sanbao कहने लगे, जिसका मतलब है 3 रतन। चूंकि मा हा बीपिंग में रह रहा था, जो बाद में बीजिंग बन गया, उस की शिक्षा वहीं हुई, लेकिन अगर वह राजधानी नानजिंग में होता तो ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि होंगवू राजा को किन्नरों को शिक्षित करना पसंद नहीं था। उस का मानना था कि किन्नरों को शिक्षित करने से वे सरकार के लिए खतरा बन जाएंगे। बल्कि उसने अपने कई शक्तिशाली जनरलों और अधिकारियों को मार डाला था जिन्हें वह अपनी सरकार के लिए ख़तरा मानता था। उसने अपने अधिकारियों की तुलना में अपने बेटों को अधिक शक्तियाँ दीं और बड़ी जागीरें दीं, विशेष रूप से उत्तर के राजकुमारों को, जिनमें प्रिंस यान भी शामिल था, जो बाद में योंगले राजा के रूप में सिंहासन पर बैठा।

ज़ेंग हा की सेवाएँ

जिंगनान अभियान के दौरान भी, ज़ेंग हा ने शाही सेना के ख़िलाफ़ बीपिंग शहर में ज़ेंगलुनबा Zhenglunba जलाशय (बीपिंग शहर का जल भंडार) की सफलतापूर्वक रक्षा की। 1402 ई. में, ज़ेंग हा ने राजकुमार यान की सेना में एक

कमांडर के रूप में कार्य किया। जब प्रिंस यान योंगले राजा के रूप में सिंहासन पर बैठा, तो ज़ेंग हा को महल के 'नौकरों का पर्यवेक्षक' के रूप में तैनात किया गया, जिसे ताईजियान Taijian कहा जाता था, जिसका अर्थ है ग्रैंड डायरेक्टर Grand Director, यह राजा के बाद सर्वोच्च पद होता था। 11 फ़रवरी, 1404 ई. को, योंगले राजा ने मा हा को ज़ेंग हा की उपाधि दी। याद रहे 'जेंग' आदर के लिए बेला जाता है जैसे अंग्रेजी में लॉर्ड बोल जाता है। क्योंकि मा ने 1399 ई. में शाही सेना के ख़िलाफ़ बीपिंग के जेंगलुनबा किले की सफलतापूर्वक रक्षा की थी। और दूसरा कारण यह था कि उस ने 1402 ई. में नानजिंग पर विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

ज़ेंग हा के समुद्री अभियान

ज़ेंग हा के समुद्री अभियान असल में कूटनीतिक अभियान Diplomatic campaigns थे जो 1405-1433 CE के दरम्यान हुए। यह मुहिमें योंगले राजा ने भेजी थीं ताकि मिंग हुकूमत के संबंध दूसरी आसपास की हुकूमतों से बेहतर हो सकें। उनको मिंग ख़ज़ानों के अभियान Ming treasure voyages भी कहा जाता है क्यों कि इन मुहिमों में ख़ास किस्म के पानी के जहाज़ इस्तेमाल हुए थे जिनको ख़ज़ानों के जहाज़ treasure ships कहा जाता है, दूसरी वजह यह हो सकती है कि मिंग हुकूमत ने दूसरे बादशाहों को बहुत से तोहफ़े या खज़ाने भेजे थे जिसके जवाब में उन राजाओं ने भी मिंग हुकूमत को तोहफ़े भेजे जिनमें कई बेशकीमती खज़ाने भी थे। यह मुहिमें दक्षिणी चीनी समुद्र South China Sea और हिंद महासागर Indian Ocean में भेजी गई थीं। यह कुल 7 यात्राएं थीं।

जिनमें 6 यात्राएं योंगले राजा के दौर में 1402-1424 CE के दरम्यान हुईं और 1 यात्रा उस के उत्तराधिकारी शुआनडे राजा के दौर में 1425-1435 CE के दरम्यान हुआ। यह यात्राएं ज़ेंग हा के नेतृत्व में हुईं। पहली तीन यात्राओं में वो हिन्दुस्तान के मालाबार इलाक़े की कालीकट बंदरगाह तक आया और चौथी यात्रा में वो फ़ारस की खाड़ी के हुर्मुज़ शहर तक गया। और आख़िरी तीन यात्राओं में वह अरब और पूर्वी अफ्रीका तक गया।

जहाजों की तैयारी

जब योंगले राजा 1402 CE में जियानवेन राजा को हराकर राजा बना तो उसने चीन को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र बनाने का मंसूबा बनाया। इस के लिए उस को दूसरे देशों से बेहतर संबंध बनाने की ज़रूरत महसूस हुई। चुनांचे इस मक़सद के लिए उसने 1403 CE में खज़ाने के जहाजों का बहुत बड़ा बेड़ा बनाने का आदेश जारी किया।[143] चीनी सूत्रों में इस खज़ाने के बेड़े का Xiafan Guanjun 下番官軍; ('विदेशी अभियान दल') ('foreign expeditionary armada') के नाम से ज़िक्र किया गया है जो इस का असल सरकारी नाम था।[144] इस बेड़े में मुख्य रूप से जो जहाज़ इस्तेमाल हुए वो एक ख़ास आकार के जहाज़ होते थे जिनको खज़ाने का जहाज़ Treasure Ship कहा जाता था और इन जहाज़ों के बेड़े को खज़ाने का बेड़ा treasure fleet कहा जाता है। ऐतिहासिक स्रोतों से पता चलता है कि 1403-1419 CE के दरम्यान 2868 जहाज़ बनाए गए। योंगले राजा ने फ़ुजियान, जियांगशी, ज़ीजियांग और हूगुआंग Fujian, Jiangxi, Zhejiang and Huguang की सूबाई हुकूमतों को हुक्म दिया कि वो जहाज़

बनाएँ। इस के अलावा नानजिंग और सूज़ू Suzhou के सैन्य अधिकारियों को भी जहाज़ बनाने का हुक्म दिया गया।[145]

जहाजों का विवरण

आम तौर पर एक जहाज़ की लंबाई 232 फुट और चौड़ाई 50 फुट होती थी जिस पर 6 या 7 बादबान (sail/पाल) बंधे होते थे, और 24 तोपें होती थीं। एक जहाज़ पर 500 से 600 लोग सवार हो सकते थे। सबसे बड़े जहाज़ जो मिले हैं उनकी लंबाई 440 फुट और चौड़ाई 180 फुट नापी गई है। ज़ेंग हा के जहाज़ों के आकार Size के बारे में कई हवाले मिलते हैं, एक रिवायत के अनुसार, ज़ेंग हा के जहाज़ों की लंबाई भी 450 फुट और चौड़ाई 200 से 250 फ़ुट थी। ज़ेंग हा के ज़्यादातर जहाज़ लौंगजियांग शिपयार्ड Longjiang shipyard में बनाए गए थे। यह बंदरगाह नानजिंग के निकट चिनहुवाई नदी Qinhuai River पर स्थित थी। चिनहुवाई नदी यांग्ज़ी नदी में गिरती थी। जहाजों के निर्माण के लिए लकड़ी प्राप्त करने के लिए मिन नदी Min River के किनारे सैकड़ों पेड़ काटे गए और कुछ अन्य जहाजों को भी खज़ाना जहाज़ बनाया गया।

इस बेड़े में कई प्रकार के जहाज़ होते थे जिनमें से कुछ की तफ़सील निम्नलिखित है:

1.**खज़ाने के जहाज़** Bao Chuan (Treasure Ship): इस पर कमांडर और बेड़े के अफ़सरान सवार होते थे। इस पर 9 बादबान होते थे, लंबाई 127 मीटर/ 417 फ़ुट और चौड़ाई 52 मीटर/171 फुट। इस पर 4 डैक होते थे।[146]

2.**घोड़े के जहाज़** Ma Chuan (Equine Ships): इन जहाज़ों पर घोड़े ले जाए जाते थे, इस के अलावा राजा के तोहफ़े, जहाज़ों की मरम्मत का सामान। इस पर 8 बादबान होते थे। लंबाई 338 फुट और चौड़ाई 138 फुट होती थी।

3. **सप्लाई जहाज़** Liang Chuan (Supply Ship): इस में अमले का खाने पीने का राशन होता था। 7 बादबान होते थे। 256 फुट लंबाई और 115 फुट चौड़ाई होती थी।

4.**फ़ौज के जहाज़** Bing Chuan (Troop Ship): इन पर सेना सवार होती थी, 6 बादबान होते थे। लंबाई 220 फुट और चौड़ाई 82 फ़ुट।

5.**जंगी जहाज़** Fu Chuan (Warship): यह जंग के लिए इस्तेमाल होते थे, जिन पर 5 बादबान होते थे। लंबाई 160 फ़ुट।

6.**गशती कशती** Zuo Chuan, (Petrol Boat): इस की लंबाई 121 फुट होती थी।

7.**पानी का टैंकर** Shui Chuan (Water tanker): इस में एक महीने का पीने का पानी होता था।

बेड़े का निज़ाम

ज़ेंग हा के बेड़े में कई आकार के जहाज़ शामिल थे। इस बेड़े में सबसे बड़े जहाज़ जो थे वो खज़ाने के जहाज़ treasure ships कहलाते थे, शायद यह वो जहाज़ थे जो तिजारती माल ढोने के लिए इस्तेमाल होते थे। फ़िनले Finlay के मुताबिक़[147] एक जहाज़ पर तकरीबन 500 लोग सवार हो सकते थे जबकि मिल्स Mills के मुताबिक़ 600 लोग।[148] इस के अलावा छोटी नौकाएं भी होती थीं, मा हुआन के अनुसार लोग छोटी नावों में सवार हो कर अंदरूनी इलाक़े घूमने जाते थे जबकि बड़े जहाज़ दूर समुद्र में ठहरते थे। पहली यात्रा में, बेड़े में 317 जहाजों पर 27,800 लोग सवार थे, जिनमें 62 खज़ाना जहाज़ Treasure ships शामिल थे। सातवीं यात्रा में लगभग 100 ख़जाना जहाज़ थे।[149] शिया शियांग ने उनमें से कई जहाज़ों के नाम भी ज़िक्र किए हैं जिनमें से कुछ यह हैं; चिंगहे Qinghe, हुईकांग Huikang, चांगनिंग Changning, अंजी Anji और चिंगयुआन Qingyuan वग़ैरह। और यह भी लिखा है कि कुछ जहाज़ों को नंबर दिए गए थे।[150]

इस के अमले में 7 ग्रांड डायरेक्टर Grand Directors (taijian) थे जो बेड़े के कमांडर और राजदूत के रूप में काम करते थे और 10 जूनियर डायरेक्टर Junior Directors (shaojian) थे, यह सब बड़े छोटे डायरेक्टर किन्नर थे। कुल मिला कर 70 किन्नर बेड़े के कमांडर थे। 2 ब्रिगेडियर brigadiers (du zhihuishi) थे, 93 कप्तान captains (zhihuishi) थे, 104 लेफ्टिनेंट lieutenants (qianhu) और 103 उप-लेफ्टिनेंट sub-lieutenants (bohu) थे। (हालाँकि इन सब पदों का सही

तर्जुमा करना बहुत मुश्किल है लेकिन यहां पर मिल्स की किताब का तर्जुमा पेश किया जा रहा है).[151] 180 चिकित्सा अधिकारी, एक वित्त मंत्रालय ब्यूरो निदेशक Ministry of Finance bureau director, दो सेक्रेटरी, 2 राज्य औपचारिक प्रोटोकॉल अधिकारी Court of State Ceremonial protocol officers, एक ज्योतिष अधिकारी astrological officer और 4 ज्योतिषी। इस के अलावा गार्डों के जज guard judges (wei zhenfu), बटालियन जज battalion judges (suo zhenfu), छोटे अधिकारी petty officers (qixiao or quanxiao), बहादुर फ़ौजी brave corps (yongshi), ताक़तवर फ़ौजी power corps (lishi) (मिल्स का ख़्याल है कि यह भारी जंगी हथियार चलाने वाले फ़ौजी थे) वग़ैरह। ज़मीनी फ़ौज जिनमें आम फ़ौजी और झंडा उठाने वाले फ़ौजी शामिल थे, अन्य सेवा करने वाले, ख़रीदने वाले और क्लर्क थे। इस के अलावा बौद्ध, हिंदू और मुसलमान धर्म गुरु भी शामिल थे।[152]

ज़ू युनमिंग Zhu Yunming की शिया शियांग Xia Xiyang किताब के मुताबिक़ जहाज़ के अमले में यह लोग थे, बड़े अधिकारी, छोटे अधिकारी, फ़ौजी, बावर्ची, पतवार चलाने वाले, लंगर डालने वाले, मुतर्जिम (अनुवादक), व्यापारी, अकाउंटंट, चिकित्सक, मैकेनिक, कॉल्कर caulkers (जहाज़ के तख़्तों के बीच दर्जों को भरने वाले), जहाज़ बनाने वाले या बादबान बनाने वाले, जहाज़ चलाने वाले और कश्तियां चलाने वाले वग़ैरह।[153]

यात्रा की तैयारी

योंगले राजा ने इस अभियान का प्रधान सेनापति ज़ेंग हा को बनाया था क्यों कि ज़ेंग हा योंगले राजा का बहुत क़रीबी सहयोगी था। उसने ज़ेंग हा को अपनी मुहर वाले खाली स्क्रॉल Scrolls (लिपटे हुए कागज) भी दिए ताकि वह यात्रा के दौरान राजा की ओर Behalf से आदेश जारी कर सके। ज़ेंग हा के अलावा दूसरे किन्नर अहलकार थे वांग जिंग होंग, हो शियान, ली शिंग, ज़ू लियांग, ज़ू मान, होंग बाओ, यांग ज़ैन, ज़ांग डा और वूज़ोंग वग़ैरह Wang Jinghong, Hou Xian, Li Xing, Zhu Liang, Zhou Man, Hong Bao, Yang Zhen, Zhang Da, and Wu Zhong. इस के अलावा बाक़ी अमला मिंग सेना से था जिन में से ज़्यादातर लोग फ़ुजियान Fujian से थे।

यात्राओं की रूपरेखा

पहली तीन यात्राओं में जो (1405-1411 CE) के दौरान हुई थीं उनमें इस बेड़े ने वह मुख्य समुद्री मार्ग अपनाया जो फ़ुजियान से चम्पा होते हुए दक्षिणी चीनी समुद्र पार कर के जावा सुमात्रा होते हुए हिंद महासागर में श्रीलंका तक जाता था और फिर भारत के मालाबार तट पर कालीकट Calicut पहुंचता था। लेकिन चौथे सफ़र के दौरान वो कालीकट से आगे हुर्मुज़ Hormuz तक गए। 5 वीं और 6 वीं यात्रा के दौरान वो और आगे बढ़कर अरब और पूर्वी अफ़्रीक़ा तक पहुंचे। और 7 वीं यात्रा पर वो बेड़ा हुर्मुज़ पहुंच कर कई ग्रुप में बट गया जो अरब और अफ़्रीक़ा की अलग अलग हुकूमतों के पास गए।[154]

पहली यात्रा

चीनी कैलेंडर के तीसरे चंद्र माह में 11 July 1405 CE को योंगले राजा ने एक आदेश जारी कर ज़ेंग हा, वांग जिंगहोंग Wang Jinghong और उनके अन्य साथियों को 30 मार्च और 28 अप्रैल, 1405 ई. के बीच अपने 27,800 दल के साथ पश्चिमी सागर Western Ocean के लिए प्रस्थान करने का निर्देश दिया। राजा ने उनके सफ़र पर रवाना होने से एक दिन पहले शाम को अमले के प्रमुख सदस्यों की दावत की और अधिकारियों के मुक़ाम-ओ-मर्तबा और रैंक के अनुसार उपहार और सम्मान दिए। यह सारा अमला नानजिंग में जमा हुआ और 11 July 1405 CE को यह क़ाफ़िला रवाना हुआ। राजा ने पश्चिमी समुद्र के राजाओं को पत्र और बहुत से क़ीमती तोहफ़े दिए जैसे सोने की ख़िलअतें जिन्हें गोल्ड ब्रोकेड Gold brocade कहा जाता है, नमूनादार रेशम patterned silk, और रंगीन रेशमी गोज Coloured silk gauze आदि।[155]

चुनांचे लौंग जियांग शिपयार्ड Longjiang shipyard से रवाना हो कर यह जहाज़ों का बेड़ा यांग्त्ज़ी नदी से लियूजियागांग Liujiagang पहुंचा यहां पर ज़ेंग हा ने अपने बेड़े को संगठित किया और तियानफ़ी Tianfei देवी के लिए क़ुर्बानी की, यह मल्लाहों की देवी मानी जाती थी हालाँकि ज़ेंग हा मुसलमान था। 4 से 8 हफ़्ते के बाद यह बेड़ा चांगले Changle में लंगर अंदाज़ हुआ। यहां उन्होंने उत्तर-पूर्वी शीतकालीन मानसूनी हवा के लिए कुछ समय तक इंतजार किया, क्यों कि उनके पास बादबानी जहाज़ (sail ships) थे जो हवा के रुख पर चलते थे और उत्तर-पूर्वी हवाओं से उनको आगे बढ़ने में मदद मिलती थी। इस के

बाद वो फ़ुजियान Fujian के तट की तरफ़ रवाना हुए। वो फ़ुजियान में मिन नदी के वुहुमेन Wuhumen के ज़रिये समुद्र में दाख़िल हुए जो आज का दक्षिणी चीनी सागर और हिंद महासागर है, उस को मिंग दौर में पश्चिमी सागर कहा जाता था। समुद्र में दाख़िल हो कर उन्होंने चम्पा Champa की चुई नोन Qui Nhon बंदरगाह पहला लंगर किया। इस के बाद वो इन इलाक़ों की तरफ़ बढ़े जैसे जावा, मलक्का, अरु, समुदरा, लम्बरी, सीलोन (श्रीलंका), चुईलोन और आख़िर में कालीकट पहुंचे।[156] Java, Malacca, Aru, Samudera, Lambri, Ceylon (Sri Lanka), Quilon, and Calicut. लम्बरी से यह बेड़ा हिन्द महासागर होते हुए बंगाल की खाड़ी के रास्ते सीलोन पहुंचा। लम्बरी से रवाना होने के तीन दिन बाद एक जहाज़ बेड़े से अलग हो गया और अंडमान व नोकोबार द्वीप Andaman and Nicobar Islands पहुंचा। 6 दिन बाद उन लोगों को सीलोन (श्रीलंका) के पहाड़ दिखाई दिए और वो सीलोन के पश्चिमी तट पर पहुंच गए लेकिन यहां पर उनको स्थानीय शासक अलागक्कोनारा Alagakkonara के लोगों की तरफ़ से विरोध का सामना करना पड़ा, इस लिए वे उसे छोड़कर आगे बढ़ गए।[157] इतिहासकार ड्रेयर Dreyer लिखता है कि संभव है कि उन लोगों ने चुईलोन Quilon बंदरगाह पर पड़ाव किया हो, हालाँकि उस का कोई उल्लेख नहीं है लेकिन बाद में चुईलोन का राजा 1407 CE के सफ़र (यात्रा) में उन के साथ था।[158] याद रहे चुईलोन को अब कोल्लम Kollam कहा जाता है। इतिहासकार मिल्स लिखता है कि उन्होंने शायद 4 महीने कालीकट में गुज़ारे होंगे, दिसंबर से अप्रैल 1407 CE के दरम्यान। भारत

में केप कोमोरिन Cape Comorin (आज की कन्याकुमारी) पहुंच कर उन लोगों ने वापसी की यात्रा शुरू कर दी और वापसी के दौरान यह लोग मलक्का में रुके। इसी दौरान उनकी लड़ाई पालमबांग के चेन ज़ुई Chen Zuyi समुद्री डाकुओं से हुई।[159] इस लड़ाई में उन्होंने डाकुओं को शिकस्त दी। उनका सरदार चेन ज़ुई गिरफ़्तार हुआ, और उसको उसके एक साथी के साथ क़त्ल कर दिया गया और वो लोग 2 October 1407 CE में नानजिंग वापस पहुंचे। उनकी ख़बर पर राजा ने शी जिनचिंग Shi Jinqing को पालमबांग की निगरानी का अफ़सर बना दिया ताकि वहां पर जहाज़ों के साथ कोई लूट मार न कर सके। इस बेड़े के साथ वापसी में दूसरे राजाओं के दूत भी थे ताकि वो राजा को श्रद्धांजलि पेश करें और अपने स्थानीय उत्पाद तोहफ़े में दें। यह प्रतिनिधि इन हुकूमतों के थे, कालीकट, चुईलोन, समुदरा, अरु, मलक्का और अन्य। Calicut, Quilon, Samudera, Aru, Malacca, and other unspecified nations. योंगले राजा ने संस्कार मंत्रालय Ministry of Rites को आदेश दिया, जिसके फ़राइज़ में विदेशी प्रतिनिधियों को प्रोटोकॉल देना शामिल था, कि इन विदेशी राजाओं के लिए उपहार तैयार करे जिन्हों ने दरबार में प्रतिनिधि भेजे थे।[160]

दूसरी यात्रा

राजा ने दूसरे सफ़र का हुक्मनामा, अक्तूबर October 1407 CE को जारी किया। इस बार भी ज़ेंग हा को कमांडर बनाया गया और उस के साथ वांग जिंगहोंग और हू शियान Hou Xian भी थे।[161] चुनांचे 30 अक्तूबर 1407 CE को बड़े डायरेक्टर Grand director को एक छोटी फ़ौज के साथ चम्पा Champa की

तरफ़ रवाना किया उस के बाद जहाज़ का असल बेड़ा ज़ेंग हा के नेतृत्व में आगे बढ़ा। यह बेड़ा नानजिंग से लियूजियागांग Liujiagang होता हुआ चांगले पहुंचा। इस के बाद यह चम्पा, सियाम, जावा, मलक्का, समुदरा, अरू, लम्बरी, सुमात्रा, ज्याईले, अबोबदान, गानबली, चुईलोन, कोचीन होता हुआ कालीकट पहुंचा।

Champa, Siam, Java, Malacca, Samudera, Aru, Lambri on Sumatra; Jiayile, Abobadan, Ganbali, Quilon, Cochin, and Calicut. इस सफ़र के दौरान वो सीलोन में नहीं रुके। इस बार राजा ने इस क़ाफ़िले को यह काम दिया था कि वो कालीकट के ज़मोरिन zamorin राजा माना विकरान Mana Vikraan (जिसको माना पिएचियालामन Mana Piehchialaman भी कहा जाता है) के साथ सरमायाकारी का औपचारिक formal investiture समझौता करे। इस सरमायाकारी संधि investment treaty की याद में कालीकट में एक स्मारक शिलालेख लगाया गया memorial inscription was erected। इस के अलावा चीनी प्रतिनिधिमंडल ने कालीकट के राजा और उस के विशेष अधिकारियों को अपने राजा की ओर से उपहार (ब्रोकेड और गॉज) (brocades and gauzes) भी भेंट किए। यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि इस दौरान वह लोग 4 महीने कालीकट होंगे। दिसंबर December 1408 से April 1409 CE तक। वापसी में कालीकट के राजा ने भी चीनी राजा को तोहफ़े भेजे जिनमें घोड़े और काली मिर्च शामिल थीं।[162] आज भी कालीकट में चीनी संबंध के कुछ निशान मिलते हैं जैसे चायना कोटा Chinese Fort ("Chinakotta"), कप्पड़ में

चायना चेरी Chinese Settlement ("Chinachery" in Kappad) और कोल्लम के पंथालयिनी में चीना पली Chinese Mosque ("Chinapalli" in Panthalayini Kollam).[163]

इसी यात्रा के दौरान इस क़ाफ़िले ने मिंग सरकार और जावा सरकार के बीच एक विवाद भी सुलझाया। हुआ यह था कि 1401 CE में मिंग हुकूमत के राजदूत व्यापार के उद्देश्य से पूर्वी जावा गए थे, लेकिन पूर्वी जावा की विरोधी सरकार ने गलती से उन पर हमला कर दिया, जिसमें 170 मिंग सैनिक मारे गए। इसके कारण 1401 और 1406 CE. के बीच मिंग और पश्चिम जावा के बीच तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई, क्योंकि मिंग सरकार ने पश्चिम जावा से 60,000 सोने के लियांग की फिरौती मांगी थी और न देने की सूरत में उस को हमले की धमकी दी थी जैसे अन्नाम Annam (Vietnam वियतनाम) पर चढ़ाई की गई थी। याद रहे एक लियांग लगभग 50 ग्राम का माना जाता है। चुनांचे ज़ेंग हा ने वो रकम वसूल की, इस के बाद दोनों हुकूमतों के बीच राजनयिक संबंध बहाल हो गए। यह भी कहा जाता है कि जब राजा ने देखा कि पश्चिमी जावा के शासक को अपनी गलती पर पछतावा है तो उस ने 50,000 लियांग माफ कर दिए।[164] इसके बाद भविष्य में ऐसी घटना न हो इसके लिए चीनी सरकार ने उस इलाके पर लगातार निगरानी रखनी शुरू कर दी। इतिहासकार फ़ी शिन Fei Xin ने लिखा है कि इसी सफ़र के दौरान यह लोग मलक्का जलडमरूमध्य Strait of Malacca के पुलाउ सेम्बिलान Pulau Sembilan नाम के जज़ीरे (द्वीप) पर रुके और वहां कुछ अहलकारों को खुशबू-दार लकड़ी काटने के लिए भेजा, चुनांचे

अधिकारियों ने 6 बड़े तने काटे जिनका व्यास (diameter) 8 या 9 ची chi था और लंबाई 6 या 7 ज़ांग zhang थी। याद रहे एक ची 13.1 इंच के क़रीब होता है और एक ज़ांग 10 ची के बराबर होता है। उस की लकड़ी शुद्ध थी और ख़ुशबू दूर तक जाती थी। यह काले रंग की लकड़ी थी जिस पर धारियाँ पड़ी थीं। इस जज़ीरे के लोगों ने जब इस क़ाफ़िले को देखा तो उनकी आँखें फटी रह गईं और ज़बानें बाहर निकली रह गईं। इन राजदूतों ने उन्हें बताया कि हम स्वर्गीय दरबार के सैनिक हैं, और हमारी विस्मयकारी शक्तियां देवताओं के समान हैं 'We are the soldiers of the Heavenly Court, and our awe-inspiring power is like that of the Gods. यह बेड़ा 1409 CE की गरमियों में नानजिंग वापस हुआ।[165]

लेकिन कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दूसरी यात्रा में ज़ेंग हा मौजूद नहीं था क्यों कि तीसरी यात्रा, दूसरी यात्रा के पूरा होने से पहले ही शुरू ही गई थी।[166]

तीसरी यात्रा

योंगले राजा ने 16 January-14 February 1409 CE के दरम्यान तीसरी यात्रा का हुक्म दिया। इस हुक्मनामे में ज़ेंग हा, वांग जिंगहोंग और हू शियान Zheng He, Wang Jinghong, and Hou Xian को संबोधित किया गया था।[167] चुनांचे यह बेड़ा 9 अक्तूबर से 6 नवंबर 1409 CE के बीच किसी तारीख़ को रवाना हुआ और 7 November से 6 December 1409 CE के दरम्यान चांगले पहुंचा। इस के बाद वुहुमेन Wuhumen होते हुए चम्पा, जावा, मलक्का, समुदरा,

सीलोन, चुईलोन, कोचीन और फिर कालीकट पहुंचा। चम्पा में वह 10 दिन रुके। वांगजिंगहोंग और हू शियान ने सियाम, मलक्का, समुदरा और सीलोन में छोटी यात्राएँ कीं। यह क़ाफ़िला 1410 CE में गाले Galle में लंगर अंदाज़ हुआ।[168] वापस आते हुए उनका मुक़ाबला सीलोन के राजा अलकेश्वरा [(जिसको अलागक्कोनारा भी कहा जाता था) King Alakeshvara (Alagakkonara) of Ceylon] से हुआ।[169] अलकेश्वरा, सीलोन और हिन्दुस्तान की दूसरी हुकूमतों के लिए ख़तरा बन गया था। जब यह लोग सीलोन पहुंचे तो उनको सिंहलियों (श्रीलंकाई लोग) का रहन-सहन बहुत ख़राब लगा क्योंकि वे असभ्य और अखड़ थे। इसके अलावा वे समुद्री डकैती भी करते थे। उन्होंने उन लोगों को भी लूटा जिनके मिंग सरकार के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे, इसलिए उन्हें सिंहलियों से और भी अधिक नफ़रत थी। ज़ेंग हा ने अपने 2000 फौजियों को कोटे Kotte भेजा क्योंकि, अलकेश्वरा ने उनको धोके से इस इलाक़े में बुलाया था ताकि ज़ेंग हा का क़ाफ़िला दो हिस्सों में बंट जाए और वो उनके बेड़े पर अचानक हमला कर दे जो कोलंबो Colombo में लंगर अंदाज़ था। लेकिन इस के जवाब में ज़ेंग हा और उस के लश्कर ने राजधानी कोटे Kotte पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। हालाँकि 50,000 सिंहली सेना Sinhalese army (श्रीलंका की फ़ौज) ने कोटे की रक्षा की लेकिन ज़ेंग हा के लश्कर ने उसे हरा दिया। उन्होंने अलकेश्वरा को उस के बीवी बच्चों और महत्वपूर्ण अधिकारियों के साथ गिरफ़्तार कर लिया।[170] इस के बाद 6 July 1411 CE को ज़ेंग हा अपने बेड़े के साथ नानजिंग वापस हुआ और योंगले

राजा के सामने उन क़ैदियों को पेश किया। चीनी हुकूमत ने अलकेश्वरा को बेदख़ल कर के उस की जगह अपने समर्थक राजा पराक्रमाबाहु चतुर्थ Parakramabahu VI को तख़्तनशीन करा दिया। इस के बाद से इस बेड़े को सीलोन में किसी प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा।

चौथी यात्रा

18 December 1412 CE को योंगले राजा ने चौथे सफ़र का हुक्मनामा जारी किया जिसमें ज़ेंग हा और उस के दूसरे साथियों को यात्रा करने का आदेश दिया गया था। 1413 CE में राजा ने मिडसमर फेस्टिवल के लिए तीरंदाजी प्रतियोगिता Archery contest for the Midsummer Festival का आयोजन किया जिसमें तीरंदाजी के मुक़ाबले किए जाते थे। इस मौक़े पर बड़े अहलकारों और विदेशी मेहमानों को आमंत्रित किया जाता था। यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि इस मौक़े पर बहुत से वो ग़ैर मुल्की मेहमान भी मौजूद रहे होंगे जो ज़ेंग हा के चौथे सफ़र में उस के साथ अपने देश वापस जाने वाले थे। चुनांचे ज़ेंग हा अपने इस सफ़र में मुस्लिम देशों का दौरा करने निकला। इस के लिए कुछ तर्जुमा करने वालों की भी ज़रूरत थी। चुनांचे मा हुआन Ma Huan नाम का एक मुतर्जिम (अनुवादक) पहली दफ़ा इस सफ़र में साथ हुआ। शियान Xian मस्जिद के शिलालेखों Inscriptions से संकेत मिलता है कि ज़ेंग हा योंगले राजा के 11 वें वर्ष के चौथे महीने में शियान में था और एक सक्षम अनुवादक की तलाश में था। बिल-आख़िर हसन नाम का एक अनुवादक उसे मिल गया।[171] चुनांचे ज़ेंग हा 1413 CE के पतझड़ के मौसम में नानजिंग से अपने

बेड़े के साथ रवाना हुआ। यह बेड़ा फ़ुजियान होता हुआ आगे बढ़ा। पिछली यात्राओं में यह बेड़ा सबसे दूर कालीकट तक गया था लेकिन अब इस से भी आगे का इरादा था। यह बेड़ा इन जगहों से होता हुआ गुज़रा, चम्पा, केलांटान, पाहांग, मलक्का, पालमबांग, जावा, लम्बरी, लीडे, अरू, समुदरा, सीलोन, ज्याईले जो सीलोन के सामने था (शायद यह आज की कन्याकुमारी के आसपास का इलाक़ा होगा), कोचीन, कालीकट। इस के बाद वह लोग आगे बढ़ कर और जगहों पर गए जैसे लियूशान (मालदीव और लक्षद्वीप जज़ीरे), बिला (बत्रा एटोल), सुनला (चितलट एटोल) और हुर्मुज़। Champa, Kelantan, Pahang, Malacca, Palembang, Java, Lambri, Lide, Aru, Samudera, Ceylon, Jiayile (opposite Ceylon), Cochin; and Calicut. Then they proceeded to Liushan (Maldives and Lakshadweep Islands), Bila (Bitra Atoll), Sunla (Chetlat Atoll), and Hormuz.[172] .
जावा में रुक कर उन लोगों ने वहां के राजा को योंगले राजा के तोहफ़े पेश किए। इस के जवाब में जावा का प्रतिनिधिमंडल 29 April 1415 CE को चीन पहुंचा और योंगले राजा को तोहफ़े पेश किए जिनमें पश्चिमी घोड़े और अन्य स्थानीय वस्तुएं शामिल थीं। 1415 CE में यह वफ़द (प्रतिनिधिमंडल) उत्तरी सुमात्रा में रुका यहां पर सिकन्दर Sekandar नाम के आदमी ने समुदरा Samudera हुकूमत के राजा ज़ैनुल आबिदीन 'Zain al-'Abidin' के सिंहासन पर क़ब्ज़ा कर लिया था। इस प्रतिनिधिमंडल ने सिकन्दर को ही समुदरा का राजा स्वीकार किया। लेकिन चीनी सरकार उसे राजा नहीं मानती थी। इसलिए, चीनी सरकार ने ज़ेंग हा को सिकन्दर के ख़िलाफ़ सैन्य कार्रवाई करने और ज़ैनुल आबिदीन को

सिंहासन पर बहाल करने का आदेश दिया।[173] इसलिए इन लोगों ने सिकन्दर को हरा दिया, भले ही सिकन्दर उनके ख़िलाफ़ हजारों की सेना लेकर आया था। उन्होंने लम्बरी तक सिकन्दर का पीछा किया और उसको पत्नी और बच्चों सहित पकड़ लिया। उसके बाद ज़ैनुल आबिदीन सिंहासन पर बैठा। ज़ैनुल आबिदीन ने अपना आभार व्यक्त करने के लिए चीनी राजा के पास एक प्रतिनिधिमंडल भेजा। इस से चीनी सरकार को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने और अपने व्यापार संबंधों को मजबूत करने का मौका मिला। 12 अगस्त, 1415 ई. को, ज़ेंग हा का बेड़ा नानजिंग लौट आया, जब योंगले राजा मंगोलों के ख़िलाफ़ अपने दूसरे अभियान पर था। अपनी वापसी पर, बेड़ा अपने साथ 18 सरकारों के उपहार लेकर आया जो इन देशों ने योंगले राजा को दिए थे। सिकन्दर को चीनी राजा के सामने पेश किया गया, जिसने उसे मृत्यु दंड दे दिया। मिंग शीलू Ming Shilu पुस्तक के अनुसार, सिकन्दर पिछले राजा का भाई था जिसने भ्रष्टाचार करके सिंहासन पर क़ब्ज़ा कर लिया था।

पांचवां सफ़र

14 November 1416 CE को योंगले राजा नानजिंग लौटा। 19 नवंबर को एक भव्य शाही समारोह आयोजित किया गया जिसमें राजा ने 18 देशों के राजदूतों और अधिकारियों को जो ज़ेंग हा के साथ आए थे, उपहार और सम्मान से नवाज़ा। इस के बाद 19 नवंबर को यह लोग राजा से मिलने दरबार में पहुंचे और 28 दिसंबर को यह लोग राजा से विदाई लेने पहुंचे। राजा ने उन्हें ख़िलअतों (उपहार के कपड़े) से नवाज़ा, उसी दिन राजा ने पाँचवीं यात्रा का आदेश जारी

किया। और ज़ेंग हा को हुक्म दिया कि वो इन राजदूतों को उनके देश वापस पहुंचा कर आए।[174] चुनांचे ज़ेंग हा इन राजदूतों के साथ कई राजाओं के लिए योंगले राजा के पत्र और उपहार के साथ रवाना हुआ। इन राजाओं में कालीकट के राजा का ख़ास ख़्याल किया गया था क्यों कि वो 1411 CE से ज़ेंग हा के क़ाफ़िले की मेहमान-नवाज़ी कर रहा था और उसने यह अनुरोध भी भेजा था कि राजा उस को सरमायाकारी में निवेश करने की अनुमति दे और अपनी मोहर प्रदान करे। योंगले राजा ने उस की दोनों दरख़ास्तें क़बूल कर लीं और उसे एक लंबा शिलालेख दिया (जिसे मुबैयना तौर पर ख़ुद शहंशाह ने लिखा था), और उस को देश की रक्षा करने वाला पहाड़ State Protecting Mountain का ख़िताब दिया, यह शिलालेख चीन की एक पहाड़ी पर स्थापित किया गया।[175]

ज़ेंग हा शायद 1417 CE के पतझड़ के मौसम में चीन से रवाना हुआ। उसने पहला लंगर क़ुआनज़ू में किया ताकि वहां से चीनी मिट्टी के बरतन और दूसरा सामान चढ़ाया जा सके, शायद यह सामान दूसरे बादशाहों को तोहफ़े में देना था। आधुनिक पुरातात्विक खुदाई Modern Archaeological Excavations में चीनी मिट्टी के बहुत से बर्तन पूर्वी अफ़्रीकी के कई स्थानों से मिले है जहां ज़ेंग हा अपनी यात्रा के दौरान गया था। क़ुआनज़ू Quanzhou में मिंग दौर का एक शिलालेख लगा है जिसमें उल्लेख है कि ज़ेंग हा ने 31 May 1417 CE को अपनी यात्रा की सफलता के लिए दैवीय सुरक्षा प्राप्त करने के लिए धूप जलाई थी। इस यात्रा के दौरान उन लोगों ने चम्पा, पाहांग, जावा, पालमबांग, मलक्का, समुदरा, लम्बरी, सीलोन, कोचीन, कालीकट, शालीवानी (शायद कैन्नानोर),

लियूशान (मालदीव और लक्षद्वीप जज़ीरे), हुर्मुज़, लासा, अदन, मोगादिशू, ब्रावा, ज़ूबू और मलिंदी वग़ैरह का दौरा किया। Champa, Pahang, Java, Palembang, Malacca, Samudera, Lambri, Ceylon, Cochin, Calicut, Shaliwanni (possibly Cannanore), Liushan (Maldives and Lakshadweep Islands), Hormuz, Lasa, Aden, Mogadishu, Brava, Zhubu, and Malindi.[176] (तारीख़ अल-यमन फ़ी दौलत अल-रसूलिया) नाम की ऐतिहासिक पुस्तक में दर्ज है कि January 1419 CE में चीनी बेड़ा अल-रसूलिया हुकूमत की राजधानी ताइज़ Ta'izz पहुंचा और वो 19 मार्च तक वहां से रवाना नहीं हुआ था।[177] रसूली हुकूमत जो मिस्र की ममलूक सल्तनत के ख़िलाफ़ अपनी रक्षा चाहती थी, उसने मिंग हुकूमत की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और श्रद्धांजलि देने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल चीन भेजा। 8 august 1419 CE को चीनी बेड़ा नानजिंग वापस हुआ। योंगले राजा ने संस्कारों की वज़ारत (अनुष्ठान मंत्रालय) को आदेश दिया कि वो बेड़े के सदस्यों को वित्तीय पुरस्कारों से नवाज़े। 21 अगस्त से 19 सितंबर 1419 ई. के बीच किसी समय राजा ने, उनके साथ आए विदेशी राजदूतों का, दरबार में स्वागत किया। वे राजा के लिए जो उपहार लाए उनमें शेर, तेंदुआ, ऊँट, शुतुरमुर्ग, ज़ीब्रा, गैंडा, हिरण, जिराफ़ और अन्य विदेशी जानवर सहित कई दुर्लभ जानवर थे।[178] इन जानवरों के आने से दरबार में उत्साह का माहौल बन गया।

एक जिराफ़ बंगाल के सुलतान सैफ़ुद्दीन हमज़ा शाह ने भी योंगले राजा को भेजा था जो 20 September 1414 CE को चीन पहुंचा, उस को यह कह कर दिया गया था कि यह एक चिलिन Qilin है, क्यों कि जिराफ़ की शक्ल उस से

मिलती जुलती थी। याद रहे चिलिन एक पौराणिक जीव है जिसका उल्लेख चीनी पौराणिक कथाओं Chinese mythology में मिलता है। लेकिन योंगले राजा ने उस को चिलिन मानने से इनकार कर दिया और बंगाल के राजा को धन्यवाद का कोई संदेश भी नहीं भेजा।[179]



ज़ेंग हा के ज़रिये लाया गया चीन में पहला ज़िराफ़ जो एक मुस्लिम बादशाह ने हदिये में दिया था

छठी यात्रा

3 March 1421 CE को राजा ने आए हुए 16 देशों के राजदूतों को उपहार दिए। इन तोहफ़ों में यह चीज़ें शामिल थीं करेंसी नोट Currency note, सिक्के, अस्तर और दूसरे क़ीमती कपड़ों की ख़िलअतें ceremonial robes. इस के बाद 3 March 1421 CE को राजा ने छठी यात्रा का आदेश दिया जिसमें उन राजदूतों को उनके देशों तक वापस पहुंचाना भी शामिल था। चुनांचे ज़ेंग हा अपने बेड़े के साथ रवाना हुआ, उस के साथ शाही पत्र थे जो दूसरे बादशाहों के नाम थे इस के अलावा रेशमी ब्रोकेड, रेशमी फ्लॉस और रेशमी गाउज़ silk brocade, silk floss, silk gauze की ख़िलअतें ceremonial robes थीं जो इन राजाओं को योंगले राजा द्वारा उपहार के रूप में भेजे गए थे।[180] इतिहासकार गोंग ज़ेन ने अपनी इतिहास की किताब शियांग फ़ांगू ज़ी Gong Zhen's Xiyang Fanguo Zhi में इस हुक्मनामे की तारीख़ 10 November 1421 CE लिखी है जिसमें ज़ेंग हा, कोंग ही, ज़ू बूहुआ और टांग गुआनबाओ Zheng He, Kong He (孔和), Zhu Buhua (朱卜花), and Tang Guanbao को हुक्म दिया गया था कि वो यात्रा की तैयारी करें और अब की बार होंग बाओ Hong Bao को भी अपने साथ ले जाएं और उन राजदूतों को उनके देशों में वापस पहुंचाएं। चुनांचे यह लोग रवाना हुए, उनका पहला पड़ाव मलक्का और सुमात्रा की 3 हुकूमतें थीं जिनके नाम हैं समुदरा, अरू और लम्बरी। समुदरा में इन लोगों ने अपने लोगों को कई छोटे बेड़ों में बांट दिया। इस के बाद यह सब बेड़े सीलोन की तरफ़ चले और इस के बाद अलग अलग हो गए। कोई बेड़ा ज्याईले Jiayile, कोई कोचीन,

गानबली Ganbali (चीनी ऐतिहासिक पुस्तकों के अनुसार, यह पश्चिमी सागर में एक देश था, लोगों का ख़्याल है कि यह आज का कोयंबटूर Coimbatore है लेकिन कुछ का ख़्याल कि आज का कैम्बे Cambay in Gujarat है और कुछ सोचते हैं कि यह केप कोमोरिन (Cape Comorin) था, कालीकट, फारस की खाड़ी, दोफ़र Dhofar (ओमान), लासा Lasa और अदन Aden जैसे अरब देशों की तरफ़।[181] मिंग शि किताब के मुताबिक़ ज़ेंग हा ख़ुद, 1421 CE में गानबली गया था। हालाँकि यह लोग चुई लोन में नहीं ठहरे लेकिन चुई लोन के पास से गुज़रते हुए एक छोटा बेड़ा अलग हो कर मोगादिशू Mogadishu चला गया जब कि असल बेड़ा कालीकट की तरफ़ गया इसके बाद हुर्मुज़ Hormuz पहुंचा, शायद यह लोग लक्षद्वीप भी गए होंगे।[182] वापसी पर यह बेड़े फिर कालीकट में जमा हुए उस के बाद बाक़ी बेड़े समुदरा में आकर मिले और यह बेड़ा 3 September 1422 CE को नानजिंग वापस हुआ। अब की बार भी उस के साथ कई देशों के राजदूत थे जैसे अदन, सियाम, समुदरा वग़ैरह। यह प्रतिनिधिमंडल राजा के लिए उपहार के रूप में अपनी स्थानीय चीजें तोहफ़े में लाए थे। उस वक़्त तक मिंग की राजधानी बीजिंग हो चुकी थी चुनांचे बड़ी नहर (ग्रांड कैनाल) के माध्यम से वे बीजिंग पहुंचे।[183]

नानजिंग का सैन्य किले में तैनाती

14 May 1421 CE को योंगले राजा ने अगले सफ़र के रद्द करने का ऐलान किया। शायद उस की वजह यह थी कि बीजिंग के शाही महल पर बिजली गिरी थी, यह एक अपशकुन माना जाता था। चुनांचे शाही महल की फ़ंगटियान

Fengtian, हुआगाई Huagai और जिनशेन Jinshen नामी इमारतों में आग लग गई।[184] याद रहे बीजिंग अभी नई राजधानी बनी थी उससे पहले नानजिंग राजधानी हुआ करती थी। इस यात्रा का खर्च राजा ने तीसरे, चौथे और पांचवें मंगोल-विरोधी अभियानों में लगा दिया। चुनांचे 1422-1431 CE के दरम्यान बेड़े का अमला नानजिंग के सैन्य किले में रुका रहा ताकि उस की रक्षा कर सके।[185] ताईज़ोंग शीलू Taizong Shilu नामी किताब के मुताबिक़ इसी दौरान ज़ेंग हा 24 February 1424 CE को एक राजनयिक मिशन पर पालमबांग Palembang भी गया। इसी बीच 12 August 1424 CE को योंगले सम्राट की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र ज़ू गाओची Zhu Gaochi 7 सितंबर 1424 ई. को होंगशी सम्राट Hongxi Emperor के रूप में सिंहासन पर बैठा। ज़ेंग हा, योंगले राजा के इंतकाल के बाद पालमबांग से लौटा।[186] होंगशी राजा पहले से ही इन विदेशी मिशनों से ऊबा हुआ था चुनांचे सिंहासन पर बैठते ही उसने सारे विदेशी मिशनों रद्द कर दिए और बेड़े के अमले को बदस्तूर नानजिंग के सैन्य किले की रक्षा पर तैनात रखा। 25 February 1425 CE को उसने ज़ेंग हा को नानजिंग का रक्षा कमांडर बना दिया। लेकिन होंगशी सम्राट एक साल से भी कम हुकूमत कर पाया और 29 May 1425 CE को उस की मृत्यु हो गई। उस के बाद उस का बेटा ज़ू ज़ानजी Zhu Zhanji 27 June 1425 CE को शुआंडे सम्राट Xuande Emperor के रूप में सिंहासन पर बैठा। यह मिंग हुकूमत का पांचवां राजा था। 25 March 1428 CE को शुआंडे सम्राट ने ज़ेंग हा को आदेश दिया कि वो

नानजिंग में स्थित ग्रेट बाओएन मंदिर Great Bao'en Temple का पुनर्निर्माण करे चुनांचे 1431 CE को मंदिर बन कर मुकम्मल हुआ।[187]

सातवीं यात्रा

25 May 1430 CE को शुआंडे सम्राट ने अपने अहलकारों; यांग चिंग Yang Qing (楊慶), लू ज़ी Luo Zhi (羅智), टांग गुआनबो Tang Guanbo (唐觀保), और युआन चेंग Yuan Cheng (袁誠) को एक आदेश दिया कि वो ज़ेंग हा और उस के साथियों की यात्रा के लिए व्यवस्था करें।[188] चुनांचे 29 June 1430 CE को शुआंडे ने यात्रा का आदेश दे दिया। इस में ज़ेंग हा के साथ, वांग जिंगहोंग, ली शिंग, ज़ू लियांग, यांग ज़ैन और होंग बाओ भी थे।[189] Wang Jinghong, Li Xing, Zhu Liang, Yang Zhen, Hong Bao शुआंडे राजा विदेशी संबंधों को वैसे ही बहाल करना चाहता था जैसे योंगले राजा के समय में थे। रवानगी से पहले ज़ेंग हा और उस के साथियों ने लियूजियागांग Liujiagang और चांगले में बतौर यादगार अपने शिलालेख inscriptions लगवाए। शिया शियांग Xia Xiyang ने जहाज़ का रोज़नामा Itinerary (दैनिक यात्रा कार्यक्रम) तैयार किया कि कहाँ कहाँ और कब ठहरना है। चुनांचे 19 January 1431 CE को यह बेड़ा नानजिंग के लौंगवान Longwan से रवाना हुआ जिसे ड्रैगन की खाड़ी dragon bay भी कहा जाता है। 23 जनवरी को यह लोग यांग्ज़ी नदी के एक जज़ीरे शूशान Xushan पर उतरे और वहां शिकार पर गए। 2 फ़रवरी को वो फ़ूज़ी गुज़रगाह Fuzi Passage से गुज़रे जिसको आज बाईमोशा चैनल (Present day Baimaosha Channel) कहा जाता है।[190] 3

फ़रवरी को वो लोग लियु जियागांग Liujiagang पहुंचे और 8 अप्रैल को चांगले Changle और 16 दिसंबर को फ़ू टो शान Fu Tou Shan से गुज़रे (संभवतः Fuzhou के पास से)। 12 January 1432 CE को यह बेड़ा वुहुमेन Wuhumen पहुंचा जो मिन नदी में दाख़िल होने का दहाना था। 27 जनवरी को वो चम्पा Champa के विजया Vijaya (वर्तमान समय के चुई नोन Qui Nhon के पास) पहुंच कर ठहर गए और 12 फ़रवरी को वहां से रवाना हुए। 7 मार्च को वो जावा के सुराबाया Surabaya पहुंचे और 13 जुलाई को वहां से रवाना हुए। 24 जुलाई को वो पालमबांग पहुंचे और 27 जुलाई को रवाना हुए। 3 अगस्त को मलक्का पहुंचे और 2 सितंबर को वहां से रवाना हुए। 12 सितंबर को वो समुदरा पहुंचे और 2 नवंबर को वहां से रवाना हुए। 28 नवंबर को वो सीलोन के बेरूवाला Beruwala पहुंचे और 2 दिसंबर को वहां से रवाना हुए। 10 दिसंबर को वो कालीकट पहुंचे और 14 दिसंबर को वहां से रवाना हुए। 17 January 1433 CE को हुर्मुज़ पहुंचे और 9 मार्च को रवाना हुए।[191] यह वो जगहें थीं जो डायरी में लिखी थीं, इसके अलावा यह लोग गानबली, बंगाल, लक्षद्वीप, मालदीव, दोफ़र, लासा, अदन, मक्का, मोगादिशू और ब्रावा भी गए।

Ganbali, Bengal, Lakshadweep, and Maldives island chains, Dhofar, Lasa, Aden, Mecca, Mogadishu, and Brava.

फ़ी शिन Fei Xin की पुस्तक के अनुसार यह लोग इस दौरान अंडमान द्वीप समूह में भी रुके[192] वहां की महिलाएं लकड़ी के तख़्तों से बनी कश्तियों पर नारियल लेकर उनसे व्यापार के लिए आईं। कुछ लोगों का यह कहना है कि वे लोग वहां 3 दिन तक रुके रहे क्यों कि हवा उनके मुवाफ़िक़ नहीं थी। कालीकट

में होंग बाओ Hong Bao ने देखा कि कुछ छोटे जहाज़ मक्का जा रहे हैं चुनांचे उसने अपने 7 लोगों को उनमें से एक जहाज़ पर मक्का भेजा। यह गुमान किया जाता है कि मा हुआन Ma Huan ख़ुद भी मक्का गया था।[193] इस ख़्याल की एक वजह यह भी है कि मा हुआन मुसलमान था और उसने मक्का के हालात बहुत तफ़सील से लिखे हैं।[194] वो 7 लोग एक साल के बाद लौटे और उनके साथ कई कीमती सामान और जानवर थे जैसे ज़िराफ़, शेर, शुतुरमुर्ग आदि थे, जिन्हें इन लोगों ने वहां से खरीदा था।[195] इतिहासकार ड्रेयर Dreyer का ख़्याल है कि मा हुआन इस सफ़र के दौरान दोफ़र, लासा, अदन, मोगादिशू और ब्रावा भी गया होगा।[196]

इस के बाद शिया शियांग ने वापसी का भी यात्रा कार्यक्रम Itinerary बनाया। 9 March 1433 CE को हुर्मुज़ से वापस चले 31 मार्च को कालीकट पहुंचे वहां से 9 अप्रैल को चल कर 25 अप्रैल को समुदरा पहुंचे और 1 मई को चल कर 9 मई को मलक्का पहुंचे। 28 मई को वो कुनलुन समुद्र Kunlun Ocean पहुंचे। इतिहासकार ड्रेयर Dreyer के मुताबिक़ यह पोलो कंडोर और कौन सोन जज़ीरों के आसपास का समुद्र है This is the waters around Poulo Condore and the Con Son Islands.[197] और 13 जून को विजया पहुंचे वहां से 17 जून को चल कर 7 जुलाई को टाईकांग Taicang पहुंचे। 22 July 1433 CE को बीजिंग पहुंचे। 27 जुलाई को शुआंडे राजा ने एक समारोह आयोजित किया जिसमें चालक दल के सदस्यों को सजावटी कपड़े और पैसे से पुरस्कृत किया गया।[198] यात्रा के दौरान इन लोगों ने जो अजीबो ग़रीब चीजें और दृश्य देखे उनका भी

कई जगह जिक्र किया है। इस यात्रा में ज़ेंग हा के साथ 11 देशों के प्रतिनिधिमंडल थे, जिसमें मक्का का एक प्रतिनिधिमंडल भी शामिल था।[199] शुआनज़ोंग शीलू Xuanzong Shilu के अनुसार 14 September 1433 CE को इन देशों के प्रतिनिधिमंडल राजा को श्रद्धांजलि देने आए समुदरा के राजा ज़ैनुल आबिदीन ने अपने भाई हालीज़ी हान Halizhi Han को भेजा, कालीकट के राजा बिलिमा King Bilima ने गेबुमांडुलुया Gebumanduluya को भेजा, कोचीन के राजा केयीली King Keyili ने जियाबुबिलिमा Jiabubilima को भेजा, सीलोन के राजा पराक्रमबाहु VI King Parakramabahu VI ने मेन्निडेनाई Mennidenai को भेजा, दोफ़र के राजा अली King Ali of Dhofar ने हाजी हुसैन Hajji Hussein को भेजा, अदन के राजा मलिक अल-ज़ाहिर यहाया बिन इस्माईल King Al-Malik al-Zahir Yahya b. Isma'il ने पूबा Puba को भेजा, कोयंबटूर के राजा देवाराजा King Devaraja of Coimbatore ने डुआनसिलीजियान Duansilijian को भेजा, हुर्मुज़ के राजा सैफ़ुद्दीन King Sa'if-ud-Din of Hormuz ने मालाज़ू Malazu को भेजा, ज्याईले के राजा King of "Old Kayal" (Jiayile) ने अबदुल रहमान Abdur-Rahman को भेजा और मक्का के राजा King of Mecca ने शाशियान Shaxian (शायद यह किसी अरबी नाम का चीनी उच्चारण है) को भेजा।[200]

ज़ेंग हा का धर्म

ज़ेंग हा को मुसलमान माना जाता है। लेकिन सफ़र से पहले उसके साथ वाले चीनी यात्री तियानफ़ी Tianfei नाम की देवी कि पूजा करते थे जो समुद्रों की या मल्लाहों की देवी मानी जाती थी। चुनांचे वो जहाज़ पर सवार होने से पहले तियानफ़ी की इबादत का इंतिज़ाम करता और उसके चीनी साथी उस देवी से अपनी रक्षा और सफलता की दुआ करते। ऐसा लगता है कि चीनी लोगों में से अक्सर उस देवी की इबादत करते होंगे और राजा भी उस का पैरोकार होगा, इस लिए ज़ेंग हा को उनके लिए तियानफ़ी देवी की पूजा का इंतिज़ाम करना पड़ता होगा। सवार होने से पहले वो यादगार के लिए शिलालेख inscriptions भी स्थापित करवाता जिसमें अन्य विषयों के अलावा तियानफी से प्रार्थनाएं भी शामिल होतीं। चुनांचे ज़ेंग हा और इस के साथियों ने 14 march 1431 CE को लियू जियागांग में और 5 January 1431 से 3 January 1432 CE तक चांगले में शिलालेख स्थापित कराए जिसमें सफलता के लिए देवी तियानफी से प्रार्थना की गई थी।[201] कभी कभी यह शिलालेख तीन भाषाओं में होते। चुनांचे 15 February 1409 CE को ज़ेंग हा ने सीलोन Ceylon के गाले Galle इलाक़े में एक शिलालेख लगवाया जिस पर तीन भाषाओं में मज़मून खुदा हुआ था। चीनी भाषा वाले भाग में गौतम बुद्ध का गुणगान किया गया था, तमिल भाषा वाले भाग में तेनावरई नयनार नामक देवता (विष्णु का एक अवतार) Tenavarai Nayanar (an incarnation of Vishnu) का गुणगान किया गया था, और फ़ारसी भाषा वाले भाग में अल्लाह Allah का गुणगान किया गया था।[202]

प्रत्येक भाषा अनुभाग में उन बलिदानों का उल्लेख है जो इन तीन देवताओं को चढ़ाए गए थे, जिनमें 1,000 सोने के टुकड़े (संभवतः सिक्के), 5000 चांदी के टुकड़े, 100 रेशम के थान 2500 catties केटियां सुगंधित तेल और विभिन्न कांस्य आभूषण शामिल थे।[203] इसका एक कारण यह हो सकता है कि उनके बेड़े में इन तीन धर्मों के लोग शामिल थे, यानी चीनी, हिंदू और मुस्लिम, इसलिए उन्होंने उन्हें खुश करने के लिए इन सभी का उल्लेख किया, या सीलोन में इन तीन धर्मों के लोग आबाद थे।[204]

ज़ेंग हा का इंतिक़ाल

ज़ेंग हा का इंतकाल सातवें सफ़र के कुछ ही दिन बाद 1433 CE में हुआ, लेकिन दूसरे लोगों के मुताबिक़ उस का इंतकाल नानजिंग में 1435 CE में हुआ।[205] उस का मक़बरा नानजिंग के पास एक पहाड़ी पर बना हुआ है जिसका नाम जानवर के सर वाली पहाड़ी Cattle Head Hill है। उस का मक़बरा एक घोड़े के सुम की शक्ल का है, यह माना जाता है कि इस में उस के कपड़े और अमामा (पगड़ी) भी दफ़न है। 1985 CE में उस की क़ब्र पुनर्निर्माण किया गया।[206]

बदरुद्दीन चीनी लिखता है, "गुआंगज़ू के जिन ख़ून मिन (बाब अलकरामा) के बाहर एक ऊंचा सा पहाड़ है जिस पर एक पुराना मक़बरा है, ये ख़्याल किया जाता है कि ये उसी मुबल्लिग़ (धर्म-प्रचारक) का होगा जो सबसे अव्वल यहां आया था। इस मक़बरे के नीचे बहुत से कतबे हैं जो कि नसलन बाद नसल मुसलमानों की तरफ़ से नसब किए गए हैं। वो मुख़्तलिफ़ ज़बानों में हैं, कुछ

अरबी में और कुछ चीनी में। जो कतबा काबिल-ए-ज़िक्र है वो, वो है जिसको हाजी जन हा (ज़ेंग हा) ने यहां नसब किया था। हाजी जन हा कौन था? वो "मिन ताई चू" (Mintaichu) का दरबारी था याद रहे ताई चू या ताई ज़ू मिंग के पहले बादशाह होंगवू का लक़ब था। ताई ज़ू के इंतिक़ाल के बाद वो ख़ानदान के तीसरे शासक (जिन चू Jinchu) (योंगले बादशाह) के दौर तक रहा। जिन चू ने उस को सफ़ीर मुख़तार बिलराए बना कर मग़रिबी मुमालिक भेजा, वो जावा और जज़ाइर मलाया होता हुआ, अरबिस्तान पहुंचा और ग़ालिबन 1420 CE में हज कर के वापस आया। इसी लिए उस को हाजी कहते हैं।[207]



ज़ेंग हा की क़ब्र नानजिंग में

ज़ेंग हा की यादगारें

15 वीं शताब्दी ई. में जब प्रसिद्ध पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा, कालीकट आया तो यहां उस ने कुछ विदेशियों की कहानियां सुनीं जो कई पीढ़ियों पहले बड़े जहाजों में वहां आए थे और गोरे रंग के थे।[208] वास्को डी गामा ने सोचा कि यह लोग या तो जर्मन या रूसी हो सकते हैं। लेकिन बाद में पता चला कि

यह ज़ेंग हा के बेड़े के लोग थे। इसी प्रकार जब वे अफ़्रीका के पूर्वी तट पर गया तो वहाँ भी उस ने इन लोगों का ज़िक्र सुना। 1997 ई. में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अपने भाषण के दौरान, चीनी राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने विदेशों में चीनी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए ज़ेंग हा की प्रशंसा की।[209] 2005 से, मिंग खज़ाना यात्राओं Ming treasure voyages की याद में चीन में हर साल 11 जुलाई को राष्ट्रीय समुद्री दिवस National Maritime Day मनाया जाता है।[210]

मुसलमानों के प्रति मिंग सरकार की विदेश नीति

मिंग हुकूमत ने कई मुसलमान हुकूमतों की मदद की। जैसे थाईलैंड और पुर्तगालियों के ख़िलाफ़, मलक्का सल्तनत की मदद की। चूँकि मलक्का सल्तनत को थाईलैंड और माजापहित साम्राज्य Majapahit Empire से हमेशा ख़तरा रहता था इस लिए वो उन से बचाओ के लिए मिंग हुकूमत से क़रीबी संबंध बना कर रखती थी। इसी लिए मलक्का के राजा परामेश्वरा Prameshwara (यह मुसलमान था) ने मिंग हुकूमत से संबंध बेहतर बनाने के लिए 1405 CE में एक सद्भावना मिशन चीन भेजा, इस के जवाब में मिंग हुकूमत ने उसे "मलक्का के राजा" का लक़ब दिया। ज़ेंग हा के दौरे के बाद यह संबंध और मज़बूत हो गए, इस लिए परामेश्वरा, उसे सम्मान देने के लिए ख़ुद तीन बार प्रतिनिधिमंडल के साथ पीकिंग (बीजिंग का पुराना नाम) गया। इस तरह मलक्का सल्तनत लम्बे समय तक चीनियों के संरक्षण में रही इसी लिए मलक्का में चीनी लोगों के सैकड़ों गोदाम थे जो चीनियों को तिजारत में मदद

करते थे। चूँकि थाईलैंड भी चीनी संरक्षण में था इस लिए वो चीन का हुक्म मानने के लिए मजबूर था।

चीन की मलक्का हुकूमत को पुर्तगालियों के ख़िलाफ़ मदद

चीन ने मुस्लिम मलक्का हुकूमत की पुर्तगालियों के ख़िलाफ़ भी मदद की लेकिन इस मदद का ज़्यादा फ़ायदा नहीं हुआ क्यों कि पुर्तगाली मलक्का सल्तनत पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हो गए। लेकिन जब पुर्तगालियों ने मलक्का पर क़ब्ज़ा कर लिया तो उस के बदले मिंग हुकूमत ने पुर्तगाल के प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को गुआंगज़ू Guangzhou में सज़ाएं दीं। एक रिवायत के अनुसार, जब पुर्तगालियों ने मलक्का पर क़ब्ज़ा कर लिया, तो उन्होंने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए एक राजनयिक मिशन भेजा, जिसकी कमान पाइरस Pires कर रहा था। लेकिन दूसरी ओर, पराजित मलक्का ने भी अपना प्रतिनिधिमंडल चीन भेजा, जिसने राजा से पुर्तगालियों की साजिशों और विश्वासघात की शिकायत की, जिसके कारण राजा ने उनका स्वागत करने के बजाय पुर्तगालियों को सज़ाएं दीं।[211] दूसरी रिवायत में है कि मलक्का के पतन के बाद उस का आख़िरी सुलतान बिनतान Bintan की तरफ़ फ़रार हो गया और वहां से उसने चीनी मिंग हुकूमत के पास अपने राजदूत भेजे जिन्हों ने पुर्तगालियों के धोके और साज़िशों की शिकायत की, कि कैसे पुर्तगालियों ने खुद को व्यापारियों के रूप में छिपाकर मलक्का

हुकूमत के ख़िलाफ़ साजिश रची और उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसी के साथ ही चीन को भी पुर्तगालियों के समुद्री आक्रमण का सामना करना पड़ रहा था इस लिए मिंग हुकूमत ने 1520 CE में पुर्तगाली प्रतिनिधिमंडल के 23 अहलकारों को सज़ाएं देकर क़त्ल कर दिया और बाक़ी को आजीवन कारावास दे दिया। इन क़त्ल होने वालों में दल का कमांडर टॉम पाइरस Tome Pires भी था।[212] एक और रिवायत में है कि चीनी हुकूमत ने मलक्का की शिकायत पर उसे जासूस मान कर क़त्ल कर दिया।[213] स्टीफ़न जी हाओ Stephen G. Haw अपनी किताब में लिखता है कि 1511 CE में पुर्तगालियों ने मलक्का पर क़ब्ज़ा कर लिया उस के बाद वो चीन की तरफ़ बढ़े और 1514 CE तक वो चीन पहुंच गए। लेकिन 1517 CE में मलक्का के पराजित सुलतान ने भी अपने राजदूत गुआंगज़ू भेजे जो 1520 CE में बीजिंग पहुंचे, उन्होंने मिंग राजा से पुर्तगालियों की साज़िश और धोके की शिकायत की और यह कि किस तरह उन्होंने धोके से मलक्का पर क़ब्ज़ा किया है। इस के रद्द-ए-अमल में मिंग हुकूमत ने यूरोपीय लोगों से तिजारत पर पाबंदी लगा दी और पुर्तगाली राजदूतों को गुआंगज़ू में जीवन भर के लिए कैद कर दिया गया।[214] इस के अलावा मिंग हुकूमत ने मुस्लिम चम्पा रियासत Champa state की भी मदद की वियतनाम के ख़िलाफ़।

मिंग सरकार के वफादार मुसलमान

जब 1644 ई. में चिंग राजवंश ने आक्रमण किया और मिंग राजवंश को उखाड़ फेंका, तो मिलायिन Milayin और डिंग गोडोंग Ding Guodong के नेतृत्व में गांसु में मिंग के मुस्लिम वफादारों ने मिंग राजवंश के समर्थन में 1646 ई. में

चिंग के खिलाफ विद्रोह कर दिया।[215] इसे मिलायिन विद्रोह कहा जाता है। उनका उद्देश्य मिंग सरकार को बहाल करना और उसके राजकुमार यानचांग ज़ू सिचुआन Yanchang Zhu Shichuan को सिंहासन पर बैठाना था।[216] हामी के सुल्तान सईद बाबा और उनके बेटे शहजादे तुरमताये ने भी इन लोगों की मदद की।[217] इसके अलावा कुछ तिब्बतियों और हान चीनियों ने भी उनका समर्थन किया। भयंकर लड़ाई के बाद, दोनों के बीच एक शांति संधि संपन्न हुई, जिसके बाद मिंग के प्रति वफादार मुसलमानों ने स्पष्ट रूप से चिंग की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। 1649 ई. में एक शांति संधि के बाद चिंग सरकार ने मिंग के प्रति वफादार मुसलमानों को किंग सेना में पद दिए।[218] लेकिन कुछ साल बाद दक्षिणी चीन में चिंग सरकार के खिलाफ एक और विद्रोह हुआ, इसलिए मलायन और डिंग लोगों ने चिंग के खिलाफ फिर से हथियार उठा लिए, लेकिन इस बार चिंग सरकार ने विद्रोह को कुचल दिया जिसमें मिलायिन Milayin और डिंग गोडोंग Ding Guodong के एक लाख लोग मारे गए। मरने वालों में मिलायिन, डिंग गोडोंग और शहजादा तुरमताये भी शामिल थे।

मा ज़ू Ma Zhu (1640-1710 C.E), एक मुस्लिम कन्फ्यूशियस विद्वान, ने चिंग सरकार के खिलाफ दक्षिणी मिंग सरकार की मदद की।[219] जब मिंग राजवंश समाप्त हो गया, तो उसके अंतिम राजकुमार, ज़ू युआई Zhu Yu'ai, जिसे गुई के राजकुमार के रूप में भी जाना जाता है, हुई मुसलमानों के साथ शरणार्थी के रूप में हुगुआंग से बर्मी सीमा पार युन्नान में भाग गए। राजकुमार को छुपाने के लिए

इन मुसलमानों ने अपने परिवार का नाम भी मिगं ताकि राजकुमार को पहचाना न जा सके।[220]

गुआंगज़ू में तीन मिंग धर्मनिष्ठ मुस्लिम कब्रें हैं। जब चिंग ने मांचू पर कब्जा कर लिया, तो ये लोग मिंग के समर्थन में चिंग के खिलाफ लड़ते हुए मारे गए। उन्हें जियाओमेन सानझोंग Jiaomen sanzhong कहा जाता है, जिसका अर्थ है "विश्वास के तीन संरक्षक" या "तीन वफादार मुसलमान"।[221]

मुस्लिम सैन्य जनरल

मिंग हुकूमत में सैकड़ों मुस्लिम जनरलों ने सेवा की और मिंग सरकार के समर्थन में लड़ाईयां लड़ीं। जिनमें सबसे पहला नाम लान यू Lan Yu का आता है जिसने 1388 CE में मंगोल फ़ौज के ख़िलाफ़ मिंग सेना का नेतृत्व किया और मिंग सरदार ज़ू युआनज़ांग को भरपूर सहायता प्रदान की। हालाँकि, जब ज़ू युआनज़ांग, मिंग सम्राट होंगवू के रूप में सिंहासन पर बैठा, तो उसने उन लोगों को मौत की सजा दे दी जो उसके लिए खतरा हो सकते थे, जिसमें लान यू भी शामिल था, जिसको बाद में मरवा दिया गया।[222] दूसरा मुस्लिम जनरल मू यिंग Mu Ying था, यह उन कुछ जनरलों में था जो होंगवू राजा के प्रकोप से बच गए थे। उसने और उस की औलाद ने मिंग हुकूमत के ख़ातमे तक वियतनाम के पास के युन्नान Yunnan सूबे पर बतौर मिंग गवर्नर हुकूमत की। उस को इस इलाक़े की हुकूमत इस लिए दी गई थी क्यों कि उस ने युन्नान को जीतने में मिंग सरकार की काफी मदद की थी। दूसरे मुस्लिम जनरल थे फेंग शेंग Feng Sheng,

डिंग डैशिंग Ding Dexing और हू ढहाई Hu Dahai. यह सब होंगवू राजा के वफ़ादारों में थे। 1447 CE में मुस्लिम जनरल चेन यू Chen You ने डोंग सी मस्जिद Dong Si Mosque के विस्तार के लिए धन दिया। हाला बाशी Hala Bashi जो एक मुस्लिम उइग़ूर जनरल था तुरपान Turpan से। उसने मियाओ विद्रोह Miao Rebellion के दौरान मिंग हुकूमत की तरफ़ से विद्रोहियों से लड़ाई लड़ी और चांगडे Changde और हुनान Hunan को दोबारा मिंग शासन के तहत वापस लाया।[223] इस के अलावा एक चांग यूचुन (1330–1369 CE) Chang Yuchun नाम का मुसलमान सैन्य जनरल था वो जंग में अपनी बहादुरी और ज़बरदस्त कौशल के लिए मशहूर था, इस लिए उस को चांग एक लाख Chang Hundred-Thousand कहा जाता था क्योंकि माना जाता था कि उसके पास एक लाख लोगों की ताकत थी। उस को काईपिंग भाला फेंकने Kaiping spear method की पद्धति का आविष्कारक भी माना जाता है।[224]

अध्याय 7
चिंग राजवंश के दौर में इस्लाम

第七章
清代伊斯兰教

Chapter Seven
Islam during the Qing Dynasty

चिंग शासन में मुसलमानों की स्थिति

चिंग दौर में मुसलमानों से मुताल्लिक़ चिंग की पालिसी और क़ानून बदलते रहे। कांगशी बादशाह Kangxi Emperor ने हान और मुसलमानों को बराबर का दर्जा दिया जबकि उस के पोते चियानलोंग Qianlong Emperor ने मुसलमानों के साथ कठोर व्यवहार अपनाने की सिफारिशों को लागू किया।

शुनज़ी बादशाह के दौर में

मुसलमानों के चिंग हुकूमत से ज़्यादा अच्छे ताल्लुक़ात नहीं रहे। इस लिए मुसलमानों ने चिंग दौर में 5 बड़ी बग़ावतें कीं। चूँकि शुरू से ही मुसलमानों ने चिंग हुकूमत की मुख़ालिफ़त की और चिंग मुख़ालिफ़ मिंग हुकूमत का साथ दिया। जब चिंग हुकूमत ने मिंग हुकूमत को उखाड़ फेंका तो CE 1646 में चिंग के तीसरे शासक शुनज़ी बादशाह Shunzhi Emperor (r. 15 March 1638–5 February 1661) के दौर में मिलायिन Milayin नाम के एक मुस्लिम जनरल ने गान्सू Gansu में चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ एक बहुत बड़ी फ़ौज इकट्ठी कर ली और गान्सू सूबे के बहुत से शहरों पर क़बज़ा कर लिया, गान्सू की राजधानी लांज़ू Lanzhou समेत। एक दूसरा मुस्लिम जनरल डिंग गोडोंग Ding Guodong अपनी फ़ौज के साथ उनसे आ मिला।[225] वो लोग फिर से मिंग हुकूमत को वापस लाना चाहते थे और उसके बालक राजकुमार या यानचांग ज़ू सिचुआन Yanchang Zhu Shichuan को राजा बनाना चाहते थे। बाद में कुमूल ख़ानियत के शासक सईद बाबा ने भी उनकी मदद के लिए अपने बेटे

शहज़ादा तुरुमताए Prince Turumtay को भेजा, इसके अलावा हान और तिब्बती लोगों ने भी उनका साथ दिया। चिंग हुकूमत ने उनके मुक़ाबले के लिए शांक्सी के गवर्नर मंग चियाओफांग Meng Qiaofang को भेजा, जंग हुई और दोनों मुसलमान जनरल मिलायिन और डिंग गोडोंग और शहज़ादा तुरुमताए 100,000 मुसलमानों के साथ मारे गए। आज भी गान्सू में इन तीन शहीदों का मक़बरा मौजूद है जिन्हें जियाओमेन सानज़ोंग Jiaomen sanzhong कहा जाता है, जिसका मतलब है 'ईमान के तीन रक्षक'।[226]

कांगशी बादशाह के दौर में

कहा जाता है कि कांगशी बादशाह Kangxi Emperor (r. 5 February 1661 – 20 December 1722) ने चिंगहाई के मंगोलों की हिमायत हासिल करने के लिए चिंगहाई में ये अफ़वाह फेलवाई कि गलदान बोशुगतु खान Galdan Boshugtu Khan जो ज़ुगर ख़ानियत का प्रमुख था वो मुसलमान हो गया है और उसने मुसलमानों से हाथ मिला लिया है और बुध मत और दलाई लामा से मुंह मोड़ लिया है और वो शिंजियांग में एक मुसलमान को राजा बनाने का मंसूबा बना रहा है। ये सब उसने चिंगहाई के बौद्धों की हिमायत हासिल करने के लिए किया था ताकि वो गलदान के ख़िलाफ़ चिंग हुकूमत का साथ दें।[227] इन वाक़ियात के अलावा और भी कुछ वाक़ियात चिंग दौर के उल्लेखनीय हैं जैसे:

- एक मुस्लिम कन्फ्यूशियस विद्वान मा ज़ू Ma Zhu (1640-1710 CE) ने भी चिंग सरकार के ख़िलाफ़ दक्षिणी मिंग सरकार की मदद की।

- जब मिंग हुकूमत ख़त्म हुई तो उस का आख़िरी शहज़ादा ज़ू युवाई Zhu Yu'ai जो गुई का शहज़ादा कहलाता था, वो हुई मुसलमानों के साथ शरणार्थी के रूप में हूगुआंग से भागे और बर्मा की सीमा के पास से होते हुए युन्नान Yunnan की तरफ़ फ़रार हो गए। इन मुसलमानों ने शहज़ादे को छिपाने के लिए अपना ख़ानदानी नाम भी "मिंग" कर लिया ताकि शहज़ादे की पहचान न की जा सके।
- इस काल में मुसलमानों में दो प्रमुख विद्रोह हुए, एक था पन्थे विद्रोह और दूसरा था डुंगन विद्रोह, जिसका उल्लेख बाद में किया जाएगा।
- इसके अलावा, चीनी लोगों ने विदेशी शक्तियों के ख़िलाफ़ बॉक्सर Boxer नामक विद्रोह किया, जिसमें मुसलमानों ने एक सेना बना कर चीनी लोगों का पूरी ताकत के साथ, साथ दिया और विदेशी सेना का विरोध किया। इस सेना को विदेशियों द्वारा कान्सू बहादुर Kansu Braves कहा जाता था और यह विदेशियों के लिए सबसे डरावनी सेना थी। लांगफांग की जंग Battle of Langfang में, कान्सू बहादुर सेना ने चीनियों के साथ मिलकर 8 पश्चिमी देशों की गठबंधन सेना को हरा दिया।
- चिंग शासन की समाप्ति के बाद जब लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना हुई तो मुसलमानों ने क्योमिनटांग Kuomintang (KMT) नामक लोकतांत्रिक पार्टी का समर्थन किया और कम्युनिस्ट पार्टी का विरोध किया, लेकिन 1949 में जब कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार स्थापित हुई तो मुसलमानों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उन सभी का उल्लेख विस्तार से किया जाएगा।

ख़ोजा बग़ावतें

कांगशी बादशाह के ही दौर में ख़ोजा बग़ावतें हुईं। लफ़्ज़ 'ख़ोजा' फ़ारसी लफ़्ज़ 'ख़्वाजा' की बदली हुई शक्ल है। ख़ोजा लोग मशहूर नक्शबंदी सूफ़ी अहमद कासानी (1461–1542 CE) की औलाद हैं। अहमद कासानी फ़र्ग़ाना Fergana Valley के रहने वाले थे और अपने ज़माने के बड़े सूफ़िया में उनका शुमार होता था। उनको 'मख़्दूम-ए-आज़म' भी कहा जाता था। उनकी ज़िंदगी का ज़्यादातर हिस्सा ताशकंद और बुख़ारा में गुज़रा लेकिन उनका इंतिक़ाल समरक़ंद के क़रीब ज़ुबैद में हुआ जहां पर उनकी ख़ानक़ाह थी। ख़ोजा अपने आपको सय्यिद कहते थे, उनको 'मख़्दूम ज़ादा' भी कहा जाता है। ख़ोजा अहमद कासानी के इंतकाल के बाद उनकी औलाद मावरा अल-नहर Transoxiana (आमू-पार) के अलती शहर Altishahr में आबाद हो गई।[228] अलती शहर में ख़ोजा दो भाग में बट गए एक सफ़ैद ख़ोजा थे जो कासानी के बड़े बेटे मुहम्मद अमीन उर्फ़ 'ख़ोजा कलां' के मानने वाले थे जिन्हें आफ़ाक़ी ख़ोजा, या अक़ ताग़लीक़ Aq taghliq (White mountaineers) भी कहा जाता था, उनको 'सय्यिद परस्त' Sayyid worshipers or followers भी कहा जाता था और दूसरे काले ख़ोजा थे जो कासानी के छोटे बेटे मुहम्मद इसहाक़ वली के मानने वाले थे जिन्हें 'इसहाक़ी ख़ोजा', इसहाक़िया या क़ारा ताग़लीक़ Qara taghliq (Black mountaineers) भी कहा जाता था। उनको 'ख़ताई परस्त' China

worshipers, or followers of China भी कहा जाता था। यह दोनों लोग आपस में दुश्मन थे और हमेशा एक दूसरे का विरोध करते और एक दूसरे के दुश्मनों का साथ देते। ख़ोजा बिरादरी में सब से पहले चीन में आबाद होने वाले ख़ोजा यूसुफ़ थे जो ख़ोजा कलां के बेटे थे उनका ज़िक्र नीचे आएगा।

आफ़ाक़ ख़ोजा

आफ़ाक़ ख़ोजा (1626-1694), अहमद कासानी के पर-पोते थे। आफ़ाक़ ख़ोजा को हिदायतुल्लाह Hidayat Allah भी कहा जाता है, उनके बाप का नाम मुहम्मद यूसुफ़ ख़ोजा था और उनके बाप का नाम ख़ोजा कलां था जिनके मानने वालों को आफ़ाक़ी ख़ोजा कहा जाता है। आफ़ाक़ ख़ोजा की माँ का नाम ज़ुलेखा बेगम Zuleiha Begum था जो बेटी थीं मीर सय्यिद जलाल काशग़री की। 12 साल की उम्र में आफ़ाक़ ख़ोजा अपने पिता के साथ काशग़र आए और यहीं आबाद हो गए। यहां पर मंगोल चुग़ताई ख़ानियत आबाद थी जिसे यरकंत ख़ानियत Yarkant Khanate भी कहते हैं, उसके शासक अब्दुल्ला ख़ान (1638-1669 CE) ने उन्हें बशकर्म Bashkerim नाम का एक गांव दे दिया था। यहां पर यूसुफ़ ख़ोजा ने अपना इशक़िया सूफ़ी सिलसिला जारी रखा जिसकी स्थापना उनके पिता ख़ोजा कलां ने की थी। बहुत सारे लोग उनके मुरीद और मोतक़िद हो गए। पिता के इंतिक़ाल के बाद आफ़ाक़ ख़ोजा पीर हो गए लेकिन कुछ बातों पर ख़ानियत के शासक से उनका मतभेद हो गया। एक तो वो यह चाहते थे कि काशग़र में शरिया क़ानून (इस्लामी शासन) लागू किया जाए जबकि वहां पर चंगेज़ ख़ान के ज़माने से मंगोलों का यसा क़ानून Mongol

Yassa लागू था और दूसरे यह कि शासक जो शान शौकत की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं वो ग़लत है। यह मत भेद इतना बढ़ा कि यरकंत ख़ानियत के शासक इस्माईल ख़ान (r.1670-1678 CE) ने आफ़ाक़ ख़ोजा को अपनी ख़ानियत से निकाल दिया। इतना ही नहीं इस्माईल ख़ान ने इसहाक़ी ख़ोजा की हिमायत की जो आफ़ाक़ी ख़ोजा के पुराने शत्रु थे। उधर आफ़ाक़ ख़ोजा ने ज़ुंगर ख़ानियत Dzungar Khanate से हाथ मिला लिया जो एक बौद्ध ख़ानियत थी और इस्माईल ख़ोजा के पुराने विरोधी थे। आफ़ाक़ ख़ोजा के उकसाने पर ज़ुंगर Dzungar के शासक गलदान बोशुघ्टु ख़ान Galdan Boshughtu Khan ने 1678 CE में यरकंत ख़ानियत पर हमला कर के उस को ख़त्म कर दिया और चुग़ताई मंगोल ख़ानदान के अबदुर्रशीद ख़ान सानी Abdul Al-Rashid Khan II को जो तुरपान के बाबा ख़ान का बेटा था। उस को वहां का कठपुतली शासक बना दिया। 1682 CE में यरकंत में फ़साद फूट पड़ा जिसकी वजह से अबदुर्रशीद ख़ान सानी वहां से फ़रार हो कर इली Ili चला गया और उसका छोटा भाई मुहम्मद अमीन ख़ान, यरकंत का ख़ान बन गया। 1691 CE में मुहम्मद अमीन ने किसी बात पर नाराज़ हो कर ख़ोजा लोगों को काशग़र से निकाल दिया और ख़ानियत के लोगों को ख़ोजा लोगों से किसी भी तरह के संबंध बनाने को मना कर दिया। आफ़ाक़ ख़ोजा ने क़सम खाई कि वो यरकंत से सारे मंगोलों को निकाल बाहर करेगा, इस के लिए उसने अपने बेटे यहया ख़ोजा को काशग़र से बुलाया। यहया ख़ोजा फ़ौज लेकर आया और यरकंत ख़ानियत पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। 1692 CE में मुहम्मद अमीन को शिकस्त हुई और

वो मारा गया, इसके बाद यहया ख़ोजा ने दूसरे शहर भी फ़तह किए जैसे खोतान, कोरला, कूचा, अक्सू और काशग़र वग़ैरह। 1694 CE में आफ़ाक़ ख़ोजा फ़ौत हो गया, यहया ख़ोजा यरकंत ख़ानियत का शासक था ही लेकिन 1695 CE में यहया ख़ोजा को उसकी सौतेली माँ ख़ानम पादशाह ने क़त्ल करा दिया। ख़ानम पादशाह मुहम्मद अमीन की बहन थी जिसको यहया ख़ोजा ने 1692 CE में मारा था। यहया ख़ोजा के बाद मुहम्मद मोमिन सुलतान ने चुग़ताई यरकंत ख़ानियत को दोबारा स्थापित करने की कोशिश की लेकिन ज़ुंगर ख़ानियत के शासक त्सेवांग रबटन Tsewang Rabtan ने 1713 CE में उसे फ़तह कर के ख़त्म कर दिया और उस के इलाक़े को ज़ुंगर ख़ानियत में शामिल कर लिया। आफ़ाक़ ख़ोजा का मज़ार काशग़र में है और वो चीन में इस्लाम का सबसे मुक़द्दस मज़ार माना जाता है जहां पर आफ़ाक़ ख़ोजा के साथ उसके 72 रिश्तेदार भी दफ़न हैं। आफ़ाक़ ख़ोजा का मक़बरा, काशग़र में 1640 में बनाया गया।[229] आफ़ाक़ ख़ोजा कुछ दिनों तक गान्सू Gansu में भी ठहरा और वहां पर नक्शबंदी सिलसिले को बढ़ावा दिया। एक दफ़ा उस ने कई शहरों का दौरा किया जिनमें शिनिगं Xining, लिनटाओ Lintao और हीज़ू Hezhou शामिल थे। कहा जाता है कि इन शहरों में बहुत सारे हुई और सालार लोग उनके मुरीद हुए, जिनमें एक 16 साल का लड़का ची जिंगयी Qi Jingyi भी था जो बाद में चल कर सब से ज़्यादा मशहूर नक्शबंदी सूफ़ी हुआ जिसने चीन में सबसे ज़्यादा नक्शबंदी सिलसिले को बढ़ावा दिया। उस को बाद में ची डाओज़ू Qi Daozu कहा जाने लगा। उसके दो शिष्य बहुत मशहूर हुए जिनके नाम हैं मा लाईची Ma Laichi

और मा मिंगशिन Ma Mingxin, दोनों उच्च इस्लामी शिक्षा हासिल करने के लिए अरब गए और वहां से वापसी पर दोनों ने अपने अलग अलग नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले स्थापित किए। मा लाईची ने ख़ुफ़िय्या सूफ़ी सिलसिले की बुनियाद डाली और मा मिंगशिन ने जहरिय्या सूफ़ी सिलसिला शुरू किया।[230] यरकंत ख़ानियत को ख़त्म करने के बाद त्सेवांग रबटन ने आफ़ाक़ ख़ोजा की औलाद को क़ैद करवा दिया और इसहाक़ी ख़ोजा को यरकंत और काशग़र का शासक बना दिया। आफ़ाक़ ख़ोजा के पोते महमूद का क़ैद में ही इंतिक़ाल हुआ और उसके दो बेटे ख़ोजा बुरहानुद्दीन और ख़ान ख़ोजा भी ज़ुंगर की क़ैद में रहे यहां तक कि चिंग हुकूमत ने ज़ुंगर ख़ानियत का ख़ातमा कर दिया।



आफ़ाक़ ख़ोजा का मक़बरा, काशग़र में

बादशाह योंगज़ेंग के दौर में

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि चिंग हुकूमत से शुरू से ही मुसलमानों के ताल्लुक़ात अच्छे नहीं रहे। और चिंग अहलकारों ने भी बादशाह से मुसलमानों की झूठी सच्ची शिकायतें करनी शुरू कर दीं, उनमें से कुछ बादशाहों ने इन

शिकायतों पर बिलकुल भरोसा नहीं किया और मुसलमानों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार जारी रखा। उन में योंगज़ेंग राजा Yongzheng Emperor (r. 27 December 1722 – 8 October 1735) भी था, जब उस के एक न्यायाधीश Judge ने सिफ़ारिश की, कि मस्जिदों को ध्वस्त कर दिया जाए और इस्लाम पर प्रतिबंध लगा दिया जाए तो उसने ये कह कर अस्वीकार कर दिया कि इस्लाम एक मूर्खतापूर्ण धर्म है लेकिन ख़तरा नहीं है। योंगज़ेंग राजा ने एक अहलकार को भी बरतरफ़ कर दिया था, जब उसने ये सिफ़ारिश की, कि मुसलमानों को ग़ैर मुस्लिमों के मुक़ाबले में कठोर सज़ाएं दी जाएं। एक बार जब उस के अहलकारों ने उसे मुसलमानों के ख़िलाफ़ वर्ग़लाने की कोशिश की तो उसने 1731 में ये हुक्मनामा जारी किया, "देश के हर सूबे में, कई सदियों से, बड़ी तादाद में मुसलमान रह रहे हैं जिनको में अपनी औलाद समझता हूँ जैसा कि में अपनी दूसरी प्रजा को समझता हूँ। मैं उनमें और दूसरे लोगों में कोई भेदभाव नहीं करता जो मेरे धर्म से ताल्लुक़ नहीं रखते। मुझे कुछ ओहदेदारों की तरफ़ से मुहम्मदियों के ख़िलाफ़ इस बुनियाद पर खुफ़िया शिकायत मिली है कि उनका धर्म दूसरे चीनियों से अलग है, कि वो चीनी भाषा नहीं बोलते और बाक़ी लोगों से अलग कपड़े पहनते हैं। इन पर अवमानना, हट धर्मी और विद्रोही मानसिकता का आरोप है, और मुझसे कहा गया है कि उनके ख़िलाफ़ कठोर कार्रवाई करूँ। इन शिकायतों और आरोपों का जायज़ा लेने के बाद मैंने पाया है कि यह निराधार हैं। दरहक़ीक़त मुसलमानों का धर्म उनके पूर्वजों का है। ये सच्च है कि उनकी भाषा बाक़ी चीनियों जैसी नहीं है, लेकिन चीन में कितनी

ही मुख़्तलिफ़ भाषाएं हैं। जहां तक उनके मंदिरों, कपड़ों और लिखने के अंदाज़ का ताल्लुक़ है, जो कि दूसरे चीनियों से मुख़्तलिफ़ हैं तो ये चीजें बिलकुल कोई अहमियत नहीं रखतीं। ये महज़ परंपराओं का अंतर है। वो मेरी दूसरी प्रजा की तरह अच्छे चरित्र के लोग हैं, और इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वो विद्रोह का इरादा रखते हैं। लिहाज़ा मेरी इच्छा है कि उन्हें उनके धर्म पर चलने की आज़ादी दी जाए जिस का मक़सद लोगों को अख़लाक़ी ज़िंदगी गुज़ारने और समाजी और शहरी जिम्मेदारियां की अदायगी सिखाना है। ये धर्म हुकूमत के मूलरूप आदर्शों का सम्मान करता है, और इस से बढ़कर और क्या मुतालबा किया जा सकता है? फिर अगर मुहम्मदी अपने आपको अच्छे और वफ़ादार प्रजा के तौर पर पेश करते रहेंगे तो मेरा एहसान उन पर भी इतना ही बढ़ेगा जैसा कि मेरे दूसरे बच्चों पर। उनमें से बहुत से सिविल और मिलिट्री अफ़सर बन कर आए हैं जो उच्च पदों पर नियुक्त हुए हैं। ये इस बात का बेहतरीन सबूत है कि उन्होंने हमारी परंपराओं को अपना लिया है, और ख़ुद को हमारे पवित्र शास्त्रों के आदर्शों के मुताबिक़ बना लिया है। वो हर एक की तरह साहित्य में अपना इम्तिहान पास करते हैं, और क़ानून की तरफ़ से फ़र्ज़ करदा क़ुर्बानियां अदा करते हैं। वे महान चीनी परिवार के सच्चे सदस्य हैं और हमेशा अपने धार्मिक, नागरिक और राजनीतिक कर्तव्यों को पूरा करने का प्रयास करते हैं। जब मजिस्ट्रेट के सामने (मुसलमानों से मुताल्लिक़) दीवानी मुक़द्दमा लाया जाए तो उसे मुद्दई के धर्म को नहीं देखना चाहिए। मेरा तमाम जनता के लिए एक ही क़ानून है। नेकी करने वालों को इनाम मिलेगा और बुराई करने वालों को सज़ा मिलेगी''।

चियानलोंग बादशाह के दौर में

चिंग सम्राटों में चियानलोंग राजा का रवैया विदेशियों के प्रति सबसे कठोर था, जिस ने मुसलमानों पर भी अत्याचार किए। हालाँकि उसने मुसलमानों की तुलना में मंगोलों को अधिक नुकसान पहुँचाया और पूरी ज़ुगर ख़ानियत को नष्ट कर दिया, लेकिन उसके बाद सब से ज़्यादा मुसलमान उसके उत्पीड़न का निशाना बने। चियानलोंग बादशाह के दौर में एक अहलकार चेन होंग मू Chen Hongmou ने 1751 CE में सज़ाओं के बोर्ड Board of Punishments को एक सरकारी ख़त लिखा जिसका शीर्षक था 'मुसलमानों को निर्देश देने और चेतावनी देने का वचन' Covenant to Instruct and Admonish Muslims उस में उसने हुकूमत से ये दरख़ास्त की, कि मुस्लिम लोग आपराधिक मानसिकता रखते हैं इस लिए उनको हान लोगों के मुक़ाबले में ज़्यादा सख़्त सज़ा दी जानी चाहिए। हालाँकि सज़ाओं के बोर्ड ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की लेकिन शांकसी-गान्सू के गवर्नर जनरल Shaanxi-Gansu Governor-General ने 1762 CE में इन सिफारिशों को अपने यहां लागू किया।[231] उसने ये क़ानून भी लागू किया कि अगर कोई नमाज़ी आदमी अपराध करेगा तो उस मस्जिद के इमाम को इस की सज़ा दी जाएगी। इन नियमों को बादशाह ने भी स्वीक्रति दी। कहा जाता है कि चियानलोंग के इस सख़्त रवैय्ये का कारण मुसलमानों में सूफीवाद का प्रसार था। इसी दौर में नक्शबंदी सिलसिला चीन में फैला। चुनांचे यूसुफ़ ख़ोजा ने चीन में नक्शबंदी सिलसिले की शुरूआत की। और उनके बेटे आफ़ाक़ ख़ोजा ने उस को उत्तर पूर्वी प्रांतों में फैलाया जिससे बड़ी तादाद में

तिब्बती लोगों ने इस्लाम क़बूल किया। इस के बाद मा लाईची ने खुफ़िया सिलसिले की बुनियाद डाली और उनके मद्द-ए-मुक़ाबिल मा मिंगशिन ने जहरिय्या सिलसिले की। मा लाईची बुख़ारा से पढ़ कर आए थे जब कि मा मिंगशिन यमन से। बाद में इन दोनों सिलसिलों में विवाद हो गया, जिस की शुरूआत इस तरह हुई कि मा लाईची ने ऐलान किया कि मग़रिब की नमाज़ से पहले रोज़ा खोलना चाहिए तो इस से लोगों में मतभेद हो गया। बहुत से सालार और तुर्क लोग उनके साथ हो गए। विरोध-पक्ष ने इस का मुक़द्दमा चिंग अदालत में पेश किया कि रोज़ा किस वक़्त खोलना चाहे। लेकिन बाद में कुछ मुसलमानों ने ये अर्ज़ी दी कि इस मसला को हम आपस में सुलझा लेंगे। इस के बाद दोनों पक्ष में एक मसला और छिड़ा कि ज़िक्र जहरिय्या (बोल कर ज़िक्र) करना चाहिए या खुफ़िया (ख़ामोश रह कर)। मा लाईची खुफ़िया ज़िक्र के पक्ष में थे इस लिए उनकी जमात को खुफ़िया कहा गया जब कि मा मिंगशिन जहरिय्या के हक़ में थे इस लिए उनकी जमात को जहरिय्या कहा गया। ताहम खुफ़िया के मानने वालों की संख्या ज़्यादा थी। बाद में इन दोनों जमातों में खूनी टकराव भी हुआ जिसका ज़िक्र आएगा।

दंगा विरोधी कानून

इन सारे वाक़ियात की वजह से चियान लौंग बादशाह, दिन बदन मुसलमानों के ख़िलाफ़ होता चला गया और अब ये कहना मुश्किल था कि चिंग हुकूमत, हान और हुई को बराबर का दर्जा देती है। इस लिए 1760 के बाद से मुसलमानों को दूसरे दर्जे के शहरी की नज़र से देखा जाने लगा। 1762 में चियानलोंग ने चेन

होंग मू की नीतियों को देश में लागू किया, जिनको पहले कोई अहमियत नहीं दी गई थी। जिसकी वजह से मुसलमानों में चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ बहुत ग़म-ओ-ग़ुस्सा फैल गया और पर हिंसक घटनाएं बढ़ने लगीं। हुकूमत मुसलमानों के ख़िलाफ़ शिकायत करने वालों को प्रोत्साहित करती और हर शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करती इस लिए मुसलमानों के ख़िलाफ़ शिकायतों की भर मार हो गई, हर ऑफ़िस में बेशुमार अर्ज़ियां मुसलमानों के ख़िलाफ़ पहुंचने लगीं। जिससे चिंग हुकूमत ने ये नतीजा निकाला कि मुसलमान व्यवहारिक रूप से हिंसक होते हैं इस लिए उनके ख़िलाफ़ मज़ीद सख़्त क़ानून लागू करने चाहिऐं। इस लिए कई नए क़ानून मुसलमानों के ख़िलाफ़ पास किए गए। जिनमें से एक ये था कि अगर तीन या इस से ज़्यादा मुसलमानों के किसी ग्रुप में कोई हथियार बरामद होता है तो ग्रुप के तमाम मुसलमानों को मुजरिम क़रार दिया जाएगा और सबको सज़ा होगी। 1770 की दहाई में एक नया दंगा विरोधी कानून brawling (dou'ou) क़ानून लागू किया गया जिसके तहत हज़ारों मुसलमानों को दंगा भड़काने के इल्ज़ाम में गिरफ़्तार किया गया। इन कार्रवाइयों में ज़्यादा-तर जहरिय्या सिलसिले के लोगों को निशाना बनाया गया लेकिन कई ग़ैर जहरिय्या मुसलमान भी ज़द में आए, इस लिए हुकूमत के विरोध में वो लोग भी जहरिय्या के साथ शामिल हो गए। इस के नतीजे में कुछ जहरिय्या लोगों ने बग़ावत कर दी और जवाब में चिंग हुकूमत ने जहरिय्या के प्रमुख मा मिंगशिन को सज़ा-ए-मौत दे दी। इस को नीचे बयान किया जा रहा है।

चियान लौंग के समय के दो पत्र

चियान लौंग बादशाह के समय में मुसलमानों के प्रति कितना सख्त रवैया अपनाया गया था, इसका अंदाज़ा इन दो पत्रों से भली-भांति लगाया जा सकता है। इन्हें नीचे दिया जा रहा है।

पहला पत्र

अज़ साटज़ाई (Satzai)

वायसराय कियांग सू और कियांग सी

बख़िदमत जहांपनाह, चियानलोंग (Qianlong) शहंशाह-ए-चीन

ख़ाकसार जहांपनाह का आज्ञाकारी, निहायत सम्मान से जहांपनाह की ख़िदमत में अर्ज़ करता है कि बंदे को इस साल, पांचवें महीने की 27 तारीख़ 1783 CE को "चू चुइन" (Chu Chuin) सेना कमांडर (कुवांग सी) की तरफ़ से सूचना मिली है कि उसने एक मुसलमान हाई फ़ू शोन (Hai fu shon) नामी को गिरफ़्तार किया है। उस के पास से चीनी ज़बान की पाँच किताबें और अरबी ज़बान की 21 किताबें बरामद हुई हैं। अदालत के सामने उसने ये इक़रार किया है कि उस के मज़हबी भाई "युआन अयी" (Yuan Ayi) ने जो नानजिंग का बाशिंदा है "इस्लाम की आस्थाएं" और "मुहम्मद की जीवनी" पर दो किताबें, जो चीनी ज़बान में लिखी थीं, उस को भेंट की हैं। सुना है कि इन किताबों का मतबा [वो तख़्तियाँ जिन पर किताब का मुसव्विदा (पांडुलिपि) कुंदा किया गया था] चियांग नान (मौजूदा चियांग सू) में मौजूद है। चू चुइन लिखता है कि

इन किताबों में बहुत से संदिग्ध शब्द मिलते हैं। चुनांचे हाई फ़ू शोन से बरामद हुई किताबों को मैं जहांपनाह की ख़िदमत में भेज रहा हूँ ताकि नज़र-ए-इनायत हो। मेरी गुज़ारिश है कि युआन अई और किताब का मुक़द्दमा लिखने वाले "काई शू येन" (Kai Shoo Yen) को जो ज़िला होटिंग (Hwoting) का रहने वाला है और उन किताबों के लेखकों "लियुटज़े" (Luitze) और "किन तियान चूह" (Kin Tian Chuh) को जल्द अज़ जल्द गिरफ़्तार कर के सज़ा दी जाये। इस लिए मैंने सारे अहलकारों और संबंधित अफ़सरों को हुक्म दिया है कि इन लोगों की तलाशी ली जाये और तमाम किताबें ज़ब्त की जाएं। नानजिंग के शासक की तरफ़ से जवाब आया है कि युआन अयी और उस के बड़े भाई युआन कुई (Yuan Kui) को गिरफ़्तार कर लिया गया है जिनके पास से बहुत सी इस्लामी किताबें बरामद हुई हैं जो चीनी और अरबी ज़बानों में हैं लेकिन उनका लेखक किन तियान चूह कहीं बाहर गया हुआ है लेकिन ये ख़बर नहीं कि वो कहाँ है और दूसरा लेखक लियुटज़े कई साल पहले इंतिक़ाल कर चुका है लेकिन उस का पड़ पोता मौजूद है जिसको अदालत में जब पेश किया गया तो उसने ये बयान दिया कि ""इस्लाम की आस्थाएं" और "मुहम्मद की जीवनी" दोनों किताबों का मतबा शहर चिंग कियांग (Ching Kinag) में रहने वाले ख़ानदान तान (Tan) के पास सुरक्षित है। याद रहे ये शहर नानजिंग से सौ मील के फ़ासले पर है। चिंग कियांग शहर के हाकिम ने टान चाइ वैन (Tan Chai Wen) को गिरफ़्तार करवा लिया और सारी किताबें और मतबे भी ज़ब्त कर लिए।

उधर सुंग कियांग फ़ू (Sung Kiang Fu) के शासक ने ये ख़बर दी कि उसने युआन अई, टान चाइ वैन और काई शू येन को सूबा कियांग सू की फ़ौजी अदालत में भेज दिया है। मुक़द्दमे की कार्रवाई मेरे (सुंग कियांग फ़ू) के पास आई है और में बहुत ग़ौर से इस को पढ़ रहा हूँ।[232]

साटज़ाई आगे लिखता है कि इस साल 6 वें महीने की 8 वीं तारीख़ को जहांपनाह का ख़त मौसूल हुआ जिस में पूछा गया है कि इस मामले में बंदे की क्या राय है। बंदा अर्ज़ करता है कि हुज़ूर-ए-वाला, को खासतौर पर मुसलमानों पर रहम और तरस खाना चाहिए, इस संबंध में मैं सभी कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों की तरफ़ से बहुत ही सरलता से अनुरोध करता हूं कि युआन अई वग़ैरा को रिहा फ़रमा दें और ज़ब्त शुदा किताबें भी वापस कर दें ताकि वो हुज़ूर-ए-वाला की प्रशंसा करें और मुसलमान भी बादशाह-ए-चीन के आभारी रहें और दुआ-ए-ख़ैर करें।

ख़ादिम बादशाह-ए-चीन

साटज़ाई, वायसराय कियांग सू और कियांग सी

दूसरा पत्र

दिनांक 18, महीना 6, साल 47 चियांग लौंग 1783 CE

साटज़ाई, वायसराय कियांग सू और कियांग सी

मी गाओ युआन (Mee Gao Yuan), पुलिस और सेना अधिकारी, कियांग सू

लियु चिन (Liu Chin) रईस कार्य परिषद नानजिंग

ली टसिन फ़ैन (Lee Tsin Fen) इंस्पेक्टर जनरल कियांग सू

निहायत ख़ाकसारी से जहांपनाह से अर्ज़ करते हैं कि मी गाओ युआन, पुलिस और सेना अधिकारी, कियांग सू को ख़बर मिली है जो सूबा कुवागं सी की कार्य परिषद से आई है कि वहां कई इस्लामी किताबों का पता चला है। और उन किताबों के मुक़द्दमे लिखने वाले गिरफ़्तार कर के अदालत में पेश किए गए और उन पर मुक़द्दमा चलाया जा रहा है।

अर्ज़ है कि ये मामला चू चुईन, पुलिस और सेना अधिकारी, कुवागं सी, जहांपनाह की ख़िदमत में पहले पेश कर चुका था, जिसके जवाब में जहांपनाह की तरफ़ से ये हुक्म हुआ था कि नज़रअंदाज़ कर दिया जाये और तमाम सूबों के हुक्काम को हिदायत कर दी गई कि अगर इस किस्म की किताबें पाई जाएं तो उनकी वजह से मुसलमानों पर सख़्ती न की जाये ताकि अमन-ओ-अमान में ख़लल न हो।

मस्लिहत इसी में है कि मुसलमानों को न छेड़ा जाये, क्योंकि उत्तर-पश्चिम चीन में मुसलमानों की तादाद बहुत है और हर सूबे में ये फैले हुए हैं, जहां कहीं ये लोग बसे हैं उनके साथ इस्लामी किताबें भी हैं, ये सब के सब न तो फ़ना किए

जा सकते हैं और न किताबें जलाई जा सकती हैं। हक़ीक़त ये भी है कि ये लोग फ़ित्ना अंग़ेज़ और शांति भंग करने वाला नहीं हैं, उनकी ज़िंदगियां और तर्ज़-ए-अमल बिलकुल बुध मत के भिक्षुओं और लामा मत (Lamaism) के धर्मगुरुओं की तरह है, सोंग के ज़माने से लेकर आज तक ये लोग इसी धरती पर बस्ते चले आए हैं। ये लोग " बाई लियान ज़ी" (Báilián zhī) और अहल-ए-बिद्दत की तरह नहीं हैं कि मज़हब के पर्दे में कोई फ़ित्ना और फ़साद पैदा करें (याद रहे "बाई लियान ज़ी" चीन में एक गुप्त संगठन था, जिसका व्यवहार बातनियों जैसा था। इन्हें व्हाइट लोटस White lotus भी कहा जाता था।)। इनका मक़सद आम बाशिंदों में बदअमनी और अशांति पैदा करना नहीं है। अगर ये ज़्यादा सताए जाएंगे तो शांतिप्रिय मुसलमानों में ज़रूर बेचैनी फैलेगी, और उनको अनावश्यक अपने हाथ पांव से काम लेना पड़ेगा।

जहांपनाह के नमक-ख़्वार और वफ़ादार नौकरों को अपने मातहत क्षेत्रों में अगर ऐसे वारदात की ख़बर मिले जो क़ानून के ख़िलाफ़ हो तो मुक़ामी हुकूमत के ज़िम्मेदार अधिकारी ज़रूर "क़ानून" के मताबिक़ कार्रवाई करें, मगर इन इस्लामी किताबों की वजह से हमारे देश में मौजूद मुसलमानों को क़ानून की ख़िलाफ़वर्जी की सज़ा देना कहाँ की अक्लमंदी और दानिशमंदी है। चू चुईन की समझ की कमी के कारण कि वह अहम और ग़ैर अहम मामले में फ़र्क़ नहीं करता है, उसने फ़ौरन तमाम सूबों के पुलिस और सेना अधिकारियों को लिखा कि मुसलमानों के खिलाफ़ सख़्त कार्रवाई की जाये, ये चू चुईन की बहुत बड़ी ग़लती है।

मेरी (मी गाओ युआन की) राय जहांपनाह की ख़िदमत में यह है कि वो इस्लामी किताबें जो ज़ब्त की गई हैं , सुरक्षित रखी जाएं और इस सिलसिले में जो लोग गिरफ़्तार हुए हैं उनको रिहा कर के तसकीन दिलाई जाये, और तमाम सूबों के वायसराय और इन्सपैक्टर जनरल को ये हुक्म भेजा जाये कि सूबा कुवागं सी की कार्य परिषद से जो आदेश उनको मिले हैं उनके मुताबिक़ कार्रवाई इख़्तियार न की जाये। इस्लामी किताबों के मुताल्लिक़ तफ़तीश न करें और बाज़ ख़ास हुक्काम को ये ताकीद फ़रमाई जाये कि वो दरबार को सूचना दें कि मुक़ामी हुक्काम, फरमान-ए-शाही के ख़िलाफ़ तो कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं।[233]

आगे बदरुद्दीन चीनी लिखता है कि इन दोनों ख़ुतूत से जिनको हुक्काम कियांग सू ने बादशाह चियानलोंग की ख़िदमत में भेजा था, हर शख़्स इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि चीन के मुसलमानों ने मान्चू हुकूमत के ज़माने में बेहद आसमानी और इनसानी आफ़तें उठाईं, उन पर जो जो मुसीबतें गुज़रीं, ख़ुदा ही बेहतर जानता है। हक़ीक़त ये है कि चीन की हुकूमत जब तक ख़ानदान-ए-मांचू के हाथ में रही, मुसलमानों के सियासी हालात तितर-बितर रहे और उनके दिमाग़, नशोनुमा और तरक़्क़ी से महरूम रहे। तक़रीबन तीन सौ साल तक न मुसलमानों को सियासी आज़ादी मिल सकी, और ना वो ज़हनी सुकून की सांस ले सके, उनकी जिस्मानी और रुहानी दोनों क़ुव्वतें सल्ब कर ली गईं, आज़ाद ख़याली का मुर्ग-ए-ज़र्रीं ज़बह कर दिया गया, और आज़ादाना इज़हार-ए-राय को ममनू (प्रतिबंधित) क़रार दे दिया गया।[234]

मा मिंगशिन Ma Mingxin

मा मिंगशिन (L.1719-1781) चीन में जहरिय्या सूफ़ी सिलसिले के बानी माने जाते हैं जो नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले की एक शाखा है। उनका इस्लामी नाम ‘इबराहीम’ है और जब वो तालीम हासिल कर के चीन वापस हुए तो ख़ुद को ‘अज़ीज़’ कहलवाने लगे।[235] ताहम उनके मानने वाले उनको वक़ायतुल्लाह “وقايۃالله” भी कहते हैं।[236] उन्होंने 16 साल मक्का और यमन में इस्लामी तालीम हासिल की। वो मक्का के नक्शबंदी सूफ़ी शेख़ अबदुल-ख़ालिक़ के शागिर्द थे। अबदुल-ख़ालिक़ शागिर्द थे ज़ैद बिन मुहम्मद Zayn b. Muhammad के जिनको अबदुलबाक़ी अल-मिज़जाजी Abd al-Baqi al-Mizjaji (1643/44-1725) भी कहा जाता है जो यमन के ज़ाबिद Zabid के क़रीब मिज़जाजा Mizjaja के इलाक़े के रहने वाले थे। अबदुलबाक़ी अल-मिज़जाजी के उस्ताद थे इबराहीम बिन हसन अलकुरानी Ibrahim ibn Hasan al-Kurani (1616-1690) जो ज़िक्र बिलजहर (बोल कर ज़िक्र) के हामी थे। यमन में इस सिलसिले को ज़ाबिद नक़्शबंदिया Zabid Naqshbandiyyas कहा जाता था।[237] कहा जाता है कि मा मिंगशिन, शेख़ मुहम्मद बिन अबदुल वह्हाब नजदी की विचारधारा से भी प्रभावित थे। मा मिंगशिन जब 1761 CE में चीन वापस लौटे तो उन्होंने वहां जहरिय्या मेनूहान Jahriyya menhuan की बुनियाद डाली।[238] याद रहे चीन में सूफ़ी सिलसिले को मेनूहान Menhuan कहते हैं।

एक दूसरी रिवायत में है कि मा मिंगशिन जब तालीम हासिल कर के चीन वापस लौटा तो उसने गान्सू के कुआन चुआन शहर (ग़ालिबन शुनहुआ Xunhua) में अपनी तब्लीग़ का आग़ाज़ किया और इस को अपना मर्कज़ बनाया बाद में लोग मा मिंगशिन के पैरोकारों को कुआन चुआन के नाम से पुकारने लगे।[239]

चूँकि ये लोग जहरिय्या ज़िक्र को ज़्यादा प्राथमिकता देते थे इस लिए उनको जहरिय्या कहा गया। इसके विपरीत जो दूसरा पुराना नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिला था जिसके संस्थापक मा लाईची माने जाते हैं, उस को ख़ुफ़िया Khufiyya कहा गया क्योंकि वो ख़ुफ़िया ज़िक्र का हुक्म करते थे।[240] मा मिंगशिन ने ख़ुफ़िया सिलसिले पर एतराज़ भी किए, उनके क़ब्रों पर चड़हावे चिढ़ाने पर, मक़बरों को सजाने पर और धार्मिक गुरुओं का दौलत इकट्ठी करने पर। इस वजह से दोनों में टकराव शुरू हो गया। इस की दूसरी वजह ये थी कि जहरिय्या सिलसिला गान्सू सूबे में बहुत तेज़ी से फैला। याद रहे इस ज़माने में गान्सू Gansu में चिंगहाई Qinghai और निंगशिया Ningxia भी शामिल थे। जिससे पुराने ख़ुफ़िया सिलसिले को ख़तरा महसूस होने लगा। दोनों में मज़हबी विषयों पर बहसें होतीं जो इतनी बढ़ जातीं कि लड़ाई तक नौबत आ जाती।

विवाद के कुछ बिंदु इस प्रकार है:

मज़हब क़दीम (खुफ़िया)	**मज़हब जदीद** (जहरिय्या)
हदिया लेंगे	हदिया नहीं लेंगे
सूरह ताहा पढ़ेंगे	सूरह ताहा नहीं पढ़ेंगे
तिलावत-ए-क़ुरान सब मिलकर करेंगे	फ़र्दन फ़र्दन क़ुरान पढ़ेंगे
तशह्हुद में शहादा नहीं उठाएंगे	तशद्दुद में शहादा उठाएंगे
मज़हबी दावत खाएंगे	मज़हबी दावत नहीं खाएंगे[241]

मय्यत को ग़ुस्ल देते वक़्त सूरह ताहा पढ़ाई जाती है लेकिन फ़िर्क़ा जदीद उस को बिद्दत क़रार देता है इस की दलील ये है कि मुर्दा कुछ नहीं सुन सकता लेकिन फ़िर्क़ा क़दीम कहता है इस वक़्त सूरह ताहा इसलिए तिलावत की जाती है कि मुमकिन है कि ख़ुदा उस के ज़रिये से मय्यत के गुनाह माफ़ फ़र्मा दे या उन में तख़फ़ीफ़ कर दे।[242]

चुनांचे दोनों में लड़ाईयां शुरू हो गई। जब इन लड़ाईयों की ख़बर चिंग हुकूमत को हुई तो उसने खुफ़िया का साथ दिया और जहरिय्या को दबाने की कोशिश की। हुकूमत का मानना था कि खुफ़िया सूफ़ी सिलसिले के लोग पुराने हैं और इस्लाम के सुलझे हुए पैरोकार हैं जिनको गदीमो Gedimu कहा जाता है जो लफ़्ज़ 'क़दीम' की बिगड़ी हुई शक्ल है। जब कि जहरिय्या लोग चरमपंथी और विनाशकारी हैं। सालार Salar जाति के लोग जो चिंगहाई के शुनहुआ Xunhua इलाक़े में बड़ी तादाद में आबाद था वो लोग ज़्यादा-तर जहरिय्या से जड़े हुए थे, उन्होंने हुकूमत के ख़िलाफ़ शुनहुआ में विद्रोह कर दिया।

एक और वजह इस विद्रोह की ये बताई जाती है कि एक चिंग अहलकार जिसको ये ज़िम्मेदारी दी गई थी कि वो खुफ़िया और जहरिय्या की लड़ाई को ख़त्म करवाए। उसने एक दफ़ा कुछ जहरिय्या लोगों के सामने जिनको वो खुफ़िया समझ रहा था, ये कह दिया कि चिंग हुकूमत का मंसूबा है कि वो तमाम जहरिय्या लोगों को ख़त्म कर देगी। इस से जहरिय्या लोग भड़क गए और उस की हत्या कर दी, जिसकी वजह से बग़ावत भड़क गई।[243]

इस बग़ावत का नेतृत्व जहरिय्या सिलसिले के सू 43 (Su Forty-three) कर रहे थे जिन्हें (Su Forty-three) कहा जाता है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह किसी समूह का नाम है या किसी व्यक्ति विशेष का। चुनांचे विद्रोहियों ने 1781 में खुफ़िया सिलसिले के ऊपर हमला कर दिया और 100 से ज़्यादा लोगों को मार दिया, इन मरने वालों में एक चिंग अहलकार भी था। चुनांचे हुकूमत ने बग़ावत के जुर्म में मा मिंगशिन को गिरफ़्तार कर लिया हालाँकि वो बग़ावत में बिलकुल शरीक नहीं थे बल्कि वो उस समय शुनहुआ में ही मौजूद नहीं थे।[244] इसकी प्रतिक्रिया में जहरिय्या लोगों ने खुले आम बग़ावत कर दी जिसको जहरिय्या बग़ावत Jahriyya revolt कहा जाता है, इस में ज़्यादा-तर सालार लोग थे। मा मिंगशिन को इस दौरान लांज़ू Lanzhou में क़ैद रखा गया। लांज़ू में जहां मा मिंगशिन को क़ैद रखा गया था उस के बाहर बहुत सारे जहरिय्या पैरोकार जमा हो गए और उस का घेराव कर लिया। हुकूमती अफ़सरों ने मा मिंगशिन को जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे, दीवार के ऊपर से लोगों को दिखाया, तो देखने वालों

में कोहराम मच गया जिससे डर कर अफ़सरान ने मा मिंगशिन को दीवार से नीचे उतार कर उन्हें यातना देकर, 1781 में सर क़लम कर दिया।

दूसरी रिवायत में है कि जब चिंग अहलकारों ने मा मिंगशिन को लांज़ू में क़ैद कर दिया तो उनके पैरोकार जो कुआन चुआन में थे सब लांज़ू आ गए और उस जगह को घेर लिया तो चिंग अहलकारों ने मा मिंगशिन से माफ़ी मांगी और उन से बिनती की कि फ़सील पर चढ़ कर अपने अनुयायियों को समझाएं। तो मा मिंगशिन ने फ़सील पर चढ़ कर उन लोगों को समझाया, तो लोग ख़ुशी ख़ुशी अपने घर लौट गए क्यों कि मा मिंगशिन ने उनको यक़ीन दिलाया था कि मुक़ामी हुक्काम उन को हानि नहीं पहुंचाएंगे और चंद रोज़ बाद निहायत सम्मान से के साथ उनको अपने घर वापस भेज देंगे। लेकिन जब उनके पैरोकार वापस हो गए तो चिंग अहलकारों ने इस की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए, उन्हें यातनाएं दीं और फिर तुरंत मार दिया।[245]

चुनांचे जहरिय्या लोगों ने खुले आम बग़ावत कर दी जो कई शहरों में फैल गई। चिंग हुकूमत ने बग़ावत को कुचलने के लिए अपने ग्रांड सेक्रेटरी अगुई Agui को फ़ौज देकर भेजा जिसने उस बग़ावत को कुचल दिया और दूसरे सूबों की तरफ़ भगा दिया, जैसे शिंजियांग वग़ैरा। इस के बाद मा मिंगशिन की बेवा ज़ांग Zhang और उनकी लड़कियों को भी शिंजियांग की तरफ़ जिला-वतन कर दिया गया।

टियानवू की बग़ावत

जहरिय्या की शिकस्त के बाद चिंग अहलकारों का हौसला और बढ़ गया और उन्होंने मुसलमानों को देश का दुश्मन घोषित कर के उनको निशाना बनाना शुरू कर दिया जिसके जवाब में, मा मिंगशिन के इंतिक़ाल के तीन साल बाद 1784 में जहरिय्या पैरोकार टियानवू Tian Wu और ज़ांग वैनचिंग Zhang Wenqing ने फिर से बग़ावत कर दी।[246] इस बग़ावत का मुक़ाबला करने के लिए चिंग हुकूमत ने अपने सबसे काबिल जनरल ली शियाओ Li Shiyao को फ़ौज देकर भेजा जिसने बाग़ियों को शिकस्त दी। ली शियाओ का ताल्लुक़ चिंग आठ बैनर ग्रुप Qing Eight Banners से था।

दूसरी रिवायत में है कि चिगं हुक्काम ने टियानवू से सुलह कर ली जिसमें ये शर्त थी कि मुसलमान फिर कभी बग़ावत नहीं करेंगे और मांचू हुक्काम बग़ैर किसी जुर्म के मुसलमानों को न सताएंगे। लेकिन जब सब मुसलमान अपने अपने घर वापस हो गए तो चिंग हुक्काम ने अचानक मुसलमानों पर हमला कर दिया। मुसलमान बे-ख़बर थे, अचानक चिंग अहलकारों ने उनको आ घेरा और बेदरेग़ क़त्ल करना शुरू कर दिया। इन क़त्ल होने वालों में टियानवू भी शामिल था। इस तरह इस बग़ावत का ख़ातमा हो गया।[247]

इस लड़ाई में गान्सू में तक़रीबन 1000 हुई बच्चे क़त्ल हुए। इस के बाद मुसलमानों को बच्चे लेकर पालने पर पाबंदी लगा दी गई क्यों कि उन पर इल्ज़ाम था कि मुसलमान दूसरों के बच्चों को लेकर पालते हैं और उनको

मुसलमान बना लेते हैं। इस के अलावा नई मस्जिदों बनाने पर भी पाबंदी लगा दी गई।

इस के बाद से जहरिय्या लोग ख़ुफ़िया तरीक़े पर काम करने लगे। जहरिय्या सिलसिले के तीसरे प्रमुख मा डाटियान Ma Datian को 1818 में मंचूरिया की तरफ़ जिला-वतन कर दिया गया।[248] जहरिय्या सिलसिले के बाद के सूफ़ी प्रमुख मा हुआलौंग Ma Hualong, 'महान उत्तर पश्चिमी हुई विद्रोह' Great Northwest Hui Rebellion के नेताओं में से थे ये बग़ावत 1860 की दहाई में निंगशिया, शांक्सी और गान्सू में हुई थी। मा मिंगशिन को क़त्ल करने से पहले सरकारी अफ़सरान ने उनकी डाढ़ी के बाल नोचे थे, इस लिए उनकी याद में जहरिय्या लोगों ने अपनी डाढ़ियों के साइड के बाल तराश दिए। मा मिंगशिन की औलाद में इस वक़्त मा चो-या Ma Cho-ya हैं जो उरुमची में रहते हैं।

बादशाह चियानलोंग इस बात से परेशान था कि इतने सारे मुसलमान जिनका ताल्लुक़ अलग अलग जमातों से है वो कैसे एक साथ मुत्तहिद हो कर चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। तो उस के वज़ीरों ने उसे बताया कि ली शियाओ Li Shiyao के विश्लेषण को जो उसने मुसलमानों से मुताल्लिक़ किया था कि 'मुसलमान व्यवहारिक रूप से हिंसक होते हैं' और चिंग हुकूमत उन्हें ख़त्म करने का मंसूबा रखती है, ये सब बातें लीक हो गई हैं। जिसके ज़रिये मुसलमानों के लीडरों ने उन्हें भड़काया है कि चिंग हुकूमत उन्हें ख़त्म करने की तैयारी कर रही है। इस को क़ाबू करने के लिए पूरे उत्तर-पश्चिमी चीन को अगले 50 साल के लिए फ़ौजी क़बज़े में दे दिया गया, यहां तक कि दक्षिणी चीन में

ताइपिंग विद्रोह Taiping rebellion हुआ, तब चिंग हुकूमत वहां से फ़ौज हटाने पर मजबूर हुई और इस के बाद डुंगन बग़ावत हुई , जिसका ज़िक्र आएगा।

दीगर हालात

कहा जाता है कि चियानलोंग बादशाह ने दो मुसलमान तुर्क बैग को बहुत से सम्मान से नवाज़ा क्यों कि उन्होंने काशग़र में एक बग़ावत को कुचलने में चिंग हुकूमत की मदद की थी। उनके लिए राजधानी पीकिंग में महल बनवाए और क़रीब में एक मस्जिद बनवाई ताकि वो तुर्क बैग और दूसरे जंगी क़ैदी जो काशग़र से लाए गए थे, इबादत कर सकें। कहा जाता है कि इन क़ैदियों में एक मुसलमान लड़की भी थी जो बेपनाह हसीन थी और वो चियानलोंग की सबसे पसंदीदा बांदी concubine बन गई थी। इस के लिए चियानलोंग ने मस्जिद से मिला हुआ महल बनवाया था ताकि वो अपने लोगों को वहां इबादत करते हुए देख सके और ख़ुद भी इबादत कर सके। ये मस्जिद 1763-1764 के दरमियान बनाई गई जिस पर चार भाषाओं में नक़्क़ाशी की गई थी जिनमें से चीनी भाषा की लिखाई बादशाह ने ख़ुद लिखी थी।

जब चियानलोंग ने ज़ुंगरया से ज़ुंगर ख़ानियत का ख़ातमा कर दिया तो इस इलाक़े में बाहर के बहुत से लोगों को बसाया तो उनमें से बहुत से लोग मुसलमानों के संपर्क में आकर मुसलमान हो गए। याद रहे इस इलाक़े में तुर्क मुसलमान पहले से थे।

हान फ़ो युन

कहा जाता है कि 1783 में खवागं सी Khwang-Se (शायद ये गुआंगज़ू है) के गवर्नर ने चियानलोंग बादशाह को एक रिपोर्ट पेश की जिसमें उसने लिखा कि, “मैंने हान फ़ो युन Han-Fo-Yun नाम के एक मुहिमजू Adventurer को पकड़ा है। उस पर ये इल्ज़ाम था कि ये आवारागर्दी करता फिरता है। जब उस से पूछताछ की गई तो उसने बताया कि वो अपने मज़हब की शिक्षा हासिल करने के लिए पिछले दस साल से देश के विभिन्न सूबों में घूमता फिर रहा है। उस के पास कई संदूक़ थे जिनमें से एक में 43 किताबें निकलीं जिनमें से कुछ उस के अपने हाथ की लिखी हुई थीं। लेकिन वो ऐसी ज़बान में थीं जिसको हम समझ नहीं सकते। इन किताबों में पश्चिम के एक बादशाह की तारीफ़ है जिसका नाम मोहम्मद ﷺ है। जब उस से और ज़्यादा सख़्ती से पूछताछ की गई तो उसने बिल आख़िर क़बूल कर लिया कि वो इस धर्म का प्रचार करता है जो इन किताबों में लिखा है। और उस का कहना है कि वो अलग अलग जगहों पर रहा लेकिन सबसे ज़्यादा शनशी Shanxi में रहा। मैंने उन किताबों को पढ़ने की कोशिश की लेकिन उनमें से कई ग़ैर चीनी ज़बान में हैं जबकि जो चीनी ज़बान में हैं वो काफ़ी ख़राब हैं क्यों कि उनमें ऐसे व्यक्ति के तारीफ़ की गई है जो उस के लायक़ नहीं है और ना मैंने उसके बारे में कभी सुना है। शायद ये शख़्स (हान फ़ो युन) गान्सू के विद्रोहियों में से है। इस का व्यक्तित्व काफ़ी संदिग्ध है कि वो दस साल से किया करता रहा है। मेरा इरादा है कि में इस मामले की गहराई से तफ़तीश करूँ। मैं बादशाह सलामत से दरख़ास्त करता हूँ कि मुझे इस की

इजाज़त दें कि जो उस के पास किताबें और तख्तियाँ हैं उसे जला दूं और उनको लिखने वालों को गिरफ़्तार करूँ और में इस लिखने वाले को आपकी ख़ुशी के लिए आपके पास भेज रहा हूँ"।[249]

अन्य घटनाएँ

डू हॉलडे अपनी किताब में लिखता है कि चीन में मुसलमान राजनीतिक गठबंधन कर के या शादियां कर के या अकाल के दौरान बच्चे ख़रीद कर अपनी तादाद बढ़ाया करते थे। चुनांचे चांगटोंग Changtong प्रांत में जब सूखा पड़ा और माता-पिता अपने बच्चों को खाना खिलाने में असमर्थ हो गए, तो मुसलमानों ने 10,000 से ज़्यादा बच्चे ख़रीदे। बाद में उनकी शादियां कीं, उनके लिए अलग मकान बनाए और उनको मुसलमान बना लिया। यहां पूरे पूरे गांव और क़स्बे उन लोगों के हैं जो मुसलमान हुए हैं और वो लोग अपने बीच किसी ऐसे शख़्स को रहने की इजाज़त नहीं देते जो मस्जिद नहीं जाता। इस तरह पिछली सदी के दौरान उनकी तादाद में बेपनाह इज़ाफ़ा हुआ है।[250]

इसी तरह जब 1790 में कवांगटुंग Kwangtung सूबे में अकाल पड़ा और ग़रीब माँ बाप अपने बच्चों को खाना उपलब्ध नहीं करा पाए तो मुसलमानों ने हज़ारों ग़रीब बच्चे ख़रीद कर उनका पालन-पोषण किया और बाद में उनको मुसलमान बना लिया। इसी तरह जब 1900 में बॉक्सर बग़ावत हुई तो मुसलमानों ने ईसाई बच्चों को ख़रीद कर उनका पालन-पोषण किया और उनको मुसलमान बना लिया।[251]

ब्रूमहाल Broomhall लिखता है कि मुसलमान लोग चीन में अलग क्वार्टरों और परिसरों में रहते हैं जहां वो खुल कर अपनी धार्मिक परंपराओं का पालन करते हैं, और वो लोग किसी ऐसे शख़्स को अपने साथ रहने की इजाज़त नहीं देते जो मस्जिद नहीं जाता। ताहम बाहर वो इस बात का ख़्याल रखते हैं कि अपनी धार्मिक परंपराओं की नुमाइश से बचें। ताकि वो दूसरे चीनियों से अलग न लगें, जिससे उनके साथ वाले उनको ना पसंद न करें। वो आम ज़िंदगी में बिलकुल चीनी रहन सहन में ढल जाते हैं, आम चीनियों की तरह लंबी चोटी रखते हैं, चीनी वस्त्र पहनते हैं और चीनी भाषा बोलते हैं। जब कि मस्जिद में वो अमामा बाँधते हैं। वो मस्जिदों में ऊंची मीनारें बनाने से भी बचते हैं। उनकी मस्जिदें आम चीनी इमारतों की तरह दिखती हैं और उन्हें पहचानना मुश्किल होता है। हर मस्जिद में दूसरी इमारतों की तरह एक तख़्ती लगी होती है जो हर इमारत पर लगाना हुकूमत की तरफ़ से अनिवार्य है जिस पर लिखा होता है 'बादशाह अमर है और उस को अनंत जीवन मिले'। वो चीनी परंपरा के मुताबिक़ उस के सामने झुकते हैं, हालाँकि अपनी अंतरात्मा को संतुष्ट करने और मूर्ति पूजा के इल्ज़ाम से बचने के लिए बहुत से बहाने बनाते हैं।

चीनी मंगोल हुकूमत जिसे चीनी तारतारी Chinese Tartary भी कहा जाता है, हालाँकि उस में मुसलमानों को विशेष अधिकार और रियायतें हासिल थीं, लेकिन उस में भी वो मुसलमान जो उच्च पदों पर तैनात थे आम फौजियों की तरह फ़ौजी यूनिफार्म पहनते थे, लंबी मूँछें और चोटियां रखते थे और छुट्टी के दिनों में जब वो बादशाह से मिलने उस के दरबार में जाते तो आम रिवाज के

मुताबिक़ झुक कर तीन दफ़ा सजदा करते। और त्योहारों के दौरान वो आम चीनियों की तरह मंदिरों में कन्फ्यूशियस के रीति रिवाज अदा करते थे। यानी हर वो एहतियात बरतते थे, जिससे वो दूसरे चीनियों से अलग ना लगें और किसी तरह का धार्मिक टकराओ न हो। जिससे उनको ये फ़ायदा मिलता था कि वो चीनियों के उत्पीड़न से बचे रहते थे जिस उत्पीड़न का निशाना आम तौर से ईसाइयों और यहूदियों को बनना पड़ता था। वो ये ज़ाहिर करते थे कि इस्लाम, कन्फ्यूशियस शिक्षाओं से बहुत समानता रखता है सिर्फ शादियों और अंतिम संस्कार में और ख़िंज़ीर का गोश्त, शराब, तंबाकू, जुआ की मनाही में और खाने से पहले हाथ धोना, इन चीज़ों में इस्लाम अलग है।

चीनी मुसलमान कन्फ्यूशियस को भी बहुत ऊंचा मुक़ाम देते हैं और जहां इस्लाम से उस की विचारधारा की समानता पाई जाती है उसे भी बताते हैं।

एक तुर्क मूल निवासी जिसने 1895 में पीकिंग का दौरा किया उसने बताया कि वहां 30 से ज़्यादा मस्जिदें थीं जिनमें से एक, पहले एक चीनी का ख़ानदानी मंदिर था लेकिन बॉक्सर बग़ावत के दौरान एक मुफ़्ती वा अहोंद (अबदुर्रहमान) (Mufti Abd al-Rahman/Mufti Wa-Ahonad) ने उस की जान बचाई थी जिससे प्रभावित हो कर उसने इस्लाम क़बूल कर लिया और अपने ख़ानदानी मंदिर को मस्जिद में बदल दिया।[252]

ख़ोजा बुरहानुद्दीन

1755 CE में चिंग हुकूमत ने जब ज़ुंगर ख़ानियत का ख़ातमा कर दिया तो ख़ोजा बुरहानुद्दीन और उसका भाई ख़ान ख़ोजा ज़ुंगर ख़ानियत की क़ैद से आज़ाद हो गए और उन्होंने अपने लिए फ़ौज भर्ती करनी शुरू कर दी। इसी बीच में आख़िरी ज़ुंगर शासक अमुरसना Amursana ने दोबारा से चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया इस लिए चिंग हुकूमत अमुरसना से निमटने में मशग़ूल हो गई तो दोनों भाइयों ने 1757 CE में अलती शहर के यरकंत शहर पर हमला कर दिया और चिंग फ़ौजी जनरल अमिनडाओ Amindao को क़त्ल कर दिया और उसके हथियार लूट लिए। इसके बाद और शहरों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया जैसे कूका Kuqa, होतान Hotan वग़ैरह। उनके मुक़ाबले के लिए चिंग ने फ़ौज भेजी जिसने ख़ोजा बिरादरान को शिकस्त दी और वहां से निकलने पर मजबूर कर दिया तो यह लोग बदख़्शान, अफगानिस्तान चले गए लेकिन बदख़्शान के शासक सुलतान शाह ने दोनों को क़त्ल कर दिया। इस विद्रोह को अलती शहर के ख़ोजों की बग़ावत Revolt of the Altishahr Khojas कहा जाता है।[253]

उश विद्रोह Ush rebellion in 1765

चियानलोंग बादशाह Qianlong Emperor (L.18 October 1735–9 February 1796) के ज़माने में 1765 में उचतुरफ़ान Uqturfan शहर, (इसको उश तुरपान Ush Turpan भी कहा जाता है) ने चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी। हुआ ये था कि जब चिंग हुकूमत ने पूर्वी तुर्किस्तान सरकार का ख़ातमा

कर दिया और शिंजियांग पर दुबारा क़बज़ा कर लिया तो उचतुरफ़ान शहर पर हामी के अबदुल्लाह बैग को शासक बना कर उसे अज़ीम बेग Ačim Beg का लक़ब दे दिया और एक हान, सूचेंग Sucheng को नायब 'चिंग ग्रैंड मंत्री अधीक्षक' Qing Grand Minister Superintendent बना दिया। लेकिन अबदुल्लाह एक ज़ालिम शख़्स था जिससे वहां की मुस्लिम जनता परेशान थी और उनकी शिकायत ये भी थी कि सूचेंग उस को ज़ुल्म से रोकने के लिए कुछ नहीं करता। एक रिवायत ये भी है कि ये बग़ावत इस लिए हुई क्योंकि सूचेंग के बेटे और कुछ नौकरों ने मिलकर एक उइग़ूर ख़ातून की इजतिमाई अस्मतदरी की थी।[254] ये उस ज़माने में आम शिकायत थी कि चिंग अहलकार आए दिन मुस्लिम ख़वातीन की अस्मतदरी करते हैं। चुनांचे उचतुरफ़ान के लोगों ने रहमतुल्लाह नाम के शख़्स के नेतृत्व में चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया और वहां के चिंग हेडक्वार्टर 'यामेन' Yamen में घुस कर चिंग अहलकारों पर हमला कर दिया और अबदुल्लाह को क़त्ल कर दिया, और सूचेंग ने ख़ुदकुशी कर ली। इस के बाद चिंग हुकूमत ने अक्सू के भव्य मंत्री अधीक्षक Grand Minister Superintendent of Aksu) बियानताहा Biyantaha को 500 की फ़ौज के साथ बग़ावत को कुचलने भेजा। उचतुरफ़ान के लोगों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और शहर के दरवाज़े खोल दिए लेकिन जब उन लोगों के देखा कि बियानताहा उन पर हमला करने की तैयारी कर रहा है तो उन्होंने दरवाज़े बंद कर दिए। इस के बाद 2000 बाग़ियों ने उन पर हमला कर दिया जिसकी वजह से बियानताहा को पीछे हटना पड़ा। इस के बाद चिंग

बादशाह ने अपने सबसे काबिल जनरल मिंगसुई Mingšui को बड़ी फ़ौज देकर भेजा। रात में बाग़ियों ने उन पर हमला किया लेकिन इस को नाकाम बना दिया गया। इस लड़ाई के दौरान रहमतुल्लाह मारा गया तो लोगों ने उस के पिता अस्मतुल्लाह को अपना लीडर बना लिया। इस बार चिंग फ़ौज ने सीढ़ियों की मदद से रात को हमला किया लेकिन वो भी नाकाम रहा। इस लिए मिंगसुई ने शहर के घेराबंदी को लंबा करने का फ़ैसला किया। चुनांचे 6 महीने बाद शहर में लोग भूके मरने लगे, और आपस में लड़ाईयां शुरू हो गईं जिसकी वजह से अस्मतुल्लाह के कुछ अहलकारों ने ही उसे चिंग फ़ौज के हवाले कर दिया। इस के अलावा 42 लोग और पकड़े गए। बहुत से चिंग फ़ौज से लड़ाई और नाकाबंदी की वजह से मारे गए।[255] बाक़ी तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया गया और औरतों और बच्चों को ग़ुलाम बना लिया गया।[256] इस तरह इस बग़ावत का ख़ातमा हुआ।

जियाचिंग सम्राट के शासनकाल में

जियाचिंग Jiaqing Emperor (r. 9 February 1796–2 September 1820) के दौर में कोई ख़ास वाक़िया मुसलमानों से मुताल्लिक़ पेश नहीं आया ताहम इतना हुआ कि जिया चिंग बादशाह ने एक हुक्मनामा जारी किया जिसमें उसने उन यूरोपीय लोगों के लिए सज़ा-ए-मौत का ऐलान किया जो चीन में ईसाई धर्म फैला रहे थे, और जो चीनी ईसाई बन चुके थे उनके लिए ये ऐलान किया गया कि अगर वो ईसाई धर्म छोड़ को दुबारा अपना पुराना धर्म इख़्तियार नहीं करते

हैं तो उनको शिंजियांग के मुस्लिम हुक्मरानों को बतौर ग़ुलाम बेच दिया जाएगा।[257]

डाओगुआंग बादशाह के दौर में

डाओगुआंग बादशाह Daoguang Emperor (r. 3 October 1820 – 26 February 1850) के दौर में ख़ोजा जहांगीर ने बग़ावत की जिसका तफ़सीली ज़िक्र नीचे दिया जा रहा है

ख़ोजा जहांगीर

ख़ोजा जहांगीर (1788–1828 CE) ने 1820 CE की दहाई में काशग़र, चिंग हुकूमत से छीन लिया और वहां अपनी हुकूमत क़ायम करली लेकिन चिंग हुकूमत ने कुछ साल बाद ही जवाबी कार्रवाई कर के उसको शिकस्त दी और 1828 CE में जहांगीर ख़ोजा पकड़ा गया और क़त्ल कर दिया गया।

तफ़सीली हालात

ऊपर ज़िक्र आ चुका है कि आफ़ाक़ ख़ोजा ने 1680 CE के क़रीब यरकंत ख़ानियत को ख़त्म कर के वहां अपनी हुकूमत स्थापित की लेकिन यह हुकूमत 1713 CE में ख़त्म हो गई और उस इलाक़े पर ज़ुंगर ख़ानियत ने क़ब्ज़ा कर लिया और आफ़ाक़ ख़ोजा की औलाद वहां से फ़र्ग़ाना घाटी, ख़ोक़न्द ख़ानियत वापस हो गए। चिंग हुकूमत ने ख़ोक़न्द ख़ानियत से मुआहिदा किया कि आफ़ाक़ ख़ोजा की औलाद को क़िले में नज़रबंद रखा जाए इस वजह से कई

साल तक वो लोग नज़रबंद रहे लेकिन 1825 CE में फ़र्ग़ाना घाटी में भूकंप आ गया और क़िले की दीवार गिर गई तो जहांगीर ख़ोजा, ख़ोक़न्द ख़ानियत से फ़रार हो कर काशग़र आ गया। यहां पर उसने अपने ख़ोक़न्द साथियों और किर्गीज़ और ताजिक इत्तिहादियों को मिलाकर एक फ़ौज बनाई जो कुछ ही दिनों में 200,000 तक पहुंच गई। जहांगीर ने काशग़र, खोतान और यंगीसार Yengisar पर क़ब्ज़ा कर लिया और चिंग हुकूमत को उखाड़ फेंका। ये भी कहा जाता है कि इस बग़ावत की वजह ये भी थी कि एक चिंग अहलकार बिनजिंग Binjing ने कोकन के अक्साकाल Kokan Aksakal की बेटी की 1818-1820 तक दो साल इस्मतदरी की।[258] लेकिन चिंग हुकूमत ने इस पर पर्दा डालने की कोशिश की।[259]

चुनांचे जहांगीर ने हज़ारों लोगों को जिनमें चीनी, हुई और मंगोल लोग शामिल थे क़ैद कर के ख़ोक़न्द और मध्य एशिया के बाज़ारों में बेच दिया। इस से चीन में ग़ुलामों की तादाद में इज़ाफ़ा हो गया। चिंग शहंशाह डाओगुआंग Daoguang Emperor ने जहांगीर से मुक़ाबले के लिए फ़ौज इकट्ठी करनी शुरू कर दी और 80,000 फ़ौज को इली के गवर्नर चांग लिंग General of Ili Chang Ling के नेतृत्व में जहांगीर से मुक़ाबले के लिए भेजा। जहांगीर को जब चिंग फ़ौज की आमद की ख़बर हुई तो उसने भी अपनी फ़ौज इकट्ठी की जो लगभग दो लाख थी लेकिन चिंग फ़ौज ने काशग़र के उत्तरी तूमान दरिया के किनारे जहांगीर को शिकस्त दी हालाँकि जहांगीर की फ़ौज बहुत ज़्यादा थी। पहले बदख़्शान, ख़ोक़न्द और कुनदूज़ की फ़ौज ने साथ छोड़ा फिर काशग़र की फ़ौज

ने हथियार डाले, चिंग फ़ौज ने काशग़र में दाख़िल हो कर सारी आबादी को क़त्ल कर दिया, जिसकी तादाद लगभग 20,000 थी। जहांगीर ख़ोजा ने फ़रार हो कर अपने किर्गीज़ Kyrgyzs इत्तिहादियों की पनाह ली लेकिन उन्होंने चिंग फ़ौज के डर से उसको चिंग फ़ौज के हवाले कर दिया। यह भी कहा जाता है कि जहांगीर को काशग़र के शासक इसहाक़ ख़ोजा ने धोका देकर पकड़वाया उसने जहांगीर को ख़त लिखा कि चिंग फ़ौज काशग़र से जा चुकी है और तुम आकर फिर से काशग़र पर क़ब्ज़ा कर लो, इस लिए जहांगीर फ़ौरन काशग़र वापस आ गया लेकिन अचानक चिंग फ़ौज ने उस पर हमला कर के उसको क़ैद कर लिया और चिंग शहंशाह डाओगुआंग के पास बीजिंग भेज दिया जहां पर उसे कई दिनों तक एक लोहे के पिंजरे में बंद कर के रोज़ बीजिंग की सड़कों पर घुमाया जाता और लोगों को दिखाया जाता और तरह तरह की यातनाएँ दी जातीं यहां तक कि वो पागल हो गया। आख़िर में उसे शहंशाह के सामने पेश किया गया और उस से तफ़तीश की गई लेकिन वो तो पागल हो चुका था इस लिए कोई जवाब न दे सका। इस लिए उस को क़त्ल कर दिया गया और उस के जिस्म के बहुत से टुकड़े कर दिए गए और उस की हड्डियों को कुत्तों के सामने डाल दिया गया। मौत के वक़्त उसकी उम्र 40 साल थी। चीन ने इस घटना के बाद ख़ोक़न्द से तिजारती संबंध ख़त्म कर दिए और चीन ने हान लोगों को तरीम बेसिन Tarim Basin में बसाना शुरू कर दिया। इस से पहले तरीम बेसिन में हान लोगों को मुस्तक़िल तौर पर आबाद होना मना था वो सिर्फ़ मुसलमानों के लिए आरक्षित था।

यूसुफ़ ख़ोजा

जहांगीर ख़ोजा के भाई यूसुफ़ ख़ोजा ने 1830 CE में काशग़र पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और चिंग हुकूमत को वहां से बेदख़ल कर दिया। चिंग ने ख़ोक़न्द ख़ानियत से बात चीत करके टकराओ को ख़त्म करने की बात की और ख़ोक़न्द से एक मुआहिदा किया जिसमें अक्साकाल Aksakal ने दोनों में सुलह कराई। याद रहे कि अक्साकाल मध्य एशिया जैसे किर्गिस्तान, उज़्बेकिस्तान में उन बुज़ुर्गों को कहते हैं जो गांवों और मोहल्लों में पंचायत कराते हैं और छोटे किस्म के फ़ैसले करते हैं या दो पक्षों में समझौता कराते हैं।[260]

सात खोजों का विद्रोह

1842 CE में ख़ोक़न्द के शासक मुहम्मद अली के इंतिक़ाल के बाद मुहम्मद ख़ुदायार ख़ां शासक बना, उसके ज़माने में ख़ोक़न्द के शुरफ़ा ने जहांगीर ख़ोजा के सात बेटों को उकसाया कि अपने बाप का बदला लो और एक-बार फिर चीनियों पर हमला कर दो। चुनांचे 1845 CE में सातों भाइयों ने अपने इत्तिहादियों के साथ मिलकर काशग़र पर हमला कर दिया और शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसको सात खोजों का विद्रोह Revolt of the Seven Khojas कहा जाता है। चीनी फ़ौज ने 3000 मुजरिमों की फ़ौज की मदद से 1846 CE में इस विद्रोह को कुचल दिया, उन लोगों की मदद करने से चीन के मुसलमानों ने भी इनकार कर दिया था क्यों कि उनकी शिकायत थी कि यह ख़ोजा लोग उनकी औरतों को अपहरण कर के ले जाते हैं।[261] इस विद्रोह में निज़ारी इस्माइली

शिया ख़ानियत हुनज़ा Hunza ने भी चीनी फ़ौज का साथ देते हुए सात खोजों की फ़ौज के ख़िलाफ़ जंग की।[262]

वली ख़ान की हुकूमत

1855 CE में वली ख़ान ने काशग़र पर हमला कर दिया और सारे चीनी जो वहां मौजूद थे उनको क़त्ल कर दिया और उनकी औरतों को क़ैदी बना लिया। एक जर्मन पर्यटक एडॉल्फ श्लागिन्टविट Adolf Schlagintweit को पकड़ कर उसका सर क़लम कर दिया। वली ख़ान अपनी क्रूरता के लिए मशहूर था। अगर किसी दरबारी ने आँख उठा कर उसे देख लिया तो उसको क़त्ल करवा देता था। इसी तरह अगर मोज़्ज़िन ने ज़ोर से अज़ान देदी तो उसको मरवा देता था। चीनी हुकूमत ने 12,000 फ़ौज उसके मुक़ाबले के लिए भेजी जिसने 77 दिन की जंग के बाद वली ख़ान की 20,000 फ़ौज को शिकस्त दी। उसके सहयोगियों ने भी उसका साथ छोड़ दिया। चीन ने उस की फ़ौज को कड़ी सज़ाएं दीं और उसके बेटे और ससुर को क़त्ल कर दिया।[263]

अध्याय 8
डाली सल्तनत
第八章
东干起义
Chapter Eight
Dali Sultanate

तोंगज़ी बादशाह (r. 11 November 1861 – 12 January 1875) के दौर में चिंग हुकूमत ने मुसलमानों के साथ बहुत भेदभावपूर्ण व्यवहार किया और क्रूर रवैय्या जारी रखा, आए दिन मुसलमानों के ख़िलाफ़ दंगे और हुकूमती कार्यवाहियां होती थीं जिनसे तंग आकर मुसलमानों ने युन्नान के इलाक़े में पंथे नाम की बग़ावत की और डाली सल्तनत नाम की हुकूमत की स्थापना की जिसका तफ़सीली ज़िक्र नीचे दिया जा है।

पन्थे विद्रोह Panthay Rebellion

पन्थे विद्रोह चीन के सूबा युन्नान Yunnan में 1856 से 1873 के दौरान बरपा हुआ। चीनी ज़बान में उसे डू वैनशियू ची यी 杜文秀起义 भी कहा जाता है जिसका मतलब होता है डू वैनशियू Du wenxiu की बग़ावत और युन्नान हुई बयान 云南回变 भी कहा जाता है जिसका मतलब होता है युन्नान का हुई विद्रोह। यह विद्रोह हुई मुसलमानों का चिंग मान्चू हुकूमत के ख़िलाफ़ था और वो यह मानते थे कि मान्चू चिंग हुकूमत एक विदेशी हुकूमत है इस लिए उसको उखाड़ फेंकना चाहिए और चीन पर सिर्फ चीनी लोगों की ही हुकूमत होनी चाहिए। इस की एक वजह यह भी थी कि चिंग हुकूमत मुसलमानों के साथ भेदभाव करती थी और कई मौक़ों पर उसने मुसलमानों का नरसंहार कराया था।

बदरुद्दीन चीनी अपनी किताब में लिखता है जिस सूबे में मुसलमानों की संख्या ग़ैरों से ज़्यादा थी वो सूबा युन्नान (Yunnan) है जो बर्मा के साथ मिला हुआ

है। इस सूबे में 1865 CE में डू वैनशियू Du wenxiu का ज़हूर हुआ (उस का अरबी नाम मोहम्मद सुलेमान और चीनी नाम डू वैनशियू है)। उसने मांचू हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी। शाही फ़ौजों को शिकस्त देकर उसने युन्नान में 16 साल हुकूमत की। डालीफ़ू (Dalifu) या डाली शहर इस का केन्द्र या राजधानी थी, ये अपना शासन ज़्यादा देर तक नहीं जमा सका। इस लिए कि युन्नान के मुसलमानों ने मा यूलुन (Mayulun) (मा रूलोंग) की ज़ेर-ए-क़यादत उस के खिलाफ़ जंग की, आख़िर दोनों मैदान में उतरे, शाही फ़ौज ये मौक़ा ग़नीमत समझ कर दोनों पर टूट पड़ी और निहायत बुरे तरीक़े से दोनों को क़त्ल कर दिया, आपसी विवाद ने उनका ख़ातमा कर दिया। अगर ये नहीं होता तो आज तक मुसलमानों की पोज़ीशन बाक़ी रह जाती।[264] मुहम्मद सुलेमान के ज़माने में युन्नान के बहुत से मुसलमान सूबा सिचुआन (Sye Chuan) हिजरत कर के आए और उन्होंने वहां जा कर इस्लाम का पौदा लगाया, ये फूटकर एक शानदार दरख़्त बन गया और इस की बहुत सी शाख़ें निकल आईं। यहां तक कि एक तरफ़ कांसु तक इसलाम फैल गया और दूसरी तरफ़ कोई चाव (Kui Chow) (Guizhou) और कवांग टुंग (Kuang Tung) (Guangdong) तक।[265]

पन्थे विद्रोह की वजह

पन्थे विद्रोह से पहले हान और हुई में कई दफ़ा झड़पें हो चुकी थीं जिसकी वजह से बाद में विद्रोह हुआ। चुनांचे (1800,1821,1839, 1845) में इसी तरह के दंगे हुए थे। उनमें से कुछ का ज़िक्र हम नीचे कर रहे हैं।

• 1800 में हान डाकुओं के एक गिरोह ने मियानिंग काउंटी Mianning County की मुस्लिम आबादी पर हमला कर दिया जिसमें 170, मुस्लिम ख़ानदान मारे गए उस के कुछ महीनों बाद हुई लोगों ने जवाबी हमला किया।

• 1821 CE में चिंग हुकूमत का छटा राजा डाओगुआंग Daoguang Emperor तख़्तनशीन हुआ तो पूरे देश में उत्सव मनाया जा रहा था लेकिन दूसरी तरफ़ युन्नान के इलाक़े में बाई यांग चांदी की खान Baiyang Silver Mine के पास हान और हुई खदान मजदूरों Miners में एक झगड़ा हो गया। हुआ यह कि हुई और हान खदान मजदूरों के अलग अलग कैंप लगे हुए थे लेकिन उनमें आपस में तनाव रहता था। (15 April 1821) को एक हान मज़दूर जिसका नाम शू शीशयोंग Xu Shixiong था उसने मा लियांगकाई Ma Liangcai के हुई कैंप के सामने मल त्याग दिया।[266] हुई मज़दूरों ने शू को पकड़ कर सब के सामने डंडे से पीटा। इस घटना की वजह से हान कैंप में ग़म-ओ-ग़ुस्सा फैल गया। दो दिन बाद हान मज़दूर जिनकी तादाद लगभग 300 थी एक बुद्ध मंदिर में जमा होना शुरू हो गए जब कि 200 मुसलमान क़रीब की एक मस्जिद में जमा हो गए। इस के बाद 17 April 1821 को दोनों पक्षों के बीच ज़बरदस्त दंगा हुआ जिसमें 23 लोग मारे गए और कई सौ ज़ख़मी हुए।

• इसी तरह 1821 में एक दूसरे मौके पर हान और हुई के दरम्यान एक ज़बानी बहस फ़साद में तबदील हो गई जिसमें 400 मुस्लिम घराने क़त्ल कर दिए गए। 1821 के दंगे में, जब हुई कम्युनिटी के नेता ने मुक़ामी मजिस्ट्रेट से हिंसा बढ़ने की शिकायत की, तो मुक़ामी मजिस्ट्रेट ने उस की शिकायतों का कोई जवाब

नहीं दिया। लेकिन एक साल बाद जब, हान लोगों के ख़िलाफ़ हुई लोगों ने जवाबी हमला किया तो मजिस्ट्रेट ने उसे "ग़द्दारी" का नाम दिया। और उसने "हुई लोगों" के नाफ़रमान रवैये को दबाने के लिए कई हज़ार फौजियों को उन पर हमला करने का हुक्म दिया। इन वाक़ियात में चिंग शासकों के पक्षपात ने हान दंगाइयों को और ज़्यादा प्रोत्साहित किया और दोनों पक्षों के दरम्यान सांप्रदायिक दुश्मनी को और बढ़ावा मिला।[267]

- 1845 में हान मलेशिया की फ़ौज ने डाली शहर में मुसलमानों पर हमला कर दिया जिसमें 1400 का जानी नुक़सान casualties हुआ। इसी साल 1845 में चिंग फ़ौज ने युन्नान सूबे के शहर बाओशान Baoshan में मुसलमानों का नरसंहार किया जिसमें लगभग 8000 मुसलमान मारे गए। इस को तीन दिन का नरसंहार three days massacre कहा जाता है। इस की एक वजह बाओशान के राजमार्ग पर स्थित हुई मस्जिद थी। जिससे बहुत से हान लोगों को यह शिकायत थी कि, जब भी कोई (हान धार्मिक) यात्रा मस्जिद के दरवाज़े से गुज़रती है, तो मस्जिद में रहने वाले मुस्लिम छात्र अपमानजनक व्यवहार अपनाते हैं और ज़ोर ज़ोर से क़हक़हे लगाते हैं। समारोह के दौरान उनका ग़ैर संजीदा रवैया हान लोगों को भड़काता है।

पन्थे विद्रोह का आरंभ

पन्थे लफ़्ज़ बर्मीज़ ज़बान Burmese Language का एक लफ़्ज़ है जो चीनी लफ़्ज़ पानज़ी Panzei की बिगड़ी हुई शक्ल है। पानज़ी का मतलब होता है 'ग़द्दार'। पन्थे लफ़्ज़ सबसे पहले तब इस्तेमाल हुआ जब यह लोग जान बचा

कर बर्मा भागे और बर्मा के लोगों ने उनको पन्थे कहा। चुनांचे विद्रोह का आरंभ ऐसे हुआ कि चिंग हुकूमत के न्यायिक आयुक्त Judicial Commissioner के हुक्म से 19 May 1856 में युन्नान की राजधानी कुनमिंग Kunming शहर में 3000 मुसलमानों का नरसंहार किया गया और मस्जिदें तोड़ दी गईं। इस घटना के बाद मुसलमानों का यह ख़्याल और पक्का हो गया कि चिंग हुकूमत मुसलमानों की सामूहिक हत्या की तैयारी कर रही है। चुनांचे May 1857 में कुछ हुई मुस्लिम किसानों के एक ग्रुप ने अचानक विद्रोह कर दिया और युन्नान के डाली शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया जो पश्चिमी युन्नान का राजनीतिक केंद्र था। यहां पर उन्होंने मुक़ामी मजिस्ट्रेट को क़त्ल कर दिया और शहर की दीवार पर सफ़ैद झंडा लगा दिया। उन्होंने एक अलग हुकूमत स्थापित की जिसको पिंगनान गो सरकार Pingnan Guo State का नाम दिया गया, चूँकि उस का केंद्र डाली था और उस के शासक मुसलमान थे इस लिए पश्चिमी पत्रकारों ने उसे डाली सल्तनत Dali Sultanate या पिंगनान गो सल्तनत Pingnan Guo Sultanate का नाम दिया, हालाँकि पिंगनान सरकार के शासकों ने उस को कभी भी सल्तनत नहीं कहा। इस के बाद वो युन्नान की राजधानी कुनमिंग की तरफ़ बढ़े और उस पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। युन्नान के गवर्नर शूशिंगा Shuxinga ने डर से ख़ुदकुशी कर ली। हालाँकि इस लड़ाई में हुई लोग भी बड़ी तादाद में मारे गए लेकिन 1859 में वो कुनमिंग पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हो गए। ताहम यह ख़्याल ग़लत है कि पिंगनान गो सरकार एक इस्लामी रियासत थी क्यों कि न तो इस में इस्लामी क़ानून लागू किए गए, न ही केवल मुसलमानों को इस में

नौकरियां दी गईं बल्कि इस में सब जातियों हान, हुई और यी Han, Hui and Yi peoples लोगों को नौकरियां दी गईं। चुनांचे दूसरे नसली गिरोह (जातियां) यी, बाई और हमोंग Yi, Bai and Hmong जिनका नेतृत्व ली वैनशू Li Wenxue कर रहा था, वो भी हुई फ़ौज में शामिल हो गए। इस के बाद लगभग 20 साल तक हुई रियासत और चिंग हुकूमत के दरम्यान लड़ाइयां चलती रहीं यहां तक कि चिंग हुकूमत ने पिंगनान गो रियासत को ख़त्म कर दिया। इस विद्रोह की एक वजह यह भी ख़्याल की जाती है कि युन्नान में खनिज की कानें बहुत थीं जिनका पता 19 वीं सदी ई. के शुरू में लगा। इन प्राकृतिक संसाधनों से फ़ायदा उठाने के लिए बड़ी तादाद में हान लोग युन्नान में बसने लगे जब कि हुई लोग वहाँ पहले से आबाद थे। इस लिए हुई मज़दूर कानों में काम करने में पुराने और अनुभवी थे जबकि हान लोग नए और अनुभवहीन (नातजुर्बेकार inexperienced) थे। चुनांचे हुई लोगों को लगा कि हमारे हाथ से साधन छूट कर हान लोगों के पास जा रहे हैं इस लिए दोनों में नफ़रत बढ़ गई। और संसाधनों पर वर्चस्व को लेकर लड़ाइयां शुरू हो गईं। इस लिए यह कहा जा सकता है कि टकराव की वजह मज़हबी नहीं थी बल्कि आर्थिक थी। जबकि हुई लोगों का कहना था कि यह विद्रोह मज़हबी नहीं है बल्कि मान्चू विदेशियों के ख़िलाफ़ हुई और हान लोगों का एक मुश्तरका विद्रोह है जिसका नेतृत्व हुई लोग कर रहे हैं। दूसरी तरफ़ चिंग हुकूमत हान लोगों को अपने समर्थन में लेने के लिए हुई लोगों के ख़िलाफ़ प्रोपेगेंडा करती थी और उनको हान का दुश्मन बताती थी

और दोनों को लड़ाने की कोशिश करती थी। और कभी-कभी हुई लोगों के ख़िलाफ़ हिंसक कार्रवाइयां भी करती रहती थी।

इस्लाम के मुताल्लिक़ ग़लत-फ़हमियाँ

हान लोगों में हुई लोगों के मुताल्लिक़ (संबंध में) बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ भी पाई जाती थीं उनमें से एक यह है कि हान लोग यह समझते थे कि हुई लोग ख़िंज़ीर का गोश्त (pork) इस लिए नहीं खाते क्यों कि वो ख़िंज़ीर के वंशज हैं। यह धारणा इतनी मज़बूत थी कि हुई आबादियों को भी, कभी कभी ख़िंज़ीर की आबादी नाम दिया जाता था चुनांचे कुनमिंग में जो मुस्लिम आबादी थी उस का नाम था ज़ूजी जी Zhuji Jie जिसका मतलब होता है ख़िंज़ीरों की गली Pig Assembling Street. इस्लाम के बारे में कुछ ग़लत-फ़हमियों को हम एक चीनी विद्वान वांग डिंगान Wang Dingan के इस लेख से भी समझ सकते हैं। इस में उसने हुई मज़हब का परिचय इन अलफ़ाज़ में कराया है "जहां तक उनके मज़हब का संबंध है तो हुई लोग अपने देव ख़ुदा का सम्मान और पूजा करते हैं। उनको इस बात की शिक्षा दी जाती है कि वो अपने मज़हबी आक़ा (मुहम्मद ﷺ) की क़ब्र पर उमरा अदा करें, चाहे दूरी कितनी भी हो। उनका पवित्र स्थान, जिसे मक्का कहा जाता है, पश्चिम में आठ हज़ार ली के फ़ासले पर है। अगरचे हुई लंबे समय से चीन में बसे हुए हैं, लेकिन वो अब भी अपने विदेशी धर्म और संस्कृति का पालन करते हैं और तबदीली के लिए तैयार नहीं हैं।[268] एक और शख़्स लू गोहुआ Lu Guohua जो एक सूबाई सतह का अधिकारी था उसने चिंग राजा को हुई के बारे में यह मशवरा दिया, हुई इतने समय से चीन में रह रहे

हैं और कई पहलुओं से उनका चीनियों (हान) से मतभेद है। वो आसमानी सल्तनत के रस्म-ओ-रिवाज पर अमल करते हैं। ताहम, मैं ने महसूस किया कि हुई 360 दिनों को साल के तौर पर मानते हैं, और वो ख़ुफ़िया तौर पर एक दिन को अपने साल का पहला दिन मानते हैं। वो अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में भी सफ़ैद रंग को पसंद करते हैं और सारा दिन एक अजीब-ओ-ग़रीब सफ़ैद टोपी पहनते हैं। मुझे यह भी समझ नहीं आता कि वो उसे क्यों पहनते हैं और किस देवता की पूजा करते हैं। मैं जहांपनाह को मशवरा देता हूँ कि वो हुई को मान्यता प्राप्त वस्त्र (हान कपढ़े) पहनने का आदेश दें और तमाम मस्जिदों पर पाबंदी लगाएं। बराह-ए-करम सफ़ैद टोपी पहनने और निजी कैलेंडर के इस्तेमाल को जुर्म क़रार दें।[269] इस लिए चिंग हुकूमत ने कई मौक़ों पर हुई लोगों के ख़िलाफ़ भेदभाव वाले क़ानून लागू किए। जैसे 1763 में चिंग हुकूमत ने यह हुक्मनामा जारी किया कि अगर कोई हुई जुर्म करे तो उस को हान के मुक़ाबले में ज़्यादा सख़्त सज़ा दी जाए क्यों कि हुई लोग नाफ़रमान और हिंसक होते हैं (xinqi xinghan, kuangye chengxi).[270] 1821 में दूसरा हुक्मनामा जारी किया गया जिसमें हुई लोगों को हथियार लेकर ग्रुप की शक्ल में सफ़र करने को मना कर दिया गया और इस की वजह यह बताई गई कि हुई लोगों का आपस में हमदर्द व्यवहार और दूसरों से हिंसक स्वभाव ने उन्हें डाकुओं से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक बना दिया है। जो कि बहुत एहतियात का योग्य है।[271]

डाली सल्तनत की स्थापना 1856-1872 CE



IV. The name seal of Panthay Rebellion leader Du Wenxiu, on which both titles in Chinese and Arabic are presented. The Chinese title reads "Generalissimo of all Armies and Calvary", while the Arabic script means "leader of all Muslims"

डाली सल्तनत की मोहर

डाली सल्तनत, पन्थे विद्रोह के नतीजे में डाली शहर में क़ायम हुई। पन्थे विद्रोह में हुई मुसलमानों का नेतृत्व डू वैनशियू Du Wenxiu (1823–1872 CE) कर रहा था जो हान जाति का एक नौ मुस्लिम New Muslim था। कहा जाता है कि उस का असली हान नाम यांग शियू Yang Xiu था। लेकिन उस की परवरिश एक मुस्लिम ख़ानदान में हुई थी और उसका इस्लामी नाम सुलेमान बिन अबदुर्रहमान था बाद में उसे 'सुलतान सुलेमान' कहा जाने लगा। कहा जाता है कि डू वैनशियू, योंगचैंग Yongcheng के स्थान पर पैदा हुआ। उस के माता पिता हान थे। जब उस की माता गर्भवती हुई तो उस के थोड़े दिन बाद उस के पिता का इंतिक़ाल हो गया इस लिए उस की माता जी ने एक हुई सरदार से दूसरी

शादी कर ली। पैदाइश के बाद उस को एक मुक़ामी इमाम ने सुलेमान का नाम दिया और ख़ानदानी नाम यांग दिया जो एक हान लफ़्ज़ है। डू वैनशियू ने इस्लाम के साथ, एक कन्फ्यूशियस तालीमी इदारे से जिसको शियांगशू xiangxue कहा जाता है कन्फ्यूशियस सिद्धांतों की शिक्षा भी हासिल की। और उसने चीनी सिविल सर्विस इम्तिहान भी पास किया और शियूकाई xiucai की डिग्री हासिल की। वो अपने चीनी ख़ानदान और विरासत पर गर्व भी किया करता था। बाद में उसने अपना ख़ानदानी नाम डू Du रख लिया। चीनी रिवाज के मुताबिक़ वो अपने पुरखों के मक़बरों की पूजा भी करता था। ताहम उस के इस्लामी अक़ाइद (मान्यताएँ) भी कमज़ोर न थे, वो अपने आपको एक सच्चा मुसलमान ख़्याल करता था। चुनांचे डू वैनशियू ने डाली शहर में अपनी हुकूमत स्थापित की जिसको पिंगनान गो सल्तनत Pingnan Guo Sultanate का नाम दिया गया लेकिन उसे डाली सल्तनत Dali Sultanate भी कहा जाता है। 1856-1868 CE तक यह हुकूमत चरम सीमा पर थी। सुलतान ने हान लोगों को भी अपने साथ लेने की कोशिश की और अपनी हुकूमत में एक तिहाई ओहदे हान लोगों को दिए। लेकिन हान लोगों ने इस हुकूमत को कभी स्वीकार नहीं किया। इस की एक वजह यह भी थी कि चीनी लोग चीनी आबादी को दो हिस्सों में बाँटते हैं एक हान जो सभ्य लोग civilized हैं उनको हुआ Hua कहा जाता है जबकि ग़ैर हान लोगों को वो वहशी या असभ्य barbarians समझते हैं उनको यी Yi कहा जाता है। हान अक़ीदे के मुताबिक़ हान लोग ही तहज़ीब याफ़ता हैं इस लिए हुकूमत करना उनका अधिकार है और ग़ैर हान लोग ग़ैर तहज़ीब याफ़ता हैं इस

लिए उनको प्रजा बन कर रहना चाहिए। सुलतान ख़ुद चीनी लिबास पहना करता था और अरबी को अपनी दरबारी ज़बान बनाया, ख़िंज़ीर के गोश्त पर भी पाबंदी लगाई। कुछ शहरों में अपने गवर्नर भी नियुक्त किए जैसे मोमीन शहर Momein में।

चिंग की जवाबी कार्रवाई

जिस ज़माने में पन्थे विद्रोह हुआ उस ज़माने में चिंग हुकूमत एक दूसरी बग़ावत से निमटने में लगी हुई थी जिसे टाइपिंग विद्रोह Taiping Rebellion कहा जाता है इस लिए डाली सल्तनत की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दे पाई। लेकिन 1868 CE तक चिंग हुकूमत दूसरे मसाइल से निमट चुकी थी तो उसने डाली हुकूमत की तरफ़ ध्यान केंद्रित किया और अपनी फ़ौज डाली की तरफ़ रवाना की। एक मुस्लिम कमांडर मार रूलोंग Ma Rulong ने डू को छोड़कर चिंग से गठबंधन कर लिया और चिंग हुकूमत ने उसे अपनी फ़ौज का बड़ा कमांडर बना दिया। मुस्लिम विद्वान मा डेशिन Ma Dexin ने भी मा रूलोंग की हिमायत की और दूसरे लोगों को भी चिंग के आगे हथियार डालने का मशवरा दिया। मार रूलोंग ने डू को भी समझाया कि चिंग हुकूमत के आगे हथियार डाल दे और उसकी आज्ञाकारिता क़बूल कर ले लेकिन डू ने इनकार कर दिया। चुनांचे 1871 CE में चिंग फ़ौज ने डाली के ख़िलाफ़ फ़ौजी कार्रवाई शुरू कर दी, मार रूलोंग ने अपनी फ़ौज को लेकर डाली पर हमले शुरू कर दिए और चिंग ने अपनी फ़ौज भी उसकी मदद के लिए भेज दी। कुछ ही दिनों में चिंग फ़ौज ने डाली शहर की घेराबंदी कर ली, सुलतान ने ब्रिटेन से मदद मांगने के लिए एक वफ़द भी भेजा

जिसका नेतृत्व मेजर स्लादीन Maj. Sladen कर रहा था। इसके अलावा अपने मुंह बोले बेटे शहज़ादा हस्सान Prince Hassan को इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया के पास अपना ख़त लेकर भेजा लेकिन मलिका ने मदद देने से इनकार कर दिया, हस्सान अभी वापस भी नहीं लौट पाया था कि जनवरी 1873 CE में मार रूलोंग की फ़ौज ने डाली शहर को जीत लिया।

चिंग का आखरी हमला

चुनाने चेन यू यिंग Cen Yuying की क़यादत में चिंग फ़ौज आगे बढ़ी और उस ने 1871 में याओज़ू Yaozhou शहर पर क़बज़ा कर लिया जिसको डाली सल्तनत ने 1856 में फ़तह किया था। उसके बाद 1872 में ज़ाओज़ू Zhaozhou पर भी क़बज़ा कर लिया जो डाली से पहले आख़िरी रुकावट था। डू वैनशियू ने डाली जानेवाले दोनों रास्तों पर अपने मोर्चे बना लिए। यांग यूके Yang Yuke जो चेन का मातहत अफ़सर था और फ़ौज के आगे था उसे यह महसूस हुआ कि सामने से मुक़ाबला करना काफ़ी मुश्किल होगा इस लिए उसने नमक के ताजिरों के भेस में बहुत से फ़ौजियों को अंदर भेज दिया और वो लोग अपने हमनवा लोगों से मिले और उनसे मदद का वादा लिया। दूसरी फ़ौज को उसने चांगशान पहाड़ Changshan Mountain के पीछे से अंदर उतारा हालाँकि ये पहाड़ सीधा खड़ा था और इस पर चढ़ना काफ़ी मुश्किल था। चुनांचे 12 जून 1872 को यांग के हुक्म पर हान लोगों ने अंदर के क़िले पर लाल झंडा पहरा दिया और बग़ैर एक भी गोली चले क़िला फ़तह हो गया। लेकिन डू की फ़ौजों ने बग़ैर लड़े हथियार डालने से इनकार कर दिया इस लिए अगले 6 महीने तक

लड़ने के बाद शाही फ़ौज अंदर पहुंचने में कामयाब हो पाई। दिसंबर के आख़िर तक चिंग फ़ौजें जो दूसरी लड़ाईयों में मसरूफ़ थीं वो भी आ गईं और चिंग फ़ौज और बड़ी हो गई। 25 दिसंबर 1872 को डू ने अपने वज़ीरों और अहलकारों से आख़िरी मीटिंग की जिसमें लंबे मुज़ाकरात के बाद यांग रोंग Yang Rong जो सबसे बड़ा जनरल था उसने हथियार डालने का मशवरा दिया जब कि दूसरों की राय थी कि आख़िरी दम तक लड़ाई जारी रखी जाये। लेकिन डू खड़ा हुआ और इस बेहस को डू ने ये कह कर ख़त्म कर दिया कि "तुमने जो कहा वो सही है लेकिन अगर जेनरेलिसिमो (डू) ये फ़ैसला करता है कि मरते दम तक लड़ाई जारी रखी जाये तो अवाम की मुसीबतें और बढ़ेंगी और बाद में एक मुर्ग़ी और कुत्ते तक को नहीं बख़्शा जाएगा। लेकिन अगर जेनरेलिसिमो (generalissimo) ये फ़ैसला करता है कि वो शहर छोड़ दे तो फिर बूढ़ों और बच्चों की जान बचाई जा सकती है"। जब सब लोग सहमत हो गए तो उसने कहा बहुत अच्छा, में कल शहर से निकल जाऊंगा।



डू वैनशियू Du Wenxiu चिगं कमांडर के सामने ज़मीन पर बैठे हुए

अगली सुबह डू ने अपना शाही लिबास ज़ेब-तन किया ताज पहना, अपने ख़ानदान और अहलकारों से रुख़सती मुलाक़ात की और अपने तख़्त-ए-रवां (डोली) पर सवार हुआ ताकि वो इस को चिंग खेमे में ले जाये। सड़क के दोनों तरफ़ लोगों ने खड़े हो कर भारी मन और भीगी आँखों से उस का आख़री दीदार और सलाम किया। जब उस की डोली दक्षिणी गेट पर पहुंची तो उसने रुक कर ग़म के इस भावुक समर्थन के लिए लोगों का शुक्रिया अदा किया। इस के बाद उसने अफ़ीम की एक बड़ी खुराक निगल ली और हुक्म दिया कि उस को चिंग फ़ौज के कैंप में पहुंचा दिया जाये। जब वो यांग यूके के कैंप में पहुंचा तो नीम

बेहोश हो चुका था और उस के ज़बान पर ये जारी था "शाओ शारेन" (Shao Sharen) जिसका मतलब होता है “लोगों को बख़्श दो” यानी वो चिंग फ़ौज से अनुरोध कर रहा था कि मैंने ख़ुद को तुम्हारे हवाले कर दिया है जो तुम्हारा मक़सूद था इस लिए तुम मेरे लोगों को कुछ मत कहना उनको बख़्श देना। यांग ने आगे बढ़कर उस का सर क़लम कर दिया लेकिन कहा जाता है कि वो पहले ही मर चुका था। इस के बाद उसने डू का ताज, कपड़े और शाही मुहर उतारी। इस के बाद डाली के दूसरे अहलकार जो डू को चिंग कैंप तक लाए थे उन्होंने चिंग फ़ौज के अगे हथियार डाले जिसको चिंग फ़ौज ने क़बूल कर लिया और फ़ौज में उनको ओहदे दे दिए। उसने दीवारों पर पोस्टर भी लगवाए जिसमें फ़ौज को तीन दिन तक किसी पर भी हमला करने से मना किया गया था और उसने डाली के लोगों को पेशकश की कि जो भी हथियार डालना चाहता है वो हथियार डाल दे और अपना सिर मुंडा दे। इन इक़दामात से डाली के लोगों ने सुकून के सांस ली और वो किसी भी संभवतः हमले से निशचिंत हो गए। ताहम सुलतान की क़ुर्बानी बेकार गई क्योंकि चिंग फ़ौज की दुश्मन को बेरहमी से क़त्ल करने की ख्वाहिश अभी तक पूरी नहीं हुई थी और सुलतान भी उनके हाथ से बच गया था। इस लिए डू के क़त्ल के तीन दिन बाद यांग ने डाली के हथियार डालने वाले आला अधिकारियों की दावत की और जब सब खाने के लिए बैठ गए तो यांग ने इशारा किया और छिपे बैठे फ़ौजियों ने उन पर हमला कर के 17 लोगों के सर क़लम कर दिए। इसके अगले दिन शहर के रहने वालों का बेरहमी से क़तल-ए आम शुरू कर दिया गया जो तीन दिन तक जारी रहा,

औरतों, बूढ़ों और बच्चों, किसी को नहीं बख़्शा गया। एक चिंग फ़ौजी के बयान के मुताबिक़ उनके पैर टख़नों तक ख़ून में डूबे हुए थे। बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ हर लाश का एक एक कान काट कर और सुलतान का कटा हुआ सर शहद में महफ़ूज़ कर के चिंग राजा तोंगज़ी Tongzhi Emperor के पास भेजा गया।[272] कहा जाता है कि कटे हुए कानों से चौबीस बड़े टोकरे भर गए थे।[273] कुछ लोग जान बचा कर पहाड़ों के पार चले गए, कुछ लोगों ने अरहाई झील Erhai Lake को पार करके फ़रार होने की कोशिश की लेकिन बहुत से डूब गए। इस फ़ौजी कार्रवाई में तक़रीबन 40,000 से 50,000 मुसलमान मारे गए। कुछ लोगों ने वादी के दोनों जानिब दर्रों से फ़रार होने की कोशिश की लेकिन चिंग फ़ौज के हाथों मौत के घाट उतार दिए गए। इस के बाद मार्च से जून 1873 तक डाली सल्तनत के बाक़ी शहरों पर भी क़बज़ा कर लिया गया जैसे शुनिंग Shunning, युनज़ू Yunzhou और टेंगयू Tengyue वग़ैरा। डाली की आख़िरी चौकी वूसू Wusuo जो टेंगयू के दक्षिण पश्चिम में थी वो भी 4 मई 1873 में फ़तह कर ली गई। डाली में शिकस्त खाने के बाद डू के बचे खुचे लोग मोमीन शहर भाग गए जो डाली का एक और शहर था और अपनी लड़ाई जारी रखी लेकिन मई 1873 CE में मा रूलोंग ने मोमीन को भी फ़तह कर लिया। एक शहर के लोगों ने पकड़े जाने पर ख़ुदकुशी को तरजीह दी। चुनांचे 1873 के अवाइल में मंगहुआ Menghua शहर जो डाली के दक्षिण में था, जब इस शहर के बाशिंदों ने देखा कि अब बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है तो सामूहिक आत्महत्या का फ़ैसला किया। एक ख़बर के मुताबिक़ उन लोगों ने जो उनके पास क़ीमती

सामान था उस को कुछ मकानों में जमा किया और उनको आग लगा दी। इस के बाद औरतों और बच्चों में ज़हर तक़सीम किया गया जिन्होंने ज़हर खा कर जान दे दी। इस के बाद जो मर्द बचे थे उन लोगों ने पूरे शहर को आग लगा दी और दुश्मन फ़ौज के लिए शहर के दरवाज़े खोल दिए।[274] कहा जाता है कि ये उन लोगों ने इस लिए किया क्योंकि उनको पता था कि चिंग फ़ौज झुटा वादा करती है कि अगर तुम हथियार डाल दोगे तो तुम्हें बख़्श दिया जाएगा लेकिन जब वो हथियार डाल देते थे तो सबको क़त्ल कर दिया जाता था।

सुलतान के मृत शरीर को डाली शहर से बाहर एक मक़बरे में दफ़ना दिया गया, आज भी डू वैनशियू को चीन में हीरो के तौर पर जाना जाता है जिन्होंने ग़ैर मुल्की मान्चू हुकूमत के ख़िलाफ़ मुज़ाहमत की। लेकिन डाली के वासियों की मुसीबतें अभी तक ख़त्म नहीं हुई थीं, बचे खुचे औरतों और बच्चों को शाही फ़ौजियों को बतौर-ए-ख़ादिम और बांदियां (दासी) बेच दिया गया।[275] और सब लोगों की संपत्तियां जब्त कर ली गईं। शहर के गेट के बाहर एक हुक्मनामा लटका दिया गया जिसमें हुई लोगों को शहर में दाख़िल होना वर्जित कर दिया गया, ये अगले तीन दशकों तक टंगा रहा।

इस तरह डाली मुज़ाहमत का पूरी तरह ख़ातमा हो गया। कुछ हुई लोग जान बचा कर बर्मा भाग गए और वा हुकूमत Wa State की पनाह ली। बर्मा में इन लोगों को पंथे Panthay के नाम से जाना गया, याद रहे कि चीन में इन लोगों को कभी भी पंथे नहीं कहा गया। इन लोगों ने बर्मा में एक शहर भी बसाया जिसको पांगलौंग Panglong कहा जाता था।[276] एक ज़माने में पांगलौंग बर्मा

का सबसे ख़ुशहाल तिजारती शहर बन गया था जहां की अकसरियत हुई मुसलमानों पर आधारित थी जो ज़्यादा-तर तिजारत पेशा थी। पांगलौंग शहर एक ख़ुशहाल शहर बना रहा यहां तक कि 1942 CE में शाही जापानी फ़ौज Imperial Japanese Army ने उसे तबाह कर दिया।[277]

अध्याय 9
डुंगन विद्रोह

第九章
东干起义

Chapter Nine
Dungan Revolt

परिचय

डुंगन लफ़्ज़ असल में रूस में चीनी मूल के मुसलमानों के लिए बोला जाता था और चीन में हुई मुसलमानों को डुंगन बोला जाता था। डुंगन विद्रोह चीन में 1862-1877 CE के दरम्यान हुआ। इस विद्रोह को चीन में मुसलमानों का सबसे बड़ा विद्रोह कहा जा सकता है। इस विद्रोह में लगभग 80 लाख से 1 करोड़ के दरम्यान मुसलमान मारे गए और चीन में मुस्लिम आबादी में ज़बरदस्त कमी आई। जानी और माली नुक़सान के एतबार से यह दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी लड़ाई मानी जाती है। यह विद्रोह कोई एक नहीं था बल्कि यह मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में होने वाली अलग अलग बग़ावतें हैं जो चीन के उत्तरी पश्चिमी रियासतों में पंद्रह साल तक चलीं, यह रियासतें थीं गान्सू, निंगशिया और चिंगहाई और इस के अलावा शिंजियांग में भी डुंगन विद्रोह हुआ। इस में कोई एक लक्ष्य

या एक लीडर नहीं था बल्कि मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में मुख़्तलिफ़ लीडरों ने मुसलमानों का नेतृत्व किया। यह सब लोग अपनी अपनी सत्ता हासिल करने के लिए लड़ रहे थे इस लिए बहुत सी दफ़ा वो आपस में भी लड़ने लगते थे और एक दूसरे का ख़ून बहाते थे। चिंग हुकूमत ने भी अपनी पुरानी पॉलिसी इस्तेमाल की यानी मुसलमानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाया। वो अपनी ज़बान में कहा करते थे कि 'वहशियों को वहशियों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करो'

Use barbarians against barbarians. चुनांचे मुसलमान तीन पक्षों में बटे हुए थे। एक तो ख़ुफ़िय्या सूफ़ी सिलसिला था, एक जहरिय्या सूफ़ी सिलसिला था और एक तबक़ा वो था जिसका किसी सूफ़ी सिलसिले से संबंध नहीं था यह लोग पुराने तर्ज़ के मुसलमान थे इस लिए उनको गदीमू Gdemu कहा जाता था, शायद 'गदीमू' अरबी शब्द 'क़दीम' की बिगड़ी हुई शक्ल है जिसका अर्थ है 'पुराना'। ख़ुफ़िय्या सूफ़ी सिलसिला भी पुराना सिलसिला था और उसको चिंग हुकूमत का समर्थन हासिल था, यह लोग नज़रियाती एतबार से भी कुछ नरम थे जब कि जहरिय्या सूफ़ी सिलसिला नया सूफ़ी सिलसिला था जिसके संस्थापक मा मिंगशिन Ma Mingxin थे जो क़रीब ही में अरब से शिक्षा हासिल कर के आए थे। उनका नज़रिया ज़्यादा सख़्त और कड़ा था और यह लोग इंतिहा-पसंद लोग माने जाते थे। विद्रोह में भी उनका अड़ियल रवैया था इस लिए चिंग हुकूमत ने ख़ुफ़िय्या और गदीमू का समर्थन किया और उनसे नरम रवैया अपनाया और उन लोगों को जहरिय्या के ख़िलाफ़ लड़ाने के लिए इस्तेमाल किया।

मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि यह विद्रोह दो इलाक़ों में हुआ। पहले यह विद्रोह पीली नदी Yellow River के तट पर गान्सू Gansu, निंगशिया Ningxia और शांक्सी Shaanxi इलाक़ों में हुआ फिर उस के बाद शिंजियांग Xinjiang में हुआ। यह विद्रोह असल में हुई लोगों का चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ था क्यों कि वो चिंग हुकूमत की तरफ़ से संतुष्ट नहीं थे और उनके ज़हनों में यह डर बैठ गया था कि चिंग हुकूमत मुसलमानों की नस्ल-कुशी Genocide की तैयारी कर

रही है और जल्द ही वो उस के लिए एक बड़ा अभियान शुरू करेगी जैसा कि कुछ साल पहले ज़ुंगर ख़ानियत को ख़त्म किया था, दूसरी वजह यह थी कि हुई लोगों के साथ चीन में भेदभाव वाला बर्ताव किया जाता था जिससे वो नाराज़ थे। चीन में इसी ज़माने में गुआंगशी Guangxi सूबे में एक और विद्रोह हुआ था जिसको टाइपिंग विद्रोह Taiping Rebellion कहा जाता है जो 1850-1864 CE के दरम्यान चला, हालाँकि यह विद्रोह मुसलमानों ने नहीं किया था लेकिन 1862 CE में चिंग हुकूमत ने एक फ़रमान जारी किया कि हान लोगों की एक मिलिशिया militia बनाई जाए और उसका नाम योंग यिंग Yong Ying रखा, ताकि किसी भी विद्रोह का समय रहते मुक़ाबला किया जा सके।[278] इस से डर कर मुसलमानों ने भी अपनी फ़ौज तैयार करनी शुरू कर दी, क्यों कि वो यह समझ रहे थे की चिंग हुकूमत ने यह फ़ौज भविष्य में मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए बनाई है। यह भी कहा जाता है कि कुछ चिंग अधिकारियों ने हुई लोगों पर टाइपिंग विद्रोहियों की सहायता करने का आरोप लगाया था। इस प्रकार, चिंग अधिकारी हुई मा सियाओ शिह Hui Ma Hsiao-shih ने दावा किया कि शियान Xian में मुस्लिम विद्रोह टाइपिंग विद्रोह से संबंधित था। यह भी कहा जाता है कि विद्रोह से पहले ही, हुई लोगों ने संभावित चिंग आक्रमण से लड़ने के लिए भाले बनाने के लिए बड़ी मात्रा में बांस खरीदना शुरू कर दिए थे।

गान्सू, निंगशिया और शांक्सी में डुंगन विद्रोह

सबसे पहले विद्रोह किस वाक़े से शुरू हुआ इस में काफ़ी मतभेद पाया जाता है लेकिन एक आम धारणा यह है की यह विद्रोह शियान Xi'an शहर में एक हुई और हान ताजिर के झगड़े से शुरू हुआ। एक हुई ने एक हान से बाँसों का सौदा किया लेकिन क़ीमत के ऊपर दोनों में मत भेद हो गया हान ज़्यादा क़ीमत मांग रहा था और हुई कम क़ीमत देना चाहता था। इसी पर बात बढ़ गई और हान लोगों ने कुछ हुई लोगों को क़त्ल कर दिया। इस घटना को शेंगशान बांस की घटना Shengshan bamboo incident कहा जाता है। इसके जवाब में हुई लोगों ने भी बड़ी तादाद में हान लोगों पर हमले शुरू कर दिए और फिर उसने एक धार्मिक लड़ाई का रंग ले लिया और बहुत जल्दी कई शहरों को उसने अपनी लपेट में ले लिया। हालाँकि इस लड़ाई में सारे मुसलमान शामिल नहीं थे, कुछ लोगों ने इस लड़ाई से दूरी बनाए रखी। यह बात चिंग हुक्मरानों को भी मालूम थी। कई शहरों में हुई लोगों ने चिंग अधिकारियों पर हमले करके उनको क़त्ल कर दिया और इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया जैसे शियान, गान्सू, निंगशिया, शांक्सी, लिंगज़ू, गूयुआन वग़ैरह Xian, Gansu, Ningxia, Shaanxi, Lingzhou and Guyuan.

चिंग की जवाबी कार्रवाई

यह लड़ाई इतनी बढ़ गई कि चिंग हुकूमत भी बर वक़्त उसका मुक़ाबला नहीं कर पाई यहां तक कि 1867 CE में उसने अपने सबसे क़ाबिल जनरल ज़ू

ज़ोंगटांग Zuo Zongtang को 55,000 फ़ौज लेकर भेजा। इसके अलावा दूसरे इलाक़ों से भी चिंग फ़ौज, जनरल ज़ू से मिल गई जैसे हुनान, सिचुआन, अनहुई, और हेनान वग़ैरह Hunan, Sichuan, Anhui and Henan. हुनान से हज़ारों माहिर घुड़सवार बुलाए गए जो जंग लढ़ने में महारत रखते थे उनका कमांडर जनरल लियू सोंगशान Gen. Liu Songshan था यह सब लोग शांक्सी में आकर मिले।[279] इसके अलावा ज़ू ने विदेशी सरमायेदारों से कर्ज़ Loan लेकर बड़े पैमाने पर हथियार भी ख़रीदे और रवानगी से पहले कई दिन तक फ़ौजी मश्क़ें भी कीं।

शांक्सी पर कबज़ा

उधर मुस्लिम कमांडर मा हुआलोंग Ma Hualong ने जिसका संबंध जहरिय्या सूफ़ी सिलसिले से था और उसका गढ़ शांक्सी था, उसने पूरे तिजारती रास्तों पर क़ब्ज़ा कर लिया था और तिजारत की आमदनी को अपने जंगी मक़ासिद के लिए इस्तेमाल कर रहा था। ज़ू ने शांक्सी का घिराओ कर लिया यह घिराओ 6 महीने तक जारी रहा क़िले में खाने पीने की कमी हो गई तो लोगों को लाशों को खाना पड़ा और घास खा कर गुज़ारा करना पड़ा आख़िरकार 6 महीने बाद जनवरी 1871 CE में मा हुआलोंग ने हथियार डाल दिए। जनरल ज़ू ने मा हुआलोंग और उसके 80 साथियों को क़ैंचियों से काट काट कर सज़ा-ए-मौत दी, बाक़ी मुस्लिम आबादी को दूसरे इलाक़ों की तरफ़ निष्कासित कर दिया।[280]

मुसलिम जनरलों का हथयार डालना

ज़ू का अगला लक्ष्य था हीज़ू Hezhou यहां पर मुसलमानों का नेतृत्व ख़ुफ़िय्या सिलसिले का सूफ़ी मा ज़ानाओ Ma Zhan'ao कर रहा था जिसने बहुत से हान लोगों की जान भी बचाई थी, 1872 CE में उसने बग़ैर लड़े शांतिपूर्वक तरीक़े से हथियार डाल दिए और जनरल ज़ू ने भी उस को कोई सज़ा नहीं दी न ही मुस्लिम आबादी को शहर-बदर किया, चुनांचे आज तक लिनशिया Linxia जिसको पहले हीज़ू कहा जाता था, में मुसलमानों की बढ़ी आबादी है बल्कि इनाम के तौर पर जनरल ज़ू ने हीज़ू से हान आबादी को दूसरे इलाक़ों में मुंतक़िल कर दिया और मा ज़ानाओ की फ़ौज को चिंग की सरकारी फ़ौज ग्रीन स्टैंडर्ड आर्मी में शामिल कर लिया। इसके बाद कुछ दूसरे मुस्लिम कमांडरों ने भी बग़ैर लड़े हथियार डाल दिए जैसे मा चियानलिंग Ma Qianling, मा हाईयान Ma Haiyan, मा अनलियांग Ma Anliang, डोंग फ़ूशियांग Dong Fuxiang वग़ैरह। इन सब की फ़ौजों को जनरल ज़ू ने अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया इसके बाद जनरल ज़ू ने शिनिगं Xining का घिराओ किया और तीन महीने के घिराओ के बाद शिनिगं पर भी ज़ू का क़ब्ज़ा हो गया, उनका कमांडर मा गुइयुआन Ma Guiyuan गिरफ़्तार हुआ और हज़ारों लड़ने वालों के साथ मारा गया लेकिन शहर की आबादी को बख़्श दिया गया। इसके बाद जनरल ज़ू ने सूज़ू Suzhou का रुख किया जिसमें मुसलमानों का नेतृत्व मा वैनलू Ma Wenlu कर रहा था। बावजूद बार-बार माफ़ी और बख़शिश की पेशकश के मा वैनलू ने हथियार नहीं डाले आख़िरकार 24 अक्तूबर 1873 CE को सूज़ू पर भी ज़ू का क़ब्ज़ा हो गया और 7000 हुई मौत के घाट उतार दिए गए बाक़ी आबादी को गान्सू की तरफ़ जिला-वतन कर दिया गया।

अध्याय 10
शिंजियांग में डुंगन विद्रोह

第十章
新疆东干起义

Chapter Ten
Dungan Revolt in Xinjiang

शिंजियांग की मुख़्तसर तारीख़

अब हम शिंजियांग में डुंगन विद्रोह से पहले शिंजियांग की मुख़्तसर तारीख़ (इतिहास) पेश कर रहे हैं। चौथे चिंग सम्राट चियानलौंग Qianlong Emperor ने ज़ुंगर ख़ानियत Dzungar Khanate को जो चीन के उत्तर पश्चिमी इलाक़े में एक बौद्ध ओइरात मंगोल Buddhist oirat mongol ख़ानियत थी, उसको 1755-1757 CE के दौरान फ़ौजी कार्रवाई के ज़रिये ख़त्म कर दिया और उस इलाक़े को अपनी हुकूमत में मिला लिया जिसमें 5 लाख से लेकर 8 लाख मंगोल मारे गए, इतिहासकारों का मानना है कि ज़ुंगर की 80 प्रतिशत (Percent) आबादी इस नस्लकुशी Genocide में ख़त्म कर दी गई और जो बाक़ी बचे वो चेचक small pox की वबा में मारे गए, बचे कुचे लोग रूस या कज़ाख़ ख़ानियत की तरफ़ फ़रार हो गए। राजा का हुक्म था कि सारे लोग क़त्ल कर दिए जाएं सिर्फ़ बूढ़ों, औरतों और बच्चों को छोड़ा जाए जिनको चिंग फौजियों में बांट दिया जाए। जो सैन्य अधिकारी अधिक क्रूरता दिखाते उनको बड़े बड़े इनामात से नवाज़ा जाता और जो अफ़सर नरमी बरतते या लोगों को फ़रार होने का मौक़ा देते उनको सज़ाएं दी जातीं। इस घटना को ज़ुंगर नस्लकुशी Dzungar genocide के नाम से जाना जाता है। उस ज़माने में यह इलाक़ा ज़ुंगरया Dzungaria कहलाता था, लेकिन ज़ुंगर ख़ानियत के ख़ातमे के बाद राजा चियानलौंग ने उसका नाम शिंजियांग Xinjiang कर दिया जिसका अर्थ है ‘नया इलाक़ा’ और उस में नए शहर बसाए गए जैसे उरुमची Urumqi और यिनिंग Yining वग़ैरह। ज़ुंगर ख़ानियत के ख़ातमे से पहले चीनी लोग इस इलाक़े को

चीन का हिस्सा नहीं मानते थे बल्कि यहां के रहने वालों को विदेशी कहते थे क्यों कि यह नज़रिया था कि चीन केवल वो इलाक़ा है जहां हान लोग बस्ते हैं, चूँकि इस इलाक़े में हान लोग नहीं बस्ते थे इस लिए इस को दूसरा देश माना जाता था लेकिन राजा चियानलौंग ने इस इलाक़े को फ़तह कर के उसको भी चीन में शामिल कर लिया और यह कहा कि चीन सिर्फ़ हान लोगों का नहीं है बल्कि चीन एक बहु जातीय Multi-ethnic देश है जहां मुख़्तलिफ़ कौमें और जातियाँ आबाद हैं। चूँकि यहां की आबादी पूरी तरह ख़त्म हो गई थी इस लिए चिंग हुकूमत ने यहां हान, हुई, उइग़ूर और कज़ाख़ लोगों को बसाया। चुनांचे जब 1820 में चीनी फ़ौज ने उइग़ूर लीडर जहांगीर ख़ोजा को हराया तो 12,000 तुर्क उइग़ूर को उन्होंने शिंजियांग भेज दिया। मौजूदा वक़्त में शिंजियांग में 45.84 प्रतिशत उइग़ूर, 40.48 प्रतिशत हान, 6.50 प्रतिशत कज़ाख़, 4.51 प्रतिशत हुई और 2.67 प्रतिशत दूसरी जातियों के लोग आबाद हैं। ज़ुंगर ख़ानियत के ख़ातमे से मुसलमानों का बहुत फ़ायदा हुआ क्यों कि चिंग हुकूमत ने इस इलाक़े में सबसे ज़्यादा मुसलमानों को बसाया। जर्मन इतिहासकार हेनरी श्वार्ज़ Henry Schwarz ने लिखा है कि 'ज़ुंगरया में चिंग की फ़तह एक तरह से इस्लाम की फ़तह थी'।

शिंजियांग को दो हिस्सों में बाटा जाता है एक तो उत्तरी हिस्सा है जिसे ज़ुंगरया कहा जाता है और एक दक्षिणी हिस्सा है जिसे तरीम बेसिन या घाटी कहा जाता है। तरीम बेसिन को मुसलमान अलती शहर (6 शहर) या काशग़रिया भी कहते थे। ज़ुंगर ख़ानियत के ख़ातमे के बाद तरीम बेसिन सिर्फ़ तुर्क और दूसरे

मुसलमानों के लिए आरक्षित कर दिया गया था जबकि ज़ुंगरया में हान और हुई लोगों को भी बसाया गया लेकिन आफ़ाक़ ख़ोजा के विद्रोह के बाद चिंग हुकूमत तुर्क मुसलमानों से नाराज़ हो गई इस लिए उसने अपनी पॉलिसी में बदलाव किया और तरीम बेसिन में भी हान और हुई लोगों को बसाना शुरू कर दिया।

शिंजियांग में डुंगन विद्रोह

शिंजियांग लगातार अंदरूनी और बाहरी शक्तियों के लिए युद्ध का मैदान बना रहता था और आए दिन वहां विद्रोह और जंगें होती रहती थीं। चुनांचे आफ़ाक़ ख़ोजा (d. 1694) की लड़ाई, उस के बाद जहांगीर ख़ोजा का विद्रोह जो 1820 CE में हुआ और वली ख़ान की जंग जो 1857 CE में हुई, इस के अलावा भी स्थिति लगातार तनावपूर्ण बनी रहती थी। इस लिए शिंजियांग में डुंगन विद्रोह से पहले भी हालात कुछ अच्छे नहीं थे। क्यों कि चिंग हुकूमत को शिंजियांग में सरकार चलाने के लिए बहुत ख़र्चा करना पड़ता था और बड़ी तादाद में फ़ौज रखनी पड़ती थी। चुनांचे चिंग हुकूमत ने वहां 50,000 से ज़्यादा फ़ौज तैनात कर रखी थी। चिंग फ़ौज का एक बड़ा हिस्सा इली इलाक़े के 9 क़िलों Nine Forts of the Ili Region में रहता था। इस के अलावा दूसरे स्थानों पर भी चिंग फ़ौज मौजूद थी। इस खर्चे को पूरा करने के लिए चिंग हुकूमत ने शिंजियांग की जनता पर बहुत से टैक्स बढ़ा दिए थे। और चूँकि शिंजियांग का बहुत सा इलाक़ा बंजर है इस लिए वहां की जनता की आमदनी बहुत अच्छी नहीं थी। इस वजह से उन लोगों को टैक्स देना बहुत भारी पड़ता था और वो हुकूमत से क्रोधित रहते

थे। वहां के लोगों की अकसरियत (बहुसंख्या) तुर्क मुसलमानों पर आधारित थी जो ज़्यादातर रूस से आकर आबाद हुए थे। चुनांचे उइग़ूर, ख़ोजा, तुर्क, कज़ाख़ यह लोग वहां आबाद थे। चिंग हुकूमत ने शिंजियांग से पैसा इकट्ठा करने का एक और तरीक़ा अपनाया और वो ये था कि उसने शिंजियांग में बड़े पदों के लिए पैसे तय कर दिए थे कि जो सबसे ज़्यादा पैसे देगा उसे बड़ा पद दिया जाएगा.। चुनांचे यरकंद के गवर्नर का ओहदा रुस्तम बेग Rustam Beg को 2000 यंबू yambus में दिया और कूचा Kucha के गवर्नर का ओहदा सईद बेग Sa'id Beg को 1500 यंबू में दिया। लेकिन इन गवर्नरों ने भी अपने खर्चे का बोझ जनता से वसूल किया। इसके अलावा यहां पर भी वही अफ़वाह (rumour) फैली हुई थी कि चिंग हुकूमत मुसलमानों की नस्लकुशी Genocide की तैयारी कर रही है और जल्द ही वो इस के लिए एक बड़ा अभियान शुरू करेगी जिस तरह कुछ साल पहले ज़ुंगर ख़ानियत को ख़त्म किया था। इस के अलावा 1862 CE में गान्सू और शांक्सी में भी मुसलमानों ने चिंग के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया था, उनका भी यही ख़्याल था कि चिंग हुकूमत जल्द ही मुसलमानों की नस्लकुशी (जातिवध) की तैयारी कर रही है।

विद्रोह का आरंभ

तारची पर हमला

चुनांचे इन्हीं अफ़वाहों से भड़क कर 17 मार्च 1863 CE को सनडाओहे Sandaohe गांव के 200 डुंगन लोगों ने तारची Tarchi के क़िले पर हमला कर दिया जिसमें चिंग फ़ौज रहा करती थी। यह क़िला इली इलाक़े के इन 9 क़िलों में से एक था जिनमें चिंग फ़ौज रहती थी। इन लोगों ने सारे चिंग फौजियों को क़त्ल कर दिया और हथियार लूट लिए हालाँकि दूसरे क़िलों के फौजियों ने जवाबी कार्रवाई कर के सबको मार दिया।

कूचा में विद्रोह

इसके कुछ ही दिनों बाद शिंजियांग के तीनों सर्किटों में विद्रोह फैल गया। चुनांचे June 3 या 4, 1864 को कूचा के डुंगन लोगों ने विद्रोह कर दिया। कूचा, तियानशान पहाड़ के दक्षिण में एक शहर है। चुनांचे यहां जो हान क़िला था उस पर उन लोगों ने हमला कर दिया। सरकारी इमारतों को जला दिया गया जिसमें 1000 हान और 150 के क़रीब मंगोल मारे गए। इन डुंगन लोगों को कोई लीडर नहीं मिला इस लिए उन्होंने अपना नेता एक दरवेश आदमी राशिदीन ख़ोजा Rashidin (Rashidin) Khoja को बना लिया जो अपने एक पुरखे अरशदुद्दीन Arshad-al-Din (? – 1364 or 65) की क़ब्र का निगरां था। लेकिन उसे जंग लड़ने और हुकूमत चलाने का कोई अनुभव नहीं था।

विद्रोह उरुमची में

कूचा विद्रोह के तीन दिन बाद पूर्वी सर्किट में भी विद्रोह फूट पड़ा। उरुमची के डुंगन सिपाहियों ने 26 June 1864 को विद्रोह शुरू कर दिया। इन लोगों का नेतृत्व दो लोग कर रहे थे। एक टू मिंग Tuo Ming नाम के इमाम जिनको अहोंग कहा जाता था। उनका संबंध गान्सू से था। और दूसरा सू हुआनज़ांग Suo Huanzhang नाम का सरकारी अफ़सर, जिसके हुई मज़हबी रहनुमाओं से क़रीबी संबंध थे। चुनांचे उरुमची का बड़ा हिस्सा बर्बाद कर दिया गया, चाय के गोदाम जला दिए गए। इस के बाद उरुमची के डुंगन फ़ौजी आगे बढ़े और आज के चांगजी हुई ऑटोनोमस प्रीफ़ेक्चर Changji Hui Autonomous Prefecture के मनास Manas शहर पर 17 July 1864 को क़ब्ज़ा कर लिया और वूसू Wusu शहर पर 29 September में। 3 October 1864 को कूचा और उरुमची के मुसलमानों की गठबंधन सेना ने उरुमची के मान्चू क़िले पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया, इस के बाद दूसरे मान्चू क़िलों को भी फ़तह कर लिया गया। पिंगज़ुई Pingžui के मान्चू कमांडर ने हथियार डालने के बजाए ख़ुद को और अपने ख़ानदान को बारूद से उड़ा कर सामूहिक आत्महत्या कर ली।

यरकंद और काशग़र में विद्रोह

जब उनको पता चला कि चिंग हुकूमत उनके ख़िलाफ़ बड़ी कार्रवाई की तैयारी कर रही है तो यरकंद Yarkand और काशग़रिया Kashgaria के लोगों ने भी 26

July 1864 को विद्रोह शुरू कर दिया। उन्होंने फ़सील बंद मुस्लिम शहर से बाहर बने मान्चू क़िले पर हमला कर दिया। बावजूद इस के कि उनका पहला हमला नाकाम हो गया, इस में 2000 चिंग फौजियों की जान गई। इस के बाद वो लोग शहर में दाख़िल हुए और 7000 हान लोगों को या तो मुसलमान बना लिया या क़त्ल कर दिया। डुंगन (हुई) लोगों की तादाद हालाँकि तुर्क लोगों से कम थी लेकिन उन्होंने दोनों को ख़ुश करने के लिए ग़ुलाम हुसैन Ghulam Husayn नाम के काबुल के एक शख़्स को अपना प्रमुख बना लिया और उसे बादशाह का लक़ब दे दिया। उरुमची में मुसलमानों की कामयाबी को देखकर 1864 में उत्तरी सर्किट के इली इलाक़े के लोगों ने भी विद्रोह का ऐलान कर दिया। इली का चिंग कमांडर चांगचिंग जिससे मुक़ामी लोग नफ़रत करते थे, चिंग हुकूमत ने उस को वूसू की हार के बाद हटा दिया और उस की जगह मिंगसियोइ Mingsioi नाम के शख़्स को तैनात कर दिया। मिंगसियोइ ने मुसलमानों को बात चीत के ज़रिये मनाने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा।

कुलजा में विद्रोह

10 November 1864 को निंगयुआन (ट्रांची कुलजा) Ningyuan (the "Taranchi Kuldja") और हुईयुआन (मान्चू कुलजा) (the "Manchu Kuldja") में भी डुंगन लोगों ने विद्रोह शुरू कर दिया। याद रहे निंगयुआन उस इलाक़े का तिजारती केंद्र था और हुईयुआन, फ़ौजी और सरकारी हेडक्वार्टर था। चुनांचे कुलजा के तुर्क बोलने वाले किसान भी उन लोगों के साथ शामिल हो गए, उनको ट्रांची Taranchis भी कहा जाता था। जब वहां के मुक़ामी कज़ाख़

और किर्गीज़ मुसलमानों ने देखा कि मुसलमान काफ़ी मज़बूत हो गए हैं तो वो भी उनके साथ हो गए। इस के बरख़िलाफ़ बौद्ध कालमिक Buddhist Kalmyks और शाइब Xibes लोग चिंग के वफ़ादार रहे। निंगयुआन पर तो फ़ौरन मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया, लेकिन हुईयुआन में एक मज़बूत चिंग फ़ौज ने मुसलमानों को शहर की गलियों में 12 दिन की भयंकर लड़ाई के बाद हरा दिया। मुक़ामी हान चीनी और मान्चू लोगों ने जब देखा कि चिंग फ़ौज जीत रही है तो वो भी चिंग फ़ौज के साथ शामिल हो गए। ताहम, चिंग फ़ौज की तरफ़ से जवाबी कार्रवाई नाकाम हो गई। चिंग फ़ौज ने अपना तोपख़ाना खो दिया जबकि मिंगसियोइ पकड़े जाने से बमुश्किल बच सका। वूसू और अक्सू के मुसलमानों के क़ब्ज़े में अजाने के बाद, मुसलमानों ने हुईयुआन के क़िले का घिराओ कर लिया और वह चिंग हुकूमत से पूरी तरह कट गया। इस लिए मिंगसियोइ ने अपने संदेश रूस के रास्ते बीजिंग को भेजे। हालाँकि चिंग फ़ौज ने हुईयुआन की रक्षा कामयाबी के साथ की थी लेकिन शिंजियांग के बाक़ी इलाक़ों में विद्रोह तेज़ी से फैल रहा था। ख़ासकर ज़ुंगरया Dzungaria के इलाक़े में कज़ाख़ लोगों ने इस लिए विद्रोह किया ताकि वो कालमिक बौद्ध Kalmyk लोगों से बदला ले सकें जो कुछ साल पहले तक वहां के शासक थे और कज़ाख़ लोगों पर अत्याचार करते थे।

ताचेंग में हिंसा

1865 में नए साल के जश्न के मौक़े पर ताचेंग Tacheng इलाक़े के हुई लीडरों ने चिंग अधिकारियों और कालमिक लोगों को जश्न के एक समारोह में आमंत्रित

किया जो एक मस्जिद में आयोजित किया गया था। यह तक़रीब इस लिए रखी गई थी ताकि सब लोग मिलकर आपस में शांति से रहने का संकल्प ले सकें। लेकिन जब यह सब लोग मस्जिद के अंदर जमा हुए तो हुई लोगों ने सब के हथियार ज़ब्त कर लिए और मान्चू लोगों का क़त्ल शुरू कर दिया। चुनांचे दो दिन की लड़ाई के बाद ताचेंग पर हुई लोगों का क़ब्ज़ा हो गया। मान्चू लोग एक क़िले में छिप गए। बाद में मान्चू लोगों ने कालमिक की मदद से 1865 में दोबारा ताचेंग पर क़ब्ज़ा कर लिया और इस बार हुई लोग एक मस्जिद में छिप गए जहां सबको क़त्ल कर दिया गया और बाक़ी हुई दूसरी जगहों की तरफ़ फ़रार हो गए।

रूस की शमूलियत

हालात की नज़ाकत को देखते हुए चिंग हुकूमत और कुलजा के परेशान अफ़सरान ने बीजिंग में रूसी राजदूत अलेक्जेंडर व्लांगाली Alexander Vlangali और सेमीरेची Semirechye में रूसी कमांडर गेरासिम कोल्पाकोवस्की Gerasim Kolpakovsky जैसे अहलकारों के ज़रिये रूस से मदद की विनती की। ताहम रूस, उस वक़्त तक निष्पक्ष था एक तरफ़ व्लांगाली ने सिफ़ारिश करते हुए सेंट पीटर्सबर्ग को लिखा कि 'बिलकुल इनकार बीजिंग के साथ रूस के संबंध पर बुरा असर डालेगा'। जब कि वसती एशिया में जो रूसी जनरल थे उनका मानना था कि अगर रूस चीन की मदद करता है डुंगन के ख़िलाफ़, तो रूस की अपने देश के मुसलमानों के साथ बेहतर संबंध की कोशिशों को नुक़सान पहुँचेगा। अगर विद्रोह कामयाब

हो गया और एक मुस्तक़िल (स्थायी) हुई देश बन गया, तो चिंग का साथ देने की वजह से रूस के अपने नए पड़ोसी से संबंध ख़राब हो जाएंगे। चुनांचे 1865 में रूसी हुकूमत ने यह फ़ैसला किया कि फ़िलहाल चिंग हुकूमत की कोई फ़ौजी मदद न की जाए सिवाय इस के, कि उस के कुछ फौजियों को साइबेरिया Siberia में ट्रेनिंग दे दी जाए और कुलजा में लड़ रहे चीनी फौजियों को कुछ अनाज उधार दे दिया जाए। रूस का असल लक्ष्य था अपनी सरहदों की रक्षा करना और इस बात की निगरानी करना कि कहीं यह विद्रोह उस के इलाक़े में भी न फैल जाए। लेकिन रूस का एक जनरल, गेरासिम कोल्पाकोवस्की Gerasim Kolpakovsky जो चिंग के लिए नरम मनोभाव रखता था उसने राय दी कि रूस को सिर्फ अपनी सरहदों की रक्षा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि आगे बढ़कर शिंजियांग के सरहदी इलाक़ों में अपनी फ़ौज उतारनी चाहिए। चुगुचक, कुलजा और काशग़र Chuguchak, Kuldja and Kashgar जैसे शहरों पर क़ब्ज़ा करना चाहिए क्यों कि भविष्य में यहां रूसी लोगों को बसाया जा सकता है। इस से रामानोव Romanov की सल्तनत (रूस) को बेहतर सुरक्षा मिलेगी। हालाँकि इस तरह की मुहिम जोई के लिए यह वक़्त मुनासिब नहीं था लेकिन रूसी विदेश मंत्री Foreign Minister ने यह महसूस किया कि अगर चीन अपना इलाक़ा वापस लेने में कामयाब हो जाता है तो रूस का यह ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) रवैया चीन से उस के संबंध ख़राब करा सकता है दूसरी तरफ़ चिंग फ़ौज भी लगातार हार रही थी और उसे मदद की सख़्त ज़रूरत थी।

हुईयुआन क़िले की फ़तह

चुनांचे April 1865 में हुईनिंग Huining के फ़ौजी क़िले पर डुंगन लोगों ने क़ब्ज़ा कर लिया और इस में मौजूद 8000 मान्चू लोगों को क़त्ल कर दिया सिर्फ दो लोगों को जिनके नाक और कान कटे हुए थे, हुईयुआन जाने दिया ताकि वो चिंग फ़ौज की शिकस्त की ख़बर दे सकें। याद रहे हुईयुआन का क़िला, चिंग फ़ौज की आख़िरी पनाह-गाह थी चुनांचे 8 January 1866 को डुंगन ने हुईयुआन पर भी हमला कर दिया जिसमें क़िले के ज़्यादातर लोग मारे गए और 700 डुंगन भी मारे गए। मिंगसियोइ जो अभी तक हुईयुआन के फ़ौजी क़िले में चिंग फ़ौज की कमान कर रहा था उसने डुंगन लोगों से सुलह के लिए अपना एक वफ़द भेजा जिसके साथ 40 चांदी के सीसी sycees और 4 डिब्बे हरी चाय की पत्ती के भेजे और हथियार डालने की मशरूत पेशकश की।[281] लेकिन हथियार डालने की शर्त यह थी कि उनकी जान बख़शी कर दी जाए और उनको चिंग हुकूमत से अपने संबंध बनाए रखने की अनुमति दी जाए। इस वफ़द के साथ 12, मान्चू घराने भी क़िले से बाहर चले गए। हुई और ट्रांची लोगों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उन घरानों को यिनिंग Yining के इलाक़े में बसने की अनुमति दे दी। लेकिन मिंगसियोइ की बाक़ी शर्तों को उन्होंने रद्द कर दिया और यह मुतालबा किया कि वो बिना शर्त के फ़ौरन हथियार डाल दें और डुंगन की आज्ञाकारिता क़बूल कर लें। लेकिन मिंगसियोइ ने डुंगन का यह मुतालबा नामंज़ूर कर दिया। इस लिए 3 march 1866 को डुंगन ने क़िले पर धावा बोल दिया। मिंगसियोइ ने अपने ख़ानदान वालों और अपने क़रीबी

कारिंदों को अपनी कोठी में जमा किया और कोठी को धमाके से उड़ा दिया, इस तरह सब इस में दब कर मर गए। और डुंगन लोग क़िले पर क़ाबिज़ हो गए। इस तरह शिंजियांग में चिंग का आख़िरी क़िला भी उस के हाथ से निकल गया और अस्थायी तौर पर शिंजियांग चिंग से आज़ाद हो गया।

याक़ूब बेग की मुख़्तसर जीवनी

अब शिंजियांग की सियासत में याक़ूब बेग दाख़िल हुआ, इस लिए मुनासिब लगता है कि हम पहले उस की मुख़्तसर जीवनी बयान कर दें ताकि समझने में आसानी हो। याक़ूब बेग ख़ोक़न्द ख़ानियत के एक क़स्बे पिसकंत Piskent में 1820 CE में पैदा हुआ। उस का पिता पूर मुहम्मद मिर्ज़ा Pur Muhammad Mirza, ख़ोक़न्द ख़ानियत में एक सरकारी अहलकार था। पूर मुहम्मद समरक़ंद के क़रीब दिहबिद Dihbid का रहने वाला था लेकिन बाद में वो ख़ोक़न्द ख़ानियत चला गया जिसका शासक उस वक़्त मुहम्मद अली ख़ान Muhammad Ali Khan था। उसने ख़ोजन्त Khojent के एक इदारे से शिक्षा हासिल की और कुरामा Kurama में क़ाज़ी हो गया, और वहीं उस की शादी हुई। इस शादी से उस के एक बेटा पैदा हुआ जिसका नाम मोहम्मद आरिफ़ Muhammad Arif था। मुहम्मद आरिफ़ बाद में याक़ूब बेग के साथ काशग़र आया था और यहां पर वो याक़ूब बेग की हुकूमत में सिरीकुल Sirikul का गवर्नर भी रहा। चुनांचे याक़ूब बेग का पिता पूर मुहम्मद या जिसको मुहम्मद लतीफ़ भी कहा जाता था बाद में कुछ कारणों से 1818 में कुरामा Kurama से पिसकंत Piskent मुंतक़िल हो गया और पिसकंत के क़ाज़ी शेख़ निज़ामुद्दीन

नाम के शख़्स की बेटी से दूसरी शादी की जिसके नतीजे में याक़ूब बेग 1820 में पैदा हुआ। ऐसा अंदाज़ा लगाया जाता है कि याक़ूब बेग का ख़ानदान असलन अफ़ग़ानिस्तान का करातेगिन Karategin इलाक़ा जो बदख़्शान Badakshan के क़रीब है, से संबंध रखता था। लेकिन उसबेग Usbeg ने जब अफ़ग़ानिस्तान पर हमला किया तो पूर मुहम्मद का बाप जो अभी बच्चा था, उसने ख़ोक़न्द ख़ानियत की पनाह ली और दिहबिद Dihbid में रहने लगा जहां पूर मुहम्मद पैदा हुआ। यह भी कहा जाता है कि वो ख़ुद को तैमूर लंग की औलाद में बताता था। कहा जाता है कि अपने बचपन का ज़माना याक़ूब ने पिसकंत में गुज़ारा जहां वो अपनी ला-उबाली तबीयत की वजह से इस्लामी शिक्षा हासिल नहीं कर पाया जैसा कि उस के माता-पिता उस को 'मुल्ला' बनाना चाहते थे। चुनांचे उस के चचा ने उस की सुस्त और ला उबाली तबीयत की वजह से उसे ताशकंद भेज दिया ताकि वहां वह कपड़ा बुन्ने का काम सीख ले। लेकिन वो बहुत जल्द ऊब गया और पिसकंत वापस आ गया जहां, उसने जनरल घदाई बाई Ghadai Bai की फ़ौज में एक मामूली नौकरी कर ली।[282] बाद में वो ख़ोजन्त के गवर्नर मुहम्मद करीम ख़सका Muhammad Karim Khaska के यहां नौकर हो गया। जब अज़ीज़ बाचा Aziz Bacha को ताशकंद का गवर्नर बनाया गया तो मुहम्मद करीम क़श्क़ा, ख़ोक़न्द ख़ानियत चला गया, उस के साथ याक़ूब बेग भी था। लेकिन कुछ ही दिन बाद मुसलमान क़ुली ने क़श्क़ा को क़त्ल कर दिया। इस लिए याक़ूब बेग अज़ीज़ बाचा Aziz Bacha की शहसवार फ़ौज cavalry में शामिल हो गया। यही वो वक़्त था जब याक़ूब

बेग की बहन की शादी किलोची के गवर्नर नार मुहम्मद Kilauchi's Governor Nar Muhammad से हुई। ख़ोक़न्द ख़ानियत में सबसे पहला उस का ज़िक्र तब मिलता है जब वो 1845 में एक ट्रेन में नए ख़ोक़न्द शासक ख़ुदायार ख़ां के साथ उस के हाजिब के तौर पर सवार था जिसको "महरम" mahram कहा जाता था। 1847 में नार मुहम्मद को क़श्क़ा की जगह ताशकंद का गवर्नर बना दिया गया। और उस की सिफ़ारिश पर याक़ूब बेग को चिनाज़ के इलाक़े का बेग Beg of Chinaz बना दिया गया। इस के बाद दोबारा उस के बहनोई की सिफ़ारिश पर याक़ूब को पंसद बाशी Pansad Bashi का पद भी मिला यानी 500 आदमियों की फ़ौज का कमांडर बना दिया। 1849 को याक़ूब बेग को तरक़्क़ी देकर ख़ुश बेग Koosh Beg का पद दे दिया गया। ख़ुश बेग का मतलब होता है 'ख़ानदान का सरदार'। शायद यह क़िले या शहर के शासक का पद होता था। यानी उसे 'अक मस्जिद' क़िले का कमांडर या शासक बना दिया गया। यह सैर-ए-दरिया Syr Darya के इलाक़े का एक क़िला था। "अक मस्जिद Ak Musjid" का मतलब होता है सफ़ैद मस्जिद। इस ओहदे पर वो 1853 तक रहा। इस दौरान याक़ूब बेग काफ़ी मालदार हो गया और ख़ोक़न्द ख़ानियत की सियासत का एक अहम सदस्य हो गया। 1852 में मिंगबाशी Mingbashi (शायद यह वज़ीर का ओहदा होता होगा, एक रिवायत के मुताबिक इस के मातहत 1000 घुड़सवार फौज होती थी) मुसलमान क़ुली Musalman Quli और नार मुहम्मद के बीच झगड़ा हो गया। चुनांचे मुसलमान क़ुली वहां से फ़रार हो गया और नार मुहम्मद ने अपने एक दोस्त उतमबाई Utambai को मिंग बाशी बना दिया और

याक़ूब बेग को ताशकंद वापस बुला कर उस को बतुरबाशी Baturbashi बना दिया जो फ़ौज के कमांडर का ओहदा होता था।[283] 1847 CE में उस की शादी ज़ुलेख़ा Zuelik नाम की एक किपचाक ख़ातून से हुई जो अक मस्जिद Ak Musjid फ़ौजी क़िले के एक गांव की रहने वाली थी। इस के तीन बेटे पैदा हुए कुदा कुल बेग, क़ुली बेग और हच क़ुली बेग Kooda Kul Beg, Kuli Beg and Hacc Kuli Beg.[284] इसी साल रूस ने उस क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। यह लड़ाई 26 दिन तक चली जिसमें रूस ने क़िले पर भारी बमबारी की और अख़ीर में ख़ोकंदियों ने हथियार डाल दिए जिनका नेतृत्व याक़ूब बेग कर रहा था। रूस की फ़ौज का नेतृत्व उस वक़्त जनरल परवोसकी General Perovsky कर रहा था उसी के नाम पर बाद में अक मस्जिद क़िले का नाम 'परवोसकी का क़िला' Fort Perovsky कर दिया गया। बाद में याक़ूब बेग ने साहिब ख़ान Sahib Khan के साथ मिलकर उस क़िले पर दोबारा क़ब्ज़ा करने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। गो याक़ूब बेग इस जंग में हार गया लेकिन जिस जवाँमर्दी के साथ उसने रूस का 26 दिन तक डट कर मुक़ाबला किया, इस से वो एक सख़्त-जान फ़ौजी कमांडर की हैसियत से मशहूर हो गया।

ख़ुदायार ख़ां

1842-1845 CE के दरम्यान ख़ोक़न्द ख़ानियत का ख़ान शेर अली Shir Ali Khan था। उस के दो बेटे थे मुहम्मद ख़ुदायार ख़ां Muhammad Khudayar Khan और मुहम्मद मल्लाह बेग Muhammad Malla Beg, और उस के चचाज़ाद भाई थे उमर ख़ान Umar Khan और आलिम ख़ान Alim Khan.

1845 CE में ओश Osh के इलाक़े में मिंगबाशी मुसलमान क़ुली Mingbashi Musulmonqul ने शेर अली के ख़िलाफ़ विद्रोह कर के उसे क़त्ल कर दिया। इस के बाद आलिम ख़ान का बेटा मुराद बेग Murad Beg ख़ोक़न्द का ख़ान बन गया। उस वक़्त शेर अली का बेटा ख़ुदायार ख़ां नामंगान में था इस लिए बच गया। इस के बाद मुराद बेग ने मुसलमान क़ुली को बुख़ारा के अमीर के पास भेजा ताकि वो उस से मदद की विनती कर सके। याद रहे मुराद बेग को लोग बुख़ारा की इमारत का कठपुतली समझते थे इस लिए उस से नफ़रत करते थे। लेकिन मुसलमान क़ुली नामंगान पहुंचा और शेर अली के बेटे ख़ुदायार ख़ां को अपनी बेटी तोहफ़े में देकर अपना दामाद बना लिया और उसे ला कर ख़ोक़न्द का ख़ान बना दिया और मुराद बेग को क़त्ल कर दिया। इस तरह मुराद बेग की हुकूमत सिर्फ 11 दिन रही।[285] लेकिन बाद में ख़ुदायार ख़ां और मुसलमान क़ुली में भी अनबन हो गई क्यों कि मुसलमान क़ुली एक किपचाक Kipchak सरदार था और ख़ुदायार ख़ां उज़बेक था। याद रहे उज़बेक और किपचाक सरदारों में सत्ता की कशमकश चलती रहती थी, इस मौक़े पर भी मतभेद हो गया। चुनांचे 1853 CE में ख़ुदायार ख़ाँ नें किपचाक सरदारों के ख़िलाफ़ एक विद्रोह करवा दिया जिसमें बहुत से किपचाक सरदार मारे गए जिन में मुसलमान क़ुली और नार मुहम्मद भी शामिल थे। इस तरह ख़ुदायार ख़ां के हाथ में पूरी तरह हुकूमत आ गई। उसने अपने उत्तरी सूबों का गवर्नर मिर्ज़ा अहमद Mirza Akhmad को बनाया। 1858 CE में उत्तरी सूबों ने ख़ुदायार ख़ां के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया जिसको को कुचलने के लिए ख़ुदायार ख़ां ने

अपने भाई मल्लाह बेग को भेजा लेकिन मल्लाह बेग ने विद्रोहियों से गठबंधन कर लिया और ख़ुद के ख़ान होने का ऐलान कर दिया। एक किपचाक सरदार आलिम क़ुली ने भी उस से गठबंधन कर लिया। जिसकी वजह से उन्होंने ख़ोक़न्द ख़ानियत पर क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ुदायार ख़ां वहां से फ़रार हो गया। मल्लाह बेग ख़ोक़न्द का ख़ान बन गया। याक़ूब बेग ने भी मल्लाह बेग की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। इस के बदले मल्लाह बेग ने याक़ूब बेग को शाहवाल Shahawal बना दिया, यह ओहदा चैमबलेन Chamberlain या दरबार के हाजिब जैसा होता था। इस के कुछ दिन बाद याक़ूब बेग को ख़ुश बेग का ओहदा दे दिया गया और कुरामा के इलाक़े का गवर्नर बना दिया गया, इसी कुरामा में कुछ साल पहले उस के पिता क़ाज़ी हुआ करते थे। इस के कुछ दिन बाद रूस ने ताशकंद के ख़िलाफ़ कार्रवाई की तैयारी शुरू कर दी तो ख़ोक़न्द के शासक कानात शाह Kanaat Shah ने याक़ूब बेग को ताशकंद बुला लिया ताकि रूस के ख़िलाफ़ लड़ाई में मदद कर सके। लेकिन 1862 CE में मल्लाह बेग का भी क़त्ल हो गया और उस के बाद मुराद बेग का बेटा शाह मुराद ख़ान ख़ोक़न्द का ख़ान बन बैठा। लेकिन ताशकंद का शासक कानात और याक़ूब बेग ख़ुदायार ख़ां से मिल गए और उस को ख़ोक़न्द का ख़ान बना दिया, और पिछली तल्ख़ यादों को भुलाकर, मिलकर काम करने का एक दूसरे से वादा किया इस लिए ख़ुदायार ख़ां ने याक़ूब बेग को कुरामा के गवर्नर के ओहदे पर बाक़ी रखा। इस से गुस्सा हो कर शाह मुराद ने ताशकंद का घिराओ कर लिया। इसी दौरान बुख़ारा का अमीर मुज़फ़्फ़र, ख़ोक़न्द पर हमला करने के लिए बढ़ा

तो ख़ोक़न्द की फ़ौज वहां से फ़रार हो गई, ताशकंद का घिराओ भी ख़त्म हो गया। यही वो वक़्त था जब ख़ोक़न्द की सियासत में किपचाक सरदार आलिम क़ुली का उदय हुआ। इस दौरान और भी कई दावेदार थे तख़्त के, आलिम क़ुली ने सबको ओश में बुलाया ताकि उनकी माँग पर ग़ौर कर सके, लेकिन सबको धोके से क़त्ल कर दिया। जुलाई July 1863 CE में आलिम क़ुली ने मल्लाह बेग के 13 साला बेटे मुहम्मद सुलतान ख़ां को ख़ोक़न्द का ख़ान बना दिया और ख़ुद उस का राज्य-संरक्षक Regent बन बैठा। याक़ूब बेग फिर से पाला बदल कर आलिम क़ुली के साथ हो गया। आलिम क़ुली ने याक़ूब बेग को ख़ुदजन्त Khodjent शहर का शासक बना दिया। इस के बाद आलिम क़ुली ने ख़ुदायार ख़ां की फ़ौज पर हमला कर दिया इधर बुख़ारा का शासक मुज़फ़्फ़र भी बुख़ारा वापस लौट गया क्यों कि वहां शहरसबज़ Shahrisabz के इलाक़े में विद्रोह हो गया था। इस लिए आलिम क़ुली ने ख़ोक़न्द और ताशकंद की हुकूमत पर कंट्रोल कर लिया। इस के बाद रूस ने 1865 CE में ख़ोक़न्द ख़ानियत पर हमला कर दिया, आलिम क़ुली रूस के ख़िलाफ़ लड़ता हुआ मारा गया। किपचाक लोगों ने हुदायकुल बे Hudaykul Bey को ख़ोक़न्द का ख़ान बना दिया लेकिन एक रूसी हमले के बाद वो भी काशग़र की तरफ़ फ़रार हो गया। इस के बाद ख़ुदायार ख़ां फिर से ख़ोक़न्द में दाख़िल हुआ और ख़ान बन बैठा। याक़ूब बेग ने बुख़ारा में पनाह ली। अमीर बुख़ारा ने उस का गर्मजोशी से स्वागत किया और उस को अपने दरबार में एक इज़्ज़त का मुक़ाम दिया। 1866 CE में रूस ने ख़ुदजन्त Khodjent शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया जिसकी वजह से बुख़ारा

और ख़ोक़न्द का राब्ता कट गया। 1868 CE में ख़ुदायार ख़ां ने रूस की आज्ञाकारिता क़बूल कर ली। 1870 में ख़ुदायार ख़ां के ख़िलाफ़ एक साज़िश हुई लेकिन उस का पर्दा फ़ाश हो गया। कुछ लोग ख़ुदायार ख़ां को बेदख़ल कर के उस की जगह सय्यिद ख़ां Seyid Khan को ख़ोक़न्द का ख़ान बनाना चाहते थे जो मल्लाह बेग का बेटा था और अमीर बुख़ारा के पास जिला वतनी की ज़िंदगी गुज़ार रहा था। अमीर बुख़ारा ने साज़िश में शामिल होने के इल्ज़ाम से बचने के लिए सय्यिद ख़ान को क़त्ल कर दिया और साज़िश करने वालों के नाम ख़ुदायार ख़ां को दे दिए। चुनांचे ख़ुदायार ख़ां ने सबको क़त्ल कर दिया।[286] 1875 CE में ख़ुदायार ख़ां के ख़िलाफ़ फिर से साज़िश हुई और इस बार ख़ुदायार ख़ां वादी फ़र्ग़ाना की तरफ़ फ़रार हो गया और उस का बेटा नूरुद्दीन ख़ां, ख़ोक़न्द का ख़ान बन गया[287] लेकिन 19 February 1876 CE को रूस ने ख़ोक़न्द ख़ानियत को ख़त्म कर दिया और उस को फ़र्ग़ाना ओबलास्ट Ferghana Oblast का हिस्सा बना दिया।[288]

याक़ूब बेग की में आमद काशग़र में

अब हम फिर पीछे लोटते हैं। जिस ज़माने में आलिम क़ुली ख़ोक़न्द की सियासत में सब से ताक़तवर अधिकारी था और सबसे ज़्यादा इख़्तियारात (अधिकारों) का मालिक था। इसी दौर में शिंजियांग में डुंगन विद्रोह हो गया। सादिक़ बेग जो एक किर्गीज़ शहज़ादा था और काशग़र के इलाक़े में डुंगन का नेतृत्व कर रहा था लेकिन काशग़र शहर से चीनी फ़ौज को नहीं निकाल पा रहा था। हालाँकि चिंग हुकूमत का बराह-ए-रास्त कंट्रोल शिंजियांग पर से ख़त्म हो

गया था लेकिन कुछ इलाक़ों में अब भी चिंग के तैनात किए हुए मुस्लिम शासक मौजूद थे जिनसे निमटना अभी बाक़ी था। जैसे काशग़र में क़ुतलुक़ बेग Qutluq Beg नाम का शासक अब भी मौजूद था जिसको चिंग ने तैनात किया था इसी तरह यंगीसार के बाहर भी एक मान्चू क़िला मौजूद था। यह दोनों क़िले अभी तक डुंगन लोगों के कंट्रोल से बाहर थे। डुंगन लोगों ने इतने बड़े इलाक़े को फ़तह तो कर लिया था लेकिन उनसे उस की हुकूमत नहीं संभाली जा रही थी। उन्हें किसी क़ाबिल और अनुभवी लीडर की ज़रूरत थी जो उनमें मौजूद नहीं था। चुनांचे जब हुकूमती मामलात को वो अच्छी तरह नहीं सँभाल पाए तो डुंगन लोगों ने ख़ोक़न्द Kokand शासक आलिम क़ुली Alim Quli के पास मदद की विनती की। याद रहे कि ख़ोक़न्द ख़ानियत एक मुस्लिम ख़ानियत (1709–1876 CE) थी रूस में। चुनांचे 1865 CE में ख़ोक़न्द शासक आलिम क़ुली ने डुंगन मुसलमानों के लिए दोनों तरह की मदद भेजी। रुहानी भी और फ़ौजी भी। रुहानी तो थी एक रुहानी शख़्सियत जिसका नाम बुज़ुर्ग ख़ोजा Buzurg Khoja था ताकि वो लोगों में जिहाद का जोश पैदा कर सके, उसका संबंध जहांगीर ख़ोजा के ख़ानदान से था। और फ़ौजी मदद के लिए उस ने अपने सब से क़ाबिल जनरल याक़ूब बेग Yaqub Beg को भेजा, याक़ूब बेग अपनी 68 लोगों की फ़ौज के साथ काशग़र शहर पहुंचा और शिंजियांग की तारीख़ में एक नया अध्याय शुरू हो गया। यह भी कहा जाता है कि आलिम क़ुली, याक़ूब बेग से डरता था इसलिए उस से अपना पीछा छुड़ाने के लिए उसे कमांडर बना कर शिंजियांग भेज दिया। ख़ोक़न्द के लोगों को चीन में अंदीजानी Andijanis

कहा जाता था। याक़ूब बेग का शुरू में बहुत स्वागत हुआ। जिस वक़्त याक़ूब बेग वहां पहुंचा उस वक़्त तक सिद्दीक़ बेग, क़ुतलुक़ बेग को शिकस्त देकर काशग़र पर क़ब्ज़ा कर चुका था। जब बुज़ुर्ग ख़ोजा काशग़र पहुंचा तो सिद्दीक़ बेग ने उस का बेपनाह स्वागत किया और उस को काशग़र के शाही महल में रहने की पेशकश की जिसको 'उर्दा' कहा जाता था। लेकिन बुज़ुर्ग ख़ोजा और याक़ूब बेग ने सिद्दीक़ बेग को काशग़र से निकाल बाहर किया और काशग़र की हुकूमत पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस से किर्गीज़ लोग नाराज़ हो गए और उन्होंने याक़ूब बेग की हुकूमत को मानने से इनकार कर दिया। याक़ूब बेग ने काशग़र की हुकूमत पर क़ब्ज़ा करने के बाद मान्चू फ़ौज के आख़िरी क़िले पर हमला कर के उसे भी फ़तह कर लिया। इसके बाद कूचा के शासक राशिदीन की फ़ौज को भी हरा दिया और उसके इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसी दौरान 1865 CE में ख़ोक़न्द का शासक आलिम क़ुली, रूस से मुक़ाबला करते हुए मारा गया। ख़ोकंदियों को शिकस्त का सामना करना पड़ा, इस लिए बहुत से ख़ोक़न्द के सिपाही अपनी जान बचाने के लिए काशग़र भाग आए और याक़ूब बेग की फ़ौज में शामिल हो गए। उनके साथ कुछ अफ़ग़ानी और किर्गीज़ भी शामिल हो गए इस तरह याक़ूब की फ़ौज और ज़्यादा ताक़तवर हो गई। इस के अलावा अफ़ग़ानिस्तान के बदख़्शान के शासक ने 200 अफ़ग़ानी फ़ौजी याक़ूब बेग की मदद के लिए भेज दिए।

याक़ूब बेग का डुंगन के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान

उधर तरांची तुर्क मुसलमानों ने शुरू में डुंगन लोगों का साथ दिया लेकिन बाद में वो अलग हो गए। डुंगन लोग चाहते थे कि तरांची लोग उनकी हुकूमत क़बूल कर लें इसी बात पर दोनों में लड़ाई हो गई। इस लिए उन्होंने कुलजा में डुंगन लोगों का नरसंहार कर दिया और बाक़ी को इली इलाक़े की तरफ़ भगा दिया। डुंगन लोगों पर न तो चिंग हुकूमत भरोसा करती थी और न ही याक़ूब बेग। चुनांचे याक़ूब बेग ने डुंगन लोगों के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान कर दिया जिन का नेतृत्व टू मिंग कर रहा था जिसको 'दावूद ख़लीफ़ा' भी कहा जाता था। इस लिए याक़ूब बेग और डुंगन के बीच लड़ाई छिड़ गई। चुनांचे याक़ूब बेग ने हान फ़ौज को अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया जिस का नेतृत्व शू शीगोंग Xu Xuegong कर रहा था। चुनांचे उसने डुंगन को 1870 CE में उरुमची की जंग में शिकस्त दी। इस के बाद याक़ूब बेग ने डुंगन लोगों से अक्सू भी छीन लिया और डुंगन को तियानशान के उत्तर में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया जहां डुंगन लोगों का बड़े पैमाने पर नरसंहार हुआ।[289]

याक़ूब बेग के विदेशों से संबंध

याक़ूब बेग ने विदेशों के साथ भी राजनयिक संबंध मज़बूत किए। चुनांचे रूस और बर्तानिया ने काशग़र में याक़ूब बेग की हुकूमत के साथ कई मुआहिदों पर दस्तख़त किए जो अपनी हुकूमत के लिए बर्तानवी और रूसी इमदाद हासिल करने की कोशिश कर रहा था। याक़ूब बेग और रूसी हुकूमत के दरम्यान संबंध लड़ाई से शांतिपूर्ण सिफ़ारती तबादलों में बदल गए। रूसियों को काशग़र की मुक़ामी आबादी से नफ़रत थी क्योंकि उनके अशराफ़िया के ख़ोक़न्द ख़ानों के साथ क़रीबी संबंध थे जिन्हें हाल ही में तुर्किस्तान पर रूसी फ़तह के दौरान

निकाल दिया गया था। यह दुश्मनी याक़ूब बेग को बर्बाद कर देती अगर वो उनसे बड़े पैमाने पर इमदाद तलब करता जैसा कि उस का असल इरादा था। सल्तनत उस्मानिया और बर्तानिया दोनों ने याक़ूब बेग की रियासत को स्वीकार किया और उसे हज़ारों बंदूक़ें और हथियार उपलब्ध कराए। बर्तानवी सिफ़ारत कारों रॉबर्ट बार्क्ले शॉ Robert Barkley Shaw और थॉमस डगलस फ़ोरसिथ Thomas Douglas Forsyth ने बिलतर्तीब (respectively/ क्रमानुसार) 1868 और 1870 में काशग़र से याक़ूब की हुकूमत के लिए बर्तानवी मुफ़ादात को जन्म दिया और बर्तानिया ने 1874 में याक़ूब के साथ तिजारती मुआहिदा किया।

याक़ूब बेग की इस्लामी हुकूमत

याक़ूब की फ़ौज के आगे कोई फ़ौज न टिक सकी। एक साल के अरसे में याक़ूब का तीन इलाक़ों पर क़ब्ज़ा हो गया जिनके नाम हैं काशग़र, यरकंद और मारलबाशी। इसके बाद उसने खोतान, अक्सू, कूचा, उचतुरफ़ान Uqturfan पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद कारा शहर, तुरफ़ान, हामी और उरुमची के लोगों ने भी बग़ैर लड़े हथियार डाल दिए। 1867 CE तक उसका लगभग पूरे शिंजियांग पर क़ब्ज़ा हो गया। याक़ूब बेग ने अपनी इस्लामी हुकूमत का ऐलान किया और ख़ुद 'अमीर-ए-काशग़र' का लक़ब इख़्तियार किया और शरिया क़ानून लागू किया। इतिहासवेत्ता इसे ख़ानियत-ए-काशग़र Khanate of Kashgar भी कहते हैं। 1866 में अमीर-ए-बुख़ारा ने उसे 'अतालिक़ ग़ाज़ी' का लक़ब दिया जिसका मतलब होता है 'चैंपियन बाप' और उस्मानी सुल्तान ने उसे 'अमीर' का लक़ब दिया।[290] ताहम उसे आम तर से 'अतालिक़ ग़ाज़ी' के नाम से ही जाना जाता है।

शिंजियांग पर चिंग का दोबारा क़ब्ज़ा

1876 CE में चिंग हुकूमत ने शिंजियांग पर दोबारा क़ब्ज़ा करने का अभियान शुरू किया। इस लिए हम कह सकते हैं की 1865 से 1877 तक याक़ूब बेग की हुकूमत शिंजियांग में क़ायम रही यानी 9 साल। जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि डुंगन विद्रोह दो इलाक़ों में हुआ था, पहले गान्सू, निंगशिया और शांक्सी में फिर शिंजियांग में। तो जब चिंग फ़ौज गान्सू, निंगशिया और शांक्सी के विद्रोह का सफ़ाया कर चुकी तो फिर उसने शिंजियांग की तरफ़ ध्यान दिया। शिंजियांग में भी चिंग हुकूमत ने विद्रोह से निमटने की ज़िम्मेदारी जनरल ज़ू ज़ोंगटांग को दी। चिंग फ़ौज में बहुत सारे मुस्लिम हुई भी थे, जो गान्सू, निंगशिया और शांक्सी के विद्रोह में ज़ू की फ़ौज के आगे हथियार डाल कर ज़ू की फ़ौज में शामिल हो गए थे, उनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है। कहा जाता है कि जब जनरल ज़ू ज़ोंगटांग अपनी सेना के साथ शिंजियांग की ओर बढ़ा, तो मुस्लिम जनरल मा अनलियांग और डोंग फ़ूशियांग भी अपनी-अपनी सेनाओं समेत उसके के साथ थे। चुनांचे अगस्त 1876 में चिंग फ़ौज ने सबसे पहले उरुमची Urumchi के फ़ौजी अड्डे का घिराओ किया, कुछ ही दिनों में उन्होंने हथियार डाल दिए, सब लोगों को क़त्ल कर दिया गया और अड्डे पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। इसके बाद मनास Manas पर यही हुआ इसके बाद गूचेंग Gucheng में फ़ौज का केंद्र बनाया गया जहां पर 50,000 फ़ौज हर समय तैयार रहती थी दूसरा केंद्र हामी में बनाया गया। इसका अफ़सर चांग याओ Chang Yao था यहां पर भी 10,000 फ़ौज रहा करती थी। अब की बार चिंग फ़ौज फ्रेंच और जर्मन फ़ौज से तरबियत Training लेकर आई थी और उसके पास यूरोपीय और रूसी हथियार थे। जिन में कुरुप तोपें Krupp cannon और 10,000 बर्दन राइफ़लें

Berdan rifles भी थीं। अप्रैल 1977 तक चिंग फ़ौज याक़ूब की राजधानी तुरफ़ान तक पहुंच चुकी थी, तुरफ़ान में याक़ूब और चिंग फ़ौज की लड़ाई हुई जिसमें याक़ूब को शिकस्त हुई, इस लिए याक़ूब ने टोकसुन Toksun में पनाह ली वहां भी चिंग ने हराया तो कारा शहर Karashar चला गया वहां से शिकस्त खा कर कोरला Korla पहुंच गया। कोरला में उसकी फ़ौज ने साथ छोड़ दिया और फ़रार हो गई। मई 1877 में याक़ूब बेग मशहूर रूसी पर्यटक निकोले प्रेज़ेवाल्स्की Nikolay Przhevalsky से मिला और उसके कुछ दिन बाद उसका इंतिक़ाल हो गया। इस के बाद मुसलमानों की ताक़त टूट गई हालाँकि इसके बाद भी लड़ाइयां होती रहीं लेकिन कोई क़ाबिल लीडर मुसलमानों को एकजुट नहीं कर पाया और चिंग फ़ौज ने धीरे धीरे पूरे शिंजियांग से मुस्लिम फ़ौज का सफ़ाया कर दिया और ज़्यादातर को क़त्ल कर दिया। याक़ूब बेग की मौत पर बहुत मत भेद पाया जाता है उसकी असल तारीख़-ए-पैदाइश नामालूम है और मौत की वजह क्या हुई, इस पर भी मत भेद है, किसी का कहना है कि वो चिंग फ़ौज से लड़ते में मारा गया, कोई कहता है कि वो बीमार हो कर स्वाभाविक मौत मरा, एक ख़्याल यह भी है कि उस के किसी साथी ने उस को ज़हर दे दिया। उस का इंतिक़ाल 30 May 1877 CE को हुआ। ताहम उस के बाद उसकी 4 बीवियां, 4 बेटे, 2 पोतियां और 2 पोते चिंग फ़ौज ने गिरफ़्तार किए। याक़ूब बेग के बेटों के नाम हैं काइटी क़ुली 6 साल, यीमा क़ुली 10 साल और माइटी क़ुली 14 साल K'ati Kuli, Yima Kuli, and Maiti Kuli. एक पोते का नाम आइसान अहुंग Aisan Ahung था जिसकी उमर 5 साल थी। इन सबको लांज़ू की जेल Lanzhou jail में क़ैद कर दिया गया और मुक़द्दमा चलाया गया और यह फ़ैसला किया गया कि जो लोग बालिग़ हैं उन्हें किन्नर बना दिया जाए और जो कम उमर बच्चे हैं उन्हें 11 साल की उम्र के बाद किन्नर बनाया जाए और सबको

चिंग दरबार में किन्नर ख़िदमतगारों eunuchs के तौर पर भर्ती कर लिया जाए। इस तरह 15 साल तक चलने वाले विद्रोह का ख़ातमा हो गया।[291]
चिंग के आदेश पर याकूब बेग और उसके बेटे इशाना बेग Ishana Beg की कब्रों को तोड़ दिया गया और उनकी लाशों को जला दिया गया। याक़ूब बेग के बाद हकीम ख़ान तुफ़्ल Hakim Khan Tufl ने भी चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की लेकिन चिंग फ़ौज ने उस को भी कुचल दिया।

मुसलमान लड़कियों की ख़रीद ओ फ़रोख़्त

कहा जाता है कि शिंजियांग पर क़ब्ज़ा करने के बाद शियांग फ़ौज Xiang Army के बहुत से हान फ़ौजी शिंजियांग से बहुत सी मुसलमान तुर्क लड़कियों को ख़रीद कर लाए जिन में से कुछ को उन के माँ बाप ने बेचा था। इस में हुई लोग बिचौलिये और मुतर्जिम के फ़राइज़ अंजाम देते थे। चुनांचे एक हान जिसका ख़ानदानी नाम ली Li था एक उइग़ूर लड़की को दो उइग़ूर आदमियों से ख़रीद कर लाया, जिस का उन्होंने 1880 में अपहरण किया था। वह पीशान Pichan के मजिस्ट्रेट के मुलज़िम थे। एक दूसरी 12 साल की उइग़ूर लड़की जिस का नाम रू ज़ांग ले Ruo-zang-le था, वह तुरपान की रहने वाली थी उस को 1889 में चिताई Qitai में शानशी Shanxi के रहने वाले एक हान, लियू युन Liu Yun को 30 टाइल taels में बेचा गया। 1892 में वह उस से गर्भवती हो गई। कहा जाता है कि तलाक़ की सूरत में जिस क़ीमत पर उसको ख़रीदा जाता था उसको उसका महर मान लिया जाता था।[292] यानी बाद में या तलाक़ के वक्त उसको कोई महर अदा नहीं किया जाता था। इस के अलावा बहुत से हान, हिंदू, आर्मीनियन, यहूदी और रूसी लोगों से उन उईग़ूर मुसलमान लड़कियों की शादियाँ कर दी गईं जिन को मुसलमान शौहर नहीं मिल रहे थे।[293]

अध्याय 11
दूसरे चीन-जापान युद्ध में मुसलमानों की भूमिका

第十一章
穆斯林在第二次中日战争中的作用

Chapter Eleven
Role of Muslims in the second Sino-Japanese war

बॉक्सर विद्रोह के दौर में मुसलमानों का किरदार

1900 में बॉक्सर विद्रोह हुआ। इस विद्रोह में भी एक मुस्लिम फ़ौज ने प्रमुख भूमिका निभाई। उन्हें चीन में गान आरमी Gan army कहा जाता था लेकिन पश्चिमी इतिहासकार उसे कान्सू ब्रेव्स Kansu Braves के नाम से जानते हैं, इस का ज़िक्र ऊपर आ चुका है। यह 10,000 मुसलमानों की एक फ़ौज थी जिस के प्रमुख जनरल डोंग फ़ूशियांग Dong Fuxiang 1839–1908 थे। यह लोग गान्सू के रहने वाले थे इस लिए उनको गान्सू या कान्सू के बहादुर Kansu Braves कहा जाता था। 1894 में पहली चीन-ओ-जापान जंग हुई तो डोंग की फ़ौज को वहां भेजा गया लेकिन इसी बीच 1895 में गान्सू में डुंगन विद्रोह फूट पड़ा तो उन लोगों को विद्रोह से निमटने के लिए भेज दिया गया, उन लोगों ने जनरल ज़ू ज़ोंगटांग Zuo Zongtang की मदद करते हुए विद्रोह को कुचलने में बहुत बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था, इस लिए 1895 में जनरल डोंग फ़ूशियांग को कान्सू का शाही कमिश्नर Imperial Commissioner बना दिया गया। 1895 में रानी ड्वागर सिशी 慈禧太后 Empress Dowager Cixi के साठवें जन्मदिन में डोंग फ़ूशियांग भी शरीक हुए तो रानी के मान्चू मिनिस्टर रोंगलू Manchu Minister Ronglu ने डोंग का परिचय रानी से कराया और उनकी क़ाबिलीयत का भी ज़िक्र किया।[294] 1898 में जब सौ दिन का सुधार Hundred Days' Reform का अभियान गुआंगशू राजा Guangxu Emperor ने चलाया तो रानी ड्वागर सिशी को यह पसंद नहीं आया, इस लिए इस अभियान को फ़ौजी विद्रोह के ज़रिये ख़त्म कर दिया गया जिसके लिए रानी ड्वागर सिशी ने मुस्लिम जनरलों

की भी मदद ली जैसे, डोंग फ़ूशियांग Dong Fuxiang, मा अनलियांग Ma Anliang, मा हाईयान Ma Haiyan, मा फ़ूलू Ma Fulu और मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang वग़ैरह।[295] 1897 में जब दो जर्मन मिशनरियों को बीजिंग में क़त्ल कर दिया गया तो बीजिंग के हालात ख़राब हो गए। तो रानी ड्वागर सिशी ने कान्सू ब्रेव्स को बीजिंग बुला लिया, बीजिंग आते हुए कान्सुओं ने बाओडिंग Baoding में दो गिरजों पर भी हमला किया।[296] सौ दिन की इस्लाह की मुहिम को ख़त्म करने के बाद रानी और रोंगलू ने नई फ़ौज बनाई जिसको, वूवी कोर Wuwei Corps कहा जाता था जिस में पाँच डिवीज़न 5 divisions थे इस में कान्सुओं को तीसरा डिवीज़न बनाया गया और डोंग फ़ूशियांग, फ़ौज के पाँच आला अफ़सरान में से एक थे। बीजिंग में जो विदेशी दफ़ातिर और क्वार्टर बने हुए थे उनको बीजिंग लिगेशन क्वार्टर Beijing Legation Quarter कहा जाता था। 1898 में यह अफ़वाह (rumour) फैली कि कान्सू ब्रेव्स, बीजिंग लिगेशन क्वार्टरों पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं तो विदेशियों में हड़कंप मच गया और तियानजिन से अमेरिका की मैरीन फ़ौज (संयुक्त राज्य अमेरिका मरीन कोरपस) United States Marine Corps को बुलाया गया ताकि वो क्वार्टरों की रक्षा कर सकें। मैरीन फ़ौज और कान्सुओं के बीच में कई दफ़ा मुठभेड़ भी हुई। उस ज़माने में कान्सुओं की दहशत तमाम विदेशी लोगों के दिलों में सबसे ज़्यादा थी, विदेशियों ने रानी से कान्सुओं से दर पेश ख़तरे की शिकायत की तो रानी ने कान्सुओं को दक्षिणी पार्क Southern Park के इलाक़े में भेज दिया। 1900 में जब बॉक्सर विद्रोह हुआ जो कि चीनियों का विदेशियों के ख़िलाफ़

एक विद्रोह था, तो चीनियों ने विदेशियों पर हमले शुरू कर दिए जिसमें कान्सुओं ने सबसे ज़्यादा बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और विदेशियों के ख़िलाफ़ बहुत से हमले किए और कई विदेशियों को मार गिराया और बीजिंग लिगेशन क्वार्टरों पर भी काफ़ी हमले किए तो कान्सू ब्रेव्स फ़ौज मशहूर हो गई। सब लोगों के दिलों में उनकी बेपनाह दहशत बैठ गई। 18 जून 1900 में कान्सुओं ने सीमोर अभियान Seymour Expedition को भी लांगफांग की जंग Battle of Langfang में शिकस्त दी और उन्हें तियानजिन की तरफ़ पीछे हटने पर मजबूर कर दिया और बड़ी तादाद में विदेशी लोग मारे गए। याद रहे कि सीमोर अभियान 8 देशों जापान, रूस, बर्तानिया, फ़्रांस, अमेरिका, इटली, ऑस्ट्रिया और हंगरी की संयुक्त फ़ौज थी, इसे इत्तिहादी फ़ौज (गठबंधन सेना) भी कहा जाता था। कान्सुओं की दहश्त इतनी बढ़ गई थी कि जर्मन शहंशाह कैसर विल्हेम द्वितीय Kaiser Wilhelm II ने उस्मानी सुलतान अब्दुल हमीद से विनती की, कि वो किसी तरह कान्सुओं को रोकें। तो इस मक़सद के लिए अब्दुल हमीद ने 1901 में अपने एक अफ़सर अनवर पाशा को चीन भेजा लेकिन उस वक़्त तक विद्रोह ख़त्म हो चुका था। इस दौरान सुलतान अब्दुल हमीद ने एक फ़रमान भी जारी किया जिसमें मुसलमानों को मशवरा दिया गया था कि वह बॉक्सर विद्रोहियों का साथ न दें। यह फ़रमान मिस्र और इंडिया के अख़बारों में भी छपा, क्यों कि सुलतान जर्मनी से अपने संबंध ख़राब करना नहीं चाहते थे।[297]

ज़ेंगयांग गेट की लड़ाई

बीजिंग की जंग Battle of Peking के दौरान जब बर्तानिया की फ़ौजों ने बीजिंग के ज़ेंगयांग गेट Zhengyang Gate पर हमला किया जिसकी रक्षा कान्सू ब्रेव्स कर रहे थे[298], तो कान्सुओं और संयुक्त फ़ौजों के बीच में भयंकर लड़ाई हुई जिसमें मुस्लिम जनरल मा फ़ूलू Ma Fulu और उनके 4 कज़न, मा फ़ूगुई Ma Fugui, मा फ़ूचुआन Ma Fuquan, उनके भतीजे मा याओटू Ma Yaotu, मा ज़ाओटू Ma Zhaotu वग़ैरह मारे गए और उनके गांव के 100 से ज़्यादा लोग मारे गए। लड़ाई के बाद रानी ड्वागर सिशी जब वहां से फ़रार हुई तो मुस्लिम कान्सू ब्रेव्स फ़ौज की रक्षा में फ़रार हुई। इसी बॉक्सर विद्रोह में जनरल मा बियाओ जो दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में मुस्लिम फ़ौजों की कमांडिंग कर रहे थे वो भी जनरल मा हाईयान के मातहत लड़े। जनरल मा हाईयान का थकावट की वजह से इंतिक़ाल हो गया तो उनके बेटे मा ची Ma Qi ने फ़ौज की कमान संभाली।

डोंग फ़ूशियांग की चिंग हुकूमत से वफ़ादारी

जब इत्तिहादी फ़ौजों का बीजिंग पर क़ब्ज़ा हो गया और शाही ख़ानदान भाग कर शियान Xi'an चला गया और लड़ाई ख़त्म हो गई तो इत्तिहादी फ़ौजों को सबसे ज़्यादा ग़ुस्सा मुस्लिम फ़ौज के ख़िलाफ़ था क्यों कि उन्हें सबसे ज़्यादा नुक़सान मुस्लिम फ़ौज ने ही पहुंचाया था, चुनांचे इत्तिहादियों ने ऐलान किया कि वो मुस्लिम फ़ौज के ख़िलाफ़ जंग जारी रखेंगे, जबकि रानी और उस के

अफ़सरान, मुस्लिम फ़ौज के बहुत आभारी हुए और डोंग फ़ूशियांग को चीनी फ़ौज का अफ़सर-ए-आला Commander-in-chief बना दिया।[299] मुस्लिम फ़ौज के बारे में कहा गया कि यह लोग सबसे ज़्यादा बहादुर, संगदिल और वफ़ादार लोग हैं इसी लिए शाही शहर की रक्षा के लिए उन लोगों पर भरोसा किया गया है The bravest of the brave, the most fanatical of fanatics: and that is why the defence of the Emperor's city had been entrusted to them."[300] चुनांचे जंग के बाद जब इत्तिहादियों और शाही ख़ानदान के बीच में समझौते की शर्तें तै हुईं जिसमें शाही ख़ानदान को दब कर सुलह करनी पड़ी, तो और शर्तों के साथ इत्तिहादियों ने यह भी शर्त रखी कि डोंग फ़ूशियांग को सज़ा-ए-मौत दी जाए लेकिन रानी ने यह शर्त मानने से इनकार कर दिया ताहम इतना किया कि डोंग को गान्सू की तरफ़ जिला-वतन कर दिया और तमाम सरकारी ओहदों से बरख़ास्त कर दिया, लेकिन उनको इतना इख़्तियार दिया गया कि वो 5000 आदमियों की फ़ौज अपने मातहत रख सकते हैं। सरकारी ओहदों से बरख़ास्त होने के बावजूद डोंग का हुकूमत में काफ़ी प्रभाव था और बहुत से मुक़ामी फ़ैसले उनके मशवरे के बाद लिए जाते थे। डोंग को आज भी क़ौमी हीरो के तौर पर याद किया जाता है जिन्हों ने विदेशियों के ख़िलाफ़ चीन की रक्षा की। इसी लड़ाई में जनरल मा अनलियांग Ma Anliang भी शरीक थे[301] जो बाद में जंगी सरदारों के दौर Warlord Era में मा क्लीक़ Ma clique के शासक बने।[302]

लोकतांत्रिक इनक़लाब और इसके बाद मुसलमानों के हालात

लोकतांत्रिक इन्क़लाब के बाद का इतिहास बहुत फैला हुआ है, इस लिए सारे हालत को बयान करना बहुत मुश्किल है इस लिए यहाँ पर मुख़्तसर हालात बयान कर के हम आगे बढ़ जाएंगे। जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है कि 1911 में चीन में लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया जिसके नतीजे में वहां की जनता ने आख़िरी बादशाहत चिंग हुकूमत का तख़्ता उलट दिया और लोकतांत्रिक हुकूमत क़ायम हुई जिस का नेतृत्व सुन यातसेन Sun Yat-sen (12 November 1866 – 12 March 1925) कर रहे थे। चीनी ज़बान में उन को सुन ज़ोंग शान 孙中山 Sunzhongshan कहा जाता है। लेकिन फिर हालात ने ऐसा पलटा खाया कि युआन शिकाई Yuan Shikai ने अपनी बादशाहत क़ायम कर ली जिसको बेयांग हुकूमत Beiyang Government कहा जाता है और लोकतांत्रिक इन्क़लाब नाकाम हो गया। मुसलमान उस ज़माने में बटे हुए थे कुछ सुन यातसेन की पार्टी टोंगमंगहुइ Tongmenghui के साथ थे जो बाद में चल कर क्योमिनटांग Kuomintang पार्टी कहलाई और कुछ युआन शिकाई के साथ थे। सुन यातसेन ने अपनी हुकूमत क़ायम होते ही ऐलान किया कि यह देश सारी जातियों और धर्मों के लिए बराबर है जैसे हान, हुई, मंगोल, तिब्बती वग़ैरह। इस लिए मुसलमानों के बाहरी देशों से संबंध मज़बूत हुए ख़ासकर मध्य पूर्व से। बहुत से मुसलमान उच्च इस्लामी शिक्षा हासिल करने बाहर भी गए जैसे 1939 में 33

हुई छात्र जामिआ अल अज़हर, मिस्र Egypt गए। 1912 में नानजिंग में चाइनीज़ मुस्लिम फ़ैडरेशन Chinese Muslim Federation बनी इसके बाद बीजिंग 1912 में, शंघाई 1925 और जीनान 1934 में, भी इसी तरह की संगठन बने।[303] तालीमी गतिविधियों में भी तेज़ी आई, 1937 में चीन-ओ-जापान जंग से पहले चीन में 100 से ज़्यादा इस्लामी अख़बार और पत्रिकाएं छपते थे। हालाँकि लिनशिया Linxia इस्लामी गतिविधियों का केंद्र था लेकिन बीजिंग में भी इस्लामी गतिविधियां तेज़ हो गई थीं। मुसलमानों ने नई लोकतांत्रिक हुकूमत की नेशनल रिवोल्यूशनरी आर्मी NRA में भी क़ाबिल-ए-क़दर ख़िदमात अंजाम दीं और ऊंचे ओहदों पर पहुंचे जैसे बाई चोंगशी Bai Chongxi नई चीनी हुकूमत में रक्षा मंत्री Defence Minister के ओहदे पर नियुक्त हुए। बीसवीं सदी की शुरूआत में एक आंकड़े के मुताबिक़ चीन में 2 करोड़ मुसलमान आबाद थे जिसमें से आधे गान्सू Gansu में थे, एक तिहाई शांक्सी Shaanxi में और बाक़ी युन्नान Yunnan और चीन के दूसरे इलाक़ों में।[304]

सुन यातसेन के मुसलमानों के बारे में ख़्यालात

हाशी (शिंजियांग का एक मुक़ाम) के मुसलमानों के नुमाइंदे टिंग शी जिन (Ting Sheh Jin) ने एक तक़रीर के दौरान कहा था, 1924 CE में हमारी मुलाक़ात डाक्टर सुन यातसेन से हुई तो उन्होंने फ़रमाया "तुम जानते हो कि तीन क़ानून क्या हैं? वो बराबरी के उसूल हैं जो दबी हुई क़ौमों के लिए बनाए गए हैं, इन उसूलों के ज़रिये से मुलूकियत और अस्करियत से उनको निजात दिलाना है। मुसलमान भी चीनी क़ौमों में से एक क़ौम हैं। वो अरसा से इस्तिबदाद के नीचे

दबे हुए हैं। लेकिन इतना ही उनमें आज़ादी का एहसास और आज़ादी का जज़्बा है। इस वास्ते मैं तुमसे कहता हूँ कि अब से तुमको ये करना चाहिए कि मुसलमानों को ख़्वाब-ए-ग़फ़लत से जगाओ, और उनको अपने साथ लेकर इन्क़लाब के मैदान में उतरो, मुसलमानों की वीरता और बहादुरी दुनिया में मशहूर है, वो अपनी जान की परवाह नहीं करते, वो ख़ूब क़ुर्बानी दे सकते हैं। अगर उनको जगा दिया गया, तो नौनिहाल-ए-इन्क़लाब के लिए एक मेहनती माली मिल जाएगा, जो सुबह-ओ-शाम और दिन रात इस चमन को सेराब करेगा। क़ौमी इन्क़लाब का पहला काम ये है कि वो मुलूकियत के जरासीम को जो सियासत-ए-चीन के अंदर फैल रहे हैं, निकाल दें। ये काम बग़ैर मुसलमानों के नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त तुर्की, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, भारत और अरब सब के सब इस्लामी देश हैं। उनमें आज़ादी का जज़्बा बहुत क़वी है। आजकल मुलूकियत के इस्तिबदाद से बहुत बेचैन हैं, अगर वो चीन के साथ इत्तिहाद कर लें तो यूरोपी साम्राज्यवाद के जरासीम जो दुनिया की सियासी फ़िज़ा को ख़राब कर रहे हैं, इत्तिहाद-ए-एशिया की दवा से फ़ौरन मर जाएंगे। अल-ग़र्ज़ चीन के इन्क़िलाबी कामों में मुसलमानों का शरीक होना हर तरह से ज़रूरी है। बग़ैर उनके ये तकमील को नहीं पहुंच सकता, और मुलूकियत के जरासीम को फ़ना करने के लिए सिवाए मुसलमान माली के और कौन हो सकता है, आओ नौनिहाल-ए-इन्क़लाब को सेराब करें"।[305]

दूसरी चीन-ओ-जापान जंग के दौरान मुसलमानों के हालात

दूसरी चीन-ओ-जापान जंग (1937–1945) के दौरान दोनों पक्ष, यानी चीन और जापान, दोनों ही मुसलमानों को अपनी तरफ़ मिलाना चाहते थे और इसी लिए जापान ने मुसलमानों से वादा भी किया था कि वो मुसलमानों को चीन में एक अलग देश बना कर देगा, लेकिन मुसलमान जापानियों के झांसे में नहीं आए बल्कि उन्होंने चीन का ही साथ दिया और जापान की पूरे ज़ोर-ओ-शोर से मुख़ालिफ़त की और कई जंगों में जापानियों को ज़बरदस्त नुक़सान पहुंचाया और उन्हें शिकस्त देकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

मुस्लिम उलमा की जापान के ख़िलाफ़ कोशिशें

जंग के दौरान मुस्लिम उलमा ने जापान के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान किया और यह भी कहा कि जो लड़ते हुए मारा जाएगा उसको शहादत का दर्जा मिलेगा। मुस्लिम पत्रिका येहुआ Yuehua में एक मज़मून प्रकाशित हुआ जिसमें जापान के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान किया गया था और बाक़ायदा क़ुरान और हदीस की मदद से यह बात साबित की गई थी कि हर मुसलमान को इस जिहाद में शरीक होना चाहिए।[306] एक आलिम शू वेनबो Xue Wenbo जो चेंगडा स्कूल Chengda School के एक मेंबर थे उन्होंने एक नज़म भी लिखी थी जिसका शीर्षक था 'जापान मुख़ालिफ़ साहस के साथ हुई का गाना' 'Song of the Hui with an anti-Japanese determination' जिसमें जापान के

ख़िलाफ़ जिहाद करने पर-शौक़ दिलाया गया था।[307] एक चीनी इमाम हू सोंगशान Hu Songshan ने तो यह हुक्म दिया था कि मुसलमान हर-रोज़ फ़ज्र की नमाज़ के बाद चीनी झंडे को सलामी दिया करें। हू सोंगशान ने अरबी में एक दुआ भी लिखी थी जिसमें जापानियों की हार और चीनी क्योमिनटांग पार्टी की जीत की दुआ की गई थी, इस दुआ के अरबी अलफ़ाज़ यह हैं,

’بِسْمِ اللهِ الرّحْمنِ الرَّحيمِ اللّهُمَّ أَيِّدْ حُكومَتَنا وَأَيِّدْ دَوْلَتَنا وَامْطُر بِثرانا وَدَمِّرْ أَعْداءَنا وَأَعِذنا مِنْ شَرِّ أَهْلِ الْيابان الْظالِمينَ أَلَّذينَ طَغَوا في الْبِلادِ وّقَتَلوا فينا الْعِبادَ وَأَرْسِلْ عَلَيْهِمْ عاصِفَةً تُسْقِطْ طَيّاراتهِمْ في صَحاراهُمْ وَتَرَسّبْ بارِجاتِهِمْ في بِحارِهِمْ وَبُعْثَرَتْ أَجْنادُهُمْ وَحَرِّقْ أَمْوالَهُم وَأَنْزِلْ عَلَيْهِمْ جَزاءً يا إله الحقِّ آمين‘۔[308]

तर्जुमा: ‘अल्लाह के नाम पर, जो सबसे दयालु है। या अल्लाह, हमारी सरकार की मदद फ़र्मा, हमारे देश की मदद फ़र्मा, हम पर बारिश बरसा, हमारे दुश्मनों को नष्ट कर, और हमें जापान के दमनकारी लोगों की बुराई से बचा जिन्होंने अत्याचार किया। हमारे और देश के सेवकों को मार डाला। और उन पर एक तूफ़ान भेज जो उनके विमानों को उनके रेगिस्तानों में गिरा दे, और उनके जहाजों को उनके समुद्र में डुबो दे, और उनकी सेनाओं को तितर-बितर कर दे, और उनकी संपत्ति को जला दे, और उन पर यातना भेज दे। ए सत्य ईश्वर, आमीन’[309]।

निंगशिया के सारे इमामों को कहा गया था कि वो मस्जिदों में देश भक्ति पर भाषण दें। एक और मुस्लिम जनरल मा हूशान Ma Hushan ने शिंजियांग में जापान के ख़िलाफ़ लोगों को उकसाया और क्योमिनटांग के हक़ में लोगों को तैयार किया। जंग के शुरू में ही जब मुसलमानों को मारकोपोलो पुल घटना

Marco Polo Bridge Incident की ख़बर पहुंची तो मुस्लिम जनरल मा बुफ़ांग Ma Bufang, जो चिंगहाई के मुस्लिम गवर्नर भी थे Governor of Qinghai और मा क्लीक़ के शासक भी थे, उन्होंने एक घुड़सवार फ़ौज cavalry तैयार की और एक मुस्लिम जनरल मा बियाओ Ma Biao के नेतृत्व में जापानियों के ख़िलाफ़ लड़ने भेजी और दूसरी फ़ौज को मा लू Ma lu के नेतृत्व में भेजा और क्योमिनटांग अफ़सर चियांग काई शेक को अपनी तैयारी की खबर भी दी।[310] मा बियाओ ने हुआई यांग की जंग Battle of Huaiyang में जापानियों को ज़बरदस्त शिकस्त दी। हेनान सूबे में भी मा बुफ़ांग की फ़ौज ने व्हाइट लोटस फ़ौज को हराया जो जापान की तरफ़ से लड़ रही थी। सितंबर 1940 में जब जापानियों ने चिंगहाई पर हमला किया जिसके गवर्नर मा बुफ़ांग थे तो मुसलमानों ने उन्हें ऐसी शिकस्त दी कि जापानियों को जान बचा कर भागना पड़ा और वो अपने साथियों की लाशें भी नहीं ले जा पाए, बस उन्होंने हर लाश का एक एक हाथ काट लिया ताकि अंतिम संस्कार किया जा सके। इसके बाद जापानी दोबारा चिंगहाई पर हमला करने की हिम्मत न कर सके। क्योमिनटांग प्रमुख चियांग काई शेक को शक था कि तिब्बती लोग जापान की मदद कर रहे हैं, इस लिए उन्होंने जनरल मा बुफ़ांग को हुक्म दिया कि वो तिब्बत पर हमला करने को तैयार रहें और चियांग के हुक्म पर वो 1942 में तिब्बत पर हमले के लिए हज़ारों की तादाद में फ़ौज लेकर, तिब्बत में दाख़िल हुए और बहुत सारे तिब्बती मंदिरों को भी नष्ट किया और तिब्बत में यूशू एयरपोर्ट Yushu airport को भी सही कराया ताकि तिब्बती लोग यह न समझें कि हमें चीन से

आज़ादी मिल गई।[311] जापानी लोग मुस्लिम फ़ौज को महूशी फ़ौज Mahushi army कहा करते थे। जब जापानियों ने मुस्लिम जनरल मा होंगकुई को अपनी तरफ़ मिलाना चाहा और यह झांसा दिया कि वो चीन में एक मुस्लिम देश बना कर देंगे तो मा होंगकुई ने निंगशिया के पार्टी सेक्रेटरी के ज़रिये जवाब भेजा कि जापानियों के कमांडर-इन-चीफ़ को बता दें कि मेरे बहुत से रिश्तेदार बॉक्सर विद्रोह में विदेशियों के ख़िलाफ़ लड़ते हुए मारे गए और में यह भी जानता हूँ कि इन विदेशियों में सबसे बड़ी तादाद जापानियों की थी, इस वजह से में जापानियों का साथ हरगिज़ नहीं दूंगा। एक और मुस्लिम जनरल मा ज़ांशान Ma Zhanshan जो पहले से मंचूरिया में जापानियों के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। मंचूरिया की मांचुको हुकूमत ने मा ज़ांशान को पेशकश की, कि अगर वो जापानियों की तरफ़ से लड़ें तो जापानी उन्हें 30 लाख डॉलर की मदद देने को तैयार हैं। मा ज़ांशान ने यह पेशकश क़बूल कर ली और जापानियों से रक़म लेकर उस से हथियार ख़रीदे और फिर जापानियों के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया और वही हथियार जापानियों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किए। जब दूसरी चीन-ओ-जापान जंग हुई तो मा ज़ांशान ने भी बहुत सी जंगों में जापानियों को शिकस्त दी और चियांग काई शेक ने उन्हें उत्तरी पूर्वी फ़ौज North-eastern Advance Force का कमांडर बना दिया। जंग के बाद मा ज़ांशान ने कम्युनिस्टों से गठबंधन कर लिया कम्युनिस्टों ने मा को हीलोंगजियांग की अस्थायी सरकार Provisional Government of Heilongjiang का चेयरमैन बना दिया। जून 1950 में जब कम्युनिस्ट हुकूमत की पहली परामर्श बैठक consultative

meeting हुई तो उस में मा ज़ांशान को भी बुलाया गया लेकिन मा बीमारी की वजह से वहां नहीं जा सके। इसी साल नवंबर 1950 में मा का इंतकाल हो गया। जापान के ख़िलाफ़ प्रोपेगेंडा अभियान चलाने के लिए बहुत से मुसलमान विदेश भी गए ख़ासकर मध्य पूर्व और वहां पर लोगों को जापान की मक्कारियों और अत्याचार की खबर दी, दूसरी तरफ़ जापान ने भी बहुत से लोगों को फ़र्ज़ी मुसलमान बना कर मुस्लिम देशों में भेजा ताकि वो वहां पर झूठी ख़बरें फैला कर जापान के लिए हिमायत हासिल कर सकें, लेकिन मुसलमानों ने उन फ़र्ज़ी मुसलमानों की क़लई खोल दी। चुनांचे एक मुस्लिम इमाम पूशेंग डा Pusheng Da ने 1939 में 8 महीने का टूर मध्य पूर्व, इंडिया, मिस्र वग़ैरह का किया ताकि जापान के ख़िलाफ़ लोगों को बता सकें।[312] इसी मक़सद से एक और वफ़द गया जिसमें मा फूलियांग और उइग़ूर मुस्लिम ईसा यूसुफ़ अलप्तगीन ने 1939 में मिस्र, शाम, तुर्की और इंडिया का दौरा किया, यह लोग इंडिया में मोहम्मद अली जिन्ना, गांधी जी और टैगोर से भी मिले और हालात से आगाह किया, उन लोगों ने जापान की आलोचना की जिसकी ख़बर चीनी अख़बारात में भी छपी।[313]

यांग जिंग्यू Yang Jingyu

यहां पर मुनासिब मालूम होता है कि यांग जिंग्यू Yang Jingyu (1905-1940) का भी कुछ ज़िक्र करते चलें जिनका योगदान सराहनीय है। यांग जिंग्यू एक मुस्लिम नौजवान थे जो बचपन से ही कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए थे। यांग की पैदाइश हेनान सूबे के कीशान Queshan (आजकल के ज़ुमादियान

Zhumadian प्रीफ़ेक्चरल सतह के शहर का एक मज़ाफ़ाती इलाक़ा) में एक मुक़ामी किसान ख़ानदान में हुई थी। उन्होंने नौजवानी में अपने गांव के प्राइवेट स्कूल से क्लासिकी और कीशान के एक स्कूल से आधुनिक शिक्षा हासिल की। यांग, शिनहाई इन्क़लाब (1911) के बाद के जंगी सरदारों के दौर से मायूस होने के बाद नए सांस्कृतिक आंदोलन New Cultural Movement से जुड़ गए। वो सूबा हेनान की उस वक़्त की राजधानी काईफ़ेंग के एक कॉलेज में दाख़िल हुए। 1925 में, उन्होंने काईफ़ेंग Kaifeng में चीनी कम्युनिस्ट यूथ लीग Chinese Communist Youth League में शमूलियत इख़तियार की जहां उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा मुकम्मल की और फिर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर बन गए। उन्होंने शुरू में शिनयांग, काईफ़ेंग और लोयांग Xinyang, Kaifeng, and Luoyang में पार्टी के लिए गुप्त underground अभियान चलाया इसके बाद 1929 में वो मंचूरिया भेज दिए गए जहां पर उन्होंने ज़ांग शूलियांग Zhang Xueliang के ख़िलाफ़ मुहिम चलाई, ज़ांग ने उन्हें क़ैद कर लिया लेकिन मुकडेन वाक़े Mukden Incident के बाद वो जेल से छूट गए। याद रहे ज़ांग शूलियांग मंचूरिया का जंगी सरदार warlord of Manchuria था और लोकतांत्रिक पार्टी ‘क्योमिनटांग’ का कार्यकर्ता था जो कम्युनिस्ट पार्टी की मुख़ालिफ़ पार्टी थी। इसके बाद यांग, हरबिन ज़िले के पार्टी सेक्रेटरी Harbin district party committee secretary बना दिए गए। 1937 में जब चीन-ओ-जापान जंग शुरू हुई तो उनको कम्युनिस्टों ने जापानी मुख़ालिफ़ गठबंधन सेना का कमांडर-इन-चीफ़ commander-in-chief of Anti-Japanese United Front Army

Headquarters बना दिया। उनके मातहत लगभग 20,000 फ़ौजी थे। यांग ने जिलिन सूबे Jilin Province में 40 से ज़्यादा युद्ध के मोर्चों पर जापानियों से लोहा लिया। जून 1936 में उनको जापान मुख़ालिफ़ फ़ौज, उत्तर पूर्वी जापान मुख़ालिफ़ यूनाइटेड फ़र्स्ट राइट आर्मी का कमांडर-इन-चीफ़ बना दिया गया Northeast Anti-Japanese United Army First Route Army commander-in-chief. सितंबर 1938 में जापानियों को ख़बर मिली कि यांग के साथ सिर्फ 10,000 लोग रह गए हैं इस लिए जापानियों ने यांग की फ़ौज को घेरना शुरू कर दिया, और यांग के सर पर 10,000 युआन Yuan का इनाम भी रख दिया। 1940 में जापानियों के पास और कुमक पहुंच गई और जापानियों ने 40,000 फ़ौज को यांग की फ़ौज को घेरने पर लगा दिया, यांग ने अपनी फ़ौज को छोटे छोटे टुकड़ों में बांट कर फैला दिया कि यह लोग जापानी फ़ौज के घेरे को तोड़ कर कभी भी निकल जाएं। अब यांग के साथ सिर्फ 60 लोग रह गए थे लेकिन उनमें से भी कुछ लोगों ने ग़द्दारी की और साथ छोड़कर चले गए, सिर्फ दो लोग यांग के साथ रह गए लेकिन वो दो लोग भी एक मुठभेड़ में मारे गए तो यांग 5 दिन तक अकेले लड़ते रहे। बिल-आख़िर एक मुक़ाबले में वो मारे गए 'इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलईहि राजिऊन'। लेकिन जापानियों के दिलों में यांग का इतना डर बैठा हुआ था कि वो बहुत लंबे वक़्त तक यांग की लाश के पास जाने की हिम्मत न कर सके क्यों कि वो उनकी पुरानी चालों को देखते हुए यह समझ रहे थे कि यह मरे नहीं हैं बल्कि मरने का दिखलावा कर रहे हैं और जैसे ही हम उनके पास जाएंगे वो हम पर हमला कर देंगे। आख़िर में कुछ लोगों ने आगे

बढ़कर यांग का सर काट लिया। जापानियों को हैरत हो रही थी कि 5 दिन से यांग ने क्या खा कर गुज़ारा किया होगा, क्यों कि जापानियों ने पाँच दिन पहले ही सारे रास्ते बंद कर दिए थे। उनका पेट चाक कर के मुआइना किया गया तो यह पाया गया कि उस में पेड़ की छाल, घांस और रूई भरी हुई थी और एक भी दाना गेहूं या चावल का नहीं था। कुछ जापानी फौजियों के यह देखकर आंसू छलक आए और जापानी कमांडर रयुइचिरो किशितानी Ryuichiro Kishitani अचंभित रह गया और एक दिन तक ख़ामोश रहा और बहुत कमज़ोर दिखने लगा। बाद में रयुइचिरो ने सी पू कू seppuku (यह जापान की एक रस्म थी कि जापानी लोग कभी अपना फ़र्ज़ निभाने में नाकाम हो जाते थे तो ख़ुदकुशी कर लेते थे, इस ख़ुदकुशी को सरकारी मान्यता हासिल होती थी और उस आदमी को शहीद माना जाता था) कर ली और अपने वसीयत नामे में जापानी हुकूमत को संबोधित कर के लिखा 'जहांपनाह का जंग का फ़ैसला शायद ग़लत था, चीन के पास फ़ौलादी फ़ौजी हैं जैसे कि यांग जिंग्यू और वो घुटने नहीं टेकेगा।[314] जापानियों ने यांग की लाश को बेपरवाही के साथ ऐसे ही दफ़न कर दिया लेकिन जापानी फ़ौज के कमांडर-इन-चीफ़ जनरल शोटोकू नोज़ो Shotoku Nozoe को कई दिन तक डरावने सपने आते रहे और उसको लगा कि यांग का भूत उसका पीछा कर रहा है इस लिए जापानियों ने यांग की लाश को निकाल कर दोबारा शहीद के पूरे फ़ौजी सम्मान के साथ दफ़नाया और फ़ौजी सलामी भी दी और उनको 'एक सच्चा सिपाही' a true warrior" का ख़िताब दिया। यांग की मौत के बाद चीनी फ़ौज का ग़म-ओ-ग़ुस्सा और

बढ़ गया और उन्होंने फिर से जापानियों पर हमले करने शुरू कर दिए। जब चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम हुई तो यांग का सर दोबारा ढूँढा गया और उनकी लाश को निकाल कर उसके साथ लगाया गया और पूरे फ़ौजी सम्मान के साथ दफ़न किया गया, मेंगजियांग Mengjiang शहर का नाम बदल कर यांग जिंग्यू के नाम पर 'जिंग्यू काउंटी' Jingyu County कर दिया गया और जिन लोगों ने उनसे ग़द्दारी की थी उनको गिरफ़्तार कर के सज़ा-ए-मौत दी गई।

36 वां डिवीज़न क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज

चियांग काई शेक ने अपनी क्योमिनटांग पार्टी का एक सैन्य दल भी बनाया था जिसको क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज National Revolutionary Army (NRA) कहा जाता था। यह फ़ौज 1928 से 1947 तक क़ायम रही। उसका 36 वां डिवीज़न पूरा हुई मुसलमानों पर आधारित था जिसको 36 वां डिवीज़न क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज कहा जाता था। उसको 'डुंगन 36 वां डिवीज़न' या 'के एम टी 36 वां डिवीज़न' भी कहा जाता था। इसके कमांडर जनरल मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying थे जो एक मुसलमान थे। जनरल मा ज़ोंगयिंग ने वामपोआ wampoa मिलिट्री एकेडमी में तरबियत हासिल की थी और 1929 में उन्होंने अपना 36 वां डिवीज़न बनाया।[315] लेकिन जब मा ज़ोंगयिंग ने क्योमिनटांग की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली, तो उनकी सेना को क्योमिनटांग ने अपनी राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना में शामिल कर लिया और 36वें डिवीजन का नाम दिया, जिसका कमांडर मा ज़ोंगयिंग को ही बना दिया थे। इस डिवीज़न ने चीन की तरफ़ से बहुत सी जंगों में हिस्सा लिया ख़ासकर 1934 में रूस ने जब

शिंजियांग पर हमला किया तो इस फ़ौज ने उनको खदेड़ दिया और बहुत से हथियार भी रूसी फ़ौज छोड़ गई जो बाद में इन लोगों ने इस्तेमाल किए।

नानजिंग और डांचांग नरसंहार

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि चीन में 1911 में लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया जिसके नतीजे में चीन में आख़िरी बादशाहत चिंग हुकूमत का तख़्ता उलट कर चीनी जनता ने लोकतांत्रिक सरकार की बुनियाद रखी। इस हुकूमत के नेता सुन यातसेन थे और इसकी राजधानी नानजिंग शहर को बनाया गया। यह हुकूमत 1912 से 1949 तक क़ायम रही। दूसरी चीन-ओ-जापान जंग के दौरान नानजिंग ही क्योमिनटांग की राजधानी थी। जंग से पहले नानजिंग की आबादी लगभग ढाई लाख थी लेकिन जंग के दौरान शरणार्थियों की बड़ी तादाद आने की वजह से उसकी आबादी दस लाख से भी ज़्यादा हो गई। जब जापान का बीजिंग और शंघाई शहरों पर क़ब्ज़ा हो गया तो उन्होंने नानजिंग का रुख किया जो क्योमिनटांग का सबसे बड़ा गढ़ था और राजधानी भी। जापान का अंदाज़ा था कि वो पूरे चीन पर बहुत जल्द क़ब्ज़ा कर लेगा लेकिन यह लड़ाई लंबी होती गई इस लिए जापानियों में चिढ़ पैदा हो गई और उन्होंने चीनियों के ख़िलाफ़ सख़्त व्यवहार अपनाया ताकि चीनियों की हिम्मत टूट जाए और वो जल्द हथियार डाल दें, इस लिए उन्होंने 'हत्या नीति' Killing Policy अपनाई यानी ज़्यादा से ज़्यादा हत्या करो, चुनांचे उन्होंने अंधाधुंध चीनियों की हत्या करना शुरू कर दी और औरतों का बलात्कार शुरू कर दिया। शुरूआत में बीजिंग और शंघाई में उनका रवैया नरम था लेकिन नानजिंग पहुंचते पहुंचते वो पूरी तरह ख़ूँख़ार हो चुके थे। जब जापानी फ़ौज नानजिंग की तरफ़ बढ़ रही थी तो रास्ते में जो भी चीनी मिल जाता था उसे क़त्ल कर देते,

इस तरह नानजिंग पहुंचने से पहले ही वो हज़ारों चीनियों को मार चुके थे। जापानी फ़ौज की 10 वीं बटालियन ने सबसे पहले नानजिंग पहुंचने की कोशिश की ताकि वो सबसे पहले लोगों को क़त्ल और लूट सकें और औरतों का बलात्कार कर सकें। इसी दौरान दो जापानी फौजियों तोशियाकी मुकई Toshiaki Mukai और त्सुयोशी नोडा Tsuyoshi Noda में मुक़ाबला हुआ कि कौन अपनी तलवार से 100 लोगों को पहले क़त्ल करेगा। लेकिन दोनों ने 100 से ज़्यादा लोगों की हत्या की, मुकई ने 106 और नोडा ने 105 लेकिन यह फ़ैसला नहीं हो पाया कि किस ने पहले क़त्ल किया या कौन जीता और कौन हारा तो फिर दोनों ने 150 आदमियों की शर्त लगाई। इसी दौरान उनके अफ़सरान को इसकी ख़बर हो गई और दोनों को गिरफ़्तार कर लिया गया, बाद में दोनों को सज़ा-ए- मौत हुई। यह ख़बर जापान के दो अख़बारों ओसाका मैनिची शिंबुन Osaka Mainichi Shimbun और टोक्यो नीचि नीचि शिंबुन Tokyo Nichi Nichi Shimbun में 1937 में छपी।[316]



गिरफ़्तारी के बाद ली गई दोनो जापानी सैनिकों की तस्वीरें

चुनांचे 9 दिसंबर 1937 को जापानी फ़ौज नानजिंग पहुंच गई और शहर का घिराव कर लिया। इसी दौरान एक जर्मन अफ़सर जॉन राबे John Rabe ने कुछ दिन के लिए जंग बंदी कराने की कोशिश की लेकिन नाकामी हुई। नानजिंग में जो यूरोपीय लोग रह रहे थे उन लोगों ने अपने लिए एक सुरक्षित क्षेत्र Safety Zone बनाने का अनुरोध किया जिसे जापान ने मंजूर कर लिया और एक इलाक़े को 'सेफ़्टी ज़ोन' के नाम से आरक्षित कर दिया गया जिसकी क्षेत्र सीमा की पहचान रेडक्रॉस के झंडे लगा कर की गई। नानजिंग शहर एक ऊंची दीवार से घिरा हुआ था। दोपहर को जापानियों ने शहर में पर्चे फेंके और 24 घंटे के अंदर हथियार डालने की मोहलत दी। लेकिन समय सीमा में कोई जवाब नहीं आया तो जापानियों ने एक घंटे और इंतज़ार किया इसके बाद कमांडर इवान मात्सुई Iwane Matsui ने हमले का हुक्म-जारी कर दिया और जापानी फ़ौज ने कई तरफ़ से शहर पर हमला शुरू कर दिया। जापानियों के पहुंचने से पहले ही ज़्यादातर चीनी फ़ौज और अफ़सरान, ख़ासकर चियांग काई शेक और उसके साथी शहर से फ़रार हो चुके थे और जो बचे वो ज़्यादा क़ाबिल नहीं थे, बल्कि बहुत से चीनी फौजियों ने भेस बदलने के लिए शहरियों के कपड़े उतरवा कर पहन लिए और उन्हें नंगा कर दिया जिसने विरोध किया उसको गोली मार दी गई। 12 दिसंबर तक पूरी शिद्दत से जापानियों ने शहर पर बमबारी शुरू कर दी जिसमें हज़ारों शहरी मारे गए। 13 दिसंबर को 6 वीं और 116 वीं यूनिट सबसे पहले नानजिंग में दाख़िल हुई और यांग्त्ज़ी नदी में भी दो जापानी जंगी बेड़े आ चुके थे। जापानियों को शहर में किसी मुज़ाहमत (विरोध) का सामना नहीं करना

पड़ा इस लिए उनके हौसले और ज़्यादा बढ़ गए और जापानी फ़ौजी बीस बीस, तीस तीस की टोलियां बनाकर पूरे शहर में फैल गए और हर शख़्स को क़त्ल करना शुरू कर दिया। किसी को नहीं बख़्शा मर्द, औरतें, बूढ़े बच्चे सब बराबर थे, वही लोग बच पाए जिनको मरा हुआ समझ कर छोड़ गए। जापानियों की राइफ़लों के आगे लंबी लंबी छुरियाँ लगी होती थीं जिनको संगीन bayonet कहा जाता है। ज़्यादातर लोगों को इन छुरियों से गोद कर मारा गया। घरों में घुस कर सब मर्दों और बच्चों को पहले मारा जाता और फिर औरतों को बलात्कार के बाद क़त्ल किया जाता। सो-सौ आदमियों को एक साथ बांध कर या तो सब की गर्दन मार दी जाती या गोली मार दी जाती या फिर पेट्रोल डाल कर आग लगा दी जाती। जापानी फौजियों में होड़ लगी हुई थी कि कौन ज़्यादा पीड़ाजनक तरीक़े से क़त्ल करता है। सारे गढ़े, गटर, नाले और सड़कें लाशों से पट गए तो जापानियों को भी चलने फिरने में दिक्कत होने लगी इस लिए उन्होंने दूसरे तरीक़े अपनाने शुरू कर दिए, बहुत से लोगों को इकट्ठा कर के यांग्त्ज़ी नदी के किनारे ले जाते और सबको क़त्ल कर के लाशों को दरिया में बहा देते जिससे नदी का पानी कई दिन तक लाल रहा। कभी चीनियों को बड़े बड़े गढ़े खोदने का हुक्म दिया जाता और उन गढ़ों में, उन्हीं लोगों को डाल कर ज़िंदा दफ़न कर दिया जाता। लेकिन सबसे ज़्यादा अफ़सोसनाक हालात औरतों के रहे, 20,000 से 30,000 के दरम्यान औरतों को बलात्कार के बाद क़त्ल कर दिया गया। कई दफ़ा औरतों के गुप्तांग में डंडे या पाइप डाल कर पीड़ा दी जाती उसकी तस्वीरें भी इंटरनेट पर मौजूद हैं, इस लिए नानजिंग नरसंहार को नानजिंग का

रेप Rape of Nanking भी कहा जाता है। कई मौक़ों पर बेटों को मजबूर किया गया कि वो माँ से ज़िना करें और बाप को मजबूर किया गया कि अपनी बेटी से। नानजिंग के बाहर आदमी के क़द से भी ऊंचा लाशों का ढेर देखा गया। नरसंहार का यह सिलसिला लगभग 6 हफ़्तों तक जारी रहा। लाशों के सड़ने की वजह से महामारी फैल गई जिससे और भी बहुत से लोग मारे गए। जिन लोगों के सामने उनके क़रीबी रिश्तेदारों को क़त्ल किया गया उनमें से बहुत से पागल हो गए या दिमाग़ी मरीज़ हो गए, ऐसे लोगों की तादाद भी हज़ारों में थी। इतिहासकारों का अंदाज़ा है कि इस घटना में सिर्फ नानजिंग में लगभग 3 लाख लोग मारे गए। मुसलमानों को भी नहीं बख़्शा गया क्यों की मुसलमानों ने भी चीनियों का साथ दिया था। नानजिंग में एक इलाक़े का नाम डांचांग हुई ऑटोनोमस काउंटी Dachang Hui Autonomous County है, जहां पर मुसलमानों की घनी आबादी थी और कई मस्जिदें थीं लेकिन वहां पर भी जापानियों ने खुल कर तबाही मचाई और अंधाधुंध लोगों को क़त्ल किया, बहुत से मुसलमान जान बचाने के लिए मस्जिदों में घुस गए लेकिन वहां भी नहीं बख़्शा और मस्जिदें मुसलमानों की लाशों से पट गईं और कई मस्जिदें नष्ट कर दी गईं।[317]

जापानियों का मुसलमानों पर अत्याचार

दूसरी चीन-ओ-जापान जंग के दौरान, जापानियों ने हुई मुसलमानों के खिलाफ "हत्या नीति" "killing policy" अपनाई और कई मस्जिदों को नष्ट किया। वान लेई Wan Lei के अनुसार, "आंकड़ों से पता चला है कि जापानियों ने अप्रैल

1941 तक 220 मस्जिदों को नष्ट कर दिया था और अनगिनत हुई लोगों को मार डाला था। नानजिंग के बलात्कार Rape of Nanjing के बाद, नानजिंग में मस्जिदें शवों से भरी हुई पाई गईं। जापानियों ने आर्थिक उत्पीड़न economic oppression की नीति भी अपनाई, जिसमें मस्जिदों और हुई आबादियों को नष्ट करके कई हुई लोगों को बेरोजगार और बेघर कर दिया गया। जानबूझकर अपमानित करने की अन्य नीतियों में सैनिकों द्वारा मस्जिदों में सूअर की चर्बी डालना, हुई लोगों को सूअर काटने और सैनिकों को खिलाने के लिए मजबूर करना शामिल था। इस के अलावा हुई लड़कियों को कथित तौर पर गीशा geishas और गायिका की ट्रेनिंग देने के बहाने ले जाया जाता था लेकिन वास्तव में उन्हें सेक्स गुलाम sex slaves या सेविका comfort women बनाया जाता था।[318] कई हुई कब्रिस्तानों को सैन्य कारणों से नष्ट कर दिया गया।[319]

एक दुखद घटना

अमरीकी पादरी जॉन मैगी John Magee जिनका संबंध अमेरिकन एपिस्कोपल चर्च मिशन American Episcopal Church Mission से था, ने चीनियों पर जिनमें मुसलमान चीनी भी थे, जापानियों के निर्दयता की बहुत सी वीडियो और तस्वीरें ली थीं और बहुत से मज़ालिम (यातनाओं) की तफ़सीलात लिखी थीं उनमें से एक घटना को यहां पेश किया जाता है, '13 दिसंबर 1937 को लगभग 30 जापानी फ़ौजी मकान नंबर 5 के दरवाज़े पर पहुंचे जो नानजिंग के दक्षिण पूर्व में स्थित था, और दरवाज़ा खटखटाया।[320]

अंदर से एक मुस्लिम शख़्स जिसका नाम हा Ha था, ने दरवाज़ा खोला लेकिन वो जापानी फौजियों को देखते ही समझ गया और डर कर जल्दी से पीछे भागा लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, जापानियों ने उसे रिवाल्वर से क़त्ल कर दिया। उसकी बीवी यह मंज़र देखकर घुटनों पर बैठ कर फौजियों की ख़ुशामद करने लगी कि किसी और को क़त्ल न करें और रोते हुए अपने शौहर के क़त्ल की वजह पूछी जापानियों ने उसको भी रिवाल्वर से क़त्ल कर दिया। फिर जापानी एक कमरे में दाख़िल हुए जहां पर एक ख़ातून हसिया Mrs. Hsia अपने एक साला बच्चे के साथ टेबल के नीचे छिपी हुई थी। जापानी उसे खींच कर बाहर लाए और उसके हाथ से बच्चे को छीना और फिर उस ख़ातून को निर्वस्त्र किया और एक से ज़्यादा लोगों ने उसका बलात्कार किया और उसका सीना छुरी से गोद कर उसे क़त्ल कर दिया (याद रहे कि जापानियों की राइफ़लों के आगे बड़ी बड़ी छुरियां लगी होती थीं जिनको संगीन bayonet कहा जाता है। ज़्यादातर जापानी उन्हीं छुरियों से लोगों को क़त्ल करते थे क्यों कि इस से उनका कारतूस का ख़र्चा बच जाता था। और उसके गुप्तांग में एक बोतल दाख़िल की। उसके बच्चे को भी छुरी से गोद कर क़त्ल कर दिया। इसके बाद जापानी दूसरे कमरे में दाख़िल हुए जहां पर हसिया के माता पिता जिनकी उम्र 74 और 75 साल थी और हसिया की तीन बेटियां जिनकी उम्र 8,14,16 साल थी मौजूद थीं। फौजियों ने बड़ी दो बच्चियों की इस्मतदरी (बलात्कार) करने की कोशिश की तो दादी ने उनको बचाने की कोशिश की तो फौजियों ने उसे भी रिवाल्वर से क़त्ल कर दिया, तो दादा ने अपनी बीवी की लाश को अपनी गोद में ले लिया लेकिन

फौजियों ने उन्हें भी क़त्ल कर दिया। इसके बाद बच्चियों को निर्वस्त्र कर के इस्मतदरी की गई बड़ी वाली की 2 या 3 लोगों ने और छोटी वाली की 3 लोगों ने। इसके बाद बड़ी वाली के गुप्तांग में एक पाइप दाख़िल किया और फिर छुरी से गोद कर क़त्ल कर दिया गया और, छोटी बहन को भी छुरी से गोदा गया लेकिन इतनी बुरी तरह से नहीं। इसके बाद फौजियों ने 8 साला बच्ची को छुरियों से गोदा लेकिन वो बच गई। आख़िरी क़त्ल दो कम-सिन बच्चों का किया गया जिनकी उमरें 4 और 2 साल थीं, बड़े वाले को छुरियों से गोद कर क़त्ल किया गया और छोटे वाले के सर में तलवार मारी गई जिससे उसके सर के दो हिस्से हो गए। 8 साला बची जो बच गई थी ज़ख़मी हालत में घिसटते हुए दूसरे कमरे में गई जहां पर उसकी माँ हसिया की लाश पड़ी हुई थी लेकिन कोई और ज़िंदा नहीं बचा था सिवाए उसकी 4 साला बहन के जो किसी वजह से बच गई थी। यह दोनों बच्चे यहीं पर 14 दिनों तक छिपे रहे और मुरमुरों पर गुज़ारा करते रहे, बच्चों ने बताया कि जापानी फ़ौजी रोज़ाना यहां आते हैं और चीज़ें लूट कर चले जाते हैं, जबकि बच्चे किसी पुरानी जगह में छिप जाते हैं। उनके बहुत से पड़ोसी जो फ़साद से पहले ही शरणार्थी कैम्पों में पनाह ले चुके थे उनमें से एक औरत 14 दिन बाद अपने घर वापस हुई तो उसने इन दोनों बच्चों को वहां पाया, उस ख़ातून को भी तस्वीरों में देखा जा सकता है। उसी से जॉन मैगी को वाक़े की तफ़सीलात हासिल हुई और जॉन मैगी ने तस्वीरें भी लीं जिनमें 14 और 16 साल की लड़कियों की लाशों को देखा जा सकता है और आख़िरी तस्वीर में हसिया और उसके 1 साला बच्चे की लाश दिखाई गई

है। वो 8 साला बच्ची 2014 में 83 साल की हो गई थीं और उनका नाम शूचिन शिया Shuqin Xia है इंटरनेट पर उनके बहुत से इंटरव्यू की वीडियो भी मौजूद हैं।[321]



इस तस्वीर में 14 और 16 साल की लड़कियों के शव देखे जा सकते हैं। फोटो में उस महिला को भी देखा जा सकता है जिसने घटना की जानकारी जॉन मैगी को दी।



2014 में ली गई एक तस्वीर में 83 वर्षीय शूचिन शिया

अध्याय 12
मा क्लीक़

第十章
馬家軍

Chapter Twelve
Ma Clique



1916-1920 के दरम्यान चीन का नक्शा: मा क्लीक़ को देखा जा सकता है।[322]

China from 1916 to 1920: Ma Clique in Dark Green Colour



मा क्लीक़ का झंडा

मा क्लीक़ का परिचय

युआन शिकाई के इंतकाल के बाद चीनी फ़ौज के बहुत सारे जनरलों ने अपनी अपनी आजादी का ऐलान कर दिया और जंगी सरदार बन गए इस लिए इस दौर को जंगी सरदारों का दौर Warlord era (军阀时代 Jūnfá shídài) कहा जाता है, यह लोग अपनी अपनी फ़ौज लेकर अपने इलाक़ों में चले गए और वहां अपनी छोटी छोटी हुकूमतें क़ायम कर लीं। उनमें से कुछ हुकूमतें चियांग काई शेक की उत्तरी अभियान तक Northern Expedition (1926–27) क़ायम रहीं और उत्तरी अभियान के बाद चियांग की हुकूमत में शामिल हो गईं और कुछ हुकूमतें चीन में कम्युनिस्ट इन्क़लाब 1949 (Communist Revolution) तक क़ायम रहीं और इस के बाद चीन की हुकूमत में मिल गईं। इन छोटी हुकूमतों को गुट्ट, मंडली या क्लीक़ Clique कहा जाता था। इन क्लीक़ों की तादाद लगभग 30 थी जिनमें 'मा क्लीक़' Ma clique (1919-1928 CE) मुसलमानों की क्लीक़ थी। लफ़्ज़ 'मा' चीनी भाषा में 'मुहम्मद' का मुख़फ़्फ़फ़ (संक्षेपाक्षर) (abbreviation) है। मा क्लीक़, कोई एक हुकूमत नहीं है बल्कि यह तीन ख़ानदानों की हुकूमत का सामूहिक नाम है जो चीन के तीन उत्तर पश्चिमी प्रांतों में स्थापित हुईं। इन प्रांतों के नाम हैं गान्सू, निंगशिया और चिंगहाई। इन तीनों रियासतों के आख़िरी शासक मा बुफ़ांग Ma Bufang, मा होंगकुई Ma Hongkui और मा होंगबिन Ma Hongbin को मिलाकर 'उत्तर पश्चिमी के तीन

मा’ Xibei San Ma भी कहा जाता था, कुछ लोगों ने चार मा कहे हैं और उनमें मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying को भी शामिल किया है। हालाँकि मा ज़ोंगयिंग की कोई अलग हुकूमत नहीं थी, हुकूमतें सिर्फ तीन ही थीं। इन तीनों हुकूमतों ने चियांग काई शेक से गठबंधन किया और समाजवादियों (कम्युनिस्टों) की मुख़ालिफ़त की। इन तीनों ने दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में भी क़ाबिल-ए-क़दर ख़िदमात अंजाम दीं और जापानियों को बहुत से मोर्चों पर हराया।

मा क्लीक़ की शुरुआत

मा क्लीक़ की इन तीन सरकारों (गान्सू, निंगशिया और चिंगहाई) का आरंभ ‘डुंगन विद्रोह’ Dungan revolt से हुआ जब इन तीनों के सरदारों ने डुंगन विद्रोह के दौरान चिंग फ़ौज के आगे हथियार डाले और फिर उस से गठबंधन कर लिया और डुंगन विद्रोह को कुचलने में चिंग हुकूमत की मदद की, और उस के बाद बॉक्सर विद्रोह Boxer Rebellion में भी चिंग हुकूमत की बेपनाह मदद की जिसका ज़िक्र ऊपर आ चुका है। चुनांचे 1911 में जब चिंग साम्राज्य का पतन हुआ और युआन शिकाई की हुकूमत की स्थापना हुई तो यह लोग युआन के वफ़ादार बन गए तो युआन ने मा फ़ूशियांग को उस की वफ़ादारी की वजह से निंगशिया के इलाक़े का शासक बना दिया, और मा अनलियांग को गान्सू का, इसी तरह मा ची को चिंगहाई का इलाक़ा मिल गया। याद रहे कि मा फ़ूशियांग, मा चियानलिंग का बेटा था। मा अनलियांग मा ज़ानाओ का बेटा था और मा ची, मा हाईयान का बेटा था, और इन तीनों सरदारों (मा चियानलिंग, मा

ज़ानाओ और मा हाईयान) ने डुंगन विद्रोह को कुचलने में चिंग हुकूमत की मदद की थी।

1911 के लोकतांत्रिक इन्क़लाब में इन मुस्लिम जंगी सरदारों ने इन्क़लाब में पूरा हिस्सा लिया बल्कि उस वक़्त के मा क्लीक़ के सरदार मा ची Ma Qi ने अपने सियासी प्रभाव और जोड़ तोड़ को इस्तेमाल कर के तिब्बतियों और मंगोलों को भी आमादा किया कि वो लोकतांत्रिक हुकूमत का साथ दें। माची ने अपना नारा 'राजा सलामत रहे' Long, Long, Long, Live the reigning Emperor को बदल कर 'चीनी लोकतंत्र सलामत रहे' Long live the Republic of China कर दिया। बॉक्सर विद्रोह के दौरान इन मुस्लिम जनरलों की एक संगठित फ़ौज भी थी जिसे कान्सू ब्रेव्स Kansu braves या गान्सू ब्रेव्स Gansu Braves कहा जाता था।

यह फ़ौज अंत तक चिंग हुकूमत और उसके बाद युआन शिकाई और इसके बाद चियांग काई शेक की क्योमिनटांग पार्टी की वफ़ादार रही, लेकिन 1949 में साम्यवादी इन्क़लाब (communist revolution) के मुक़ाबले में न टिक सकी और कम्युनिस्टों ने उसको ख़त्म कर के उसके इलाक़े अपनी हुकूमत में शामिल कर लिए। उसके सरदार या तो देश से फ़रार हो गए या कम्युनिस्टों से गठबंधन कर लिया या फिर मौत के घाट उतार दिए गए।

मा टिंगशियांग का विद्रोह

1911 CE में चीन में शाही हुकूमत के ख़ातमे के बाद बेयांग हुकूमत Beiyang government बनी जिसका प्रमुख युआन शिकाई था। इसी दौर में 1920 CE में फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang ज़िली क्लीक़ Zhili clique का एक आला ओहदेदार बन गया। उस को ज़िली क्लीक़ इस लिए कहा जाता था क्यों कि यह ज़िली नाम के इलाक़े में क़ायम थी। 1922 CE में ज़िली क्लीक़ ने फ़ंगटियान क्लीक़ को शिकस्त दी उस वक़्त फ़ंगटियान क्लीक़ का नेतृत्व ज़ांग ज़ोलिन कर रहा था जो ज़ांग शूलियांग का बाप था। यह लड़ाई पहली ज़िली-फ़ंगटियान जंग First Zhili–Fengtian War कहलाती है। यही वो वक़्त था जब फ़ंग यूशियांग सोवियत यूनियन के बहुत क़रीब आ गया था। लेकिन बाद में ज़िली क्लीक़ के दूसरे अहम अफ़सर वू पीफ़ू Wu Peifu ने फ़ंग यूशियांग को डिमोट demote कर दिया और बीजिंग तैनात कर दिया। जहां फ़ंग यूशियांग ने 1923 CE में सुन यातसेन के साथियों हू जिंगई Hu Jingyi और शू यू Xue Yue के साथ साज़-बाज़ कर के ज़िली क्लीक़ के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया और उस के अफ़सरान वू पीफ़ू और काओ कुन Cao Kun का तख़्ता उलट दिया और बीजिंग से उनको भगा कर सुन यातसेन की हुकूमत बीजिंग में स्थापित करा दी। याद रहे काओ कुन ज़िली क्लीक़ का जंगी सरदार था और बेयांग हुकूमत का सदर था 1923 और 1924 CE के दरम्यान।

गान्सू में मुस्लिम विरोधी दंगे

Anti-Muslim Riots in Gansu (1927–1930)

इस लिए सुन यातसेन की मृत्यु के बाद फ़ंग यूशियांग चीन का सबसे ताक़तवर अफ़सर बन गया और कई इलाक़ों पर उस का क़बज़ा हो गया जिसमें गान्सू भी शामिल था जो एक मुस्लिम बहुसंख्यक इलाक़ा था और पहले वहां का गवर्नर मा अनलियांग था। फ़ंग यूशियांग ने गान्सू का गवर्नर लियू यूफ़ैन Liu Yufen को बना दिया। इसी दौरान फ़ंग यूशियांग ने अपनी अलग फ़ौज भी बनाई जिसका नाम उसने गोमिनजुन Guominjun रखा।

लेकिन फ़ंग यूशियांग को पैसे की सख़्त ज़रूरत थी चुनांचे उसने एक फ़ौजी फ़रमान जारी किया कि ताजिरों से मज़ीद महसूल लिया जाए। याद रहे कि उत्तर और पश्चिम चीन में मुसलमानों की तादाद ज़्यादा है और वो अक्सर तिजारत पेशा है, लेकिन उनको ये महसूल बहुत भारी लगा, इस लिए उन्होंने महसूल अदा करने से इनकार कर दिया। उनका महसूल की अदायगी से इनकार करना गोया खुला विरोध था जिससे अप्रत्यक्ष Indirect फ़ंग यूशियांग के मुक़ाबले में केंद्र सरकार यानी चियांग काई शेक की मदद होती थी। इसी के साथ ही गान्सू की मुस्लिम अवाम भी लियू यूफ़ैन और इस की फ़ौज गोमिनजुन के ख़िलाफ़ थी कि हान लोग हमारे ऊपर हुकूमत कर रहे हैं। उनको ख़ुश करने के लिए लियू यूफ़ैन ने अपने सारे हान अफ़सरों को गान्सू से निकाल दिया। कहा जाता है कि इस में मा ची का भी बहुत बड़ा किरदार था क्योंकि उन्होंने फ़ंग यूशियांग के

दुश्मन वू पीफ़ू से ताल्लुक़ात क़ायम कर लिए थे जिसके दबाओ में आकर फ़ंग यूशियांग ने सब हान अफ़सरों और जंगी सरदारों को गान्सू ने निकाल दिया। इन सब के बावजूद फ़ंग यूशियांग को अपनी शक्ति और सैन्य कौशल पर भरोसा था। इस लिए उसने गान्सू पर चढ़ाई कर दी, जब उस की फ़ौज ने गान्सू की तरफ़ कूच किया तो वहां के दो मुस्लिम नौजवानों ने यानी मा टिंगशियांग Ma Tingxiang (Ma T'ing-hsiang) और मा जोंगयिंग मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए। याद रहे मा टिंगशियांग गान्सू के पूर्व गवर्नर मा अनलियांग के बेटे थे। फ़ंगटियान क्लीक़ Fengtian clique जो फ़ंग यूशियांग की दुश्मन थी उसने भी अपने अफ़्सर ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin के ज़रिये मा टिंगशियांग को असलह भिजवाया।

मुसलमानों की तादाद अगरचे काफ़ी की थी और उनमें जोश भी था लेकिन वो जदीद तालीम से महरूम थे और जंग में फ़ंग यूशियांग का मुक़ाबला नहीं कर सकते थे क्योंकि उस की सारी ज़िंदगी मैदान ए जंग में गुज़री थी और गान्सू के मुसलमानों को जदीद फ़ौजी निज़ाम से अच्छी तरह वाक़फ़ियत नहीं थी। इस के इलावा एक बात ये भी थी कि मुसलमानों के पास जंग का सामान और रसद बहुत कम था इस लिए अगरचे उन्होंने निहायत हिम्मत से फ़ंग यूशियांग का मुक़ाबला किया मगर आख़िर कार शिकस्त खानी पड़ी और मुसलमानों का मरकज़ हीज़ू जिसको अब लिनशिया कहा जाता है फ़तह हो गया। फ़ंग यूशियांग ने वहां पहुंच कर तीन हज़ार मुसलमानों को शहीद कर डाला और हीज़ू को बिलकुल तबाह कर दिया। हीज़ू शहर का जो बा फ़ांग Ba Fang (Eight

Sectors) इलाक़ा कहलाता था वो पूरी तरह जल कर ख़ाक हो गया। मा लिन जो निंगशिया का मुस्लमान गवर्नर था, वो अभी तक फ़ंग यूशियांग की तरफ़ से लड़ रहा था उसने मा टिंगशियांग को शिकस्त दी।[323]

लिंटान में दंगा

मुस्लमान जनरल मा जोंगयिंग और मा टिंगशियांग शिकस्त खाने के बाद हीज़ू से लिंटान चले आए और वहां अपने पांव जमाने की कोशिश की। इन का ख़्याल था कि वहां वो महफ़ूज़ रहेंगे मगर उनको क्या ख़बर थी कि बदक़िस्मती वहां भी उनका पीछा कर रही है और जिसको उन्होंने सलामती का मुक़ाम समझा था दर हक़ीक़त सख़्त अज़ाब का मुक़ाम साबित होगा। उनको हीज़ू से भाग कर लिंटान आए हुए चंद रोज़ भी नहीं गुज़रे थे कि इस छोटी सी बस्ती में एक सियासी तूफ़ान उठा। इस तूफ़ान में बहुत सी जानें और कसरत से माल तबाह और अक्सर लोग इस में ग़ारत हो गए। याद रहे लिंटान को ताओज़ू (Taozhu) भी कहा जाता है। इस शहर में 70 हज़ार मुस्लमान आबाद थे पचास हज़ार शहर के अंदर हैं और बीस आस पास के दिहात में ये सब मेहनती ताजिर थे। यहां बहुत सी मस्जिदें थीं जो मस्जिद उलया, मस्जिद सफली और मस्जिद अरबी के नामों से मशहूर थीं। मस्जिद उलया क़दीम फ़िर्क़े की थी, मस्जिद सुफली जदीद फ़िर्क़े की और मस्जिद अरबी एक मालदार मुस्लमान मा मिनज़ैन (मुहम्मद नज़र करामत) की तामीर करदा थी, उस की इमारत बहुत शानदार थी। पीली नदी (Yellow river) के उत्तर में ऐसी आलीशान मस्जिद शाज़-ओ-नादिर ही नज़र आती थी। इस मस्जिद में एक बड़ा ऐवान तक़रीर करने वालों

के लिए था, इसी में शिक्षकों के लिए एक स्कूल, एक महिला मदरसा, एक महिला मस्जिद और एक रसोईघर था इनके इलावा मेहमान ख़ाना और ग़ुस्ल-ख़ाना भी था जिसमें पानी के नल लगे हुए थे। और उसका बगीचा भी देखने लायक था, मा मिनज़ैन अपनी जेब से इस को चलाता था और तरक़्क़ी के लिए कोशिश करता था लेकिन 1929 CE के दंगे में ये सब चीज़ें ख़ाक में मिल गईं। चुनांचे जब मुस्लिम जनरल मा जोंगयिंग, फ़ंग यूशियांग से शिकस्त खा कर लिंटान चला आया और यहां अपने पांव जमाने की कोशिश की। तो वो यहां के मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों को एक नज़र से देखता था।

वहां शांति व्यवस्था बनाने के लिए उसने कुछ कम कोशिश न की इस के मातहत जो मुस्लमान फ़ौज थी उन्होंने सिवाए सामान आपूर्ति के, जनता पर किसी किस्म की टैक्स नहीं लगाया, इसी दौरान मा जोंगयिंग ने एक कॉन्फ्रेंस आयोजित की जिसमें मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों को एक साथ दावत दी इस कान्फ्रैंस आयोजित करने का मक़सद ये था कि मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों में जो नफ़रत पैदा हो चुकी थी वो दूर की जाए। और वो इस में कामयाब रहा और उस का आना और वहां रहना ग़ैर मुस्लिमों को नागवार नहीं गुज़रा। लेकिन बाद में जनरल मा टिंगशियांग भी लिंटान की तरफ़ चला आया। उस के साथ उस के परिवार के सदस्य और दस बीस नौकर-चाकर के सिवा कुछ न था और ना कोई फ़ौज साथ थी, लेकिन लिंटान की सरहद पर एक ग़ैर मुस्लिम जनरल यांग ज़ी सी नामी था और उस के मातहत काफ़ी फ़ौज थी। जब मा टिंगशियांग इस रास्ते से गुज़र रहा था तो यांग ज़ी सी ने देखा कि मा टिंगशियांग के पास

कुछ रुपया और ज़ेवरात हैं तो उस को लालच आया और उसने फ़ौरन अपनी फ़ौजों को हुक्म दिया कि मा टिंगशियांग के क़ाफ़िले को रोके और उस का सामान छीन ले। इस हमले में मा टिंगशियांग के पास जो कुछ था और उस के परिवार के सदस्य सब दुश्मन फ़ौजों के क़बज़े में चले गए, सिर्फ़ वो ख़ुद बच पाया। बाद में उसने अपनी मुंतशिर फ़ौजों को जमा करके लिंटान की फ़ौजों पर हमला कर दिया, बीस रोज़ तक लड़ता रहा लेकिन नाकाम हुआ, आख़िर वो हियाख़ू की तरफ़ चला गया। उस के जाते ही यांग ज़ी सी की फ़ौजों ने इर्द-गिर्द के मुसलमानों से बदला लेना शुरू कर दिया क्यों कि मा टिंगशियांग मुस्लमान था। इस मौक़ा पर आस पास के मुस्लमान जो इस हमले में क़तल हुए उनकी तादाद पाँच हज़ार से ज़्यादा थी।

वहां के बड़े बड़े मुसलमानों ने ये देखकर इस दंगे को रोकने की कोशिश की, उन्होंने अपने नुमाइंदे लिंटान के हाकिम के पास भेजे, शुरू में उसने ये बहाना बनाया कि वो यांग ज़ी सी का मुक़ाबला नहीं कर सकता क्यों कि शहर में जो फ़ौज है वो बहुत कम है और सामान रसद भी नहीं है। मगर वहां के कई मालदार मुसलमानों ने अपनी जायदाद और जानवर, फ़ौज की मदद के लिए दे दिए, इस उम्मीद पर कि मुक़ामी शासक फ़ांग फुआन चांग वहां शांति स्थापित करेगा। मा मिनज़ैन (मुहम्मद नज़र करामत) ने अकेले 100 घोड़े और 80 हज़ार डॉलर फ़ौजी इमदाद के लिए दिए। मुक़ामी हुक्काम ने मदद मिलने पर हुक्म-जारी किया कि शहर के अंदर सबको अमान है जो क़तल करेगा इस से बदला लिया जाएगा और जो ग़ारतगरी करेगा उसे सख़्त सज़ा दी जाएगी। इस लिए शहर में

अमन बहाल हो गया। इस के बाद 1929 CE मैं मा जोंगयिंग ने नानजिंग जा कर क्योमिनटांग से हाथ मिला लिया और क्योमिनटांग में शमूलियत इख़्तियार कर ली। चियांग काई शेक ने उस को वामपोआ wampoa मिलिट्री एकेडमी में दाख़िल कर लिया और जनरल बना दिया और शिंजियांग में क्योमिनटांग के लिए काम करने पर उस को आमादा किया। इस के बाद मा जोंगयिंग ने मा लिन को शिकस्त दी जो दुबारा से हीज़ू पर क़बज़ा करना चाह रहा था। इसी दौर में ये नारा दिया गया कि न हुई को मरो न हान को मारा सिर्फ़ गोमिनज़ुन को मारो (don't kill Hui, don't kill Han, only kill the officers of Guominjun" "不杀回，不杀汉，只杀国民军的办事员")। इसी दौर में मा जोंगयिंग ने ताओज़ू (लिंटान) में शीडाओटांग मुस्लिम संप्रदाय के मर्कज़ पर हमला किया जिसका ज़िक्र अलग आ चुका है। इस जंग के बाद मा ची, मा लिन और मा बुफ़ांग ने फिर से क्योमिनटांग से अपनी वफ़ादारी का नवीनीकरण किया क्योंकि गोमिनज़ुन को शिकस्त हो चुकी थी। चियांग काई शेक के हाथों 1930 CE में फ़ंग यूशियांग और यान शि शान की शिकस्त को जंगी सरदारों के दौर का अंत माना जाता है।[324]

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि लियू यूफ़ैन ने सारे हान अफ़सरों को इस इलाक़े से निकला दिया था इस लिए सिर्फ मुस्लिम जंगी सरदार ही गान्सू में बच्चे और उनकी हुकूमत पूरे गान्सू पर क़ायम हो गई जिसको मा क्लीक़ कहा जाता है, जो 1949 CE में कम्युनिस्ट हुकूमत बनने तक क़ायम रही। ये मुस्लिम जंगी सरदार थे मा होंग बिन, मा लिन, मा होंग कुई, मा मा बुफ़ांग वग़ैरा।[325]

Ma Hongbin, Ma Lin, Ma Hongkui, Ma Bufang
अब हम मा क्लीक़ की इन तीनों हुकूमतों का अलग अलग ज़िक्र करेंगे।

निंगशिया

मा होंगकुई निंगशिया के शासक थे और दौलत और इलाक़े के एतबार से तीनों मा में सबसे ज़्यादा ताक़तवर माने जाते थे, उन्होंने अपनी अलग करेंसी भी बनाई थी। जब दूसरी चीन-ओ-जापान की जंग के बाद क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों के बीच दोबारा से लड़ाई छिड़ी तो मा होंगकुई ने क्योमिनटांग का साथ देते हुए कम्युनिस्टों को कई मोर्चों पर शिकस्त दी और कम्युनिस्टों को ज़बरदस्त नुक़सान पहुंचाया। मा होंगकुई को अंत में शूगर diabetes हो गई थी लेकिन वो आइसक्रीम के बहुत शौक़ीन थे और आइसक्रीम खाने की लत लग गई थी। 1949 में कम्युनिस्टों की जीत के बाद वो गुआंगज़ू Guangzhou भाग गए और इसके बाद ताइवान और इसके बाद अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को San Francisco में बस गए और वहीं 1970 में उनका इंतकाल हुआ।

गान्सू

गान्सू Gansu की यह हुकूमत (1912-1934 CE) तक क़ायम रही। यहां मा ज़ानाओ Ma Zhan'ao का ख़ानदान शासक था। इस के सबसे पहले मुखिया मा ज़ानाओ थे। उनके दो लड़के मा अनलियांग Ma Anliang और मा गोलियांग Ma Guoliang बाद में चिंग फ़ौज के जनरल बने। मा अनलियांग के 5 बेटे थे जिनमें से तीन न मालूम हैं जब कि दो थे मा टिंगशियांग Ma Tingxiang और

मा टिंगशियान Ma Tingxian। मा टिंगशियान को जनता की अदालत में 1962 में सज़ा-ए-मौत दी गई।[326] मा टिंगशियांग Ma Tingxiang, मा अनलियांग का तीसरा बेटा था। उसे फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang ने गोमिनजुन Guominjun के ख़िलाफ़ बग़ावत करने की वजह से फांसी दे दी। शुरू में मा टिंगशियांग, फ़ंग यूशियांग की गोमिनजुन पार्टी में था लेकिन बाद में उसने फ़ंग के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और चियांग काई शेक से जा मिला लेकिन बाद में चियांग ने भी उस को किसी बात पर बरख़ास्त कर दिया तो उसने फ़रार होने की कोशिश लेकिन पकड़ा गया, इस के बाद फ़ंग यूशियांग ने उस को फांसी दे दी। कहा जाता है कि मा टिंगशियांग Ma Tingxiang और उस की मुस्लिम फ़ौज ने बग़ावत के दौरान लाबरांग मोनास्टरी, ताओज़ू और कौन मोनास्टरी में तिब्बती बौद्धों के ख़िलाफ़ सख्त कार्यवाहियां की थीं। Chone Monastery, Taozhou and Labrang Monastery।

मा ज़ानाओ के ख़ानदान के कुछ अफ़राद

मा ज़ानाओ Ma Zhanao

मा अनलियांग Ma Anliang

मा गोलियांग Ma Guoliang

मा सुई लियांग Ma Suiliang

मा टिंगशियांग Ma Tingxiang

मा टिंगशियान Ma Tingxian

मा टिंगबिन उर्फ़ मा चुआन चिन Ma Tingbin aka Ma Quanqin

मा जी चिन Ma Jieqin

चिंगहाई

ऊपर बयान किया जा चुका है कि मा ची Ma Qi को चिंगहाई का गवर्नर बना दिया गया था। असल में उस ज़माने में सूबों में दो बड़े ओहदे होते थे। एक तो मिलिट्री गवर्नर का तो मा ची 1915 से 1928 तक चिंगहाई के मिलिट्री गवर्नर रहे और दूसरा ओहदा होता था चेयरमैन ऑफ़ दा गवर्नमेंट (Chairman of the Government) का, तो माची 1929 से 1931 तक चिंगहाई के चेयरमैन रहे। ऐसा लगता है कि चियांग काई शेक ने चीन को अपनी हुकूमत के तहत एकजुट करने के लिए चेयरमैन का पद शुरू किया था, यानी जो जंगी सरदार क्योमिनटांग का शासन क़बूल कर लेता था उसको उसी की क्लीक़ का चेयरमैन बना दिया जाता था और मिलिट्री गवर्नर का मतलब होता था जंगी सरदार। तो क्योमिनटांग हुकूमत उस को चेयरमैन का ओहदा देती थी, लेकिन अगर वो क्योमिनटांग से आज़ाद हो जाता था तो उस का चेयरमैन का ओहदा ख़त्म कर दिया जाता था, ताहम वो अपनी क्लीक़ का मिलिट्री गवर्नर बदस्तूर रहता था। मा ची के दो बेटे थे मा बुफ़ांग और मा बूचिंग। मा ची के बाद उनके भाई मा लिन चेयरमैन ऑफ़ दा गवर्नमेंट बन गए और मा बुफ़ांग मिलिट्री गवर्नर बन गए। मा लिन 1931 से 1936 तक चिंगहाई के गवर्नर रहे। बाद में मा बुफ़ांग और मा लिन के बीच चिंगहाई का चेयरमैन बनने के लिए लड़ाई हुई जिसमें बिल-आख़िर मा बुफ़ांग जीत गए और मा लिन को ओहदे से हटना पड़ा और मा

बुफ़ांग चेयरमैन भी बन गए इस तरह मा बुफ़ांग के पास दोनों ओहदे आ गए और वो चिंगहाई के निर्विवादित (undisputed) शासक बन गए।

मा क्लीक़ के शासक

गान्सू Gansu	निंगशिया Ningxia	चिंगहाई Qinghai
Ruler: मा अनलियांग Ma Anliang 1912-1918	**Ruler: मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang 1912-1928**	**Ruler: मा ची Ma Qi 1915-1931**
Governor: मा होंगबिन Ma Hongbin November 1930 – December 1931	**मा होंगबिन Ma Hongbin (1) Governor: 7 Jan 1921 – Dec 1928 (2) Governor: 1948–1949**	
Chairman: मा होंगबिन Ma Hongbin 1921-1928		**Ruler: मा लिन Ma Lin 1931-1938**
Governor: मा ज़ोंगयिंग Ma Zongying 1929-1934	**Governor: मा होंगकुई Ma Hongkui 1931-1949**	**Ruler: मा बुफ़ांग Ma Bufang 1938-1945**

निंगशिया की मा क्लीक़

डुंगन विद्रोह के दौरान चिंग हुकूमत ने जनरल ज़ू ज़ोंगटांग Zuo Zongtang को चिंग फ़ौज लेकर डुंगन फ़ौज से मुक़ाबले के लिए भेजा। याद रहे 'डुंगन' हुई मुसलमानों का ही दूसरा नाम है जिनकी इस विद्रोह में केंद्रीय भूमिका थी इस लिए उसे डुंगन विद्रोह कहा जाता है। तो हीज़ू Hezhou में मुसलमानों का नेतृत्व ख़ुफ़िय्या सिलसिले का एक सूफ़ी मा ज़ानाओ Ma Zhan'ao कर रहा था जिसने बहुत से हान लोगों की जान भी बचाई थी। 1872 में इस ने बग़ैर लड़े शांतिपूर्वक तरीक़े से हथियार डाल दिए और जनरल ज़ू ने भी उस को कोई सज़ा नहीं दी, न ही मुस्लिम आबादी को शहर-बदर किया गया चुनांचे आज तक लिनशिया जिसको पहले हीज़ू कहा जाता था, में मुसलमानों की बड़ी आबादी है बल्कि इनाम के तौर पर जनरल ज़ू ने हीज़ू से हान आबादी को दूसरे इलाक़ों में भेज दिया और मा ज़ानाओ की फ़ौज को चिंग की सरकारी फ़ौज 'ग्रीन स्टैंडर्ड आर्मी' Green Standard Army में शामिल कर लिया। दूसरी रिवायत में यह है कि जब मा ज़ानाओ ने जनरल मा चियान लिंग और जनरल मा हाईयान के साथ ज़ू ज़ोंगटांग के आगे हथियार डालने की पेशकश करने का फ़ैसला किया तो मा ज़ानाओ ने पहले मा चिन को इस पेशकश को लेकर भेजा लेकिन ज़ू ने इस को क़बूल करने से इनकार कर दिया क्यों कि उस को उन पर शक था तो फिर उसने अपने बेटे मा अनलियांग को भेजा जिसने ज़ू से हथियार डालने की पेशकश की तो कुछ शर्तों पर ज़ू ने पेशकश क़बूल कर ली। उनमें से एक अहम शर्त यह थी कि वो लोग हीज़ू से हान लोगों को शांतिपूर्वक तरीक़े

से बाहर निकलने में मदद करेंगे। चुनांचे मा ज़ानाओ ने हान लोगों को सुरक्षित रूप से दूसरी जगह मुंतक़िल होने में मदद की। इस के अलावा 1877 में मा ज़ानाओ के साथी मा चियान लिंग ने उन लोगों को भी हीज़ू से भगा दिया जिन्होंने ने चिंग हुकूमत के आगे हथियार डालने से इनकार कर दिया था।

मा अनलियांग

मा ज़ानाओ के बाद उनके बेटे मा अनलियांग ने गान्सू की कमान संभाली। मा अनलियांग (1855- November 24, 1918) का इस्लामी नाम अब्दुल मजीद Abdul Majid (阿卜都里默直底) था। वो मा ज़ानाओ के बेटे थे और मा गोलियांग उनके छोटे भाई थे। उनका संबंध भी ख़ुफ़िय्या नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले से था। मा अनलियांग ने जनरल ज़ू ज़ोंगटांग के साथ मिलकर याक़ूब बेग के ख़िलाफ़ जंग लड़ी और उस को शिकस्त दी। जिससे याक़ूब बेग की शिंजियांग में चल रही इस्लामी हुकूमत का ख़ातमा हो गया और शिंजियांग फिर से चीनी हुकूमत के क़ब्ज़े में आ गया।[327] 1894 CE में मा अनलियांग, डोंग फ़ूशियांग और मा हाईयान को बीजिंग बुलाया गया क्यों कि इस दौरान पहली चीन-ओ-जापान जंग चल रही थी। लेकिन 1895 CE में फिर से डुंगन विद्रोह फूट पड़ा इसलिए वो विद्रोह को कुचलने गान्सू वापस हो गए। वहां पर मा अनलियांग ने हान चीनी जनरल टांग यानहे Tang Yanhe और डोंग फ़ूशियांग के साथ मिलकर डुंगन विद्रोहियों को कुचला। एक डुंगन फ़ौज को उन्होंने बेल के दिल वाले पहाड़ के पास हराया और 4 दिसंबर को हीज़ू का घिराओ ख़त्म कराया। कहा जाता है कि उन्होंने धोके से एक दफ़ा सालार

मुस्लिम फौजियों को भी क़त्ल किया। मा अनलियांग ने उनको आमादा किया कि वो एक दावत में बिना हथियारों के आएं तो उनसे सुलह की बातचीत होगी और उन्हें वचन दिया कि अगर में आप के साथ धोका करूँ तो मुझे मुसलमानों में से निकाल देना "Disown me as a Muslim if I deceive you"- लेकिन जब वो बग़ैर हथियारों के आए तो मा अनलियांग ने अपनी घुड़सवार फ़ौज के साथ जा कर उन सब को क़त्ल कर दिया। इस के बदले चिंग हुकूमत ने उन्हें शिंजियांग का जनरल Xinjiang General और हीज़ू का कर्नल Hezhou Colone बना दिया। इन डुंगन लोगों का नेतृत्व मा योंगलिन, मा वानफ़ू और मा डाहान (Ma Yonglin, Ma Wanfu, and Ma Dahan) कर रहे थे। मा डाहान को सर-ए-आम सज़ा-ए-मौत दी गई।

1895 में ही मा अनलियांग ने 4 यिंग की मदद से शिनिगं का घिराओ ख़त्म कराया, यह घिराओ डुंगन लोगों ने किया था। 1910 CE से पहले मा को बरकल की मिलिट्री की कमान Barkul military command दी गई। '100 दिनों का सुधार' Hundred Days' Reform अभियान के दौरान 1898 CE में मा अनलियांग को मा हाईयान, मा फ़ूलू और मा फ़ूशियांग के साथ चिंग हुकूमत ने बीजिंग बुलाया ताकि इस अभियान को रुकवाने में वो चिंग हुकूमत की मद करें। याद रहे '100 दिनों का सुधार' एक हुकूमती सुधार अभियान था जिसको नौजवान राजा गुआंगशू Guangxu Emperor (25 February 1875 – 14 November 1908) ने शुरू किया था लेकिन महारानी ड्वागर सिशी उसके ख़िलाफ़ थी क्यों कि इस मुहिम में यह भी शामिल था कि ड्वागर सिशी को

हुकूमत से बेदख़ल किया जाए। लेकिन ड्वागर ने अपने सहयोगियों की मदद से तख़्ता पलट कर दिया। ड्वागर सिशी ने अपनी मदद के लिए इन मुसलमानों को भी बुलाया था जिनका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका जिनमें मा अनलियांग भी शामिल थे। यह लोग बाद में बीजिंग में ही ठहरे रहे और जब बॉक्सर विद्रोह हुआ तो उन लोगों ने अपनी फ़ौज बना कर इस विद्रोह में चिंग हुकूमत की हिमायत में पश्चिमी देशों के गठबंधन के ख़िलाफ़ लड़ाइयां लड़ीं। पश्चिमी इत्तिहादी फ़ौज में बर्तानिया, रूस, जापान, फ़्रांस, जर्मनी, अमेरिका, इटली और ऑस्ट्रिया की फ़ौजें शामिल थीं। जब की मुसलमानों की फ़ौज को कान्सू ब्रेव्स Kansu Braves या गान्सू ब्रेव्स कहा जाता था।



कान्सू ब्रेव्स का झंडा

1905 CE में मा अनलियांग ने यहवानी सूफ़ी सिलसिले पर प्रतिबंध लगा दिया और उस के सारे पैरोकारों को सज़ा-ए-मौत का हुक्म-जारी कर दिया और शिंजियांग में अपने हान चीनी जनरल यांग जेंगशिन Yang Zengxin को हुक्म दिया कि वो यहवानी सिलसिले के प्रमुख मा वानफ़ू Ma Wanfu को गान्सू भेज दे ताकि उस को क़त्ल किया जा सके। लेकिन मा ची, जो एक मुस्लिम जनरल थे और मा अनलियांग के मातहत अफ़सर थे उन्होंने मा अनलियांग के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए मा वानफ़ू को लाने वाले अहलकारों पर हमला कर दिया और मा वानफ़ू को बचा कर चिंगहाई ले गए।[328]

1911 CE में जब पहला लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया जिसको शिनहाई इन्क़लाब कहा जाता है तो मा अनलियांग ने चिंग हुकूमत की हिमायत में क्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ हथियार उठाए और फ़ौज की 20 बटालियन लेकर शांक्सी में क्रांतिकारियों पर हमला कर दिया जिन का नेतृत्व ज़ांग फंगहुई Zhang Fenghui कर रहा था। चुनांचे उन्होंने इन्क़लाबियों को आसानी से शिकस्त दे दी लेकिन जब उनको पता चला कि चिंग का आख़िरी राजा पू यी Puyi बेदख़ल हो गया है तो वो क्रांतिकारियों का साथ देने को तैयार हो गए और लोकतांत्रिक पार्टी क्योमिनटांग में शामिल हो गए।[329]

मा चियान लिंग के ख़ानदान के कुछ अफ़राद

मा चियान लिंग Ma Qianling

मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang

मा फ़ूलू Ma Fulu

मा फ़ूशू Ma Fushou

मा फ़ूचाई Ma Fucai

मा होंगबिन Ma Hongbin

मा होंगकुई Ma Hongkui

मा डुनजिंग Ma Dunjing

मा डुनहू Ma Dunhou (Ma Tung-hou)

मा डुनरैन Ma Dunren

कहा जाता है कि शांक्सी का हुई मुस्लिम जनरल मा यूगुई Ma Yugui जो इन्क़लाबियों का हामी था और बीजिंग के एक इमाम वांग कुआन Wang Kuan ने मा अनलियांग को नसीहत की, कि वो चिंग हुकूमत की ख़ातिर अपने मुसलमान भाइयों का ख़ून न बहाए। चुनांचे उन्होंने चिंग हुकूमत का साथ छोड़कर लोकतांत्रिक नेता युआन शिकाई Yuan Shikai की हिमायत इख़्तियार की।[330] 1903 CE में मा अनलियांग ने इली Ili के ब्रिगेड जनरल "Brigade-General" के फ़राइज़ अंजाम दिए और 1912 CE में वो गान्सू के कमांडर-इन-चीफ़ बन गए। उन्होंने बाईलॉग बाग़ियों Bai Lang Rebels के ख़िलाफ़ भी मोरचा लिया। इसी दौरान शीडाओटांग पंथ Xidaotang के संस्थापक मा चीशी Ma Qixi और उनके पूरे ख़ानदान को क़त्ल किया। इस का तफ़सीली ज़िक्र मा चीशी के विषय में दिया गया है। इन ख़िदमात के बदले उनको 1912 में चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत ने सारी उत्तर पश्चिमी northwestern मुस्लिम रियासतों का शासक बना दिया। अब वो चीन की उत्तर पश्चिमी रियासतों के सर्वश्रेष्ठ शासक

बन चुके थे, चुनांचे मौत तक वो इसी ओहदे पर बरक़रार रहे। यानी 1912-1918 CE तक। मा अनलियांग ने अपनी ज़िंदगी के दौरान लाखों मुसलमान भाइयों का ख़ून बहाया, इस लिए यह कहा जाता था कि मा अनलियांग के सर की लाल टोपी मुसलमानों के ख़ून से दागदार है। It was said that Muslim blood stained red, red cap of Ma Anliang.[331]

मा फ़ूशियांग

1918 CE में मा अनलियांग के इंतकाल के बाद मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang उनके ओहदे पर नियुक्त हुए।

1914 CE में निंगशिया Ningxia को गान्सू के साथ मिला दिया गया लेकिन 1928 CE में उसे फिर से अलग प्रांत बना दिया गया। निंगशिया हुकूमत के पहले शासक मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang थे। मा अनलियांग के बाद मा फ़ूशियांग ने उनके पद सँभाले। मा फ़ूशियांग एक हुई जनरल थे चिंग के आखरी दौर में। उन्होंने तीनों हुकूमतों के मातहत काम किया। शुरू में वो चिंग हुकूमत के जनरल थे। बाद में जब लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया तो वह 1912 लोकतांत्रिक हुकूमत के चिंगहाई के गवर्नर बन गए और 1928 CE चियांग काई शेक के साथ शामिल हो गए। बॉक्सर विद्रोह के दौरान वो डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज कान्सू ब्रेव्स में शामिल थे जिन्होंने लांगफांग की जंग में 8 देशों के गठबंधन को शिकस्त दी।



मा फ़ूशियांग

तफ़सीली हालात

मा फ़ूशियांग का संबंध असल में डोंगशियांग Dongxiang जाति से था लेकिन वो हुई लोगों में रच बस गए थे। वो मा चियानलिंग Ma Qianling के चौथे बेटे थे, उनके 3 बड़े भाई थे मा फ़ूशू, मा फ़ूलू और मा फ़ूचाई Ma Fushou, Ma Fulu and Ma Fucai. उन्होंने बचपन में ही क़ुरान और 'वसंत और शरद ऋतु रोज़नामचा' Spring and Autumn Annals पढ़ लिया था। 1889 CE में उन्होंने मा फ़ूलू के साथ एक मार्शल आर्ट संस्थान में दाख़िला लिया और तरबियत हासिल की। इस के बाद मा फ़ूशू के साथ 3 साल तक एक मिलिट्री स्कूल में ट्रेनिंग ली। 1895 CE में उन्होंने डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज में शमूलियत इख़्तियार

की और डुंगन लोगों के ख़िलाफ़ लड़ाइयां लड़ीं। 1897 CE में उनकी मिलिट्री ट्रेनिंग पूरी हुई और मिलिट्री इम्तिहान पास कर के जूरैन Juren की डिग्री हासिल की।[332] इस के बाद उन्होंने गान्सू में भी फ़ौजी तरबियत ली। लेकिन 1898 में वो मा फ़ूलू और दूसरे जनरलों के साथ बीजिंग आ गए और डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज में शामिल हो गए जिसको कान्सू ब्रेव्स कहा जाता था। यह वो वक़्त था जब बॉक्सर विद्रोह चल रहा था और मुसलमान चिंग हुकूमत की हिमायत में 8 पश्चिमी देशों की फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। कान्सू ब्रेव्स ने इन 8 मुल्कों की फ़ौज को कई मोर्चों पर हराया। इसी दौरान लांगफांग की जंग हुई यह भी चिंग और 8 देशों के बीच थी जिसमें मुसलमानों ने पश्चिमी देशों की गठबंधन सेना को शिकस्त-ए-फ़ाश दी और उनको फ़रार होने पर मजबूर कर दिया। मा फ़ूलू और मा फ़ूशियांग ही वो दो लोग थे जिन्होंने जंग का मंसूबा बनाया था। दोनों ने विपरीत दिशाओं से पश्चिमी फ़ौज को घेरा जिससे पश्चिमी फ़ौज उनके नर्ग़े में आ गई। इस को पनिसर मूवमेंट pincer movement कहा जाता है।

इस के बाद जब पश्चिमी देशों की इत्तिहादी फ़ौज ने बीजिंग में शाही महल पर हमला किया तो मुस्लिम फ़ौज ने ज़ेंगयांग गेट Zhengyang Gate पर उनका डट कर मुक़ाबला किया जिससे एक महीने तक पश्चिमी फ़ौज शाही महल में दाख़िल न हो सकी। यह 'पीकिंग की जंग' कहलाती है जो 1900 CE में हुई, जिसमें मा फ़ूलू और उनके 4 चचेरे भाई शहीद हुए[333], इस के अलावा उनके गांव के 100 लोग इस जंग में शहीद हुए। मा फ़ूलू की शहादत के बाद मा फ़ूशियांग ने फ़ौज की कमान संभाली। इस के बाद बॉक्सर विद्रोह के दौरान मा

फ़ूशियांग ने बहुत से विदेशी लिगेशन International Legations पर क़ब्ज़ा किया। याद रहे चीन में जो विदेशियों को रहने के लिए इलाक़े दिए जाते थे उनको लिगेशन कहा जाता था। इन इलाक़ों में सिर्फ उसी देश के अफ़सरान और नागरिक रहते थे और कोई चीनी वहां घर नहीं बना सकता था। यह चारों तरफ़ से बंद होते थे और एक छोटे क़िले जैसे होते थे। इस के बाद जब पश्चिमी देशों की गठबंधन सेना शाही महल पर क़ाबिज़ हो गई, तो यह मा फ़ूशियांग और उस की मुस्लिम फ़ौज ही थी जो शाही घराने के लोगों को वहां से सुरक्षित निकाल कर शियान Xi'an ले गए।[334] मार्च 1909 CE में वो शिंजियांग के पाली कुन Palikun, Xinjiang के ब्रिगेड जनरल Brigade General बना दिए गए। 1912 CE में जुलाई से अगस्त तक वो कोकोनूर के कार्यवाहक मुख्य कार्यकारी अधिकारी Acting Chief Executive Officer of Kokonur रहे। 10 October 1912 को वो शिंजियांग के अल्ताई Altai शहर के गार्ड डिवीज़न Commander of the Guards Division के कमांडर बने।[335]

शिनहाई क्रांति के दौरान

1912 CE में शिनहाई इन्क़लाब के दौरान मा फ़ूशियांग ने जलाओहुई Gelaohui इन्क़लाबियों के हमलों से सनडाओहे शहर Sandaohe district में दो ईसाई कैथोलिक मिशन की रक्षा की। याद रहे जलाओहुई एक गुप्त स्वतंत्रता संगठन था जिसका मतलब है 'बड़े भाई का आंदोलन' Elder Brothers Society, यह इन्क़लाब में पेश पेश थी हालाँकि सुन यातसेन की पार्टी अलग थी जिसको टोंगमंगहुइ Tongmenghui कहा जाता है और बाद में उसका नाम क्योमिनटांग

हो गया। 1916 CE में एक दूसरे कैथोलिक मिशन की इन्क़लाबियों से रक्षा की। इसके बदले फ़ूशियांग और उस के भतीजे मा होंगबिन को बेल्जियम से आर्डर ऑफ़ लियोपोल्ड Order of Leopold (Belgium) का तमग़ा मिला। जब चिंग हुकूमत का ख़ातमा हुआ और बेयांग हुकूमत Beiyang government स्थापित हुई जिसका प्रमुख युआन शिकाई था तो मा फ़ूशियांग ने बेयांग हुकूमत में शमूलियत इख़्तियार की तो बेयांग हुकूमत ने उसे कई फ़ौजी ओहदे दिए। युआन शिकाई ने उसे निंगशिया का मिलिट्री कमांडर बना दिया।

नक़ली राजा के ख़िलाफ़ मुहिम

1916 CE मंगोलिया के बाओटू Baotou के इलाक़े में एक बौद्ध भिक्षु टाएर लीलू ची Ta-er Lilu-chi जिसको वू डाएर लियूफ़ी Wu Daer Liufi भी कहा जाता था, ने झूठा दावा किया कि वो राजा है।[336] एक डाकू काओ शी सियू Kao Shih-hsiu उस की मदद कर रहा था। उन लोगों ने अपनी फ़ौज के साथ बाओटू के ज़ूक़ा मंदिर Zuuqa temple पर क़ब्ज़ा कर लिया। मा फ़ूशियांग ने अपने भाई मा फ़ूशू Ma Fushou को उस के मुक़ाबले के लिए भेजा। मा फ़ूशू ने ज़ूक़ा मंदिर पर हमला कर के काओ शी सियू को शिकस्त दी। काओ वहां से फ़रार हो कर ओटॉय Otoy होता हुआ सनडाओहे Sandaohe शहर चला गया। 1917 CE में काओ को फिर शिज़ुईज़ी Shizzuizi में शिकस्त दी, उस के बाद नक़ली राजा और काओ के साथियों को क़त्ल कर दिया लेकिन काओ फ़रार हो गया।[337] मा फ़ूशियांग के दौर में हान और हुई के दरम्यान भी बहुत खुशगवार संबंध रहे। मा फ़ूशियांग की जहरिय्या सूफ़ी मा युआनज़ांग Ma

Yuanzhang से दुश्मनी हो गई। इस की वजह यह थी कि मा फ़ूशियांग चाहते थे कि ज़ांग गुआंगजियान Zhang Guangjian को गान्सू के गवर्नर के ओहदे से हटा दिया जाए। उनका कहना था कि गान्सू का गवर्नर किसी गान्सू के वासी को ही बनाया जाना चाहिए लेकिन मा युआनज़ांग ने उनकी मदद करने से इनकार कर दिया। मा फ़ूशियांग ने ऊन Wool के व्यापार में भी सरमाया लगाया था और एक माचिस की फैक्टरी में भी। 1920 CE में जब हाई युआन Haiyuan earthquake में ज़लज़ला आया तो मा फ़ूशियांग ने लांज़ू में ज़लज़ला पीड़ितों की मदद का काम किया। मा फ़ूशियांग को बेयांग हुकूमत ने सूई युआन का गवर्नर Governor of Suiyuan बना दिया चुनांचे 1921-1925 CE तक वो इस ओहदे पर रहे।[338] एक अमरीकी ताजिर लिखता है कि मा फ़ूशियांग इलाक़े के बुनियादी ढाँचे को मॉडर्न modernizing infrastructure बनाना चाहते थे और परिवहन transport को मॉडर्न बनाने पर ग़ौर कर रहे थे।[339] उन्होंने सूई युआन में शिक्षा विभाग Department of Education की भी स्थापना की।

ज़िली-अनहुई जंग Zhili-Anhui War

जब युआन शिकाई ने धोके से अपनी हुकूमत क़ायम कर ली तो लोकतांत्रिक नेताओं ने 1917 CE में बेयांग हुकूमत के ख़िलाफ़ एक अभियान चलाया जिसको संविधान बचाओ आंदोलन कहा जाता है जिसके बाद एक जंग भी हुई जिसको संविधान बचाओ युद्ध (Constitutional Protection War) कहा जाता है[340]। लेकिन इस के बाद चीन बहुत सी छोटी छोटी हुकूमतों में बट गया जिनको क्लीक़ कहा जाता है जिसका मतलब होता है मंडली। यह क्लीक़ उत्तर

और दक्षिण दो गिरोहों में बटी हुई थीं। बाद में उत्तरी क्लीक़ों ने इस बात का फ़ैसला किया कि दक्षिणी क्लीक़ों के ख़िलाफ़ हमें आक्रामक युद्ध करना चाहिए और उनको हथियार डालने पर मजबूर कर के पूरे चीन को फिर से एक हुकूमत के तहत एकजुट करना चाहिए। लेकिन इस के लिए क्या तरीक़ा अपनाया जाए। इस में उत्तरी क्लीक़ों में मतभेद हो गया। अनहुई क्लीक़ के सरदार डुआन किरुई Duan Qirui का कहना था कि इस के लिए हमें ताक़त का इस्तेमाल करना चाहिए और उन पर हमला कर के उनको ख़त्म कर देना चाहिए। लेकिन ज़िली क्लीक़ के सरदारों का मानना था कि हमें इस काम के लिए शांतिपूर्वक तरीक़े इस्तेमाल करने चाहिएँ। और बातचीत के ज़रिये उनको अपने साथ मिलाना चाहिए। लेकिन डुआन किरुई इस से नाराज़ हो गया और उसने अपनी अलग फ़ौज बना ली। इस के लिए उसने जापानी हुकूमत से क़र्ज़ा लिया जिसको निशीहारा क़र्ज़े Nishihara Loans कहा जाता है। और इस फ़ौज की मदद से उसने बाहरी मंगोलिया Outer Mongolia पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस से डर कर मंचूरिया Manchuria की फ़ंगटियान क्लीक़ Fengtian clique ने ज़िली Zhili क्लीक़ से हाथ मिला लिया। इस के अलावा उसने दक्षिण पश्चिम के उन जंगी सरदारों से को भी अपने साथ मिलाना शुरू कर दिया जिनको अनहुई क्लीक़ से कुछ ख़तरा था। इस के बाद ज़िली क्लीक़ ने बर्तानिया और अमेरिका की मदद से उस वक़्त के चीन के राष्ट्रपति शू शीचांग Xu Shichang से अनहुई के जनरल शू शूज़ेंग Gen. Xu Shuzheng को बरख़ास्त करवा दिया जिसने अनहुई क्लीक़ की मंगोलिया पर मुहिम का नेतृत्व

किया था। इस से गुस्सा हो कर डुआन किरुई और जनरल शू शूज़ेंग ने ज़िली क्लीक़ और उस के इत्तिहादियों को बुरा भला कहा और उनके ख़िलाफ़ जंग की तैयारी शुरू कर दी।

इस की ख़बर पाकर नवंबर 1919 CE में ज़िली क्लीक़ के जनरल वू पीफ़ू Gen. Wu Peifu ने जनरल टांग जियाओ Tang Jiyao और लू रोंगटिंग Lu Rongting के नुमाइंदों से हैंगयांग Hengyang में मुलाक़ात की और अनहुई क्लीक़ से मुक़ाबले की रणनीति बनाई और एक मुआहिदे पर दस्तख़त किए जिसको नेशनल साल्वेशन अलाइड आर्मी का रफ़ ड्राफ्ट Rough Draft of the National Salvation Allied Army कहा जाता है। इस मुआहिदे को अनहुई क्लीक़ के ख़िलाफ़ गठबंधन का प्रतीक माना गया। Aril 1920 CE में हुनान Hunan की जंग में मारे जाने वाले फौजियों की याद में बाओडिंग Baoding में एक सम्मेलन हुआ जिसमें उस वक़्त के ज़िली क्लीक़ के जनरल काओ कुन Cao Kun ने मज़ीद कुछ जंगी सरदारों के नाम इस गठबंधन में जोड़े जो अनहुई क्लीक़ के ख़िलाफ़ बना था। अब इस गठबंधन में यह सब क्लीक़ें थीं हूबी, हेनान, लियाओनिंग, जिलिन, हीलोंगजियांग, ज्यांग्सू, जियांगशी, ज़िली और फ़ंगटियान Hubei, Henan, Liaoning, Jilin, Heilongjiang, Jiangsu, Jiangxi, Zhili and Fengtian. इन दोनों पार्टियों में टकराव की ख़बर आम हो गई और दोनों ने जंग के लिए फ़ौजें इकट्ठी करनी शुरू कर दीं।[341]

पाओटिंग-फ़ू टेलीग्राम Paoting-fu Telegram

इस के बाद इन जनरलों ने जो अनहुई के ख़िलाफ़ एकजुट हुए थे एक संयुक्त घोषणा पत्र (proclamation letter) जारी किया जिसमें अनहुई क्लीक़ के सरदार डुआन किरुई और उसके फ़ौजी धड़े 'अनफ़ू क्लब' Anfu Club के अध्यक्ष शू शूज़ेंग Xu Shuzheng की निंदा की गई थी। यह निंदा करने वाले जनरल थे काओ कुन, ज़ांग ज़ोलिन, वांग ज़ानयुआन, ली शुन, चेन गुआंगयुआन, ज़ाओ टी और मा फ़ूशियांग Cao Kun, Zhang Zuolin, Wang Zhanyuan, Li Shun, Chen Guangyuan, Zhao Ti and Ma Fuxiang. यह घोषणा टेलीग्राम के ज़रिये 12 July 1920 CE को सब जगह भेजी गई जिसको पाओटिंग-फ़ू टेलीग्राम कहा जाता है।[342]

जंग की तैयारी

1920 CE की शुरूआत में अनहुई कीलक फ़ौज के 5 डिवीज़न और 4 ब्रिगेड इकट्ठा कर चुकी थी और इस फ़ौज का नाम राष्ट्रीय स्थिरीकरण सेना National Stabilization Army रखा। इस पूरी फ़ौज का कमांडर डुआन किरुई ख़ुद बना। उसने दो मोर्चों पर अपनी फ़ौज तैनात की। एक तो पश्चिमी मोर्चे पर जहां से वो ज़ूज़ू, लाई शुई और गुआन Zhuozhou, Laishui and Gu'an को कवर कर सके और दूसरी पूर्वी जानिब ताकि वहाँ से वो लियांग, हैमलेट और बीजी मियाओ Liang (梁) Hamlet and Beijimiao को कवर कर सके। यह फ़ौज यांग हैमलेट Yang Hamlet के पश्चिम में ठहरी थी। ज़िली और उस के

इत्तिहादियों ने एक डिवीज़न और 9 ब्रिगेड की फ़ौज बनाई और उस का नाम ग़द्दारों को कुचलने ने वाली फ़ौज Traitor Suppression Army रखा और उस का कमांडर वू पीफ़ू Wu Peifu को बनाया। उसने भी अपनी फ़ौज को दो तरफ़ तैनात किया। पूर्वी जानिब यांग हैमलेट के इलाक़े में और पश्चिमी जानिब गाओबी Gaobei के इलाक़े में। इस दौरान ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin ने अपनी फ़ौज को शानहाईगुआन Shanhaiguan में दाख़िल हो कर माचांग Machang और जुनलियांगचैंग Junliangcheng में पोज़ीशन लेने का हुक्म दिया।

जंग

14 जुलाई 1920 CE को अनहुई फ़ौज ने ज़िली फ़ौज पर दोनों तरफ़ से हमला कर दिया। ज़िली फ़ौज गाओबी से पीछे हटने पर मजबूर हो गई। दो दिन बाद जापानी फ़ौज की मदद से अनहुई फ़ौज यांग हैमलेट पर क़ाबिज़ हो गई और ज़िली फ़ौज ने पीछे हट कर बीकांग Beicang पर मोरचा सँभाल लिया। इस के बाद अनहुई फ़ौज आगे बढ़ने से रुक गई। 7 जुलाई को वू पीफ़ू ने अपनी फ़ौज को लेकर पश्चिमी मोर्चे पर भरपूर हमला किया और अनहुई के पश्चिमी अड्डे पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसे बुरी तरह हरा दिया। इस दौरान उसने अनहुई के कमांडर चू टोंगफेंग Qu Tongfeng और उस के अलावा कई अफ़सरों को गिरफ़्तार कर लिया जिनमें उस का पहले डिवीज़न का कमांडर भी शामिल था। ज़ूज़ू पर क़ब्ज़ा करने के बाद उसने भागती हुई दुश्मन फ़ौज का पीछा किया। चुनांचे 15 वें डिवीज़न को छोड़कर सारी फ़ौज वहां से फ़रार हो गई। इसी दिन

फ़ंगटियान की फ़ौज ने अनहुई के पूर्वी मोर्चे पर हमला बोल दिया। पश्चिमी मोर्चे की पसपाई की खबर सुनकर अनहुई का पश्चिमी कमांडर शू शूज़ेंग फ़रार हो कर बीजिंग के लांगफांग Langfang पहुंच गया। चुनांचे अनहुई फ़ौज ने फ़ंगटियान और ज़िली की गठबंधन सेना के आगे हथियार डाल दिए।

जब डुआन किरुई ने देखा कि वो जंग हार चुका है तो उस ने 19 July 1920 CE को इस्तीफ़ा दे दिया। 23 जुलाई को फ़ंगटियान और ज़िली की गठबंधन सेना, नानयुआन Nanyuan (南苑) में दाख़िल हुई और बीजिंग पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस तरह इस जंग का ख़ातमा हो गया। इस जंग के बाद बेयांग फ़ौज पूरी तरह बिखर गई। वू पीफ़ू को पूरे देश में इस जंग का हीरो माना गया और ज़िली और फ़ंगटियान ने मिलकर नई हुकूमत बनाई, जो 1922 CE तक यानी पहली ज़िली फ़ंगटियान जंग First Zhili-Fengtian War तक चली।[343]

पहली ज़िली फ़ंगटियान जंग First Zhili–Fengtian War

अब मुनासिब मालूम होता है कि हम पहली और दूसरी ज़िली फ़ंगटियान जंगों का भी ज़िक्र कर दें जो 1922 में हुई। जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि वू पीफ़ू ने ज़िली अनहुई जंग में मुख्य भूमिका निभाई और बीजिंग में ज़िली और फ़ंगटियान के साझे की हुकूमत क़ायम हो गई। लेकिन जल्द ही दोनों में मतभेद भी शुरू हो गया। इस की वजह यह थी कि 1922 में फ़ंगटियान क्लीक़ के लीडरों ने ज़िली क्लीक़ के लीडरों को बग़ैर बताए सदर जिन युनपेंग Premier Jin Yunpeng को हटा कर उस की जगह लियांग शीयी Liang Shiyi को सदर बना दिया। जिससे ज़िली क्लीक़ के लीडर नाराज़ हो गए। याद रहे ज़िली क्लीक़ की

पुश्तपनाही बर्तानिया और अमेरिका कर रहा था और फ़ंगटियान की पुश्तपनाही जापान कर रहा था। इस से पहले जापान अनहुई क्लीक़ की पुश्तपनाही करता था लेकिन अनहुई की हार के बाद उसने फ़ंगटियान की पुश्तपनाही शुरू कर दी थी। 25 जनवरी 1921 को लियांग शीयी ने अपने कैबिनेट cabinet की मीटिंग की जिसमें फ़ंगटियान के जंगी सरदार ज़ांग ज़ोलिन की मदद से अनहुई क्लीक़ के 6 मेंबरों को एमनेस्टी amnesty (सार्वजनिक क्षमा) दे दी, जब कि ज़िली क्लीक़ इस के ख़िलाफ़ थी। ज़िली क्लीक़ ने इस का विरोध किया लेकिन इस को रद्द कर दिया गया, जिसके नतीजे में ज़िली और फ़ंगटियान के बीच टकराव पैदा हो गया। इस के अलावा झगड़ा, इस बात से और बढ़ गया कि कैबिनेट ने ज़िली क्लीक़ को 30 लाख डॉलर ($ 3 million) का मिलिट्री बजट देने से इनकार कर दिया हालाँकि पहले उस का वादा किया जा चुका था। चुनांचे ज़िली क्लीक़ के जनरल वू पीफ़ू ने लियांग शीयी से जबरन इस्तीफ़ा दिलवा दिया, जिसके नतीजे में नई फ़ंगटियान नवाज़ कैबिनेट, बनने के एक महीने बाद ही टूट गई और फ़ंगटियान क्लीक़ के जंगी सरदार ज़ांग ज़ोलिन ने फ़ौजी कार्रवाई कि धमकी देनी शुरू कर दी। और 10 अप्रैल 1922 को फ़ंगटियान ने फ़ौज भेजनी शुरू कर दी। ताहम ज़िली क्लीक़ ने 25 अप्रैल तक अपने मुख़ालिफ़ के ख़िलाफ़ ज़बान नहीं खोली। चुनांचे 25 अप्रैल को दोनों ने एक दूसरे के ख़िलाफ़ फ़ौजें तैनात करनी शुरू कर दीं।

ज़िली क्लीक़ ने 100,000 फ़ौज भेजी और फ़ंगटियान क्लीक़ ने 120,000 फ़ौज रवाना की।[344] ज़िली फ़ौज का कमांडर-इन-चीफ़ वू पीफ़ू Wu Peifu था, मर्कज़ी

मोर्चे का कमांडर था वांग चैंगबिन Wang Chengbin और पूर्वी मोर्चे का कमांडर था ज़ांग गोरोंग Zhang Guorong, और ज़ांग फूलाई Zhang Fulai पूर्वी मोर्चे का डिप्टी कमांडर था। फ़ंगटियान का कमांडर-इन-चीफ़ ख़ुद ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin था और पूर्वी मोर्चे का भी। उस का डिप्टी कमांडर था सुन लीचेन Sun Liechen (孙烈臣), पश्चिमी मोर्चे का कमांडर था ज़ांग जिंगहुई Zhang Jinghui और उसके मातहत तीन और कमांडर थे बाओ डेशान, ज़ांग शूलियांग और ली जिंगलिन। Bao Deshan (鲍德山), Zhang Xueliang and Li Jinglin (李景林)।

जंग की तैयारी

पहले की ज़िली अनहुई Zhili-Anhui जंग की तर्ज़ पर, फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज को ज़िली Zhili फ़ौज पर, पूरब और पश्चिम, दोनों मोर्चों पर हमला करना था। फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज का जनरल हेडक्वार्टर जुनलियांगचैंग Junliangcheng में था, जो फ़ंगटियान के पूर्वी मोर्चे का आर्मी हेडक्वार्टर भी था। फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज के कमांडर-इन-चीफ़, ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin ने निजी तौर पर पूर्वी मोर्चे का नेतृत्व किया। 29 अप्रैल 1922 को, वो अपने जनरल हेडक्वार्टर पहुंचा और फ़ौरी तौर पर हमले का हुक्म दिया। ज़ांग जिंगहुई Zhang Jinghui को फ़ंगटियान Fengtian के पश्चिमी मोर्चे का कमांडर-इन-चीफ़ बनाया गया, जिसे तीन हिस्सों में बांटा गया था। फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज के पश्चिमी मोर्चे का हेडक्वार्टर चांगशिनडियान Changxindian (长辛

店) में था, और पश्चिम में फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज को बाओडिंग Baoding में ज़िली Zhili फ़ौज के हेडक्वार्टर पर सीधा हमला करने का काम सौंपा गया था। ज़िली फ़ौज को तीन मोर्चों (मोर्चों) पर तैनात किया गया था। वू पीफ़ू Wu Peifu की फ़ौज, जो मग़रिब (पश्चिम) में तीसरे डिवीज़न के नेतृत्व में थी, का हेडक्वार्टर चमकीले शीशे की नदी Glazed Glass River (Liulihe, 琉璃河) के इलाक़े में था। वांग चैंगबिन Wang Chengbin (王承斌) की फ़ौज की क़यादत (नेतृत्व) गुआन Gu'an में 23 वें डिवीज़न ने की। ज़ांग गोरोंग की फ़ौज के 26 वें डिवीज़न के साथ, मशरिक़ (पूरब) में डाचेंग Dacheng (大城) में तैनात थी, और बाद में उसे ज़ांग फूलाई Zhang Fulai के 24 वें डिवीज़न ने मज़ीद शक्ति दी।

पश्चिमी मोर्चा

10 अप्रैल 1922 को फ़ंगटियान फ़ौज तैनात हुई। 29 अप्रैल को जंग छिड़ने के बाद, पूर्वी मोर्चे पर ज़िली फ़ौज को रैनचियू और हीजियान Renqiu and Hejian की तरफ़ पीछे ढकेल दिया गया। फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज की भारी गोला बारी की वजह से पश्चिमी ज़िली Zhili फ़ौज आगे न बढ़ सकी। 30 अप्रैल को वू पीफ़ू निजी तौर पर फ्रंटलाइन पर गया ताकि फ़ंगटियान Fengtian मोर्चे पर भारी गोला बारी का आदेश दे। चुनांचे वू पीफ़ू ने फ़ंगटियान फ़ौज पर पीछे से हमला कर दिया। इस के बाद 4 मई को ज़िली फौजियों ने अचानक दूसरा हमला कर दिया तो, फ़ंगटियान फ़ौज का 16 वां डिवीज़न (जो पूर्व ज़िली फौजियों पर आधारित था), जिस की कमांड फेंग गोज़ांग Feng Guozhang कर रहा था, वू

पीफ़ू से जा मिला। फ़ंगटियान फ़ौज के आरज़ी तौर पर संगठित फर्स्ट डिवीज़न 1st Division को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा, और पश्चिमी मोर्चे पर भी फ़ंगटियान का मोर्चा तबाह हो गया। लेकिन बाद में फर्स्ट डिवीज़न 1st Division के जवाबी हमले की वजह से ज़िली Zhili फ़ौज की पेशक़दमी रुक गई और चांगशिनडियान Changxindian पर फ़ंगटियान का दुबारा क़ब्ज़ा हो गया। फ़ंगटियान फ़ौज की तरफ़ से यह कामयाब जवाबी कार्रवाई तो हुई, ताहम, बहुत कम वक़्त के लिए लाभदायक रही क्यों कि वू पीफ़ू ने पसपाई का झांसा देकर, पेशक़दमी करने वाली फ़ंगटियान फ़ौज पर घात लगा कर हमला कर दिया, और ज़िली की जीत हुई। पश्चिमी मोर्चे के बचे कुचे फ़ंगटियान फौजियों को मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दिया गया, और अब ज़िली फ़ौज ने पूर्वी मोर्चे की ओर ध्यान दिया।

पूर्वी मोर्चे पर जंग

पूर्वी मोर्चे (पूर्वी मोर्चे) पर फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज को शुरू में कामयाबी मिली, और ज़िली Zhili फ़ौज एक निराशाजनक स्थिति से गुज़र रही थी। ताहम, जैसे ही पश्चिम में उनकी हार की ख़बर फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज के बड़े ओहदेदारों तक पहुंची, तो ब्रिगेड कमांडर बाओ डेशान Bao Deshan ने दुश्मन पर हमला जारी रखने से इनकार कर दिया और अपनी फ़ौज के पीछे की ओर से सुरक्षा भी हटा ली और उसे असुरक्षित छोड़ दिया, जो दुश्मन के लिए एक सुनहरी मौक़ा था। इस के बाद ज़ांग ज़ोलिन ने मुकम्मल तबाही से बचने के लिए अपनी पूरी फ़ौज को पीछे हटने का हुक्म दिया। लेकिन फ़ंगटियान का

दूसरा दस्ता, जो उस के बेटे, ज़ांग शूलियांग की कमान में था और वो फ़ंगटियान फ़ौज की क्रीम था वो ज़िली फ़ौज के हमले का निशाना बन गया। पश्चिमी मोर्चे पर मुकम्मल फ़तह हासिल करने के बाद, वू पीफ़ू ने अपनी बिखरी हुई फ़ौज को इकट्ठा किया जो ज़्यादातर तीसरे और 26 वें डिवीज़न के फ़ौजी थे और उनको निजी तौर पर ज़ांग शूलियांग की यूनिट पर हमला करने का हुक्म दिया। अगरचे ज़ांग शूलियांग ने मामूली जानी नुक़सान के साथ दुश्मन के हमले को कामयाबी से पसपा कर दिया, लेकिन आख़िर कार वह ख़ुद भी पसपा होने पर मजबूर हो गया। पूर्वी मोर्चे पर फ़ंगटियान फ़ौज का तीसरा दस्ता ली जिंगलिन Li Jinglin (李景林) की कमान में था और शुरू में याओमा क्रासिंग Yaoma crossing (जिसको याओमादू Yaomadu, 姚马渡 भी कहा जाता है), पर जवाबी हमलों को शिकस्त देने में कामयाब हुआ। अगरचे उसने 1000 से ज़्यादा दुश्मन के फौजियों को पकड़ लिया, लेकिन पश्चिमी मोर्चे पर शिकस्त की ख़बर से उनके हौसले भी पस्त हो गए थे। इस सूरत-ए-हाल का फ़ायदा उठाते हुए, ज़िली फ़ौज ने माचांग (घोड़े की फ़ैक्ट्री 马厂 Horse Factory) में बने फ़ंगटियान की तीसरी फ़ौज के हेडक्वार्टर पर नया हमला कर के, 7000 से ज़्यादा फ़ंगटियान फौजियों को हलाक या गिरफ़्तार कर लिया जिसके नतीजे में फ़ंगटियान फ़ौज यांगलियूचिंग Yangliuqing (पॉपुलर विल्लो ग्रीन Poplar Willow Green, 杨柳青) के इलाक़े को छोड़कर बीकांग (北仓) Beicang की तरफ़ पीछे हट गई। जुनलियांगचैंग Junliangcheng में जब ज़िली फ़ौज रक्षा की व्यवस्था करने में जुटी थी, तो इसी दौरान, फ़ंगटियान की फ़ौज ने लगभग

20,000 ज़िली फ़ौज पर हमला कर दिया, जो ट्रेन के ज़रिये पहुंची थी लेकिन ज़िली फ़ौज ने फ़ंगटियान Fengtian फौजियों को शिकस्त दे दी, और ज़िंदा बच जाने वालों को लुआंज़ू Luanzhou वापस जाने पर मजबूर कर दिया। उस वक़्त तक यह स्पष्ट हो गया था कि फ़ंगटियान को ज़बरदस्त शिकस्त हो रही है। 5 मई को ज़िली फ़ौज के 23 वें डिवीज़न ने जिसका नेतृत्व, वांगचैंगबिन कर रहा था, उसने फ़ंगटियान को शिकस्त-ए-फ़ाश दी और ज़िली फ़ौज विजयी होकर तियानजिन Tianjin में दाख़िल हुई। इस लड़ाई में फ़ंगटियान के 20,000 फ़ौजी मारे गए और 10,000 पाला बदल कर ज़िली से जा मिले और 40,000 फौजियों ने हथियार डाले जिनको क़ैदी बना कर ज़िली क्लीक़ ले जाया गया।

जंग का ख़ातमा

इस वक़्त बर्तानवी मिशनरियों ने ज़िली क्लीक़ के अहलकारों से लुआंज़ू Luanzhou में मीटिंग की और उन्हें पेशकश की कि वो दोनों पक्षों के दरम्यान समझौता करा सकते हैं। चुनांचे बर्तानवी कौंसल ने फ़ंगटियान क्लीक़ के प्रमुख ज़ांग ज़ोलिन को सलाह दी कि अगर वो शानहाईगुआन Shanhaiguan से अपनी फ़ौज वापस बुला लेता है और शानहाईगुआन को ज़िली क्लीक़ के हवाले कर देता है तो वो ज़िली क्लीक़ को इस बात पर आमादा कर सकते हैं कि वो फ़ंगटियान का पीछा करना छोड़ दे। चुनांचे 18 जून को दोनों पक्षों ने एक बर्तानवी जंगी जहाज़ पर मुलाक़ात की जो चिनहुआंगडाओ Qinhuangdao के तट पर लंगर अंदाज़ था और एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए जिसमें यह तै हुआ कि इस जंग में ज़िली को जीत मिली है, और शानहाईगुआन को ज़िली

के हवाले किया जाता है और दोनों के बीच में शानहाईगुआन को सीमा माना जाएगा।[345] फ़ंगटियान क्लीक़ वापस मंचूरिया चली गई और वू पीफ़ू की क़यादत में ज़िली फ़ौज ने बीजिंग हुकूमत का कंट्रोल सँभाल लिया। वू पीफ़ू की ज़िली क्लीक़ ने बीजिंग की बेयांग हुकूमत पर अपनी हुकूमत जारी रखी यहां तक कि 1924 में बीजिंग फ़ौजी बग़ावत पर यह हुकूमत ख़त्म हुई।

दूसरी ज़िली फ़ंगटियान जंग

Second Zhili–Fengtian War

दूसरी ज़िली फ़ंगटियान जंग 1924 में हुई, यह चीन के गृहयुद्ध काल की एक अहम जंग है क्यों कि इस में उस वक़्त की सबसे ताक़तवर क्लीक़ यानी ज़िली क्लीक़ Zhili clique को शिकस्त हुई जिसका बीजिंग की बेयांग हुकूमत पर क़ब्ज़ा था। इसी जंग के आख़िर में बीजिंग में एक फ़ौजी बग़ावत हुई जिसमें फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang नाम के जंगी सरदार और कमांडर ने ज़िली क्लीक़ की हुकूमत का तख़्ता उलट दिया और ज़िली क्लीक़ का बीजिंग पर से क़ब्ज़ा ख़त्म हो गया। इस के अलावा और छोटी झड़पें भी हुईं। इस के बाद फ़ंग यूशियांग जो अनहुई क्लीक़ का जंगी सरदार था और ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin जो फ़ंगटियान क्लीक़ का सरदार था दोनों के हाथ में बीजिंग की बागडोर आ गई। और दोनों ने मिलकर जनरल डुआन किरुई को बीजिंग हुकूमत का वज़ीर-ए-आज़म बना दिया। याद रहे फ़ंगटियान क्लीक़ की पुश्तपनाही जापान कर रहा था, इस लिए बीजिंग हुकूमत में जापान का अमल दखल बढ़ गया, जिसको आम चीनी पसंद नहीं करते थे। इसके नतीजे में देश

में जगह जगह विरोध प्रदर्शन होने लगे। जिसके नतीजे में उत्तरी अभियान Northern Expedition (1926–1928) नामी जंग हुई।[346]

पृष्ठभूमि

शंघाई Shanghai पर कंट्रोल हासिल करने की कशमकश, इस टकराव की सबसे बड़ी वजह बनी। शंघाई चीन का सबसे बड़ा कारोबारी शहर है जो ज्यांग्सू प्रांत Jiangsu province का हिस्सा है। इस वक़्त शंघाई पर लू योंगशियांग Lu Yongxiang का कंट्रोल था जो अनहुई क्लीक़ का जनरल था और ज़ीजियांग Zhejiang सूबे का गवर्नर था। लेकिन चूँकि शंघाई शहर ज्यांग्सू प्रांत का हिस्सा था और ज्यांग्सू पर ज़िली क्लीक़ की हुकूमत थी, इस तरह उसूलन शंघाई पर भी ज़िली क्लीक़ का कंट्रोल होना चाहिए था। लेकिन सितंबर 1924 में फ़ंगटियान और ज़िली के दरम्यान तब टकराव हो गया जब ज़ीजियांग Zhejiang सूबे के ओहदेदारों ने ची शीयुआन Gen. Qi Xieyuan, जो ज़िली क्लीक़ का जंगी सरदार था उस को शंघाई का कंट्रोल देने से इनकार कर दिया। हालाँकि ज़ीजियांग उस वक़्त तक निष्पक्ष था, इस लिए उस की मदद करना किसी क्लीक़ का फ़र्ज़ नहीं बनता था लेकिन फ़ंगटियान क्लीक़ का सरदार ज़ांग ज़ोलिन, ज़ीजियांग की हिमायत में आ गया, ज़िली क्लीक़ के ख़िलाफ़, क्यों कि वो पिछली जंग में ज़िली क्लीक़ के हाथों अपनी शिकस्त का बदला लेना चाहता था। इस तरह ज़िली और फ़ंगटियान फिर से एक दफ़ा अमाने सामने आ गए। फ़ंगटियान का साथ सुन यातसेन Dr. Sun Yat-sen ने भी दिया क्यों कि सुन यातसेन दोनों की लड़ाई से फ़ायदा उठाना चाहता था।

जंग की तैयारी

ऐसा नहीं है कि फ़ंगटियान ने अभी जंग की तैयारी शुरू की थी बल्कि जब 1922 में पहली ज़िली फ़ंगटियान जंग में उसे हार हुई थी तभी से उसने ज़िली क्लीक़ से बदला लेने की तैयारी शुरू कर दी थी, और अब उसे वो मौक़ा हाथ लग चुका था जिसके वो इंतज़ार में था। चुनांचे उसने अपनी फ़ौज में बहुत से सुधार किए और लड़ने की तरकीबों में बेहतरी पैदा की। उसने अपने चीफ़ ऑफ़ जनरल स्टाफ़ यांग यूटिंग Yang Yuting को मुकडेन हथियारों के भंडार Mukden Arsenal का इंस्पेक्टर जनरल बनाया और वांग यिनटाई Wang Yintai (王荫泰) को सामग्री विभाग Department of Materials का डायरेक्टर बनाया। उसने बहुत से एफ़ टी टैंक FT tanks ख़रीदे और हर साल 150 तोपखाने ख़रीदे। हर साल 1000 मशीन गन और 60,000 राइफ़लें बढ़ाईं। इस के अलावा वायु सेना और नौसेना को भी मज़बूत किया। उसने अपने बेटे ज़ांग शूलियांग Zhang Xueliang को विमानन कार्यालय का निदेशक Director of the Aviation Office बनाया और उस की मदद के लिए ज़ू पीबिंग Zhou Peibing (周培炳) और याओ शीजियू Yao Xijiu (姚锡九) को नियुक्त किया। इटली और जर्मनी से मज़ीद जहाज़ ख़रीदे, इस तरह उस के पास कुल जहाज़ों की संख्या 300 हो गई जिनको 4 गिरोहों में बाँटा गया। मज़ीद हवाई अड्डे रणनीतिक स्थानों पर बनाए। हरबिन Harbin में नौसेना मुख्यालय Naval headquarters और एक ट्रेनिंग स्कूल बनाया। यातायात को बेहतर

बनाने के लिए, इज़ाफ़ी पानी और कोयले के सप्लाई स्टेशन सुईज़ोंग, शिंगचैंग और डायाओगू Suizhong, Xingcheng and Dayaogou में बनाए ताकि ट्रेन के ज़रिये फौजियों को फ़ौरन भेजा जा सके।[347] जिन इलाक़ों तक रेल लाइन नहीं थी वहां के लिए सड़कें बनाई गईं और हर फ़ौज का अपना वायर कम्युनिकेशन (टेलीफोन और टेलीग्राम) सेंटर उसके जनरल हेडक्वार्टर से मिलाकर बनाया गया। रेडियो कम्युनिकेशन यूनिटें Radio communication units भी बनाई गईं रेडियो मवासलात को मज़ीद बेहतर बनाने के लिए, शेनयांग, हरबिन और जिन काउंटी Shenyang, Harbin and Jin County में रेडियो स्टेशन बनाए गए।

जंग

जंग की शुरूआत 3 सितंबर 1924 को हुई जब पहली ज्यांग्सू ज़ीजियांग जंग First Jiangsu-Zhejiang War फूट पड़ी। फ़ंगटियान क्लीक़ के सरदार ज़ांग ज़ोलिन ने अपने घर पर एक हंगामी मीटिंग की जिसमें उस की हुकूमत और फ़ौज के तमाम आला ओहदेदार शरीक हुए, फ़ौज के ब्रिगेड कमांडर और उस से ऊंचे दर्जे के तमाम कमांडर मौजूद थे। इस मजलिस में ज़ांग ज़ोलिन ने ज़िली क्लीक़ के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया और 13 सितंबर को बीजिंग और फ़ंगटियान के दरम्यान चलने वाली तमाम ट्रेनें रोक दी गईं।

दूसरी तरफ़ ज़िली क्लीक़ जो अपनी फ़ौजी ताक़त के बेजा घमंड में थी, उसने जंग की कोई तैयारी नहीं की थी जबकि फ़ंगटियान क्लीक़ 1922 से ही तैयारी में लगी थी। हालाँकि ज़िली क्लीक़ की फ़ौज की संख्या ज़्यादा थी लेकिन

फ़ंगटियान क्लीक़ के युद्ध रणनीतिकारों का मानना था कि, फ़ंगटियान की फ़तह की उम्मीद की जा सकती है अगर 250,000 फ़ौज लेकर ज़िली पर अचानक हमला कर दिया जाए और उसे तैयारी का मौक़ा न दिया जाए।

फ़ंगटियान का मक़सद था, बीजिंग और तियानजिन से ज़िली का क़ब्ज़ा ख़त्म कर के अपना क़ब्ज़ा क़ायम करना। इस मक़सद के लिए पहले उनको शानहाईगुआन Shanhaiguan पर क़ब्ज़ा करना था, इस लिए फ़ंगटियान की एक हमलावर फ़ौज शीही नदी Shi He (石河) के पश्चिमी किनारे पर शूजियालिंग Xujialing (徐家岭) के इलाक़े में भेजना ज़रूरी थी। अगर एक दफ़ा इस इलाक़े पर फ़ंगटियान का क़ब्ज़ा हो जाएगा तो फिर फ़ंगटियान की पूरी फ़ौज शानहाईगुआन में जमा हो कर भरपूर हमला करेगी। यह फ़ौज पहले और दूसरे फ़ौजी डिवीज़नों पर आधारित होगी। शानहाईगुआन पर क़ब्ज़े के बाद आगे बढ़कर बीजिंग और तियानजिन पर भी क़ब्ज़ा किया जाएगा। अगर शानहाईगुआन पर क़ब्ज़ा नहीं हो पाया तो दो पुल बनाए जाएंगे चियानसू Qiansuo में जो शानहाईगुआन से 20 किलोमीटर के फ़ासले पर एक ट्रेन स्टेशन है।

कूटनीतिक रणनीति

जंगी मंसूबा बंदी के अलावा फ़ंगटियान क्लीक़ ने राजनीतिक स्तर पर भी जोड़ तोड़ शुरू कर दिया। इस के लिए उसने ज़िली मुख़ालिफ़ गठबंधन बनाया जिसमें उसने गुआंगडोंग Guangdong के सुन यातसेन और अनहुई के जंगी सरदार लू योंगशियांग Lu Yongxiang (卢永祥) को भी शामिल किया जिसका मरकज़

ज़ीजियांग Zhejiang था। इस के अलावा उसने ज़िली क्लीक़ के अंदर भी फूट डालने की कोशिश की और उस के जनरल फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang को पेशकश की, कि वो पाला बदल कर फ़ंगटियान से आ मिले, इस के लिए उसने अपने सबसे भरोसेमंद reliable अफ़सर लेफ्टिनेंट फ़ू शिंगपी Fu Xingpei को अपना ख़त लेकर भेजा ताकि वो फ़ंग यूशियांग से खुफिया तौर पर मुलाक़ात करे। बीजिंग पहुंचने के बाद फ़ू शिंगपी पहले फ़ंग यूशियांग के चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ लियू जी Chief of staff Liu Ji से मिला हूटोंग Hutong के डाजियू Dajue (大觉) के मुक़ाम पर जिसने उस को बताया कि फ़ंग यूशियांग भी उस से मिलने का इच्छुक है। चुनांचे नानयुआन Nanyuan के मुक़ाम पर दोनों ने खुफिया मुलाक़ात की और फ़ंग ने फ़ू शिंगपी से कहा कि किसी अहलकार का बीजिंग में रुकना ख़तरे से ख़ाली नहीं है इस लिए वो जल्दी वहां से रवाना हो जाए। हालाँकि कि यह मुलाक़ात बहुत मुख़्तसर थी लेकिन कामयाब रही, इस के बाद फ़ंग यूशियांग की कई मुलाक़ातें हुई फ़ंगटियान क्लीक़ के अहलकारों गो यिंगज़ू Guo Yingzhou (郭瀛洲) और मा बिंगनान Ma Bingnan (马炳南) से। कोई शक न पैदा हो, इस के लिए उन्होंने निष्पक्ष अनहुई क्लीक़ के अहलकारों को बिचौलिए middlemen के तौर पर नियुक्त कर दिया। चुनांचे अनहुई क्लीक़ का जंगी सरदार वू गुआंगशिन Wu Guangxin (吴光新) दोनों यानी बीजिंग और फ़ंगटियान क्लीक़ की राजधानी शेंगयांग के बीच ख़ुद जाकर संदेशवाहक के रूप में काम करता। जब फ़ंगटियान क्लीक़ ने फ़ंग यूशियांग को 2,000,000 जापानी येन (Yen) की रिश्वत दी, ताकि फ़ंग यूशियांग फ़ंगटियान

क्लीक़ के लिए काम करे, तो यह पैसे अनफ़ू क्लब Anfu Club के जिया डेयाओ Jia Deyao ने ही फ़ंग यूशियांग तक पहुंचाए थे।

जंग का शुरूआती दौर

चुनांचे ज़िली क्लीक़ ने लगभग दो लाख (200,000) फ़ौजी और फ़ंगटियान के ढाई लाख (250,000) फ़ौजी जंग में उतार दिए।

सब से पहले 15 सितंबर 1924 को ज़ांग ज़ोलिन की क़यादत में फ़ंगटियान फ़ौज ने मंचूरिया की सीमा पर वू पीफ़ू Wu Peifu की फ़ौज पर हमला किया। रेहे Rehe और शानहाईगुआन पर हमले के बाद वो सुईज़ोंग Suizhong में जमा हुए, और पहले और तीसरे डिवीज़न ने यूगुआन Yuguan (榆关) के पूरब में ज़िली फ़ौज की चौकियों पर हमला किया। 28 सितंबर तक जंग पूरे ज़ोरों पर आ गई। फ़ंगटियान फ़ौज ने शानहाईगुआन में ज़िली फ़ौज पर भरपूर हमला किया, लेकिन ज़िली ने भी ख़ूब रक्षा की और अपने बेहतर स्थान का ख़ूब फ़ायदा उठाया। उधर सुन यातसेन अपनी फ़ौज को उत्तर की तरफ़ लेकर बढ़ा ताकि सुन चुआनफाँग Sun Chuanfang को ज़िली फ़ौज की मदद करने से रोके। लेकिन इसी दौरान कैंटन मर्चेंट कार्पोरेशन Canton Merchant Corps और चेन जियोंगमिंग Chen Jiongming के पैरोकारों ने गुआंगज़ू में बग़ावत कर दी, इस लिए बग़ावत को क़ाबू करने के लिए सुन यातसेन को अपने मरकज़ वापस आना पड़ा। जैसे ही सुन यातसेन पीछे हटा, तो सुन चुआनफाँग ने ज़ीजियांग और शंघाई पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन शानहाईगुआन के विपरीत, दूसरे मोर्चे पर यानी रेहे के मोर्चे पर फ़ंगटियान फ़ौज ने तेज़ी से बढ़त की। ज़िली

क्लीक़ ने जो, यी फ़ौज Yi (毅) Army वहां लगाई थी, जिसका नेतृत्व मी जेंगबियाओ Mi Zhengbiao (米振标) कर रहा था वो भी ज़ांग ज़ोंगचांग Zhang Zongchang की फ़ंगटियान फ़ौज को नहीं रोक पाई। हालाँकि 13 वें डिवीज़न की फ़ौज जिसकी क़यादत वांग हुआईचिंग Wang Huaiqing (王怀庆) कर रहा था उसने भी ज़ांग ज़ोंगचांग की मदद की थी। 15 से 22 सितंबर के दौरान ज़ांग ज़ोंगचांग की फ़ौज ने लिंगयुआन Lingyuan पर हमला कर दिया। 15 सितंबर को फ़ंगटियान की फ़ौज ने फ़ूशिंग और जियानपिंग Fuxing and Jianping पर क़ब्ज़ा कर लिया और 7 अक्तूबर को चीफ़ेंग Chifeng पर। 9 अक्तूबर को उसने चीफ़ेंग के सामने वाले इलाक़े पर भी अपना क़ब्ज़ा जमा लिया। अभी तक फ़ंगटियान की बड़ी फ़ौज जंग में नहीं उत्तरी थी जब कि ज़िली फ़ौज की हालत इतनी ख़राब हो चुकी थी कि वू पीफ़ू को ख़ुद शानहाईगुआन जाना पड़ा। फ़ंगटियान ने जो जंगी तैयारी की थी उस का उसे फ़ायदा मिल रहा था जब कि ज़िली क्लीक़ बेख़बरी में थी।

उधर फ़ंग यूशियांग ने डुआन किरुई Duan Qirui और ज़ांग ज़ोलिन से, पहले ही ज़िली के ख़िलाफ़ फ़ौजी बग़ावत करने का गुप्त समझौता कर लिया था। चुनांचे जब ज़िली की फ़ौज जिसकी क़यादत वांग हुआईचिंग Wang Huaiqing कर रहा था उसने फ़ंग यूशियांग से मदद की विनती की तो उसने साफ़ इनकार कर दिया बल्कि अपनी फ़ौज को गुबीकू दर्रे Gubeikou pass में ही ठहरने का हुक्म दिया।

शानहाईगुआन मोरचा

शानहाईगुआन का मोर्चे दो इलाक़ों में चल रहा था शानहाईगुआन सेक्टर और दूसरा जियूमेनकू Jiumenkou (九门口) सेक्टर में। शानहाईगुआन सेक्टर में तैनात पहली और तीसरी फ़ंगटियान फ़ौजों ने कोई बढ़त नहीं की क्योंकि इस इलाक़े में उन्हें क्रैक दस्तों crack troops का सामना करना पड़ा जो इस इलाक़े के मुक़ामी होने की वजह से इस इलाक़े की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन में लड़ने के आदी थे। यह गतिरोध stalemate, 7 अक्तूबर को तब ख़त्म हुआ जब फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज ने जियूमेनकू Jiumenkou सेक्टर में पेश-रफ़्त की। यहां सुन शूचांग Sun Xuchang (孙旭昌), की क़यादत में फ़ंगटियान फ़ौज ने फ़तह हासिल की। जबकि उस के विपरीत ज़िली फ़ौज जिसको 13 वीं कंबाइंड ज़िली ब्रिगेड 13th Combined Zhili Brigade कहा जाता था उस के कमांडर फ़ंग यूरोंग Feng Yurong (冯玉荣), ने हार के सदमे से ख़ुदकुशी कर ली। फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज ने हमला जारी रखा, और ज़िली फ़ौज को ढकेलती हुई शिमेनज़ाई Shimenzhai (石门寨) पहुंच गई और ज़िली फ़ौज के पिछले हिस्से पर हमला कर दिया। इस के बाद ज़िली Zhili फौजियों ने जवाबी हमला किया, जिसका नेतृत्व जिन युनपेंग Jin Yunpeng कर रहा था। 12 अक्तूबर के बाद वू पीफ़ू निजी तौर पर चार्ज सँभालने यूगुआन पहुंचा, और जाते ही कुमक को दुबारा तैनात कर दिया।

इस के बाद ज़िली फ़ौज को हेनान-शानशी फ़ौज Henan-Shanxi की भी मदद पहुंच गई जिसने ज़ांग फूलाई Zhang Fulai की क़यादत में 13 अक्तूबर से 24 नवंबर तक जियूमेनकू सेक्टर में शिमेनज़ाई Shimenzhai के साथ साथ फ़ंगटियान मोर्चों पर हमला किया। फ़ंगटियान Fengtian फौजियों ने, बदले में, तीन मुश्तरका ब्रिगेडों के साथ अपनी लाइन को मज़बूत किया। फ़ंगटियान पहली फ़ौज 1 Fengtian के बिलतर्तीब (respectively) कमांडर और डिप्टी कमांडर जियांग डेंगशुआन Jiang Dengxuan और हान लिनचुन Han Linchun निजी तौर पर कमांड करने के लिए फ्रंटलाइन पर गए। भारी कुमक के बावजूद, फ़ंगटियान का मोर्चा तबाह हो रहा था और बहुत से कंपनी और बटालियन कमांडर हलाक या ज़ख़मी हो रहे थे, ज़्यादातर हीचूयाओ Heichuyao (黑出窑) के क़रीब जहां अन लुन An Lun नामी एक रेजिमेंट कमांडर की मौत हो गई, जो कि आला तरीन ओहदे पर था। जंग में एक और फ़ंगटियान Fengtian अफ़सर भी मारा गया। इसी वक़्त शानहाईगुआन में मर्कज़ी फ़ंगटियान फ़ौज दो दिन तक ज़िली फौजियों पर निरंतर हमलों के बावजूद आगे बढ़ने में नाकाम रही।

इस दौरान फ़ंगटियान Fengtian फ़ौज को अपुष्ट ख़ुफ़िया जानकारी मिली जो जापानियों की तरफ़ से उपलब्ध कराई गई थी कि ज़िली Zhili फ़ौज ने ज़ेंगजी शिपिंग कंपनी Zhengji (政记) Shipping Company के 13 जहाज़ों की मदद ली है, ताकि ताकू क़िलों Taku Forts के रास्ते तीन से चार ज़िली डिवीज़नों को सीधे फ़ंगटियान फ़ौज के पीछे ले जाया जा सके। ताहम जहाज़ों के उतरने

की सही जगह की कोई इन्टेलिजेन्स ख़बर हासिल नहीं की जा सकी, हालाँकि संभावित जगहों में यिंगकू और हूलूडाओ Yingkou and Huludao शामिल थीं। फ़ंगटियान के ज़्यादातर अफ़सरान जनरल रिज़र्व General Reserve फ़ौज को पीछे के रक्षक के तौर पर तैनात करना चाहते थे, लेकिन जनरल स्टाफ़ के डिप्टी चीफ़, फ़ू शिंगपी Fu Xingpei ने इस राय की मुख़ालिफ़त की, और दावा किया कि मैदान-ए-जंग में हंगामी सूरत-ए-हाल फ़ौजों को बांटने की अनुमति नहीं दे रही और जनरल रिज़र्व को जियूमेनकू Jiumenkou सेक्टर भेजना पड़ा। यांग यूटिंग, फ़ंगटियान चीफ़ ऑफ़ जनरल स्टाफ़, चिंतित था कि जियूमेनकू का जुग़राफ़िया बहुत तंग है और बड़ी तादाद में फौजियों को तैनात करने के लिए काफ़ी नहीं है। ताहम ज़ांग ज़ोलिन ने जनरल रिज़र्व फ़ौज को ज़ांग ज़ूशियांग Zhang Zuoxiang की कमान में जियूमेनकू की तरफ़ जाकर जंग में शामिल होने का हुक्म देकर बहस को ख़त्म कर दिया।

गो सोंगलिंग की घटना

जनरल रिज़र्व फ़ौज के शामिल होने के बावजूद फ़ंगटियान फ़ौज जीत हासिल नहीं कर पा रही थी इस लिए ज़ांग शूलियांग और गो सोंगलिंग Guo Songling ने खुफिया तौर पर 8 इन्फेंट्री रेजिमेंट और 2 आर्टिलरी ब्रिगेड शानहाईगुआन से सीधे जियूमेनकू भेजने का फ़ैसला किया, जहां जंग चल रही थी। इस नई कुमक का कमांडर गो सोंगलिंग को बनाया गया लेकिन इस फ़ौज के अंदर कुछ अफ़सरान से गो सोंगलिंग की निजी रंजिश थी जिसकी वजह से यह मंसूबा नाकाम हो गया। हुआ यह कि एक आर्टिलरी कमांडर यान ज़ोंगज़ू Yan

Zongzhou जो गो सोंगलिंग का सहपाठी classmate था उस को आर्टिलरी रेजिमेंटल कमांडर चेन चेन Chen Chen ने किसी वजह से बरख़ास्त कर दिया, यह असल में इस फ़ौज के कमांडर जियांग डेंगशुआन Jiang Dengxuan और डिप्टी कमांडर हान लिनचुन Han Linchun के हुक्म पर किया गया था।

अपने सहपाठी के साथ इस अपमानजनक व्यवहार से नाराज़ हो कर गो सोंगलिंग ने चेन चेन Chen Chen को उस के ओहदे से बरख़ास्त कर दिया, जिससे जियांग डेंगशुआन Jiang Dengxuan और हान लिनचुन Han Linchun ने गो सोंगलिंग की शिकायत ज़ांग ज़ोलिन से की। ज़ांग ज़ोलिन ने हुक्म दिया कि दोनों को यानी यान ज़ोंगज़ू और चेन चेन को उनके ओहदों पर बहाल कर दिया जाए। लेकिन इस से गो सोंगलिंग और ज़्यादा नाराज़ हो गया। चुनांचे उसने अपनी फ़ौज को मैदान-ए-जंग से हटा लिया और पीछे की तरफ़ हट गया। जब ज़ांग शूलियांग को इस की ख़बर हुई तो वो फ़ौरन गो सोंगलिंग को ढूंढने निकला और उस को पा कर उस से अनुरोध किया कि वह तय-शुदा मंसूबे के मुताबिक़ हमला करे। खुशकिस्मती से इस की ख़बर ज़िली फ़ौज को नहीं हुई जो इस फूट का फ़ायदा उठा पाती।

रेहे मोरचा

रेहे Rehe मोर्चे पर फ़ंगटियान फ़ौज ने 22 सितंबर को लिंगयुआन Lingyuan और पिंगचुआन Pingquan पर क़ब्ज़ा कर लिया। थोड़े दिनों के बाद फ़ंगटियान फ़ौज ने जनरल ज़ांग ज़ोंगचांग Zhang Zongchang की क़यादत में फिर से

हमला शुरू कर दिया। उस वक़्त ज़िली फ़ौज 4 हिस्सों में बटी हुई थी। यह चार जनरल थे यान ज़ीटांग, डोंग ज़ेंगो, हू जिंगई और वांग चैंगबिन।

(Yan Zhitang, Dong Zhengguo, Hu Jingyi and Wang Chengbin). हू जिंगई और वांग चैंगबिन, पहले ही फ़ंग यूशियांग से गुप्त समझौता कर चुके थे इस लिए उन्होंने ज़ांग ज़ोंगचांग के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ने से इनकार कर दिया। चुनांचे जब फ़ंगटियान फ़ौज ने हमला किया तो सब फ़ौज पीछे हट कर लेंगकू Lengkou आ गई।

बीजिंग तख्तापलट Beijing Coup 1924

बिल-आख़िर 22 अक्तूबर को तीसरी ज़िली फ़ौज के कमांडर फ़ंग यूशियांग ने गुप्त समझौता के अनुसार बीजिंग में बग़ावत कर दी और सदर काओ कुन Cao Kun को अगले दो साल के लिए नज़रबंद कर दिया, इस तरह बीजिंग पर फ़ंग यूशियांग और उस की गोमिनजुन Guominjun पार्टी की हुकूमत हो गई। वू पीफ़ू जो उस वक़्त शानहाईगुआन में था वो फ़ौरन लौटा ताकि बीजिंग में अपनी हुकूमत बचा सके। चुनांचे वू पीफ़ू 8000 फ़ौज लेकर मोर्चे से हट गया और सिर्फ 4000 ज़िली फ़ौज मोर्चे पर बची। मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए फ़ंगटियान जनरल ज़ांग ज़ोंगचांग और ली जिंगलिन Li Jinglin ने ज़िली फ़ौज को तियानजिन तक पीछे ढकेल दिया। इस के बाद फ़ंगटियान फ़ौज ने लुआंज़ू Luanzhou पर क़ब्ज़ा कर लिया और शिफ़ंगकू दर्रे Xifengkou Pass पर भी ज़िली फ़ौज को शिकस्त हुई। फ़ंग यूशियांग की बग़ावत की वजह से ज़िली फ़ौज का हौसला पहले ही पस्त हो चुका था। इस के बाद गो सोंगलिंग Guo Songling ने एक ज़ोरदार

हमला कर के ज़िली फ़ौज का बहुत सा इलाक़ा क़ब्ज़ा कर लिया। ज़िली फ़ौज चिनहुआंगडाओ Qinhuangdao और शानहाईगुआन Shanhaiguan के बीच फंस कर रह गई और बाक़ी फ़ौज से उस का संपर्क टूट गया। चुनांचे कुछ ज़िली फ़ौजी ही बच कर निकल सके बाक़ी ज़िली फ़ौज के 40,000 फौजियों ने फ़ंगटियान फ़ौज के आगे हथियार डाल दिए।

उधर वू पीफ़ू जब तियानजिन पहुंचा तो उसने अपनी फ़ौज को यांगकुन Yangcun में ठहराया और जहां-जहां उस की फ़ौज लड़ रही थी जैसे ज्यांग्सू, हूबी, हेनान और ज़ीजियांग Jiangsu, Hubei, Henan and Zhejiang सब जगह टेलीग्राम भेज कर मज़ीद कुमक मँगवाई। लेकिन इसी दौरान अनहुई क्लीक़ जो अभी तक निष्पक्ष थी उसने चांगज़ू Cangzhou और माचांग Machang पर क़ब्ज़ा कर लिया। दूसरी तरफ़ ज़ेंग शीशांग Zheng Shishang की फ़ौज ने हानज़ुआंग Hanzhuang में जिनपू रेलवे Jinpu railway को तबाह कर दिया जिससे रेलवे लाइन का राब्ता कट गया। उसी दिन यान शिशान Yan Xishan ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि वह शिजियाज़ुआंग Shijiazhuang पर क़ब्ज़ा कर के जिंगहान रेलवे लाइन Jinghan railway को तबाह कर दे। जिसके नतीजे में वू पीफ़ू की मदद के लिए कोई फ़ौज न पहुंच सकी। 2 नवंबर 1924 को फ़ंग यूशियांग की फ़ौज ने यांगकुन Yangcun और बीकांग Beicang पर क़ब्ज़ा कर लिया और वू पीफ़ू की फ़ौज को पसपा हो कर अपने केंद्र जुनलियांगचेंग Junliangcheng में पनाह लेनी पड़ी। इसी दौरान फ़ंगटियान फ़ौज ने ताँगशान Tangshan और लुटाई Lutai पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। डुआन किरुई ने वू पीफ़ू

को हुक्म दिया कि वो समुद्र के रास्ते वहां से रवाना हो जाए। चारों तरफ़ से हमले होने की वजह से वू पीफ़ू को भागने के सिवा कोई चारा न था। चुनांचे वो अपनी बची कुची 2000 फ़ौज के साथ हुआजिया Huajia से 3 नवंबर को सवार हो कर केंद्रीय चीन टांगू Tanggu पहुंचा जहां सुन चुआनफांग Sun Chuanfang ने उसे मज़ीद फ़ंगटियान के हमलों से बचाया।

पहली ज्यांग्सू-ज़ीजियांग जंग

First Jiangsu-Zhejiang War

हालाँकि जंग 3 नवंबर 1924 को ख़त्म हो चुकी थी लेकिन यह जंग बाद में 1925 तक चलती रही जिसको पहली ज्यांग्सू-ज़ीजियांग जंग First Jiangsu-Zhejiang War कहा जाता है। इस में अनहुई और फ़ंगटियान की संयुक्त सेना ने ज्यांग्सू और शंघाई पर क़ब्ज़ा कर लिया। ज़िली के जंगी सरदार ची शीयुआन Qi Xieyuan ने अपनी फ़ौज को सुन चुआनफांग के हवाले किया और जापान की तरफ़ फ़रार हो गया। सुन चुआनफांग ने इस के बाद जवाबी हमला किया और ज़ांग ज़ोंगचांग को ज़ीजियांग से बाहर ढकेल दिया। चुनांचे डुआन किरुई ने ज़ांग को उस की वफ़ादारी के लिए अपना आख़िरी सूबा शानडोंग Shandong दे दिया।

फ़ंग यूशियांग ने फ़ंगटियान के साथ मिलकर नई अंतरिम सरकार interim government बनाई जिसमें अनहुई क्लीक़ के डुआन किरुई को प्रधान मंत्री बनाया गया। सुन यातसेन को आमंत्रित किया गया कि वो भी मुज़ाकरात में

शामिल हो लेकिन उस का इसी दौरान कैंसर से इंतकाल हो गया। लेकिन जल्द ही फ़ंग यूशियांग जो ईसाई था और जापान द्वारा समर्थित ज़ांग ज़ोंगचांग में मतभेद उभर आए, तो दोनों ज़िली क्लीक़ से गठबंधन की कोशिशें करने लगे, बिल-आख़िर ज़िली क्लीक़ ने ज़ांग की हिमायत क़बूल कर ली। फ़ंग यूशियांग ने फ़ंगटियान क्लीक़ के जनरल गो सोंगलिंग Guo Songling से गठबंधन कर लिया इस लिए फ़ंगटियान के ख़िलाफ़ फिर से जंग शुरू हो गई जिसको फ़ंगटियान विरोधी जंग Anti-Fengtian War कहा जाता है जो 1926 तक चली, लेकिन अंतरिम सरकार Interim government का ख़ातमा हो गया।

सुन यातसेन के बाद

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि सुन यातसेन का दूसरी ज़िली फ़ंगटियान जंग Second Zhili–Fengtian War के आख़री दौर में यानी 12 March 1925 को इंतकाल हो गया तो चियांग काई शेक उस का उत्तर अधिकारी बना और क्योमिनटांग की बागडोर संभाली।

कैंटन तख्तापलट Canton Coup

दरअसल सुन यातसेन के इंतकाल के बाद, क्योमिनटांग का अध्यक्ष बनने के लिए मुख्य रूप से दो दावेदार थे जिन में पहला चियांग काई शेक था जो सुन यातसेन का सब से क़रीबी था और राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना National Revolutionary Army का कमांडर था और दूसरा था वांग जिंगवी Wang Jingwei जो क्योमिनटांग के वामपंथी विंग left wing का अध्यक्ष था और वूहान

में सरकार का शासक था। याद रहे वूहान वामपंथी विंग left wing का गढ़ था जिसका शासक वांग जिंगवी था, जब कि दक्षिणपंथी गुट right wing की राजधानी नानजिंग थी जिस पर चियांग का कंट्रोल था। इस लिए वांग जिंगवी और चियांग में सत्ता हासिल करने के लिए उठा पटक शुरू हो गई। यह वह ज़माना था जब कम्युनिस्ट और क्योमिनटांग मिल कर काम कर रहे थे जिस को प्रथम संयुक्त मोर्चा First United Front कहा जाता है लेकिन चियांग काई शेक, कम्युनिस्टों को पसंद नहीं करता था जब कि वांग जिंगवी कम्युनिस्टों को पसंद करता था और उन से बहुत क़रीबी संबंध थे। इस लिए चियांग हमेशा वांग से डरा रहता था और उस पर शक करता था। दूसरी तरफ़ हुकूमत में कम्युनिस्टों की ताकत बढ़ती जा रही थी और ज़्यादा तर ऊंचे ओहदे कम्युनिस्टों के पास थे। चुनांचे जनवरी 1926 में पार्टी कॉन्फ्रेंस में ज़्यादा तर बड़े ओहदे कम्युनिस्टों को मिल गए जिन की पुश्तपनाही रूस कर रहा था इस लिए चियांग और उसके साथी बहुत फिक्रमंद हो गए। चुनांचे नेशनल रिवोल्यूशनरी आर्मी NRA की नौसेना का सबसे शक्तिशाली नौसेना जहाज़ जिस का नाम एसएस जोंगशान SS Zhongshan था और उस का कप्तान ली ज़िलोंग Li Zhilong एक कम्युनिस्ट था, वह सोवियत नौसेना सलाहकार के साथ काम कर रहा था। इन लोगों ने 18-19 मार्च के बीच की रात उस जहाज़ को चांगजू Changzhou से जो वामपोआ मिलिट्री एकेडमी का अड्डा था वहाँ से गुआंगज़ू ले जाकर खड़ा कर दिया जहां दंगे चल रहे थे और दूसरे दिन वापस ले आए। जब चियांग ने जहाज़ के कमांडर से इस बारे में सवाल किया तो उस

ने जवाब दिया की आप के आदेश पर ही कर रहे हैं। जब कि चियांग ने ऐसा कोई हुक्म दिया ही नहीं था, इस लिए चियांग को शक हुआ।[348] इस के अलावा चियांग के ऑफ़िस में बहुत सी फ़ोन कॉल आईं यह पूछने के लिए की चियांग कब बाहर जा रहा है जिस से चियांग का शक यकीन में बदल गया कि उसके ख़िलाफ़ कोई साज़िश होने वाली है और उस ने जान बचा कर जापान के शान्टू Shantou भागने के लिए स्टीमर का टिकट भी बुक करा लिया। लेकिन बाद में चियांग ने भागने के बजाए लड़ने का फ़ैसला किया।[349]



चियांग काई शेक 1955

तख्तापलट

चुनांचे 20 March 1926 को चियांग ने मार्शल लॉ लगा दी और गुआंगज़ू की सारी फ़ोन लाइनें बंद कर दीं। और वामपोआ मिलिट्री एकेडमी के अहलकारों के जरिए उस ने सारे कम्युनिस्ट अहलकारों को गिरफ़्तार करवा लिया। और वांग जिंगवी और दूसरे आला कम्युनिस्ट अहलकारों के उनके घरों में नज़र बंद कर दिया। इस के बाद 22 मार्च को वांग जिंगवी के घर में राष्ट्रवादी कार्यकारी समिति Nationalist Executive Committee की बैठक हुई जिस में यह समझौता हुआ कि वांग जिंगवी जल्द ही छुट्टी लेकर विदेश चले जाएंगे। चुनांचे 7 अप्रैल को वांग जिंगवी ने सारे ओहदों से इस्तीफ़ा दे दिया और विदेश जाने का एलान कर दिया और 11 मई को चुप चाप फ्रांस के लिए रवाना हो गए। इस के बाद चियांग क्योमिनटांग का सब से बड़ा अफ़सर बन गया और कोई उस का मद्द-ए-मुक़ाबिल (प्रतिद्वंद्वी/rival) नहीं रहा। 5 जून 1926 को उसे राष्ट्रीय क्रांतिकारी सेना National Revolutionary Army (NRA) का कमांडर-इन-चीफ़ चुना गया। और 27 जुलाई को उस ने उत्तरी अभियान शुरू करने का एलान कर दिया।[350]

उत्तरी अभियान Northern Expedition

प्रमुख बनने के बाद चियांग की सबसे पहली इच्छा थी, अपने नेता सुन यातसेन का सपना सच्चा करना जो वो अपनी ज़िंदगी में पूरा नहीं कर पाया यानी चीन को फ़ौजी कार्रवाई के जरिये एकजुट करना। याद रहे उत्तरी अभियान Northern

Expedition वो लड़ाई है जिसमें क्योमिनटांग की क़ौमी इन्क़लाबी फ़ौज ने युआन शिकाई की बेयांग हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई कर के उस को शिकस्त दी जिसके नतीजे में बेयांग हुकूमत ख़त्म हो गई, हालांकि युआन शिकाई उस वक़्त तक मर चुका था। यह जंग 9 July 1926-29 December 1928 CE तक चली। इस में क्योमिनटांग को कामयाबी मिली। चुनांचे चियांग ने 9 जुलाई 1926 को एन आर ए (NRA) की 100,000 फ़ौज के सामने भाषण दिया जिसमें उसने उत्तरी अभियान Northern Expedition (उत्तरी अभियान) के आरंभ का ऐलान किया। इस अभियान का असली मक़सद तीन जंगी सरदारों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना था। यह थे ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin जो मंचूरिया का गवर्नर था, वू पीफ़ू Wu Peifu जो मर्कज़ी मैदानों Central Plain का शासक था और सुन चुआनफांग Sun Chuanfang जो पूर्वी समुद्र-तट East Coast का गवर्नर था। यह पूरा इलाक़ा ज़ू Zhu River और यांग्त्ज़ी Yangtze River नदियों के बीच का इलाक़ा है जो उत्तरी चीन कहलाता है इसी लिए इसको उत्तरी अभियान कहते हैं। चुनांचे चियांग की फ़ौज ने 6 महीने में यह इलाक़ा फ़तह कर लिया। जीत के बाद चियांग की फ़ौज 1 लाख से बड़ा कर ढाई लाख हो गई।

कम्युनिस्टों का क़त्ल-ए आम

अभी उत्तरी अभियान बीच में ही था कि क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों के बीच में ज़बरदस्त विवाद हो गया जिसमें चियांग ने कम्युनिस्टों के नरसंहार का हुक्म दे दिया, चुनांचे चियांग के हुक्म पर शंघाई शहर में तक़रीबन 3000 कम्युनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया गया और 5000 लोग लापता हो गए।



सफ़ाई अभियान के दौरान कम्युनिस्टों को घेर कर ले जाते हुए

इस की वजह यह थी कि चियांग की फ़ौज इलाक़े फ़तह करती हुई नानजिंग Nanking शहर की तरफ़ बढ़ रही थी कि चियांग के पहुंचने से पहले ही 21 मार्च 1927 को कम्युनिस्ट फ़ौज ने कम्युनिस्ट पार्टी के दो अफ़सरान ज़ू एनलाई Zhou Enlai और चेन डूशियू Chen Duxiu के नेतृत्व में शंघाई की ज़िली क्लीक़ Zhili clique के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी और उसको शंघाई से बेदख़ल कर दिया। इसी के साथ ही उन्होंने विदेशों (इंग्लैंड, जापान, अमेरिका) के रिहायशी इलाक़ों पर जिनको कंसेशन Concession कहा जाता था उन पर भी हमला कर दिया और उनके माल-ओ-अस्बाब को लूट लिया और बहुत से आला अफ़सरान और आम लोगों को क़त्ल कर दिया बाक़ी विदेशी लोगों ने छुप कर जान बचाई। हालाँकि विदेशियों पर हमला करना उत्तरी अभियान के एजेंडे में नहीं था। जवाब में तीनों देशों (इंग्लैंड, जापान, अमेरिका) ने मिलकर

नानजिंग के कम्युनिस्ट बाग़ियों पर हमला कर दिया जिसमें पूरा नानजिंग शहर राख हो गया और बाग़ियों को पीछे हटना पड़ा। इसी दौरान चियांग अपनी फ़ौज लेकर शहर में दाख़िल हुआ और उसे सारे हालात का पता चला। नानजिंग हिंसा पर विदेशियों ने चियांग को जिम्मेदार ठहराया हालाँकि चियांग का कोई रोल नहीं था लेकिन फ़ौज का कमांडर-इन-चीफ होने की वजह से चियांग पर उसकी जिम्मेदारी आती थी।

चियांग को हरजाने के तौर पर भारी रक़म विदेशियों को देनी पड़ी। लेकिन इसके नतीजे में चियांग ने सारे मामले का अपराधी कम्युनिस्टों को माना और कम्युनिस्टों के बढ़ते हुए असर को भी चियांग ने अपनी सत्ता के लिए ख़तरा मानता था। इसी के साथ ही पश्चिमी देशों से ताल्लुक़ात ठीक करने के लिए भी चियांग को कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ क़दम उठाना पड़ा क्यों कि पश्चिमी देश भी अपने मफ़ादात (हितों) के लिए कम्युनिस्टों को बहुत बड़ा ख़तरा महसूस करते थे और उसका नमूना वो अभी नानजिंग फ़साद में देख भी चुके थे। आख़िरकार 12 अप्रैल 1927 को चियांग ने अपनी फ़ौजों को शंघाई में कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ कार्रवाई का आदेश दे दिया, हालाँकि जब चियांग की फ़ौज नानजिंग में दाख़िल हुई थी तो कम्युनिस्टों ने चियांग का बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया था।[351] शहर में तक़रीबन 3000 कम्युनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया गया और 5000 लोग लापता हो गए। इस वाक़े को शंघाई नरसंहार Shanghai Massacre या श्वेत आतंक White Terror या कम्युनिस्टों का सफ़ाया Purge of communists कहा जाता है। इस के नतीजे में फ़साद के बाद क्योमिनटांग

और कम्युनिस्टों का नाता ख़त्म हो गया और रूस ने भी क्योमिनटांग से ताल्लुक़ात ख़त्म कर लिए। इसके बाद चियांग ने मुख़्तलिफ़ शहरों में कम्युनिस्टों के सफ़ाए की मुहिम चलाई और कुछ ही महीनों में पूरे चीन में तक़रीबन 3 लाख कम्युनिस्टों और उनके समर्थकों को मौत के घाट उतार दिया गया। कम्युनिस्टों ने इस नुक़सान के लिए चेन डूशिउ और दूसरे कम्युनिस्ट नेताओं को दोषी ठहराया जो क्योमिनटांग से सहयोग के बढ़ावा दिन के हक में थे। इस लिए रूस ने चेन डूशियू Chen Duxiu और उसके रूसी सलाहकारों को पार्टी के नेतृत्व से बरख़ास्त कर दिया और उस की जगह चू चिउबाई Qu Qiubai को नेतृत्व सौंप दिया गया।[352] इस के साथ ही क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों के बीच दस साल लंबी लड़ाई का आरंभ हो गया जिसकी शुरूआत नानचांग बग़ावत Nanchang Uprising से हुई।

नानचांग बग़ावत

Nanchang Uprising

शंघाई नरसंहार के बाद क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों के बीच दस साल लंबे गृहयुद्ध का आरंभ हो गया जिसकी शुरूआत नानचांग बग़ावत (विद्रोह) Nanchang Uprising से हुई। नानचांग बग़ावत 1 अगस्त 1927 को शुरू हुई जिसमें, ही लौंग He Long, ज़ू एनलाई Zhou Enlai और दूसरे लीडरों के नेतृत्व में कम्युनिस्टों ने नानचांग पर हमला कर दिया और शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसमें उनके हाथ 5000 छोटे हथियार और 10 लाख कारतूस आए। दोपहर में कम्युनिस्टों ने चीनी राष्ट्रवादी पार्टी की क्रांतिकारी समिति Revolutionary

Committee of the Chinese Nationalist Party बनाई जिसमें 25 मेंबर थे। लेकिन क्योमिनटांग के जवाबी हमले में कम्युनिस्टों की हार हुई, इस लिए 5 अगस्त को कम्युनिस्टों ने नानचांग छोड़कर पश्चिमी जियांगशी Western Jiangxi के जिंगगांग पर्वत Jinggang Mountains में पनाह ली। हालाँकि कि यह एक छोटी सी जंग थी जिसमें कम्युनिस्टों को शिकस्त हुई लेकिन इस युद्ध में दो ऐतिहासिक घटनाएं घटीं। एक तो इस जंग में 1 August 1927 को पीपुल्स लिबरेशन आर्मी People's Liberation Army (PLA) जिसको लाल रक्षक या रैड गार्ड्स Red Army or Red Guards 红卫兵 कहा जाता है, का गठन किया गया और इसी दिन नानचांग पर हमला किया गया, यानी PLA की यह सब से पहली जंग थी। PLA का भविष्य में चीन की राजनीति में अहम किरदार रहा और आज भी वो चीन की सबसे शक्तिशाली फ़ौज है। दूसरी यह कि माओ ज़ेडोंग Mao Zedong इस लड़ाई में पहली बार बतौर-ए-फ़ौजी अफ़सर सामने आए जो बाद में चीन के सबसे ताक़तवर लीडर बन कर उभरे और चीन में कम्युनिस्ट हुकूमत के पहले सदर बने।

चीनी गृह युद्ध

इस दस साला ख़ाना-जंगी (गृहयुद्ध) का आरंभ, 1 अगस्त 1927 को हुआ और अंत 22 दिसंबर 1936 को हुआ, इस को प्रथम क्योमिनटांग-कम्युनिस्ट गृह युद्ध First Kuomintang–Communist Civil War कहा जाता है, इस के बाद जापान ने हमला कर दिया और जापान के जाने के बाद दोबारा गृह युद्ध शुरू

हो गया जो 1945 से 1949 तक चल जिस को दूसरा क्योमिनटांग-कम्युनिस्ट गृहयुद्ध Second Kuomintang–Communist Civil War कहा जाता है। यह लड़ाई बुनियादी तौर पर क्योमिनटांग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच हुई जिसमें अंत में कम्युनिस्टों को जीत मिली और वो पूरे में मुख्य भूमि चीन Mainland China पर क़ाबिज़ हो गए और वहां पर कम्युनिस्ट हुकूमत स्थापित हो गयी जब कि क्योमिनटांग के नेता चियांग काई शेक और उसके साथियों को फॉर्मोसा द्वीप Formosa island की तरफ़ फ़रार होना पड़ा जहां पर चियांग ने अपनी अलग लोकतांत्रिक हुकूमत बनाई, और इस देश का नाम 'ताइवान' कर दिया। इसके बाद से आज तक दोनों सरकारें खुद को चीन की वैध सरकार मानती हैं और दूसरी को अवैध, और दोनों एक दूसरे की दुश्मन हैं। हालांकि इस आपसी लड़ाई में बेशुमार हिंसक घटनाएं चीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में घटीं, इन सब घटनाओं को यहां बयान करना बहुत मुश्किल है इस लिए हम यहां सिर्फ उल्लेखनीय घटनाओं को संक्षेप में लिखने की कोशिश करेंगे।

लॉंग मार्च Long March 1934-36

जैसा कि ऊपर बयान किया गया की नानचांग की लड़ाई में कम्युनिस्टों की हार हुई और उन्हें जिंगगांग पहाड़ों में पनाह लेनी पड़ी। इसके अलावा जियांगशी Jiangxi और हुनान Hunan के इलाक़े में माओ ज़ेडोंग Mao Zedong ने एक छोटी सी कम्युनिस्ट हुकूमत भी क़ायम कर ली थी जिसको हुनान सोवियत Hunan Soviet कहा गया। इस हुकूमत की राजधानी रुईजिन Ruijin शहर था लेकिन चियांग ने कम्युनिस्टों को मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में घेर कर शिकस्त देने के

अभियान चलाए जिनको 'घेराव अभियान' Encirclement Campaigns (1930–1934) कहा जाता है। यह कुल पाँच मुहिमें थीं जिनमें से पहली चार नाकाम रहीं लेकिन आख़िरी मुहिम में कम्युनिस्टों को हार का सामना करना पड़ा और क्योमिनटांग ने उन्हें इतना मजबूर कर दिया कि कम्युनिस्ट अपनी पनाहगाहों को छोड़कर भागने लगे। कम्युनिस्टों ने बहुत से इलाक़ों में अपने ठिकानों को छोड़कर जाना शुरू कर दिया लेकिन सबसे बड़ा लश्कर इनमें माओ ज़ेडोंग का था जिसने माओ ज़ेडोंग के नेतृत्व में चियांग की फ़ौजों से बचने के लिए जियांगशी Jiangxi की हुनान सोवियत Hunan Soviet से निकल कर बहुत लंबा रास्ता तै किया जो तक़रीबन 9000 किलोमीटर का था और उसको पूरा करने में तक़रीबन 370 दिन लगे। यह मार्च जियांगशी Jiangxi से शुरू हुआ और शांक्सी Shaanxi सूबे के Yan'an यानान में ख़त्म हुआ जहां पर तीन कम्युनिस्ट क़ाफ़िले जो तीन तरफ से आ रहे थे मिल गए। यह मार्च 16 October 1934 से 19 October 1935 तक चला, इस को लंबी पेश-क़दमी या लॉग मार्च (Long March) कहा जाता है।

लॉग मार्च की यात्रा के दौरान

लॉग मार्च की शुरुआत से ही क्योमिनटांग कम्युनिस्टों का पीछा कर रही थी और रास्ते में हर जगह उन पर हमला कर रही थी। चुनांचे शुरू में जब यह लोग लॉग मार्च के लिए जियांगशी से रवाना हुए तो क्योमिनटांग ने उन पर हमला कर दिया इस लिए 86,000 कम्युनिस्टों में से सिर्फ 36,000 ही बच निकालने में कामयाब हो पाए। रास्ते में कई जगह उन पर क्योमिनटांग और मुकामी सरदारों

ने हमला किया और कम्युनिस्टों को उन से मुकाबले में जानें गंवानी पड़ीं। इन में से कई पुलों पर भी दुश्मन से उनकी जंग हुई जिन में सब से मशहूर लूडिंग पुल Battle of Luding Bridge की लड़ाई है। जिस में कई कम्युनिस्टों ने बहादुरी से अपनी जान गंवा कर अपने लोगों के लिए रास्ता खुलवाया। मार्च के दौरान ही 1935 में माओ की बीवी ही ज़ीज़ेन He Zizhen की एक बेटी पैदा हुई लेकिन संगीन हालात की वजह से उसे एक मुकामी आदमी के घर में छोड़ना पड़ा। इस के अलावा थकान, भूक, सर्दी, दुश्वार गुज़ार रास्तों और जख्मों से बहुत से कम्युनिस्ट मारे गए। कहा जाता है कि जिन 100,000 आदमियों ने यह मार्च शुरू किया था उन में से आख़िर में केवल 8000 ही बच पाए थे, उन में सब से छोटे शियांग शुआन Xiang Xuan की उम्र 9 साल थी। कहा जाता है की इस लॉंग मार्च के दौरान पुराने कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबरों की तादाद 300,000 से घट कर केवल 40,000 रह गई थी।

लेकिन इस लॉंग मार्च ने हालात को बिलकुल उलट दिया और सारे हालात कम्युनिस्टों के पक्ष Favor में होते चले गए और माओ ज़ेडोंग कम्युनिस्टों का सबसे ताक़तवर लीडर बन कर उभरा। हुआ यूं कि यह लॉंग मार्च जिस इलाक़े या गांव से गुज़रता कम्युनिस्ट लोग ग़रीब किसानों से वादा करते कि अगर हम जीत गए तो सब किसानों के दरम्यान ज़मीनों को बांट दिया जाएगा और जागीरदारी व्यवस्था को ख़त्म कर दिया जाएगा और उन्होंने अपने मातहत इलाक़ों में यह किया भी। याद रहे की उस समय चीन में जागीरदारी व्यवस्था थी और आम जनता जो ग़रीब और किसान थी वह जागीरदारों के अत्याचार

से आहत थी और वह इस से छुटकारा चाहती थी इस लिए माओ के वादे उन के लिए एक बहुत बड़ी उम्मीद थे। उस ने अपने लोगों को हुक्म दिया की वह किसानों से अच्छा व्यवहार करें और सख्त जरूरत में भी उनके माल ओ असबाब न लूटें। इन सब बातों ने गरीब किसानों का दिल जीत लिया। इसकी वजह से हर इलाक़े से हज़ारों किसान और ग़रीब रज़ाकार (स्वयंसेवक) कम्युनिस्ट फ़ौज में शामिल होते चले गए और वह अपने साथ पैसे और हथियार भी लाते थे जिस की वजह से कम्युनिस्टों के पास आदमी, हथियार और पैसे ज़्यादा होते चले गए। इस के अलावा कम्युनिस्टों ने हर इलाके के सरदारों से पैसे और हथियार ज़ब्त किए। जिसकी वजह से कम्युनिस्टों की फ़ौज में कई गुना इज़ाफ़ा हो गया और वह क्योमिनटांग फौज से भी कई गुना बड़ी और शक्तिशाली हो गई और उस को हराना क्योमिनटांग के बस का नहीं रहा।

लाँग मार्च के अंत में माओ ने एलान किया कि "लॉन्ग मार्च एक घोषणापत्र manifesto है। इसने दुनिया के सामने घोषणा की है कि रैड गार्ड्स वीरों की सेना है, जबकि साम्राज्य वादी और उनके भोंकने वाले कुत्ते, चियांग काई-शेक और उनके जैसे लोग नपुंसक हैं। उन्होंने हमें घेरने, पीछा करने, बाधा डालने और रोकने की पूरी कोशिश की लेकिन इस घोषणापत्र ने उनकी विफलता की घोषणा की है। लॉन्ग मार्च एक प्रचार शक्ति भी है। इसने ग्यारह प्रांतों के लगभग 200 मिलियन लोगों को घोषणा की है कि रैड गार्ड्स का मार्ग ही उनकी मुक्ति का एकमात्र मार्ग है।"[353]

नवंबर 1935 में माओ को सैन्य आयोग का अध्यक्ष Chairman of the Military Commission चुना गया। इस समय तक माओ कम्युनिस्ट पार्टी के निर्विवाद नेता बन चुके थे। और 1943 में उन्हें चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति का चेयरमैन (अध्यक्ष) Chairman of the Central Committee of the Chinese Communist Party चुना गया जो चीन का सब से ऊंचा ओहदा था, इस ओहदे पर वह मरते दम तक रहे। इस लिए आमतौर पर उन को 'चेयरमैन माओ' कहा जाता था।

लॉंग मार्च से कम्युनिस्ट हुकूमत की स्थापना तक

वह लांग मार्च के बाद यानान Yan'an से हट कर बाओआन Bao'an में रहने लगे जहां वह 1936 तक रहे। वह एक गुफा-घर cave-house में चले गए और अपना अधिकांश समय पढ़ने, अपने बगीचे की देखभाल करने और सिद्धांत बनाने में गुज़ारने लगे। लांग मार्च में माओ की पत्नी ही ज़ीज़ेन He Zizhen सिर में छर्रे लगने से घायल हो गई थी। इलाज के लिए उसको मॉस्को के एक मानसिक अस्पताल में दाखिल कर दिया गया और माओ ने उसे तलाक़ दे दी। इस के बाद माओ ने एक अभिनेत्री जियांग चिंग Jiang Qing से शादी कर ली। कहा जाता है कि चिंग के लिए जगह बनाने के लिए ही, ही ज़ीज़ेन को मॉस्को के मानसिक अस्पताल में दाखिल किया गया था। 1936 में ही माओ ने यानान में उत्तर-पश्चिम जापानी-विरोधी रैड गार्ड्स विश्वविद्यालय North West Anti-Japanese Red Army University in Yan'an बनाया जिस में नए भर्ती होने वालों को फौजी तरबियत (सेना प्रशिक्षण) दी जाती थी। इस के बाद 1937 में

उस ने जापानियों के ख़िलाफ़ गुरिल्ला हमलों के लिए बहुत से इलाकों में लड़ाके भेजे।

लेकिन माओ का मानना था कि अकेले रैड गार्ड्स, जापानियों को हराने में असमर्थ है, इस लिए क्योमिनटांग (KMT) और दूसरे तत्वों के साथ एक कम्युनिस्ट के नेतृत्व वाली "राष्ट्रीय रक्षा सरकार" Government of national defence बनाई जाए। हालाँकि वह चियांग काई-शेक को "राष्ट्र का गद्दार" कहते थे। चुनांचे 5 मई को, उन्होंने नानजिंग राष्ट्रीय सरकार की सैन्य परिषद को सैन्य गठबंधन का प्रस्ताव देने के लिए टेलीग्राम भेजा, जिसका स्टालिन ने मशवरा दिया था। हालाँकि चियांग का इरादा माओ के संदेश को अस्वीकार करने और माओ से लड़ाई जारी रखने का था, लेकिन शियान में उसके अपने ही एक जनरल, ज़ांग शूलियांग Zhang Xueliang ने चियांग का अपहरण कर लिया, जिस को शियान घटना Xi'an Incident कहा जाता है।[354] ज़ांग ने चियांग को कम्युनिस्टों के साथ इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए मजबूर का दिया, जिसके परिणामस्वरूप 25 दिसंबर 1937 को दोनों पक्षों ने एक संयुक्त मोर्चे का गठन किया जिसको दूसरा संयुक्त मोर्चा Second United Front कहा जाता है।[355]

लेकिन यह गठबंधन 1945 में टूट गया और कम्युनिस्टों और क्योमिनटांग के बीच फिर से जंग छिड़ गई जिस में अंत में क्योमिनटांग को हार हुई और उस को चीन से निकलना पड़ा। हुआ यह कि जब 1946 में अमेरिका ने जापान पर परमाणु बम गिराए तो जापान को हार हुई और उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

दूसरी तरफ़ रूस जो जर्मनी से लड़ने में व्यस्त था जिसको ऑपरेशन बारबारोसा operation barbarossa कहा जाता है इसमें जर्मनी को हार हुई और रूस जीत गया। जैसे ही रूस वहाँ से निपटा उस ने जापान की पुश्तपनाही वाली मानचुको हुकूमत State of Manchukuo पर हमला कर दिया जो चीन के मंचूरिया Manchuria में क़ायम थी। रूस ने जब उस पर कब्ज़ा कर लिया तो उस ने गुप्त रूप से उसे कम्युनिस्टों को दे दिया, जब कि, वह पहले क्योमिनटांग से उसे देने का मुआहिदा कर चुका था जिस को 'मैत्री और गठबंधन की संधि' Treaty of Friendship and Alliance (14 August 1945) कहा जाता है। इस से क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों में विवाद हो गया और लड़ाई शुरू हो गए। लेकिन अब कम्युनिस्ट बहुत ताकतवर हो चुके थे चुनांचे 1948 में कम्युनिस्टों ने क्योमिनटांग की हुकूमत वाले चांगचुन Changchun का घिराओ कर लिया। यह घिराओ 5 महीने चला जिस में 160,000 लोग या तो मारे गए या लापता हो गए और क्योमिनटांग फौज को हथियार डालने पड़े। इस के बाद और भी लड़ाईयां हुईं लेकिन हर जगह क्योमिनटांग को हार हुई। चुनांचे 1 October 1949 को माओ ने बीजिंग के तियानमेन चौक Tiananmen square पर नई कम्युनिस्ट हुकूमत की स्थापना का एलान किया जिस को 'केंद्रीय जन सरकार' Central People's Government का नाम दिया गया।[356] इस के बाद 10 December 1949 की सुबह PLA फौज ने क्योमिनटांग की हुकूमत वाले चोंगचिंग Chongqing और चेंगडू Chengdu का घिराओ कर लिया, क्योमिनटांग के नेता चियांग काई शेक और उसके साथियों को फॉर्मोसा द्वीप

Formosa island की तरफ़ फ़रार होना पड़ा जहां पर चियांग ने अपनी अलग लोकतांत्रिक हुकूमत बनाई, इस देश का नाम ताइवान रखा गया।[357] इसके बाद से आज तक दोनों सरकारें खुद को चीन की वैध सरकार मानती हैं और दोनों एक दूसरे की दुश्मन हैं। लेकिन लोकतांत्रिक सरकार होने के कारण ताइवान को पश्चिमी देशों का समर्थन प्राप्त है।

बाद के हालात

अब हम वापस मा फ़ूशियांग की तरफ़ लौटते हैं। 1922 CE में मा फ़ूशियांग ने Gelaohui जलाओहुई नाम की संस्था से मुआहिदा किया और उस को इस बात की अनुमति दी कि वो ऊन wool के ताजिरों से लगान वसूल कर सकती है। उस वक़्त मा फ़ूशियांग बाओटू Baotou की फ़ौज के अध्यक्ष थे और बाओटू की हुकूमत बीजिंग हुकूमत के मातहत थी। 1924 CE में मा फ़ूशियांग ने सूई युआन में रेहे Rehe और चाहार Chahar purpose सूबों को दिफ़ाई मक़ासिद (रक्षा कारणों) के लिए एकजुट (संगठित) किया। मा फ़ूशियांग ने जनरल वू पीफ़ू से गठबंधन किया और अंदरूनी मंगोलिया और ज़ांग ज़ोलिन के अलग होने के बाद ज़मीनें हासिल कीं। उस वक़्त मा फ़ूशियांग की फ़ौज का नेतृत्व उनका भतीजा मा होंगबिन कर रहा था और उनकी हुकूमत का इंचार्ज एक ग़ैर मुस्लिम था। ट्रांस पैसिफ़िक जिल्द 6 नामी किताब (The Trans-Pacific, Volume 6) में लिखा है कि मा फ़ूशियांग एक मज़हबी रवादार इनसान और तरक़्क़ी-पसंद था। वो ग़ैर मुस्लिमों के हाथ का पका हुआ खाना भी खाया करता था। अपटोन क्लोज़ Upton Close नाम के इतिहासकार ने लिखा है कि वो ख़ुद तो शराब

नहीं पीता था और न ही सिगरेट पीता था लेकिन अपने मेहमानों को पेश करता था।[358] मा फ़ूशियांग की कई बीवियां थीं जिनमें से एक का इंतकाल 1927 CE में बीजिंग में हुआ और उस की मौत की रसूमात होचो Hochow में अदा की गई।[359]

क्योमिनटांग में शमूलियत

1924 CE में मा फ़ूशियांग, क्योमिनटांग लीडर सुन यातसेन से मिले और उन के नेतृत्व को स्वीकार किया। 1928 CE में मा फ़ूशियांग ने क्योमिनटांग की उत्तरी अभियान Northern Expedition में हिस्सा लिया। वो और उनके बेटे मा होंगकुई जनरल फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang की फ़ौज का हिस्सा थे। इस के बाद उनको कई बड़े ओहदे दिए गए जैसे उनको क्योमिनटांग सेंट्रल कमेटी और स्टेट काउंसिल का मेंबर बनाया गया, चिंगडाओ का मेयर, अनहुई का गवर्नर और मंगोलियन-तिब्बीती अफ़ेयर्स कमीशन का चेयरमैन बनाया गया। Member of the Kuomintang Central Committee, member of the State Council, Mayor of Qingdao, Governor of Anhui and chairman of the Mongolian and Tibetan Affairs Commission.[360] मा ने क्योमिनटांग की मदद से कई मुस्लिम संगठन बनाए जिनमें चायना इस्लामिक एसोसिएशन China Islamic Association (Zhongguo Huijiao Gonghui) भी शामिल है।[361] मा, अनहुई के गवर्नर रहे March-September 1930 CE तक।[362] सुन यातसेन के बाद मा फ़ूशियांग और मा ची ने फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang की पार्टी गोमिनजुन Guominjun से नाता तोड़ लिया और वो चियांग काई शेक

की क्योमिनटांग में शामिल हो गए।[363] 1931 CE में मा फ़ूशियांग, चियांग काई शेक और ज़ांग शूलियांग Zhang Xueliang की नेशनल लीडरशिप कांग्रेस National leadership conference में शरीक हुए जो नानजिंग में आयोजित हुई। उस ज़माने में चीन-ओ-जापान जंग चल रही थी जिसमें, मा ने साफ़ ऐलान कर दिया कि मंचूरिया चीन का हिस्सा है।[364] इसी साल 1931 CE में बड़े मुस्लिम जनरल जैसे मा लियांग, मा फ़ूशियांग और बाई चोंगशी Ma Liang (general), Ma Fuxiang and Bai Chongxi नानजिंग में मिले ताकि हान और हुई के बीच ख़ुशगवार संबंध बनाने पर ग़ौर कर सकें। मा फ़ूशियांग ने स्वीडन के पर्यटक स्वीन हेडिन Sven Hedin को गान्सू में दाख़िल होने की अनुमति दी।[365] मा को क्योमिनटांग की सेंट्रल एग्जीक्यूटिव कमेटी Central Executive Committee of the Kuomintang का भी मेंबर बनाया गया।

केन्द्रीय मैदानों का युद्ध
Central Plains War

हालांकि उत्तरी अभियान Northern Expedition में चियांग को जबरदस्त कामयाबी मिली थी लेकिन उस के बाद चियांग के ही कुछ जनरल उसके ख़िलाफ़ हो गए क्योंकि चियांग ने उन को अपनी अपनी फ़ौज को क़ौमी इन्क़लाबी फ़ौज National Revolutionary Army में मिलाने का आदेश दिया था। इस लिए दोनों पक्षों में एक जंग हुई जिसको केन्द्रीय मैदानों का युद्ध Central Plains War कहा जाता है। यह युद्ध वारलॉर्ड युग का सबसे बड़ा संग्राम था, जो हेनान, शानडोंग, अनहुई Henan, Shandong, Anhui और चीन के मध्य मैदानों

में लड़ा गया था, जिसमें नानजिंग (चियांग) के 300,000 सैनिक और (चियांग विरोधी) गठबंधन के 700,000 सैनिक शामिल थे। याद रहे उत्तरी अभियान Northern Expedition वो लड़ाई थी जिसमें क्योमिनटांग की क़ौमी इन्क़लाबी फ़ौज ने युआन शिकाई की बेयांग हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई कर के उस को शिकस्त दी जिसके नतीजे में बेयांग हुकूमत ख़त्म हो गई। यह जंग 9 July 1926-29 December 1928 CE तक चली। इस में क्योमिनटांग को कामयाबी मिली। इस में एक पक्ष था चियांग काई शेक, हान फ़ूचू, लियू ज़ी, हू ज़ोंगनान, चेन चेंग, माक्स बौएर, टांग एनबो, और ज़ांग शूलियांग वगैरह (Chiang Kai-shek, Han Fuqu, Liu Zhi, Hu Zongnan, Chen Cheng, Max Bauer, Tang Enbo, Zhang Xueliang)। इस जंग में कई मुस्लिम जनरल फ़ंग यूशियांग से नाता तोड़ कर चियांग के साथ जंग में शामिल हो गए। यह जनरल थे मा होंगकुई, मा बुफ़ांग, मा फ़ूशियांग, मा टिंगराँग मा जोंगयिंग वगैरह (Ma Hongkui, Ma Bufang Ma Fuxiang, Ma Tingrang, Ma Zhongying)।

और दूसरा पक्ष (चियांग विरोधी गठबंधन) में थे यान शिशान, फ़ंग यूशियांग, ली ज़ोंगरैन, टांग शेंगज़ी, ज़ांग फ़ाकुई, बाई चोंगशी, फ़ू ज़ोयी वगैरह (Yan Xishan, Feng Yuxiang, Li Zongren, Tang Shengzhi, Zhang Fakui, Bai Chongxi, Fu Zuoyi)।[366]

चियांग काई शेक के ख़िलाफ़ गठबंधन

इस की शुरुआत इस तरह हुई कि 1 January 1929 CE को विसैन्यीकरण कॉन्फ्रेंस Demilitarization conference हुई लेकिन यह फ़ेल हो गई, इसके बाद दूसरी कॉन्फ्रेंस हुई अगस्त 1929 में हुई लेकिन इस में तीन लीडर, ली ज़ोंगरैन, बाई चोंगशी और हुआंग शाओहोंग Li Zongren, Bai Chongxi and Huang Shaohong, चियांग से नाराज़ हो गए और उन्होंने चियांग काई शेक से अपना नाता तोड़ लिया और उस के ख़िलाफ़ फ़ौजी कार्रवाई की तैयारी शुरू कर दी।[367] इस कॉन्फ्रेंस के बारे में पूरी मालूमात तो नहीं है ताहम इतना लगता है कि इस में चियांग ने अपने सहयोगियों को यह हुक्म दिया होगा कि वो अपनी अलग अलग फ़ौज रखने के बजाय अपनी अपनी फ़ौजों को क़ौमी इन्क़लाबी फ़ौज National Revolutionary Army में शामिल कर दें, जिससे यह जंगी सरदार नाराज़ हो गए होंगे। इसी लिए इसे विसैन्यीकरण की कॉन्फ्रेंस कहा जाता है। चुनांचे इन लोगों ने वांग जिंगवी Wang Jingwei को भी अपने साथ मिला लिया जो चियांग काई शेक का दुश्मन था। May 1929 CE में फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang की भी चियांग से लड़ाई हो गई थी इस लिए वो भी चियांग काई शेक मुख़ालिफ़ गठबंधन में शामिल हो गया। November 1929 CE में ली ज़ोंगरैन ने खुले तौर पर चियांग काई शेक के ख़िलाफ़ गठबंधन बनाने का ऐलान कर दिया। दिसंबर में टांग शेंगज़ी और ज़ांग फ़ाकुई Tang Shengzhi and Zhang Fakui ने भी चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन में शामिल होने का ऐलान कर दिया। इस गठबंधन ने बीजिंग में अपनी नई हुकूमत बना ली। नानजिंग हुकूमत

ने चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन में शामिल होने पर वांग जिंगवी Wang Jingwei को क्योमिनटांग पार्टी से निकाल दिया।[368] February 1930 CE को यान शिशान Yan Xishan जो शानशी क्लीक़ Shanxi clique का सरदार था उसने चियांग से इस्तीफ़ा देने का मुतालबा किया लेकिन चियांग ने इनकार कर दिया, इस लिए यान भी चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन में शामिल हो गया। चुनांचे यान शिशान इस गठबंधन का सदर बन गया लेकिन ज़ांग शूलियांग Zhang Xueliang चियांग का वफ़ादार रहा।[369] इस जंग में मुसलमान भी चियांग के वफ़ादार रहे और पूरी तरह से उस का साथ दिया।[370] इन मुस्लिम जंगी सरदारों के नामों का जिक्र ऊपर किया जा चुका है। हालाँकि पहले यह फ़ंग यूशियांग के साथी थे लेकिन 1928 CE में उन्होंने उस से संबंध तोड़ लिए थे।[371] चुनांचे केन्द्रीय मैदानों के युद्ध Central Plains War में उन्होंने फ़ंग यूशियांग की फ़ौज को केन्द्रीय मैदानों से भगा दिया था।[372]

जंग की तैयारियां

चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन ने विभिन्न दिशाओं से चियांग पर हमले का मंसूबा बनाया। इस वक़्त चियांग का सबसे मज़बूत अड्डा नानजिंग के बाद वूहान Wuhan था। चुनांचे ली ज़ोंगरैन Li Zongren ने मंसूबा बनाया कि वो गुआंगशी से अपनी गुआंगशी फ़ौज Guangxi Army लेकर चलेगा और हुनान Hunan होता हुआ वूहान पर हमला करेगा। फ़ंग यूशियांग का इरादा था कि वो अपनी उत्तर पश्चिमी फ़ौज Northwest Army लेकर हेनान Henan होता हुआ शानडोंग Shandong के रास्ते शूज़ू Xuzhou पर हमला करेगा ताकि वूहान पर दबाव

पड़े। यान शिशान Yan Xishan, शानशी फ़ौज Shanxi Army का नेतृत्व करेगा और उत्तर पश्चिमी फ़ौज की मदद करेगा शूज़ू पर हमला करने में। शूज़ू पर क़ब्ज़ा करने के बाद यह मुश्तरका फ़ौज नानजिंग पर हमला करेगी जो चियांग की राजधानी थी।

चियांग ने इस के जवाब में हान फ़ूचू को हुक्म दिया कि वो पीली नदी के दक्षिणी तट पर अपान मोरचा बनाएँ ताकि शानशी फ़ौज का रास्ता रोक सकें। जबकि चियांग अपनी फ़ौज के साथ शूज़ू में ठहरा हुआ था और दुश्मन फ़ौज की आमद का इंतज़ार कर रहा था।[373]

जंग

11 May 1930 CE को चियांग ने यान शिशान और फ़ंग यूशियांग की फ़ौज पर हमला बोल दिया। चियांग की मर्कज़ी फ़ौज लोंगहाई रेलवे Longhai Railway होती हुई पश्चिमी दिशा में शूज़ू की तरफ़ बढ़ी और 16 मई को हेनान के काईफ़ेंग के बाहर पहुंची। चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन की सबसे मज़बूत फ़ौज उत्तर पश्चिमी फ़ौज थी जिसका नेतृत्व फ़ंग यूशियांग कर रहा था ने, चियांग की मर्कज़ी फ़ौज को गान्सू में शिकस्त दी उस वक़्त चियांग की फ़ौज का नेतृत्व चेन चैंग Chen Cheng कर रहा था। चियांग भी क़रीब था कि पकड़ा जाता लेकिन निकल भागने में कामयाब हो गया।[374] ताहम फ़ंग यूशियांग इस जीत का पूरा फ़ायदा नहीं उठा पाया, क्यों कि उस की फ़ौज तुरंत दोबारा चियांग काई शेक पर हमला कर के उसे हरा नहीं पाई। उधर गान्सू में मुसलमानों ने चियांग की बहुत मदद की जिसकी वजह से चियांग बहुत ताक़तवर हो गया और अब उत्तर

पश्चिमी फ़ौज अपनी रक्षा में लग गई। लेकिन काईफ़ेंग में उत्तर पश्चिमी फ़ौज ने चियांग काई शेक को ज़बरदस्त शिकस्त दी और चियांग का भारी नुक़सान हुआ। इस के बाद दोनों फ़ौजों ने पूरी ताक़त से शूज़ू में एक दूसरे पर हमला किया जिसकी वजह से दोनों तरफ़ भारी जानी नुक़सान हुआ, एक अंदाज़े के मुताबिक़ इस लड़ाई में लगभग 200,000 लोग दोनों तरफ़ से ज़ख़मी या क़त्ल हुए। इस के बाद शानशी फ़ौज जीनान Jinan की तरफ़ वापस हुई और रास्ते में पीली नदी पार करते हुए उस का मज़ीद जानी नुक़सान हुआ। चियांग विरोधी गठबंधन की फ़ौजें एक दूसरे से हम-आहंगी (coordination) न होने की वजह से कमज़ोर पड़ने लगीं जिससे चियांग को कामयाबी मिलने लगी।[375] उधर दक्षिणी तरफ़ ली ज़ोंगरैन और बाई चोंगशी Li Zongren and Bai Chongxi की फ़ौज ने उत्तर की तरफ़ पेशक़दमी करते हुए यूयांग Yueyang पर क़ब्ज़ा कर लिया लेकिन चियांग ने पीछे से उनका रास्ता रोक दिया जिस से उनको वापस गुआंगशी लौटना पड़ा। 25 जून को शानशी फ़ौज Shanxi Army ने जीनान पर क़ब्ज़ा कर लिया। चियांग ने हुनान में गुआंगशी फ़ौज को शिकस्त दी। इस के बाद वो शानडोंग में शानशी फ़ौज पर बड़ा हमला करने की तैयारी करने लगा। चुनांचे 15 अगस्त को चियांग ने चिंगडाओ Qingdao से चल कर जीनान पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद चियांग ने गान्सू और शांक्सी Shaanxi में अपनी फ़ौजें इकट्ठी कीं और उत्तर पश्चिमी फ़ौज पर बड़ा हमला कर दिया। यह हमला अगस्त के अंत से शुरू सितंबर तक चलता रहा।

18 September को ज़ांग शूलियांग और उत्तर पूर्वी फ़ौज ने अपनी निष्पक्षता छोड़ दी और चियांग से गठबंधन का ऐलान कर दिया। इस के कुछ दिन बाद उत्तर पूर्वी फ़ौज, शिनहाई दर्रे Shanhai Pass के रास्ते चीन के उत्तरी मैदान में दाख़िल हुई और दो दिन बाद पीकिंग पर क़ब्ज़ा कर लिया जो पहले चियांग के दुश्मनों की राजधानी थी। इसने जंग का नक्शा उलट दिया। शानशी फ़ौज पसपा हो कर पीली नदी पार कर के उस के उत्तरी तट पर चली गई। उत्तर पश्चिमी फ़ौज बिखर गई क्यों कि चियांग मुख़ालिफ़ गठबंधन के हौसले पस्त हो चुके थे। 4 नवंबर को यान शिशान और फ़ंग यूशियांग Yan Xishan and Feng Yuxiang ने अपने तमाम ओहदों से इस्तीफ़ा दे दिया। जिससे इस जंग का ख़ातमा हो गया और नानजिंग हुकूमत दोबारा से क़ायम हो गई लेकिन अब वो पहले से बहुत ज़्यादा ताक़तवर हो चुकी थी।[376] लेकिन नानजिंग हुकूमत को इस जंग से कुछ नुक़्सानात भी हुए। इस में पैसा बहुत ख़र्च हो गया जिसकी वजह से बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के ख़िलाफ़ जो घिराओ वाली मुहिमें (encirclement campaigns) हुईं वो कमज़ोर रहीं जिसका फ़ायदा कम्युनिस्ट पार्टी को बहुत ज़्यादा हुआ। उत्तर पूर्वी फ़ौज जो मंचूरिया की रक्षा कर रही थी जब चीन के मर्कज़ी इलाक़े में आगई तो मंचूरिया की रक्षा प्रणाली कमज़ोर हो गई जिसकी वजह से जापान को हमला करने का मौक़ा मिल गया जिसके नतीजे मुकडेन घटना Mukden Incident हुई जिसके बाद मंचूरिया में जापान समर्थित मांचुकुओ Manchukuo सरकार की स्थापना हुई। इसके बाद दूसरी चीन-ओ-

जापान जंग हुई और इस के बाद गृहयुद्ध हुआ जिसमें चियांग के हाथ से चीन निकल गया और कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम हो गई।

मा फ़ूशियांग की फ़ौज

मा फ़ूशियांग की फ़ौज में ज़्यादातर सालार लोग थे। उसने अपनी फ़ौज को 5 अंदरूनी हिस्सों और 8 बाहरी हिस्सों में बाँटा था। उसने बाहरी हिस्से में तिब्बती बोलने वाले सालार लोगों को रखा था जो दोनों ज़बानें सालार और चीनी बोलना जानते थे। उस की फ़ौज का एक यूनिफ़ॉर्म भी था और उनके पास कार्बाइन, राइफ़ल, पिस्तौल और दूरबीन भी होती थीं। उस की घुड़सवार फ़ौज हीज़ू Hezhou के मुसलमानों पर आधारित थी।[377] उस को कई फ़ौजों का कमांडर बनाया गया था जिनमें 1922 CE में गान्सू की 6 वीं ब्रिगेड का कमांडर और 1926 CE में उत्तर पश्चिमी फ़ौज के 7 वें डिवीज़न का कमांडर का ओहदा शामिल है।

नशीली दवाओं पर पाबंदी

जब मा फ़ूशियांग 1921 CE में सूई युआन के गवर्नर बनाए गए तो उन दिनों वहां मुनश्शियात (नशीली दवाएं) का कारोबार ज़ोरों पर था क्यों कि वहां बड़े पैमाने पर अफ़ीम की खेती होती थी। और चूँकि वहां के फौजियों को पूरी तनख़्वाहें नहीं मिल पा रही थीं इस लिए वो अफ़ीम के कारोबार से अपान ख़र्च पूरा किया करते थे। हालाँकि गान्सू में मा फ़ूशियांग ने अफ़ीम के कारोबार पर पाबंदी लगा दी थी क्यों कि वहां मुस्लिम आबादी बहुत ज़्यादा थी लेकिन, सूई

युआन में वो यह नहीं कर पाए क्यों कि वहां अफ़ीम का कारोबार बहुत ज़ोरों पर था और सरकारी अहलकार भी उस को बंद करना नहीं चाहते थे। मा ने सूई युआन में बहुत विकासात्मक कार्य कराए जिससे वहां रोज़गार के अवसर काफ़ी बढ़े, मिलिट्री में लोगों को भर्ती किया गया, और शिक्षा प्रणाली (तालीमी निज़ाम) को तरक़्क़ी दी गई, स्कूल और कॉलेज बनाए गए।[378]

निंगशिया में भी मा फ़ूशियांग ने अफ़ीम के कारोबार पर पाबंदी लगा दी और उस को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया लेकिन बाद में गोमिनजुन Guominjun ने उस की पॉलिसी को उलट दिया। चुनांचे 1933 CE तक लगभग हर मर्द अफ़ीम का आदी हो चुका था।

शिक्षा के मैदान में

मा फ़ूशियांग ने मा लिनयी Ma Linyi के साथ मिलकर इमाम वांग जिंगज़ाई Wang Jingzhai को 1921 CE में हज पर भेजा। मा ने इमाम हू सोंगशान Hu Songshan की भी हिमायत की। मा फ़ूशियांग ने दूसरे मुस्लिम लीडरों के साथ हुई मुसलमानों की चेंगडा टीचर्स एकेडमी Hui Muslim Chengda Teacher's Academy की भी मदद की। इसी इदारे में चीनी मुसलमानों के तालीमी निज़ाम (शैक्षिक व्यवस्था) में सुधार किए और लोगों में चीनी देशभक्ति को बड़ावा दिया।[379] मा ने पूरे उत्तर-पश्चिमी चीन में मुसलमानों के लिए बहुत से प्राइमरी और हाई स्कूल बनाए। उन्होंने 1918 में गान्सू प्रांत की राजधानी में इस्लामी शिक्षाओं को बड़ावा देने के लिए अंजुमन की बुनियाद रखी।[380] उत्तर पश्चिमी चीन में हुई मुसलमानों को शिक्षा देने के लिए बने, बीजिंग के नॉर्थ वेस्टर्न

मिडिल स्कूल Beijing's Xibei Gongxue (the Northwestern Middle School) और Yuehua की मा फ़ूशियांग ने माली मदद की। उनका ख़्याल था कि आधुनिक शिक्षा ही मुसलमानों को एक बेहतर समाज बनाने में मदद देगी और चीन को विदेशी साम्राज्य के खिलाफ़ लड़ाई में मदद मिलेगी। उनके पास शिक्षा को फ़ंड देने के लिए फ़ौजी इख़्तियार और आर्थिक शक्ति दोनों थीं। 1932 में उनकी मृत्यु तक हर माह 100 युआन शिक्षा के लिए उनकी तरफ़ से दिए जाते थे। उन्होंने निंगशिया में एक पब्लिक लाइब्रेरी स्थापित की, और मुख़्तलिफ़ मुस्लिम स्कूलों की सरपरस्ती की। वो एक चीनी क़ौम परस्त और कन्फ्यूशियस पसंद थे, और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से उनके "गोजिया यीज़ी" guojia yizhi (राष्ट्रवाद) की तारीफ़ की गई। उन्होंने कन्फ्यूशियस और इस्लामी किताबों के नए एडिशन और दोबारा प्रिंटिंग में भी माली मदद दी।[381] उन्होंने एक गज़ट Gazette (राज-पत्र) शूफांग दाओज़ी "Shuofang Daozhi" का संपादन (editing) किया। और किताबें जैसे 'मेंग कागं ज़ुआंग कुआंग: हुई बू शिंजियांग फ़ु' Meng Cang Zhuang Kuang: Hui Bu Xinjiang fu की भी तसहीह (editing) की। मा ते-हसिन Ma Te-hsin की किताब Ho-yin Ma Fu-ch'u hsien-sheng i-shu Ta hua tsung kuei Ssu tien yaohui.[382] जो 1865 में छपी थी उस को दोबारा 1927 में मा फ़ूशियांग ने छपवाया।[383] मा फ़ूशियांग का घरेलू नाम युनटिंग था, चुनांचे उनकी याद में एक स्कूल का नाम 'युनटिंग परोविनशियल नॉर्मल स्कूल' Yunting Provincial Normal School रखा गया। मा ने शांक्सी में औरतों की शिक्षा को भी बड़ावा दिया।[384]

मा होंगकुई

मा होंगकुई निंगशिया के शासक थे और दौलत और इलाक़े के मामले में तीनों मा में सबसे ज़्यादा ताक़तवर माने जाते थे, उन्होंने अपनी अलग करेंसी currency भी बनाई थी। जब चीन-ओ-जापान की जंग के बाद क्योमिनटांग और कम्युनिस्टों के बीच दोबारा से लड़ाई छिड़ी तो मा होंगकुई ने क्योमिनटांग का साथ देते हुए कम्युनिस्टों को कई मोर्चों पर शिकस्त दी और कम्युनिस्टों को कई जंगों मे हराया। मा होंगकुई को आख़िर में शूगर हो गई थी लेकिन वो आइसक्रीम के बहुत शौक़ीन थे और आइसक्रीम खाने की लत लग गई थी। 1949 में कम्युनिस्टों की जीत के बाद वो चोंगचिंग Chongqing भाग गए और उसके बाद ताइवान और उसके बाद अमेरिका में सैन फ्रांसिस्को में बस गए और वहीं 1970 में उनका इंतिक़ाल हुआ।

मा होंगबिन Ma Hongbin

मा होंगबिन (14 September 1884 – 21 October 1960), एक चीनी जंगी सरदार थे जो चीनी लोकतांत्रिक दौर में गान्सू और निंगशिया के चेयरमैन रहे।

- 7 Jan 1921– Dec 1928 तक निंगशिया के गवर्नर पहली बार और दूसरी बार गान्सू के गवर्नर रहे 1948–1949 तक। हालाँकि निंगशिया की असल राज-सत्ता मा ज़ोंगयिंग के पास थी क्योंकि वो मा होंगबिन के हरीफ़ (rival) थे। और 1930 में निंगशिया के चेयरमैन हुए।
- नवंबर 1930 से दिसंबर 1931 तक गान्सू के गवर्नर रहे।

- दूसरी बार गान्सू के गवर्नर रहे 1948 से 1949 तक।

मा होंगबिन गान्सू के शहर लिनशिया के हानचियाची Hanchiachi गांव में पैदा हुए। वो मा फ़ूलू के बेटे थे जो 1900 CE में पीकिंग में बॉक्सर विद्रोह के दौरान पीकिंग की जंग में शहीद हुए थे।[385] वो मा फ़ूशियांग के भतीजे होने के नाते उनके साथ फ़ौज में शामिल हो गए और बाद में वो फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang की फ़ौज में शामिल हो गए। इसी दौरान उन्होंने मा फ़ूशियांग के साथ मिलकर एक कैथोलिक मिशन को चीनी हमलावरों से बचाया जिसका ज़िक्र मा फ़ूशियांग के विषय में गुज़र चुका है। केन्द्रीय मैदानों की जंग में मा होंगबिन ने मा टिंगशियांग Ma Tingxiang पर हमला कर दिया, उस वक़्त मा टिंगशियांग फेंग शुई की तरफ़ से निंगशिया के शासक थे। चियांग काई शेक ने उनकी मदद के बदले उनको अपनी नेशनल रिवोल्यूशनरी सेना के 22 वें और 24 वें डिवीज़न का कमांडर बना दिया। वो 1921-1928 CE तक निंगशिया के गवर्नर रहे और 1930 CE में निंगशिया के चेयरमैन हुए। 1930 CE में चियांग काई शेक ने मा होंगबिन को गान्सू की सूबाई काउंसिल का चेयरमैन बना दिया जिस ओहदे पर वो 1931 CE तक रहे। ताहम उनका शासन गान्सू पर नाम को ही था क्यों कि असल राज-सत्ता मा ज़ोंगयिंग के हाथ में थी जो गान्सू का जंगी सरदार (मिलिट्री गवर्नर) था और क्योमिनटांग से गठबंधन रखता था। वो अपनी मुस्लिम फ़ौज के साथ क्योमिनटांग में शामिल हो गया था। चियांग काई शेक ने उस की मुस्लिम फ़ौज को अपनी नेशनल रिवोल्यूशनरी आर्मी का 36 वां डिवीज़न बना दिया था और मा ज़ोंगयिंग को उस का कमांडर बना दिया था। बाद में 1934 में

मा ज़ोंगयिंग सोवियत रूस चला गया लेकिन अब भी गान्सू की फ़ौज मा ज़ोंगयिंग की वफ़ादार थी।

सुन डियानयिंग अभियान

Sun Dianying Campaign

यह जंग 1934 में निंगशिया में हुई। इस में दो मुख़ालिफ़ गिरोह निंगशिया पर अपना कंट्रोल क़ायम रखने के लिए आपस में भिड़ गए एक थी मा क्लीक़ और उस के साथ थी शानशी क्लीक़ Shanxi clique और चीन की लोकतांत्रिक हुकूमत Nationalist government of China जब कि मुख़ालिफ़ गिरोह था सुन डियानयिंग की निजी फ़ौज Sun Dianying's private army जिसको 41 वां डिवीज़न या 41st Army भी कहा जाता था।

पृष्ठभूमि

1930 की दहाई में चीन की लोकतांत्रिक हुकूमत सिर्फ़ राजधानी नानजिंग तक ही सीमित हो कर रह गई थी बाक़ी पूरा चीन क्लीक़ों में बटा हुआ था जहाँ अलग अलग जंगी सरदारों (मिलिट्री गवर्नरों) की हुकूमतें थीं, जिनमें मुसलमानों की मा क्लीक़ भी थी जो गान्सू, निंगशिया और चिंगहाई के इलाक़े में थी। हालाँकि यह मा क्लीक़ भी चियांग काई शेक से गठबंधन रखती थी लेकिन चियांग काई शेक उस को कमज़ोर करना चाहता था। दूसरी तरफ़ चियांग का दुश्मन नंबर अव्वल, फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang अपनी अलग फ़ौज बना रहा था जिसका नाम उसने ‘चाहार अवाम की जापान मुख़ालिफ़ फ़ौज’ Chahar People's Anti-Japanese Army रखा। बज़ाहिर ये फ़ौज अंदरूनी

मंगोलिया में जापानी हमले के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए थी लेकिन दर-हक़ीक़त फ़ंग यूशियांग इस की आड़ में अपने दुश्मन चियांग के ख़िलाफ़ फ़ौज इकट्ठी कर रहा था और अवामी हिमायत हासिल करने की कोशिश कर रहा था। इस के जवाब में चियांग ने पहला काम तो ये किया कि क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज (NRA) की यूनिटों को सूबा चाहार से हटा कर चीन के दूसरे हिस्सों में भेज दिया।[386] इस के बाद उसने ऐसा मंसूबा बनाया कि एक तीर से दो शिकार हो जाएं। सुन डियानयिंग Sun Dianying को, मा क्लीक़ के इलाक़ों में बसने का हुक्म दिया ताकि बाद में वो खुद सुन डियानयिंग का साथ छोड़ दे और फ़ंग यूशियांग अपने पुराने साथी (सुन डियानयिंग) की मदद को आए और मा क्लीक़ और फ़ंग यूशियांग आपस में लड़ने लगें और एक दूसरे को कमज़ोर करने लगें।[387] याद रहे सुन डियानयिंग Sun Dianying, चियांग काई शेक की जमहूरी फ़ौज के 41 वें डिवीज़न का कमांडर था लेकिन पहले वो फ़ंग यूशियांग का साथी रह चुका था। चुनांचे जून 1933 CE में चियांग ने सुन डियानयिंग को आदेश दिया कि वो चिंगहाई में रहे और वहां के क़ैदाम बेसिन Qaidam Basin के इलाक़े में हान लोगों को बसाए, ताकि मुसलमानों की आबादी का तनासुब (अनुपात, proportion) वहाँ कम हो जाए। चुनांचे अपनी 60,000 फ़ौज के साथ सुन, चिंगहाई पहुंच गया जहां चियांग ने उसे चिंगहाई को दोबारा बसाने वाला कमिश्नर Reclamation Commissioner of Qinghai नियुक्त कर दिया। लेकिन चूँकि चिंगहाई उस समय मा क्लीक़ के ज़ेर हुकूमत (सरकार के अधीन) था इस लिए मा क्लीक़ के सरदारों के कान खड़े हो गए कि सुन डियानयिंग उन के लिए

ख़तरा बन सकता है। चुनांचे चिंगहाई के गवर्नर मा लिन और निंगशिया के गवर्नर मा होंगकुई ने चियांग के इस क़दम का विरोध शुरू कर दिया और चियांग काई शेक पर दबाओ डालना शुरू कर दिया कि वो इस आदेश को वापस ले वरना वो चियांग के गठबंधन से इस्तीफ़ा दे देंगे और उस के ख़िलाफ़ विद्रोह कर देंगे। चुनांचे चियांग ने सुन डियानयिंग को हुक्म दिया कि वो अपनी पेशक़दमी रोक दे। इस लिए सुन डियानयिंग, निंगशिया की सूई युआन सीमा पर रुक गया लेकिन वहां उस की फ़ौज को भूक का सामना करना पड़ा क्यों कि वहां उस की फ़ौज को खाने पीने की चीज़ें नहीं मिलीं। इस लिए मजबूर हो कर वो निंगशिया में दाख़िल हो गया जिसकी वजह से मा क्लीक़ से उस का खुला टकराव हो गया।[388]

जंग

सुन डियानयिंग निंगशिया में दाख़िल तो हो गया लेकिन चियांग काई शेक भी उस से बज़ाहिर नाराज़ हो गया क्यों कि चियांग ने उसे रुकने का हुक्म दिया था लेकिन उसने हुक्म की ख़िलाफ़-वरज़ी की थी। इस तरह चियांग काई शेक भी मा क्लीक़ के जनरलों की तरफ़ से लड़ने की तैयारी करने लगा। वैसे भी सुन डियानयिंग कोई वफ़ादार जनरल नहीं था चियांग का, क्यों कि वो अपने पाले बदलता रहता था कभी चियांग की तरफ़ हो जाता कभी उस के मुख़ालिफ़ फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang की तरफ़ हो जाता। जिस वक़्त सुन डियानयिंग निंगशिया में दाख़िल हुआ उस वक़्त उस के पास लगभग 60,000 फ़ौज थी जबकि मा होंगकुई भी पहले से 10,000 फ़ौज के साथ सीमा पर ठहरा हुआ था।

सुन डियानयिंग ने शिज़ुईशान Shizuishan में अपनी एक अंतरिम सरकार Interim government भी क़ायम कर ली थी और खुल्लम खुल्ला ऐलान कर दिया था कि हम पूरे सूबे पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। चुनांचे मा होंगकुई अपनी फ़ौज लेकर मैदान-ए-जंग की तरफ़ चल दिया जिसमें उस की मशहूर घुड़सवार फ़ौज भी शामिल थी।[389] इस के अलावा मा होंगबिन, मा ज़ोंगयिंग और मा बुफ़ांग ने भी गान्सू और चिंगहाई से मदद के लिए फ़ौज भेजी। उधर चियांग काई शेक ने देखा कि सुन डियानयिंग उस के हाथ से निकल चुका है तो उसने भी खुले तौर पर मा क्लीक़ की हिमायत का ऐलान कर दिया। उसने शानशी Shanxi में अपने गवर्नर यान शिशान Yan Xishan को हुक्म दिया कि वो मा क्लीक़ की मदद के लिए फ़ौज भेजे और सूई युआन की अपनी फ़ौज को ज़ू शाओलियांग Zhu Shaoliang की कमांड में सुन डियानयिंग के ख़िलाफ़ लड़ने भेजा। मा क्लीक़ के नेताओं का यह भी मानना था कि चियांग इन ग़ैर मुस्लिम फ़ौजों को इस लिए भेज रहा है ताकि मा क्लीक़ के सरदार अकेले इस जंग को न जीतें और वो जीत के बाद पहले से ज़्यादा ताक़तवर न हो जाएं।[390] चुनांचे सुन डियानयिंग, शिज़ुईशान Shizuishan में अपनी फ़ौज इकट्ठी कर के निंगशिया की राजधानी यिनचुआन Yinchuan की तरफ़ बढ़ा। हालाँकि मा होंगकुई की फ़ौज से उस की कुछ झड़पें भी हुईं लेकिन वो कामयाबी के साथ आगे बढ़ता हुआ लिकांगपू Likangpu पहुंच गया जो यिनचुआन से सिर्फ 13 किलो मीटर दूर था। इस के बाद सुन की फ़ौज ने मा होंगकुई की फ़ौज को 24 जनवरी को पिंगलू शहर के पास शिकस्त दी। लेकिन इस के बावजूद वो मा क्लीक़ के मोर्चे

तोड़ने और यिनचुआन पर क़ब्ज़ा करने में ना काम रहा क्यों कि मा क्लीक़ ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया। इस दौरान जंग में उस के बहुत से फ़ौजी रोज़ मारे जा रहे थे और कुछ भूक से मर रहे थे इस तरह उस की फ़ौज कमज़ोर होनी शुरू हो गई। दूसरी तरफ़ मा क्लीक़ की फ़ौज जो पहले कमज़ोर थी वो गान्सू और लोकतांत्रिक फ़ौज की कुमक पहुंचे से दिन-ब-दिन ताक़तवर होती जा रही थी और उस से मुक़ाबला करना दिन ब दिन मुश्किल होता चला जा रहा था। चुनांचे जनवरी के अख़ीर तक मा क्लीक़ की फ़ौज ने आक्रामक हमले शुरू कर दिए। एक मौक़े पर चियांग काई शेक ने मा क्लीक़ की मदद के लिए राष्ट्रवादी वायु सेना Nationalist Air Force के बम बार जहाज़ भी भेजे जिन्होंने निंगशिया में दुश्मन फ़ौज पर बमबारी की और मा क्लीक़ की फ़ौज को रसद पहुंचाया।[391] 30 जनवरी को चियांग काई शेक ने सुन डियानयिंग को चिंगहाई को दोबारा बसाने वाला कमिश्नर Reclamation Commissioner of Qinghai के ओहदे से बरख़ास्त कर दिया। मार्च में मा क्लीक़ की फ़ौज ने सुन को शिकस्त-ए-फ़ाश दी और उस की भागती हुई फ़ौज का यान शीशान की फ़ौज ने रास्ता बंद कर दिया। सूई युआन की लोकतांत्रिक फ़ौज ने सुन डियानयिंग के डेंगकू Dengkou County पर क़ब्ज़ा कर लिया। शिकस्त खाने के बाद सुन डियानयिंग ने पांग बिंगशुन Pang Bingxun को बिचौलिया बना कर यान शीशान से हथियार डालने की पेशकश की और April 1934 CE में हथियार डाल दिए।

पश्चिमी सूई युआन की जंग Battle of Western Suiyuan

निंगशिया की जंग के बाद जापान ने 1939 CE में निंगशिया में अपनी एक हुई मुस्लिम कठपुतली हुकूमत Hui Muslim puppet state बनाने का मंसूबा बनाया। अगले साल 1940 CE में जापान ने निंगशिया पर हमला कर दिया लेकिन मा होंगबिन ने उसे शिकस्त दी। मा ने सिर्फ़ शिकस्त ही नहीं दी बल्कि तैयारी कर के बड़ा हमला कर दिया जिसके नतीजे में जंग हुई जिसको पश्चिमी सूई युआन की जंग कहा जाता है।[392] यह जंग जनवरी और फ़रवरी 1940 के बीच हुई। इस की शुरूआत इस तरह हुई कि चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत को ख़ुफ़िया सूत्रों से ख़बर मिली कि जापान, निंगशिया और सूई युआन के इलाक़े में अपनी एक मुस्लिम कठपुतली सरकार बनाना चाहता है। याद रहे इस से पहले 1939 CE में जापान मंगोलिया के इलाक़े में अपनी एक और कठपुतली हुकूमत बना चुका था जिसको मेंगजियांग Mengjiang कहा जाता था और उस की राजधानी कालगान Kalgan थी। जापान ने मंसूबा बनाया था कि वो सूई युआन के रास्ते निंगशिया पर हमला करेगा। चायना मैगज़ीन के मुताबिक़ इस जंग में 300 मंगोल जापान की तरफ़ से लड़ रहे थे जिनको सिर्फ एक मुस्लिम मेजर ने वुलान ओबो की जंग Battle of Wulan Obo in 1939 में शिकस्त देकर भगा दिया।[393] इस के बाद मा होंगबिन की फ़ौज जिसको 81 वां डिवीज़न कहा जाता था ने जापान को 1940 CE में शिकस्त दी। इस के बाद वूयुआन की जंग हुई।

वूयुआन की जंग Battle of Wuyuan

यह जंग मार्च March 16 – April 3, 1940 के दरम्यान हुई। यह जंग सूई युआन की जंग के बाद हुई जिसका ज़िक्र ऊपर आ चुका है। चुनांचे 16 march 1940 CE को जापान की फ़ौज के नए चौथे डिवीज़न ने लिनहे Linhe के इलाक़े पर हमला कर दिया। बाक़ी 35 वीं कौर (35th Corps) और नए 31 वें डिवीज़न New 31st Division की फ़ौज जिस को छावनी की ब्रिगेड Garrison Brigade कहा जाता था उसने पूरब की तरफ़ पेशक़दमी की और वू चिया Wu-chia नदी को पार किया। 20 मार्च की रात को वूयुआन में दाख़िल हुए और कई लड़ाईयों के बाद 21 मार्च के शाम 4 बजे उन्होंने वूयुआन शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बाद 22 को उन्होंने सिन-अन-चेन Hsin-an-chen पर क़ब्ज़ा कर लिया जिससे वूयुआन से पीली नदी जाने वाला रास्ता कट गया। इस के बाद 600 जापानी फौजियों का क़ाफ़िला 80 ट्रकों में सवार हो कर डाशेटाई Dashetai से सीयीटांग Siyitang होता हुआ ता-साइ-चू Ta-tsai-chu पहुंचा ताकि वहां से वो वू चिया Wu-chia नदी पार कर के वूयुआन Wuyuan पहुंच सके। 3 दिन तक उनकी लड़ाई चीनी फ़ौज के 101 वें डिवीज़न से होती रही लेकिन कोई कामयाबी न मिली, लेकिन 25 तारीख़ को 3000 जापानियों की कुमक और पहुंच गई इस के अलावा जापानी फ़ौज ने हवाई हमले भी किए जिसकी वजह से वूयुआन पर दोबारा जापानियों का क़ब्ज़ा हो गया और चीनी फ़ौज फाँग-ची-चू Fang-chi-chu नदी के तट तक पीछे हट गई लेकिन उन्होंने शीनान, शिशानज़ुई और शिशियाओज़ाओ और मनकोसू Xin'an, Xishanzui,

Xixiaozhao, and Man-ko-su पर अपने हमले जारी रखे। मिडिलसबोरो अख़बार Middlesboro Daily ने भविष्यवाणी की कि जापान मुस्लिम इलाक़ों पर हमले की तैयारी कर रहा है लेकिन उस को इस जंग में मुसलमानों के हाथों करारी शिकस्त मिलेगी।[394] चुनांचे 13 April 1940 तक मा होंगबिन और मा होंगकुई की मुश्तरका फ़ौज ने जापानियों को शिकस्त दी और उनको पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। चुनांचे मुस्लिम घुड़सवार फ़ौज ने जापानियों से अपने सारे इलाक़े वापस ले लिए। इस जंग में जापान ने चीनी मुस्लिम फ़ौज के ख़िलाफ़ ज़हरीली गैस का भी इस्तेमाल किया।[395]

मा होंगबिन की फ़ौज 81st corps में ज़्यादातर उनके ख़ानदान के लोग थे। उनके चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ उनके निसबती भाई brother in law मा चियांग लियांग थे। अमेरिकन एशियाटिक एसोसिएशन American Asiatic Association के मुताबिक़ मा होंगबिन के मातहत 84 वीं कौर भी थी। जंग के बाद वो उत्तर पश्चिमी फ़ौज के हेडक्वार्टर के सीनियर सलाहकार Senior adviser within the Northwestern Army Headquarters बन गए। जब 1949 CE में चीन में कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम हुई तो मा होंगकुई वहां से फ़रार हो कर ताइवान आ गए और मा होंगबिन और उनके बेटे मा डुनजिंग Ma Dunjing अपनी फ़ौज की 81 वीं कोर समेत कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। चुनांचे उनको मा होंगकुई के छोड़े हुए ओहदे भी मिल गए। इस के अलावा वो गान्सू के वाइस चेयरमैन बना दिए गए। इस पद का नाम बाद में वाइस गवर्नर कर दिया गया। उनको नसली मामलों की कमीशन का वाइस डायरेक्टर बना दिया गया और

नेशनल डिफेंस कमीशन का मेंबर भी। उनका इंतिक़ाल 1960 CE में लांज़ू Lanzhou में हुआ।

ख़ानदान

मा होंगबिन, मा फ़ूलू के बेटे थे और मा होंगकुई के चचाज़ाद भाई थे।[396] मा फ़ूशियांग, मा फ़ूशू और मा फ़ूचाई उनके चचा थे। मा चियानलिंग उनके दादा थे। मा डुनजिंग General Ma Dunjing (1906-1972 CE) उनके बेटे थे। मा डुनजिंग के तीन चचा मा डुनहू, मा डुनजिंग और मा डुन रैन जनरल बने।

Ma Dunhou (Ma Tun-hou, misspelled as Ma Tung-hou) 馬敦厚, Ma Dunjing (1910–2003), and Ma Dunren.

मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying

मा ज़ोंगयिंग (1910/1908-1936) को 'कमांडर गा' भी कहा जाता था जिसका मतलब होता है छोटा कमांडर क्योंकि वो 20 साल से भी कम उमर में कमांडर बन गए थे। उनका पैदाइशी नाम माबूयिंग Ma Buying था। 14 साल की उम्र में वो मुस्लिम मिलिशिया Muslim militia में शामिल हो गए थे। जनरल मा ज़ोंगयिंग ने वामपोआ wampoa मिलिट्री एकेडमी में तरबियत हासिल की थी। वो 1930 CE की दहाई में गान्सू के जंगी सरदार रहे।

चियांग काई शेक ने अपनी क्योमिनटांग पार्टी की एक फ़ौजी भी बनाई थी जिसको क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज National Revolutionary Army (NRA) कहा जाता था। यह फ़ौज 1928 से 1947 तक क़ायम रही। उसका 36 वां,

डिवीज़न पूरा हुई मुसलमानों पर आधारित था जिसको 36 वां डिवीज़न क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज या 'डुंगन 36 वां डिवीज़न' या केएमिटी 36 डिवीज़न भी कहा जाता था। पहले यह फ़ौज दरअसल मा क्लीक़ के जंगी सरदार मा ज़ोंगयिंग की निजी फ़ौज थी जो उसने 1929 में बनाई थी। लेकिन जब मा ज़ोंगयिंग ने क्योमिनटांग की आज्ञाकारिता स्वीकार की तो उस की फ़ौज को क्योमिनटांग ने अपनी क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज में शामिल कर लिया और उस का नाम 36 वां डिवीज़न कर दिया और उस का कमांडर मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying को ही बना दिया। इस डिवीज़न ने चीन की तरफ़ से बहुत सी जंगों में हिस्सा लिया ख़ासकर 1934 में जब रूस की सफ़ैद फ़ौज White Russian forces (श्वेत रूसी सेना) ने शिंजियांग पर हमला किया तो इस फ़ौज ने उनको खदेड़ दिया और बहुत से हथियार भी रूसी फ़ौज छोड़ गई जो बाद में इन लोगों ने इस्तेमाल किए।

चियांग काई शेक ने मा ज़ोंगयिंग को हुक्म दिया था कि वो शिंजियांग के गवर्नर जिन शूरेन Jin Shuren को बेदख़ल कर दे। मा ज़ोंगयिंग ने शिंजियांग में रूस के ख़िलाफ़ कई लड़ाईयां लड़ीं और 1934 तक रूसी पुश्तपनाही वाली हुकूमत के बहुत बड़े इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया।

तफ़सीली हालात

जब मुसलमानों ने फ़ंग यूशियांग की गोमिनजुन फ़ौज Feng Yuxiang's Guominjun forces के ख़िलाफ़ बग़ावत की तो मा ज़ोंगयिंग ने भी इस में हिस्सा लिया और अपने कई रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ भी जंग की जैसे मा लिन

Ma Lin जो गोमिनज़ुन के साथ थे।[397] मा ज़ोंगयिंग ने मा लिन की फ़ौज के गढ़ हीज़ू Hezhou पर क़ब्ज़ा कर लिया और जब मा लिन की फ़ौज उस के मुक़ाबले के लिए गई तो उस को शिकस्त दी।[398] ज़ाओ शीपिंग Zhao Xiping जो फ़ंग यूशियांग की नेशनल पीपुल्स आर्मी के 17 वें डिवीज़न का कमांडर commander of the 17th division of the National People's Army था उसने मा ज़ोंगयिंग के हमले की प्रतिक्रिया retaliation में हीज़ू शहर को जला दिया जिसमें काफ़ी मुसलमानों का जानी-और-माली नुक़सान हुआ और 12 मस्जिदें भी जलीं।[399] याद रहे, फ़ंग यूशियांग, मा लिन का सहयोगी था, इसलिए उसने मा लिन की ओर से बदला लिया। हालाँकि मा ज़ोंगयिंग को इस का हुक्म नहीं दिया गया था कि वो हीज़ू पर क़ब्ज़ा करे, इस लिए हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी के जुर्म में उस के कमांडर मा कू चांग Ma Ku-chang (जो कि उस के चचा भी थे), ने उसे कमिश्नर के ओहदे से बरख़ास्त कर दिया।[400] कहा जाता है कि इस क़ब्ज़े में उस इलाक़े के हुई मुसलमानों ने उस का साथ नहीं दिया था लेकिन उसने अपनी फ़ौज में बहुत से सालार लोगों को भर्ती कर लिया। 1928 CE में मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying ने ताओज़ू Taozhou पर हमला कर दिया जो शीडाओटांग Xidaotang पंथ का केंद्र था। शीडाओटांग के अनुयायी अपने घर, दुकानें और खेतियां छोड़कर वहां से चिंगहाई Qinghai की तरफ़ फ़रार हो गए।[401] मा ज़ोंगयिंग ने उनके मुख्यालय पर क़ब्ज़ा कर लिया जिसको रंग-बिरंगी मस्जिद Multi-coloured Mosque कहा जाता था और उस में आग लगा दी।[402] शीडाओटांग के लोगों ने अपना नया मुख्यालय ज़ांगजियाकू

Zhangjiakou में बना लिया जो बीजिंग के उत्तर पश्चिमी north western में एक बंदरगाह के क़रीब था। इस के बाद मा ज़ोंगयिंग ने April 1929 CE में गान्सू के लांज़ू शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया, यह भी गोमिनजुन के क़ब्ज़े में था लेकिन बाद में दुश्मन फ़ौज ने उसे शिकस्त देकर बेदख़ल कर दिया।

1929 CE में ही मा ने नानजिंग की वामपोआ मिलिट्री एकेडमी Whampoa Military Academy में तरबियत हासिल की।[403]

मा ज़ोंगयिंग शिंजियांग में

मा ज़ोंगयिंग के हालात शिंजियांग क्लीक़ में बयान किए जा चुके हैं लेकिन यहां भी उनके हालात मुख़्तसर तौर पर बयान किए जा रहे हैं। जब जिन शूरेन ने कुमूल ख़ानियत को ख़त्म कर दिया तो उस के वज़ीर युलबर्स ख़ान ने मा ज़ोंगयिंग से इल्तिजा की, कि वो शिंजियांग में उनकी मदद करे और जिन शूरेन के ख़िलाफ़ कार्रवाई करे। चुनांचे मा ज़ोंगयिंग ने जिन शूरेन से जंग की लेकिन इस लड़ाई में वो ज़ख़मी हो गया और गान्सू लौट आया। इलाज के बाद दोबारा 1933 CE में वो शिंजियांग लौटा। इस की फ़ौज चियांग काई शेक की फ़ौज का 36 वां डिवीज़न कहलाती थी। इस बार जिन शूरेन ने अपने साथ सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज White Russian Army को भी मिला लिया। चियांग काई शेक, जिन शूरेन से इस लिए नाराज़ था क्यों कि उस ने रूस के साथ बग़ैर चियांग की अनुमति के एक मुआहिदा कर लिया था। कहा जाता है कि इस वक़्त मा ज़ोंगयिंग की उम्र सिर्फ 20 साल थी। एक-बार एक फ़ौजी क़िले का उसने घिराओ कर लिया और डब्लू पेट्रो W. Petro नाम के एक यूरोपीय को बिचौलिए

के तौर पर इस फ़ौजी क़िले के सरदार के पास भेजा। सरदार ने उस से सवाल किया, क्या वाक़ई मा ज़ोंगयिंग की उम्र सिर्फ 20 साल है तो यूरोपीय ने जवाब दिया, हाँ। इस लिए 80 साला सरदार ने हथियार डालने से इनकार कर दिया, हालांकि उस के साथियों ने उस की बहुत ख़ुशामद की, कि हालात बहुत ख़राब हैं, हमें हथियार डाल देने चाहिऐं।[404]

मा ज़ोंगयिंग पर यह इल्ज़ाम था कि वो हुई लोगों को तरजीह preference देता है और उनको बड़े बड़े ओहदे देता है और उइग़ूर और हान लोगों पर ज़ुल्म करता है, और उनको बड़े ओहदे नहीं देता। उस पर यह भी इल्ज़ाम था कि वो हान और उइग़ूर को ज़बरदस्ती अपनी फ़ौज में भर्ती करता है और उनको अपनी फ़ौज में सबसे आगे रखता है ताकि दुश्मन का सबसे पहले निशाना वो बनें। रूस और शेंग शिकाई ने यह भी इल्ज़ाम लगाया कि मा ज़ोंगयिंग जापान से साज़-बाज़ रखता है, क्यों कि उसने कुछ जापानी जनरलों को पकड़ कर अपनी फ़ौज में भर्ती कर लिया है और अब वो जापानी फ़ौजी उस की फ़ौज में सेवा कर रहे हैं। लेकिन मा ज़ोंगयिंग ने हमेशा इस बात का खंडन किया और उस का कहना था कि वो चियांग काई शेक का वफ़ादार है।

मा ज़ोंगयिंग ने बरकल में अपना एक शासक नियुक्त कर दिया था जो हुई था लेकिन हुई और हान लोग उस से भी नफ़रत करते थे।[405] एक यूरोपीय पर्यटक पीटर फ्लेमिंग Peter Fleming के मुताबिक़ 1935 CE में शिंजियांग चीन का एकमात्र इलाक़ा था जहां जापानी एजेंट सक्रिय नहीं थे।[406]

ज़ांग पी युआन और उस की हान इली फ़ौज जो पहले मा ज़ोंगयिंग के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे बाद में वो मा ज़ोंगयिंग से आ मिले और शेंग शिकाई के ख़िलाफ़ लड़ने लगे। जब रूस ने शिंजियांग पर चढ़ाई की तो मा ज़ोंगयिंग ने उस के ख़िलाफ़ भी जंग की।[407]

अन्य हालात

मा ज़ोंगयिंग ख़ुद को क्योमिनटांग फ़ौज का एक जनरल मानते थे और क्योमिनटांग फ़ौज की ही यूनिफ़ॉर्म पहनते थे। उन के बाज़ू पर क्योमिनटांग का झंडा बना होता था जिसमें नीले आकाश में सफ़ैद सूरज था।[408] उनकी फ़ौज मुस्लिम पेशक़दमी वाले गीत Muslim marching songs गाया करती थी। मा ज़ोंगयिंग के पास एक हारमोनियम था जिस पर वो घंटों मुस्लिम गीत गाया करता। उस के पास माउज़र Mauser पिस्तौल रहा करती थी। वो अपना रोल मॉडल नेपोलियन, चंगेज़ ख़ान, हिंडनबर्ग और ज़ू ज़ोंगटांग Genghis Khan, Napoleon, Hindenburg and Zuo Zongtang को बताता था।

एक यूरोपीय इतिहासकार स्वीन हेडिन, जो मा ज़ोंगयिंग की क़ैद में भी रहा था लिखता है, मैं ने चीनी, डुंगन और तुर्कों से सुना है कि मा ज़ोंगयिंग के इरादे बहुत बुलंद हैं। हालाँकि उस के इरादे ambitions चंगेज़ ख़ान जैसे बुलंद नहीं हैं लेकिन तैमूर लंग से कम भी नहीं हैं। मा ज़ोंगयिंग का इरादा है कि वो पहले शिंजियांग और गान्सू पर हुकूमत क़ायम करेगा इस के बाद वो रूसी तुर्किस्तान पर क़ब्ज़ा करेगा और कैस्पियन सागर तक और ईरान तक अपनी सरहदों को फैला देगा। उस का सपना है कि वो पूरे मध्य एशिया पर अपनी हुकूमत क़ायम

करेगा और तूरान का सुलतान कहलाएगा जिस तरह रज़ा शाह, ईरान का सुलतान कहलाता है।[409] मा ज़ोंगयिंग के 36 वें डिवीज़न के फ़ौजी स्वीन हेडिन को विदेशी शैतान foreign devil कहते थे।[410]

एक नाज़ी जर्मन एजेंट जॉर्ज वासिल लिखता है कि उस का ड्राइवर एक रूसी था। वो ड्राइवर मा ज़ोंगयिंग के इलाक़े से गुज़रते हुए डर रहा था। उस का कहना था कि तुम जानते हो कि डुंगन लोग रूसियों से बहुत नफ़रत करते हैं। चुनांचे वासिल ने उस ड्राइवर को जर्मन बता कर मा ज़ोंगयिंग के इलाक़े से निकाला।[411] स्वीन हेडिन यह भी लिखता है कि एक दफ़ा वो मा ज़ोंगयिंग के इलाक़े से गुज़रा। यह वो वक़्त था जब मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज रूसी आक्रमण का मुक़ाबला कर रही थी लेकिन उसे रूस के हमलों से पसपा हो कर पीछे हटना पड़ रहा था। इस दौरान स्वीन हेडिन की मुलाक़ात मा ज़ोंगयिंग के मातहत अफ़सरों मा हूशान Ma Hushan और कमाल काया आफ़नदी Kemal Kaya Effendi से हुई। उन्होंने बताया कि मा ज़ोंगयिंग की हुकूमत पूरे दक्षिणी शिंजियांग Southern Xinjiang पर क़ायम है जिसको ती-शान-नान-लू Tien-shan-nan-lu कहा जाता है।[412] उन्होंने यह भी कहा कि आप हमारे इलाक़े से निश्चिंत हो कर सुरक्षित गुज़र सकते हैं। लेकिन स्वीन हेडिन को उनकी इस बात का यक़ीन नहीं था, कि पूरे दक्षिणी शिंजियांग पर उनकी हुकूमत है।[413] स्वीन हेडिन का ख़्याल था कि मा ज़ोंगयिंग के पास 10,000 घुड़सवार सेना थी और कुल 20,000 फ़ौज थी इतनी सी फ़ौज के साथ वो इतने बड़े इलाक़े पर अपनी

हुकूमत कैसे क़ायम कर सकता है। कहा जाता है कि बाद में कुछ डुंगन लोगों ने स्वीन हेडिन की गाड़ी पर गोलियां भी बरसाई थीं।[414]

काशग़र पर हमला

अप्रैल 1934 CE में मा ज़ोंगयिंग ने काशग़र पर हमला कर के उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। वहां की ईद-गाह में उसने तक़रीर की और उइग़ूर लोगों से कहा कि वो नानजिंग हुकूमत के वफ़ादार रहें।[415] मा ज़ोंगयिंग ने शेंग शिकाई को भी बुरा-भला कहा कि वो रूस का पिट्ठू बना हुआ है। और क्योमिनटांग हुकूमत से अपनी वफ़ादारी का भी ऐलान किया। अप्रैल 1934 CE में जब रूस ने शिंजियांग पर चढ़ाई की तो मा ज़ोंगयिंग ने उस का डट कर मुक़ाबला किया लेकिन बार-बार उस की फ़ौज हार जाती थी। उस ने आख़िरी बार खोतान में अपना मोरचा बनाकर रूस का मुक़ाबला किया। लेकिन इस के बाद उस का पता नहीं चला कि क्या हुआ।

उस के ग़ायब होने के बारे में मुख़्तलिफ़ राय पाई जाती हैं। जिनमें से कुछ हम यहां पेश कर रहे हैं।

• रूसी ख़ुफ़िया एजैंसी एन के वी डी NKVD का एजेंट व्लादिमीर पेट्रोव Vladimir Petrov अपनी किताब अम्पायर ऑफ़ फ़ियर Empire of Fear में लिखता है कि मा ज़ोंगयिंग, क्योमिनटांग के जहाज़ में सवार होकर जा रहा था लेकिन यह जहाज़ क्योमिनटांग का नहीं था बल्कि रूस का था जिसके सदस्य मा को धोके से पहले अपने यरकंद के एन के वी डी के हेडक्वार्टर Yarkand NKVD headquarter ले गए जहां उन्होंने मा ज़ोंगयिंग से ज़बरदस्ती उस की

फ़ौज को यह हुक्म दिलवाया कि वो रूस के आगे हथियार डाल दें और अपनी शिकस्त स्वीकार कर लें। इस के बाद उस को रूस ले जाया गया। इस के बाद पता नहीं उस का क्या हुआ।[416]

- एक दूसरी किताब हू इज़ हू इन चाइना Who's Who in China में दावा किया गया है कि मा ज़ोंगयिंग 1934 CE में रूस से चीन वापस हुआ और तियानजिन Tianjin में कई साल गुज़ारे।[417]
- हिन्दुस्तान की बर्तानवी हुकूमत के 1937 CE के टेलीग्रामों के मुताबिक़, मा ज़ोंगयिंग और मा हूशान का रूस से मुआहिदा हो गया था। क्यों कि जापान ने 1937 CE में चीन हर हमला कर दिया था इस लिए मा ज़ोंगयिंग ने रूस से वादा किया कि वो रूस के ख़िलाफ़ अब मुज़ाहमत (विरोध) नहीं करेगा क्यों कि वो जापानी हमले के ख़िलाफ़ चीन की मदद करना चाहता है। इस लिए उस को चीन वापस कर दिया जाए। इस लिए रूस ने उस को गान्सू वापस भेज दिया।[418]
- यह भी कहा जाता है कि शेंग शिकाई के रूस से विनती की कि वो मा ज़ोंगयिंग को उस के हवाले कर दे लेकिन रूस ने नामंज़ूर कर दिया।
- एक रिवायत यह भी है कि 1936 CE में ज़ांग गोटाओ की फ़ौज ने पीली नदी पार की और शिंजियांग में दाख़िल हो कर वहां कम्युनिस्ट केंद्र बनाने के लिए रूस से राब्ता किया। इस दौरान मा ज़ोंगयिंग रूस की लाल फ़ौज में शामिल हो गया और रूसी फ़ौज का विशेष सलाहकार बन गया। इस दौरान मा ज़ोंगयिंग, ज़ांग गोटाओ को

शिंजियांग में मज़बूत कम्युनिस्ट केंद्र बनाने के मशवरे देता था और अपने कज़न मा बुफ़ांग, मा होंगबिन से बातचीत करने में कम्युनिस्ट पार्टी की मदद करता था। लेकिन मंसूबा कामयाब नहीं हो पाया क्यों कि चियांग काई शेक ने 100,000 फ़ौज उनके ख़िलाफ़ जमा कर ली जिनमें चिंगहाई से मा बुफ़ांग की फ़ौज, गान्सू से मा ज़ोंगयिंग के बचे हुए फ़ौजी और निंगशिया से मा होंगकुई और मा होंगबिन की फ़ौज भी शामिल थी। चियांग की इस फ़ौज ने ज़ांग गोटाओ की फ़ौज को शिकस्त देकर भंग कर दिया। पहले ज़ांग गोटाओ की 21,000 फ़ौज पर हमला किया इस के बाद माओ ज़ेडोंग की 8000 फ़ौज उस की मदद को आई तो उस को भी शिकस्त हुई। लेकिन इस वाक़े के बाद मा ज़ोंगयिंग का नहीं पता कि क्या हुआ।

- कुछ का कहना है कि वो दूसरे विश्व युद्ध में मारा गया।
- कुछ का कहना है कि उस को मॉस्को ले जाया गया जहां उसे सज़ा-ए-मौत दे दी गई।
- कोई कहता है कि उस को मज़दूर कैम्पों में डाल दिया गया और 1937-1938 CE के बीच जो स्टालिन ने अपने दुश्मनों का सफ़ाया किया जिसको बड़ी सफ़ाई Great Purge कहा जाता है उस में मारा गया।
- लाल फ़ौज के जनरल कॉन्स्टेंटिन रोकोसोव्स्की Gen. Konstantin Rokossovsky का कहना है कहा मा बड़ी सफ़ाई Great Purge के दौरान गिरफ़्तार हुआ लेकिन बाद में उस को रिहा कर दिया गया और

उसने महान देशभक्ति की लड़ाई Great Patriotic War में भी हिस्सा लिया।

- शेंग शिकाई ने अपनी किताब पान और पीवोट में लिखा है कि मा ज़ोंगयिंग को पूरे उस के अमले के साथ मॉस्को ले जाया गया जहां स्टालिन के हुक्म पर, 1937 CE में उन सब को क़त्ल कर दिया गया।
-

चिंगहाई की मा क्लीक़

ऊपर बयान किया जा चुका है कि मा ची को चिंगहाई का गवर्नर बना दिया गया था। असल में उस ज़माने में सूबों में दो बड़े ओहदे होते थे। एक तो मिलिट्री गवर्नर (जंगी सरदार) का तो मा ची 1915 से 1928 तक चिंगहाई के मिलिट्री गवर्नर रहे और दूसरा ओहदा होता था चेयरमैन ऑफ़ दा गवर्नमेंट (गवर्नर) का तो माची 1929 से 1931 तक चिंगहाई के चेयरमैन रहे। माची के दो बेटे थे मा बुफ़ांग और मा बूचिंग। मा ची के बाद उनके भाई मा लिन चेयरमैन बन गए और मा बुफ़ांग मिलिट्री गवर्नर बन गए। मा लिन 1931 से 1936 तक चिंगहाई के गवर्नर रहे। बाद में मा बुफ़ांग और मा लिन के बीच चिंगहाई का गवर्नर बनने के लिए लड़ाई हुई जिसमें बिल-आख़िर मा बुफ़ांग जीत गए और मा लिन को ओहदे से हटना पड़ा और मा बुफ़ांग गवर्नर भी बन गए इस तरह मा बुफ़ांग के पास दोनों ओहदे आ गए और वो चिंगहाई के निरंकुश शासक बन गए। मा लिन ओहदे से इस्तीफ़ा देकर हज को चले गए। अब मा ची के तफ़सीली हालात बयान किए जाएं गे।

मा हाईयान के ख़ानदान के अफ़राद

Ma Haiyan
Ma Haiyuan
Ma Qi
Ma Lin
Ma Bao
Ma Guzhong
Ma Liang (general)
Ma Yuanxiang
Ma Bufang
Ma Buqing
Ma Bukang
Ma Buluan
Ma Burong
Ma Buyuan
Ma Zhongying (Ma Buying)
Ma Zhenwu
Ma Hushan
Ma Xuyuan
Ma Weiguo
Ma Jiyuan
Ma Chengxiang
Ma Biao (general)
Ma Burong

मा ची

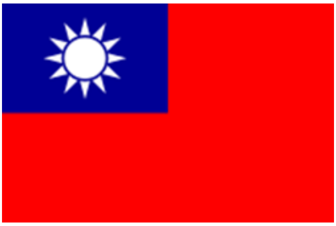
मा ची Ma Qi (23 September 1869- 5 August 1931) एक हुई जंगी सरदार थे जो जंगी सरदारों के दौर में चिंगहाई के शासक रहे। बल्कि मा ची, मा क्लीक़ के चिंगहाई में पहले शासक थे। उनके बाद उनके भाई मा लिन शासक बने और उनके बाद मा ची के बेटे मा बुफ़ांग शासक बने। उस के बाद यह हुकूमत ख़त्म हो गई।

तफ़सीली हालात

मा ची एक हुई घराने में 23 September 1869 CE को गान्सू Gansu के लिनशिया शहर Linxia के डाओहे Daohe इलाक़े में पैदा हुए। उनका क़द 6 फ़ुट था। उनके पिता का नाम मा हाईयान Ma Haiyan था। मा हाईयान (1837-1900) भी एक जंगी सरदार थे जो पहले डुंगन विद्रोह में शरीक हुए जो चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ मुसलमानों का एक विद्रोह था लेकिन बाद में वो पाला बदल कर चिंग हुकूमत के साथ हो गए और डुंगन विद्रोह को कुचलने में चिंग हुकूमत की मदद की।[419] बाद में वो और उनके बेटे मा ची, कान्सू ब्रेव्स नाम की फ़ौज में शामिल हो गए जो बॉक्सर विद्रोह के दौरान मुसलमानों की एक फ़ौज थी और चिंग हुकूमत की हिमायत में लड़ रही थी। वो 1900 CE में लांगफांग की जंग में लड़ते हुए मा हाईयान का थकन exhaustion से इंतिक़ाल कर गए। यह वो वक़्त था जब बॉक्सर विद्रोह के दौरान कान्सू ब्रेव्स की फ़ौज चिंग शाही ख़ानदान की हिमायत में लड़ रही थी और कान्सू ब्रेव्स, चिंग शाही

ख़ानदान को दुश्मनों से बचा कर ले जा रहे थे, इसी दौरान लांगफांग की जंग हुई थी। मा हाईयान के तीन बेटे थे मा ची, मा लिन और मा फेंग Ma Feng.[420] मा हाईयान के बाद उनके बेटे मा ची, उनके जानशीन हुए और अपने पिता के आठों ओहदे उन्हें मिल गए जो चिंग हुकूमत ने उन्हें दिए थे।[421] मा ची ने 1915 CE में अपनी निजी फ़ौज भी बनाई जो निंगहाईजुन Ninghaijun कहलाती थी। यह फ़ौज बाद में चियांग काई शेक की क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज में शामिल कर ली गई और उस का 26 वां डिवीज़न 26th Division of National Revolutionary Army कहलाई। कहा जाता है कि मा ची जब मा अनलियांग की मातहती में लड़ रहे थे तो उन्होंने एक मौक़े पर, मा अनलियांग के एक हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी भी की थी। हुआ यह था कि मा अनलियांग के हुक्म पर उनके एक दूसरे अफ़सर यांग ज़ैंगशिन Yang Zengxin ने मा वानफ़ू पर हमला कर दिया और उनको गिरफ़्तार कर लिया ताकि मा अनलियांग के पास भेज सके। याद रहे मा वानफ़ू एक पंथ के प्रमुख थे जिसको यहवानी Yihewani का नाम दिया जाता था। लेकिन मा अनलियांग, मा वानफ़ू और उनकी जमात को गुमराह समझते थे और उनको क़त्ल करना चाहते थे, बल्कि उनकी पूरी जमात के क़त्ल का हुक्म दे दिया था। लेकिन जब यांग ज़ैंगशिन ने मा वानफ़ू को गिरफ़्तार कर के मा अनलियांग के पास भेजा ताकि मा अनलियांग उनको क़त्ल कर सके तो मा ची ने बीच रास्ते में मा वानफ़ू को ले जानेवाले क़ाफ़िले पर हमला कर दिया और उनको चिंगहाई में अपनी रक्षा में रख लिया।

1911 CE में शिनहाई इन्क़लाब Xinhai Revolution के दौरान मा ची, चिंग हुकूमत की हिमायत में लड़ रहे थे, इसी दौरान उन्होंने निंगशिया में जलाओहुई इन्क़लाबियों Gelaohui revolutionaries को शिकस्त दी और इन्क़लाबियों के सर लुढ़काते हुए चिंग राजा के पास भेजे।



Republic of China Flag

याद रहे शिनहाई इन्क़लाब के दौरान कई संगठन इन्क़लाब में हिस्सा ले रहे थे और चिंग हुकूमत का तख़्ता उलटने पर आतुर थे उनमें एक तो सुन यातसेन का संगठन टोंगमंगहुइ था और दूसरी जलाओहुई इन्क़लाबियों का संगठन था। इस संगठन में बड़ी तादाद में मुसलमान भी थे। लेकिन बाद में जब राजा ने राजगद्दी त्याग दी तो मा ची ने चीनी लोकतंत्र Republic of China का साथ दिया जिसके प्रमुख सुन यातसेन थे।[422] जब तिब्बती और मंगोल लोगों ने चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत को क़बूल करने से इनकार कर दिया तो मा ची ने उनसे सिफ़ारती तौर पर राब्ता किया और उनको चीनी लोकतंत्र को क़बूल करने पर आमादा किया, चुनांचे वो लोग आमादा हो गए। मा ची ने चीनी जमहूरियत के प्रमुख युआन शिकाई के पास भी संदेश भेज कर चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत से वफ़ादारी का वादा किया और उन्होंने अपना नारा 'राजा सदा सलामत रहे' Long, Long,

Long, Live the reigning Emperor" को बदल कर 'चीनी लोकतंत्र सलामत रहे' Long live the Republic of China कर दिया। और जगह जगह उसे लिखवा दिया।[423]

अन्य हालात

मा ची ने 1913 CE में चिंगहाई ऊन और चमड़ा ब्यूरो बनाया जिसमें उसने ऊन और चमड़े की बरामद पर टैक्स लगाया।[424] 1915 CE में मा ची ने अपनी फ़ौज बनाई जिसको निंगहाई फ़ौज Ninghai Army कहा जाता था। 1917 CE में उसने तिब्बतियों की लाबरांग मोनास्टरी Labrang monastery पर क़ब्ज़ा कर लिया, यह पहली बार था कि किसी ग़ैर तिब्बती ने उस पर क़ब्ज़ा किया था। शायद इसी के रद्द-ए-अमल में तिब्बत में मा ची के ख़िलाफ़ विद्रोह हुआ था। 1917 CE में मा अनलियांग ने अपने भाई मा गोलियांग Ma Guoliang को शुनहुआ Xunhua भेजा ताकि वो वहां पर तिब्बती लोगों के विद्रोह को कुचल सके। लेकिन मा अनलियांग ने इस की ख़बर मर्कज़ी हुकूमत को नहीं दी थी इस लिए बीजिंग हुकूमत ने उस को इस पर फटकार लगाई और मा ची को भेजा कि वो मामले की तहक़ीक़ात करे और विद्रोह को ख़त्म कराए। चुनांचे 1918 CE में मा ची ने तिब्बती विद्रोहियों को शिकस्त दी। और 8 साल तक उस गाँव पर भारी टैक्स लागू किए। 1921 CE में दोबारा लाबरांग मोनास्टरी के तिब्बती भिक्षुओं को शिकस्त दी।[425] 1925 CE में तिब्बती लोगों ने फिर विद्रोह कर दिया और हज़ारों मुसलमानों को तिब्बत से निकाल दिया। मा ची ने 3000 फ़ौज के साथ विद्रोहियों पर हमला कर दिया जिसमें हज़ारों तिब्बती भिक्षु मारे गए।

लेकिन तिब्बती लोगों ने लाबरांग मोनास्टरी को वापस हासिल करने के लिए लड़ाई जारी रखी यहां तक कि 1927 CE में मा ची ने उस को छोड़ दिया। चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत क़ायम होने के बाद मा ची 1915-1928 CE तक चिंगहाई के गवर्नर रहे और 1929-1931 CE तक चिंगहाई के चेयरमैन रहे। चियांग काई शेक ने जब चीन के बहुत बड़े इलाक़े पर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली तो मा ची को अपनी फ़ौज National Revolutionary Army के 26 वें डिवीज़न का कमांडर बना दिया। उनको गान्सू निर्माण ब्यूरो Gansu Bureau of Construction का डायरेक्टर भी बनाया गया। मा ची के सबसे बड़े बेटे मा बूचिंग Ma Buqing थे और दूसरे बेटे मा बुफ़ांग Ma Bufang थे। वो मा ज़ोंगयिंग के चचा भी थे। मा ची का इंतिक़ाल 5 अगस्त 1931 CE को चिंगहाई के शिनिगं Xining में हुआ।[426]

मा बुफ़ांग

मा बुफ़ांग Ma Bufang (1903-31 July 1975), मा क्लीक़ के एक मशहूर जंगी सरदार या लेफ्टिनेंट जनरल lieutenant-general थे[427] और चिंगहाई के आख़िरी गवर्नर और शासक थे जिन्हों ने आख़िरी दौर में मा क्लीक़ का नेतृत्व किया। जनरल मा ने राज्य द्वारा संचालित और नियंत्रित औद्योगीकरण परियोजना controlled industrialization project शुरू की, जिसमें सीधे तौर पर शैक्षणिक, चिकित्सा, कृषि और स्वच्छता परियोजनाएं बनाई गईं, जिन्हें राज्य द्वारा चलाया गया या सहायता दी गई। राज्य ने सभी स्कूलों में भोजन

और यूनिफार्म के लिए पैसे दिए, चाहे वे राज्य द्वारा संचालित हों या निजी। सड़कें और एक थिएटर भी बनाया।[428]

एक अमेरिकी विद्वान, ए. डोक बार्नेट A. Doak Barnett ने मा बुफ़ांग की सरकार की प्रशंसा करते हुए कहा: "यह चीन की सबसे कुशल और सबसे ऊर्जावान सरकारों में से एक है। जबकि चीन का अधिकांश हिस्सा, लगभग अपरिहार्य रूप से, गृहयुद्ध की चपेट में है, चिंगहाई खुश हाल है। वो अपनी पहल पर छोटे पैमाने पर, लेकिन फिर भी महत्वाकांक्षी, विकास और पुनर्निर्माण योजनाओं को पूरा करने का प्रयास कर रहा है"।[429]

तफ़सीली हालात

मा ची के दो बेटे थे मा बूचिंग और मा बुफ़ांग। मा बूचिंग (1901-1977) मा बुफ़ांग से दो साल बड़े थे। यह दोनों बेटे लिनशिया शहर के मोनीगू क़स्बे Monigou Township में पैदा हुए जो अब लिनशिया काउंटी बन चुका है और लिनशिया शहर Linxia City से 35 किलो मीटर पश्चिम में है।[430] उस वक़्त उनके पिता चिंगहाई के गवर्नर थे और निंगहाई फ़ौज के प्रमुख थे। मा बूचिंग ने प्राचीन चीनी तर्ज़ की शिक्षा हासिल की जबकि मा बुफ़ांग ने इस्लामी शिक्षा हासिल की।[431] मा ची, मा बुफ़ांग को इमाम बनाना चाहते थे जबकि मा बूचिंग ने बाद में मिलिट्री ट्रेनिंग हासिल की। मा बुफ़ांग ने 19 साल तक शिक्षा हासिल की इस के बाद वो फ़ौजी ट्रेनिंग की तरफ़ मुतवज्जा हुए। शुरू में बुफ़ांग ने अपनी गतिविधियों का केंद्र बड़ी डोंगुआन मस्जिद Great Dongguan Mosque को

बनाया। बाद में उन्होंने चिंगहाई के मिलिट्री इदारे Training Corps of Qinghai से डिग्री हासिल की।[432]



मा बुफ़ांग

मा बुफ़ांग ने पहले फ़ंग यूशियांग की गोमिनजुन की फ़ौज में शमूलियत इख़्तियार की लेकिन मर्कज़ी मैदानों की जंग के बाद वो चियांग काई शेक के साथ हो गए। CE 1931 में मा ची का इंतिक़ाल हो गया। मा ची के भाई जनरल मा लिन चेयरमैन (सिविल गवर्नर) के ओहदे पर नियुक्त हुए, जब कि मा बुफ़ांग फ़ौजी गवर्नर बने। मा लिन 1931 से 1936 तक चिंगहाई के चेयरमैन रहे। बाद में मा बुफ़ांग और मा लिन के बीच चिंगहाई का गवर्नर बनने के लिए लड़ाई शुरू हो गई। लेकिन लोग ज़्यादातर मा लिन को पसंद करते थे।

ज़ांग गोटाओ को शिकस्त देना

मा बुफ़ांग ने 1936 में लॉग मार्च के दौरान कम्युनिस्ट लीडर ज़ांग गोटाओ Zhang Guotao की फ़ौज को शिकस्त देकर ख़त्म कर दिया, जब ज़ांग, मा बुफ़ांग के इलाक़े में पीली नदी पार करने की कोशिश कर रहे थे। असल में उस वक़्त कम्युनिस्ट फ़ौज दो लीडरों के बीच बटी हुई थी एक माओ ज़ेडोंग जिनके

पास सिर्फ 10,000 फ़ौज थी और दूसरी ज़ांग गोटाओ जिनके पास 80,000 फ़ौज थी याद रहे कि ज़ांग, माओ से ज़्यादा पुराने कम्युनिस्ट थे बल्कि चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे और रूस से शिक्षा हासिल कर के आए थे और विश्व समाजवादी आंदोलन 'कोमिनटर्न' Komintern के सीनियर मेंबरों में थे और उनके विश्व के बहुत से कम्युनिस्ट लीडरों से क़रीबी संबंध थे। 1935 में लॉग मार्च के दौरान ज़ांग की 80,000 फ़ौज माओ की 10,000 फ़ौज से आ मिली। लेकिन इस के बाद माओ और ज़ांग में पार्टी का लीडर बनने की कशमकश शुरू हो गई। इसी दौरान दोनों में एक बात पर मत भेद हो गया, बात यह थी कि ज़ांग गोटाओ चाहते थे कि कम्युनिस्ट लॉग मार्च के लिए दक्षिण की तरफ़ कूच करें जहां पर ज़्यादातर अल्पसंख्यकों की आबादी थी ख़ासकर मुसलमानों की मा क्लीक़ आबाद थी और उन्हें उम्मीद थी कि वहां उनको ज़्यादा सहूलत रहेगी और सिचुआन में वो अपना अड्डा बना सकेंगे, जबकि माओ का कहना था कि हमें वहां जाने पर ख़तरा है और हमें उत्तर की तरफ़ कूच करना चाहिए और अपने अड्डे शानशी Shanxi में पहुंचना चाहिए। यह भी कहा जाता है कि ज़ांग गोटाओ का ख़ुफ़िया मंसूबा यह था की वो दक्षिण की तरफ़ ले जाकर माओ को क़त्ल कर देगा और पूरी फ़ौज का कमांडर बन जाएगा लेकिन इसके दो क़रीबी लोगों यी जियानयिंग Ye Jianying और यांग शांगकुन Yang Shangkun ने यह राज़ फ़ाश कर दिया और माओ ने उत्तर की तरफ़ कूच कर के अपनी जान बचाई जबकि ज़ांग गोटाओ ने दक्षिण की तरफ़ कूच किया, लेकिन दक्षिण का इलाक़ा बहुत मुश्किल था और ज़ांग का

अड़ियल रवैया जिसकी वजह से उसके बहुत सारे साथी उसका साथ छोड़कर माओ से जा मिले। जिसमें इसके कुछ क़रीबी दोस्त भी थे। इसके अलावा सिचुआन सूबे में भी ज़ांग की फ़ौज को शिकस्त हुई इस लिए पीली नदी पहुंचते पहुंचते उसकी फ़ौज की तादाद सिर्फ 21,800 रह गई। जब यह लोग पीली नदी पार कर मा बुफ़ांग के इलाक़े में दाख़िल हुए तो मा बुफ़ांग ने अपनी फ़ौज लेकर ज़ांग गोटाओ का मुक़ाबला किया और उसको शिकस्त दी और ज़ांग गोटाओ की फ़ौज शिकस्त के बाद तितर-बितर हो गई, जब यह हारी हुई फ़ौज युन्नान में माओ की फ़ौज से मिली तो ज़ांग के साथ सिर्फ 427 लोग बचे थे और अब वो माओ का मुक़ाबला करने के क़ाबिल नहीं रहा था। इस लिए वो क्योमिनटांग से जा मिला लेकिन वहां भी उसे कोई ओहदा नहीं मिला और 1949 में क्योमिनटांग की हार के बाद वो हॉन्ग कॉन्ग फ़रार हो गया और वहां से 1968 में वो कनाडा चला गया। 3 दिसंबर 1974 में वहीं उस का इंतिक़ाल हुआ। मरने से कुछ पहले उसने ईसाई धर्म अपना लिया था। लेकिन ज़ांग गोटाओ की शिकस्त का सबसे ज़्यादा फ़ायदा माओ को हुआ और वो कम्युनिस्टों का निर्विवाद लीडर (undisputed leader) बन गया और पार्टी में उस का कोई हरीफ़ नहीं बचा।

मा बुफ़ांग ने दूसरे दो मा, मा होंगकुई और मा होंगबिन के साथ मिलकर मा ज़ोंगयिंग की मदद की, कि वो शिंजियांग में क्योमिनटांग के लिए एक फ़ौजी अड्डा बनाए, यह भी कहा जाता है कि चियांग काई शेक और मा ज़ोंगयिंग के बीच मुआहिदा हुआ था कि अगर वो शिंजियांग में क्योमिनटांग के लिए काम

करेगा और शिंजियांग को क्योमिनटांग के लिए जीत लेगा तो मा ज़ोंगयिंग को शिंजियांग का गवर्नर बना दिया जाएगा। इस लिए मा ज़ोंगयिंग ने शिंजियांग पर क़ब्ज़ा करने की भरपूर कोशिश की लेकिन वो उसे पूरी तरह फ़तह करने में कभी कामयाब नहीं हो पाया। यह भी कहा जाता है कि तीनों मा ने मा ज़ोंगयिंग की मदद इस लिए की थी क्यों कि वो मा ज़ोंगयिंग को अपने से दूर रखना चाहते थे ताकि मा ज़ोंगयिंग उनसे हुकूमत में अपना हिस्सा न मांग ले, एक दफ़ा मा बुफ़ांग और मा ज़ोंगयिंग में एक छोटी सी जंग भी हुई थी जिसमें मा बुफ़ांग ने मा ज़ोंगयिंग को हरा दिया था।

मा बुफ़ांग एक शासक के रूप में

मा बुफ़ांग नहीं चाहते थे कि 14 वें दलाई लामा (तेनज़िन ग्यात्सो) (Tenzin Gyatso) अपने पूर्ववर्ती (predecessor) का ओहदा संभालें, इस लिए उस ने इस तरह से दलाई लामा के चारों तरफ़ फ़ौज लगाई थी कि वो अपने घर में नज़रबंद से हो कर रह गए थे और उन्हें तिब्बत भी नहीं जाने दिया और दलाई लामा से यह शर्त रखी कि अगर वो तिब्बत जाना चाहते हैं तो पहले 1 लाख चांदी के सिक्के अदा करें।[433] कहा जाता है कि चियांग काई शेक, मा बुफ़ांग को अपना सबसे वफ़ादार और क़ाबिल जनरल समझते थे और हर नाज़ुक और ख़तरे वाली जगह पर उसको भेजते थे। मा बुफ़ांग के बाप दादा चिंग हुकूमत के पहले भी वफ़ादार रहे थे इसी लिए चिंग ने उस के ख़ानदान को एक पीला बैज दिया था जिस पर 'मा' लिखा हुआ था। मा बुफ़ांग ने यह बैज अपने पिता से

पाया था और हर जंग के मौक़े पर वो उस बैज को अपनी यूनिफ़ॉर्म पर पहनते थे। 1926 CE में उनके पास 30,000 घुड़सवार फ़ौज थी।[434]

13 वें दलाई लामा के ख़िलाफ़ जंग

1932 में जब दलाई लामा की फ़ौजें चिंगहाई पर हमला-आवर हुई थीं तो मा बुफ़ांग और क्योमिनटांग जनरल लियू वेनहुई ने 13 वें दलाई लामा थुबतेन ग्यात्सो (Thubten Gyatso) की फ़ौजों को शिकस्त दी थी, और मा बुफ़ांग ने तिब्बती फ़ौज से शिकांग सूबा Xikang province छीन लिया था उस के अलावा शीचू, डेंगके Shiqu, Dengke और दूसरे शहर भी तिब्बतियों से छीन लिए और तिब्बती फ़ौजों को जिनशा नदी Jinsha River के पार ढकेल दिया था और दोनों में मुआहिदा हुआ था कि तिब्बती फ़ौज जिनशा नदी को पार नहीं करेगी।[435] तिब्बत के ख़िलाफ़ कामयाबी हासिल करने के बाद चिंगहाई फ़ौज का दबदबा बहुत बढ़ गया और चियांग काई शेक के नज़दीक मुस्लिम फ़ौज काफ़ी अहम हो गई। तिब्बत के सरहदी इलाक़े खाम और यूशू Kham and Yushu पर चीन का कंट्रोल चिंगहाई मुस्लिम फ़ौज के पास था।

मा बुफ़ांग ने क्योमिनटांग की मदद से गोलोग Golog इलाक़े पर सात बार हमला किया और वहां से हज़ारों नोगलोक बाशिंदों Ngolok tribesmen को कूच करने पर मजबूर कर दिया।[436] ताहम मा बुफ़ांग ने तिब्बतियों की शिक्षा के लिए कुनलुन मिडिल स्कूल Kunlun Middle School के नाम से एक स्कूल भी खुलवाया और बहुत से तिब्बतियों को अपनी फ़ौज में भी भर्ती किया।

1939 CE में मा बुफ़ांग ने अमडो Amdo के रबगोंग Rebgong इलाक़े की सब से पुरानी बौद्ध मोनास्टरी पर हमला किया और 1941 CE में त्सांगर मोनास्टरी Tsanggar Monastery पर, और वहां से बौद्ध भिक्षुओं को निकाल दिया। 1953 CE में दोबारा वो मोनास्टरी बौद्ध लोगों के हवाले कर दी गई।[437] 1939 और 1941 CE में दक्षिणी चिंगहाई के तिब्बती लोगों ने बग़ावतें कीं जिनको ख़त्म कर दिया गया लेकिन इस में हज़ारों तिब्बती शरणार्थी, तिब्बत पहुंचे।

मा बुफ़ांग और 14 वें दलाई लामा

ज़ांग गोटाओ को हराने के बाद मा बुफ़ांग का क़द बहुत बढ़ गया और वो अब चिंगहाई के निरंकुश शासक बनने की कोशिश करने लगे। इसी लिए मा बुफ़ांग और मा लिन के बीच विवाद हो गया लेकिन चियांग काई शेक ने मा बुफ़ांग का साथ दिया और मा लिन को अपना ओहदा त्यागने पर-ज़ोर दिया। बिल-आख़िर मा लिन को ओहदे से हटना पड़ा और मा बुफ़ांग ने चेयरमैन का ओहदा भी सँभाल लिया, इस तरह मा बुफ़ांग के पास दोनों ओहदे आ गए और वो चिंगहाई के निरंकुश शासक बन गए और 1949 CE में कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम होने तक इसी ओहदे पर क़ायम रहे। मालिन ओहदे से इस्तीफ़ा देकर हज को चले गए। 1936 CE में मा बुफ़ांग को नई फ़ौज का कमांडर बना दिया जिसको दूसरी सेना 2nd army कहा जाता था।

जापानी हमले के ख़िलाफ़ मा बुफ़ांग का किरदार

1937 में जब दूसरी चीन-ओ-जापान जंग शुरू हुई तो जापानियों ने मा बुफ़ांग को अपनी तरफ़ मिलाने की कोशिश की और बहुत से लालच दिए लेकिन मा बुफ़ांग ने इनकार कर दिया और वो क्योमिनटांग के वफ़ादार रहे बल्कि जापानियों को बहुत से मोर्चों पर शिकस्त दी। चुनांचे जब 1937 CE में मार्को पोलो पुल की घटना Marco Polo Bridge Incident हुई जिसके बाद दूसरी चीन-जापान जंग छड़ी जिसको बीपिंग-तियानजिन जंग Battle of Beiping–Tianjin भी कहा जाता इसका ज़िक्र ऊपर भी आ चुका है। तो चियांग काई शेक ने मा बुफ़ांग को टेलीग्राम के ज़रिये पैग़ाम भेजा कि वो जापान के ख़िलाफ़ जंग के लिए तैयार रहें, तो मा बुफ़ांग ने अपनी घुड़सवार फ़ौज तैयार की और उस का कमांडर मा बियाओ Ma Biao को बनाया, ताकि उस को चियांग काई शेक की मदद के लिए भेज सके। याद रहे मा बियाओ, मा हाई चिंग के बेटे थे और मा हाई चिंग मा बुफ़ांग के दादा मा हाईयान के छटे बेटे थे। इस के बाद मा बूचिंग और मा बुफ़ांग ने चियांग काई शेक से फ़ोन पर बात कर के जंग की रणनीति बनाई और मा बुफ़ांग ने अपनी घुड़सवार फ़ौज को जापान के ख़िलाफ़ उतारा। इस फ़ौज में ज़्यादातर सालार मुसलमान थे। मुस्लिम फ़ौज की इस ज़बरदस्त मुज़ाहमत (विरोध) की वजह से जापानी फ़ौज कभी भी लांज़ू शहर Lanzhou पर क़ब्ज़ा नहीं कर पाई जो मा बुफ़ांग की राजधानी थी और जापानियों को तिब्बतियों से राब्ता भी क़ायम नहीं करने दिया। इसी वजह से जापानी एजेंट, मुसलमानों को दुश्मन कहा करते थे।[438] इस के अलावा मा

बुफ़ांग ने हेनान Henan सूबे में भी जापानियों से बहुत खूनी लड़ाई लड़ी। मा बुफ़ांग ने अपने साथियों से मरने तक लड़ने की शपथ ली थी और यह भी कि अगर वो पकड़े जाने के क़रीब हों तो ख़ुदकुशी कर लें। इस जंग के दौरान मा बुफ़ांग की फ़ौज को क्योमिनटांग की ८२ वीं फ़ौज 82nd Army का नाम दिया गया। जापानियों को इस लड़ाई में भारी शिकस्त हुई और मा बुफ़ांग की फ़ौज ने बहुत से जापानियों को क़त्ल कर दिया और जो कुछ बचे थे उन्हें क़ैद कर के चिंगहाई भेज दिया। इसी तरह 1940 में जापान ने चिंगहाई पर हमला किया तो मा की फ़ौज ने जापानियों के दाँत खट्टे कर दिए, जापानियों को उल्टे पांव भागना पड़ा और अपने साथियों की लाशें भी न ले जा सके। बस सब का एक एक हाथ काट कर ले गए ताकि उनका अंतिम संस्कार कर सकें।

शिनिगं पर जापानी हमला

1941 में जब जापानी जहाज़ों ने शिनिगं Xining पर हमला किया तो सालार मुस्लिम जनरल हान यूवेन Han Youwen ने अपनी फ़ौज लेकर जापानियों का मुक़ाबला किया और शहर की रक्षा की, एक दफ़ा तो हान यूवेन, जापानियों के हमले में बाल बाल बचे। वो इस लिए क्यों कि मा बुफ़ांग उन्हें टेलीफ़ोन पर निर्देश दे रहे थे, मा बुफ़ांग उस वक़्त एक फ़ौजी बैरक में हवाई हमले की पनाह-गाह में छुपे हुए थे। कहा जाता है कि इस हमले में इनसानी गोश्त मा क्लीक़ के झंडे पर फैल गया था और हान यूवेन मलबे में दब गए थे। जब हान को निकाला गया तो वो लंगड़ा रहे थे लेकिन इसी हालत में उन्होंने अपनी मशीन गन से

दोबारा जापानी जंगी जहाज़ों पर हमला किया और उनको अपनी सालार ज़बान में कोसा।[439]

1942 में चियांग काई शेक ने उत्तर पश्चिमी रियासतों शिंजियांग, गान्सू, शानशी, और चिंगहाई का दौरा किया जिसमें उनकी मुलाक़ात मा बुफ़ांग और दूसरे मा से भी हुई। उस वक़्त मा के पास 50,000 फ़ौज थी। मा बुफ़ांग ने चीनी राष्ट्रवादी इमाम हू सोंगशान Hu Songshan की भी मदद की। मा बुफ़ांग को 1945 में क्योमिनटांग की छठी केंद्रीय समिति Sixth Central Committee of the Kuomintang का मेंबर भी चुना गया, जो क्योमिनटांग का सर्वोच्च सरकारी विभाग था। क्योमिनटांग ने मा बुफ़ांग को कई दफ़ा शिंजियांग में अपनी फ़ौज को मार्च कराने का हुक्म भी दिया ताकि वहां के शासक शेंग शिकाई Sheng Shicai जिसको रूस की पुश्तपनाही हासिल थी पर रोब पड़े। 1945 में जब इली विद्रोह Ili Rebellion हुआ तब भी मा बुफ़ांग ने अपनी शहसवार फ़ौज को उरुमची भेजा ताकि उइग़ूर फ़ौज का मुक़ाबला कर सके।[440] 1949 में मा बुफ़ांग ने चंगेज़ ख़ान की क़ब्र को यूलिन Yulin से शिनिगं Xining शहर मुंतक़िल कर दिया। इसी साल मा बुफ़ांग और मा होंगकुई ने संयुक्त रूप से घोषणा की, कि हम कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ अपनी जंग जारी रखेंगे और उनसे कभी भी समझौता नहीं करेंगे। यह वो ज़माना था जब कम्युनिस्टों को हर मोर्चे पर कामयाबी मिल रही थी और क्योमिनटांग हार रही थी। क्योमिनटांग ने मा बुफ़ांग को पूरे उत्तर पश्चिमी चीन का कमांडर-इन-चीफ़ बना दिया था। रूस के 40 जंगी जहाज़ों ने जब मा बुफ़ांग के इलाक़े पर हमला किया तो मा बुफ़ांग ने उनका भी मुक़ाबला किया। क्योमिनटांग जनरल हू ज़ोंगनान Hu Zongnan और मा बुफ़ांग ने मिलकर कम्युनिस्ट फ़ौज पी एल ए के 15,000 फौजियों को बाओजी Baoji के क़रीब क़त्ल किया। अगस्त 1949 में मा बुफ़ांग, क्योमिनटांग अफ़सरों

से मिलने जहाज़ से कैंटन Canton गए ताकि वो अनुरोध करें कि वो मा बुफ़ांग को हथियारों की मदद भेजें। इस दौरान मा बुफ़ांग के बेटे मा जी युआन Ma Jiyuan ने उनका ओहदा सँभाला। लेकिन क्योमिनटांग ने किसी तरह की मदद देने से इनकार कर दिया, मा वापस लौटे और फिर लांज़ू Lanzhou से एक ट्रक में अपने ख़ानदान को लेकर शिनिगं की तरफ़ फ़रार हो गए। कम्युनिस्ट जनरल पेंग डेहुआई Peng Dehuai ने मा की फ़ौज को शिकस्त देकर गान्सू की राजधानी लांज़ू पर क़ब्ज़ा कर लिया। मा बुफ़ांग अपने ख़ानदान के साथ शिनिगं से चोंगचिंग Chongqing की तरफ़ फ़रार हो गए और वहां से हॉन्ग कॉन्ग मुंतक़िल हो गए और एक फ़्लैट में रहने लगे।[441] कहा जाता है कि उस वक़्त 50,000 डॉलर की रक़म उनके पास थी। चियांग काई शेक ने उनसे अनुरोध किया कि वो चीन वापस जाकर उत्तर पश्चिमी इलाक़े में कम्युनिस्टों का मुक़ाबला करें लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और अपने ख़ानदान के 200, अफ़राद के साथ हज करने के लिए मक्का चले गए।[442] हज के एक साल बाद मा बुफ़ांग अपने कज़न मा बुकांग Ma Bukang और भतीजे मा चैंगशियांग Ma Chengxiang के साथ सऊदी अरब चले गए और हज के बाद मिस्र के क़ाहिरा शहर मुंतक़िल हो गए ताकि अरब देशों से मदद का अनुरोध कर सकें और मा बुफ़ांग के बेटे जी युआन, दस जनरलों के साथ ताइवान मुंतक़िल हो गए।[443] 1950 में मा बुफ़ांग ने ऐलान किया कि चीन में क्योमिनटांग इस्लामी मुज़ाहमत (विरोध) Kuomintang Islamic Insurgency in China (1950–1958) जारी रहेगी और चीनी मुसलमान कभी भी कम्युनिस्टों के अगे हथियार नहीं डालेंगे।[444]



Ma Bufang Mansion

मा बुफ़ांग, ने मिस्र में क्योमिनटांग के राजदूत के फ़राइज़ भी अंजाम दिए। 1957 में जब मिस्र और चीनी कम्युनिस्ट हुकूमत के संबंध क़ायम हो गए तो ताइवान ने उनको सऊदी अरब में अपना राजदूत बना कर भेज दिया, मा बुफ़ांग ने इस ओहदे पर 4 साल काम किया लेकिन वो कभी भी ताइवान लौट कर नहीं गए और बाक़ी ज़िंदगी सऊदी अरब में ही गुज़ारी और वहीं पर उनका 1975 में इंतिक़ाल हुआ। चीन में चिंगहाई शहर में उनकी हवेली आज भी मौजूद है जिसको मा बुफ़ांग मेंशन Ma Bufang Mansion कहा जाता है और इस को अब मा क्लीक़ का म्यूज़ीयम बना दिया गया है और पर्यटकों की दिलचस्पी का केंद्र है, लाखों पर्यटक हर साल उस की सैर को आते हैं यह एक आलीशान बंगला है जिसमें 290 घर हैं और इस का क्षेत्रफल 30,000 वर्ग मीटर है। इस में मा क्लीक़ और क्योमिनटांग अफ़सरों के बहुत सारे यादगार फ़ोटो और बाक़ियात मौजूद हैं।[445]

बॉक्सर विद्रोह

1895 CE की चीन-ओ-जापान जंग के बाद पश्चिमी चीन के देहाती लोगों ने महसूस किया कि ईसाई मिशनरी Christian missionaries अपनी गतिविधियों को बढ़ा रहे हैं और चीनी लोगों को ईसाई बनाने में लगे हैं। इस के अलावा 1898 में उत्तरी चीन में कई प्राकृतिक आपदाएं natural disasters आईं जैसे पीली नदी का सैलाब (बाढ़) वग़ैरह उस को भी लोगों ने यह माना कि यह ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की वजह से प्रकृति हमसे नाराज़ हो गई है। चुनांचे 1899 CE में बॉक्सर लोगों ने ईसाइयों के ख़िलाफ़ हमले शुरू कर दिए जो ज़्यादातर पश्चिमी देशों से संबंध रखते थे।

बॉक्सर विद्रोह का आरंभ

इस विद्रोह को बॉक्सर विद्रोह इस लिए कहा जाता है क्यों कि इस को 'मुक्केबाज़ों' (boxers) ने शुरू किया था। यह असल में एक कुश्ती सिखाने की संस्था थी जिसका नाम यीहीचुआन Yihequan था जिसका मतलब होता है नेक और सम्मिलन मुक्का Righteous and Harmonious Fists (Yihequan)। यह संस्था उत्तरी साहिली सूबे शानडोंग Shandong में स्थित थी। यह क्षेत्र पहले से ही सामाजिक अशांति और धार्मिक सांप्रदायिकता से पीड़ित था।। यहां पर कुश्ती का चलन भी बहुत ज़्यादा था और मुक्केबाजी के सैकड़ों संस्थान वहां खुले हुए थे। इस कुश्ती में तलवार चलाना, हिंसक कुश्ती और देवताओं के मंत्र पढ़ना शामिल था।[446] ईसाई मिशनरियों ने इन कुश्ती करने वालों को बॉक्सर

"Boxers" का नाम दिया जिसका मतलब होता है मुक्केबाज़। इन बॉक्सरों का मानना था कि उन पर पश्चिमी हथियार, राइफ़ल और तोप भी असर नहीं कर सकते। और यह लोग ईसाई मिशनरियों को अपने मज़हब और समाज के लिए ख़तरा समझते थे इस लिए उनसे ख़ास नफ़रत रखते थे। 1895 CE में काओज़ू Caozhou इलाक़े का परीफ़ेक्ट (शासक) यूशियान Yuxian जो बाद में वो इस सूबे का गवर्नर भी बना, ने कुश्ती की एक संस्था बिग स्वोर्ड्स सोसायटी Big Swords Society से हाथ मिला लिया, इस संस्था का दावा था कि वो डाकुओं के ख़िलाफ़ कार्रवाइयां करती है।[447] इसी दौरान एक जर्मन ईसाई मिशनरी संस्था 'सोसाइटी ऑफ़ दा डिवाइन वर्ड' Society of the Divine Word ने अपनी गतिविधियां इस इलाक़े में तेज़ कर दीं और कुछ लोगों को ईसाई बना लिया जिससे इलाक़े में खलबली मच गई। इन ईसाई होने वाले लोगों में कुछ आपराधिक तत्व (जराइम-पेशा लोग) भी शामिल थे। 1895 CE में डाकुओं के एक बड़े गैंग को कुश्ती की संस्था बिग स्वोर्ड्स सोसायटी ने शिकस्त दी। इन डाकुओं में कुछ नए ईसाई भी शामिल थे। जिससे बॉक्सरों के इस दावे को और मज़बूती मिल गई कि ईसाई लोग चीनी लोगों को ईसाई बना कर उनको जराइम में इस्तेमाल कर रहे हैं। इस लिए ईसाई और डाकू समान शब्द माने जाने लगे। जिससे जनता में ईसाइयों के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा और बढ़ गया। इसी के साथ एक मिशनरी जॉर्ज स्टेंज़ George Stenz ने क़ानूनी तौर पर इन डाकुओं की मदद की और उनको क़ानूनी सज़ा से बचाने की कोशिश की। इस के बदले में बिग स्वोर्ड्स सोसायटी Big Swords Society के बॉक्सरों ने

ईसाइयों के ख़िलाफ़ हमले शुरू कर दिए। उनको मारना और उनकी संपत्ति को लूटना, जलाना शुरू कर दिया।[448] लेकिन जब पश्चिमी देशों ने दबाव डाला तो यूशियान Yuxian ने बिग स्वोर्ड्स सोसायटी के कई लीडरों को सज़ा-ए-मौत दे दी जिससे पूरे इलाक़े में दुःख और क्रोध फैल गया। और आम लोग भी इस विद्रोह में शामिल होते चले गए और कई कुश्ती की संस्थाएँ भी इस में शामिल हो गईं। इसी दौरान एक शख़्स जिसका नाम ज़ू होंगडेंग Zhu Hongdeng (Red Lantern Zhu) था वो भी इस तहरीक में शामिल हो गया। ज़ू असल में एक चलता फिरता चिकित्सक था जो घूम फिर कर लोगों का इलाज करता था और इलाज का कोई शुल्क भी नहीं लेता था इस लिए लोगों में उस की काफ़ी इज़्ज़त थी। उस ने यह एलान किया कि उस का मक़सद चिंग को दोबारा ज़िंदा करना और विदेशियों को तबाह करना है Revive the Qing and destroy the foreigners" ("扶清滅洋 fu Qing mie yang")[449]. उस का यह भी दावा था कि उस का संबंध मिंग शाही ख़ानदान से है क्यों कि मिंग का उपनाम surname और उस का एक ही था यानी ज़ू Zhu. चुनांचे उसने ऐलान किया कि विदेशी और ईसाई बनने वाले चीनी, यह दोनों शैतान हैं या तो यह लोग तौबा करें यानी चीनी मज़हब क़बूल करें या उनको निकाल दिया जाएगा या क़त्ल कर दिया जाएगा।[450] चुनांचे बड़े पैमाने पर ईसाइयों पर हमले शुरू हो गए। एक और बड़ी वजह ईसाइयों के ख़िलाफ़ ग़ुस्से की यह थी कि दूसरी अफ़ीम जंग Second Opium War के बाद 1860 CE में चीन और विदेशियों के बीच तियानजिन की संधियाँ Treaties of Tianjin और पीकिंग सम्मेलन Convention of Peking

जैसे मुआहिदे हुए थे जिनके अनुसार विदेशियों को चीन में धर्म-प्रचार के अधिकार दिए गए थे और उनको अनुमति दी गई थी कि वो कहीं भी ज़मीन ख़रीद कर चर्च बना सकते हैं।[451] उस के बाद से ईसाई खुल कर अपने धर्म के प्रचार में लग गए थे।

जूये का वाक़िया Juye Incident

1 November 1897 CE को एक सशस्त्र भीड़, शायद यह लोग बिग स्वोर्ड्स सोसायटी Big Swords Society से संबंध रखते थे, उन्होंने एक जर्मन मिशनरी जिसका संबंध सोसाइटी ऑफ़ दा डिवाइन वर्ड Society of the Divine Word से था उस पर हमला कर दिया और दो पादरियों को मार दिया लेकिन तीसरा बच गया। मरने वाला था रिचर्ड हेन्ले Richard Henle और फ्रांज ज़ेवर नाइज़ Franz Xaver Nies और बचने वाला था जॉर्ज मारिया स्टेंज़ Georg Maria Stenz. यह वाक़िया ऑल सेंट्स डे और ऑल सोल्स डे की बीच की रात में (All Saints' Day to All Souls' Day) यानी 1 और 2 नवंबर 1897 की दरमियानी रात में ज़ांग जिया गांव Zhang Jia Village में हुआ।[452] इस को जूये वाक़िया Juye Incident कहा जाता है। जब जर्मनी के राजा कैसर विल्हेम द्वितीय Kaiser Wilhelm II को इस घटना की ख़बर हुई तो वो आगबबूला हो गया और जवाबी कार्रवाई के तौर पर उसने जर्मन पूर्वी एशिया स्क्वाड्रन German East Asia Squadron नाम की एक फ़ौज चीन भेजी जिसने जियाओज़ू खाड़ी Jiaozhou Bay पर क़ब्ज़ा कर लिया। यह खाड़ी शानडोंग Shandong के दक्षिणी तट पर थी। चुनांचे जर्मनी की तरफ़ से ख़तरे को देखते हुए चिंग हुकूमत ने

शानडोंग इलाक़े में अपने अहलकारों को बरतरफ़ कर के वापस बुला लिया जिनमें गवर्नर ली बिंगहैंग Li Bingheng भी शामिल था। जर्मनी ने जीनिंग, काओज़ू और जूये (Jining, Caozhou, and Juye) के इलाक़ों में 3 गिरजा घर भी तामीर (निर्माण/construct) कर लिए।[453] इस के अलावा चिंग हुकूमत ने उसे हरजाने के ३,००० चांदी के टाइल 3,000 taels अदा किए।[454]

दिसंबर 1897 CE में जब जर्मन राजा कैसर विल्हेम द्वितीय ने चीन में इस इलाक़े पर अपने क़ब्ज़े का ऐलान किया कि वो दरअसल जर्मनी के लिए एक कंसेशन concessions बनाने के लिए इस पर क़ब्ज़ा कर रहा है। लेकिन इस को देखकर तमाम पश्चिमी देशों के दरम्यान अपने अपने कंसेशन बनाने के लिए ज़मीनें क़ब्ज़ा करने की होड़ लग गई। याद रहे चीन में कंसेशन concessions इस इलाक़े को कहा जाता था जिसको विदेशी हुकूमतों को अलाट allot किया जाता था ताकि वो बहिफ़ाज़त उस में रह सकें और चीनी लोगों को इस इलाक़े में घर बनाने की अनुमति नहीं होती थी, यह इलाक़ा सिर्फ उसी विदेशी हुकूमत के लिए आरक्षित होता था। यह देश थे जर्मनी, जापान, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, इटली और ऑस्ट्रिया-हंगरी Germany, Japan, Russia, Britain, France, the United States, Italy, and Austria-Hungary। इसी के साथ ही इन देशों ने सरकार के विभिन्न विभागों पर भी क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया। जर्मनी ने शानडोंग इलाक़े की कानों, रेलवे और विकासात्मक लोन developmental loans पर क़ब्ज़ा कर लिया, इस के अलावा जर्मनी को फ़ंगटियान, जिलिन और हीलोंगजियांग Fengtian, Jilin and Heilongjiang में

टैक्स से छूट के अधिकार भी प्राप्त थे। रूस ने चीन की दीवार Great Wall के उत्तर का इलाक़ा ले लिया इस के अलावा उस के पास मंगोलिया Mongolia और शिंजियांग Xinjiang में टैक्स से छूट के अधिकार भी थे।[455] फ्रांस ने युन्नान, गुआंगशी और गुआंगडोंग के सूबों Yunnan, most of Guangxi and Guangdong provinces के ज़्यादातर इलाक़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जापान ने फ़ुजियान पर क़ब्ज़ा किया तो बर्तानिया ने यांग्त्ज़ी नदी का इलाक़ा और गुआंगडोंग, गुआंगशी और तिब्बत के कुछ इलाक़ों पर क़ब्ज़ा किया।[456] सिर्फ इटली ने शराफ़त दिखाते हुए अनुरोध किया कि उस को ज़ीजियांग सूबे Zhejiang province का इलाक़ा दिया जाए लेकिन चिंग हुकूमत ने इनकार कर दिया।[457] इस के अलावा इन सब देशों के जो कंसेशन थे वो अलहदा जिन पर उनकी पूरी तरह हुकूमत क़ायम थी।

रूस ने अपने कब्जे वाले क्षेत्रों में अपनी फ़ौज बिठा दी, अपना क़ानून लागू कर दिया, स्कूल खोले, खनन और पेड़ों की कटाई Logging पर अपनी इजारादारी स्थापित की, अपने शहरियों को वहां बसाना शुरू कर दिया और कई शहरों पर अपनी नगरपालिका प्रशासन स्थापित किया।[458]

बॉक्सर विद्रोह की शुरूआत

इस विद्रोह का आरंभ इस तरह हुआ कि, लियू युआनटुन नाम के एक गांव Liyuantun village में एक मंदिर था जिसको जेड सम्राट का मंदिर temple of Jade Emperor कहा जाता था। लेकिन बाद में उस को ईसाइयों को दे दिया गया था जिसको उन्होंने एक चर्च में बदल दिया था। लेकिन आम चीनी लोग

इस से बहुत हताश थे। चुनांचे अक्तूबर 1898 CE में बॉक्सरों ने उस चर्च पर भी हमला कर दिया। यह पहला मौक़ा था जब बॉक्सरों ने यह नारा इस्तेमाल की कि 'चिंग की हिमायत करो और विदेशियों को तबाह करो' "Support the Qing, destroy the foreigners" ("扶清滅洋 fu Qing mie yang"). यह नारा बाद में बहुत अधिक बोला जाने लगा और बॉक्सरों की पहचान बन गया। शुरू में बॉक्सरों को अराजक तत्व माना गया और चिंग हुकूमत भी उनके ख़िलाफ़ थी। चुनांचे एक साल बाद अक्तूबर 1899 CE में चिंग हुकूमत और बॉक्सरों के बीच जंग हुई जिसको सेनलुओ मंदिर की जंग Battle of Senluo Temple कहा जाता है जिसमें बॉक्सरों ने पहली बार अपने को "धार्मिकता में एकजुट मिलिशिया" Militia United in Righteousness का नाम दिया। उन्होंने अपने लिए "बॉक्सर" के बजाय " मिलिशिया" militia का शब्द इस्तेमाल करके मार्शल आर्ट के प्रतिबंधित संगठनों से अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश की और अपने संगठन को एक ऐसे गिरोह की हैसियत देने की कोशिश की जो चीनी संस्कृति की रक्षा कर रहा था। उधर विदेशी हुकूमतें भी अपने नागरिकों को बचाने के लिए मुख़्तलिफ़ कोशिशें कर रही थीं। 1899 CE में एक फ्रेंच मिनिस्टर ने अपने हक़ में एक हुक्मनामा जारी करवाया जिसके अनुसार रोमन कैथोलिक मज़हबी धर्मगुरु अपने मुक़द्दमों के बारे में ख़ुद फ़ैसला दे सकते थे और हुकूमती अफ़सरों को नज़रअंदाज़ करने के अधिकार प्राप्त हो गए थे। जब जर्मनी ने शानडोंग पर क़ब्ज़ा किया तो चीनी जनता में यह ख़ौफ़ बैठ गया कि अब थोड़ा थोड़ा कर के विदेशी ताक़तें पूरे

चीन पर क़ब्ज़ा कर लेंगी to colonise China piece by piece. चुनांचे एक चीनी अफ़सर ने इन अलफ़ाज़ में अपना मुद्दा बयान किया, 'अपने मिशनरी और अपनी अफ़ीम वापस ले जाओ तो हम तुम्हारे आभारी होंगे' Take away your missionaries and your opium and you will be welcome."[459] बॉक्सरों की ताक़त और हमले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे इस लिए अब उनका मुक़ाबला करना चिंग हुकूमत के बस में भी नहीं था। इसी के साथ ही '100 दिन के सुधार के अभियान' की नाकामी की वजह से चिंग ख़ानदान में आपस में फूट पड़ चुकी थी, और हुकूमत में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ चुका था। ड्वागर सिशी ने सारे इख़्तियारात अपने हाथ में ले लिए थे और राजा को घर में नज़रबंद कर दिया था। इस से जनता के हालात और ख़राब हो गए। लेकिन आम चीनियों का मानना था कि सारे फ़साद की जड़ विदेशी ताक़तों का चीन में दख़ल देना है। इस लिए वो बॉक्सरों के साथ होते जा रहे थे। ड्वागर सिशी के हाथ में जब इख़्तियारात आए तो उसने भी अपनी हमदर्दी बदल दी और अब वो बॉक्सरों के साथ हो गई और बॉक्सरों की रक्षा के लिए आदेश जारी करने लगी। इस के ख़िलाफ़ विदेशियों ने प्रदर्शन शुरू कर दिए। बॉक्सर विद्रोह पूरे चीन में फैल चुका था और जगह जगह ईसाई सम्पत्तियों को नष्ट किया जा रहा था। अमरीकी वज़ीर एडविन एच. कॉंगर Edwin H. Conger ने वाशिंगटन को टेलीग्राम से पैग़ाम भेजा जिसमें उसने लिखा 'पूरा मुलक भूके, बेरोज़गार और नाउम्मीद लोगों से भरा हुआ है।[460]

सीमोर अभियान Seymour Expedition

हालात इतने गंभीर हो गए कि बर्तानिया के एक वज़ीर क्लाउड मैक्सवेल मैकडोनाल्ड Claude Maxwell MacDonald ने विनती की कि विदेशी फ़ौज आकर बीजिंग में दूतावासों legations की रक्षा करे। याद रहे लिगेशन विदेशी दूतावास को कहा जाता था। चुनांचे दूसरे दिन 8 देशों की मिली जुली फ़ौज के 435 नौसेना के सैनिक पानी के जंगी जहाज़ों से चीन के तट पर उतरे और ट्रेन के ज़रिये डागू Dagu (Taku) से बीजिंग पहुंचे, जहां उन्होंने अपने दूतावासों Legations के आस-पास में रक्षा मोर्चे बनाए।[461] 05 June 1900 CE को बॉक्सरों ने तियानजिन जाने वाली रेलवे लाइन तबाह कर दी जिससे बीजिंग दूसरे इलाक़ों से कट गया। 11 June 1900 CE को बीजिंग के योंगडिंग गेट Yongding gate पर मुस्लिम जनरल डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज ने जापानी लिगेशन के सेक्रेटरी सूगीयामा अकीरा Sugiyama Akira को क़त्ल कर दिया। डोंग फ़ूशियांग Dong Fuxiang की फ़ौज जिसको कान्सू ब्रेव्स Kansu Braves कहा जाता था उस वक़्त बीजिंग के दक्षिणी इलाक़े की रक्षा पर नियुक्त थी। इन लोगों के पास माउज़र पिस्तौल Mauser होती थीं लेकिन यह लोग अपने पारंपरिक कपड़े पहनते थे।[462] कहा जाता है कि जब यह फ़ौज 1898 CE में बीजिंग पहुंची तो विदेशी फ़ौजों में उनका इतना ख़ौफ़ बैठ गया था कि जर्मनी के राजा कैसर विल्हेम द्वितीय ने तुर्की के उस्मानी ख़लीफ़ा अब्दुल हमीद द्वितीय से अनुरोध किया कि वो उन लोगों को किसी तरह लड़ने से रोकें। और अमरीकी फ़ौज बुलाई गई ताकि वो बीजिंग में दूतावासों की रक्षा करे। चुनांचे ख़लीफ़ा

अब्दुल हमीद द्वितीय ने अनवर पाशा को चीन भेजा ताकि उनको रोकने की कोशिश करे लेकिन विद्रोह उस वक़्त तक ख़त्म हो चुका था।[463]

लांगफांग की जंग

बॉक्सर विद्रोह के दौरान बहुत सी लड़ाईयां हुई जिनमें सबसे ज़्यादा मशहूर लांगफांग जंग है। 18 जून 1900 में कान्सुओं ने सीमोर अभियान Seymour Expedition को लांगफांग की जंग Battle of Langfang में शिकस्त दी और उन्हें तियानजिन की तरफ़ पीछे हटने पर मजबूर कर दिया और बड़ी तादाद में लोग मारे गए। याद रहे कि सीमोर मुहिम 8 देशों, जापान रूस, बर्तानिया, फ़्रांस, अमेरिका, इटली, ऑस्ट्रिया और हंगरी की गठबंधन सेना थी, उसे इत्तिहादी फ़ौज भी कहा जाता था।



Dong Fuxiang

जंग से पहले

चुनांचे हालात जब और ज़्यादा ख़राब हुए तो डागू में मुक़ीम 8 देशों की फ़ौजों ने एक और नई फ़ौज बीजिंग भेजी जिसमें 2000 मल्लाह sailors थे। इस का नेतृत्व वाइस एडमीरल ऐडवर्ड सीमोर Vice-Admiral Edward Seymour कर रहा था, इस में सबसे बड़ा दस्ता बर्तानवी फ़ौज का था। यह फ़ौज डागू से तियानजिन के लिए रवाना हुई। उन्होंने डागू से तियानजिन जाने के लिए चिंग हुकूमत से अनुमति भी ले ली थी। लेकिन तियानजिन से बीजिंग जाने वाली रेलवे लाइन तबाह कर दी गई थी। सीमोर ने फ़ैसला किया कि हम ट्रेन से ही जाएंगे और जहां-जहां से पटरी ख़राब है उस की मरम्मत कर के आगे बढ़ेंगे और अगर यह भी मुम्किन न हुआ तो पैदल ही जाएंगे। तियानजिन से बीजिंग 120 किलोमीटर दूर था। लेकिन जब यह फ़ौज तियानजिन से बीजिंग की तरफ़ बढ़ी तो चिंग हुकूमत उनसे नाराज़ हो गई क्यों कि उन्होंने सिर्फ तियानजिन तक आने की अनुमति ली थी। चुनांचे चिंग हुकूमत ने इस इलाक़े के शासक ज़ोंगली यामेन Zongli Yamen जिसको शहज़ादा चिंग Prince Qing भी कहा जाता था को हटा कर उस की जगह शहज़ादे डुआन Manchu Prince Duan को बना दिया। उस का संबंध आईसिन गयोरो ख़ानदान Aisin Gioro clan से था जिसको विदेशी, ख़ूनी शाही ख़ानदान कहा करते थे और यह विदेशियों से बेहद नफ़रत रखता और बॉक्सरों का हामी था। चुनांचे शहज़ादे डुआन ने फ़ौरन चिंग फ़ौज को विदेशी फ़ौज पर हमला करने का हुक्म दे दिया। लेकिन जनरल नी शीचैंग Nie Shicheng जो चिंग हुकूमत के परस्पर विपरीत आदेशों के कारण

चकरा गया था उसने विदेशी फ़ौज पर हमला करने के बजाय, उस को अपने इलाक़े से गुज़रने की अनुमति दे दी।[464] यह भी कहा जाता है कि चीनी कमांडर-इन-चीफ़ रोंगलू Ronglu (6 April 1836 – 11 April 1903) अंदरख़ाने इत्तिहादियों से मिल गया था और नी शीचैंग को विपरीत अहकामात दे रहा था जिससे चकरा कर नी शीचैंग ने इत्तिहादियों पर हमला नहीं किया।

मैदान-ए-कार-ज़ार

तियानजिन से रवाना होने के बाद यह फ़ौज लांगफांग पहुंची लेकिन लांगफांग में भी ट्रेन की पटरी तबाह कर दी गई थी। सीमोर के इंजीनियर पटरी दरुस्त करने की कोशिश कर रहे थे कि इसी दौरान डोंग फ़ूशियांग की कान्सू ब्रेव्स फ़ौज ने उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया और बॉक्सर फ़ौज भी उनके साथ या मिली। डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज की तादाद उस वक़्त 5000 थी और बॉक्सर फ़ौज की तादाद ग़ैर मालूम है। चुनांचे इस फ़ौज ने चारों तरफ़ से विदेशी फ़ौज पर हमला कर दिया। पश्चिमी फ़ौज ने भी उनका मुक़ाबला किया उनके पास जदीद हथियार थे राइफ़लें, तोपें और मशीन गन वग़ैरह थे, जब कि बॉक्सरों के पास छुरी, किरपान और तलवारें और पारंपरिक हथियार थे। लेकिन इस के बावजूद चीनियों ने बे-ख़ौफ़ हो कर मुक़ाबला किया और सीमोर फ़ौज को शिकस्त दी हालाँकि इस में चीनी भी बड़ी तादाद में मारे गए। इस को लांगफांग की जंग Battle of Langfang कहा जाता है जो 18 जून 1900 को लड़ी गई। कहा जाता है कि चीनियों ने जानों की परवाह किए बग़ैर छुरी और तलवारों से विदेशियों की राइफ़लों और मशीनगनों का मुक़ाबला किया। उन्होंने यह हिक्मत-ए-अमली

अपनाई कि वो पूरे झुण्ड बना कर इत्तिहादी फ़ौज पर छुरियों और तलवारों से हमला करते थे जबकि विदेशी उन पर राइफ़लों और मशीनगनों से हमला करते थे जिसमें बड़ी तादाद में चीनी मारे जाते थे, लेकिन कुछ बॉक्सर विदेशियों तक पहुंचने में कामयाब हो जाते थे और क़रीब से मुक़ाबला होता था, इस हिक्मत-ए-अमली को इन्सानी लहर human wave कहा जाता है।[465] लेकिन इस के बावजूद उन्होंने विदेशियों को शिकस्त दी। एक बर्तानवी फ़ौजी का बयान है कि एक बॉक्सर के उसने 4 गोलीयां मारीं तब वो गिरा। इसी तरह एक अमरीकी कैप्टन बोमेन मैकला Capt. Bowman McCalla ने बताया कि इन बॉक्सरों पर एक गोली काम नहीं करती थी बल्कि कई गोलीयां दाग़ने के बाद उनको गिराना मुमकिन हो पाता था। बॉक्सरों को रोकने के लिए सिर्फ मशीन गन ही ज़्यादा कारगर थी।[466] डोंग फ़ूशियांग के भाई मा फ़ूलू जो ख़ुद घुड़सवार फ़ौज का नेतृत्व कर रहे थे उन्हों ज़बरदस्त हमला किया और कई ग़ैर मुल्की फौजियों को मौत के घाट उतार दिया और उन्हें पसपा होने पर मजबूर कर दिया।

क दफ़ा तो डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज और बॉक्सरों ने जर्मन कैप्टन गुइडो वॉन यूसेडोम German Captain Guido von Usedom की फ़ौज के दाएं बाज़ू पर मिलकर ऐसा ज़ोर दार हमला किया कि जर्मन फ़ौज शिकस्त खाने के क़रीब हो गई लेकिन आख़िरी वक़्त में फ़्रांसीसी और बर्तानवी दस्ते उनकी मदद को आगए और उनको बचा लिया। और इत्तिहादी फ़ौज अपने ज़ख़मीयों के साथ ट्रेन में सवार हो कर तियानजिन के लिए रवाना हो गई। यह ट्रेन गोलीयों के सुराख़ों से भरी हुई थी। जर्मन फ़ौज ने इस जंग में 200 बॉक्सरों और 200 कान्सू

ब्रेव्स को क़त्ल किया जब कि इत्तिहादी फ़ौज के 7 लोग मारे गए और 57 ज़ख़मी हुए। कहा जाता है कि इस जंग में बॉक्सरों के पास राइफ़लें और बंदूक़ें नहीं थीं लेकिन वो पटाख़े छुड़ाते थे जिससे विदेशी फ़ौज समझती थी कि उनके पास भी बंदूक़ें हैं, इस लिए विदेशी फ़ौज का हौसला टूटता था। यह चीनियों की एक हैरानकुन जंगी चाल थी।

ऐडवर्ड सीमोर की ज़बानी

17 जून को लूफा और लांगफांग से 2, 3 और 4 नंबर ट्रेनें वापस बुलाने के लिए संदेश भेजे गए, क्यों कि यह स्पष्ट था कि रेल के ज़रिये पेशक़दमी नामुमकिन थी, और ट्रेनों पर हमला होने का ख़तरा था। नंबर 3 ट्रेन 18 जून की दोपहर को वापस आई, और शाम को नंबर 2 और 4 लांगफांग से। नंबर 2 और 4 ट्रेनों के साथ मौजूद सीनियर अफ़सर जर्मन कैप्टन वॉन यूसेडोम Captain Von Usedom ने ख़बर दी कि उनका दुश्मन के साथ शदीद मुक़ाबला हुआ है, जिसने तक़रीबन 2.30 बजे के क़रीब लांगफांग पर उन पर अचानक हमला किया। उस दिन 18 जून को बड़ी ताक़त के साथ पूरी तरह से सशस्त्र 5,000 आदमी (जिनमें घुड़सवार फ़ौज भी शामिल थी) थे, जिनमें से बड़ी तादाद जदीद तरीन तर्ज़ की मैगज़ीन राइफ़लों से लैस थी। उन्होंने बैनर उठाए हुए थे जिनसे ज़ाहिर होता था कि उनका संबंध जनरल डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज से है। यह लोग दक्षिणी बीजिंग में हंटिंग पार्क Hunting Park in southern Beijing में चीनी फौजियों की कमान कर रहे थे। इस से यह बात साबित हो गई कि शाही फ़ौज भी विदेशियों के ख़िलाफ़ लड़ रही थी। हम पर हमला सामने और दोनों अतराफ़ से किया

गया। दुश्मन ने गुज़रने वाली इत्तिहादी अफ़वाज पर शदीद गोला बारी की। हालाँकि दुश्मन को भगा दिया गया लेकिन बहुत बड़ा नुक़्सान हो चुका था। लेकिन जब उन्होंने हमारी सेनाओं को ट्रेनों की तरफ़ पीछे हटते देखा तो उन्होंने एक बार फिर से हमला कर दिया। उनका फिर से मुक़ाबला किया गया लेकिन नुक़्सान पहले से ज़्यादा हो चुका था। इस कार्रवाई में चीनियों की 400 से ज़्यादा हलाकतें हुईं, इत्तिहादी अफ़वाज के 6 हलाक और 48 ज़ख़्मी हुए।[467]

जंग के बाद

लांगफांग की जंग के बाद इत्तिहादी फ़ौज तियानजिन वापस हो गई। लेकिन वापसी के दौरान चीनी फ़ौज उन पर बराबर गोले और गोलीयां बरसाती रही। जून के आख़िर में बॉक्सरों ने तियानजिन में बर्तानवी कंसेशन पर हमला कर दिया। चीनी जनरल नी शीचैंग Nie Shicheng जो अभी तक इत्तिहादी फ़ौज का हिमायती था वो क़रीब ही था। उसने बॉक्सरों पर हमला कर दिया जिससे बॉक्सर वापस लौट गए। इस के बाद नी शीचैंग ने अपनी फ़ौज वूवी कोर Wuwei Corps को हुक्म दिया कि वो वापस होते हुए बॉक्सरों पर अपनी बर्तानवी मशीनगनों से हमला कर दें। चुनांचे सैकड़ों की तादाद में बॉक्सर मारे गए बाक़ी भाग गए। इस के बाद नी शीचैंग भी इत्तिहादियों के ख़िलाफ़ हो गया लेकिन वो किसी कंसेशन पर क़ब्ज़ा नहीं कर पाया। जुलाई में नी शीचैंग को उसी के साथियों ने गोलीमार कर क़त्ल कर दिया, कुछ का कहना है कि उसने ख़ुदकुशी की थी और कुछ ने उस को एक बहादुर हीरो की मौत माना है।[468]

अध्याय 13
शिंजियांग क्लीक़

第十三章
新疆系

Chapter Thirteen
Xinjiang Clique

शिंजियांग क्लीक़ उस क्लीक़ को कहा जाता है जो शिंजियांग के इलाक़े में क़ायम हुई। इस में ज़्यादातर आबादी मुसलमान थी लेकिन इसका शासक, यांग ज़ेंगशिन Yang Zengxin एक ग़ैर मुस्लिम था। बुनियादी तौर पर यांग एक हान था और चिंग पुलिस अफ़सर था, 1907 में चिंग हुकूमत ने यांग को शिंजियांग में बतौर मजिस्ट्रेट तैनात कर दिया। चूँकि शिंजियांग में मुसलमानों की अक्सरियत (बहुसंख्या) थी इस वजह से यांग के मुसलमानों से बहुत अच्छे और क़रीबी संबंध हो गए और उसे इस्लाम के बारे में ग़ैरमामूली मालूमात हो गई, यहां तक कि उसने सूफ़ी सिलसिलों पर एक किताब भी लिखी। 1911 में जब चीन में लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया तो शिंजियांग का युआन डाहुवा Yuan Dahua (गवर्नर) वहां से अपनी जान बचा कर फ़रार हो गया और इन्क़लाबियों ने इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन यांग ज़ेंगशिन ने मुसलमानों की मदद से एक बड़ी फ़ौज इकट्ठी करली जिसमें ज़्यादातर हुई मुसलमान थे। इस काम में सूफ़ी जहरिय्या शेख़ मा युआनज़ांग Ma Yuanzhang ने भी उस की हिमायत की और मस्जिदों में यांग का साथ देने के ऐलानात हुए, इस तरह यांग ज़ेंगशिन ने इन्क़लाबियों को शिकस्त दी और शिंजियांग में अपनी हुकूमत क़ायम कर ली जिसको शिंजियांग क्लीक़ कहा जाता है।

मुस्लिम जनरल मा अनलियांग ने यांग की मदद से यहवानी (अरबी में ईख़वानी) सूफ़ी शेख़ मा वानफ़ू Ma Wanfu को गिरफ़्तार और क़त्ल कराने की साज़िश रची लेकिन मा अनलियांग के मातहत अफ़सर मा ची ने उन्हें बचा लिया।[469]

तर्ज़ हुकूमत

यांग ने अपनी हुकूमत मुसलमानों की मदद से ख़ूब मज़बूत कर ली और शिंजियांग से इन्क़लाबियों और जलाओहुई Gelaohui ख़ुफ़िया संस्था के लोगों को निकाल दिया। याद रहे कि जलाओहुई एक ख़ुफ़िया इन्क़िलाबी संगठन था जो अपनी आस्तीनों में छोटी छोटी तलवारें छुपा कर चलते थे। यांग ने अपना फ़ौजी कमांडर एक मुस्लिम मा फ़ूशिंग Ma Fuxing को बिना या जिसकी मातहती में 2000 हज़ार का लश्कर दे दिया, कि वो यांग के दुश्मनों का सफ़ाया करे और उस को 1916 में काशग़र का टीटाई Titai of Kashgar का लक़ब दिया। जब युआन शिकाई की हुकूमत क़ायम हुई तो युआन शिकाई ने यांग की हुकूमत को स्वीकार कर लिया। इसके बदले यांग ने युआन विरोधियों को 1916 में नए साल के मौक़े पर एक दावत में आमंत्रित किया और सबकी गर्दनें उड़ा दीं। यांग उन चंद सरदारों में था जिन्होंने युआन शिकाई की बहुत मदद की इसी लिए यांग, युआन के सबसे क़रीबी लोगों में शुमार होता था। यांग की पॉलिसी थी कि जो भी वक़्त की ताक़त हो उसका साथ दिया जाए और उसकी आज्ञा का पालन किया जाए। इसी लिए उसकी हुकूमत झगड़े से बची हुई थी जबकि पूरा चीन बदअमनी का शिकार था। उसने मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों minorities पर टैक्स भी कम कर दिए और उनको रक्षा भी उपलब्ध कराई और उसने अल्पसंख्यकों minorities पर हमलों पर भी रोक लगाई और उस की फ़ौज में भी ज़्यादातर मुसलमान थे और बहुत से ऊंचे ओहदे उसने हुई मुस्लिम लोगों को दे रखे थे जिसकी वजह से हान और उइग़ूर लोग जलते थे।

लेकिन यांग ने अपने बहुत से ख़ास लोगों को भी क़त्ल कराया बल्कि कई को तो ज़रा से शक पर मरवा दिया, चुनांचे उसको अपने फ़ौजी कमांडर मुस्लिम जनरल मा फ़ूशिंग पर एक दफ़ा शक हो गया क्यों कि यांग ने उसके कुछ पत्र पकड़ लिए थे जिसमें कुछ मशकूक बातें लिखी थीं। चुनांचे उसने अपने दूसरे मुस्लिम जनरल मा शाओवू Ma Shaowu को हुक्म दिया कि वो मा फ़ूशिंग को क़त्ल कर दे और उसका ओहदा ख़ुद सँभाल ले, चुनांचे मा शाओवू ने 1924 में मा फ़ूशिंग को गोली मार कर क़त्ल कर दिया और उसकी लाश कई दिन तक मैदान में लटकी रही और ख़ुद उसका ओहदा सँभाल लिया, और उस को काशग़र का डाओटाई Daotai of Kashgar का लक़ब मिला।



मा फ़ूशिंग हत्या के बाद

जिन शूरेन की हुकूमत

1 जुलाई 1928 को जब नानजिंग में लोकतांत्रिक हुकूमत क़ायम हुई तो यांग ने उसको भी स्वीकार कर लिया लेकिन इसके 6 दिन बाद यानी 7 जुलाई 1928 को उसके क़रीबी साथी फ़ान याओनान Fan Yaonan ने एक दावत में बुलाकर यांग को धोके से क़त्ल कर दिया। लेकिन इसके फ़ौरन बाद यांग के क़रीबी साथी जिन शूरेन Jin Shuren ने फ़ान याओनान को भी क़त्ल कर दिया और ख़ुद यांग का ओहदा सँभालते हुए शिंजियांग क्लीक़ का शासक बन गया।[470] हालाँकि जिन शूरेन ने तक़रीबन 5 साल हुकूमत की लेकिन इसके ज़माने में बहुत बदअमनी रही क्योंकि उसने अपनी मुस्लिम जनता को परेशान करना शुरू कर दिया और हान लोगों को तरजीह देनी शुरू कर दी। बल्कि उसने तुर्क लोगों की ज़मीनें छीन कर हान लोगों को देने का ऐलान कर दिया, लेकिन इसके बजाय अपने क़रीबी लोगों में उन्हें बांट दिया, उसने मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोगों को लड़वाने की पॉलिसी अपनाई। इस लिए लोगों में मज़हबी नफ़रतें बढ़ीं। मुसलमानों ने कई दफ़ा उसकी हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावतें भी कीं। चुनांचे मुसलमानों ने कुमूल विद्रोह किया जो 1931 से 1934 तक चला। यही वो विद्रोह है जिसमें मा क्लीक़ के जनरल मा ज़ोंगयिंग ने चियांग काई शेक के हुक्म पर कुमूल फ़ौज की मदद की और उनकी तरफ़ से लड़ा।

कुमूल ख़ानियत

कुमूल ख़ानियत या हामी सल्तनत, हामी शहर का नाम है जहां यह हुकूमत थी, मुसलमान इस हुकूमत को कुमूल कहते थे जबकि चीनी उस को हामी कहते थे, यह एक छोटी सी मुस्लिम ख़ानियत थी शिंजियांग के इलाक़े में, जिसकी आबादी 25,000 से 30,000 के दरम्यान थी,[471] और यह मिंग हुकूमत के ज़माने से चली आ रही थी बल्कि यह लोग मिंग हुकूमत के बहुत वफ़ादार थे। जब 1646 में चिंग हुकूमत ने मिंग हुकूमत पर हमला कर के उसका तख़्ता उल्टा तो कुमूल ख़ानियत के लोगों ने मिंग हुकूमत की हिमायत करते हुए चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया जिसे मिलायिन विद्रोह Milayin rebellion कहा जाता है। लेकिन चिंग हुकूमत ने इस विद्रोह को कुचल दिया और इस में कुमूल ख़ानियत का शहज़ादा और सुलतान सईद बाबा Sultan Said Baba Khan का बेटा शहज़ादा तुरुमताए Prince Turumtay भी मारा गया, उसका ज़िक्र ऊपर भी आचुका है। इसके बाद कुमूल ख़ानियत ने 1696 CE में चिंग हुकूमत की मातहती क़बूल कर ली। उस वक़्त कुमूल का ख़ान अबदुल्लाह बेग तारख़ान Abdullah Beg Tarkhan था। जो सुलतान मुहम्मद शाह बेग तार ख़ान Muhammad Shah-i-Beg Tarkhan का बेटा था। और उसको सालाना लगान अदा करना शुरू कर दिया जिसके बदले चिंग ने उसको अपनी हुकूमत चलाने की अनुमति देदी और उसे आधी ख़ुद-मुख़्तार हुकूमत semi-autonomous rule का दर्जा दे दिया और उस के ख़ान को जसक तारख़ान Jasak Tarkhan का लक़ब इनायत किया। इस के अलावा कुमूल ख़ानियत के शासक को हर 6

साल में एक दफ़ा चिंग हुकूमत की राजधानी बीजिंग में हाज़िरी देना ज़रूरी थी।[472] जब चिंग हुकूमत ने ज़ुंगर ख़ानियत को ख़त्म किया जो एक मंगोल ग़ैर मुस्लिम ख़ानियत थी तो कुमूल ख़ानियत ने भी चिंग हुकूमत का साथ दिया और फ़ौजी कार्रवाइयों में हिस्सा लिया क्यों कि कुमूल उस वक़्त चिंग की लगानदारी थी। लेकिन बाद में ख़ान मुहम्मद और उस के बेटे ख़ान मक़सूद शाह के दौर में लोगों पर बहुत ज़्यादा टैक्स बढ़ा दिए गए और मज़दूरों से बेगार लिया जाने लगा। जिसके रद्द-ए-अमल में यहां 1907 & 1912 में बग़ावतें हुईं। लेकिन यह बदस्तूर चिंग की लगानदारी रही, जिन श़ूरेन की हुकूमत क़ायम होने तक।

कुमूल ख़ानियत के शासक

Generation	Name	Reign years	information	शासक
1st generation	Abdullah Beg 額貝都拉 e-bei-dou-la	1697 – 1709	In the 36th year of Kangxi's reign, he was granted the title of Jasagh Darhan of the First Rank. He died in the 48th year of Kangxi's reign.	अब्दुल्ला बेग
2nd generation	Gapur Beg 郭帕 guo-pa	1709 – 1711	Abdullah Beg's eldest son. In the 48th year of Kangxi's reign he was granted the title of Jasagh Darhan of the First Rank. He died in the	गपुर बेग

			fiftieth year of Kangxi's reign.	
3rd generation	Emin 額敏 E-min	1711 – 1740	Gapur beg's eldest son. In the fiftieth year of Kangxi's reign he inherited the title of Jasagh Darhan of the First Rank. In the fifth year of Yongzheng's reign he was promoted to Zhenguo Gong (鎮國公; Duke Who Guards the State); in the 7th year of Yongzheng's reign, he was promoted to Gushan Beizi (固山貝子; Banner Prince). In the 5th year of Qianlong's reign, he died.	अमीन
4th generation	Yusuf 玉素甫 Yu-su-fu or Yusup 玉素卜yu su bu	1740 – 1767	Emin's eldest son. In the fifth year of Qianlong's reign he inherited the title of Jasagh Zhenguo Gong. In the 10th year of Qianlong's reign he was promoted to Gushan Beizi. In the	यूसुफ़

			23rd year of Qianlong's reign he was granted the title of Beile pinji (貝勒品級). In the 24th year of Qianlong's reign, he was conferred the title of Duoluo Beile (多羅貝勒), and conferred the title of Junwang pinji (郡王品級). He died in the 12th month of the 31st year (January 1767).	
5th generation	Ishaq 伊薩克 yi-sa-ke	1767 – 1780	Yusuf's second son. In the 32nd year of Qianlong's reign he inherited the title of Junwang pinji Jasagh Duoluo Beile. In the 45th year he died.	इसहाक़
6th generation	Ardashir 額爾德錫爾 e-Er-de-xi-er	1780 – 1813	Ishaq's eldest son. In the 45th year of Qianlong's reign, he inherited the title of Junwang pinji Jasagh duoluo beile. In the 48th year by imperial order he was granted permanent	अर्दशीर

			succession (all his descendants would automatically inherited his title). In the 18th year of the Jiaqing Emperor he died.	
7th generation	Bashir 博錫爾 bo-xi-er	1813 – 1867	Son of e-Er-de-xi-er. In the 18th year of Jiaqing's reign, he inherited (his father's titles). In the 12th year of Daoguang's reign, he was promoted to Duoluo Junwang 多羅郡王. In the third year of Xianfeng's reign, he was granted the title of Qinwang 親王. In the fifth year of Tongzhi's reign, the Dungan revolt broke out, but he stayed loyal (to the Qing). In the sixth year of Tongzhi's reign, he was posthumously granted the title of Hezhuo Qinwang 和碩親王.	बशीर

8th generation	Muhammad 賣哈莫特 mai-ha-mo-te	1867 – 1882	Son of bo-xi-er. In the sixth year of Tongzhi's reign he inherited the title of Jasagh Heshuo Qinwang. In the seventh year of Guangxu's reign, he died, leaving no one to succeed to his title.	मुहम्मद
9th generation	Maqsud Shah 沙木胡索特 sha-mu-hu-suǒ-te	1882 – 1930	Muhammad's agnatic nephew. In the eighth year of Guangxu's reign he inherited his titles. In the fourth year of the Republic of China, his salary as qinwang was doubled. In the 19th year of the Republic of China on the sixth month on the sixth day, he died of illness.	मकसूद शाह
10th generation	Nasir 聶滋爾 nie-zi-er	1930 – 1934	Maqsud Shah's second son. In the 19th year of the Republic of China on the 9th month on the 13th day he inherited his titles.	नासिर

			In the 23rd year of the republic he died.	
11th generation	Bashir 伯錫爾 bo-xi-er	1934 – 1949	Nasir's eldest son. In the 23rd year of the republic on the fourth month he inherited his titles. He was arrested and sent to prison. In 1951 he died while in prison.[473]	बशीर

कुमूल विद्रोह

अब हम कुमूल विद्रोह और उस के बाद के हालात बयान करेंगे लेकिन यह हालात बहुत पेचीदा हैं इस लिए हम तारीख़वाराना तर्तीब chronological order के हिसाब से वाक़ियात का ज़िक्र करेंगे। कुमूल विद्रोह Kumul Rebellion, 20 फ़रवरी 1931 -1934 CE के दरम्यान चला। यह विद्रोह कुमूल ख़ानियत के लोगों ने बरपा किया था। इसी के नतीजे में पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत Turkic Islamic Republic of East Turkestan (TIRET) क़ायम हुई। इस की शुरूआत इस तरह हुई कि जब चिंग हुकूमत के शिंजियांग के गवर्नर यांग ज़ेंगशिन Yang Zengxin को 1928 में क़त्ल कर दिया गया तो जिन शूरेन शिंजियांग का गवर्नर बन गया। जब जिन शूरेन शिंजियांग का शासक बना तो उसने ऐसे फ़ैसले लिए जिससे मुसलमान परेशान हो गए। जैसे उसने शिंजियांग में जानवर ज़बह करने पर टैक्स लगा दिया और लोगों को हज पर जाने की

मनाही (prohibit) कर दी।[474] जिन ने कुमूल लोगों पर टैक्स बढ़ा दिए और उन की ज़मीनें छीन कर हान लोगों को देनी शुरू कर दीं, और हुकूमत के सारे बड़े ओहदे मुसलमानों के बजाय हान लोगों को और अपने रिश्तेदारों को देने शुरू कर दिए। उसने पूरे इलाक़े में अपने जासूस फैला दिए और अगर उसे ज़रा सा भी किसी पर शक हो जाता था कि यह शख़्स मेरे ख़िलाफ़ है तो वो उस को सज़ा-ए-मौत दे देता। उसने अपनी फ़ौज का जनरल एक मुसलमान मा शाओवू Ma Shaowu को बना रखा था लेकिन लोग उस को भी पसंद नहीं करते थे। जिन शूरेन ने कुमूल ख़ानियत को अपनी हुकूमत में मिलाने का फ़ैसला कर लिया। लेकिन वो मौक़े की तलाश में था। इसी दौरान कुमूल शासक मक़सूद शाह Maqsud Shah का 1930 में इंतिक़ाल हो गया। मक़सूद शाह के इंतिक़ाल के बाद उसका बेटा नासिर उसकी जानशीनी का दावेदार था इस लिए वो अपने वज़ीर युलबर्स ख़ान के साथ जिन शूरेन से मिलने राजधानी उरुमची गया ताकि जिन शूरेन से वो अपने लिए अनुमति ले-ले और जिन शूरेन उसकी हुकूमत को स्वीकार करले। लेकिन जिन शूरेन ने मौक़ा देखकर अपने वज़ीरों की मीटिंग की जिसमें कुमूल ख़ानियत को, शिंजियांग सूबाई हुकूमत में मिलाने की क़रारदाद पास करवा ली और कुमूल ख़ानियत को तीन शहरों में बांट दिया गया जिनके नाम हैं हामी hami, आई हो I-ho और आई वू i-wu और नासिर को सीनियर सलाहकार senior advisor का ओहदा देकर रोक लिया और युलबर्स ख़ान के साथ अपने बहुत से चीनी अफ़सरों को भेज दिया कि वो वहां अपनी नई हुकूमत क़ायम करें। इन इक़दामात से कुमूल लोग जिनमें अक्सरियत (बहुसंख्या) उइग़ूर

मुसलमानों की थी जिन शूरेन के ख़िलाफ़ हो गए और युलबर्स ख़ान के मातहत एकजुट हो गए और बार बार बग़ावतें होने लगीं।

वो वाक़िया जिसने विद्रोह को जन्म दिया

लेकिन एक वाक़िया ऐसा हुआ कि फ़साद पूरी तरह भड़क उठा। हुआ यूं कि 1931 में जिन ने अपने बहुत से क़रीबी लोगों को हुकूमत में ऊंचे ओहदे दे दिए थे, उन्हें में उसने सियाओ पू hsiao-pu शहर का पुलिस अफ़सर और टैक्स कलेक्टर एक नौजवान अफ़सर को बना दिया जो गान्सू के इलाक़े से संबंध रखता था, याद रहे कि जिन शूरेन ख़ुद भी गान्सू का था। उस पुलिस अफ़सर का नाम चैंग मू Chieng mu था, उसको सियाओ पू शहर में एक मुस्लिम लड़की पसंद आगई जिसके बाप का नाम सालिह था और उसने लड़की के वालदैन को तंग करना शुरू कर दिया[475] और ज़बरदस्ती शादी पर-ज़ोर डालने लगा।[476] एक रिवायत में यह भी है कि उसने उस उइग़ूर लड़की का रेप कर दिया और उस से ज़बरदस्ती शादी करने लगा। चुनांचे उइग़ूर लोगों ने फ़रवरी 20 February 1931 CE को चैंग और उसके 33 फौजियों को शादी से एक दिन पहले एक समारोह में दावत दी और तक़रीब के दौरान सबको क़त्ल कर दिया और उस लड़की को भी। इसके अलावा लगभग 120 हान शरणार्थियों को जो गान्सू से आए हुए थे उन्हें भी क़त्ल कर दिया। यह लड़ाई सिर्फ़ उइग़ूर तक ही सीमित न रही बल्कि बहुत जल्द दूसरे मुसलमान जैसे कज़ाख़, किर्गीज़ और हुई लोग भी उइग़ूर लोगों की हिमायत में आगए, हालाँकि यह लोग भी आपस में कभी कभी लड़ते रहते थे। कुमूल ख़ानियत के वज़ीर युलबर्स ख़ान ने ख़ोजा

नयाज़ और मा ज़ोंगयिंग से गुहार लगाई कि वो जिन शूरेन के ख़िलाफ़ उनकी मदद करें।

किर्गीज़ विद्रोह

कुमूल विद्रोह से हिम्मत पाकर किर्गीज़ लोगों ने भी विद्रोह Kirghiz rebellion कर दिया। यह विद्रोह March 1932 में तियानशान पहाड़ों के इलाक़े में हुआ जिसका नेतृत्व ईद मीराब Id Mirab नाम का एक मुस्लिम जनरल कर रहा था। लेकिन उस को हुई जनरल मा शाओवू Ma Shaowu ने कुचल दिया जिसको जिन शूरेन और रूस की पुश्तपनाही हासिल थी।[477]

जिन शूरेन की तैयारी

जिन शूरेन ने सितंबर 1931 में सोवियत यूनियन से 40,000 मैक्सिकन चांदी के डॉलर Mexican silver dollars में दो बाईप्लेन biplanes ख़रीदे। वो मशीनगनों और बमों से लैस थे और उन्हें रूसी पायलट चलाते थे। उसने अक्तूबर 1931 में सोवियत यूनियन के साथ एक ख़ुफ़िया मुआहिदे पर दस्तख़त भी किए जिसके नतीजे में कुमूल विद्रोह को फ़ौरी तौर पर दबा दिया गया और 30 नवंबर 1931 को सूबाई फौजियों के ज़रिये कुमूल की नाका बंदी कर दी गई। जिन शूरेन को हथियार ख़रीदने के लिए सोवियत हुकूमत से सोने के बड़े ज़ख़ीरे भी मिले। इस के बदले जिन शूरेन ने सोवियत फ़ौज को यह अनुमति दी कि रूसी फ़ौज आठ सूबाई कस्बों में सोवियत तिजारती एजैंसीयां खोल सकती है यह क़स्बे थे गुलजा, चुगुचक, अल्ताई, उरुमची, कारा शहर, कूचा, अक्सू, काशग़र, यरकंद और खोतान Ghulja, Chuguchak, Altai, Urumqi, Karashahr, Kucha, Aksu, Kashgar, Yarkand, Khotan.

मा ज़ोंगयिंग की आमद



मा ज़ोंगयिंग

ऊपर ज़िक्र आचुका है कि कुमूल ख़ानियत के वज़ीर युलबर्स ख़ान ने ख़ोजा नयाज़ और मा ज़ोंगयिंग से इल्तिजा की थी कि वो जिन शूरेन के ख़िलाफ़ उनकी मदद करें। क्योमिनटांग Kuomintang को भी जब इस बारे में पता चला तो उसने भी जिन शूरेन के ख़िलाफ़ मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying को उतारने का फ़ैसला किया। यह भी कहा जाता है कि क्योमिनटांग जिन शूरेन से इस लिए नाराज़ हो गया था क्यों कि जिन शूरेन ने उस की अनुमति के बग़ैर रूस से मदद हासिल की थी और मुआहिदा किया था। चुनांचे नानजिंग में क्योमिनटांग

हुकूमत ने हुई मुसलमानों पर आधारित एक नया डिवीज़न बनाया जिसको 36 वां डिवीज़न का नाम दिया गया। यह दर असल क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज NRA का एक डिवीज़न था।[478] कहा जाता है कि इस मौक़े पर चियांग काई शेक और मा ज़ोंगयिंग के बीच एक ख़ुफ़िया मुआहिदा हुआ था कि अगर वो शिंजियांग में क्योमिनटांग के लिए काम करेगा और शिंजियांग को क्योमिनटांग के लिए फ़तह करेगा तो मा ज़ोंगयिंग को शिंजियांग का गवर्नर बना दिया जाएगा।[479] यह भी कहा जाता है कि मा बुफ़ांग ने दूसरे दो मा, मा होंगकुई और मा होंगबिन के साथ मिलकर मा ज़ोंगयिंग की मदद की, कि वो शिंजियांग में क्योमिनटांग के लिए काम करे और एक फ़ौजी अड्डा बनाए, यह भी कहा जाता है कि तीनों मा ने मा ज़ोंगयिंग की मदद इस लिए की थी कि वो मा ज़ोंगयिंग को अपने से दूर भेजना चाहते थे ताकि मा ज़ोंगयिंग उनसे हुकूमत में अपना हिस्सा न मांग ले, एक दफ़ा मा बुफ़ांग और मा ज़ोंगयिंग में एक छोटी सी जंग भी हुई थी जिसमें मा बुफ़ांग ने मा ज़ोंगयिंग को हरा दिया था।

मा ज़ोंगयिंग और जिन शूरेन की पहली जंग

चुनांचे मा ज़ोंगयिंग ने हैक्शी कॉरिडोर hexi corridor के ज़रिये कुमूल पहुंच कर उस का घिराओ कर लिया। हालाँकि इस से पहले उसे कई जंगों में कामयाबी मिल चुकी थी। चुनांचे October 1931 में उस की लड़ाई जिन शूरेन की फ़ौज से हुई लेकिन मा ज़ोंगयिंग जिन शूरेन को हरा कर कुमूल शहर पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहा। सितंबर के आख़िर में या अक्तूबर 1931 के शुरू में अपनी फ़ौज में जिन शूरेन ने 250 सफ़ैद फ़ाम रूसियों White Russians को भी

इली Ili इलाक़े से भर्ती किया था जिन का नेतृत्व जर्नेल पप्पेनगुट Pappengut कर रहा था। उधर ज़ांग पी युआन की फ़ौज इली से कुमूल के पुराने शहर के फ़ौजी क़िले की तरफ़ बढ़ी। मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज पश्चिम में ची जियाओ जिंग ज़ेन Qijiaojingzhen की तरफ़ पीछे हटी जबकि सफ़ैद फ़ाम रूसियों की फ़ौज मा ज़ोंगयिंग की तरफ़ बढ़ी। लेकिन वहां उनके दरम्यान कोई शदीद लड़ाई नहीं हुई। ताहम, ची जियाओ जिंग ज़ेन Qijiaojingzhen से तक़रीबन 150 किलोमीटर पूरब में लियाओ-टुन Liao-tun गांव में होने वाली शुरुआती झड़पों में से एक में, सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज ने मा ज़ोंगयिंग को शदीद ज़ख़मी कर दिया। इस लड़ाई में मा ज़ोंगयिंग ज़ख़मी होने के बाद इलाज के लिए अपनी फ़ौज के साथ गान्सू वापस हो गया। जब कि एक सफ़ैद फ़ाम रूसी मारा गया और 2 ज़ख़मी हुए।

गान्सू में उस का इलाज एक मिशनरी डाक्टर मिल्ड्रेड केबल Mildred Cable और दो नर्सों सिस्टर फ्रांसिस्का और सिस्टर ईवा फ्रेंच Sisters Francesca and Eva French ने किया। इस दौरान शिंजियांग के मुसलमान जिन शूरेन का मुक़ाबला करने के लिए अकेले रह गए। बाद में शेंग शिकाई और रूसी लोगों ने मा पर इल्ज़ाम लगाया कि उसने उइग़ूर और हान लोगों को अपनी फ़ौज में ज़बरदस्ती भर्ती किया था लेकिन सारे ऊंचे ओहदे हुई लोगों को दिए। शेंग का यह भी इल्ज़ाम था कि मा जापानियों से साज़-बाज़ रखता था और उसने कुछ जापानी जनरलों को पकड़ लिया था जो उस की फ़ौज की कमांडिंग कर रहे थे

लेकिन मा ने हमेशा उन इल्ज़ामात की तरदीद की और जापानियों को ज़ालिम कहा और ख़ुद को क्योमिनटांग का अहलकार बताया।

मा ज़ोंगयिंग और जिन शूरेन की दूसरी जंग

गान्सू वापस लौट कर मा ज़ोंगयिंग ने अपने क़रीबी अफ़सर मा शीमिंग Ma Shih-ming को हुक्म दिया कि तुरफ़ान इलाक़े में विद्रोह बरपा करे, चुनांचे मा शी मिंग ने तुरफ़ान में विद्रोह कर के उस पर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। फ़रवरी 1933 में माशी मिंग दोबारा उरुमची शहर पहुंचा और शहर का घिराओ कर लिया। इस जंग को उरुमची की पहली जंग First Battle of Urumchi भी कहा जाता है। हालाँकि बज़ाहिर चियांग काई शेक ने जिन शूरेन को शिंजियांग का गवर्नर स्वीकार कर लिया था लेकिन वो अंदरखाने मा ज़ोंगयिंग को उस से लड़ा भी रहा था। इस जंग में एक तरफ़ जिन शूरेन और पप्पेनगुट Col. Pappengut की फ़ौज थी जिसमें बाद में शेंग शिकाई और रूस की पूर्वोत्तर मुक्ति सेना North East Salvation Army भी शामिल हो गई और दूसरी तरफ़ मा ज़ोंगयिंग, मा शी मिंग और क्योमिनटांग हान जनरल ज़ांग पी युआन Zhang Peiyuan की फ़ौजें थीं। इस बार माशी मिंग की फ़ौज ज़्यादा ताक़तवर थी और जिन की फ़ौज भी लड़ते लड़ते थक चुकी थी और उनके पास राशन भी कम था। इस बार जिन शूरेन ने सफ़ैद फ़ाम रूसी फौजियों की तादाद 250 से बढ़ा कर 1500 कर दी। बहुत से रूसी जो भर्ती नहीं होना चाह रहे थे उनको यह धमकी दी गई कि अगर वो भर्ती नहीं होंगे तो उनको या तो रूस वापस भेज दिया जाएगा या उनकी औरतों को बंधक बना लिया जाएगा।[480] चुनांचे 21 February 1933 को डुंगन (हुई) फ़ौज उरुमची शहर के बाहर पहुंच गई। लेकिन शहर की रक्षा के लिए सिर्फ 700 लोग मौजूद थे। चुनांचे शहर के दरवाज़े बंद

कर दिए गए लेकिन खाने पीने की चीज़ों की कमी होने लगी और हान और हुई लोगों के बीच तनाव बहुत बढ़ गया। क़रीब ही था कि उरुमची पर डुंगन का क़ब्ज़ा हो जाता लेकिन इसी दौरान 300 सफ़ैद फ़ाम रूसी उनकी मदद को पहुंच गए जिसने डुंगन फ़ौज को लगभग एक किलोमीटर पीछे ढकेल दिया। इसी के साथ ही शेंग शिकाई तुरपान से अपनी शिंजियांग सरहदी फ़ौज Xinjiang's Frontier Army लेकर पहुंच गया जिसने डुंगन फ़ौज को दिहात की तरफ़ ढकेल दिया। रूस ने भी 2000 फ़ौज भेज दी जिसको उत्तर-पूर्व राष्ट्रीय मुक्ति सेना North-East National Salvation Army कहा जाता था। यह वो फ़ौज थी जिसको जापान के ख़िलाफ़ उतारा गया था लेकिन जापान ने उस को रूसी की सीमा में वापस ढकेल दिया था। इस लड़ाई में तक़रीबन 6000 मुस्लिम फ़ौजी मारे गए।

जिन शूरेन का निष्कासन

इस बार जिन शूरेन की फ़ौज शिकस्त खाने से तो बच गई लेकिन जिन शूरेन को लोग नापसंद करने लगे और उस के मुक़ाबले शेंग शिकाई को पसंद करने लगे। इस लिए जिन की फ़ौज में उसके ख़िलाफ़ ग़ुस्सा फैल गया और उन्होंने जिन को बेदख़ल करने की ठान ली। इस के बाद पप्पेनगुट उत्तर पूर्वी क़ौमी फ़लाही फ़ौज के लीडरों से मिला और उनसे मदद की यक़ीन दहानी के बाद 12 April 1933 को सफ़ैद फ़ाम रूसी फौजियों ने जिन शूरेन के ख़िलाफ़ तख़्ता पलट कार्रवाई कर के जिन को इस्तीफ़ा देने पर मजबूर कर दिया, उनके साथ कुछ सूबाई अमाइदीन (उच्च वर्गीय) भी थे जैसे चेन ज़ोंग Chen Zhong, टाओ मिंगयू Tao Mingyue और ली शियाओ टियान Li Xiaotian.[481] कहा जाता है कि सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज जिन शूरेन से इस लिए नाराज़ थी कि बावजूद इस

के कि सफ़ैद फ़ाम रूसी फौजियों ने जिन शूरेन की मदद में क़ाबिल-ए-तारीफ़ भूमिका निभाई थी लेकिन जिन उनको सबसे ख़स्ता-हाल घोड़े और हथियार देता था और तनख़्वाहें भी वक़्त पर नहीं देता था। जिन इस्तीफ़ा देकर चुगुचक Chuguchak होता हुआ रूस की तरफ़ फ़रार हो गया और बाद में चीन वापस लौट गया। ताहम उस के भाई जिन शूसुन को लोगों ने पकड़ कर मार डाला।[482] जब शेंग शिकाई को इसकी ख़बर हुई जो उस वक़्त उरुबा Uruba में था तो वो फोरन उरुमची पहुंचा और उसने 14 April 1933 को ऐलान कर दिया कि शेंग शिकाई अब शिंजियांग का मिलिट्री गवर्नर होगा और लियू वैनलौंग Liu Wenlong जो अभी तक जिन शूरेन का शिक्षा मंत्री था वो अब शिंजियांग का सूबाई चेयरमैन या सिविल गवर्नर होगा। इस तरह शेंग शिकाई शिंजियांग का मिलिट्री अफ़सर बन गया जिसको डूबान Duban कहा जाता था और सत्ता की बागडोर उसके हाथ में आगई। इस के बाद से वो शिंजियांग की सियासत में मर्कज़ी लीडर के तौर पर सक्रिय रहा यहां तक कि 29 August 1944 को उसने इस्तीफ़ा दे दिया। बाद में रूसी काउंसिल जनरल गारेगिन अप्रेसोव Garegin Apresov की सिफ़ारिश पर शेंग शिकाई ने जनरल पप्पेनगुट Pappengut को जनवरी 1934 में सज़ा-ए-मौत दे दी। इस दौरान शेंग ने बहुत से उइग़ूर जनरलों को लालच देकर मुस्लिम फ़ौज में फूट डलवा दी कि अगर तुम मा ज़ोंगयिंग के ख़िलाफ़ लड़ने में हमारी मदद करोगे तो हम तुम्हें अपनी फ़ौज में ऊंचे ओहदे देंगे। इन बेवफ़ा मुस्लिम अफ़सरों में ख़ोजा नयाज़ Khoja Niyaz भी था जो बाद में चल कर पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत का पहला शासक बना।

शेंग शिकाई



शेंग शिकाई

अब हम शेंग शिकाई के हालात बयान करेंगे जिससे पूरे हालात को समझने में आसानी होगी। शेंग शिकाई Sheng Shicai (3 December 1895-13 July 1970) मंचूरिया के काईयुआन Kaiyuan में पैदा हुआ, वो एक हान चीनी था। शेंग ने 14 साल की उम्र में मुकडेन के सूबाई जंगलात और कृषि स्कूल Provincial Forestry and Agricultural School in Mukden में दाख़िला लिया।[483] 17 साल की उम्र में, शेंग ने शंघाई के वूसोंग पब्लिक स्कूल Wusong Public School in Shanghai में दाख़िला लिया, जहां उसने राजनीति और अर्थशास्त्र की शिक्षा हासिल की। वहां, वह कुछ राष्ट्रवादी लोगों से जुड़ गया। 1915 में फ़ारिग़ होने के बाद, उनके मश्वरे से वो टोकीयो, जापान में शिक्षा हासिल करने चला गया। वहां, शेंग ने वासेदा Waseda यूनिवर्सिटी में दाख़िला लिया, जहां उसने एक साल तक राजनीतिक अर्थव्यवस्था Political Economy की पढ़ाई की। इस समय तक शेंग, राष्ट्रवादी विचारधारा में पक्का हो चुका था और The

ABC of Communism" (चीनी 共产主义ABC) और दूसरी कम्युनिस्ट किताबों से प्रभावित हो चुका था। 1919 में उसने लियाओनिंग छात्रों Liaoning students के नुमाइंदे के तौर पर 4 मई की तहरीक May Fourth Movement में शिरकत की। इस दौर में वो एक इंतिहापसंद राष्ट्रवादी बन चुका था और जापान मुख़ालिफ़ नज़रियात इख़्तियार कर चुका था। इस के अलावा वो किताबी शिक्षा को फ़ुज़ूल समझने लगा था और फ़ौजी तरबियत में दिलचस्पी लेने लगा था। चुनांचे फ़ौजी तरबियत के लिए वो जापान के क्वानटुंग Kwantung के दक्षिणी सूबे में दाख़िल हो गया, इस के बाद उत्तर पूर्वी एकेडमी Northeastern Military Academy में। इसके बाद वापस आकर उसने गू सोंगलिंग Guo Songling के मातहत फ़ौज में भर्ती हो गया। गू सोंगलिंग, मंचूरियन जंगी सरदार ज़ांग ज़ोलिन Zhang Zuolin का डिप्टी था। लेकिन वो जल्द ही तरक़्क़ी कर के लेफ्टिनेंट कर्नल lieutenant colonel के ओहदे तक पहुंच गया और एक कंपनी का कमांडर बना दिया गया। उस की क़ाबिल-ए-तारीफ़ ख़िदमात और फ़ौजी क़ाबलियत की वजह से गू सोंगलिंग ने उस का नाम उच्च फ़ौजी शिक्षा हासिल करने के लिए शाही जापानी सेना एकेडमी Imperial Japanese Army Academy में दाख़िले के लिए पेश किया। 3 साल में उसने यह शिक्षा भी पूरी कर ली ताहम बीच में वो मंचूरिया की सियासत में भी सक्रिय रहा। इस दौरान वो कुछ दिन के लिए मंचूरिया वापस आया और ज़ांग ज़ोलिन के ख़िलाफ़ एक फ़ौजी विद्रोह में भी शरीक हुआ। इस के बाद वो फिर जापान वापस चला गया लेकिन इस बार वो ज़ांग के दुश्मनों फ़ंग यूशियांग Feng Yuxiang और चियांग

काई शेक Chiang Kai-Shek की मदद से जापान गया जिन्हों ने उसे माली मदद दी थी और वो उन्हें अपना मुहसिन मानता था। 1927 में वो जापान से लौटा और उत्तरी अभियान Northern Expedition की जंग में शरीक हुआ। इस वक़्त उसे कर्नल के ओहदे पर नियुक्त किया गया इस दौरान वो ही यिंगचिन He Yingqin के मातहत चियांग काई शेक के क्षेत्रीय मुख्यालय का स्टाफ अधिकारी Staff Officer of the Chiang's field headquarters था। उत्तरी अभियान के दौरान, शेंग ने अपने आपको एक क़ाबिल अफ़सर के तौर पर साबित किया, और मुख़्तलिफ़ फ़ौजी ख़िदमात बख़ूबी अंजाम दीं। शेंग गोमिनजुन Guominjun का भी मेंबर बना[484], यह जमात चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत की हिमायत करती थी ताहम वो क्योमिनटांग का मेंबर नहीं बना क्यों कि वो कम्युनिस्ट नज़रियात का हामी था।[485]

क्योमिनटांग से अलहदगी

उत्तरी अभियान के ख़ातमे के बाद उस को नानजिंग के जंगी ऑप्रेशन के सैक्शन के जनरल स्टाफ़ का अध्यक्ष Chief of the war operations section of the general staff बना दिया गया। लेकिन किसी बात पर अपने आला अफ़सरान से मत भेद पर उसने इस्तीफ़ा दे दिया। इस वजह से उसे अपने करीयर career में मुश्किलात का सामना करना पड़ा जिससे मायूस हो कर उसने वो रास्ता छोड़कर ख़ुद को चीन की सीमा की रक्षा को मज़बूत करने पर लगा दिया। इसी के कुछ दिनों बाद शिंजियांग के गवर्नर जिन शूरेन ने एक वफ़द नानजिंग भेजा ताकि क्योमिनटांग से शिंजियांग के लिए कुछ माली इमदाद हासिल कर सके। उस

वफ़द के प्रमुख गुआंग लू Guang Lu से जिन शूरेन ने यह भी कहा था कि वो वहां किसी क़ाबिल अफ़सर को तलाश करे जो शिंजियांग की सूबाई फ़ौज को सँभाल सके। काफ़ी तलाश के बाद उन्होंने शेंग शिकाई को इस के लिए चुना और उस को जिन शूरेन की फ़ौज में एक ओहदा दे दिया गया, चुनांचे वो 1929-30 के जाड़ों में रूस होता हुआ शिंजियांग पहुंचा।[486] कुछ लोगों का अंदाज़ा है कि शायद चियांग ने ही उसे शिंजियांग भेजा होगा। लेकिन जिन शूरेन ने शेंग का बहुत गर्म-जोशी से स्वागत नहीं किया, शायद वो उसे अपने लिए संभावित ख़तरे के तौर पर देख रहा था। इस के बावजूद जिन ने उसे फ़रंटीयर आर्मी का चीफ़ ऑफ़ स्टाफ़ Chief of Staff of the Frontier Army नियुक्त किया और उस के बाद सूबाई मिलिट्री कॉलेज में चीफ़ इंस्ट्रक्टर Chief Instructor at the Provincial Military College नियुक्त किया। उधर चियांग काई शेक ने मा ज़ोंगयिंग को जिन शूरेन से लड़ने शिंजियांग भेजा। तो एक तरह से चियांग काई शेक ने ही दोनों को यानी शेंग और मा ज़ोंगयिंग को शिंजियांग भेजा था, एक दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ाने के लिए। 1932 में जिन शूरेन और मा ज़ोंगयिंग के बीच लड़ाई तेज़ हो गई और मार्च 1933 में उरुमची की जंग के दौरान शेंग और सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज की मदद से जिन शूरेन ने मा ज़ोंगयिंग को शिकस्त दी लेकिन इस के बाद जिन का दबदबा बहुत घट गया और सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज ने उस के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया और उस को ओहदा त्यागने पर मजबूर कर दिया, इस का ज़िक्र ऊपर आचुका है। चुनांचे जिन शूरेन के फ़रार के बाद शेंग उस का जानशीन बन गया और 14 April 1933 को शेंग बग़ैर क्योमिनटांग की अनुमति

के डूबान Duban (मिलिट्री गवर्नर) के ओहदे पर क़ाबिज़ हो गया।[487] और लियू वैनलौंग Liu Wenlong को चेयरमैन या सिविल गवर्नर बना दिया।[488]

हुआंग मूसोंग की नियुक्ति

शेंग ने ओहदा तो सँभाल लिया लेकिन न तो क्योमिनटांग ने उस के बारे में किसी राय का इज़हार किया कि आया उस को मिलिट्री गवर्नर के तौर पर क़बूल किया गया या नहीं। नाही कुछ दूसरे अफ़सरों ने उसे माना जैसे मा ज़ोंगयिंग, जो तुरपान का जनरल था और ज़ांग पीयुआन Zhang Peiyuan जो यिनिंग का जनरल था। लेकिन इस मौक़े से चियांग ने हुआंग मूसोंग Huang Musong को मई में शिंजियांग की मिलिट्री का डिप्टी चीफ़ Deputy Chief of General Staff बिना कर भेज दिया जिससे शेंग चिराग़-ए-पा हो गया और उसने हुआंग को रास्ते हटाने का मंसूबा बना लिया। चुनांचे कुछ दिन बाद उसने हुआंग पर इल्ज़ाम लगाया कि हुआंग, वांग जिंगवी Wang Jingwe का एजेंट है। याद रहे वांग, चियांग काई शेक का सब से बड़ा दुश्मन था। और हुआंग ने लियू वैनलौंग, ज़ांग पीयुआन और मा ज़ोंगयिंग के साथ मिलकर सूबाई हुकूमत (शेंग) का तख़्ता उल्टने की साज़िश की है। चुनांचे हुआंग को नज़रबंद कर दिया गया और उस के तीन साथी जनरलों को गिरफ़्तार कर के सज़ा-ए-मौत दे दी गई। फ़ौरन चियांग काई शेक ने माफ़ी मांगी और शेंग को मिलिट्री गवर्नर के तौर पर मंज़ूरी देने का वादा किया। हुआंग को 3 हफ़्ते नज़रबंद रहने के बाद रिहा कर दिया गया और लियू वैनलौंग को भी उस के ओहदे पर बहाल कर दिया गया।

लो वेंगान का सफ़र

इस के कुछ दिनों के बाद अगस्त 1933 में चियांग काई शेक ने अपने विदेश मंत्री Foreign Minister लो वेंगान Luo Wengan को ख़ैर सगाली के तौर पर शेंग के पास भेजा ताकि वो शेंग की तक़र्रुरी बराए शिंजियांग के बॉर्डर डीफ़ैंस कमिश्नर Commissioner of the Xinjiang Border Defense के उद्घाटन की तक़रीब की अध्यक्षता कर सके। लेकिन कहा जाता है कि इस सफ़र के दौरान लू ने ख़ुफ़िया तौर पर शेंग के दुश्मनों मा ज़ोंगयिंग से तुरपान में और ज़ांग पीयुआन ने यिनिंग Yining में राब्ता किया और दोनों को मिलकर शेंग पर हमला करने के लिए उकसाया। चुनांचे लू के लोटते ही दोनों पक्षों में जंग छिड़ गई। एक तरफ़ शेंग शिकाई था और दूसरी तरफ़ मा ज़ोंगयिंग और ज़ांग पीयुआन थे। लो वेंगान अगस्त 1933 में लौटा और सितंबर में शेंग ने लियू वैनलौंग Liu Wenlong पर इल्ज़ाम लगाया कि वो चियांग के हुक्म और लो वेंगान के कहने पर मा ज़ोंगयिंग और ज़ांग पीयुआन के साथ मिलकर शेंग का तख़्ता उल्टने या उस के क़त्ल की साज़िश कर रहा था चुनांचे उसे जबरन इस्तीफ़ा देने पर मजबूर कर दिया गया और उस को हटा कर उस की जगह ज़ू रुईची Zhu Ruichi को नियुक्त कर दिया गया।[489]

शिंजियांग पर रूस की चढ़ाई

Russian invasion on Xinjiang

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि, लू ने ख़ुफ़िया तौर पर शेंग के दुश्मनों मा ज़ोंगयिंग से तुरपान में और ज़ांग पीयुआन से यिनिंग Yining में राब्ता किया और दोनों को मिलकर शेंग पर हमला करने के लिए उकसाया। चुनांचे लू के लोटते ही दोनों पक्षों में जंग छिड़ गई। एक तरफ़ शेंग शिकाई था और दूसरी तरफ़ मा ज़ोंगयिंग और ज़ांग पीयुआन थे।

चुनांचे जब शेंग का टकराव उरुमची से बाहर मा ज़ोंगयिंग से हुआ तो शेंग ने रूस से मदद तलब की। ताहम पहले से जिन शूरेन ने भी एक मुतालबा किया हुआ था लेकिन शेंग ने मज़ीद बड़े पैमाने पर रूस से मुआहिदे किए। यही वो मौक़ा था जब रूस शिंजियांग में दाख़िल हुआ। शिंजियांग में रूस का दख़ल 1911 से 1949 तक रहा। 1931 CE में जिन शूरेन ने सोवियत रूस से दो बाईप्लेन biplanes ख़रीदे हर एक की क़ीमत 40,000 मेक्सिकन चांदी के डॉलर 40,000 Mexican silver dollars each थी। यह जहाज़ जदीद हथियारों से लैस थे जैसे मशीनगन और बम वग़ैरह। कहा जाता है कि जिन ने 1931 CE में रूस के साथ ख़ुफ़िया मुआहिदा किया जिसमें उस ने कुमूल विद्रोह को ख़त्म करने में रूस से मदद का वादा लिया। इसी के बाद 30 November 1931 CE को कुमूल की नाका बंदी की गई। रूस ने जिन शूरेन को बड़ी मात्रा में सोना भेजा ताकि वो उनसे हथियार ख़रीद सके। इस के बदले जिन शूरेन ने रूस को अनुमति दी कि

वो हर बड़े शहर में अपनी तिजारती एजैंसीयां खोले और तिजारत से मुनाफ़ा हासिल करे। रूस ने शेंग को भी बड़े पैमाने पर फ़ौजी मदद दी जिसकी मदद से शेंग ने कई मोर्चों पर मा ज़ोंगयिंग को शिकस्त दी। इस मदद के बदले शेंग ने रूस को शिंजियांग में बड़े पैमाने पर सियासी, आर्थिक और फ़ौजी इख़्तियारात दिए जिनका ज़िक्र ऊपर आचुका है। जिसके नतीजे में रूस ने कई शहरों में अपनी एजैंसीयां खोलीं जैसे गुलजा, चुगुचक, अल्ताई, उरुमची, कारा शहर, कूचा, अक्सू, काशग़र, यरकंद और खोतान Ghulja, Chuguchak, Altai, Urumqi, Karashahr, Kucha, Aksu, Kashgar, Yarkand, Khotan.[490]

चुनांचे दिसंबर 1933 में रूस ने जनरल गारेगिन अप्रेसोव के नेतृत्व में एक मदद भेजी, जिसको बाद में उरुमची में रूस का जनरल काउंसिल Soviet General Consul in Urumqi बनाया गया।

चुनांचे जनवरी 1934 की इस लड़ाई को रूस की चढ़ाई Russian invasion on Xinjiang के नाम से भी जाना जाता है और उरुमची की दूसरी जंग Second Battle of Urumqi के नाम से भी जाना जाता है और टूटुंग की जंग Battle of Tutung के नाम से भी जाना जाता है। इस लड़ाई में मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज ने शेंग शिकाई को लगभग हरा ही दिया था और वो उरुमची शहर में दाख़िल होने ही वाले थे कि उसने टेलीग्राम के ज़रिये रूस से मदद तलब की।[491] रूस ने शेंग की मदद करते हुए मा की फ़ौज पर टूटुंग Tutung नदी के किनारे हमला कर दिया। रूसी फ़ौज का नेतृत्व जनरल वोलगिन Gen. Volgin कर रहा था। चुनांचे तक़रीबन 7,000 सोवियत GPU (Joint State Political Directorate) फौजियों

के दो ब्रिगेड, जिनके पास टैंक, जंगी जहाज़ और मस्टर्ड गैस थी, उसने शेंग शिकाई की मदद के लिए सीमा पार की। इन ब्रिगेडों के नाम "अलताइसकी"Altayiiskii और "तरबख़्ताइसकी "Tarbakhataiskii" रखे गए थे और मुशतर्का सोवियत सफ़ैद रूसी फ़ौज को "अल्टाई रज़ाकार" The Altai Volunteers कहा जाता था।[492] सोवियत फ़ौजी यूनिफ़ॉर्म पहने होते थे लेकिन उस पर कोई निशान नहीं होता था और वो भेस बदल कर सफ़ैद फ़ाम रूसियों में मुंतशिर हो जाते थे।[493] रूसी जहाज़ों ने मा की फ़ौज पर बमों और सरसों की गैस mustard gas की बमबारी की। एक दफ़ा तो मा की फ़ौज ने अपना भेस बदलने के लिए भेड़ों की खालें पहन कर जान बचाई लेकिन वो रूसी फ़ौज के मशीन गन अड्डों तक पहुंचने में कामयाब हो गए और रूसी फ़ौज पर बड़ा हमला कर दिया, इस जंग में दोनों पक्षों को बहुत भारी नुक़सान हुआ। इस जंग में मा हूशान जो 36 वें डिवीज़न का डिप्टी डिवीज़नल कमांडर Deputy Divisional Commander था, ने, कई दफ़ा रूस को शिकस्त दी जिस की वजह से वह मशहूर हो गया। कहा जाता है कि जब यह ख़बर उरुमची पहुंची कि मा ज़ोंगयिंग ने रूस को हरा दिया है तो उरुमची के लोगों ने इस का बेपनाह जश्न मनाया।[494] मा शी मिंग की फ़ौज ने अपने से बरतर रूस की सुर्ख़ फ़ौज Red Army का जिसके पास मशीन गन, टैंक और जंगी जहाज़ जैसे से आला हथियार थे, उस का 30 दिन तक डट कर मुक़ाबला किया। बिल-आख़िर मा ज़ोंगयिंग को उरुमची से पसपा होना पड़ा। पूर्वी तुर्किस्तान का सदर ख़ोजा नयाज़ वहां से फ़रार हो कर इरकेशतम Irkeshtam चला गया और वहां उसने शेंग शिकाई से

गठबंधन कर लिया। इसी साल ज़ू रोई ची का इंतिक़ाल हो गया और उस की जगह ली रोंग Li Rong को सिविल गवर्नर नियुक्त किया गया।

हुआंग शाओ होंग का मंसूबा

उरुमची की दूसरी जंग में मा ज़ोंगयिंग की हार के बाद 1934 के शुरू में चियांग काई शेक ने हुआंग शाओ होंग के नेतृत्व में शिंजियांग में एक बड़ी फ़ौजी कार्रवाई का मंसूबा बनाया ताकि उस पर चियांग का कंट्रोल दोबारा क़ायम हो सके। लेकिन इस का यह बहाना बनाया गया कि शिंजियांग और उस के आसपास के सूबों में तरक़्क़ीयाती कामों में तेज़ी लानी है इस के लिए यह कार्रवाई की जा रही है। इस मक़सद के लिए शिंजियांग में तामीराती मंसूबा बंदी का दफ़्तर क़ायम किया गया जिसका इंचार्ज हुआंग को बनाया गया। मालीयाती वज़ीर ऐच ऐच कुंग H. H. Kung के मश्वरे पर हुआंग ने ग़ैरमुल्की बकतरबंद गाड़ियां खरीदीं। अप्रैल तक सारी तैयारियां मुकम्मल कर ली गईं लेकिन मई में इस मंसूबे को तर्क करना पड़ा क्यों कि शेंग पहले ही मा ज़ोंगयिंग के ख़िलाफ़ रूस को शिंजियांग में बुला चुका था।[495] जब चियांग ने रूस के दख़ल के बारे में सुना तो अपना इरादा तर्क कर दिया कि रूस के साथ सीधा direct टकराव कहीं किसी बड़ी विश्व दुर्घटना का कारण न बन जाए।

मा ज़ोंगयिंग की पसपाई

शेंग की बढ़ती हुई ताक़त देखकर मा ज़ोंगयिंग जून में काशग़र से दक्षिण पूर्वी की तरफ़ खोतान और उस के बाद यरकंद की तरफ़ पीछे हट गया। यहां तक

कि 1937 में वो इरकेशतम के रास्ते रूस में दाख़िल हो कर नापैद हो गया। शेंग ने रूस से मुतालबा किया कि वो मा ज़ोंगयिंग को उस के हवाले कर दे लेकिन रूस ने इनकार कर दिया। कहा जाता है कि रूस, मा ज़ोंगयिंग को भी ख़त्म, नहीं करना चाहता था ताकि अगर शेंग उस का उल्लंघन करता है तो वो मा ज़ोंगयिंग को उस के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर सके। ज़ांग पीयुआन जिसके मातहत 3000 फ़ौज थी उसने रूस के हाथ गिरफ़्तार होने के डर से मुज़र्ट दर्रे Muzart Pass के पास ख़ुदकुशी करली।

लेकिन दक्षिणी शिंजियांग में मुस्लिम फ़ौज ने शेंग शिकाई के सारे अड्डों को हमला कर के तबाह कर दिया सिर्फ मा शाओवू अपने अड्डे को बचा पाया जिस का अड्डा काशग़र में था। जुलाई में जब हुई फ़ौज खोतान से वापस हुई तो मा हूशान उस का कमांडर था। मा हूशान ने अपनी ताक़त को मजबूत कर के तरीम बेसिन में अपना छोटा सा शासन satrapy स्थापित कर लिया, लेकिन जनता की अक्सरियत (बहुसंख्या) तुर्क थी जो उनको पसंद नहीं करती थी। मंगोलिया की तारीख़ के माहिर वाल्टर हीसिग Walther Heissig ने उस को टुंगनिस्तान Tuganistan का नाम दिया है। टुंगनिस्तान या डुंगनिस्तान की सीमा एक तरफ़ शिंजियांग से मिलती थी और दूसरी तरफ़ तिब्बत से। उधर डुंगन फ़ौज की बातचीत रूस से भी चल रही थी, रूस चाहता था कि डुंगन भी उस की आज्ञाकारिता स्वीकार कर लें लेकिन डुंगन किसी भी तरह दबने को तैयार नहीं थे। दूसरी तरफ़ रूस भी डुंगन को बिलकुल ख़त्म नहीं करना चाहता था ताकि शेंग के ऊपर दबाव बना रहे। इस लिए वो वक़्त पड़ने पर डुंगन फौजियों

को शेंग के ख़िलाफ़ पनाह भी देता, माली इमदाद भी करता, और 36 वें डिवीज़न के साथ उस के तिजारती संबंध भी थे।[496] एक तरह से यह हुकूमत रूस के रहम-ओ-करम पर चल रही थी जिसको स्तरापी satrapy कहा जाता है।



मा हूशान

शेंग की सुधार योजनाएं

मा ज़ोंगयिंग के नापैद होने के बाद शेंग शिकाई और रूस का लगभग पूरे शिंजियांग पर क़ब्ज़ा हो गया और उन्हों ने शिंजियांग में नए सिरे से सुधार करने की योजनाएं बनानी शुरू कर दीं। चुनांचे अगस्त 1934 में शेंग शिकाई ने आठ निकाती सुधार योजना का ऐलान किया:

1- जातियों के बीच समानता 2- मज़हबी आज़ादी 3- देहात का विकास 4- वित्तीय सुधार 5- प्रशासनिक सुधार 6- शिक्षा को बढ़ावा देना 7-मुक़ामी हुकूमतों को बढ़ावा देना 8- न्यायिक प्रणाली में सुधार।

हालाँकि शेंग ने उनमें से बहुत से सुधार किए भी लेकिन उसने सुधार की आड़ में अपनी ख़ानदानी इजारादारी क़ायम कर ली और मज़बूत जासूसी निज़ाम क़ायम कर लिया ताकि अपने विरोधियों की निगरानी कर सके। शेंग ने लोगों को यक़ीन दहानी कराई कि रूस से क़रीबी संबंध रखना बहुत लाभदायक है क्यों कि रूस एक शांतिपूर्वक देश है जो हमेशा कमज़ोर लोगों की मदद करता है और शिंजियांग बग़ैर रूसी मदद के अपनी तामीर-ए-नौ (पुनर्निर्माण) नहीं कर सकता और हम जापान के ख़तरे से अकेले नहीं लड़ सकते।[497] इसका नतीजा यह निकला कि रूस का हर शोबे में अमल दख़ल बहुत बढ़ गया, रूसी इंजीनियर, मशीनें, फैक्टरियां, शिंजियांग में बढ़ने लगे, रूसी स्कूल खोले गए और उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को रूस भेजा जाने लगा, स्कूलों में रूसी ज़बान पढ़ाई जाने लगी। लेकिन इसके साथ ही रूसी नास्तिक विचारों को भी बड़ावा दिया जाने लगा और मज़हबी शख़्सियात religious personalities को हिरासाँ किया जाने लगा। मस्जिदों को स्कूल और क्लबों में बदला जाने लगा। इसके नतीजे में मुस्लिम जनता में शेंग की लोकप्रियता कम होने लगी और मुसलमानों में शेंग हुकूमत के ख़िलाफ़ बाग़ियाना रुजहानात पनपने लगे। ऊपर बयान किया

जा चुका है कि शेंग ने बहुत से मुस्लिम लीडरों को ऊंचे ओहदों पर नियुक्त किया था जैसे ख़ोजा नयाज़, युलबर्स ख़ान, महमूद मुहीती वग़ैरह।



1933-1934 के दौरान शिंजियांग प्रांतीय सरकार का ध्वज।



सोवियत संघ के झंडे पर आधारित शिंजियांग प्रांतीय सरकार का झंडा 1934 से 1944 के दौरान।

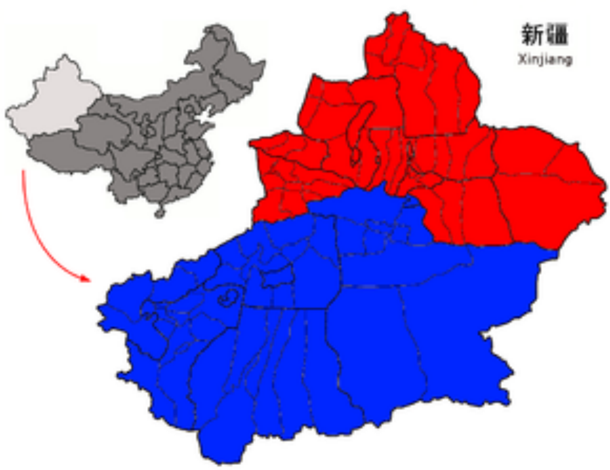
महमूद मुहीती



महमूद मुहीती

जुलाई 1934 में मा ज़ोंगयिंग के नापैद होने के बाद 400 चीनी सिपाहीयों ने जिनका नेतृत्व कुंग चैंग हान Kung Cheng-han कर रहा था ने 20 जुलाई को काशग़र पर क़ब्ज़ा कर लिया, उस के साथ 2000 ताक़तवर उइग़ूर फ़ौज थी जिसका नेतृत्व महमूद मुहीती Mahmut Muhiti कर रहा था जो एक मालदार उइग़ूर ताजिर और पुरजोश जंगजू था। वो शिंजियांग के सूबाई अधिकारियों के ख़िलाफ़ कुमूल विद्रोह के दौरान ख़ोजा नयाज़ की फ़ौज का कमांडर बना। शिंजियांग के नए नियुक्त करदा हुकमरान ख़ोजा नयाज़ और शेंग शिकाई के बीच शांति संधि के बाद, शेंग ने मुहीती को थोड़े समय के लिए 1934 में काशग़र के इलाक़े का फ़ौजी कमांडर नियुक्त किया था, लेकिन जल्द ही उसे डिमोट कर के तुर्क मुसलमानों पर आधारित 6 वें डिवीज़न का कमांडर नियुक्त कर दिया गया और काशग़र के इलाक़े का डिप्टी मिलिट्री कमांडर बना दिया। मुहीती ने

काशग़र में अपनी हुकूमत की मुख़ालिफ़त करते हुए सोवियत यूनियन के साथ शेंग के क़रीबी संबंध की मुख़ालिफ़त की। उसने 1937 में शेंग के ख़िलाफ़ इस्लामी विद्रोह को संगठित किया और बर्तानवी हिन्दोस्तान फ़रार हो गया। इस के बाद मुहीती जापान के ज़ेर-ए-क़ब्ज़ा चीन में सक्रिय रहा, जापान और मुसलमानों के दरम्यान सहयोग को बढ़ाने के लिए जापान के साथ बेकार सहयोग करता रहा, और बीजिंग में दम तोड़ गया।



ज़ुंगरिया (उत्तरी शिंजियांग) और तरीम बेसिन (दक्षिणी शिंजियांग, निचला)

मुहीती के तफ़सीली हालात

मुहीती 1887 में एक अमीर घराने में पैदा हुआ। उस की निजी ज़िंदगी के बारे में बहुत कम मालूमात है। वो एक तुरपान ताजिर ख़ानदान का तीसरा बेटा था। बर्तानवी कौंसिल थॉमसन गलोवर Thomson-Glover ने लिखा है कि मुहीती "एक सादा और मेहरबान आदमी और एक पुरजोश मुहम्मदी था।[498] वो सोवियत यूनियन के साथ कपास का कारोबार चलाता था और एक लंबे समय तक जदीदी Jadidist रहा।[499] उस का भाई मकसूत Makhsut (1882-1933) जदीदी तहरीक का एक कारकुन था।[500]

1932 के आख़िर में, मुहीती अपने बड़े भाई मकसूत के साथ शिंजियांग के सूबाई अधिकारी (जिन शूरेन) के ख़िलाफ़ तुरपान विद्रोह में शरीक हुआ।[501] तुरपान में विद्रोह का आरंभ करने वाला गिरोह एक ख़ुफ़िया संगठन था जिसका प्रमुख मुहीती का भाई मकसूत था, जो विद्रोह के दौरान 8 मार्च 1933 को पिचान काउंटी Pichan County में लुकचुन की जंग Battle for Lukchun में मारा गया और उस का सर सफ़ैद फ़ाम रूसियों ने काट दिया, जिनको 1932 में शिंजियांग के गवर्नर जिन शूरेन ने अपनी मदद के लिए बुलाया था। मुस्लिम फ़ौज ने शदीद लड़ाई की, और जनवरी 1933 तक शहर का ज़्यादातर हिस्सा मुसलमानों के क़ब्ज़े आ गया।

मुक़ामी उइग़ूर नेताओं को बरा-ए-नाम क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज के 36 वें डिवीज़न में रखा गया था, जो एक बाक़ायदा चीनी फ़ौज थी, जो मा ज़ोंगयिंग के नायब मा शीमिंग के नेतृत्व में थी। 1933 और 1934 के दरम्यान मुहीती ख़ोजा

नयाज़ की फ़ौज का चीफ़ मिलिट्री कमांडर रहा। जब शेंग शिकाई, जिन शूरेन के बाद शिंजियांग का मिलिट्री गवर्नर बना तो उस ने मुस्लिम फ़ौज के ख़िलाफ़ रूस को अपनी मदद के लिए बुलाया। चुनांचे रूस ने उत्तर-पूर्व राष्ट्रीय मुक्ति सेना North-East National Salvation Army को शेंग की मदद के लिए भेज दिया। जिससे शेंग की ताक़त बहुत बढ़ गई, और उसने मा ज़ोंगयिंग की मुस्लिम फ़ौज को शिकस्त दी। उइग़ूर लोगों का प्रमुख उस वक़्त ख़ोजा नयाज़ था जिसके मातहत मुहीती भी था। चुनांचे ख़ोजा नयाज़ जिसने अपनी फ़ौज का नाम शिंजियांग नागरिक क्रांतिकारी सेना Xinjiang Citizens Revolutionary Army रखा था वो उरुमची की तरफ़ बढ़ी ताकि शिंजियांग की सूबाई हुकूमत का तख़्ता उलट दे। लेकिन इसी दौरान मा ज़ोंगयिंग और उइग़ूर फ़ौज में अलहदगी हो गई क्यों कि उइग़ूर लोगों का मानना था कि मा ज़ोंगयिंग ने अपनी फ़ौज में सिर्फ डुंगन लोगों को ही ओहदे दिए हैं और उइग़ूर लोगों के साथ वो भेद भाव कर रहा है। इस लिए ख़ोजा नयाज़ ने शेंग शिकाई से गठबंधन कर लिया जिसकी मध्यस्थता रूसी जनरल गारेगिन अप्रेसोव Garegin Apresov ने की। शेंग ने शिंजियांग में मुस्लिम ताक़त को बांटने के लिए शिंजियांग को दो हिस्सों, उत्तर और दक्षिण में बांट दिया। उत्तर का हिस्सा जो ज़ुंगरिया कहलाता है जिसमें हामी और तुरपान शामिल हैं वो मा ज़ोंगयिंग के अधीन था जबकि दक्षिण का हिस्सा जो तरीम बेसिन कहलाता है वो शेंग ने ख़ोजा नयाज़ की ज़ेर हुकूमत दे दिया। बाद में खोतान में विद्रोह हुआ और तुर्किक इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईस्ट तुर्केस्तान Turkic Islamic Republic of East Turkestan (TIRET)

क़ायम हुई जिसका वज़ीर-ए-आज़म साबित दमोला बना और ख़ोजा नयाज़ को उस की ग़ैरमौजूदगी में सदर बनाया गया। ख़ोजा नयाज़ ने इस पेशकश को क़बूल कर लिया लेकिन अंदर ख़ाने वो शेंग से मिला हुआ था। वो ख़ुफ़िया तौर पर रूसी हुकूमत के लिए भी काम कर रहा था, रूस ने उस को अपनी वफ़ादारी का सबूत देने के लिए उस से मुतालबा किया कि वो किसी तरह TIRET के सोवियत मुख़ालिफ़ वज़ीर-ए-आज़म साबित दमोला को उस के पास ले आए चुनांचे ख़ोजा नयाज़ धोके से, साबित दमोला को रूस के पास ले गया, तो रूस ने दमोला को क़त्ल कर दिया।[502] इधर मा ज़ोंगयिंग के हमले में पूर्वी तुर्किस्तान (TIRET) भी ख़त्म हो गई।

ख़ोजा नयाज़ का क़त्ल

बाद में नवंबर 1937 में, दक्षिणी शिंजियांग में अप्रैल से अक्तूबर के दरम्यान काशग़र, अरतुश, यरकंद, अक्सू, कूचा और कारा शहर में सूबाई शिंजियांग हुकूमत के ख़िलाफ़ जनरल महमूद मुहीती के मातहत 6 वें उइग़ूर डिवीज़न ने विद्रोह कर दिया। जिसके बाद ख़ोजा नयाज़ और शेंग शिकाई का गठबंधन टूट गया। इस लिए ख़ोजा नयाज़ को शेंग ने उरुमची से गिरफ़्तार करवा लिया। ख़ोजा नयाज़ और उस के 120 पैरोकारों पर शेंग ने "टरोटस की के हामी" Trotskyist और "जापानी एजेंट" होने का इल्ज़ाम लगाया। इस लिए उस की सज़ा-ए-मौत को मॉस्को ने मंज़ूरी दे दी और मुबैयना तौर पर 1938 में उसे फांसी दे दी गई। लेकिन ख़ोजा नयाज़ ने अपने ख़िलाफ़ तमाम इल्ज़ामात को खारिज करते हुए कहा था कि यह सब शेंग शिकाई की तरफ़ से घड़े गए हैं। मौत की

सज़ा सुनाए जाने के बाद ख़ोजा नयाज़ ने अपने आख़िरी अलफ़ाज़ में कहा यह सज़ा-ए-मौत मेरे लिए नई नहीं है। दर-हक़ीक़त, मेरी मौत उसी दिन हो गई थी जब में उरुमची आया था (जब अगस्त 1934 में उर्मची में सोवियत कौंसिल जनरल ग्रेगन अपरेसो के साथ बातचीत के बाद, जब उसने शेंग से गठबंधन किया था)। याद रहे ग्रेगन ने ख़ोजा नयाज़ को उर्मची आने और शेंग शिकाई की पेशकश क़बूल करने पर आमादा किया था। चुनांचे उस को शिंजियांग हुकूमत का वाइस चेयरमैन बनादिया गया था और तरीम बेसिन उस को दे दिया गया था, लेकिन 6 वें उइग़ूर डिवीज़न का कमांडर महमूद मुहीती इस इक़दाम के ख़िलाफ़ था, क्यों कि उस का मानना था कि इस से उइग़ूर आज़ादी की तहरीक बुरी तरह प्रभावित होगी। ख़ोजा नयाज़ ने कहा में मर जाऊँगा, लेकिन मेरे लोग ज़िंदा रहेंगे। इन्क़लाब को दबाया नहीं जा सकता। उसने अपने एक मुलाक़ाती (ज़ियाउद्दीन) से कहा कि "मैं ने गारेगिन अप्रेसोव पर भरोसा किया, लेकिन अब देखो शेंग शिकाई ने मेरे साथ क्या सुलूक किया है। में उस का क़ैदी हूँ, जा कर अप्रेसोव को मेरी हालत के बारे में बताओ", लेकिन अप्रेसोव कहीं नहीं मिल सका क्यों कि शेंग ने उस को भी क़त्ल करवा दिया था। दूसरी ख़बर के मुताबिक़ उसे 1943 की गर्मियों तक जेल में ज़िंदा रखा गया, फिर उसे चियांग काई शेक के हुक्म पर फांसी देदी गई, इस लिए कि 1943 में शेंग शिकाई सोवियत फ़ौजी अहलकारों और मुशीरों को सूबे से निकाल कर शिंजियांग पर क्योमिनटांग का कंट्रोल बहाल करना चाहता था इस लिए उसने चियांग काई शेक को ख़ुश करने के लिए कई रूस नवाज़ लोगों को मरवाया

जिनमें ख़ोजा नयाज़ और गारेगिन अप्रेसोव भी शामिल थे। बताया जाता है कि उसे 14 माह जेल में रखने के बाद उसी के सेल में गला दबा कर क़त्ल कर दिया गया।

दूसरी रिवायत यह है कि पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत के बाद शेंग ने सोवियत हिमायत के साथ उत्तरी शिंजियांग पर अपनी हुक्मरानी मज़बूत कर ली। मुआहिदे के बदले ख़ोजा नयाज़ को तरीम बेसिन का इलाक़ा दे दिया गया जिसकी राजधानी अक्सू थी लेकिन बाद में शेंग शिकाई ने ख़ोजा नयाज़ को शिंजियांग हुकूमत के वाइस चेयरमैन का ओहदा भी दे दिया और उस को उरुमची बुला लिया। शायद इस की वजह यह होगी कि शेंग को ख़ोजा नयाज़ की तरफ़ से डर होगा कि कहीं वो अक्सू में रह कर शेंग के ख़िलाफ़ बग़ावत न कर दे। इस लिए उसे ओहदा देकर क़रीब बुला लिया ताकि वो शेंग की पकड़ में रहे। ख़ोजा नयाज़ को रूस ने 15,000 राइफ़लें और गोला बारूद दिया, जो सब डुंगन फ़ौज के ख़िलाफ़ इस्तेमाल हुआ। बाद में नवंबर 1937 में, दक्षिणी शिंजियांग में अप्रैल से अक्तूबर के दरम्यान काशग़र, अरतुश, यरकंद, अक्सू, कूचा और कारा शहर में सूबाई शिंजियांग हुकूमत के ख़िलाफ़ जनरल महमूद मुहीती के मातहत 6 वें उईग़ूर डिवीज़न ने विद्रोह कर दिया। जिसके बाद ख़ोजा नयाज़ और शेंग शिकाई का गठबंधन टूट गया। इस लिए ख़ोजा नयाज़ को शेंग ने उरुमची में गिरफ़्तार करवा लिया। ख़ोजा नयाज़ और उस के 120 पैरोकारों पर शेंग ने "ट्रॉट्स्की के हामी" "Trotskyites" और "जापानी एजेंट" होने का

इल्ज़ाम लगाया। इस लिए उस की सज़ा-ए-मौत को मॉस्को ने मंज़ूरी दे दी और मुबय्यना तौर पर 1938 में उसे फांसी दे दी गई।

मुहीती का शिक्षा आंदोलन

अब हम फिर पीछे लोटते हैं मा ज़ोंगयिंग की नापैदी के बाद जुलाई 1934 में काशग़र पर दोबारा शेंग की फ़ौज ने क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन अपनी आसानी के लिए शेंग ने मुहीती को काशग़र का मिलिट्री कमांडर नियुक्त कर दिया। ताहम वो मुहीती के मुस्लिम होने की वजह से उसपर भरोसा नहीं करता था इस लिए उसने उसे हटा कर एक क़रीबी मंचूरियन लियू पिन Liu Pin को काशग़र का कमांडर बना दिया और मुहीती को डिमोट कर के डिवीज़नल कमांडर Divisional Commander बना दिया। डिवीज़नल कमांडर को मन्दारिन में शिज़ांग कहा जाता है इसी लिए उसे महमूद शीज़ांग Mahmut Shizhang भी कहा जाता है। लेकिन चूँकि उस का संबंध रूस की जदीदी तहरीक से रहा था इस लिए स्कूल खोलना उस की पहली प्राथमिकता थी। उसने जदीदी तर्ज़ पर पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत (TIRET) के ज़माने की संस्था ‘शिक्षा को बढ़ावा देने वाली सोसाइटी’ Society for the Promotion of Education को दोबारा बहाल किया और उस के द्वारा ‘उइग़ूर एनलाइटनमेंट एसोसिएशन’ Uyghur Enlightenment Association नाम की संस्था बनाई। अबदुलकरीम ख़ान मख़दूम, TIRET का पूर्व शिक्षा मंत्री, ने मुहीती की काशग़र शिक्षा तहरीक में अहम भूमिका निभाई। उइग़ूर एनलाइटनमेंट एसोसिएशन Uyghur Enlightenment Association ने अप्रैल 1935 में अपना काम शुरू किया, और

काशग़र में स्कूलिंग की ज़िम्मेदारी ली, जिससे बहुत से प्राइमरी स्कूल खोले गए और लोगों को असानी से स्कूल उपलब्ध होने लगे। इस काम को फ़ंड देने के लिए, अंजुमन ने काशग़र के ज़कात और वक़्फ़ का कंट्रोल भी सँभाल लिया, और मुक़ामी मज़ारात की दौलत को स्कूली किताबें खरीदने और शिक्षकों की तनख़्वाहें देने के लिए इस्तेमाल किया। क़ादिर हाजी Qadir Haji, पुराने काशग़र शहर का पुलिस चीफ़, भी उन लोगों में शामिल था जिन्हों ने मुहीती की तालीमी तहरीक में हिस्सा लिया। उसने चंदा इकट्ठा किया और अपने आबाई गांव क़ाज़ीरिक़ Qaziriq में एक स्कूल की बुनियाद रखी। 'उइग़ूर एनलाइटनमेंट एसोसिएशन' ने 'न्यू लाईफ़' New Life नामी एक पर्चा भी जारी किया, जिसने अपने पढ़ने वालों के लिए उइग़ूर नाम की एहमीयत से मुताल्लिक़ (संबंध में) मज़ामीन का एक सिलसिला प्रकाशित किया। 'उइग़ूर एनलाइटनमेंट एसोसिएशन' की सरगर्मी ने लोगों में क़ौम परस्ती का जज़बा पैदा किया जिस से सोवियत अधिकारी चिंतित हो गए।

एक नई हुकूमत का मंसूबा

इसी दौरान पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत (TIRET) के ज़िंदा बच जानेवाले अहलकार काबुल, अफ़ग़ानिस्तान में जमा होना शुरू हुए, जहां उन्होंने अफ़ग़ान हुकूमत और कुछ विदेशी सिफ़ारत ख़ानों, खासतौर पर जापानी सिफ़ारत ख़ाने के ज़रिये जापान, की हिमायत हासिल करने के लिए गुटबंदी lobbying की। 1935 में खोतान के पूर्व अमीर, मुहम्मद अमीन ब़ग़रा ने जापानी राजदूत कितादा मासामोटो Kitada Masamoto से मुलाक़ात की। ब़ग़रा ने राजदूत को जापानी

सरपरस्ती में नई पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरीया के गठन के बारे में एक तफ़सीली मंसूबा पेश किया, जो आज़ादी के बदले जापान को विशेष आर्थिक और राजनीतिक लाभ देगी। उन्होंने मुहीती को प्रस्तावित हुकूमत के सदर के तौर पर पेश किया।

मुसलमानों की शेंग से नाराज़गी

अब हम फिर पीछे लोटते हैं कि शेंग ने मुहीती को हटा कर लियू पिन को काशग़र का कमांडर बना दिया। लेकिन लियू पिन को मुस्लिम रीति रिवाज के बारे में जानकारी नहीं थी इस लिए उसने जाते ही सबसे पहले यह हुक्म-जारी किया कि मस्जिदों में चीनी लोकतंत्र के संस्थापक सुन यातसेन Sun Yat-sen की तस्वीरें लटकाई जाएं। याद रहे उस वक़्त तक शेंग रूस का साथ छोड़कर चियांग काई शेक से गठबंधन कर चुका था जो सुन यातसेन का जानशीन था। मुसलमान शेंग के नए शैक्षणिक सुधारों से भी नाराज थे, क्योंकि उस से धार्मिक शिक्षा को धचका लगा था और वो कम्युनिस्ट प्रोपगंडे से पहले ही डरे हुए थे। चुनांचे मुसलमानों को यह लगने लगा कि शिंजियांग पर कम्युनिस्टों का क़ब्ज़ा हो गया है इस लिए कम्युनिज़्म को बड़ावा दिया जा रहा है और मज़हब को जड़ से मिटाया जा रहा है। इस लिए मुसलमानों के दिलों में शेंग की नफ़रत बढ़ने लगी

मुहीती की शेंग से अलहदगी



महमूद मुहीती पूर्वी तुर्किस्तान के प्रतिनिधि के रूप में जापान में बोल रहे हैं

1936 में अल्ताई Altay इलाक़े में जो उत्तरी शिंजियांग में है मुक़ामी मुसलमानों ने जिन का नेतृत्व यूनुस हाजी Younis Haji कर रहा था, ने एक संस्था बनाई जिसका नाम सोसाइटी ऑफ़ नेशनल डिफ़ैंस Society of National Defence रखा। इस संस्था में बहुत से प्रभावशाली उइग़ूर लोग शामिल थे। शेंग को इस की ख़बर हो गई कि उइग़ूर लोग उस के ख़िलाफ़ एक बड़े विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं लेकिन वो उस को अकेले शिकस्त देने की पोज़ीशन में नहीं था। उधर अमीन ब्रगरा जो अफ़ग़ानिस्तान में जिला वतनी की ज़िंदगी गुज़ार रहा था वो 1935 में जापान के राजदूत से मिला और उस से नया पूर्वी तुर्किस्तान बनाने की पेशकश की जो जापान के मातहत होगा और महमूद मुहीती को उस के प्रमुख

के तौर पर पेश किया। चुनांचे 1936 में मुहीती शेंग का सबसे बड़ा दुश्मन बन कर उभरा। उस के हामी 'नई अज़ाद उइग़ूर रियासत' बनाने की दावत चिलाने लगे। मुहीती ने काशग़ार के रूसी काउंसिल स्मिर्नोव Smirnov से राब्ता किया और रूस से हथियार उपलब्ध कराने की विनती की, लेकिन उस की माँग को रद्द कर दिया गया। इस के बाद उसने अप्रैल 1937 को शिंजियांग हुकूमत के ख़िलाफ़ एक विद्रोह बरपा किया लेकिन 6 वें उइग़ूर डिवीज़न की सिर्फ दो रेजिमेंट उस के साथ आईं जो काशग़ार के उत्तर और दक्षिण में अरतुश Artush और यंगीसार Yengihissar के मुक़ाम पर थीं लेकिन बाक़ी दो 33 वीं और 34 वीं रेजिमेंट जो काशग़ार के अंदर थीं उन्होंने उस का साथ नहीं दिया, वो शेंग की वफ़ादार रहीं।

काशग़ार में तनाव चरम पर था। मुहीती और उस के लोगों का सोवियत समर्थक तत्वों से टकराव बढ़ता गया, जिनमें क़ादिर हाजी Qadir Haji भी शामिल था। इसी दौरान ख़ोजा नयाज़ का साथी मंसूर आफ़ंदी Mansur Effendi 1935 में काशग़ार पहुंचा ताकि उइग़ूर अंजुमन की मालियात पर कंट्रोल हासिल कर सके। ताहम वो ऐसा करने में नाकाम रहा, लेकिन न्यू लाईफ़ की ऐडीटर शिप के लिए एक चीनी कम्युनिस्ट को नियुक्त कर दिया, इस तरह उसे हुकूमत मुख़ालिफ़ संस्था के तौर पर बे-असर कर दिया। काशग़ार का क़ाज़ी अबदुलग़फ़ूर दमोलाAbdulghafur Damolla, जो क़ादिर हाजी का क़रीबी समझा जाता था, मई 1936 में उस को क़त्ल कर दिया गया। सोवियत जनरल कौंसिल गारेगिन

अप्रेसोव ने काशग़र में मुहीती से मुलाक़ात की और उस पर जापानी हिमायत हासिल करने का इल्ज़ाम लगाया।[503]

रूस के कहने पर शेंग ने एक सलामती मिशन peacekeeping mission काशग़र भेजा ताकि समझौता हो सके लेकिन यह नाकाम रहा। रूस ने मा हूशान से मुज़ाकरात की कोशिश की जो मा ज़ोंगयिंग के बाद 36 वें डिवीज़न का कमांडर था। शेंग ने मुहीती को 1937 में अवामी नुमाइंदों की तीसरी कांग्रेस Third Congress of People's Representatives में बुलाया। ताहम किसी वजह से मुहीती अपने 17 साथियों के साथ 2 अप्रैल 1937 को बर्तानवी हिन्दोस्तान की तरफ़ फ़रार हो गया। इस दौरान वो लद्दाख Ladakh में दाख़िल हो कर काराकोरम दर्रा Karakoram Pass से गुज़रते हुए दरयाए कराकश Karakash River और अकसाई चिन Aksai Chin पहुंचा और फिर चांग ला Chang La से सड़क के रास्ते 27 अप्रैल को लेह Leh पहुंचा। लगभग चार हफ़्ते बाद वो श्रीनगर पहुंचा। वो जनवरी 1938 में हज के लिए मक्का रवाना हो गया।[504] रूस से शिकस्त खाने के बाद मा हूशान भी ब्रिटिश इंडिया फ़रार हो गया। ब्रिटिश इंडिया में मुहीती और मा हूशान की मौजूदगी को शिंजियांग की सियासत में बर्तानवी हस्तक्षेप के सबूत के तौर पर देखा गया, जिसकी वजह से चीनियों ने हिन्दोस्तान के दो अहम तिजारती दफ़ातिर गिलगित और लेह में बंद कर दिए। लेह में तिजारती दफ़्तर दोबारा नहीं खुला, जबकि गिलगित में जल्द ही वो दोबारा खोल दिया गया।[505] हज के बाद मुहीती जापान चला गया, जहां उसने 'आज़ादी सोसाइटी' Independence Society की बुनियाद रखी, जिसका

मक़सद पूर्वी तुर्किस्तान East Turkestan का गठन करना था, जिसकी सोवियत यूनियन और चीन दोनों ने मुख़ालिफ़त की।[506] मुहीती ने 1939 के शुरू में एक-बार फिर सहयोग के लिए जापानियों से अपील की। अगले साल वो, अक्तूबर 1940 में चीन का सूबा सुईयुआन Suiyuan Province (मौजूदा चीन का अंदरूनी मंगोलिया ऑटोनोमस इलाक़ा) में वापस पहुंच गया और उसका एक लंबा दौरा ख़त्म हुआ। चीन में उसने पान इस्लामी तहरीक pan-Muslim movement चलाई जो जापान इस्लामी सोसाइटी Japan-Islam society की आड़ में थी, यह पहले टोकीयो में क़ायम थी। इस सोसाइटी का मक़सद जापान और मुसलमानों के दरम्यान सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग बढ़ाना था। मुहीती ने टोकीयो में शिंजियांग उइग़ूर सोसाइटी Xinjiang Uyghur Society क़ायम करने का मंसूबा बनाया जिसकी शाख़ें पूरे अंदरूनी एशिया में होंगी। ताहम, मुहीती के लिए जापानी हिमायत बे-नतीजा रही। मुहीती 1944 में जापान के ज़ेर-ए-क़ब्ज़ा, बीजिंग Beijing में ब्रेन हेमरेज brain hemorrhage की वजह से इंतिक़ाल कर गए, और उन्हें वहां के एक मुस्लिम क़ब्रिस्तान में दफ़न किया गया।[507]

टुंगानिस्तान Tunganistan

मुहीती के फ़रार होने के बाद उस की फ़ौज का प्रमुख, जनरल अब्दुल नियाज़ Abdul Niyaz बन गया जिसको जनरल नयाज़ का नाम दिया गया। जनरल नयाज़ और दूसरे अफ़सर किचिक अखुंद Kichik Akhund के नेतृत्व में उइग़ूर फ़ौज ने पहले यरकंद उस के बाद काशग़र पर क़ब्ज़ा कर लिया। नई हुकूमत की

बुनियाद रखी गई, और जो रूस के हिमायती थे उनको क़त्ल कर दिया गया। इस को देखकर कूचा और हामी के लोगों ने भी विद्रोह कर दिया। काशग़र के बाद उस की फ़ौज कारा शहर की तरफ़ बढ़ी जहां उसका गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

15 मई को जनरल नयाज़ और मा हूशान ने साथ लड़ने का मुआहिदा कर लिया इस लिए मा हूशान ने जा कर काशग़र का क़ब्ज़ा ले लिया जैसा कि मुआहिदे में तै पाया था। लेकिन शेंग की माँग पर 5000 रूसी फ़ौज आगई, जंगी जहाज़ों, बख़्तरबंद गाड़ियों और BT-7 टैंकों के साथ। चुनांचे रूस की फ़ौज ने मुस्लिम फ़ौज को शिकस्त दे कर कई शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया जैसे काशग़र, कुमूल, कूचा वग़ैरह। इसके बाद रूस ने मा हूशान के 36 वें डिवीज़न की हुकूमत की मदद करना भी बंद कर दी जो अब तक रूस की मदद पर चल रही थी। चुनांचे मा हूशान की हुकूमत अक्तूबर 1937 में ख़त्म हो गई जिसका सदर मुक़ाम खोतान था।

इस प्रकार की सरकार को सतरापी satrapy कहा जाता है। इस सतरापी का नाम टुंगानिस्तान Tunganistan या हुई सतरापी Hui satrapy था। इसकी तीन तरफ से सीमा शिंजियांग और एक तरफ से तिब्बती पठार Tibetan Plateau से लगती थी।

उधर हामी में युलबर्स ख़ान की फ़ौज को भी शिकस्त हुई। युलबर्स ख़ान को शेंग ने इस लिए शिकस्त दी क्यों कि काशग़र में जब 1937 में 6 वें उइग़ूर डिवीज़न ने विद्रोह किया था तो इस दौरान उन्होंने युलबर्स ख़ान से विनती की

कि वो शेंग और चीन के बीच का राब्ता काट दे चुनांचे युलबर्स ख़ान ने ऐसा ही किया जिससे शेंग चिराग़-ए-पा हो गया, इस से डर कर युलबर्स ख़ान वहां से फ़रार हो गया। इस तरह शेंग पहली बार पूरे शिंजियांग का शासक बन गया और मुसलमानों के पास कोई हुकूमत बाक़ी न रही।[508]



काशगर में अब्दुल नियाज़ अपनी सेना के साथ

युलबर्स ख़ान का क्या हुआ?



युलबर्स ख़ान

जैसा कि शुरू में 'कुमूल विद्रोह' के विषय में बयान किया गया था कि कुमूल ख़ानियत के शासक मक़सूद शाह Maqsud Shah का 1930 में इंतिक़ाल हो गया। मक़सूद शाह के इंतिक़ाल के बाद उसका बेटा नासिर उसकी जानशीनी का दावेदार था इस लिए वो अपने वज़ीर युलबर्स ख़ान के साथ जिन शूरेन से मिलने राजधानी उरुमची गया ताकि जिन शूरेन से वो अपने लिए अनुमति ले-ले और जिन शूरेन उसकी हुकूमत को स्वीकार कर ले। लेकिन जिन शूरेन ने

मौक़ा देखकर अपने वज़ीरों की मीटिंग की जिसमें कुमूल ख़ानियत को, शिंजियांग सूबाई हुकूमत में मिलाने की क़रारदाद पास करवा ली और कुमूल ख़ानियत को तीन शहरों में बांट दिया गया जिनके नाम हैं हामी hami, आई अहो I-ho और आई वू i-wu और नासिर को सीनियर सलाहकार senior advisor का ओहदा देकर रोक लिया और युलबर्स ख़ान के साथ अपने बहुत से चीनी अफ़सरों को भेज दिया कि वो वहां अपनी नई हुकूमत क़ायम करें। इन इक़दामात से कुमूल लोग जिनमें अक्सरियत (बहुसंख्या) उइग़ूर मुसलमानों की थी जिन शूरेन के ख़िलाफ़ हो गए और युलबर्स ख़ान के मातहत एकजुट हो गए। चुनांचे उइग़ूर लोगों ने 20 February 1931 CE को जिन शूरेन के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। कुमूल ख़ानियत के वज़ीर युलबर्स ख़ान ने ख़ोजा नयाज़ और मा ज़ोंगयिंग से इल्तिजा की कि वो जिन शूरेन के ख़िलाफ़ उनकी मदद करें। चुनांचे मा ज़ोंगयिंग ने और ख़ोजा नयाज़ ने एकजुट हो कर जिन शूरेन के ख़िलाफ़ लड़ने का मंसूबा बनाया, युलबर्स ख़ान भी उनके साथ था, लेकिन बाद में मा ज़ोंगयिंग और ख़ोजा नयाज़ में मत भेद हो गया और ख़ोजा नयाज़ ने मा ज़ोंगयिंग से अलैहदा हो कर जिन शूरेन के जानशीन, शेंग शिकाई से गठबंधन कर लिया। ताहम युलबर्स ख़ान ने इस फ़ैसले में ख़ोजा नयाज़ की पैरवी नहीं की और मा ज़ोंगयिंग का वफ़ादार रहा।

मा ज़ोंगयिंग ने युलबर्स ख़ान को क्योमिनटांग (KMT) के 36 वें डिवीज़न के खरीद विभाग का चीफ़ Chief of Procurement Department of Kuomintang (KMT) 36th Division नियुक्त किया। लेकिन 7 जुलाई 1934

को मा ज़ोंगयिंग की नापैदी के बाद, युलबर्स ख़ान ने शेंग शिकाई से अमन मुआहिदा कर लिया, शेंग ने उसे कुमूल में उइग़ूर रेजिमेंट के कमांडर के तौर पर नियुक्त कर दिया और शिंजियांग की सूबाई हुकूमत में पुनर्निर्माण मामलों के आयुक्त Commissioner for Reconstruction Affairs in Xinjiang Provincial Government का आला ओहदा भी दिया।

लेकिन मई 1937 में, दक्षिणी शिंजियांग में शिंजियांग की सूबाई हुकूमत के ख़िलाफ़ 6 वें उइग़ूर डिवीज़न और 36 वें डुंगन डिवीज़न ने विद्रोह कर दिया। इस दौरान इन विद्रोह करने वालों ने युलबर्स ख़ान से विनती की कि वो शेंग और चीन के बीच का राब्ता काट दे चुनांचे युलबर्स ख़ान ने ऐसा ही किया जिससे शेंग चिराग़-ए-पा हो गया। चुनांचे 1937 कि गर्मियों में सोवियत फ़ौजी मदद (जिसमें 5000 सोवियत फ़ौजी, हवाई जहाज़ और BT-7 टैंक शामिल थे) से शेंग शिकाई ने विद्रोह को कुचल दिया। चुनांचे शेंग के डर से वो नानजिंग भाग गया और 1946 में कुमूल वापस आया। बाद में उसने 1949 में शिंजियांग पर क़ब्ज़ा करने वाली कम्युनिस्ट फ़ौज पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) की फ़ौज के ख़िलाफ़ चीनी मुस्लिम घुड़सवारों और सफ़ैद फ़ाम रूसियों का नेतृत्व भी किया। उसने कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ यीवू Yiwu की जंग में भी हिस्सा लिया। लेकिन 1951 में, उस की ज़्यादातर फ़ौज ने उस का साथ छोड़ दिया इस लिए वो तिब्बत के रास्ते फ़रार हो कर हिन्दुस्तान के कलकत्ता पहुंच गया, जहां उस के आदमियों पर दलाई लामा के आदमियों ने हमला कर दिया। इस के बाद वो एक स्टीमर steamer boat के ज़रिये ताइवान चला गया। क्योमिनटांग हुकूमत ने उसे शिंजियांग का गवर्नर नियुक्त कर दिया, लेकिन वो ताइवान में 1971 में मरने तक रहा। 1969 में, उस की याददाश्तें (चीनी 堯樂博士回憶錄 pinyin: Yaole boshì huiyìlu) प्रकाशित हुई।

यीवू की जंग Battle of Yiwu

यीवू की जंग 29 March 1950-7 May 1950 के दरम्यान हुई। यह जमहूरियत पसंदों की कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ आख़िरी जंगों में से एक थी, जिस में कम्युनिस्टों की जीत हुई। इस में जमहूरियत पसंद फ़ौज का नेतृत्व युलबर्स ख़ान और हामी का पूर्व शासक अबदुल्लाह कर रहे थे। वो लोग यीवू को अपनी गोरीला जंग का केंद्र बनाना चाहते थे ताकि वो कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ अपनी मुज़ाहमत (विरोध) जारी रख सकें। इस जंग में युलबर्स ख़ान की फ़ौज की तादाद 45,000 और कम्युनिस्ट फ़ौज की संख्या 100,000 थी। यीवू एक छोटा क़स्बा था जो हामी से 200 किलोमीटर उत्तर पूर्व में था जहां कम्युनिस्ट फ़ौज की दूसरी कंपनी की ४६ वीं रेजिमेंट 2nd Company of the 46th Regiment के सिर्फ 100 फ़ौजी तैनात थे। चुनांचे युलबर्स ख़ान ने मंसूबे के मुताबिक़ 700 लोगों की फ़ौज लेकर 29 March 1950 को हमला कर दिया। पहले दिन युलबर्स ख़ान को कामयाबी मिली और उस की फ़ौज ने उत्तरी और दक्षिणी पहाड़ की चोटियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। कम्युनिस्टों ने 4 दस्तों को उनके मुक़ाबले के लिए भेजा जिसने जमहूरियतपसंदों (प्रजातंत्रवादियों) को शिकस्त दी। इस के बाद जमहूरियतपसंदों ने अपनी ताक़त जमा कर के 5 April 1950 को पूरी ताक़त से हमला किया। यह लड़ाई सुबह 3 बजे 8 बजे तक चली, इस बार भी जमहूरियतपसंदों को ज़बरदस्त शिकस्त हुई और भारी नुक़सान हुआ। इस के बाद वो इस क़ाबिल नहीं रहे कि दोबारा इतना बड़ा हमला कर सकें। जो सबसे क़रीब कम्युनिस्ट फ़ौज थी वो भी वहां से 200 किलोमीटर दूर

थी जब उस को पता चला कि उनके भाई यीवू में फंसे हैं तो उन्होंने उनकी मदद के लिए थोड़ी सी फ़ौज भेजी लेकिन उस को तक़रीबन 12 किलोमीटर पहले कि युलबर्स ख़ान की फ़ौज ने रोक दिया, वो समझे कि जमहूरियतपसंदों का यीवू पर क़ब्ज़ा हो चुका है और उन्होंने शहर के अंदर के कम्युनिस्टों का सफ़ाया कर दिया है इस लिए वो 14 अप्रैल 1950 को मीचैंग Micheng की तरफ़ पीछे हट गए। लेकिन यह उनको ग़लतफ़हमी थी क्यों कि शहर के अंदर के कम्युनिस्ट पूरी तरह सुरक्षित थे बल्कि उन्होंने जमहूरियतपसंदों के 7 हमलों को नाकाम बनाया था। मई 1950 में कम्युनिस्ट फ़ौज के 16 वें डिवीज़न 16th Division को पता चला कि यीवू में कम्युनिस्ट फ़ौज अब भी जमी हुई है तो उसने उनकी मदद के लिए 2 बटालियन भेजीं। चुनांचे कम्युनिस्ट फ़ौज ने काले पहाड़ की चोटी Black Hilltop पर क़ब्ज़ा कर लिया और युलबर्स ख़ान की फ़ौज का घिराओ कर लिया। इस तरह युलबर्स ख़ान की फ़ौज अंदर बाहर दोनों तरफ़ से दुश्मनों के बीच घिर गई। जब युलबर्स ख़ान की फ़ौज ने देखा कि वो दोनों तरफ़ से घिर चुकी है तो उस के क़दम उखड़ गए और उन लोगों ने फ़रार होना शुरू कर दिया लेकिन कहीं भागने की जगह नहीं मिली चुनांचे उनमें से एक भी बच कर नहीं जा पाया। ताहम युलबर्स ख़ान किसी तरह फ़रार हो गया। कम्युनिस्ट रक्षा मंत्री पेंग डीहुआई Peng Dehuai ने 46 वीं रेजिमेंट की दूसरी कंपनी 2nd Company of the 46th Regiment को लोहे की कंपनी का ख़िताब दिया और उस के कमांडर हू चिंगशान Hu Qingshan को जंग का हीरो Combat Hero का लक़ब दिया।

जूजूब रंग के घोड़े का वाक़िया

लेकिन इस में सबसे दिलचस्प बात यह हुई कि इस में एक घोड़े को उस की क़ाबिल-ए-क़दर ख़िदमात के बदले तीसरे दर्जे का सम्मान third class honour दिया गया, उस घोड़े को जूजूब रंग का घोड़ा Jujube Coloured Horse कहा जाता है। याद रहे जूजूब सूखे बेर को कहा जाता है जो कत्थई रंग का होता है। इस का वाक़िया कुछ यूं है कि कम्युनिस्ट फ़ौज जो उत्तरी पहाड़ की चोटी की रक्षा कर रही थी उस की सप्लाई लाइन दुश्मन ने आग के ज़रिये काट दी यानी रास्ते में आग जला कर रास्ता बंद कर दिया। इस लिए कम्युनिस्ट फौजियों को खाने पीने की चीज़ों की कमी होने लगी। इसी दौरान एक कम्युनिस्ट फ़ौजी जिसका नाम वू शियाओन्यू Wu Xiaoniu था उस का एक घोड़ा था जिस को जूजूब रंग का घोड़ा कहा जाता था। इस पर वो ने सामान लादा और घोड़े को इशारा किया कि वो उत्तरी चोटी पर इस सामान को ले जाए चुनांचे वो घोड़ा आग को पार करता हुआ वो समान ले गया और फौजियों को दे दिया। चुनांचे 40 दिन तक घोड़ा इस ड्यूटी को अंजाम देता रहा कि वो उस पर पानी और दूसरे सामान लादता और वो आग को पार करता हुआ और दुश्मन की नज़रों से बचता हुआ, वो सामान कम्युनिस्ट फौजियों तक पहुँचाता। उस की इस ख़िदमत के बदले उस को कम्युनिस्ट हुकूमत की तरफ़ से तीसरे दर्जे का सम्मान दिया गया और उस को उस की स्वाभाविक मौत तक, नवंबर 1967 तक फ़ौज में रखा गया जबकि दूसरे घोड़ों को एक ख़ास उम्र के बाद रिटायर करके मार दिया जाता है। बाद में उस का मक़बरा उसी उत्तरी पहाड़ की जड़ में बनाया गया और उस पर पत्थर की एक यादगार लगाई गई।[509]

शिंजियांग जमहूरी हुकूमत के आखरी दौर में

जमहूरी हुकूमत के आखरी दौर में एक मुस्तक़िल रैड आर्मी की यूनिट को कुमूल में तैनात कर दिया गया जिसको 8 वीं रेजमंट The 8th Regiment कहा जाता था। शेंग ने क्योमिनटांग प्रमुख चियांग काई शेक और रूस के बीच में सालिसी (मध्यस्थ) का रोल भी अदा कर के चियांग काई शेक को यह बावर कराया कि जापान के किसी भी हमले से बचने के लिए रूस की मदद ज़रूरी है और रूस से मदद का यही रास्ता है कि एक रूसी यूनिट यहां तैनात कर दी जाए और रूस और चीन के बीच जो रास्ता है वो भी शिंजियांग हो कर जाता है इस लिए रूस से संबंध बेहतर बनाए जाएं। कुछ ही दोनों बाद रूस ने एक फ्लाइंग स्कूल flying school और एक हवाई जहाज़ बनाने की फ़ैक्ट्री शिंजियांग में लगाई। रूस का दख़ल सिर्फ सैन्य क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं था बल्कि सारे उद्योग और तेल के भंडार और कच्चे माल की कानों पर भी रूस की इजारादारी (monopoly) हो गई। बग़ैर क्योमिनटांग की अनुमति के, खुले आम रूसी कंपनियों ने शिंजियांग के भंडारों का भरपूर शोषण exploitation और इस्तेमाल शुरू कर दिया और क्योमिनटांग हुकूमत इस पोज़ीशन में नहीं थी कि रूस की इस मन-मानी का विरोध कर सकती क्यों कि वो ख़ुद दूसरी तरफ़ जापान से जूझ रह थी। रूस ने न सिर्फ शिंजियांग में अपनी इजारादारी क़ायम कर ली बल्कि दूसरी मुख़ालिफ़ ताक़तें जैसा कि बर्तानिया और अन्य, जो वहां मौजूद थीं उनको भी तंग करना शुरू कर दिया।

दुश्मनों का सफ़ाया

रूसी ख़ुफ़िया एजैंसी, एन के वी डी NKVD की मदद से शिंजियांग में एक मज़बूत जासूसी निज़ाम बनाया गया जिससे लोगों में अविश्वास और डर फैल गया। रूस में 1936 में स्टालिन ने अपने दुश्मनों के सफ़ाए की मुहिम शुरू की जिसमें उसने अपने सारे सियासी विरोधी या संभावित दुश्मनों को चुन-चुन कर क़त्ल किया इस वाक़े को 'महान सफ़ाई' (1936-1938) Great Purge कहा जाता, तो बहुत से वो लोग जिनको स्टालिन से अपनी जान का ख़तरा था शिंजियांग की तरफ़ फ़रार हो गए और रूसी शरणार्थियों की तादाद बढ़ गई। स्टालिन के महान सफ़ाई के अभियान से प्रभावित होकर शेंग ने भी 1937-1938 के दरम्यान, शिंजियांग में अपने दुश्मनों का सफ़ाया शुरू कर दिया। उसने अपने दुश्मनों को मुख़्तलिफ़ इल्ज़ामी नाम देकर मरवाया जैसे "ग़द्दार", "पान तुर्क", "जनता के दुश्मन", "क़ौम परस्त" और "सामराजी जासूस", "जापान के एजेंट" वग़ैरह। traitors, pan-Turkists, enemies of the people, nationalists and imperialist spies.

इस मुहिम में रूस की ख़ुफ़िया एजैंसी NKVD ने भी शेंग की बहुत मदद की। इस के बाद यह सफ़ाए की मुहिम मुड़ गई लियोन ट्रॉट्स्की Leon Trotsky के समर्थकों के ख़िलाफ़। याद रहे लियोन ट्रॉट्स्की, लेनिन का सबसे क़रीबी आदमी था लेकिन लेनिन के मरने के बाद जब स्टालिन ने हुकूमत अपने हाथ में ली तो उसने अपने लिए संभावित ख़तरा बनने वाले सब कम्युनिस्ट लीडरों को मरवा दिया जिनमें ट्रॉट्स्की भी शामिल था बल्कि उस के समर्थकों को भी

नहीं बख़्शा। चुनांचे शेंग ने भी स्टालिन को ख़ुश करने के लिए ट्रॉट्स्की के समर्थकों को चुन-चुन कर मारना शुरू कर दिया जिनमें बहुत बड़ी तादाद में हान लोग थे और कुछ मुसलमान भी, बल्कि जो ट्रॉट्स्की के हामी नहीं थे उनको भी ट्रॉट्स्की का हामी कह कर मारा गया। इन मरने वालों में थे गारेगिन अप्रेसोव, मा शाओवू, महमूद सिजान Mahmud Sijan, हुआंग हान चांग Huang Han-chang और ख़ोजा नयाज़ वग़ैरह। यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि शेंग की इस सफ़ाए की मुहिम में 50,000 से 100,000 के दरम्यान लोगों को मौत के घाट उतारा गया। इस मुहिम के दौरान उइग़ूर और हुई के आला सियासी वर्ग का पूरी तरह सफ़ाया हो गया।[510]

1937 में शेंग ने पुनर्निर्माण का तीन साला मंसूबा आरंभ किया जिसके लिए उसे एक करोड़ पचास लाख रूबल 15 million rubles रूस ने दिए। 1938 में शेंग ने रूस का एक ख़ुफ़िया सफ़र किया जहां स्टालिन के मश्वरे पर शेंग ने बाक़ायदा रूसी कम्युनिस्ट पार्टी Communist Party of the Soviet Union (CPSU) की मेंबरशिप ली और पार्टी का कार्ड नंबर 1859118, मोलोटोव Molotov के हाथ से हासिल किया, जबकि दिलचस्पी की बात यह है कि इस से कुछ साल पहले ख़ुद स्टालिन ने शेंग को कम्युनिस्ट पार्टी का मेंबर बनाने से इनकार कर दिया था। ताहम शेंग ने शिंजियांग में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का दफ़्तर नहीं खोला।[511]

शेंग का चीनी कम्युनिस्टों से गठबंधन

सफ़ाए की इस मुहिम में शेंग ने अपने बहुत सारे अहलकारों को भी क़त्ल कराया जिनको वो अपने लिए ख़तरा समझता था इस वजह से हुकूमती अहलकारों की कमी होने लगी। इस लिए उसने यान Ya'an शहर के चीनी कम्युनिस्टों से मदद मांगी और अफ़राद भेजने का मुतालबा किया। चुनांचे उस के पास बहुत से कैडरों cadres को भेज दिया गया जिनमें माओ ज़ेडोंग का भाई माओ ज़ेमिन Mao Zemin भी शामिल था। इन कैडरों को शेंग ने ऊंचे ओहदों पर तैनात किया, उरुमची, काशग़र, खोतान और दूसरे इलाक़ों में। इस से यह भी फ़ायदा हुआ कि चीनी कम्युनिस्टों और रूसी कम्युनिस्टों में राब्ते का एक रास्ता खुल गया। माओ ज़ेमिन को 'उप वित्त मंत्री' Deputy Finance Minister नियुक्त किया गया।

जातियों को मान्यता देना

गिलबर्ट चान F. Gilbert Chan के मुताबिक़ शेंग के ज़माने में शिंजियांग में हान लोगों की आबादी सिर्फ 6% थी, जब कि शेंग के मुताबिक़ 10%, तक़रीबन 400,000 लोग। चुनांचे उसने ग़ैर हान लोगों को भी सूबाई हुकूमत से जोड़ने की कोशिश की। इस लिए उसने बहुत से सुधार योजनाओं पर काम किया जैसे उसने शिंजियांग डेली Xinjiang Daily नाम के अख़बार को जारी किया जो तीन भाषाओं में छपता था मन्दारिन, उइग़ूर और कज़ाख़ में। उस के शिक्षा सुधारों के कारण हान लोगों ने उइग़ूर ज़बान सीखी और उइग़ूर लोगों ने

मन्दारिन। उसने तुर्क भाषा के स्कूल भी खोले और कुछ मदरसों को भी दोबारा शुरू किया और तुर्क ज़बान में अख़बार भी जारी किए और उइग़ूर प्रोग्रेस यूनियन Uyghur Progress Union बनाई।[512] उसने शिंजियांग में 14 जातीय समुदायों को मान्यता दी। यह जातियां थीं, हान, उइग़ूर, मंगोल, कज़ाख, हुई या डुंगन, सिबे, सोलोन, मान्चू, किर्गीज़, श्वेत रूसी, तारांची, ताजिक और उज़्बेक।[513]

Uyghurs, Mongols, Kazakhs, Hui or Dungan, Sibe, Solon, Manchu, Kyrgyz, White Russian, Taranchi, Tajiks, and Uzbeks. Screen.

इन जातियों के लिए अलग अलग इलाक़े आरक्षित किए जिससे इन जातियों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, शिंजियांग में ही नहीं बल्कि पूरे चीन में इस ख़्याल की सराहना की गई।[514] बाद में जब 1949 में चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत आई तो यह योजना पूरे चीन में लागू की गई। चुनांचे आज 50 से ज़्यादा जातियों को मान्यता मिली हुई है जिनके लिए अलग अलग इलाक़े आरक्षित हैं जिनको ऑटोनोमस इलाक़ा Autonomous Region कहा जाता है। शेंग ने धार्मिक कट्टरता कम करने के लिए और शिंजियांग में सेक्युलर मूल्यों और मान्यताओं को बड़ावा देने के लिए बहुत से कदम उठाए जैसे उसने बहुत से उइग़ूर और ग़ैर हान लोगों को शिक्षा हासिल करने विदेश भेजा जैसे रूस, वसती एशिया वग़ैरह। इन लोगों को लौटने पर शिंजियांग हुकूमत में अच्छी मुलाज़मतें दी जातीं शेंग की ज़्यादातर पॉलिसियों को बाद की कम्युनिस्ट पार्टी ने शिंजियांग में लागू रखा।

रूस की मदद

मार्च 1935 में, लाज़ार कागनोविच Lazar Kaganovich, जिसने शिंजियांग के साथ सहयोग के शोबों को तरक़्क़ी देने के लिए एक नई क़ायम करदा कमीशन की अध्यक्षता की, रूस की पोलिटब्यूरो को शिंजियांग से मुताल्लिक़ (संबंध में) सिफारिशें पेश कीं। इन तजावीज़ की बुनियाद पर पोलिटब्यूरो ने बहुत से प्रस्तावों resolutions को मंज़ूरी दी। शिंजियांग को कम दर सूद पर कर्ज़े देना, मुख़्तलिफ़ आर्थिक इमदाद, और बहुत से माहिरीन भेजना, जिससे शेंग की हुकूमत की पोज़ीशन मज़बूत हुई।

1 जनवरी 1936 को एक ख़ुफ़िया मुआहिदे के तहत शिंजियांग के आस पास सोवियत यूनियन की पकड़ को मज़ीद बढ़ाया गया। इस मुआहिदे में शिंजियांग पर किसी बैरूनी हमले की सूरत में "सियासी, आर्थिक और शिंजियांग की सक्रिय सैन्य सहायता की गारंटी भी शामिल थी। 1936 के मध्य तक, शिंजियांग में सोवियत माहिरीन की एक क़ाबिल-ए-ज़िक्र तादाद शिंजियांग में सक्रिय थी जो निर्माण, शिक्षा, सेहत और फ़ौजी तरबियत में शामिल थे। स्कूलों में अंग्रेज़ी की जगह रूसी ज़बान पड़ाई जाने लगी। मुस्लिम लड़कियों समेत बहुत से मुस्लिम नौजवानों को सोवियत या मध्य एशिया में शिक्षा के लिए भेजा जाने लगा। शेंग की हुकूमत ने कम्युनिस्ट प्रोपेगेंडा लागू किया, और मुस्लिम औरतों को बग़ैर निक़ाब के जनता में आने की प्रेरणा दी गई।

विशेषाधिकार का मुआहिदा

26 नवंबर 1940 में शेंग ने रूस से एक ख़ुफ़िया मुआहिदा किया जिसको विशेषाधिकार का मुआहिदा Agreement of Concessions कहा जाता है इस में शेंग ने रूस को अगले 50 साल के लिए कई विशेषाधिकार देने का वादा किया। शेंग का कहना है कि स्टालिन ने उसे इस मुआहिदे पर दस्तख़त करने के लिए मजबूर किया था। इस मुआहिदे में 17 आर्टिकल या शर्तें थीं।

मुआहिदे के पहले आर्टिकल में कहा गया था कि शिंजियांग की हुकूमत शिंजियांग की ज़मीन में सोवियत यूनियन को टिन की कानें और उस की सहायक खनिज (subsidiary minerals) की तलाश, तहक़ीक़ात और उपयोग के विशेष अधिकार देती है। इस काम के लिए रूस ने एक ट्रस्ट या कंपनी स्थापित की जिसे सिन-टिन Sin-Tin का नाम दिया गया ताकि मुआहिदे में उल्लिखित शर्तों को लागू किया जा सके। इन शर्तों के अनुसार रूस को शिंजियांग के पूरे इलाक़े में अपने ब्रांच ऑफ़िस और एजेंसियां खोलने का हक़ दिया गया और काम करने की तमाम सुविधाएं उपलब्ध कराने का वादा किया गया। जैसे रूस से तमाम अमला (स्टाफ़) और मशीनें लाने का हक़ और शिंजियांग से बरामद खनिज और भंडार बग़ैर कस्टम ड्यूटी के रूस ले जाने का हक़। इस में शिंजियांग से हासिल होने वाले मादनियात (खनिज) का 5% हिस्सा शिंजियांग की सूबाई हुकूमत को देने का वादा किया गया था। आर्टिकल 5 में कहा गया था कि मौजूदा मुआहिदे की मियाद के दौरान, शिंजियांग की हुकूमत ज़मीनों के प्राप्ति की ज़मानत देगी, बशुमूल (including) लकड़ियों की कटाई,

कोयला खनन और निर्माण उपकरण (construction equipments) की ख़रीदारी के। जो इलाक़े और सुविधाएं इस के लिए दरकार हैं शिंजियांग हुकूमत वो सब रूस को उपलब्ध कराने को यक़ीनी बनाएगी ताकि इस मुआहिदे में मंज़ूर कामों को पूरा किया जा सके। और शिंजियांग की हुकूमत ऐसे इलाक़ों में रहने वाली तमाम आबादियों को हटा देगी जो सिन-टिन Sin-Tin को अलाट किए गए हों। मुआहिदे में रूस को शिंजियांग के किसी भी इलाक़े में सिन टिन के लिए ज़मीन क़ब्ज़ा करने का हक़ दिया गया था क्योंकि आर्टिकल 5 में कहा गया था कि ज़मीन के ऐसे इलाक़े सिन-टिन की विनती पर उसे अलाट किए जाएं जिनकी उस को ज़रूरत हो और अलॉटमेंट में, कोई देरी नहीं होगी और मांग की शर्तों के साथ सख़्ती से पाबंदी होगी। इस तरह के आवंटित इलाक़ों का कराया सिन-टिन के ज़रिये हासिल की गई मादनियात के ज़रिये अदा किया जाएगा जैसा कि आर्टिकल 7 में ज़िक्र किया गया है।[515] इस मुआहिदे के बाद, सोवियत यूनियन की तरफ़ से 1940 से 1941 के दरम्यान शिंजियांग में बड़े पैमाने पर भूवैज्ञानिक खोज geological search के लिए टीमें भेजी गईं और बड़े पैमाने पर यूरेनियम, बेरिलियम uranium, beryllium और दूसरे खनिज पदार्थों के भंडार काशग़र के क़रीब पहाड़ों और अल्ताई के इलाक़े में पाए गए। 1949 के आख़िर तक दोनों मादनियात की धातें (यूरेनियम, बेरिलियम) रूस तक पहुंचाई जाती रहीं। सोवियत भूविज्ञानी geologists शिंजियांग में 1955 तक काम करते रहे, लेकिन यह सिलसिला तब ख़त्म हो गया जब चीनी हुकूमत और रूस में मत भेद हो गया। मत भेद की वजह यह थी कि सोवियत सदर निकिता ख़्रुश्चेव

Nikita Khrushchev ने माओ ज़ेडोंग की माँग पर उसे एटमी हथियार बनाने की टेक्नोलॉजी देने से इनकार कर दिया था। रूस के जाने के बाद उत्तरी शिंजियांग में चुगुचक Chuguchak और अल्ताई Altai में सोवियत संघ द्वारा निर्माण की गई सुविधाओं का इस्तेमाल करते हुए चीनी हुकूमत ने अपनी परमाणु परियोजना (atomic project) शुरू की। इन सुविधाओं को सोवियत यूनियन ने जौहरी हथियारों के डिज़ाइन और पहले सोवियत एटम-बम बनाने के लिए इस्तेमाल किया था और 29 अगस्त 1949 को एटम-बम का कामयाब परीक्षण experiment किया था।

चीनी लोकतंत्र से निकटता

1939 तक शिंजियांग पर बाक़ायदा 'रूसी कम्युनिस्ट पार्टी' की हुकूमत क़ायम हो चुकी थी और वो सिर्फ़ नाम को चीन का हिस्सा रह गया था। लेकिन शेंग की यह रूस के साथ वफ़ादारी बहुत दिनों तक क़ायम ना रह सकी। क्यों कि कुछ वाक़ियात ऐसे हुए कि शेंग फिर से क्योमिनटांग की तरफ़ झुक गया। उस की शुरूआत तब हुई जब 1937 में चीन पर जापान ने दूसरा हमला कर दिया तो चीन और रूस के दरम्यान 21 अगस्त 1937 को एक अहिंसा का मुआहिदा हुआ जिसको चीन 'चीन-सोवियत गैर-आक्रामकता संधि' Sino-Soviet Non-Aggression Pact कहा जाता है, इस के अनुसार दोनों देश मिलकर जापानी आक्रमण के ख़िलाफ़ लड़ेंगे। कुछ ही दिनों बाद चियांग काई शेक को भी शिंजियांग को अपने साथ लेने की ज़रूरत महसूस होने लगी क्यों कि चियांग

काई शेक को अंदाज़ा था कि जापानी हमले से निमटने के बाद फिर से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और क्योमिनटांग के बीच जंग छिड़ सकती है इस लिए शिंजियांग में मज़बूती क्योमिनटांग के लिए बहुत ज़रूरी है। चुनांचे शेंग के हुक्म पर शेंग के एजेंटों ने 1939 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जो वर्कर शिंजियांग में काम कर रहे थे उनकी आपस में खुफ़िया मुलाक़ातों, ख़ुतूत के मुसलसल तबादले, और ग़ैरक़ानूनी कम्युनिस्ट प्रोपेगंडे पर रिपोर्टें शेंग को भेजीं। इसी दौरान 13 अप्रैल 1941 को जापान और रूस के बीच ग़ैर तटस्थता मुआहिदा हुआ जिसको 'सोवियत-जापानी तटस्थता संधि' Soviet–Japanese Neutrality Pact कहा जाता है यानी दोनों देश एक दूसरे पर या एक दूसरे के साथियों या मुफ़ादात पर हमला नहीं करेंगे। इस लिए रूस को अब शेंग की कोई ज़रूरत नहीं रही थी क्यों कि शेंग को रूस अपने और जापान के बीच एक आड़ के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था और दूसरी तरफ़ अमरीका दूसरी जंग अज़ीम में शामिल हो चुका था और वो चीन की क्योमिनटांग हुकूमत को स्पोर्ट कर रहा था जिससे क्योमिनटांग की अहमियत बहुत बढ़ गई थी। इसके अलावा जर्मनी ने 22 जून 1941 को रूस पर हमला कर दिया जिसको बारबारोसा अभियान Operation Barbarossa कहा जाता है इस में चूँकि शुरू में रूस को जर्मनी के हाथों हार हुई और रूस का ज़बरदस्त नुक़सान हुआ, तो रूस को व्यस्त पा कर शेंग ने रूस से जान छुड़ाने का अच्छा मौक़ा जाना और चीनी जमहूरी हुकूमत यानी चियांग काई शेक से ताल्लुक़ात सुधारने का काम शुरू कर दिया, जिसकी राजधानी उस वक़्त चोंगचिंग Chongqing था। शेंग की चियांग काई शेक से

निकटता की पहली अलामत तब सामने आई जब शेंग ने चीनी जमहूरी हुकूमत के मॉस्को में राजदूत को शिंजियांग का सरकारी दौरा करने की दावत दी। चुनांचे जर्मन हमले के एक माह बाद, जुलाई 1941 में, चियांग को ख़ुश करने के लिए शेंग ने इन रिपोर्टों की बुनियाद पर चीनी कम्युनिस्ट कैडरों cadres को डिमोट करना या निकालना शुरू कर दिया। और मार्च 1942 तक शेंग रूस का साथ छोड़कर क्योमिनटांग से गठबंधन कर चुका था.

19 मार्च 1942 को शेंग के भाई शेंग शीची Sheng Shiqi की रहस्यमय तरीके से हत्या हो गई। इस के बारे में लोगों के मुख़्तलिफ़ अंदाज़े हैं कोई कहता है कि उस का क़त्ल रूस ने इस की बीवी के जरिए करवाया क्यों कि रूस को डर था कि शेंग रूस के ख़िलाफ़ पाला बदल सकता है इस लिए रूस ने उस का तख़्ता पलटने की कोशिश की और इस की शुरूआत उस के भाई को क़त्ल करवा कर की। कुछ का कहना है कि ख़ुद शेंग ने उसे क़त्ल करवाया क्यों कि वो रूस के बहुत क़रीब था।

अपने भाई के क़त्ल के बाद भी शेंग ने चीनी कम्युनिस्टों के सफाए की मुहिम जारी रखी। 1 जुलाई 1942 को शेंग ने सारे चीनी कम्युनिस्ट कैडरों को उरुमची में मुंतक़िल करवा दिया और ये बहाना लगाया कि उनकी हिफ़ाज़त के लिए उनको मुंतक़िल किया जा रहा है।[516]

रूस की वापसी

शेंग की दावत पर 3 जुलाई 1942 को चियांग काई शेक ने ज़ू शाओलियांग Zhu Shaoliang के नेतृत्व में शिंजियांग की तरफ़ सद्भावना मिशन भेजा। असल में इस की शुरूआत शेंग के भाई शेंग शीची ने दो महीने पहले की थी। लेकिन रूस को यह बात बहुत नागवार गुज़री की शेंग चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत से क़रीब हो रहा है, चुनांचे रूस के विदेश मंत्री Foreign Minister व्याचेस्लाव मोलोटोव Vyacheslav Molotov ने शियांग से राब्ता कर के उसे बताया कि शियान घटना Xi'an Incident में शेंग उसकी गिरफ़्तारी में शरीक रहा है। शेंग एक तरफ़ शिंजियांग में कम्युनिज़्म लागू करने की बात कर रहा है और दूसरी तरफ़ चीन की लोकतांत्रिक हुकूमत को धोका दे रहा है। लेकिन चीनी हुकूमत व्याचेस्लाव मोलोटोव के बहकावे में नहीं आई। ताहम चियांग ने रूसी राजदूत को पैग़ाम भेजा कि आइन्दा वो शेंग से किसी तरह का कोई राब्ता न करें बल्कि किसी भी मामले से मुताल्लिक़ (संबंध में) चीनी जमहूरियत से राब्ता करें। और चियांग ने ज़ू शाओलियांग को इस बात के लिए नियुक्त कर दिया कि अगर रूस को राब्ता करना है तो वो ज़ू से राब्ता करे।[517] सोवियत अधिकारियों के साथ शेंग ने ख़त-ओ-किताबत की, जो बाद में छपी, इस से पता चलता है कि शेंग ने चीनी हुकूमत को उरुमची में एक ख़ुसूसी दफ़्तर क़ायम करने की अनुमति दी थी, जहां से वो शिंजियांग के ख़ारिजा मामलों को सँभाल सके, और अवामी साम्राज्य मुख़ालिफ़ एसोसिएशन People's Anti-Imperialist Association की जगह पूरे सूबे में क्योमिनटांग के दफ़ातिर क़ायम करे। अवामी साम्राज्य

मुख़ालिफ़ एसोसिएशन को उसने अप्रैल 1942 में ख़त्म कर दिया। शेंग को सूबे की क्योमिनटांग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। मिलिट्री गवर्नर और सिविल गवर्नर दोनों ओहदे शेंग के पास आ गए। ताहम क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज National Revolutionary Army के दस्तों को शिंजियांग में दाख़िल होने की अनुमति नहीं दी गई।

जैसे ही ज़ू शाओलियांग ने उरुमची और चोंगचिंग के दरम्यान राब्ते का काम शुरू किया, तो शेंग ने अपने बाहरी मामलों को सँभालने के लिए मुस्तक़िल राब्ता का ऑफ़िस क़ायम करने की विनती की। चीनी हुकूमत ने वू ज़ीशियांग Wu Zexiang को शिंजियांग का विदेश मंत्री Foreign Minister नियुक्त कर दिया। हालाँकि सूबाई सतह पर वज़ारती ओहदा नहीं क़ायम किया जाता था लेकिन शिंजियांग में "ख़ुसूसी" हालात के पेश-ए-नज़र चियांग ने इस की मंज़ूरी दी। वज़ीर वू का ओहदा सलाहकार जैसा था, और वो चीनी हुकूमत और सूबाई अधिकारियों के दरम्यान मतभेद की सूरत में बिचौलिये का काम करता था। शेंग ने मुतालबा किया कि वू ज़ीशियांग, सोवियत यूनियन के साथ मामलात में और ज़्यादा ज़िम्मेदारी क़बूल करे।

शिंजियांग सोवियत संबंध को लेकर 1942 के आख़िरी महीने हालात सबसे ज़्यादा हंगामाख़ेज़ रहे। अक्तूबर 1942 में शेंग ने सोवियत जनरल काउंसिल से मुतालबा किया कि तमाम सोवियत तकनीकी और फ़ौजी अहलकारों और उपकरणों को तीन माह के अंदर शिंजियांग से वापस बुला लिया जाए। रूसियों के लिए, जो स्टालिनग्राड के युद्ध की फंसे थे (लेकिन दुशानज़ी Dushanzi में

तेल के भंडार को अपने क़ब्ज़े में रखकर मज़ीद फ़ायदा उठाना चाहते थे, जिसके तेल का स्तर बाकू के तेल भंडार Baku oil fields के बराबर था)[518], यह मुतालबा बहुत सी मुश्किलात का सबब बना। 3 नवंबर 1942 को शेंग ने एक हिदायत जारी की जिसमें "संगठनों, गिरोहों और निजी अफ़राद को, विदेशी आयात और निर्यात या कोई भी विदेशी व्यापार करने से मना किया गया था। इस हिदायत का मक़सद शिंजियांग में सोवियत यूनियन की तिजारती इजारादारी को ख़त्म करना था।[519] सोवियत यूनियन ने मार्च 1943 तक अपने फ़ौजी और सिविलियन अहलकारों को वापस बुला लिया। चुनांचे मार्च-अप्रैल 1943 में सोवियत यूनियन ने शेंग और चीनी हुकूमत को अपने वापस जाने की ख़बर दी।

शिंजियांग पर क्योमिनटांग का फिर से शासन

सोवियत यूनियन के वापस जाने के बाद, क्योमिनटांग के नुमाइंदों और अहलकारों ने इस खाली जगह को भरा। जून 1943 में ज़ू शाओलियांग Zhu Shaoliang के नेतृत्व में NRA की नई 2nd आर्मी के चार डिवीज़नों को गान्सू से शिंजियांग मुंतक़िल कर दिया गया। अक्तूबर 1943 में, क्योमिनटांग Kuomintang ने शिंजियांग से रूस का दख़ल मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दिया। सोवियत यूनियन के चले जाने के बाद, सितंबर में शेंग ने चीनी कम्युनिस्टों की गिरफ़्तारी और फांसी का हुक्म दिया। उनमें माओ ज़ेमिन, माओ ज़ेडोंग का छोटा भाई भी था, उन पर इल्ज़ाम था कि यह लोग शेंग का तख़्ता उलटने की सोवियत साज़िश में शामिल 88 लोगों में शामिल थे।[520]



माओ ज़ेमिन

फिर से रूस की ओर झुकाव

लेकिन शेंग इंतहाई दर्जे का मौकापरस्त (अवसरवादी) आदमी था और वो क्योमिनटांग का भी बहुत दिनों तक वफ़ादार न रह सका। अगस्त 1944 में जापानियों की चीन पर पै दरपे फ़तह को देखकर और 1944 में रूस के हाथों पूर्वी मोर्चे Eastern Front पर स्टेलिनग्राद की लड़ाई और कुर्स्क की लड़ाई Battle for Stalingrad and Battle of Kursk में जर्मनी की शिकस्त को देखकर वो फिर रूस की तरफ़ झुक गया और क्योमिनटांग से अपनी वफ़ादारी फिर हटा ली और शिंजियांग में मौजूद क्योमिनटांग अफ़सरों को गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया और शिंजियांग में मार्शल ला, लगा दी। इसके अलावा उसने रूसी शासक स्टालिन को ख़त लिखा कि वो शिंजियांग को रूस में शामिल कर ले और शिंजियांग को रूस का 18 वां सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक 18th soviet

socialist republic मान ले और मुझे यानी शेंग शिकाई को इस 'शिंजियांग सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक' का शासक बना दे। लेकिन स्टालिन का शेंग पर से भरोसा उठ चुका था इस लिए उसने शेंग से किसी भी तरह का मामला करने से इनकार कर दिया और शेंग के उस ख़ुफ़िया ख़त को चियांग काई शेक के पास भेज दिया। इसी के साथ उस ने क्योमिनटांग अहलकारों की गिरफ़्तारी का हुक्म दे दिया, स्टालिन को बताया कि वो जापानी जासूस हैं, और चियांग को बताया कि वो कम्युनिस्ट एजेंट हैं। ताहम, स्टालिन ने हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया और शेंग को चीनी हुकूमत के रहम-ओ-करम पर छोड़ दिया, जिसने उसे ओहदे से हटाने की तैयारी शुरू कर दी। ज़ू शाओलियांग Zhu Shaoliang ने उसे इस्तीफ़ा देने और खेती के वज़ीर का ओहदा क़बूल करने पर आमादा कर लिया। चुनांचे शेंग ने औपचारिक रूप से अपने ओहदे से इस्तीफ़ा दे दिया और 29 अगस्त 1944 को खेती और जंगलात के वज़ीर Minister of Agriculture and Forestry के तौर पर तैनात कर दिया गया। उसने 11 सितंबर 1944 को शिंजियांग छोड़कर चोंगचिंग में चीनी हुकूमत में शमूलियत इख़्तियार की। क्योमिनटांग Kuomintang हुकूमत में खेती के वज़ीर का ओहदा, हुकूमत से बाहर होने वाले अहलकारों के लिए आरक्षित reserved था क्योंकि इस ओहदे का जागीरदारों की बढ़ती हुई ताक़त के साथ कोई संबंध नहीं था।[521] चियांग ने एक हुक्मनामा जारी किया जिसमें शेंग को शिंजियांग के गवर्नर की रिहायश गाह के नीचे मौजूद दौलत को वापस लाने का हुक्म दिया गया था। उस गोदाम में पचास हज़ार टाइल सोना fifty thousand taels of gold, हिरन

के क़ीमती सींगों से भरे संदूक़ और अफ़ीम का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा मौजूद था। कुल मिलाकर शेंग ने 135, ट्रकों की बराबर दौलत वहां से निकाली।[522] शेंग का चोंगचिंग में रहना मुश्किलों भरा था। अप्रैल 1945 में, उस के पूर्व वज़ीर-ए-ख़ज़ाना पेंग जीयुआन Peng Jiyuan को उरुमची में मारा पीटा गया, वो सेहत-याब होने के बाद शेंग की पनाह में आ गया। शिंजियांग में उस के जानशीन वू ज़ोंगशिन Wu Zhongxin ने लिखा कि शेंग ने "चोंगचिंग में अपना दिमाग़ खोना शुरू कर दिया है और यह कि बुद्ध मत के उसूलों के मुताबिक़ वो अपने माज़ी के जराइम के बदले में जहन्नुम की सबसे निचली गहराइयों में जाएगा। छटी पार्टी कांग्रेस मई 1945 में आयोजित हुई, जिसमें उइग़ूर नेता मसूद साबरी ने शेंग के सर का मुतालबा किया, लेकिन चियांग ने शेंग की रक्षा की। शेंग 30 जुलाई 1945 तक मंत्री पद पर नियुक्त रहा। बाद में वो शियान में हू ज़ोंगनान Hu Zongnan का सलाहकार बन गया।

1949 में, शेंग, क्योमिनटांग Kuomintang के साथ ताइवान मुंतक़िल हो गया जहां उसने अपनी बीवी और चार बच्चों के साथ आराम से रिटायरमेंट के बाद ज़िंदगी गुज़ारी और 13 जुलाई 1970 को ताइपे के एक अस्पताल में उस का इंतिक़ाल हुआ। एक-बार एलन एस. व्हिटिंग Allen S. Whiting ने शेंग का इंटरव्यू लिया था। उसने व्हिटिंग के साथ मिलकर अपनी आप-बीती भी लिखी जिसका विषय है शिंजियांग में लाल विफलता: मोहरा या धुरी? Red failure in Sinkiang in Sinkiang: pawn or pivot? यह किताब 1958 में छपी।[523]

अध्याय 14

पूर्वी तुर्किस्तान का तुर्क इस्लामी गणराज्य

1933-1934

(पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत)

第十四章

东突厥斯坦土耳其伊斯兰共和国

(东突厥斯坦第一共和国)

Chapter Fourteen

Turkish Islamic Republic of East Turkistan (TIRET)

1933–1934

(First East Turkestan Republic)



पूर्वी तुर्किस्तान का तुर्की इस्लामी गणराज्य का सरकारी क्षेत्र लाल रगं में



पूर्वी तुर्किस्तान का तुर्क इस्लामी गणराज्य का ध्वज

मुद्रा Currency

Copper	Pul	पुल	ताँबा
Silver	Tanga	टंगा	चाँदी
Gold	Tilla	तिला	सोना

इस के अलावा चीन का कस्टम गोल्ड यूनिट Chinese customs gold unit (सिक्का) भी चला करता था।

पूर्वी तुर्किस्तान का तुर्की इस्लामी गणराज्य
Turkish Islamic Republic of East Turkistan (TIRET)

इस अध्याय में पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत Turkic Islamic Republic of East Turkestan (TIRET) का ज़िक्र किया जाएगा। पहली मशरिक़ी (पूर्वी) तुर्किस्तान हुकूमत शिंजियांग के इलाक़े में वजूद में आई और 12 November 1933 से 16 April 1934 तक चिली।[524] इस की शुरुआत कुमूल विद्रोह के नतीजे में हुई। इस की राजधानी काशग़र था। यह असल में उइग़ूर लोगों की हुकूमत थी और इस की ज़्यादातर आबादी तुर्क उइग़ूर लोगों पर आधारित थी और आला अहलकार भी तुर्क जाति से ताल्लुक़ रखते थे। इसी लिए कुछ लोगों का कहना है कि यह पान-तुर्क pan-Turkic तहरीक का हिस्सा थी। इस

का सदर ख़ोजा नयाज़ था और वज़ीर-ए-आज़म साबित दमोला था। लेकिन बाद में हुई मुसलमानों ने (जो क्योमिनटांग की तरफ़ से लड़ रहे थे), इस पर हमला कर के इस को ख़त्म कर दिया। इस हुई फ़ौज का नेतृत्व मा ज़ोंगयिंग, मा हूशान, मा ज़ानचांग, मा फ़ूयुआन (Ma Zhongying, Ma Hushan, Ma Zhancang and Ma Fuyuan) वग़ैरह कर रहे थे। ख़ोजा नयाज़ ने भी अंदर ख़ाने रूस और शेंग शिकाई से साज़-बाज़ कर लिया और रूस के कहने पर वो साबित दमोला को धोके से रूस के पास ले गया, जिसने उसे क़त्ल कर दिया। इस के बदले ख़ोजा नयाज़ को शेंग शिकाई ने तरीम बेसिन का शासक बना दिया लेकिन बाद में ख़ोजा नयाज़ को भी रूस ने क़त्ल करवा दिया।

तफ़सीली हालात

यह वो ज़माना था जब कुमूल विद्रोह शुरू हुआ था और पूरा शिंजियांग अशांति का शिकार था, जगह जगह लड़ाईयां हो रही थीं और शिंजियांग कई ताक़तों का केंद्र बना हुआ था। हालाँकि खोतान के उइग़ूर, कुमूल के उइग़ूर से अलग थे क्यों कि कुमूल के उइग़ूर का सिर्फ एक मक़सद था कि कुमूल ख़ानियत को बहाल किया जाए। जब कि खोतान के उइग़ूर कुमूल ख़ानियत दुबारा क़ायम करने में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं रखते थे। ताहम वो चीन से पूरी आज़ादी स्वतंत्रता चाहते थे और अपनी एक 'आज़ाद हुकूमत' बनाना चाहते थे। तो एक तरफ़ तो कुमूल के इलाक़े में बग़ावत चल रही थी जिसमें शेंग शिकाई और मा ज़ोंगयिंग के बीच लड़ाईयां चल रही थीं तो दूसरी तरफ़ कुमूल बग़ावत से हिम्मत पाकर खोतान में आज़ादी की एक नई तहरीक ने जन्म लिया। मशरिक़ी

तुर्किस्तान हुकूमत क़ायम होने से पहले भी कुछ तंज़ीमें बनी थीं। दर असल खोतान में तीन भाई रहते थे जिनको ब़गरा बिरादरान कहा जाता था, उनके नाम हैं मुहम्मद अमीन ब़गरा, अबदुल्लाह ब़गरा और नूर अहमद जान ब़गरा और उनका एक साथी था साबित दमोला। इन लोगों ने सब पहले 'कमेटी बराए क़ौमी इन्क़िलाब' बनाई थी। इसके बाद 'खोतान इमारत' और इस के बाद 'पूर्वी तुर्किस्तान का तुर्की इस्लामी गणराज्य' बनी। अब नीचे इनका तफ़सीली ज़िक्र किया जाएगा।

राष्ट्रीय क्रांति समिति

Committee for National Revolution



मुहम्मद अमीन ब़गरा

20 February 1933 को काराकाश सोने की खानों के मज़दूरों Karakash gold miners के लीडर इस्माईल ख़ान ख़ोजा Ismail Khan Khoja और खोतान के अमीर मुहम्मद अमीन ब़गरा ने एक इन्क़िलाबी तहरीक की बुनियाद रखी।

उनके अलावा अमीन ब़गरा के भाई अबदुल्लाह ब़गरा, नूर अहमद जान ब़गरा और साबित दमोला ने भी इस में शमूलियत इख़्तियार की। यह एक इन्क़िलाबी तहरीक थी जिसको 'कमेटी बराए क़ौमी इन्क़लाब' Committee for National Revolution का नाम दिया गया। शुरू में इस में सिर्फ 300 मेंबर थे और 50 राइफ़लें थीं। यह एक तरह से 'अंतरिम खोतान सरकार' Provisional Khotan Government थी। इस में साबित दमोला को वज़ीर-ए-आज़म बनाया गया और अमीन ब़गरा को फ़ौज का कमांडर। यह एक इस्लामी तर्ज़ की हुकूमत थी।[525]

नौजवान काशग़र पार्टी Young Kashgar Party

1933 में ही अब्दुल रहीम बे बच्चा Abd al Rahim Bay Bachcha नाम के एक उइग़ूर ने 'नौजवान काशग़र पार्टी' Young Kashgar Party नाम के एक संगठन की बुनियाद रखी।[526] बाद में उसने अमीन ब़गरा और उस की कमेटी बराए क़ौमी इन्क़लाब से गठबंधन कर लिया। इन दोनों संगठनों ने मिलकर एक पार्लियामेंट बनाई जिसमें 40 मेंबर थे। इसी पार्लियामेंट ने ख़ोजा नयाज़ के पास दो लोगों का वफ़द भेजा।[527]

खोतान इमारत

Khotan Emirate



साबित दमोला

पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत शिंजियांग के शहर काशग़ार में क़ायम हुई उस को उइग़ूरिसतान भी खा जाता था और उसके संस्थापक साबित दमोला Sabit Damolla और हाजी ख़ोजा नयाज़ थे। इस हुकूमत से पहले 'खोतान इमारत' March 16, 1933 में क़ायम हुई थी। खोतान इमारत के ही कुछ लोगों ने पहली

पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत स्थापित की थी। इस लिए हम पहले खोतान इमारत का ज़िक्र करते हैं। बुनियादी तौर पर यह उइग़ूर जाति के लोगों की हुकूमत थी लेकिन उन्होंने शरिया क़ानून लागू करने की कोशिश की। इस हुकूमत का इलाक़ा तरीम बेसिन में अक्सू Aksu से खोतान Khotan तक था और इसकी राजधानी काशग़र थी। यह हुकूमत एक साल से भी कम चल पाई और हुई मुस्लिम कमांडर मा ज़ोंगयिंग और सूबाई शासक शेंग शिकाई ने उसे ख़त्म कर दिया। इसकी शुरूआत इस तरह हुई कि दक्षिणी शिंजियांग में एक शहर था खोतान Khotan है, यहां पर ज़्यादातर उइग़ूर लोग आबाद थे जो ज़्यादातर सोने के की खानों में काम करते थे। यह सुरघक Surghak खानें कहलाती थीं जो केरिया Keriya शहर के पास स्थित थीं जहां दो दरिया युरुनकाश Yurunkash और करकाश Karakash बहते थे।[528] इन खान-मजदूरों का अमीर इस्माईल ख़ान ख़ोजा Ismail Khan Khoja था। चुनांचे 1933 में खोतान शहर में इन उइग़ूर लोगों ने चीनी हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया और सारे सरकारी अफ़सरों को या तो भगा दिया या मार दिया और पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। इन लोगों का नेतृत्व तीन भाई कर रहे थे जिनके नाम हैं मुहम्मद अमीन ब़गरा, अबदुल्लाह ब़गरा और नूर अहमद जान ब़गरा Muhammad Amin Bughra, Abdullah Bughra and Nur Ahmad Jan Bughra. इन लोगों ने 16 मार्च 1933 को खोतान का चीन से आज़ादी का ऐलान कर दिया और खोतान इमारत Khotan Emirate के स्थापित होने का ऐलान कर दिया और तीनों ने अपने आपको अमीर घोषित कर दिया। एक उइग़ूर लीडर साबित दमोला

अबदुल बाकी Sabit Damolla Abdulbaki भी उनके सर्वोच्च नेताओं (Paramount Leader) में था। मुक़ामी चीनी सूबाई अधिकारियों और फौजियों को खोतान के खान-मजदूरों ने तबाह कर दिया, बहुत मुश्किल से कुछ ही चीनी अपनी जान, माल को बचा पाए, बहुत सों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। खोतान का पुराना शहर 28 फ़रवरी 1933 को थोड़े प्रतिरोध के बाद मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया, ताहम नए शहर का घिराओ करना पड़ा लेकिन 16 मार्च 1933 को उस ने भी हथियार डाल दिए। उस के क़िले में मौजूद 266 हान सिपाहियों को बख़्श दिया गया जिन्हों ने एक ख़बर के मुताबिक़ इस्लाम क़बूल कर लिया था। कई हज़ार राइफ़लें और लगभग एक टन सोना मुसलमानों के हाथ आया।[529]

तुर्क इस्लामी जमहूरीया पूर्वी तुर्किस्तान का गठन

खोतान इमारत ने जुलाई 1933 में दो लोगों को काशग़र काशग़र भेजा ताकि वो काशग़र में खोतान इमारत का एक ऑफ़िस खोलें यह थे अबदुल्लाह ब़गरा और साबित दमोला। इन लोगों ने काशग़र में हुकूमत का ऑफ़िस तो खोल लिया लेकिन कुछ ही महीनों बाद इन लोगों ने अपनी अलग हुकूमत क़ायम करने की ठान ली और खोतान इमारत से उनके रिश्ते न के बराबर रह गए। याद रहे कि 'पूर्वी तुर्किस्तान आज़ादी एसोसिएशन' Eastern Turkestan Independence Association पहले से चल रही थी और यह एक अख़बार भी निकाला करती थी जिसका नाम था इस्तिक़लाल Independence, शायद यह अख़बार साबित दमोला ही निकाला करता था क्यों कि उसकी भी एक प्रेस थी। चुनांचे 12 नवंबर 1933 को साबित दमोला ने 'तुर्क इस्लामिक रिपब्लिक

ऑफ ईस्ट तुर्किस्तान' Turkic Islamic Republic of East Turkestan (TIRET) की स्थापना का ऐलान कर दिया, उस को उइग़ूरिसतान गणराज्य Republic of Uyghuristan का नाम भी दिया गया। साबित दमोला ख़ुद वज़ीर-ए-आज़म बन गया और ख़ोजा नयाज़ को उस का सदर बिनाया गया। हालाँकि ख़ोजा नयाज़ उस वक़्त काशग़र में मौजूद नहीं था बल्कि अक्सू Aksu में उसने अपनी छोटी सी हुकूमत क़ायम कर ली थी और रूस से उसकी गठबंधन करने की बातचीत चल रही थी, याद रहे कि ख़ोजा नयाज़ पहले कुमूल ख़ानियत के शासक मक़सूद शाह का सलाहकार था। दर असल इस आंदोलन में ज़्यादातर हिस्सा लेने वाले रूस की 'जदीदी तहरीक' के लोग Jadidists थे जैसे
मकसूद मुहिती; एक जदीदवादी और महमूद मुहिती, यूनुस बेग, मसूद साबरी, शम्सुद्दीन दमोला वक्फ मामलों के मंत्री थे, जबकि खेती के वज़ीर अबुहसन और मुहम्मद अमीन ब़गरा थे, अब्दुलकरीम महसूम, सबित दमोला अब्दुलबाकी और अब्दुलकादिर दमोला थे।

Mahmud Muhiti, Yunus Beg and Maqsud Muhiti, a Jadidist. Shams al-Din Damolla was the Waqf affairs Minister while Agriculture Minister was Abuhasan, and Muhammad Amin Bughra, Shemsiddin Damolla, Abdulkerim Mehsum, Sabit Damolla Abdulbaki, and Abdulqadir Damolla.[530]



प्रथम पूर्वी तुर्किस्तान के नेता, साबित दमोला, दाएँ से तीसरे



TIRET के सेना अधिकारी

हुकूमत का राज तिलक



पूर्वी तुर्किस्तान का पहला तुर्की इस्लामी गणराज्य 12 नवंबर 1933 को काशगर में स्थापित किया गया था

हुकूमत के राज तिलक की रस्म 12 November 1933 को इतवार के दिन, काशग़र से बाहर, तूमान नदी Tuman River के किनारे आयोजित हुई जिसमें तक़रीबन 7000 फ़ौज और 13,000 जनता ने भाग लिया। इस में हुकूमत के वज़ीरों और मुख़्तलिफ़ ओहदेदारों के नाम भी ऐलान किए गए और दोपहर को 41 दफ़ा तोपों के धमाके कर के सलामी दी गई और इसके बाद सब लोग पुरानी ईदगाह की तरफ़ गए जहां पर नियुक्त लोगों ने तक़रीरें कीं जिसमें केन्द्रीय भाषण साबित दमोला का था।

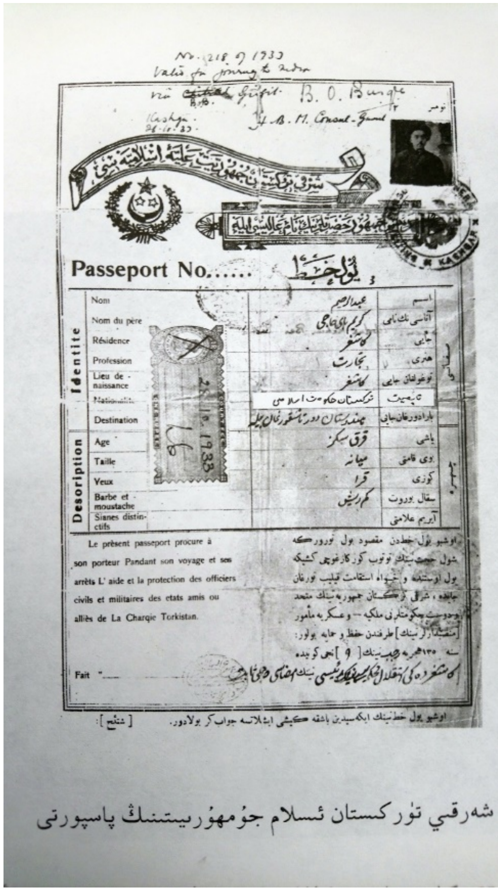
कहा जाता है कि यह हुकूमत पान इस्लामी तहरीक Pan-Islamism से प्रभावित थी और जिन लोगों ने यह हुकूमत स्थापित की उनके पास आधुनिक शिक्षा थी और उनमें से बहुत से लोगों ने विदेशों, रूस, तुर्की, इंग्लिस्तान और अरब देशों में शिक्षा हासिल की थी। इस हुकूमत में शरिया क़ानून लागू करने की कोशिश गई और बहुत से सुधार और निर्माण कार्य भी किए गए। मसलन स्कूल और अस्पताल खोले गए और आर्थिक सुधार गए। इन लोगों ने हान, हुई और रूसी तीनों को अपना दुश्मन क़रार दिया। चुनांचे हुकूमत की स्थापना के वक़्त साबित दमोला ने जो घोषणापत्र जारी किया उस को 'तुर्किस्तान की आज़ादी का ऐलान' Turkestan Declaration of Independence कहा जाता है। इस में यह लिखा था कि हान से ज़्यादा डुंगन (हुई) हमारे दुश्मन हैं। आज हमारे लोग हान के जबर से आज़ाद हैं लेकिन फिर भी डुंगन के ग़ुलाम हैं। हम अब भी हान से डरते हैं, लेकिन डुंगन से बे-ख़बर नहीं रहना चाहिए। हमें डुंगन से होशियार रहना चाहिए और उनका जोरदार विरोध करना चाहिए। हमें उनसे नरमी से पेश नहीं आना चाहिए, क्योंकि डुंगन ने ही हमें इस रास्ते पर चलने पर मजबूर किया है। पीले हान लोगों का पूर्वी तुर्किस्तान से कोई संबंध नहीं है। काले डुंगन का भी कोई संबंध नहीं है। पूर्वी तुर्किस्तान का संबंध सिर्फ तुर्क जाति के लोगों से है। विदेशियों को हमारे बाप और माएं बनने की ज़रूरत नहीं है। अब से हमें विदेशियों की ज़बान या उनके नाम, उनके रस्म-ओ-रिवाज, आदात, रवैय्ये, भाषा वग़ैरह इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं है, हमें अपने इलाक़े से हमेशा के लिए विदेशियों को उखाड़ फेंकना होगा। पीले और काले रंग गंदे हैं। उन्होंने

हमारी ज़मीन को लम्बे समय से गंदा किया है। इसलिए अब इस गंदगी को साफ़ करना बहुत ज़रूरी है।[531] पीले और काले वहशियों को भगाओ। पूर्वी तुर्किस्तान, ज़िंदाबाद।[532] इस के बाद उन्होंने हान और हुई पर हमले शुरू कर दिए। उन्होंने चीनी हुकूमत के दफ़्तरों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया और उसके खज़ाने और हथियार भी अपने क़ब्ज़े में कर लिए इस तरह उनको कई हज़ार राइफ़लें और एक टन सोना हाथ आया।

उन लोगों ने अपनी हुकूमत को 9 बिंदुओं पर स्थापित किया वो यह थे।

- पूर्वी तुर्किस्तान को चीन की तानाशाही हुकूमत से आज़ादी दिलाना।
- एक आज़ाद पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत क़ायम करना, जिसमें सब लोगों को बराबरी का हक़ हासिल होगा।
- हुकूमत में मआशी इस्लाहात (आर्थिक सुधार) और विकास कार्य करना, तिजारत, खेती और मवेशी पालन को बड़ावा देना ताकि लोगों के माली हालात बेहतर हों और ख़ुशहाली आए।
- देश में शिक्षा, सेहत और समाजी तरक़्क़ी के लिए काम करना।
- चूँकि देश में अक्सर लोग इस्लाम के मानने वाले हैं इस लिए हुकूमत को भी इस्लाम की वकालत करनी चाहिए लेकिन साथ ही दूसरे धर्म के मानने वालों को भी पूरे अधिकार हासिल होंगे।
- दूसरे देशों से संबंध बेहतर और ख़ुशगुवार बनाना ख़ासकर बर्तानिया, रूस, तुर्की और चीन से।

- देश में शांति स्थापित करने के लिए एक मज़बूत फ़ौज बनाई जाएगी जिसमें हर जाति और धर्म के लोगों को शामिल किया जाएगा।
- बैंक, डाक सर्विस, टेलीफ़ोन और टेलीग्राम और जंगलात और ज़ेर-ए-ज़मीन खज़ाने सब हुकूमत की संपत्ति होंगे।
- हुकूमती दफ़ातिर से बदउनवानी, भाई-भतीजावाद, सांप्रदायिकता और नौकरशाही को ख़त्म किया जाएगा।
- इसी के साथ ही हुकूमत ने दूसरे देशों से अपने वजूद और सत्ता को मनवाने की भी मुहिम शुरू कर दी और इस मक़सद के लिए प्रधान मंत्री साबित दमोला ने अपने सरकारी राजदूत रूस, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुर्की और बर्तानवी हिन्दुस्तान भेजे। लेकिन किसी भी देश ने उसके वजूद को स्वीकार न किया, क्यों कि कोई भी रूस और चीन जैसे मुल्कों से दुश्मनी लेना नहीं चाहता था। उनका वफ़द अफ़ग़ानिस्तान के सदर मुहम्मद ज़ाहिर शाह और प्रधान मंत्री सरदार मुहम्मद हाशिम ख़ान से भी मिला और उनसे हथियार देने का भी मुतालबा किया लेकिन उन्होंने भी कोई मदद न की क्यों कि सबको यह अंदाज़ा था कि यह हुकूमत ज़्यादा दिन तक नहीं चल पायेगी।


No. 218 of 1933
Valid for journey to India
via Gilgit. B. O. Burge
Kashgar.
26-10-33.
H. B. M. Consul-General

Passeport No.......

Nom	ئىسىم
Nom du père	ئاتاسى نىڭ نامى
Résidence	جايى
Profession	ھنرى
Lieu de naissance	توغولغان جايى
Nationalité	تابعيت
Destination	باراۋدورغان جايى
Age	ياشى
Taille	بوى قامتى
Yeux	كوزى
Barbe et moustache	سقال بوروت
Signes distinctifs	آيريم علامتى

Le présent passeport procure à son porteur Pandant son voyage et ses arrêts L' aide et la protection des officiers civils et militaires des etats amis ou alliès de La Charqie Torkistan.

Fait

شەرقىي تۈركىستان ئىسلام جۇمھۇرىيىتىنىڭ پاسپورتى

पहले पूर्वी तुर्किस्तान पासपोर्ट का पहला पृष्ठ

केबिनेट

पूर्वी तुर्किस्तान के तुर्की इस्लामी गणराज्य के मंत्रिमंडल के सदस्य

Portfolio	**Minister**	**अधिकारी**	**पद**
President	Khoja Niyaz	ख़ोजा नयाज़	अध्यक्ष
Prime Minister	Sabit Damolla	सबित दमोला	प्रधानमंत्री
Minister of Foreign Affairs	Muhammad Qasim Jan	मुहम्मद कासिम जान	विदेश मंत्री
Minister of Justice	Sharif Qari	शरीफ़ कारी	न्याय मंत्री
Minister of Interior	Yunus Beg	यूनुस बेग	ग्रह मंत्री
Minister of Health	Abdullah Khan	अब्दुल्ला खान	स्वास्थ्य मंत्री
Minister of Defence	Mahmut Muhiti	महमूद मुहिती	रक्षा मंत्री
Minister of Education	Abd al-Karim Khan Makhdum	अब्द अल-करीम खान मखदूम	शिक्षा मंत्री
Minister of Finance	Ali Akhund Bay	अली अखुंद बे	वित्त मंत्री
Minister of Religious Institutions	Shams al-Din Turdi	शम्सुद्दीन तुरदी	धार्मिक संस्थाओं के मंत्री
Minister of Trade and Commerce	Sadiq Beg	सादिक़ बेग	वाणिज्य मंत्री
Emir of Khotan	Nur Ahmadjan Bughra	नूर अहमदजान ब़गरा	अमीर खोतान
Minister of Communications	Abdullah Damullah	अब्दुल्ला दमोला	संचार मंत्री
President of the National Assembly	Tahir Beg	ताहिर बेग	नेशनल असेंबली के अध्यक्ष
Secretary of the National Assembly	Sufi Zada	सूफी ज़ादा	सचिव नेशनल असेंबली

फ़ौज का गठन

इस्लामी जमहूरिया पूर्वी तुर्किस्तान की क़ौमी फ़ौज 12 नवंबर 1933 को बनाई गई और यह असल में दो डिवीज़नों (तक़रीबन 22,000 फौजियों) पर आधारित थी, 'काशग़र इन्फेंट्री डिवीज़न (पैदल सेना)' Qeshqer infantry division जो राजधानी काशग़र में तैनात थी और 'खोतान इन्फेंट्री डिवीज़न' Khotan Infantry Division जो खोतान में तैनात थी। शुरू में यह फ़ौज कमज़ोर और ग़ैर तरबियत याफता (अप्रशिक्षित) थी और हथियार भी थोड़े थे। इसलिए कैडेटों cadets को प्रशिक्षण देने के लिए अरतुश Artush में एक मिलिट्री एकेडमी स्थापित की गई। तमाम तुर्क जातियों से मुतालबा किया गया कि वो हथियार उठाएं और क़ौमी फ़ौज में शामिल हो जाएं। फ़ौज का कमांडर तुरपान के एक उइग़ूर महमूद मुहीती को बनाया गया। बाद में इस की तादाद एक अंदाज़े के मुताबिक़ 40,000 से 60,000 के दरम्यान हो गई और 6 इनफ़नटरयां infantries हो गईं जिनके नाम यह हैं.

1. काशग़र इन्फेंट्री डिवीज़न
2. खोतान इन्फेंट्री डिवीज़न
3. अक्सू शहसवार ब्रिगेड
4. कुमूल इन्क़िलाबी रेजिमेंट (बाद में एक डिवीज़न बन गई)
5. तुरपान इन्क़िलाबी ब्रिगेड (बाद में तुरपान डिवीज़न बन गया)
6. अल्ताई इन्क़िलाबी शहसवार ब्रिगेड.

बाद में जंग के दौरान एक अंदाज़े के मुताबिक़ 300,000 से 500,000 तुर्क शहरी मारे गए। अगरचे यह यक़ीनी नहीं है कि जंग में TIRET के कितने फ़ौजी मारे गए, लेकिन एक अंदाज़े के मुताबिक़ तक़रीबन 50,000 से 70,000 फ़ौजी मारे गए। लड़ाईयों में कई दफ़ा पूरी कंपनियों और ब्रिगेडों का सफ़ाया हो गया। जब 1934 में TIRET को ख़त्म किया गया तो फ़ौज को भी ख़त्म कर दिया गया, सिवाए 6 वें उइग़ूर डिवीज़न के जिस का नेतृत्व महमूद मुहीती कर रहा था।[533]

पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत का ज़वाल

यह हुकूमत क़ायम तो हो गई लेकिन यह अपने दुश्मनों से घिरी हुई थी। जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है कि यह लोग हान, हुई और रूस तीनों को अपना दुश्मन मानते थे लेकिन तीनों से कमज़ोर थे। इस लिए तीनों ताक़तों ने उन पर मुख़्तलिफ़ सम्तों से हमला किया, हालाँकि तीनों आपस में भी दुश्मन थे। ऊपर बयान किया जा चुका है कि 1933 में मा ज़ोंगयिंग उरुमची की जंग में ज़ख़्मी हो कर गान्सू वापस लौट गया था लेकिन कुछ ही महीनों के बाद वो दोबारा वापस शिंजियांग आया लेकिन इस बार उसकी फ़ौज का नेतृत्व अलग अलग समय में अलग अलग जनरल कर रहे थे जैसे मुस्लिम जनरल मा ज़ानचांग, मा शी-मिन Ma Shih-min, मा फ़ूयुआन Ma Fuyuan, मा हूशान Ma Hushan वग़ैरह।

तीन ताक़तों की कशमकश

याद रहे कि शिंजियांग उस ज़माने में तीन ताक़तों का तख़्ता मश्क़ (केन्द्र) बना हुआ था एक शेंग शिकाई की ताक़त थी जिसकी पुश्तपनाही रूस कर रहा था और दूसरी ताक़त मा ज़ोंगयिंग की थी जिसकी पुश्तपनाही चीन की लोकतांत्रिक हुकूमत यानी चियांग काई शेक की क्योमिनटांग कर रही थी। मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज क्योमिनटांग आर्मी का 36 वां डिवीज़न 36th division of Kuomintang army 36 कहलाती थी, तीसरी ताक़त थी पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत, यह तीनों ताक़तें आपस में लड़ रही थीं और शिंजियांग पर अपना क़ब्ज़ा जमाना चाहती थीं, लेकिन इन तीनों में सबसे ज़्यादा कमज़ोर पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत थी इस लिए सबसे पहले यही ख़त्म हुई। इन तीनों ताक़तों के बीच कई जंगें हुईं जैसे क़िज़िल नरसंहार, अक्सू की जंग, सेकेस ताश की जंग, काशग़र पहली जंग 1933, टोकसुन की जंग, काशग़र की दूसरी जंग 1934, यंगीसार की जंग, यरकंद की जंग, चार क्लीक़ का विद्रोह वग़ैरह। इन जंगों के नतीजे में बिल-आख़िर पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत ख़त्म हो गई लेकिन इन जंगों में सबसे बड़ी लड़ाई काशग़र की दूसरी जंग थी जो फ़ैसलाकुन (निर्णायक) जंग साबित हुई और इसके बाद पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत बे-जान हो कर रह गई बल्कि ख़त्म सी हो गई। तो आइए हम मुख़्तसर तौर पर इन जंगों का थोड़ा थोड़ा ज़िक्र कर देते हैं।

रूस का दृष्टिकोण

दूसरी तरफ़ रूस भी अपने बराबर में एक मुस्लिम हुकूमत नहीं बनने देना चाहता था। चुनांचे 1933 में पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत के गठन के बाद रूस ने शिंजियांग में अपना नया काउंसिल जनरल नियुक्त किया जिसका नाम था गारेगिन अप्रेसोव Garegin Apresov. उसने शेंग को इन अलफ़ाज़ में आगाह किया 'आप सूबे को तरक़्क़ी दे सकते हैं और मुख़्तलिफ़ क़ौमियतों (जातियों) के लोगों के हालात-ए-ज़िंदगी को बेहतर बना सकते हैं, उनकी संस्कृति (culture) को तरक़्क़ी दे सकते हैं। लेकिन अगर आप उन्हें (मुसलमानों को) सूबे के दक्षिण में एक आज़ाद रियासत बनाने देते हैं, जिससे सोवियत यूनियन के पिछले दरवाज़े पर दूसरा मंचूरिया क़ायम हो जाएगा, तो हम सिर्फ खड़े रह कर तमाशा नहीं देखेंगे, बल्कि कार्रवाई करेंगे'। गारेगिन अप्रेसोव के कहने पर ही शेंग ने जर्नल पप्पेनगुट Pappengut को सज़ा-ए-मौत दे दी जो सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज का कमांडर था और रूस का बड़ा दुश्मन था ताकि शिंजियांग में रूस का दाख़िला आसान हो जाए। और इस की जगह क़दरे सुलझा हुआ जनरल बेक्तेयेव Bekteyev को सफ़ैद फ़ाम रूसियों का कमांडर बना दिया।

शिंजियांग पर रूसी आक्रमण

Russian invasion on Xinjiang

(टूटुंग की जंग Battle of Tutung)

जनवरी 1934 की इस लड़ाई को रूस की चढ़ाई Russian invasion on Xinjiang के नाम से भी जाना जाता है और उरुमची की दूसरी जंग Second Battle of Urumqi के नाम से भी जाना जाता है और टूटुंग की जंग Battle of Tutung के नाम से भी जाना जाता है। इस का जिक्र ऊपर भी आ चुका है। इस लड़ाई में मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज ने शेंग शिकाई को लगभग हरा ही दिया था और वो उरुमची शहर में दाख़िल होने ही वाले थे कि शेंग ने टेलीग्राम के ज़रिये रूस से मदद तलब की।[534] रूस ने शेंग की मदद करते हुए मा की फ़ौज पर टूटुंग Tutung नदी के किनारे हमला कर दिया। रूसी फ़ौज का नेतृत्व जनरल वोलगन Gen. Volgin कर रहा था। चुनांचे बिल-आख़िर मा ज़ोंगयिंग को उरुमची में शिकस्त हुई।

ख़्वोजा नयाज़ की आमद

13 जनवरी 1934 को ख़्वोजा नयाज़ 1500 फौजियों के साथ पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत TIRET की सदारत सँभालने के लिए काशग़र पहुंचा, यह शेंग के साथ मुआहिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी थी। उस के साथ पूर्वी शिंजियांग (तुरपान, कुमूल) से संबंध रखने वाला एक और प्रभावशाली उइग़ूर नेता महमूद मुहीती भी था, जिसे महमूद शीज़ांग के नाम से भी जाना जाता है, यानी डिवीज़न

जनरल। महमूद मुहीती, प्रधान मंत्री साबित दमोला की पेशकश को क़बूल करते हुए, TIRET का रक्षा मंत्री और फ़ौजी कमांडर बन गया। साबित दमोला ने ख़ोजा नयाज़ के लिए पुराने शहर काशग़र में अपना महल ख़ाली कर दिया, जो पूर्व यामेन Yamen था और उस से हुकूमत बनाने की विनती की। पहले यह महल दक्षिणी शिंजियांग के चीनी शासक की रिहायश हुआ करती थी। याद रहे चीन में सरकारी बंगले या रिहायश को यामेन कहा जाता है। बाद में नानजिंग की केंद्र सरकार को लिखे गए अपने ख़त में ख़ोजा नयाज़ ने अपने फ़ैसले की सफ़ाई इन अलफ़ाज़ में दी 'कि मैं ने पूर्वी तुर्किस्तान की जनता की कांग्रेस के फ़ैसले को अपनी स्वतंत्र इच्छा और पसंद के से क़बूल किया और यह कि चीनी लोकतंत्र का 1912 का संविधान चीन की पाँच नसलों को अपनी ख़ुद की हुक्मरानी (स्वभाग्यनिर्णय) self-determination का हक़ देता है'। उसने लोकतंत्र की ख़ुद की हुक्मरानी के पाँच उसूल बताए।

1. तमाम शिंजियांग पूर्वी तुर्किस्तान रीपब्लिक का हिस्सा है, जब कि जिनका संबंध तुर्क जाति से नहीं है, उन सबको जहां से वो आए थे, वापस चले जाना चाहिए।
2. सरकार और अर्थव्यवस्था मुक़ामी लोगों के ज़रिये चलाई जाएगी।
3. तमाम मज़लूम लोग, जो अब पूर्वी तुर्किस्तान में मुक़ीम हैं, उनको शिक्षा, तिजारत और एक नई क़ौम की तामीर की आज़ादी होगी।
4. जमहूरीया के सदर, ख़ोजा नयाज़, जनता की ख़ुशी के लिए वक़्फ़, हुकूमत बनाएंगे।

5. जमहूरीया अपने मुख़्तलिफ़ महकमों के साथ दूसरे आधुनिक देशों के बराबर आने कोशिश करेगी।

ख़ोजा नयाज़ ने पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरीया का नया झंडा बनाया, जिसे कोक बयराक Kok Bayraq या ब्लयू बैनर कहा जाता है, जो तुर्की के झंडे से मिलता-जुलता था लेकिन सुर्ख़ के बजाय नीले रंग के पस-ए-मंज़र के साथ था।

अक्सू की जंग

यह एक छोटी सी जंग थी जो 31 मई 1933 को लड़ी गई जिसमें हुई फ़ौज को उइग़ूर फ़ौज ने अक्सू से भगा दिया था और उइग़ूर फ़ौज का नेतृत्व इस्माईल बेग कर रहा था जो अक्सू का टाओयिन Tao-yin था, टाओयिन गवर्नर को कहा जाता था।[535]

चर्चान विद्रोह

चर्चान Charchan में उइग़ूर लोगों ने डुंगन फ़ौज के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। खोतान के अमीर ने चर्चान की रक्षा के लिए डुंगन फ़ौज के ख़िलाफ़ कारा शहर से 100 आदमियों पर आधारित फ़ौज भेजी।[536] उस वक़्त डुंगन फ़ौज की हुकूमत कारग़ालिक Karghalik इलाक़े पर थी। बिल-आख़िर 11, अप्रैल 1933 को गूमा Guma, कारग़ालिक Karghalik, पोसगाम Posgam और क़दीमी यरकंद शहर Old City in Yarkand, उइग़ूर फ़ौज के क़ब्ज़े में आगए।[537]

टोकसुन की जंग

यह एक छोटी सी जंग थी जो जुलाई 1933 में टोकसुन के मुक़ाम पर हुई। जब ख़ोजा नयाज़ जो उइग़ूर फ़ौज का जनरल था उसने 4 जून 1933 को शेंग शिकाई से एक मुआहिदा कर के गठबंधन कर लिया, इसके नतीजे में शेंग ने ख़ोजा नयाज़ को तरीम बेसिन, तुरपान और कुमूल इलाक़ों का शासक बना दिया। इस मुआहिदे में यह भी तै हुआ था कि दोनों मिलकर मा ज़ोंगयिंग के 36 वें डिवीज़न से लड़ेंगे चुनांचे ख़ोजा नयाज़ ने टोकसुन और तुरपान इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया लेकिन हुई फ़ौज ने मा शी मिंग Ma Shih-ming के नेतृत्व में उसे भारी शिकस्त दी और ख़ोजा नयाज़ की फ़ौज पसपा हो कर कारा शहर और पूर्वी काशग़रिया अपने केंद्र की तरफ़ वापस आगई।[538] इस को टोकसुन की जंग Battle of Toksun कहा जाता है। यह एक नाकाम कोशिश थी हुई फ़ौज की दक्षिण की तरफ़ पेशक़दमी रोकने की।[539]

सेकेस ताश की जंग Battle of Sekes Tash

यह भी एक छोटी सी जंग थी जो 1933 में हुई। इस में एक तरफ़ 36 वां डिवीज़न था जिसका नेतृत्व मा ज़ानचांग कर रहा था और दूसरी तरफ़ उइग़ूर और किर्गीज़ फ़ौज थी। इस जंग में मा ज़ानचांग ने अपने विरोधियों को सेकेस ताश के मुक़ाम पर शिकस्त दी।[540]

क़िज़िल नरसंहार Kizil massacre

क़िज़िल नरसंहार वाक़िया जून 1933 में हुआ जब पूर्वी तुर्किस्तान की फ़ौज के उइग़ूर और तुर्क फौजियों ने मुआहिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए हुई मुस्लिम फौजियों को धोके से क़त्ल कर दिया जब वो लोग यरकंद शहर से काशग़र की तरफ़ वापस लौट रहे थे। इस लड़ाई में 800 हुई मुस्लिम मारे गए इस वाक़े के बाद हुई और उइग़ूर लोगों में दुश्मनी हमेशा के लिए क़ायम हो गई हालाँकि दोनों मुसलमान थे। कहा जाता है कि एक साल बाद जो काशग़र की दूसरी जंग हुई तो इस में हुई फ़ौज ने पूर्वी तुर्किस्तान का पूरी तरह सफ़ाया कर दिया। यह जंग क़िज़िल नरसंहार का ही बदला थी।

बदलते गठबंधन

काशग़र की पहली जंग से पहले एक तरफ़ उइग़ूर और किर्गीज़ फ़ौजें थीं और दूसरी तरफ़ हुई फ़ौज थी जिसका जनरल मा ज़ानचांग था। इस में उइग़ूर फ़ौज का नेतृत्व तौफ़ीक़ बे, उस्मान अली और ब्गरा बिरादरान कर रहे थे ताहम इस में उइग़ूर फ़ौज को शिकस्त हुई। यह जंग इस वजह से हुई कि उइग़ूर फ़ौज काशग़र के नए शहर पर क़ब्ज़ा करना चाहती थी जिसको हुई फ़ौज ने बसाया था। कहा जाता है कि तैमूर बेग का संबंध तुर्क राष्ट्रवादी Turkic nationalist, नौजवान काशग़र जमात Young Kashgar Party से था। चुनांचे तैमूर बेग ने ख़ुद को तैमूर शाह 'Timur Shah" का लक़ब दिया था। शुरू में मा ज़ानचांग और तैमूर बेग इत्तिहादी (मित्र) थे, लेकिन हुआ यह कि किर्गीज़ की नई फ़ौज

जो उस्मान अली के नेतृत्व में थी वो पहले मा शाओवू से गठबंधन रखती थी लेकिन बाद में वो तैमूर बेग से जा मिली। याद रहे मा शाओवू एक हुई मुस्लिम कमांडर था लेकिन वो जिन शूरेन और शेंग शिकाई के लिए काम करता था, इसी दौरान मा ज़ानचांग जो तैमूर बेग का आदमी था वो मा शाओवू से जा मिला। तीसरी तरफ़ ज़ांग पी युआन जो जिन शूरेन का आदमी था वो मा ज़ोंगयिंग से जा मिला।

मा ज़ानचांग और तैमूर बेग

इसी दौरान दक्षिणी शिंजियांग में मा ज़ानचांग Ma Zhancang (馬占倉) की हुई फ़ौज और तैमूर बेग की उइग़ूर फ़ौज ने गठबंधन कर लिया, और बग़ैर किसी मुज़ाहमत के कूचा पर क़ब्ज़ा कर लिया और अक्सू की तरफ़ आगे बढ़ा। रास्ते में एक छोटे क़स्बे बाईचैंग Baicheng पर भी क़ब्ज़ा किया। याद रहे मा ज़ानचांग, मा ज़ोंगयिंग की मातहत फ़ौज का एक जनरल था। 25 फ़रवरी 1933 को मुस्लिम फ़ौज अक्सू के पुराने शहर में दाख़िल हुईं, तमाम चीनी बाशिंदों को गोली मार दी गई और उनकी संपत्तियों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। ऐसा लगता है कि यह तैमूर बेग के आदमियों का काम था, क्योंकि मा ज़ानचांग की हुई (डुंगन) फ़ौज ने अक्सू पर शांतिपूर्ण तौर पर क़ब्ज़ा किया था। मा ज़ानचांग ने हथियारों और ख़ज़ाना दोनों पर क़ब्ज़ा कर के उस सामान को डुंगन हेडक्वार्टर कारा शहर भेज दिया। इस के बाद मा ज़ानचांग ने तक़रीबन 300 मुसल्लह (हथियारबंद) डुंगन फौजियों और तैमूर बेग ने 4,700 अप्रशिक्षित और अपर्याप्त हथियारों से लैस उइग़ूर फ़ौज के साथ मारलबाशी और काशग़र की तरफ़ पेशक़दमी की। 13,

अप्रैल 1933 को दक्षिणी शिंजियांग में चीनी प्रशासन के अध्यक्ष मा शाओवू ने चीनी ब्रिगेडियर यांग Chinese Brigadier Yang को हुक्म दिया कि वो मारलबाशी का मोर्चा छोड़कर फ़ौज के साथ काशग़र वापस चला जाए क्योंकि दक्षिणी शिंजियांग में हालात तेज़ी से बिगड़ रहे हैं। इस से पहले 25 फ़रवरी 1933 को मा शाओवू ने काशग़र में मौजूद बर्तानवी काउंसिल जनरल एन. फिट्ज़मौरिस N. Fitzmaurice (जो मई 1922 से जुलाई 1922 तक और दोबारा सितंबर 1931 से नवंबर 1933 तक शिंजियांग में तैनात रहा) के ज़रिये हिन्दुस्तानी बर्तानवी हुकूमत से विनती की, कि वो चीनी फ़ौज की मदद के लिए शिंजियांग में फ़ौज भेजे लेकिन बर्तानवी हुकूमत ने इनकार कर दिया। इस लिए अब यह स्पष्ट हो चुका था कि चीनी फ़ौज के पास कोई बाहरी मदद नहीं आ रही क्यों कि उइग़ूर फ़ौज ने पहले ही अक्सू में टेलीग्राम की लाइन काट दी थी जो काशग़र और उरुमची के बीच संपर्क का काम करती थी। इसी दौरान ब्रिगेडियर यांग की 1000 फ़ौज पर उइग़ूर फ़ौज ने हमला कर दिया जिनमें से सिर्फ 65 लोग बच कर 27 अप्रैल को काशग़र वापस पहुंच पाए। इस के बाद उइग़ूर फ़ौज ने जिसके साथ मा ज़ानचांग की फ़ौज भी थी काशग़र का घिराओ कर लिया। लेकिन यहां यह हुआ कि जनरल मा ज़ानचांग Ma Zhancang ने ख़ुफ़िया तौर पर मा शाओवू Ma Shaowu से उइग़ूर फ़ौज के ख़िलाफ़ गठबंधन कर लिया, क्यों कि इन दोनों का संबंध डुंगन जाति से था, जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि क़िज़िल नरसंहार के बाद दोनों नसलों में नफ़रत बहुत बढ़ गई थी। चुनांचे जब मा ज़ानचांग अंदर ख़ाने मा शाओवू से जा मिला जिसकी ख़बर

तैमूर बेग को नहीं थी, तो जंग से पहले ही मा ज़ानचांग ने उइग़ूर कमांडर तैमूर बेग पर 9 अगस्त 1933 को धोके से हमला करके क़त्ल कर दिया और उसका सर काट कर काशग़ार की ईद-गाह पर लटका दिया। इस के बाद तैमूर बेग के बचे कुचे फ़ौजी तौफ़ीक़ बे Tawfiq Bey के मातहत एकजुट होने लगे और किर्गीज़ लोग उस्मान अली Uthman Ali के मातहत। स्वर्गीय तैमूर बेग के फौजियों ने मा ज़ानचांग की छावनी पर दोबारा हमले शुरू कर दिए। उधर ब्रिगेडियर यांग की चीनी फ़ौजी मा ज़ानचांग की फ़ौज में शामिल हो गई। 36 वें डिवीज़न के मा ज़ानचांग यूनिट के कई अफ़सरों को हरा यूनिफ़ॉर्म पहने हुए देखा गया, शायद उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया था।

काशग़ार की पहली जंग

चुनांचे 26 अगस्त 1933 को काशग़ार की जंग हुई जिसमें मा ज़ानचांग को जीत मिली और 26सितंबर 1933 को ही तौफ़ीक़ बे Tawfiq Bey ने मा ज़ानचांग की फ़ौज पर दूसरा हमला किया लेकिन यह हमला भी मा ज़ानचांग ने नाकाम बना दिया और तौफ़ीक़ बे के पेट में गोली लगी।[541] तौफ़ीक़ बेग एक शामी (Syrian) अरब मुसलमान था जिसको 'बे ज़ादा' भी कहा जाता था, यह अगस्त 1933 में शिंजियांग आया था ताकि उइग़ूर लोगों की इस्लामी हुकूमत क़ायम करने में मदद कर सके। बाद में 1934 में जब काशग़ार की दूसरी जंग में मा ज़ानचांग ने पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत को पूरी तरह ख़त्म कर दिया तो तौफ़ीक़ बे अफ़ग़ानिस्तान चला गया और वहां पर उसने जापानी राजदूत कितादा मासामोटो Kitada Masamoto से भी राब्ता किया और वो थोड़े दिन जापान भी रहा।[542]

पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत का ख़ातमा

जैसा कि ऊपर बयान किया जा चुका है कि 1934 में काशग़र की यह दूसरी जंग ही थी जो निर्णायक जंग साबित हुई और इसके बाद पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत बे-जान हो कर रह गई बल्कि ख़त्म सी हो गई। इस जंग का कारण यह था कि कुछ दिन पहले पूर्वी तुर्किस्तान के उइग़ूर और तुर्क फौजियों ने मुआहिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए, हुई मुस्लिम फौजियों को धोके से क़त्ल कर दिया था जब वो लोग यरकंद शहर से काशग़र की तरफ़ वापस लौट रहे थे, इस को क़िज़िल नरसंहार Kizil massacre कहा जाता है। इसकी वजह से हुई फ़ौज में उइग़ूर और तुर्क फौजियों के ख़िलाफ़ बहुत गुस्सा था ओर वह बदला लेने का मोक़ा तलाश कर रहे थे। चुनांचे 1933 में जब काशग़र की पहली जंग हुई थी जिस में मा ज़ानचांग ने काशग़र पर कब्जा कर लिया था तो ख़ोजा नयाज़ 13 जनवरी 1934 को अपनी 1500 फौजियों पर आधारित फ़ौज लेकर पहुंचा और मा ज़ानचांग का घिराओ कर के हमले शुरू कर दिए। यह घिराओ लगभग साढ़े पाँच महीने जारी रहा। मा ज़ानचांग ने ख़ोजा नयाज़ की उइग़ूर फ़ौज के 6 हमलों को नाकाम बनाया। लेकिन वो इस घिराओ को तोड़ने में नाकाम रहा, इस लिए हुई फ़ौज जो बाहर थी उसने मा फ़ूयुआन General Ma Fuyuan के नेतृत्व में उइग़ूर और तुर्क फ़ौज पर हमला कर के उसको शिकस्त दी और मा ज़ानचांग की फ़ौज को छुड़ा लिया। ये जंग 6 फ़रवरी 1934 में हुई यह काशग़र की दूसरी जंग कहलाती है जिस में पहली पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत का ख़ातमा हो गया। यह युद्ध असल में क़िज़िल नरसंहार का बदला था।। चुनांचे 36 वें डिवीज़न का

प्रमुख मा ज़ोंगयिंग 7 अप्रैल 1934 को काशग़र आया और ईद-गाह में उसने तक़रीर की और उइग़ूर जनता से मुतालबा किया कि वो चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत (चियांग काई शेक) के वफ़ादार रहें जिस की राजधानी नानजिंग है। इस जंग में 2000 से 8000 उइग़ूर जनता भी मारी गई और सैकड़ों बर्तानवी शहरी और अफ़सरान को भी हुई फ़ौज ने मौत के घाट उतार दिया।[543] शिकस्त खा कर उइग़ूर और तुर्क फ़ौज हर-दिशा में फ़रार हो गए जैसे यंगीसार, यरकंद, उपल और अरतुश के इलाक़ों में।[544] ख़ोजा नयाज़, साबित दमोला और बाक़ी हुकूमत के लोग 6 फ़रवरी 1934 को दक्षिण में यंगीसार की तरफ़ फ़रार हो गए। विजयी हुई फ़ौज ने बाक़ी रह जाने वालों में से बहुत से लोगों को मार डाला, और शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया, इस तरह पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत अपने अंजाम को पहुंची। इस के बाद भी पूर्वी तुर्किस्तान के हारे हुए लोग बार-बार मा ज़ोंगयिंग की फ़ौज पर हमले करते रहे और अपने खोए हुए इलाक़े वापस लेने की कोशिश करते रहे इस लिए कई जंगें हुई जिनका आगे ज़िक्र किया जाएगा।

ख़ोजा नयाज़ की ग़द्दारी

महमूद मुहीती बची कुची फ़ौज के साथ यरकंद और खोतान की तरफ़ पीछे हट गया, जब कि ख़ोजा नयाज़ अरतुश से सोवियत सीमा इरकेशतम की तरफ़ भाग गया, डुंगन फ़ौज उस का पीछा कर रही थी, जिस ने रूस की सीमा तक उस का पीछा किया। ख़ोजा नयाज़ ने रूस में पनाह ली, जहां पर सोवियत यूनियन ने उस पर साबित दमोला से TIRET (पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत) के पहले

सदर का ओहदा क़बूल करने का इल्ज़ाम लगाया। ताहम उन्होंने ख़ोजा नयाज़ से वादा किया कि अगर वो पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत ख़त्म करने में रूस और शेंग की मदद करेगा, तो उस को भविष्य में बड़े अवसर (opportunities) दिए जाएंगे।

चुनांचे ख़ोजा नयाज़ ने TIRET को ख़त्म करने और उस की फ़ौज को जिसमें खोतान और किर्गीज़ फ़ौज शामिल थी, को बरख़ास्त करने का मुआहिदा कर लिया। यह मुआहिदा इरकेशतम के मुक़ाम पर हुआ और इस मुआहिदे का नोटिस वज़ीर-ए-आज़म साबित दमोला को 1 मार्च 1934 को मिला जब वो यंगीसार में था। फ़ौरन कैबिनेट की स्पेशल मीटिंग बुलाई गई जहां पर इस की ख़बर दी गई और इस पर बहस हुई। सब लोगों ने सदर ख़ोजा नयाज़ की निंदा की और उस को 'क़ौमी ग़द्दार' का लक़ब दिया। साबित दमोला ने इजलास में कहा, ख़ोजा नयाज़ अब इस्लाम का चैंपियन नहीं रहा, अब वो रूसियों का एक एजेंट बन चुका है जिससे वो हमारे देश को तोड़ सकें। रूस ने ख़ोजा नयाज़ को अपनी वफ़ादारी का सबूत देने के लिए उस से मुतालबा किया कि वो किसी तरह TIRET के सोवियत मुख़ालिफ़ वज़ीर-ए-आज़म साबित दमोला को उस के पास ले आए चुनांचे ख़ोजा नयाज़ धोके से, साबित दमोला और दूसरे लोगों को रूस के पास ले गया, तो रूस ने दमोला और इस के साथियों को क़त्ल करा दिया।

मुसलमानों के आपसी इख़्तिलाफ़ का अंजाम

पहली मशरिक़ी तुर्किस्तान हुकूमत के ख़ातमे के बाद जनवरी 1934 में शेंग शिकाई और मा ज़ोंगयिंग में जंग हुई जिसमें रूस ने शेंग की मदद करते हुए मा ज़ोंगयिंग को शिकस्त दी, जिसको रूस की चढ़ाई कहा जाता है। इस तरह रूस ने मा ज़ोंगयिंग से पहली मशरिक़ी तुर्किस्तान हुकूमत को ख़त्म कराया और मा ज़ोंगयिंग को ख़ुद शिकस्त दी। और ख़ोजा नयाज़ से साबित दमोला को ख़त्म कराया और बाद में ख़ोजा नयाज़ को ख़ुद शेंग ने मार दिया। इस तरह बेहतरीन तरीक़े से मुसलमानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर के मुसलमानों की ताक़त को तोड़ दिया। और मुसलमानों की एक भी हुकूमत शिंजियांग में बाक़ी नहीं रही। यह होता है मुसलमानों के आपसी इख़्तिलाफ़ का अंजाम।

यंगीसार की जंग Battle of Yengisar

सा कि ऊपर बयान किया गया कि काशग़र की दूसरी जंग के बाद कुछ उइग़ूर फ़ौजी यंगीसार शहर की तरफ़ फ़रार हो गए थे उन लोगों का नेतृत्व ही नूर अहमद जान ब्रगरा कर रहा था जिनकी तादाद तक़रीबन 500 थी। मा ज़ानचांग के नेतृत्व में हुई फ़ौज ने मार्च 1934 में यंगीसार शहर का घिराओ कर लिया जो तक़रीबन 15 दिन चला। इस में उइग़ूर फ़ौज के पास सिर्फ राइफ़लें थीं और हुई फ़ौज के पास राइफ़लों के साथ मशीन गिनें और तोपें भी थीं। कुछ ही दिनों में उइग़ूर फ़ौज के पास हथियार ख़त्म होने लगे इस लिए उन्होंने पेड़ों के तनों, बड़े बड़े पत्थर और दस्ती बमों से अपनी रक्षा शुरू कर दी। यह लोग एक क़िले में

पनाह लिए हुए थे जिसका घिराओ हुई फ़ौज ने कर रखा था। 26 मार्च 1934 को नूर अहमद जान ब़गरा ने अपने सैनिकों को जंग रोक कर क़ुर्बानियां करने का हुक्म दिया क्यों कि उस दिन ईद ईद-उल-अज़हा थी। लेकिन हुई फ़ौज को मौक़ा मिल गया और वो लोग क़िले की दीवार को बारूद से उड़ाकर क़िले में दाख़िल हो गए और सारे उइग़ूर लोगों की हत्या कर दी और नूर अहमद जान ब़गरा का सर काट कर बाक़ी हुई फ़ौज के पास भेज दिया, उन लोगों ने उसके सर को फुटबॉल बना कर परेड ग्राउंड में फुटबॉल खेल कर अपनी जीत का जश्न मनाया।[545]

यरकंद की जंग Battle of Yarkand

16 April 1934 को अबदुल्लाह ब़गरा जिनको शाह मंसूर Shah Mansur भी कहा जाता था अपने भाई नूर अहमद जान ब़गरा Nur Ahmad Jan Bughra की मदद के लिए यंगीसार की तरफ़ गए ताकि हुई फ़ौज ने जो यंगीसार का घिराओ कर रखा है उसे ख़त्म करवा कर अपने भाई को छुड़ा सकें लेकिन रास्ते में यरकंद शहर में ही उनका मुक़ाबला हुई फ़ौज से हो गया जिनकी तादाद 10,000 थी और उन का नेतृत्व मा ज़ानचांग और मा फ़ूयुआन कर रहे थे जबकि अबदुल्लाह ब़गरा की फ़ौज सिर्फ 2500 अफ़राद पर आधारित थी। दोनों की मुठभेड़ यरकंद शहर में स्वीडन मिशन के पास हुई जिसमें अबदुल्लाह ब़गरा के ज़्यादातर सिपाही मारे गए और उसके साथ तक़रीबन 24, अफ़ग़ान मुहाफ़िज़ भी थे जिनको ज़ाहिर शाह ने भेजा था वो सब अबदुल्लाह ब़गरा के साथ जमे

रहे और आख़िरी वक़्त तक लड़ते रहे और कोई भी साथ छोड़कर नहीं भागा यहां तक कि सब मारे गए। अबदुल्लाह ब्रगरा का सर क़लम कर के ईद-गाह पर लटका दिया गया।[546]

चार क्लीक़ का विद्रोह Charkhlik Revolt

यह जंग पहली पूर्वी तुर्किस्तान की आख़िरी जंग कही जा सकती है जिसमें चार क्लीक़ के उइग़ूर लोगों ने 36 वें डिवीज़न के ख़िलाफ़ चार क्लीक़ के शहर में विद्रोह कर दिया लेकिन हुई फ़ौज ने इस विद्रोह को कुचल दिया और 100 से ज़्यादा उइग़ूर फौजियों को सज़ा-ए-मौत देदी गई और उइग़ूर लीडर के ख़ानदान को बंधक बना लिया।[547]

डवान चैंग की जंग

यह मा ज़ोंगयिंग की आख़िरी जंग थी। 1934 में मा ज़ोंगयिंग की 36 वें डिवीज़न की फ़ौज कहीं सफ़र पर जा रही थी कि सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज ने उसे देख लिया और उस का पीछा किया। यह सफ़ैद फ़ाम रूसी फ़ौज, मंगोल फ़ौज और उनके चीनी हामी फ़ौज की बकतरबंद गाड़ियों का एक क़ाफ़िला था लेकिन मा की फ़ौज ने उस पर ऐसा ज़ोरदार हमला किया कि वो पूरा क़ाफ़िला लगभग ख़त्म हो गया। उस को डवान चैंग की जंग Battle of Dawan Cheng कहा जाता है। इस जंग में मा की फ़ौज ने आख़िरी कोशिश की रूसी फ़ौज को हराने की। उन्होंने पहाड़ी दर्रों में खाइयां खोदीं ताकि रूसी क़ाफ़िले को रोक सकें, जिससे कई हफ़्तों तक रूस के क़ाफ़िले की पेशक़दमी रुकी रही। लेकिन रूस ने उस

की फ़ौज पर जवाबन मस्टर्ड गैस बरसाई जिससे उस की तक़रीबन 20% फ़ौज ख़त्म हो गई। और वो फ़रवरी 1934 में डवान चैंग से तुरपान वापस हो गया। मा ज़ोंगयिंग का रूसी फ़ौज से आख़िरी मुक़ाबला पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत के ख़ातमे के बाद खोतान के इलाक़े में हुआ। इस के बाद मा ज़ोंगयिंग जुलाई 1934 में अचानक ग़ायब हो गया और इसके बाद उसका कुछ पता नहीं चला कि क्या हुआ। कहा जाता है कि वो रूस चला गया और रूस से उसका मुआहिदा हो गया हालाँकि वो रूस के ख़िलाफ़ लड़ता रहा था। कुछ लोगों का कहना है कि रूस ने उसे अपनी सुर्ख़ फ़ौज Red Army में एक ऊंचा ओहदा दे दिया। इस तरह पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत के ख़ातमे और मा ज़ोंगयिंग की नापैदी के बाद शेंग शिकाई की एकमात्र शक्ति रह गई शिंजियांग में और कुछ ही दिनों बाद शेंग ने काशग़र पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। सितंबर 1934 में शेंग शिकाई और हुई जनरल मा हूशान के बीच में एक मुआहिदा हुआ जिसमें तै पाया कि मा हूशान हुई लोगों की एक हुकूमत क़ायम करेगा जिसमें हुई लोग, उइग़ूर और तुर्क लोगों पर बतौर-ए-आक़ा हुकूमत करेंगे यानी उइग़ूर और तुर्क लोगों की हैसियत दूसरे दर्जे के शहरी की होगी। पश्चिमी इतिहासकारों ने इस हुकूमत को 'डुंगनिस्तान' नाम दिया। उसकी राजधानी खोतान को बनाया गया लेकिन यह हुकूमत क्योमिनटांग हुकूमत के मातहत होगी। यह हुकूमत 1937 तक क़ायम रही।

मा ज़ोंगयिंग आख़िरी दौर

मा ज़ोंगयिंग ने सोवियत हमले के ख़िलाफ़ मारलबाशी और फ़ैज़ाबाद में अपनी दिफ़ाई पोज़ीशन मज़बूत की। मा हूशान ने सूबाई सेना (शेंग शिकाई) के ख़िलाफ़ रक्षा की कमान संभाली। जून में मारलबाशी पर बमबारी का सिलसिला जारी रहा, इस लिए, मा ज़ोंगयिंग ने अपनी सेना को काशग़र से खोतान मुंतक़िल होने का हुक्म दिया। चुनांचे 4, 5 और 6 जुलाई को डुंगन फ़ौज काशग़र से खोतान की तरफ़ रवाना हुई, वो लोग समझ रहे थे कि मा ज़ोंगयिंग रियर-गार्ड rear-guard के साथ पीछे आ रहा है, जैसा कि उसने कोरला से काशग़र तक पसपाई के दौरान किया था। लेकिन, अज्ञात कारणों की बिना पर, मा ज़ोंगयिंग ख़ुद सीमा पार कर के रूस में दाख़िल हो गया और फिर कभी नहीं देखा गया। बर्तानवी कौंसल जनरल थॉमसन गलोवर के अलफ़ाज़ में असल में जो कुछ हुआ वो यह था कि मा ज़ोंगयिंग अपने तीन या चार अफ़सरों के साथ 7 जुलाई के शुरू में काशग़र से इरकेशतम Irkeshtam के लिए रवाना हुआ। उस के साथ 50 लोगों की डुंगन फ़ौज थी और एक मेंबर रूस के कांसुलेट का था। कहा जाता है कि यह मेंबर था ऐम. कॉस्टेंटिनोव M. Konstantinov जो काशग़र के रूसी कांसुलेट का सेक्रेटरी Secretary of the Soviet Consulate at Kashgar था। यह लोग मिंग योल Ming Yol तक पहुंचे जो इरकेशतम जाने वाली सड़क पर एक जगह थी। इस के बाद वो रूसी सीमा पर पहुंचे जहां उनकी मुलाक़ात रूसी फ़ौज की एक टुकड़ी से हुई। इस के बाद डुंगन लोगों ने अपने हथियार ख़ोजा नयाज़ के अहलकारों को सौंपे और रूस में दाख़िल हो कर

ग़ायब हो गए।[548] 1937 में काशग़र में नायब बर्तानवी कौंसल जनरल M. C. Jillet, जिन्हों ने 1937 में 'डुंगनिस्तान' का सफ़र किया और 36 वें डिवीज़न के उस वक़्त के कमांडर मा हूशान Ma Hushan का इंटरव्यू लिया था। उसने बताया कि मा ज़ोंगयिंग अपने फौजियों को मज़ीद सज़ा से बचाने के लिए बंधक बन कर सोवियत यूनियन गया था।[549]

अध्याय 15
पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य (ETR)
(दूसरा पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य)
1944–1946

第十五章
东突厥斯坦共和国
(东突厥斯坦第二共和国)

Chapter Fifteen
East Turkestan Republic (ETR)
1944–1946
(Second East Turkistan Republic)



दूसरे पूर्वी तुर्किस्तान का सरकारी क्षेत्र लाल रगं में



द्वितीय पूर्वी तुर्किस्तान लोकतंत्र का ध्वज (1944-1946)

मुद्रा Currency

Copper	Pul	पुल	ताँबा
Silver	Tanga	टंगा	चाँदी
Gold	Tilla	तिला	सोना

पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य (ETR)

अब दूसरी पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत (Sherqiy Turkestan Jumhuriyiti), East Turkestan Republic (ETR) (November 12, 1944, and December 22, 1949) के हालात पेश किए जाएंगे जिस की राजधानी गुलजा या कुलजा Ghulja था। लेकिन इस से पहले उस की पृष्ठभूमि background बताई जाएगी। दर असल यह हुकूमत इली बग़ावत के नतीजे में वजूद में आई। 1944 में मुसलमानों ने शिंजियांग के तीन शहरों में चीनी जमहूरी हुकूमत के ख़िलाफ़ एक बग़ावत की और उन तीन शहरों पर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। यह शहर थे, इली Ili जिसको गुलजा Ghulja भी कहा जाता है, अल्ताई Altay और तरबगाते Tarbagatay. इस हुकूमत को इली हुकूमत भी कहते हैं, मशरिक़ी तुर्किस्तान हुकूमत East Turkestan Republic भी कहते हैं और तीन शहरों की हुकूमत Three Districts Government भी कहते हैं।[550] असल में यह बग़ावत मुसलमानों ने रूस के उकसाने पर की थी क्यों कि रूस अपना अमल दख़ल

(interference) शिंजियांग में बाक़ी रखना चाहता था लेकिन क्योमिनटांग हुकूमत ने शेंग शिकाई से मिलकर रूस को शिंजियांग से निकाल दिया था।[551] इसी लिए रूस इस बग़ावत की पुश्तपनाही कर रहा था और एक रूस नवाज़ लीडर अहमद जान क़ासिम उस का नेतृत्व कर रहा था। क्योमिनटांग को जब इस की ख़बर हुई कि इली इलाक़े के मुसलमान बग़ावत की तैयारी कर रहे हैं तो उसने पहले की तरह उनके ख़िलाफ़ एक हुई मुसलमान को फ़ौज देकर भेजा जिसका नाम लियू बिन डी Liu Bin-Di था, जिसको उरुमची से इली इलाक़ा भेजा गया था। लेकिन अब देर हो चुकी थी क्यों कि मुसलमान पूरी तरह संगठित हो चुके थे। थोड़े दिन बाद जनरल मा बुफ़ांग और उनके भतीजे जनरल मा चैंगशियांग के नेतृत्व में हज़ारों चीनी मुसलमान फ़ौजी, इली फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए चिंगहाई से शिंजियांग पहुंचे। और इली फ़ौज को एक के बाद एक शिकस्त देना शुरू की। उधर जंग चल रही थी तो दूसरी तरफ़ क्योमिनटांग ने आख़िरी दाव के तौर पर अपने क़ाबिल जनरल ज़ांग ज़ीज़ोंग Zhang Zhizhong को एक दल के साथ शिंजियांग भेजा जिसने वहां पर रूसी अहलकारों से बातचीत की और धमकी दी कि अगर रूस ने दोनों के बीच जंग बंदी न कराई तो वो इस मामले को विश्व समुदाय के सामने उठाएंगे और उसको एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाएंगे। चुनांचे 14 अगस्त 1945 में चीन ने रूस के साथ दोस्ती और गठबंधन का मुआहिदा Treaty of Friendship and Alliance कर लिया जिसमें रूस को शिंजियांग में बहुत सी विशेषाधिकार देने का वादा किया गया। इस मुआहिदे के बाद रूस के लिए ई टी आर की महत्व (Importance)

ख़त्म हो गया। इसके बाद ई टी आर ने भी 27 जून 1946 को चीन से समझौता कर लिया। ई टी आर हुकूमत ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसको क़रारदाद नंबर ३२४ Resolution 324 कहा जाता है इस में यह मंज़ूर किया गया कि ई टी आर हुकूमत को शिंजियांग सूबे का इली प्रीफ़ेक्चर Ili Prefecture of Xinjiang Province बनाया जाता है जो चीनी हुकूमत के मातहत होगा और ई टी आर को शून्य क़रार दिया जाता है। इस के बाद 1 जुलाई 1946 को उरुमची में शिंजियांग प्रांतीय गठबंधन सरकार Xinjiang Provincial Coalition Government बनी जिसमें इन तीनों शहरों के अलावा 7 शहरों को और शामिल किया गया। इस की राजधानी उरुमची शहर था। इस मख़लूत सूबाई हुकूमत की कमेटी में 25 मेंबर थे 7 मेंबर केन्द्रीय सरकार के, 8 भूतपूर्व ई टी आर ETR के और 10 बाक़ी 7 ज़िलों के। इस तरह ई टी आर हुकूमत का ख़ातमा हो गया। 25 अगस्त 1949 को भूतपूर्व ई टी आर ETR हुकूमत के 11 लीडरान जिनमें शामिल थे अहमद जान क़ासिम, अबदुलकरीम अब्बास, इसहाक़ बैग, लो ज़ी और डीलीहान सुगुरबायेव (Ehmetjan Qasimi, Abdulkerim Abbas, Ishaq Beg Munonov, Luo Zhi and Delilhan Sugurbayev) हवाई जहाज़ (Ilyushin Il-12 plane) में सवार हो कर मॉस्को के लिए रवाना हुए, लेकिन रास्ते में उनका जहाज़ एक दुर्घटना का शिकार हो गया जिस से उन सब की मौत हो गई। हालाँकि उस के बारे में दूसरी रिवायात भी हैं जिनका नीचे ज़िक्र किया जाएगा।

पस-ए-मंज़र

1934 से 1941 तक शिंजियांग पर रूस की इजारादारी थी। शिंजियांग के सूबाई गवर्नर शेंग शिकाई ने दो दफ़ा रूस को अपनी मदद के लिए बुलाया था, 1934 में और 1937 में। चुनांचे 1934 में रूस की मदद से शेंग ने जनरल मा ज़ोंगयिंग को हराया और 1935 में शेंग ने रूस को बाहर निकाल दिया। ताहम कुमूल में रूस की एक रेजिमेंट बाक़ी रहने दी ताकि जापान के संभावित हमले से निपटा जा सके जो अंदरूनी मंगोलिया Inner Mongolia के रास्ते से हो सकता था। इस के बदले शेंग ने रूस को शिंजियांग की तेल के भंडार, टिन और टंगस्टन की कानों की पूरी इजारादारी दे दी। 1936 में शेंग ने 20,000 कज़ाख़ मुसलमानों को शिंजियांग के बार्कोल Barkol इलाक़े से निकाल कर चिंगहाई Qinghai की तरफ़ भगा दिया जहां मा बुफ़ांग की हुई फ़ौज ने उनका नरसंहार किया यहां तक कि सिर्फ 135 कज़ाख़ बचे।[552] हालांकि यह सब कज़ाख़ मुसलमान थे।

इली क्रांति

शेंग शिकाई के ज़माने में शिंजियांग में हान लोगों की तादाद 6% से 10% के दरम्यान थी। और वो मुसलमानों के लिए आरक्षित था। लेकिन शिंजियांग से शेंग शिकाई के जाने के बाद जो पहला सूबाई गवर्नर क्योमिनटांग ने शिंजियांग में नियुक्त किया वो एक हान चीनी वू ज़ोंगशिन Wu Zhongxin था, जिसने हान लोगों को शिंजियांग में बसाने का मंसूबा बनाया। चुनांचे वू ज़ोंगशिन ने ऐलान किया कि पूरा चीन हान जाति से संबंध रखता है लेकिन उफ़्ताद ज़माना (समय

के चक्र) की वजह से वो लोग कई नसलों, ज़बानों और धर्मों में बट गए हैं लेकिन उनको एक मुत्तहिद क़ौम (संयुक्त जाति) बन कर यानी ‘हान’ बन कर ही चीन में रहना चाहिए, जबकि इस से पहले शिंजियांग को एक मुस्लिम इलाक़ा माना जाता था और उसको 'हान चीन' Han China का हिस्सा नहीं माना जाता था। इस के बाद बड़ी तादाद में हान लोग शिंजियांग में बसने लगे या बसाए जाने लगे जिससे इलाक़े के मुसलमानों में बहुत बेचैनी पैदा हुई। इसी के साथ ही कमज़ोर हुकूमत होने की वजह से मंदी inflation, संसाधनों की कमी और भ्रष्टाचार की भर मार हो गई। शिंजियांग की जो ख़ुफ़िया पुलिस थी वो अब भी काम कर रही थी लेकिन अब नए आक़ाओं के लिए यानी चियांग काई शेक और वू ज़ोंगशिन के लिए। इसी वजह से यह कहावत मशहूर हो गई कि 'एक शेंग गया और दूसरा आ गया'।[553] शेंग शिकाई की हुकूमत के शुरू दौर से ही ज़ुंगरया के कज़ाख़ लोग उस से नाख़ुश थे और यह लोग शिंजियांग के उस इलाक़े में रहते थे जहां रूस और मंगोलिया की सरहदें मिलती थीं। याद रहे कि मंगोलिया में भी रूस की पुश्तपनाही वाली हुकूमत थी जिसको मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक Mongolian People's Republic (MPR) कहा जात था यह हुकूमत रूस की मदद से 1924 में बनी थी। इसके अलावा चूँकि रूस का दख़ल शिंजियांग में से ख़त्म हो चुका था लेकिन वो शिंजियांग में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी रखता था क्यों कि शिंजियांग क़ुदरती तौर पर बहुत से दुर्लभ कीमती खनिज (rare precious minerals) से भरा है, जैसे पेट्रोलियम, टंगस्टन, ताँबा, सोना और यूरेनियम वग़ैरह।

विद्रोह की शुरुआत



अहमद जान क़ासिम

इस लिए रूस ने शेंग के जाने के बाद 1944 में इली Ili इलाक़े के तुर्कों को चीन के ख़िलाफ़ क्रांति करने पर उकसाना शुरू कर दिया बल्कि यह काम शेंग के आख़री दौर 1943 में ही शुरू हो गया था क्यों कि शेंग ने अपने आख़री दौर में शिंजियांग से रूस को निकाल दिया था। चुनांचे रूस ने उनको इसके लिए हर तरह की मदद देने का वादा कर लिया। इली इलाक़े के बहुत प्राचीन ज़माने से ही रूस से क़रीबी संबंध थे, क्यों कि बहुत से मुसलमान वहां पर रूस से आकर आबाद हुए थे इसके अलावा बहुत से लोग रूस से शिक्षा हासिल कर के भी आए थे और कुछ रूसी बाशिंदे भी वहां पर आबाद हो गए थे। चुनांचे रूस के

उकसाने पर कज़ाख़ सोवियत रिपब्लिक Kazakh SSR जो बाद में चल कर कज़ाख़िस्तान बना, के लोग, मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक Mongolian People's Republic (MPR) के लोगों के साथ मिलकर उस्मान बातूर Osman Batur से मिले जो इली में कज़ाख़ क़बाइली लोगों का सरदार था। उस्मान बातूर से मिलकर उन्होंने इली के इलाक़े में चीनी हुकूमत ख़त्म कर के नई हुकूमत स्थापित करने का मंसूबा बनाया। चुनांचे उन लोगों ने मिलकर 1943 में रूस की मदद से एक संस्था बना ली जिसका नाम था 'सिनकियांग तुर्किक पीपुल्स लिबरेशन कमेटी' Sinkiang Turkic People's Liberation Committee (STPNLC)। बिल-आख़िर 1944 में तुर्कों ने चीनी सरकार के खिलाफ क्रांति का एलान कर दिया और 3 अक्तूबर 1944 को निलका Nilka में क्योमिनटांग के एक फ़ौजी क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया। एक उइग़ूर तुर्क जो रूस से हाल ही में शिक्षा हासिल कर के आया था और उसको रूस की पुश्तपनाही हासिल थी बल्कि वो रूसी कम्युनिस्ट पार्टी का औपचारिक सदस्य था। उसका नाम था अहमद जान क़ासिम Ehmetjan Qasim वो इस क्रांति का और इसके के नतीजे में वजूद में आने वाली हुकूमत का प्रमुख बन गया, बल्कि रूस ने उसको बना दिया। क़ासिम ने अपना नाम बदल कर रूसी तर्ज़ पर क़ासिमोव "Kasimov" कर दिया। क्योमिनटांग को जब इस की ख़बर हुई कि इली इलाक़े के मुसलमान क्रांति की तैयारी कर रहे हैं तो उसने पहले की तरह उनके ख़िलाफ़ एक हुई मुसलमान को फ़ौज देकर भेजा जिसका नाम लियू बिन-डी Liu Bin-Di था, जिसको उरुमची से इली इलाक़ा भेजा गया था। लेकिन अब देर हो चुकी थी

क्यों कि मुसलमान पूरी तरह संगठित हो चुके थे। 16 सितंबर 1944 को कज़ाख़ बहुल क्षेत्र गोंघा काउंटी Gongha county में चीनी हुकूमत ने एक फ़ौजी दस्ता भेजा लेकिन यह दस्ता क्रांतिकारियों पर क़ाबू पाने में नाकाम रहा। सैकड़ों तुर्क घुड़सवार रूस से गुलजा की तरफ़ बढ़े। 3 अक्तूबर को क्रांतिकारियों ने नलिका Nilka पर क़ब्ज़ा कर लिया। 4 अक्तूबर 1944 को, गुलजा (यिनिंग Ghulja) के पुलिस डिपार्टमेंट के चीफ़ लियू बिन-डी Liu Bin-Di ने फ़ौरी मदद के लिए उरुमची को टेलीग्राम भेजा कि "नलिका"尼勒克镇 के आस पास की हालात बहुत ख़राब हैं, 3 अक्तूबर की लड़ाई में हमें भारी नुक़सान उठाना पड़ा है, योधाओं ने बहुत से हथियार अपने क़ब्ज़े में ले लिए हैं और कश नदी Kash के दक्षिण में कार्रवाइयां शुरू कर दी हैं और करासू Karasu और दूसरे क़रीब के देहात का घिराओ कर लिया है। मुक़ामी आबादी विद्रोहियों के साथ शामिल हो रही है और मुसलमानों की ताक़त बढ़ रही है। मुस्लिम फ़ौज की तादाद 1500 है जिसका नेतृत्व ग़नी, फ़ातिक, अकबर, बाईचूरिन Ghani, Fatikh, Akbar, Kurban, Baichurin और दूसरे लोग कर रहे हैं, यह लोग घोड़ों पर सवार हैं। यिनिंग (गुलजा) शहर में एहतियात के तौर पर 200 संदिग्ध लोगों को गिरफ़्तार कर लिया गया है। फ़ौरी तौर पर ज़रूरत है कि उरुमची से कुमक भेजी जाए। चुनांचे बहुत से ट्रकों में गुलजा से नलिका फ़ौजी भेजे गए लेकिन वापसी में उनमें सैकड़ों फौजियों की लाशें गईं।

पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य

East Turkestan Republic (ETR)

तुर्कों ने 7 नवंबर 1944 को कुलजा Kulja (कुलजा या गुलजा दोनों लफ़्ज़ इस्तेमाल होते हैं) पर भी हमला कर दिया और तेज़ी से शहर के कुछ हिस्सों पर क़ब्ज़ा कर लिया, KMT (क्योमिनटांग) फौजियों का नरसंहार किया, ताहम, योधाओं को क्योमिनटांग KMT फ़ौज की तरफ़ से सख्त जवाबी कार्रवाई का सामना करना पड़ा जो बिजली घर और मर्कज़ी पुलिस स्टेशनों में छपे हुए थे। इस लिए 13 तारीख़ को कुलजा पर क़ब्ज़ा हो पाया। 15 नवंबर को "पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य" East Turkestan Republic (ETR) की स्थापना का ऐलान कर दिया गया, और कुलजा को उस की राजधानी बनाया गया। उज़्बेक अली ख़ां को उस का सदर बनाया गया जिसको चीनी ज़बान में इलहान टोर Elihan Tore कहा जाता है, ताहम सारे इख़्तियारात अहमद जान क़ासिम Ehmetjan Qasim के हाथ में थे, जिसको रूस की पुश्तपनाही हासिल थी। याद रहे 1944-1946 के दरम्यान इलहान टोर सदर रहा और 1946-1949

तक अहमद जान क़ासिम रहा। इलहान टोर ने तुर्किस्तान इस्लामी हुकूमत “Turkestan Islamic Government” के गठन का ऐलान इन अलफ़ाज़ में किया 'तुर्किस्तान इस्लामी हुकूमत संगठित हो चुकी है अल्हम्दुलिल्लाह उस की बेशुमार नेमतों के लिए। अल्लाह की मदद ने हमें ज़ालिम चीनियों की हुकूमत का तख़्ता उलटने का हौसला दिया। लेकिन अगर हम आप लोगों पर

वहशी चीनियों के हाथों ज़ुल्म होते देखते रहें और आपकी मदद न करें तो क्या अल्लाह हमारे इस अमल से ख़ुश होगा? यक़ीनन हमारा ख़ुदा राज़ी नहीं होगा। हम उस वक़्त तक अपने हथियार नहीं फेंकेंगे जब तक कि हम आपको चीनी ज़ालिमों की ताक़त की पांचों ख़ूनी उंगलियों से आज़ाद न करा लें और न ही जब तक, कि चीनी ज़ालिमों हुकूमत की जड़ें खुश्क हो कर पूर्वी तुर्किस्तान की ज़मीन से मर न जाएं। यह ज़मीन हमें अपने मातृभूमि के तौर पर अपने बाप दादा और पूर्वजों से विरासत में मिली है'।[554]

इस तरह इली इलाक़े के तीन बड़े शहरों गुलजा Ghulja, अल्ताई Altay और तरबगाते Tarbagatay पर यह हुकूमत स्थापित हो गई। इस हुकूमत को इली हुकूमत भी कहते हैं, पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत East Turkestan Republic भी कहते हैं और तीन शहरों की हुकूमत Three Districts Government भी कहते हैं। इस क्रांति को इली विद्रोह Ili Rebellion भी कहा जाता है और तीन शहरों का इन्क़लाब Three Districts Revolution भी कहा जाता है। इस क्रांति में तुर्क लोगों का साथ सफ़ैद फ़ाम रूसियों White Russians ने भी दिया और बहुत से उनमें से हुकूमत के उच्च पदों पर भी रहे। इस हुकूमत के ज़्यादातर लीडर रूस के एजेंट माने जाते थे जैसे अबदुल करीम अब्बास, इसहाक़ बेग, सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी Abdulkerim Abbas, Ishaq Beg, Saifuddin Azizi और सफ़ैद फ़ाम रूसी लोग जैसे लेस्किन, ए. पोलिनोव, और ग्लिमकिन F. Leskin, A. Polinov, and Glimkin.[555] इस हुकूमत का मक़सद था चीनी हुकूमत को ख़त्म करना, सारी नसलों के लिए बराबरी का हक़, मुक़ामी ज़बानों को सरकारी हैसियत

दिलाना और रूस के साथ दोस्ताना संबंध। ताहम मुक़ामी हुई लोगों ने उनकी मदद या तो बिलकुल नहीं की या फिर नाक़ाबिल-ए-ज़िक्र मदद की।

सिर्फ यही नहीं कि रूस ने उन्हें हर तरह की मदद दी बल्कि जंग के दौरान जहां भी वो लोग कमज़ोर पड़ते थे तो रूसी हवाई फ़ौज उनकी मदद करती थी। चुनांचे जब तुर्कों ने चीनी हवाई अड्डों पर हमला करके उन पर क़ब्ज़ा किया और चीनी फ़ौज ने उन पर हमला किया तो रूसी हवाई जहाज़ों ने तुर्कों की मदद के लिए चीनी फ़ौज पर हवाई हमले किए और उनको पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।[556]

इली क़ौमी फ़ौज Ili National Army INA

8 अप्रैल 1945 को 'इली क़ौमी फ़ौज' Ili National Army (INA) का गठन हुआ बाद में इसका नाम 'पूर्वी तुर्किस्तान क़ौमी फ़ौज' East Turkestan National Army हो गया। इस का कमांडर-इन-चीफ़ एक किर्गीज़ इसहाक़ बेग Ishaq Beg को बनाया और गोरे रूसियों में से पोलीनोव और लेस्किन थे। यह तीनों माज़ी में किसी न किसी हैसियत से रूसी फ़ौज में काम कर चुके थे। रूस ने इस फ़ौज को हथियार दिए और रूसी तर्ज़ की यूनिफ़ॉर्म दी जिन पर VTR लिखा हुआ था जो संक्षेप (abbreviation) था Vostochnaya Turkestanskaya Respublika का, इसका मतलब है पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत। इस फ़ौज में उइग़ूर, कज़ाख़ और गोरे रूसी लोग थे। इस फ़ौज में कुल मिलाकर 60,000 सिपाही थे जिसको तरबियत और हथियार ज़्यादातर रूस ने दिए थे। इसके अलावा रूस की सुर्ख़ फ़ौज की कई यूनिटें उनके साथ थीं, जिसमें 500 फ़ौजी

अफ़सरान और 2000 फ़ौजी थे। इसके अलावा एक कज़ाख़ कराई क़बाइली लोगों Karai tribesmen का ग्रुप था जिसका कमांडर उस्मान बातूर Osman Batur था। उस की तादाद 20,000 घुड़सवारों पर आधारित थी। चुनांचे पूर्वी तुर्किस्तान क़ौमी फ़ौज में 6 रेजिमेंट थीं।

ई टी आर आख़िरी दौर

सितंबर 1945 तक मनासी नदी Manasi River के एक तरफ़ यानी ज़ुंगरया और काशग़रिया की तरफ़ पूर्वी तुर्किस्तान ETR का क़ब्ज़ा हो चुका था और दूसरी तरफ़ यानी उरुमची की तरफ़ क्योमिनटांग Kuomintang का क़ब्ज़ा था। शिंजियांग के ज़्यादातर इलाक़े पर पूर्वी तुर्किस्तान का कंट्रोल हो गया और क्योमिनटांग गवर्नमेंट सिर्फ़ कुमूल में सिमट कर रह गई। अब इली फ़ौज उरुमची पर भी क़ब्ज़ा करने की तैयारी कर रही थी। अक्तूबर 1945 में सोवियत लड़ाकू विमानों ने चीनी ठिकानों पर हमला कर दिया। सोवियत रैड आर्मी और उइग़ूर इली आर्मी कम तैयार चीनी सेना के ख़िलाफ़ सोवियत वायु सेना की मदद के साथ आगे बढ़ रही थी, वो तक़रीबन उरुमची Urumqi तक पहुंच गए। उस वक़्त, चीनी फ़ौज ने इलाक़े के चारों तरफ़ रक्षा ठिकाने बनाए और इली फ़ौज की पेशक़दमी को रोकने के लिए चीनी मुस्लिम घुड़सवार दस्ते भेजे। जनरल मा बुफ़ांग और उनके भतीजे जनरल मा चैंगशियांग Ma Chengxiang के नेतृत्व में हज़ारों चीनी मुसलमान फ़ौजी इली फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए चिंगहाई से शिंजियांग पहुंचे। जिनमें डुंगन (हुई) की 5 वीं और 42 वीं घुड़सवार फ़ौज थी, उन्होंने KMT की 2nd सेकंड आर्मी को मजबूत किया, जो चार

डिवीज़नों पर आधारित थी। हुई और हान की इस साझे की फ़ौज की तादाद 100,000 थी। ताहम सोवियत यूनियन मा बुफ़ांग की फ़ौज को तितर-बितर करने के लिए बेचैन था। जनरल मा चैंगशियांग ने के एम टी की पहली घुड़सवार डिवीज़न First Cavalry Division की कमांड की, जो पहले गान्सू की 5 वीं घुड़सवार फ़ौज Gansu Fifth Cavalry Army थी। कुछ ही दिनों में इली फ़ौज ने काशग़र, काग़लिक और यरकंद Kashgar, Kaghlik and Yarkand पर क़ब्ज़ा कर लिया लेकिन इन इलाक़ों के उइग़ूर लोगों ने उनका साथ नहीं दिया जिसकी वजह से मा बुफ़ांग उनको निकालने में कामयाब होने लगा। इली फ़ौज ने किर्गीज़ और ताजिक लोगों के मवेशियों को क़त्ल करना और फसलों को तबाह करना शुरू कर दिया।[557] चुनांचे 1945-1946 के दरम्यान मा बुफ़ांग की फ़ौज ने इली फ़ौज को शिकस्त दे दी, जिसने यरकंद शहर का घिराओ कर रखा था। इस में रूस की सुर्ख़ फ़ौज के बहुत से अफ़सरान भी मारे गए।[558]

ETR का ख़ातमा



मित्रता और गठबंधन की चीन-रूस संधि, 14 अगस्त, 1945

उधर जंग चल रही थी तो दूसरी तरफ़ क्योमिनटांग ने आख़िरी दाव के तौर पर अपने क़ाबिल जनरल ज़ांग ज़ीज़ोंग Zhang Zhizhong को एक वफ़द के साथ शिंजियांग भेजा जिसने वहां पर रूसी अहलकारों से बातचीत की और धमकी दी कि अगर रूस ने दोनों के बीच जंग बंदी न कराई तो वो इस मामले को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने उठाएंगे और उसको एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाएंगे। इस वफ़द के साथ बहुत से उइग़ूर लीडर भी थे जैसे खोतान के अमीर मुहम्मद अमीन ब़गरा, और दो रूस मुख़ालिफ़ तुर्क मसूद साबरी और ईसा यूसुफ़ अलप्तेकिन Isa Yusuf Alptekin. चुनांचे 14 अगस्त 1945 में चीन ने

रूस के साथ दोस्ती और गठबंधन का मुआहिदा Treaty of Friendship and Alliance कर लिया जिसमें रूस को शिंजियांग में बहुत से विशेषाधिकार देने का वादा किया गया। इस मुआहिदे के बाद रूस के लिए ई टी आर की अहमियत ख़त्म हो गई। इसके बाद ई टी आर ने भी 27 जून 1946 को चीन से समझौता कर लिया। ई टी आर हुकूमत ने एक क़रारदाद मंज़ूर की जिसको क़रारदाद नंबर ३२४ Resolution 324 कहा जाता है इस में यह मंज़ूर किया गया कि ई टी आर हुकूमत को शिंजियांग सूबे का इली प्रीफ़ेक्चर Ili Prefecture of Xinjiang Province बनाया जाता है जो चीनी हुकूमत के मातहत होगा और ई टी आर को मंसूख़ (व्यर्थ) क़रार दिया जाता है। इस क़रारदाद में शिंजियांग के लिए पूर्वी तुर्किस्तान का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया यानी ई टी आर को 'पूर्वी तुर्किस्तान' का इली प्रीफ़ेक्चर बनाया जाता है। इस के बाद 1 जुलाई 1946 को उरुमची में शिंजियांग की सूबाई मिली जुली सरकार Xinjiang Provincial Coalition Government बनी जिसमें इन तीनों शहरों के अलावा 7 शहरों को और शामिल किया गया। इसकी राजधानी उरुमची शहर को बनाया गया। इस सूबाई मिली जुली सरकार की कमेटी में 25 मेंबर थे 7 मेंबर मर्कज़ी हुकूमत के, 8 पूर्व ई टी आर के और 10 बाक़ी 7 ज़िलों के। उधर वू ज़ोंगशिन Wu Zhongxin जो शेंग का जानशीन बना था और शिंजियांग सूबे का गवर्नर था। उस से मुसलमान लोग नाराज़ थे क्यों कि वो हान लोगों को बड़ी तादाद में शिंजियांग में बसा रहा था इस लिए चीनी हुकूमत ने उस को हटा कर उस की जगह ज़ांग ज़ीज़ोंग Zhang Zhizhong को शिंजियांग की सूबाई मख़लूत हुकूमत का

चेयरमैन बना दिया जिसने मुस्लिम नवाज़ नीतियाँ लागू कीं ताकि पूर्व ई टी आर के मुसलमानों को तसल्ली हो सके। अहमद जान क़ासिम उस का सूबाई वाइस चेयरमैन Provincial Vice Chairman बना। और बाक़ी लोगों को मंत्रिमंडल cabinet में रखा गया जैसे मुहम्मद अमीन ब्रगरा, मसूद साबरी और ईसा यूसुफ़ अलप्तेकिन, तातार बुरहानुद्दीन शाहिदी वग़ैरह। इसके बदले तुर्क लोगों को शिंजियांग में स्पेशल अधिकार और रियायतें दी गई। यह भी तै किया गया कि इली फ़ौज बदस्तूर क़ायम रहेगी लेकिन यह एक अमन बहाली फ़ौज के तौर पर काम करेगी और ज़ांग ज़ीज़ोंग को जवाबदेह होगी। ज़ांग ने बहुत से क्षेत्रों में सुधार पेश किए और नई नीतियां बनाईं और इसका स्वीकार किया कि कुछ पुरानी नीतियां और क़ानून ज़ालिमाना थे और वो ऐसे ही थे जैसे सामराजी ताक़तें अपने कब्जे वाले देशों में लागू करती हैं। हालाँकि ज़ांग अपनी कोशिशों में बहुत ईमानदार था लेकिन उसके क्योमिनटांग के आक़ाओं ने उसका साथ नहीं दिया क्यों कि उनका सिर्फ एक मक़सद था कि शिंजियांग से पूर्वी तुर्किस्तान का ख़ातमा और वो अपने मक़सद में कामयाब हो चुके थे। लेकिन अब भी शिंजियांग हुकूमत दो हाथों में बटी हुई थी तीन शहरों पर अब भी पूर्वी तुर्किस्तान के लीडरों यानी पूर्व STPNLC के नेताओं का कंट्रोल था और बाक़ी सात शहरों पर क्योमिनटांग का हुक्म चलता था हालाँकि क़ानूनी तौर पर यह एक ही हुकूमत थी। इसका सबूत यह है कि पूर्वी तुर्किस्तान के तीन शहरों में अब भी रूस का अमल दख़ल जारी था और वहां के प्राकृतिक संसाधन जैसे पेट्रोलियम वग़ैरह अब भी रूसी कंपनियां निकाल कर ले जा रही थी लेकिन

बाक़ी शहरों में ऐसा नहीं था। इस एग्रीमेंट के कुछ ही दिनों बाद उस्मान बातूर ने पूर्वी तुर्किस्तान अहलकारों का साथ छोड़कर क्योमिनटांग से गठबंधन कर लिया और क्योमिनटांग के बड़े अहलकारों से राब्ते पैदा कर लिए। उस्मान बातूर को देखते हुए बहुत से क़बाइली नेताओं ने भी क्योमिनटांग से गठबंधन करना शुरू कर दिया। इस से क्योमिनटांग को शिंजियांग में काफ़ी ताक़त मिली। हालाँकि ज़ांग ने शिंजियांग में इस्लाहात की बहुत कोशिशें कीं लेकिन वो सब लोगों को संतुष्ट न कर सका और हालात ख़राब ही होते चले गए यहां तक कि 1947 के शुरू में उरुमची में उइग़ूर लोगों ने फ़साद बरपा कर दिया क्यों कि वो उइग़ूर जाति के लोगों के लिए हुकूमत में मज़ीद इख़्तियारात की मांग कर रहे थे। इस लिए ज़ांग को हटा कर उसकी जगह मसूद साबरी शिंजियांग सूबे का चेयरमैन बना दिया गया। हालाँकि पहले क्योमिनटांग हुकूमत का इरादा बाई चोंगशी Bai Chongxi को शिंजियांग का गवर्नर बनाने का था लेकिन ज़ांग ज़ीज़ोंग Zhang Zhizhong के मशवरे पर मसूद साबरी को बनाया गया। यह पहली दफ़ा हुआ था कि सूबे का चेयरमैन किसी मुसलमान को बनाया गया था। लेकिन इस बदलाव से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा और दंगे बढ़ते चले गए यहां तक कि इत्तिहादी हुकूमत (गठबंधन सरकार) टूट गई और भूतपूर्व पूर्वी तुर्किस्तान ETR के बहुत से ओहदेदार उरुमची छोड़कर गुलजा आ गए। शिंजियांग फिर एक दफ़ा दो हिस्सों में बट गया एक का केंद्र उरुमची और दूसरे का गुलजा।

पीता शान की लड़ाई Battle of Pei-ta-shan

जब मसूद साबरी को शिंजियांग सूबे का चेयरमैन बना दिया गया तो रूस को चिंता हुई क्यों कि मसूद साबरी का शुमार रूस मुख़ालिफ़ लीडरों में होता था। इस लिए रूस को मसूद साबरी का सूबाई चेयरमैन बनना पसंद नहीं आया और यह भी कि मसूद साबरी के रहते हुए रूस शिंजियांग में दख़लअंदाज़ी नहीं कर सकता था। इस लिए रूस ने नए रास्ते से चीन में घुसने की तरकीब की। जैसा कि ऊपर बयान किया गया है कि मंगोलिया में रूस की पुश्तपनाही वाली हुकूमत थी जिसको मंगोलियन पीपुल्स रिपब्लिक Mongolian People's Republic MPR कहा जाता था इस लिए इस बार रूस ने मंगोलिया को उकसाया कि वो मंगोलिया और चीन के बीच जो बॉर्डर है वहां पर चीन के ख़िलाफ़ कार्रवाई करे, यह एक पहाड़ है जो चीन और मंगोलिया की सरहदों को अलग करता है उस को बैताग़ बोग़द Baitag Bogd का पहाड़ कहा जाता है और इस इलाक़े को पीता शान Pei-ta-shan का इलाक़ा कहा जाता है, इसी लिए इस जंग को पीता शान की जंग या बैताग़ बोग़द की जंग Battle of Baitag Bogd कहा जाता है। इस बॉर्डर पर चीन की कई फ़ौजी चौकियां थीं जिनमें रह कर चीनी फ़ौज अपनी सीमा की रक्षा करती थी। चुनांचे लड़ाई की शुरूआत तब हुई जब जून 1947 में मंगोल फ़ौज और रूसी जहाज़ों ने कज़ाख़ फ़ौज पर हमला कर दिया और उनको चीनी सीमा में अंदर की तरफ़ ढकेल दिया। इस वजह से 5 जून 1947 से लेकर जुलाई 1948 के दरम्यान 13 लड़ाइयां हुईं।[559]
लड़ाई छिड़ने से तीन महीने पहले क्योमिनटांग ने मुस्लिम हुई जनरल हान यूवेन

Han Youwen को दूसरे मुस्लिम जनरल मा शीज़ेन Ma Xizhen की मदद के लिए भेजा था। इस ज़माने में मंगोलिया के सदर खोर खोरलूगिन चोइबलसन Khorloogiin Choibalsan थे। मंगोलिया चाहता था कि पीता शान के कमिश्नर उसमान बातूर को हटा कर जो कि क्योमिनटांग का आदमी था अपने ली रेहान Li Rihan को वहां का कमिश्नर बना दे और शिंजियांग में अपनी हुकूमत क़ायम कर ले। मंगोलियन फ़ौज पैदल हमला कर रही थी और उसकी मदद के लिए रूसी लड़ाकू विमान चीनी फ़ौज पर बमबारी कर रहे थे। इस लिए कई दफ़ा चीनी फ़ौज को शिकस्त का सामना करना पड़ा और पसपा होना पड़ा। चीन की तरफ़ से जनरल मा शीज़ेन Ma Xizhen और उसमान बातूर लड़ रहे थे। जनवरी 1948 में चीनी फ़ौज ने 700 घुड़सवार फ़ौज के साथ मंगोलिया बॉर्डर खोब्दो Khobdo में घुसने की कोशिश की लेकिन नाकाम रही[560] ताहम उसमान बातूर की फ़ौज ने आशान क्षेत्र Ashan zone में मौजूद इली के तीन शहरों की फ़ौज Three Districts Forces पर हमला कर दिया और आशान ज़ोन Ashan zone का बहुत सा इलाक़ा इली की फ़ौज को शिकस्त देकर क़ब्ज़ा कर लिया। चीनी फ़ौज हालाँकि अपनी सरहदों की रक्षा करने में कामयाब हो गई लेकिन दोनों तरफ़ बड़ा जानी-ओ-माली नुक़सान हुआ। यह जंग तक़रीबन 1 साल चली 5 June 1947 से July 1948 तक लेकिन कोई हार जीत नहीं हुई[561] ताहम रूस और मंगोलिया की घुसपैठ नाकाम हो गई लेकिन रूस बज़ाहिर यह बताता रहा कि इस जंग से उसका कोई संबंध नहीं है।[562]

शिंजियांग पर कम्युनिस्टों का क़ब्ज़ा

उधर पीता शान की जंग चल रही थी और दूसरी तरफ़ चीन में कम्युनिस्टों को क्योमिनटांग पर फ़तह हासिल हो रही थी। और एक के बाद एक सारे इलाक़े कम्युनिस्टों के क़ब्ज़े में आते चले जा रहे थे और क्योमिनटांग फ़ौज और अहलकार या तो कम्युनिस्टों के आगे हथियार डाल रहे थे या फ़रार हो रहे थे और जो बचते थे उनको या तो मार दिया जाता था या क़ैद कर दिया जाता। अक्तूबर 1947 से बुरहानुद्दीन शाहिदी और ज़ांग ने क्योमिनटांग की तरफ़ से रूस से समझौते की बात शुरू कर दी और यह बातचीत का सिलसिला लगभग एक साल तक चलता रहा लेकिन दोनों पक्ष किसी भी नतीजे पर नहीं पहुंच पाए लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। इसी दौरान दिसंबर 1948 में क्योमिनटांग ने मसूद साबरी को हटा कर उसकी जगह बुरहानुद्दीन शाहिदी को शिंजियांग का चेयरमैन बना दिया। सितंबर 1949 में बुरहानुद्दीन शाहिदी और क्योमिनटांग जनरल टाओ ज़ी यू Tao Zhiyue ने कम्युनिस्ट अफ़सर डेंग लीचुन Deng Liqun जिसको माओ ज़ेडोंग ने शिंजियांग में अपना तर्जुमान बना कर भेजा था से हथियार डालने की ख़ुफ़िया बातचीत शुरू कर दी, बिल-आख़िर 24 सितंबर 1949 को क्योमिनटांग की 1, लाख फ़ौज ने शिंजियांग में कम्युनिस्टों की फ़ौज 'पी एल ए' PLA के आगे हथियार डाल दिए और दूसरे दिन बुरहानुद्दीन शाहिदी ने बाक़ायदा अपनी वफ़ादारी क्योमिनटांग से हटा कर कम्युनिस्ट पार्टी के साथ कर ली और 1, अक्तूबर 1949 को बीजिंग में कम्युनिस्ट हुकूमत का ऐलान हो गया।

तीन शहरों के लीडरों का अंजाम

17 अगस्त 1949 को सी पी सी CPC (Communist Party of China) का लीडर डेंग लीचुन Deng Liqun तीन शहरों के लीडरों से बातचीत के लिए गुलजा पहुंचा और उसने उन लोगों को माओ ज़ेडोंग का पैग़ाम दिया जिसने इन को पहिली "चीनी जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन" "Chinese People's Political Consultative Conference" में शरीक होने की दावत दी। 22 अगस्त को यह लोग होर्गोस Horgos से 22 गाड़ियों में सवार हो कर रूस के अलमाटा Alma-Ata पहुंचे, उनके साथ गुलजा में रूस का वाइस काउंसिल वसीली बोरिसोव Vasiliy Borisov भी था, ताकि रूसी हुकूमत से मशवरा करें कि क्या करना चाहिए, अलमाटा के रूसी अहलकारों ने उनको मशवरा दिया कि वो कम्युनिस्ट पार्टी की आज्ञाकारिता स्वीकार कर लें। लेकिन तीन दिन ताक बातचीत चलती रही क्यों कि यह नेता तैयार नहीं हो रहे थे। अहमद जान क़ासिम का कहना था कि यही ऐतिहासिक मौक़ा है कि हम आज़ादी हासिल कर सकते हैं। इस मौक़े को गँवाना नहीं चाहिए। चुनांचे उन लोगों को मशवरा दिया गया कि बीजिंग जाने से पहले मॉस्को होते हुए जाएं और स्टालिन से बराह-ए-रास्त बातचीत करें। 25 अगस्त 1949 को अलमाटा से 11 नेता जिनमें शामिल थे; अहमद जान क़ासिम, अबदुलकरीम अब्बास, इसहाक़ बेग, लुओज़ी और डेलिलखान सुगुर्बाएव Ehmetjan Qasimi, Abdulkerim Abbas, Ishaq Beg Munonov, Luo Zhi and Delilhan Sugurbayev) हवाई जहाज़ (Ilyushin Il-12 plane) में सवार हो कर मॉस्को के लिए रवाना हुए,

ताकि वहां पर स्टालिन से मशवरा करें कि आगे क्या होना चाहिए। यह लोग दो तीन दिन के बाद अलमाटा से बीजिंग के लिए जहाज़ में सवार हुए। 3 सितंबर को रूसी हुकूमत ने चीनी हुकूमत को ख़बर दी कि बेकल झील Lake Baikal के पास जहाज़ रहस्यमयी तरीक़े से दुर्घटना का शिकार हो गया और सब सवार मारे गए। इसी दिन मोलटोव Molotov ने सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी Saifuddin Azizi को टेलीग्राम किया और यही ख़बर दी और उस को ख़बर ख़ुफ़िया रखने की हिदायत की। दिसंबर 1949 को सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी जो अहमद जान क़ासिम की ग़ैरमौजूदगी में तीन शहरों का अंतरिम नेता था वो मॉस्को पहुंचा ताकि "चीन सोवियत दोस्ती मुआहिदा" Sino-Soviet Treaty of Friendship में माओ ज़ेडोंग के वफ़द में शामिल हो सके तब उन लोगों की लाशों का मुतालबा किया। 1950 में उनकी क्षत-विक्षत लाशें रूस ने भेजीं। ताहम इस ख़बर को दिसंबर 1949 तक ख़ुफ़िया रखा गया जब तक कि कम्युनिस्टों ने शिंजियांग पर पूरी तरह अपना कंट्रोल नहीं कर लिया।

बाद में 1991 में जब सोवियत यूनियन टूटा तो उसकी ख़ुफ़िया एजैंसी के जी बी KGB के कुछ पूर्व अहलकारों जिनमें पावेल सुडोप्लातोव Pavel Sudoplatov भी शामिल हैं, ने खुलासा किया कि इन पांचों लीडरों को जब वो मॉस्को में उतरे तो फ़ौरन एम जी बी के अध्यक्ष जनरल विक्टर अबाकूमोव Viktor Abakumov ने गिरफ़्तार कर लिया और तीन दिन तक ज़ार के ज़माने के एक अस्तबल में उन्हें क़ैद रखा गया और उनसे तफ़तीश की गई इसके बाद स्टालिन के हुक्म पर उन्हें क़त्ल कर दिया गया क्यों कि स्टालिन और माओ ज़ेडोंग के

बीच में एक ख़ुफ़िया मुआहिदा हुआ था जिसमें माओ ने स्टालिन से ऐसा करने को कहा था। ताहम इस इल्ज़ाम की कभी तसदीक़ (पुष्टि) नहीं हो पाई। उनके बाद सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी ने चीन की पहली "चीनी जनता की सियासी मुशावरती कॉन्फ्रेंस" Chinese People's Political Consultative Conference" में शिरकत की जिसके बाद 1 अक्तूबर1949 को "चीनी जनवादी गणराज्य" People's Republic of China (PRC) की स्थापना का ऐलान किया गया। अज़ीज़ी ने कम्युनिस्ट पार्टी की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और अपनी हुकूमत उनके हवाले कर दी जिसके बदले उस को पी एल ए में लेफ्टिनेंट जनरल Lieutenant General of the PLA का ओहदा दे दिया गया। ताहम जब माओ ज़ेडोंग ने शिंजियांग को 'शिंजियांग ऑटोनोमस इलाक़े' का दर्जा दिया तो उसने उस का पुरजोर विरोध किया और कहा कि ऑटोनोमस दर्जा पहाड़ों और नदियों को नहीं दिया जाता बल्कि लोगों की किसी जमात को दिया जाता है। चुनांचे उस के कहने पर उस का नाम "शिंजियांग उइग़ूर ऑटोनोमस इलाक़ा" "Xinjiang Uyghur Autonomous Region" कर दिया गया। 1, अक्तूबर 1955 को सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी "शिंजियांग उइग़ूर ऑटोनोमस इलाक़े" का पहला चेयरमैन बना। 20 अक्तूबर 1949 को पी एल ए की पहली फ़ौज स्टालिन के दिए हुए हवाई जहाज़ों से उरुमची एयरपोर्ट पहुंची और फ़ौरन शिंजियांग का कंट्रोल सँभाल लिया। 26 सितंबर 1949 को क्योमिनटांग फ़ौज के 100,000 सिपाहियों ने कम्युनिस्ट पार्टी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया जिनमें उस वक़्त का शिंजियांग का गवर्नर बुरहान शाहिदी Burhan Shahidi भी था। 20 दिसंबर

1949 को इली क़ौमी फ़ौज भी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गई जिसको पी एल ए की ५ वीं फ़ौज 5th Army of PLA बना दिया गया। ज़ांग ज़ीज़ोंग ने भी कम्युनिस्ट पार्टी से गठबंधन कर लिया। मुहम्मद अमीन ब्रगरा और ईसा यूसुफ़ अलप्तेकिन तुर्की फ़रार हो गए। मसूद साबरी को कम्युनिस्टों ने गिरफ़्तार कर के क़ैद कर दिया, उसी क़ैद में इसका इंतिक़ाल 1952 में हुआ। सिर्फ दो मुस्लिम लीडर ऐसे थे जो कम्युनिस्टों से लड़ते रहे एक उसमान बातूर जो अंत तक मुज़ाहमत करता रहा और आख़िरकार हामी में गिरफ़्तार हुआ और 29 अप्रैल 1951 को उरुमची में उसको सज़ा-ए-मौत देदी गई, उसके साथी हिमालय पहाड़ों की तरफ़ फ़रार हो गए जहां से उन्हें तुर्की ने जहाज़ से उठा लिया और तुर्की ले गए और वो वहीं बस गए। दूसरा था युलबर्स ख़ान जो पी एल ए से लड़ता रहा, इसी दौरान 1950 में यीवू की जंग Battle of Yiwu भी हुई जिसमें युलबर्स ख़ान कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ लड़ा लेकिन बिल-आख़िर हार कर तिब्बत के रास्ते कोलकाता (Kolkata) आ गया जहां उस के ऊपर दलाई लामा के लोगों ने हमला कर दिया लेकिन वो बच गया और एक स्टीमर में सवार हो कर ताइवान चला गया जहां क्योमिनटांग की हुकूमत थी। क्योमिनटांग ने उसे शिंजियांग का गवर्नर बना दिया लेकिन वो ताइवान में ही बस गया जहां उसका 1971 में इंतिक़ाल हुआ। 1950 में कम्युनिस्ट गवर्नमेंट ने हान लोगों को शिंजियांग में बसाना शुरू कर दिया 1951 में माओ ज़ेडोंग ने शिंजियांग से रूस हामी लीडरों का सफ़ाया करना शुरू कर दिया और बहुत से लीडरों को मरवा दिया। इसके अलावा रूसी हस्तक्षेप को समाप्त करने के लिए कई कदम उठाए गए। चुनांचे

रूस की दख़ल अंदाज़ी कम होती चली गई यहां तक कि आख़िरी रूसी कांसुलेट 1962 में ख़त्म हो गया। इसके बाद दोनों देशों में प्रोपेगंडे की जंग शुरू हो गई और दोनों रेडियो के माध्यम से एक दूसरे के ख़िलाफ़ प्रोपेगेंडा करने लगे। बीजिंग और उरुमची रेडियो, रूस के शिंजियांग में बेजा दख़ल के ख़िलाफ़ ख़बरें प्रसारित करते थे और रूस के रेडियो अलमाटा और रेडियो ताशकंद शिंजियांग में उइग़ूर लोगों की दुर्दशा की दास्तान सुनाते थे और उनको उकसाते थे कि वो चीनी अत्याचार के ख़िलाफ़ खड़े हो जाएं और रूसी उइग़ूर उनका साथ देंगे और उइग़ूर लोग अपना एक अलग देश बना कर रहेंगे। कहा जाता है कि माओ ज़ेडोंग शिंजियांग को राजा चियानलौंग के ज़माने के मुताबिक़ बढ़ाना चाहते थे यानी राजा चियानलौंग के ज़माने में शिंजियांग बहुत बड़ा था और इस में रूस का वो इलाक़ा भी शामिल था जो सोवियत यूनियन के ज़माने में रूस के ज़ेरे हुकूमत आ गया था और उसको कज़ाख़ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक Kazakh SSR कहा जाता था और जो 1991 में रूस के टूटने के बाद कज़ाख़िस्तान बना, ताहम माओ ऐसा करने में कामयाब नहीं हो पाए। शिंजियांग में रूस की चिंता तब और बढ़ गई जब चीन ने तरीम बेसिन के लोप नोर Lop Nor इलाक़े में परमाणु प्रयोग किए जो रूस के बैकोनूर अंतरिक्ष स्टेशन baikonur space station से सिर्फ 1300 मील दूर Kazakh SSR में स्थित है।[563]

अध्याय 16
शिंजियांग में स्वतंत्रता आंदोलन

第十六章
新疆自由运动

Chapter Sixteen
Freedom Movement in Xinjiang

पूर्वी तुर्किस्तान आज़ादी तहरीक

शिंजियांग पर कम्युनिस्टों के क़ब्ज़े के बाद से उइग़ूर लोग अपनी आज़ादी की मांग करने लगे। यह मांग वक़्त के साथ बढ़ने लगी और कई दफ़ा उसने हिंसा की शक्ल भी इख़्तियार कर ली। उधर रूस ने भी इन उइग़ूर लोगों का इस्तेमाल कर के जो रूस में रह रहे थे चीनी उइग़ूर मुसलमानों को उकसाना शुरू कर दिया और चीनी उइग़ूर की बद हाली और रूसी उइग़ूर लोगों की ख़ुशहाली का ख़ूब प्रचार किया जिससे चीनी उइग़ूर लोगों में स्वतंत्रता भावनाएँ और बढ़ गईं। उधर चीन ने भी हान लोगों को बड़े पैमाने पर शिंजियांग में बसाना शुरू कर दिया जिससे उइग़ूर तुर्कों में और ज़्यादा बेचैनी और असुरक्षा की भावना पैदा हुई। चुनांचे 1953 में जो जनगणना हुई थी उसके हिसाब से शिंजियांग में 6 प्रतिशत हान थे और 75 प्रतिशत उइग़ूर थे लेकिन 2000 में हुई जनगणना के मुताबिक़ 40.57 प्रतिशत हान और 45.21 प्रतिशत उइग़ूर हैं। हान लोग ज़्यादातर उत्तरी शिंजियांग के ज़ुंगरया इलाक़े में रहते हैं जबकि उइग़ूर लोगों की ज़्यादातर आबादी दक्षिणी शिंजियांग के तरीम बेसिन के इलाक़े में रहती है। कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम होने के बाद जब माओ ज़ेडोंग ने चीन में आर्थिक सुधार की शुरूआत की तो शिंजियांग में असमान विकास हुआ चुनांचे उत्तरी शिंजियांग ज़्यादा विकसित है दक्षिणी शिंजियांग के मुक़ाबले में जहां मुसलमानों की अकसरियत (बहुसंख्या) है।[564] शिंजियांग की 9 प्रतिशत आबादी उरुमची शहर में रहती है जबकि उरुमची शहर शिंजियांग का सबसे बड़ा कारोबारी केंद्र है जहां पर पूरे शिंजियांग का 25 प्रतिशत कारोबार होता है, लेकिन उरुमची में

मुसलमानों की आबादी सिर्फ 12.8 प्रतिशत है। हान लोग ज़्यादा शिक्षित हैं और ऊंचे ओहदों पर काम कर रहे हैं, उइग़ूर लोगों के मुक़ाबले में। शहर में नस्लीय भेदभाव और धार्मिक नफ़रत का माहौल है और आबादियां मज़हबी वर्गों में बटी हुई हैं। 1980 की दहाई में कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी हू याओबाँग Hu Yaobang ने ऐलान किया कि जितने हान कैडर शिंजियांग में तैनात हैं उन्हें पूर्वी चीन की तरफ़ मुंतक़िल कर दिया जाएगा।[565] यह उइग़ूर लोगों के लिए एक अच्छी ख़बर थी लेकिन वो ऐसा करने में कामयाब नहीं हुए क्योंकि 1987 में उन्हें कुछ इल्ज़ामात की बिना, पर बरख़ास्त कर दिया उनमें से एक इल्ज़ाम यह भी था, जो कम्युनिस्ट पार्टी के एक आला अफ़सर वांग ज़ेन Wang Zhen ने हू याओबाँग पर लगाया था कि हू ने शिंजियांग में हान कैडरों की हिम्मत तोड़ी और उनकी असुरक्षा की भावना को बढ़ाया और आपसी नफ़रत को हवा दी।[566] उइग़ूर लोग अक्सर यहां गुरिल्ला हमले करते रहते हैं जब कि चीनी हुकूमत आज़ादी की तहरीक को कुचलने के लिए कार्रवाइयां करती रहती है। तलाशियां, गिरफ्तारियां, क़ैद करना यहां चलता रहता है जिसमें बहुत से बेगुनाह लोग भी प्रभावित होते हैं। इसी लिए चीनी हुकूमत ने उइग़ूर के ख़िलाफ़ सख़्त पॉलिसी अपनाई है उनको डाढ़ी रखने, बुर्क़ा पहने, या धार्मिक प्रथाओं का पालन करने की आज़ादी नहीं है। स्कूल में छात्रों को रमज़ान के रोज़े रखने की भी अनुमति नहीं है, न ही वहां कोई नई मस्जिद तामीर की जा सकती है जबकि हुई मुसलमानों से बहुत दोस्ताना रवैया चीनी हुकूमत ने

इख़्तियार किया हुआ है। उनको हज पर जाने की भी अनुमति है और इस के लिए पासपोर्ट भी बना कर दिया जाता है जबकि उइग़ूर इस हक़ से महरूम हैं।

उइग़ूर लोगों को लेकर रूस और चीन के बीच रस्साकशी

1962 में चीन-ओ-रूस मत भेद के बाद तक़रीबन 60,000 उइग़ूर और कज़ाख़ लड़ाके रूस में दाख़िल हुए ताकि वो चीन के ख़िलाफ़ अपनी आज़ादी की जंग जारी रख सकें।[567] रूस ने उइग़ूर और कज़ाख़ लोगों की मदद की और उनको अपने यहां आने की अनुमति दी कि वो लोग रूस में रह कर चीन पर हमले करें, चीन ने उसके जवाब में चीन-ओ-रूस Sino-Soviet सीमा पर बिंगटुआन Bingtuan नामी मिलिशिया तैनात की जो हान और चीनी किसानों पर आधारित थी।[568] 1966 में रूस ने उइग़ूर लोगों की मदद और बढ़ा दी और रेडियो ताशकंद ने उइग़ूर लोगों को चीन पर हमला करने के लिए उकसाया और तक़रीबन 5000 उइग़ूर सिपाहियों ने चीन पर हमला किया और रूस ने उनको अपने यहां पनाह दी, चुनांचे 14 मई 1967 को रूस ने क़बूल किया कि उसने उइग़ूर लोगों की मदद की है। इसके अलावा रेडियो ताशकंद ने चीन के ख़िलाफ़ प्रोपेगेंडा किया और चीन के उइग़ूर लोगों पर ज़्यादतियों को उजागर किया और उइग़ूर लोगों को उकसाया कि वो चीन से आज़ादी की तहरीक को जारी रखें। 1968 में रूस ने पूर्वी तुर्किस्तान के संयुक्त क्रांतिकारी मोर्चे (ETPRP) को लड़ने में चीन के ख़िलाफ़ मदद दी इसी तरह 1970 के दशक में रूस ने पूर्वी तुर्किस्तान

के संयुक्त क्रांतिकारी मोर्चे United Revolutionary Front of East Turkestan (URFET) की मदद की। 1979 में यूसुफ़ बेग मुख़लिसी Yusupbäk Mukhlisi ने रूस की मदद से एक अख़बार जारी किया जिसका नाम था 'पूर्वी तुर्किस्तान की आवाज़' Voice of East Turkestan ताकि तुर्किस्तान आज़ादी तहरीक के हक़ में प्रोपेगेंडा किया जा सके।[569] रूसी 'तुर्कोलॉजिस्ट' डी आई टीकोनोव D.I. Tikhonov और उइग़ूर इतिहासकार तरसुन रहीमोव Tursun Rakhimov ने उइग़ूर आज़ादी तहरीक का इतिहास लिखा[570] और इस में यह दिखाया कि शिंजियांग के असल बाशिंदे उइग़ूर ही हैं और चीन ने नाजायज़ तौर पर शिंजियांग पर क़ब्ज़ा किया है और उइग़ूर लोगों का उत्पीड़न किया और उनको वहां से निकलने पर मजबूर किया और उनकी जगह हान लोगों को वहां बसाया। 1979 में रूसी ख़ुफ़िया एजैंसी 'के जी बी' KGB के एजेंट विक्टर लूइस ने लिखा कि रूसी चीन में अल्पसंख्यकों minorities की आज़ादी तहरीक की मदद कर रहा है, इन अल्पसंख्यकों minorities में उइग़ूर, तिब्बती, मंगोल और मान्चू लोग शामिल हैं।[571] चुनांचे शिंजियांग की तारीख़ की मशहूर किताब 'उइग़ूरलार' Uyghurlar (The Uyghurs) इसी रूसी प्रोपेगेंडा पर आधारित है कि शिंजियांग चीन का हिस्सा नहीं है। इसी वजह से उसका लेखक तुरग़ुन अल्मास Turghun Almas जो कि उरुमची का बाशिंदा था उसको कई दफ़ा जेल हुई और अख़ीर में उसको उसके ही घर में नज़रबंद कर दिया गया और इसी हालत में उसका इंतिक़ाल 11 सितंबर 2001 में हुआ।[572]

रूस के इस रवैया के जवाब में चीन ने 1979 में रूस की अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई के दौरान रूस के ख़िलाफ़ अफ़ग़ान मुजाहिदीन की मदद की और रूस के अफ़ग़ानियों पर मज़ालिम (अत्याचारों) का ख़ूब प्रोपेगेंडा किया और रूस में रह रहे कज़ाख़ लोगों पर रूस के अत्याचारों की भी ख़ूब चर्चा की जिसका नतीजा यह निकला कि रूसी कज़ाख़ लोगों में आज़ादी की मांग और बढ़ गई और जब रूस 1991 में टूटा तो कज़ाख़ लोग भी आज़ाद हो गए और कज़ाख़िस्तान बन गया।

कुछ हिंसक घटनाएं

चीन ने अफ़ग़ान मुजाहिदीन के लिए काशग़र और खोतान में ट्रेनिंग कैंप भी क़ायम किए जिसमें उनको रूस के ख़िलाफ़ लड़ने की ट्रेनिंग दी जाती थी और लाखों डॉलर के छोटे हथियार जैसे बंदूक़ें, रॉकेट, टैंक शिकन बंदूक़ें और बारूदी सुरंगें उपलब्ध कराईं।[573] लेकिन उन्हीं हथियारों की मदद से अफ़ग़ान मुजाहिदीन और उइग़ूर योद्धाओं ने मिलकर कर चीन के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह बारेन टाउनशिप दंगा Baren Township Riot के नाम से जाना जाता है। जो 4 से 10 April 1990 के दरम्यान हुआ जिसमें 23 लोग मारे गए, 21 ज़ख़मी हुए और 232 लोग गिरफ़्तार हुए।[574] उइग़ूर सूत्रों के मुताबिक़ इसमें 1600 लोग मारे गए जिनमें तुर्किस्तान इस्लामिक पार्टी का सदर ज़ेदीन यूसुफ़ Zeydin Yusup भी शामिल था और तक़रीबन 7900 लोग गिरफ़्तार हुए।[575]

• 5 फ़रवरी 1992 को पूर्वी तुर्किस्तान इस्लामिक पार्टी ने उरुमची शहर में दो बसों के अंदर बम धमाके किए जिसमें 3 आदमी मारे और तकरीबन 23 ज़ख़मी हुए।

• 17 जून 1992 में काशग़र के एक होटल में बम धमाका हुआ।

• फ़रवरी 1997 में रमज़ान के महीने में चीनी हुकूमत ने 30 योधाओं को सज़ा-ए-मौत देदी। इन पर इल्ज़ाम था कि वो 'मशरब' नाम की तक़रीबों का आयोजन कर के उनकी आड़ में उइग़ूर आज़ादी की तहरीक चला रहे हैं और संदिग्ध कार्रवाइयां करते हैं। याद रहे कि, उइग़ूर और तुर्क समाज में एक रिवाज है जिसको मशरब कहते हैं जिसमें कुछ हम-ख़याल दोस्त रात को एक घर में इकट्ठे होते हैं और मनोरंजन के लिए शेअर-ओ-शायरी करते हैं, गाते बजाते हैं और खाते पीते हैं। यह सम्मेलन आम तौर पर पूरी रात चलते हैं जिसमें मनोरंजन के मुख़्तलिफ़ खेल आयोजित होते हैं। लेकिन चीनी हुकूमत का इल्ज़ाम था कि उइग़ूर लोग मशरब के नाम पर जमा होते हैं और चीन के ख़िलाफ़ स्वतंत्रता आंदोलन के लिए इन मशरबों का इस्तेमाल करते हैं, एक दो दफ़ा उन मशरब के लोगों ने बाज़ारों में निकल कर तोड़ फोड़ भी की और संगीत वग़ैरह की दुकानों को नुक़सान पहुंचाया जिसकी प्रतिक्रिया में यह कार्रवाई की गई। जिसके नतीजे में शिंजियांग के गुलजा Ghulja शहर में जिसको अब यिनिंग Yining कहा जाता है के मुसलमानों ने उसके ख़िलाफ़ एहतेजाज protest किया और दो दिन तक यह एहतेजाज जारी रहा जिसमें चीनी हुकूमत के ख़िलाफ़ जलूस निकाले गए और 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगाए गए और शिंजियांग

की आज़ादी के नारे भी लगाए गए। चुनांचे 5 फ़रवरी 1997 को चीनी पुलिस ने प्रदर्शनकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई की और उनको मुंतशिर disperse करने के लिए आँसू गैस, पानी की धार और क्लबों का इस्तेमाल किया। चीनी हुकूमत के मुताबिक़ इस कार्रवाई में 9 लोग मारे गए, जबकि उइग़ूर सूत्रों के मुताबिक़ 100 से 167 के दरम्यान लोग मारे गए और तक़रीबन 1600 लोग गिरफ़्तार हुए। गुलजा वाक़िया की चश्मदीद गवाह राबिया क़दीर भी हैं जो बाद में अमेरिका मुंतक़िल हो गईं और अब विश्व उइग़ूर कांग्रेस World Uyghur Congress की अध्यक्ष हैं। गुलजा वाक़े को चीन ने योधाओं के ख़िलाफ़ कार्रवाई कहा[576] जबकि पश्चिमी मीडिया ने उसे शांतिपूर्वक प्रदर्शनकारियों का नरसंहार कहा।[577]

• 25 फ़रवरी 1997 को उरुमची में 3 बसों में बम धमाके किए गए जिसमें 9 लोग हलाक हुए और 68 लोग ज़ख़मी हुए।[578]

• बीजिंग के शीडान Xidan इलाक़े में 7 मार्च 1997 को एक बस में बम धमाका हुआ जिसमें दो लोग मारे गए, उइग़ूर अलहदगी पसंद संस्था 'पूर्वी तुर्किस्तान स्वतंत्रता संगठन' Organization for East Turkestan Freedom ने उसकी ज़िम्मेदारी क़बूल की।[579]

• उज़्बेकिस्तान Uzbekistan की हिज़्ब अलतहरीर जिहादी तंज़ीम ने भी शिंजियांग की आज़ादी को अपने मिशन में शामिल किया। इसी वजह से बहुत से उइग़ूर और तुर्क भी इस तहरीक में शामिल हुए और इस ग्रुप ने शिंजियांग में अपनी जिहादी गतिविधियां जारी रखीं लेकिन इसका प्रमुख जुमा नामंगानी

Juma Namangani 2001 में अफ़ग़ानिस्तान में एक अमरीकी हवाई हमले में मारा गया।[580]

• 2007 में पुलिस ने तुर्किस्तान इस्लामिक पार्टी Turkestan Islamic Party के एक संदिग्ध ट्रेनिंग कैंप पर छापा मारा जिसमें 18 शिद्दत पसंद मारे गए और 17 गिरफ़्तार हुए और एक पुलिस वाला मारा गया और एक ज़ख़मी हुआ।[581]

• 2008 में चाइना साउथर्न एयरलाइन्स China Southern Airlines में एक आत्मघाती बम धमाके की कोशिश को नाकाम बना दिया गया।

• बीजिंग ओलंपिक से पहले काशग़र में दो लोगों ने एक ट्रक में सवार हो कर सड़क पर मार्च कर रही 70 पुलिस वालों पर आधारित एक टुकड़ी पर ट्रक चढ़ा दिया जिसमें 16 पुलिस वाले मारे गए और 16 ज़ख़मी हुए। बाद में चीनी पुलिस ने हमलावरों की पहचान क़ुर्बान जान हमीद Kurbanjan Hemit 28 और अबदुरर्हमान इज़्ज़त सब्ज़ी फ़रोश Abdurahman Azat 33 की शक्ल में की।[582]

• 2009 जून 26, 25 की दरमियानी रात में चीन के सूबा गुआंगडोंग Guangdong province के शहर शाओगुआन Shaoguan में अर्ली लाईट टॉय फ़ैक्ट्री Early light toy factory नामी एक खिलौना फ़ैक्ट्री में हान मज़दूरों ने उइग़ूर मज़दूरों पर हमला कर दिया, जिसमें 2 उइग़ूर मारे गए और 79 उइग़ूर ज़ख़मी हुए जिनमें से 16 की हालत गंभीर थी, इसके अलावा 39 हान भी ज़ख़मी हुए। झगड़े की वजह यह ख़बर थी कि 6 उइग़ूर मज़दूरों ने दो हान औरतों के साथ यौन हिंसा की है, जिन्हों ने अपनी मदद के लिए सिक्योरिटी को बुलाया और यह ख़बर

हान मज़दूरों को भी लग गई जो लगभग दो दर्जन की तादाद में इकट्ठा हो कर डंडे और मेटल रोड लेकर आ गए और उइग़ूर लोगों पर हमला कर दिया।[583] पुलिस को भी बुलाया गया लेकिन पुलिस ढाई घंटे बाद पहुंची।[584] बाद में पता चला कि औरतों के उत्पीड़न वाली ख़बर अफ़वाह (rumour) थी और यह ख़बर उस फ़ैक्ट्री के एक पूर्व मज़दूर शियाओ जियानहुआ Xiao Jianhua ने उड़ाई थी जो फ़ैक्ट्री की मुलाज़मत छोड़ने के बाद से बेरोजगार फिर रहा था और परेशान था। दो मरने वाले उइग़ूर की पहचान आसिम जान आईमायती Aximujiang Aimaiti और सादिक़ जान क़ाज़ी Sadikejiang Kaze के तौर पर हुई।[585] ताहम इस वाक़े का मुक़द्दमा चला जिसमें 10 अक्तूबर 2009 को अदालत ने शियाओ जियान हुआ Xiao Jianhua को फ़साद भड़काने के जुर्म में सज़ा-ए-मौत सुनाई और दूसरे हान शू कीची Xu Qiqi को नरसंहार के जुर्म में उम्र क़ैद दी, इसके अलावा तीन हान तीन उइग़ूर को 5 से 7 साल की क़ैद हुई।[586]

• 5 जुलाई 2009 को, गुआंगडोंग वाक़े के विरोध में उरुमची शहर में उइग़ूर लोगों ने एक प्रदर्शन किया जिसमें उन लोगों की मांग थी कि गवर्नमेंट गुआंगडोंग वाक़े की निष्पक्ष जांच कराए और मुजरिमों को सज़ा दे उनकी यह भी शिकायत थी कि चीनी हुकूमत उइग़ूर लोगों को सुरक्षा देने में नाकाम रही है और यह कि गुआंगडोंग में पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचने में बहुत देर की जिसकी वजह से दो लोगों की जान गई।[587] जबकि हुकूमत का कहना था कि फ़साद भड़काने वाले शख़्स को गिरफ़्तार कर लिया गया है और वाक़े की मज़ीद तफ़तीश चल रही है। चुनांचे शाम 5 बजे उरुमची के जनता चौक people's square पर

तक़रीबन 1000 लोग जमा हुए और प्रदर्शन शुरू किया लेकिन 8 बज कर 18 मिनट पर प्रदर्शनकारियों ने तोड़ फोड़ शुरू कर दी और बसों में आग लगानी शुरू कर दी और हान लोगों पर हमले शुरू कर दिए। यह शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन क्यों हिंसक हुआ इसका पता नहीं लग पाया ताहम इस हिंसा में 197 लोग मारे गए जिनमें ज़्यादातर हान थे।[588] जबकि तक़रीबन 1721 लोग ज़ख़मी हुए। इसके अलावा बहुत सी गाड़ियां, दुकानें और इमारतों तबाह हुईं। बहुत से लोग लापता हो गए, ह्यूमन राइट्स वॉच की तहक़ीक़ के मुताबिक़ 43 लोगों के लापता होने के केस दर्ज किए गए जबकि असल केस इस से ज़्यादा हो सकते हैं, इन लापता होने वालों में सब उइग़ूर हैं।[589] इस वाक़े में 1434 उइग़ूर फ़सादयूं को गिरफ़्तार किया गया। 7 जुलाई 2009 को हान लोगों ने प्रदर्शन शुरू कर दिया और 10,000 हान लोगों ने सड़कों पर निकल कर प्रदर्शन और तोड़ फोड़ शुरू कर दी। कई जगहों पर उइग़ूर और हान लोगों में टकराव भी हुआ और पुलिस ने आँसू गैस छोड़कर हुजूम को मुंतशिर किया। यह फ़साद तीन चार दिन तक जारी रहा। 10 जुलाई को जुमे के दिन सारी मस्जिदें बंद करने का हुक्म दे दिया गया ताकि फ़साद को क़ाबू में किया जा सके। इस वाक़े में कुल मिलाकर 26 लोगों को सज़ा-ए-मौत हुई जिनमें से 25 उइग़ूर थे और एक हान और एक उइग़ूर ख़ातून।[590]

• इन हिंसक वाक़ियात की तादाद बहुत ज़्यादा है और सब का यहां ज़िक्र करना बहुत मुश्किल है ताहम कुल मिलाकर मई 2008 से जुलाई 2015 के दरम्यान शिंजियांग में 99 हिंसक वाक़ियात पेश आए।[591]

पूर्वी तुर्किस्तान के कुछ स्वतंत्रता संगठन

1	तुर्किस्तान इस्लामिक पार्टी/ पूर्वी तुर्किस्तान इस्लामिक आंदोलन (ETIM)	Turkestan Islamic Party ETIM East Turkestan Islamic Movement:
2	पूर्वी तुर्किस्तान का संयुक्त क्रांतिकारी मोर्चा	United Revolutionary Front of East Turkestan URFET
3	ईस्ट तुर्किस्तान पीपुल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी	East Turkestan People's Revolutionary Party ETPRP
4	पूर्वी तुर्किस्तान निर्वासित सरकार	East Turkestan Government in Exile
5	पूर्वी तुर्किस्तान की आवाज़	Voice of East Turkestan Šärqiy Turkestan Awazi
6	उइग़ूर अमेरिकन एसोसिएशन	Uyghur American Association
7	विश्व उइग़ूर कांग्रेस	World Uyghur Congress
8	पूर्वी तुर्किस्तान मुक्ति संगठन	East Turkestan Liberation Organization ETLO
9	पूर्वी तुर्किस्तान ग्रे वुल्फ़ पार्टी	Eastern Turkestan Grey Wolf Party
10	उइग़ूर मुक्ति संगठन	Uyghur Liberation Organization ULO
11	पूर्वी तुर्किस्तान स्वतंत्रता संगठन	Organization for East Turkestan Freedom

अध्याय 17

कम्युनिस्ट सरकार के तहत मुसलमानों की सामाजिक-धार्मिक स्थिति

第十七章

共产党政府下穆斯林的社会宗教状况

Chapter Seventeen

Socio-religious Conditions of Muslims under Communist Government

शुरू से मुसलमानों के संबंध कम्युनिस्ट हुकूमत से कुछ अच्छे नहीं रहे। इस की बहुत सी वजूहात हैं जिनमें से कुछ नीचे दी गई हैं।

सबसे पहली वजह यह है कि मुसलमान जमहूरियत और कम्युनिज़्म में से जमहूरियत को ज़्यादा पसंद करते हैं कम्युनिज़्म के मुक़ाबले में। हालाँकि दोनों ही ग़ैर इस्लामी नज़रियात माने जाते हैं लेकिन मुसलमान कम्युनिज़्म को इस्लाम के लिए ज़्यादा मोहलिक मानते हैं बनिस्बत जमहूरियत के। इसी लिए मुसलमानों ने चीन में शुरू से ही लोकतंत्र वादियों (democrats) की हिमायत की, यानी जमहूरियत पसंद पार्टी का साथ दिया जिसको क्योमिनटांग Kuomintang कहा जाता था जिसके अध्यक्ष पहले सुन यातसेन Sun Yat-sen थे बाद में चियांग काई शेक Chiang Kai-shek हो गए। दूसरी चीन और जापान जंग के दौरान भी मुसलमानों ने जिनमें मा क्लीक़ Ma clique के मुसलमान पेश पेश थे, उन्होंने क्योमिनटांग का साथ दिया और जापानियों का विरोध किया जिसकी वजह से जापानी फ़ौज ने अपने मफ़्तूहा (विजित) इलाक़ों में चीनियों के साथ मुसलमानों का भी नरसंहार किया जिसमें सबसे बड़ा फ़साद नानजिंग में हुआ जहां हज़ारों मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया गया, यहां तक कि मस्जिदें लाशों से पटी पड़ी थीं।

• दूसरी वजह यह है कि माओ ज़ेडोंग के लॉग मार्च Long march [16 October 1934 – 22 October 1935 (1 year, 6 days)] के दौरान जब उन लोगों को मा

क्लीक़ Ma clique के इलाक़े से गुज़रना था। उस वक़्त लॉंग मार्च के दो बड़े लीडर थे एक ज़ांग गोटाओ Zhang Guotao और दूसरा माओ ज़ेडोंग, याद रहे ज़ांग गोटाओ, माओ से भी ज़ादा सीनियर था, लेकिन दोनों में रास्ते को लेकर मत भेद हो गया। ज़ांग का कहना था कि हमें दक्षिण पश्चिम southwest की तरफ़ पेशक़दमी करना चाहिए जिस रास्ते में मा क्लीक़ पड़ती थी, जब कि माओ ज़ेडोंग मा क्लीक़ की ताक़त से वाक़िफ़ था और उसे डर था कि मा क्लीक़ उन पर हमला कर सकती है इस लिए वो दूसरा रास्ता इख़्तियार करना चाहता था जो उत्तर की तरफ़ शांक्सी Shaanxi होता हुआ जाता था।[592] दोनों में कोई सहमति नहीं हो पाई, बिल-आख़िर दोनों ने अपनी अपनी मर्ज़ी का रास्ता अपनाया जिसकी वजह से ज़ांग की फ़ौज पर क्योमिनटांग और मा क्लीक़ की इत्तिहादी फ़ौज (गठबंधन सेना) ने हमला कर दिया और वो तितर-बितर हो गई। जब कि माओ की फ़ौज सुरक्षित अपने मुक़ाम पर पहुंच गई।[593] ज़ांग की हारी हुई फ़ौज 80,000 में से सिर्फ 21,800 ही बच पाई, उस के बाद वो माओ के बराबर कभी नहीं पहुंच पाया, हालाँकि वो माओ से सीनियर था और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के उन बुनियादी सदस्यों में से था जिन्हों ने कम्युनिस्ट पार्टी की बुनियाद रखी थी, बाद में माओ ने उस को सज़ा देने की कोशिश की तो वो क्योमिनटांग में शामिल हो गया और कनाडा मुंतक़िल हो गया और ईसाई मज़हब इख़्तियार कर लिया। लेकिन इस वाक़े से माओ के दिल में मुसलमानों की नफ़रत और ज़्यादा बढ़ गई और वो किसी भी क़ीमत पर मुसलमानों की ताक़त को तोड़ना चाहता था।

• तीसरी वजह यह थी कि मुसलमानों ने 1949 CE में कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम होने के बाद क्योमिनटांग की तरफ़ से मुज़ाहमत जारी रखी जिसको क्योमिनटांग इस्लामी विद्रोह Kuomintang Islamic insurgency का नाम दिया जाता है। यह मुज़ाहमत 1950-1958 CE तक गान्सू, चिंगहाई, निंगशिया और शिंजियांग Gansu, Qinghai, Ningxia, Xinjiang के इलाक़ों में चली। बिल-आख़िर कम्युनिस्ट पार्टी की जीत हुई, लेकिन इस की वजह से भी कम्युनिस्ट हुकूमत का नज़रिया मुसलमानों के लिए अच्छा नहीं रहा।

• ताहम कुछ मुसलमानों ने कम्युनिस्ट पार्टी के लिए भी काम किया जिसकी वजह से उनको बहुत सम्मानित किया गया। जिनमें सबसे मशहूर यांग जिंगयू February 13, 1905-February 23, 1940)Yang Jingyu हैं, जो दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ़ से जापानी हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़े और शहीद हुए। उनके नाम पर एक शहर भी है जिसको जिंगयू Jingyu काउंटी कहा जाता है। जो पहले मेंगजियांग काउंटी Mengjiang County कहलाता था। यह शहर जिलिन सूबे Jilin province में है। वांग जिंगयू का तफ़सीली वाक़िया दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में बयान किया जा चुका है।

• चौथी वजह शिंजियांग में मुसलमानों की आज़ादी की लड़ाई है कि वो चीन से आज़ादी हासिल कर के पूर्वी तुर्किस्तान East Turkestan Republic (ETR) नाम का मुलक बनाना चाहते हैं। इस वजह से भी कम्युनिस्ट पार्टी और मुसलमानों के बीच ला तादाद हिंसक वाक़ियात हुए।

• कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम होने के वक़्त मुसलमानों की तादाद शिंजियांग में ज़्यादा थी लेकिन बाद में कम्युनिस्ट हुकूमत ने एक पॉलिसी के तहत वहां पर बड़ी तादाद में हान जाति के लोगों को बसाया जिससे मुसलमानों को चिंता हुई। यह भी एक वजह है मुसलमानों और हुकूमत के बीच टकराव की। चुनांचे 1953 में जो जनगणना हुई थी उसके हिसाब से शिंजियांग में 6 प्रतिशत हान थे और 75 प्रतिशत उइग़ूर थे लेकिन 2000 में हुई जनगणना के मुताबिक़ 40.57 प्रतिशत हान हैं और 45.21 प्रतिशत उइग़ूर हैं।

कम्युनिस्ट दौर में मुसलमानों के हालात

जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि मुसलमानों के ताल्लुक़ात कम्युनिस्ट हुकूमत से ख़ुशगवार नहीं थे इसी लिए कम्युनिस्ट हुकूमत आने के बाद मुसलमानों को बहुत सी सख्तियों और मज़ालिम (अत्याचारों) का सामना करना पड़ा। जैसा कि हम जानते हैं कि कम्युनिस्ट विचारधारा के मुताबिक़ मज़हब एक अफ़ीम है और मज़हब उन कई तरकीबों में से एक है, जिनको इस्तेमाल कर के बुर्जुआ (सरमाया-दार/bourgeoisie) लोग प्रोलतारी (मजदूर /proletariat) लोगों को अपनी गुलामी के चंगुल में क़ैद रखते हैं। याद रहे कम्युनिस्ट विचारधारा में ग़रीब और मज़दूर तबक़े को प्रोलतारी proletariat कहा जाता है, और अमीर और सरमाया-दार तबक़े को बुर्जुआ bourgeoisie कहा जाता है। चुनांचे कम्युनिस्ट विचारधारा के मुताबिक़ अगर कहीं कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम हो जाए तो वहां सरमाया-दार तबक़े को बलपूर्वक ख़त्म कर देना चाहिए ताकि समाज में बराबरी क़ायम हो सके और उन सब चीज़ों को भी

ख़त्म कर देना चाहिए जिनको इस्तेमाल कर के हज़ारों साल से सरमाया-दार तबक़ा ग़रीबों को अपना ग़ुलाम बनाता आया है इन चीज़ों में मज़हब भी शामिल है। इस लिए कम्युनिस्ट चीन में किसी भी मज़हब के लिए कोई जगह नहीं है।

शुनहुआ दुर्घटना 1958

मार्च 1958 में ज़ूशियाफ़ू जो चिंग हाई की कम्युनिस्ट पार्टी का वाइस सेक्रेटरी था, ने चिंगहाई के मज़दूर पेशा लोगों को मजबूर किया कि वो सोशलिस्ट कोऑपरेटिव cooperative में शामिल हो जाएं, ये कोऑपरेटिव जानवर पालन के लिए बनाई जानी थी। लेकिन इस डर से कि बग़ावत ना हो जाये कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अल्पसंख्यक धार्मिक नेताओं को पर लगाम लगाने के लिए जलसे और संघर्ष सत्र आयोजित किए। याद रहे कि संघर्ष सत्र वो इजलास कहलाते थे जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी के विरोधियों को अनुशासित किया जाता था और उनको भीड़ के सामने दंडित किया जाता था। [594] इन कम्युनिस्ट विरोधियों में सज़ा का शिकार होने वाला एक बुध लामा जनना पाल रिनपोचे Jnana Pal Rinpoche भी था जिसको अनुशासित कैंप Re-education Camp में भेज दिया गया, ये दलाई लामा Dalai Lama और पंचेन लामा Panchen Lama का उस्ताद था।[595] इस की प्रतिक्रिया में गंगका क़स्बे Gangca Town के कुछ लोगों ने 17 अप्रैल 1958 को कोऑपरेटिव में ज़बरदस्ती भर्ती के ख़िलाफ़ विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया और जनना पाल की रिहाई की मांग की। गंगका के पार्टी सेक्रेटरी को बंदी बना लिया, बिजली के खंबों को उखाड़ दिया

और दूसरे दिन इस एहतेजाज ने हिंसक रूप इख़्तियार कर लिया और कम्युनिस्ट पार्टी की टीम का एक सदस्य मारा गया। 24 अप्रैल को 4000 मुस्लिम सालार लोग भी एहतेजाज में शामिल हो गए शायद इस वजह से क्योंकि ये पूरी कार्रवाई अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ थी। सालार लोगों ने Xunhua शुनहुआ की घेराबंदी कर ली, कुछ स्टोर और दुकानें लूट ली गईं और सरकारी अहलकारों को पीटा गया। लेकिन रात में हथियारबंद बाग़ी वहां से फ़रार हो गए।

हुकूमत की जवाबी कार्रवाई

25 अप्रैल 1958 की सुबह पी एल ए की दो रेजिमेंट बाग़ियों की सरकूबी के लिए रवाना हुईं और आते ही उन्होंने उन प्रदर्शनकारियों पर गोली चलानी शुरू कर दी जो जनना पाल की रिहाई की मांग कर रहे थे। इस कार्रवाई में 435 लोग मारे गए और कुल 719 लोग क़तल या ज़ख़मी हुए, और 2500 लोग गिरफ़्तार हुए जिनमें से 1581 सालार, 537 तिब्बती, 343 हुई और 38 हान थे। पी एल ए के 17 फ़ौजी मारे गए और एक अंदाज़े के मुताबिक़ तक़रीबन 10 लाख रॅन्मिन्बी (1 million RMB) का नुक़सान हुआ। जनना पाल ने एक संघर्ष सत्र में ख़ुदकुशी कर ली, और हुकूमती अहलकारों ने इस पर बग़ावत का नेतृत्व करने का इल्ज़ाम लगाया। माओ ज़ेडोंग ने इस कार्रवाई को जायज़ ठहराया और ये कहा, “चिंगहाई में इन्क़लाब विरोधियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई शानदार थी, क्योंकि ये मेहनत-कश लोगों का आज़ादी की तरफ़ एक क़दम था और सी सी पी कमेटी का फ़ैसला सही था”।[596]

सांस्कृतिक क्रांति (सक़ाफ़्ती इन्क़लाब)

सक़ाफ़्ती इन्क़लाब Cultural Revolution (May 16, 1966 – October 6, 1976) (सांस्कृतिक क्रांति) चीन का एक तहज़ीबी इन्क़लाब था जो चीनी समाज में सही कम्युनिस्ट विचारधारा को बड़ावा देने के लिए बरपा किया गया। उस के जनक चेयरमैन माओ ज़ेडोंग थे। माओ का कहना था कि चीनी समाज और हुकूमत में बहुत सारे बुर्जुआ Bourgeois तत्व दाख़िल हो गए हैं जो चीन में सरमायादाराना capitalist व्यवस्था बहाल करने के इंतज़ार में हैं। इस लिए उन लोगों को हिंसक तरीक़ों से ही ख़त्म किया जा सकता है। फ़ौज और कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर भी बड़े पैमाने पर उन लोगों को निशाना बनाया गया जिनको माओ अपने लिए या कम्युनिस्ट नज़रियात के लिए ख़तरा मानते थे। लियू शाओची Liu Shaoqi और डेंग शियाओपिंग Deng Xiaoping 邓小平 वग़ैरह जैसे आला अफ़सरान को भी नहीं बख़्शा गया। इसी के साथ ही माओ की उपासना करने वाला एक पंथ (फ़िर्क़ा) भी वजूद में आ गया जो माओ को अपना देवता मानता था, इस को माओ का व्यक्तित्व पंथ Personality Cult कहा जाता है। कहा जाता है कि इस सक़ाफ़्ती इन्क़लाब ने डायरेक्ट या डायरेक्ट (direct or indirect) हर शख़्स को प्रभावित किया। हर पुरानी विचारधारा या सिद्धांत और पुरानी चीज़ को ख़त्म किया गया। धर्मों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और धार्मिक पूजा स्थलों और दूसरी मज़हबी इमारतों को तबाह कर दिया गया या बंद कर दिया गया और कोई शख़्स भी अगर ऐसे कपड़े पहने मिलता जो किसी ख़ास मज़हब की अलामत समझे जाते तो उस पर ज़ुल्म-ओ-सितम

किया जाता, धार्मिक गुरुओं जैसे इमाम, पादरी और बुद्ध लामाओं को जबरन मज़दूरी कैम्पों में भेज दिया गया।

इन्क़लाब की शुरूआत

16 May 1966 CE को बीजिंग में पॉलिटी ब्यूरो Politburo की एक मीटिंग बुलाई गई जिसमें माओ ने अपने सियासी एजेंडे को मीटिंग के सामने रखा। इस में माओ ने कई तक़रीरें कीं और नए बर्खास्त अधिकारी पेंग ज़ैन Peng Zhen और लो रुईचिंग Luo Ruiqing के भ्रष्टाचार को उजागर किया और उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई को जायज़ ठहराया।

पेंग ज़ैन की घटना

याद रहे सक़ाफ़्ती इन्क़लाब से पहले माओ ने अपने शीर्ष विरोधियों को रास्ते से हटाया ताकि कोई उस की मुख़ालिफ़त की हिम्मत न कर सके और उस के लिए कोई रुकावट पैदा न हो। इन अफ़सरान में सबसे नाम वर पेंग ज़ैन था जो बीजिंग का मेयर था। हुआ यह था कि 1959 CE में बीजिंग के डिप्टी मेयर वू हान Beijing Deputy Mayor Wu Han ने एक ऐतिहासिक नाटक 'हाई रुई की बर्खास्तगी' Hai Rui Dismissed from Office दिखाया किया जिसमें यह दिखाया गया था कि हाई रुई Hai Rui नाम के एक ईमानदार अफ़सर को एक भ्रष्ट राजा ने बर्खास्त कर दिया। माओ ज़ेडोंग ने शुरू में तो इस ड्रामे की तारीफ़ की लेकिन बाद में उसने अपनी बीवी जियांग चिंग Jiang Qing और शंघाई प्रोपेगेंडा माहिर याओ वैनयुआन Yao Wenyuan को हुक्म दिया कि वो इस

ड्रामे के ख़िलाफ़ एक मज़मून प्रकाशित करें। याओ ने खुले आम यह प्रोपेगेंडा किया कि हाई रुई ड्रामे की आड़ में, माओ पर निशाना साधा गया है क्यों कि उसने माज़ी में पेंग डीहुआई Peng Dehuai नाम के एक ईमानदार अफ़सर को बरतरफ़ किया था।[597] चूँकि वू हान डिप्टी मेयर था इस लिए मेयर पेंग ज़ैन Peng Zhen पर इस ड्रामे की सारी ज़िम्मेदारी आती थी, क्यों कि उसी की अनुमति के बाद यह ड्रामा दिखाया गया था। इस लिए माओ, पेंग ज़ैन से नाराज़ हो गया और उस को बरतरफ़ कर दिया।

सांस्कृतिक क्रांति समूह

Cultural Revolution Group (CRG)

चुनांचे 16 May 1966 CE को पॉलिटी ब्यूरो मीटिंग के सदस्यों ने माओ के हुक्म के मुताबिक़ पेंग और उस के 4 साथियों जिनको 'पांच आदमी समूह' Five Man Group कहा जाता था उस को बर्खास्त कर दिया। याद रहे यह ग्रुप एक असंवैधानिक ग्रुप था जो माओ के सबसे क़रीबी लोग माने जाते थे और उनको इस बात के लिए नियुक्त किया गया था कि वो सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) की देख रेख करें। उनके नाम हैं पेंग ज़ैन, लूडिंग यी, वू लैंगशी, कांग शेंग और ज़ू यांग

(Peng Zhen, Kang Sheng, Lu Dingyi, Wu Lengxi, Zhou Yang).

चुनांचे उनको बरतरफ़ करने के बाद उनकी जगह दूसरे 5 आदमी तैनात किए गए जिनको "सांस्कृतिक क्रांति समूह" Cultural Revolution Group (CRG)

का नाम दिया गया। यह नए लोग थे माओ की बीवी जियांग चिंग, कांग शेंग, याओ वैन युआन, ज़ांग चुन चियाओ, वांग ली और शी फ़ूज़ी

Jiang Qing, Kang Sheng, Yao Wenyuan, Zhang Chunqiao, Wang Li and Xie Fuzhi

यह पांचों लोग इन्क़लाब के सर्वोच्च नेता (Supreme Leaders) माने गए, बल्कि कई मामलों में यह माओ से भी ज़्यादा सख़्त थे। यह ग्रुप इतना ताक़तवर हो गया कि उस की ताक़त पॉलिटी ब्यूरो स्टैंडिंग कमेटी Politburo Standing Committee (PSC) से भी ज़्यादा हो गई और कुछ साल तक उसने पॉलिटी ब्यूरो स्टैंडिंग कमेटी के फ़राइज़ अंजाम दिए। जब कि असल पॉलिटी ब्यूरो स्टैंडिंग कमेटी इस दौरान निलंबित रही। याद रहे पॉलिटी ब्यूरो स्टैंडिंग कमेटी चीनी हुकूमत की सबसे आला कमेटी है जिस तरह लोकतांत्रिक निज़ाम में कैबिनेट cabinet होती है। इस में 5 से लेकर 11 सदस्य हो सकते हैं यह देश के सबसे शक्तिशाली लीडर माने जाते हैं।

इस के अलावा पॉलिटी ब्यूरो मीटिंग में एक घोषणा पत्र जारी किया गया जिसको सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) की बुनियाद माना जाता है। वो कुछ इस तरह था,

"Those representatives of the bourgeoisie who have sneaked into the Party, the government, the army, and various spheres of culture are a bunch of counter-revolutionary revisionists. Once conditions are ripe, they will seize political power and turn the dictatorship of the proletariat into a dictatorship of the bourgeoisie. Some of them we have already seen through; others we have not. Some are still trusted

by us and are being trained as our successors, persons like Khrushchev for example, who are still nestling beside us".

"बुर्जुआ bourgeois के वो नुमाइंदे जो पार्टी, हुकूमत, फ़ौज और संस्कृति (culture) के मुख़्तलिफ़ शोबों में दाख़िल हो गए हैं, वो इन्क़लाब विरोधियों का एक ग्रुप है। एक-बार जब हालात उनके मुवाफ़िक़ हो जाएंगे, तो वो सत्ता पर क़ब्ज़ा कर लेंगे और प्रोलतारी की हुकूमत को बुर्जुआ की हुकूमत में बदल देंगे। उनमें से कुछ को हम पहले ही देख चुके हैं। दूसरे अभी तक सामने नहीं आए। उनमें से कुछ लोगों पर हम भरोसा करते हैं और वो हमारे जानशीन के तौर पर तरबियत हासिल कर रहे हैं, जैसे (रूस में) निकिता ख़ुश्चेव Nikita Khrushchev जैसे लोग, जो अब भी हमारे साथ बसे हुए हैं (याद रहे ख़ुश्चेव, स्टालिन के मरने के बाद रूस का सदर बना और स्टालिन की निंदा की और उस की पॉलिसियों को उल्टा कर दिया, और उस के मज़ालिम (अत्याचारों) को ख़त्म किया, शायद यही डर माओ को था कि मेरे बाद मेरा जानशीन, कम्युनिज़्म को चीन से ख़त्म न कर दे')।

इस को 16 मई का नोटिफ़िकेशन May 16 Notification कहा जाता है। इस के बाद माओ ने July 16, 1966 CE को वूहान में प्रेस के सामने यांग्त्ज़ी नदी में तैर कर उस को पार किया। उस के साथ हज़ारों उस के चाहने वालों और पैरोकारों ने भी यांग्त्ज़ी नदी पार की। यह वाक़िया सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) की शुरूआत माना गया।[598] 24 जुलाई को माओ ने ग्रेट हॉल ऑफ द पीपल Great Hall of the People नाम के मुक़ाम पर एक रैली की जिसमें उसने स्कूल, कॉलेजों और यूनिवर्सिटी के छात्रों को इस आंदोलन में हिस्सा लेने की अपील

की जिससे पूरे देश के नौजवान सड़कों पर निकल खड़े हुए। सरकारी संस्थानों और पुलिस महकमे को आदेश दिया कि वो किसी तरह भी छात्रों को न रोकें। जिन अफ़सरान ने इस की खिलाफवर्जी की उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई की गई। और छात्रों को भी आश्वासन (यक़ीन दहानी) दिया गया कि वो इन्क़लाब को पूरी तरह अपने हाथ में ले लें और हुकूमत की तरफ़ से हस्तक्षेप का कोई डर न रखें। चुनांचे छात्र और कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता हुजूम बना कर सड़कों पर निकल गए और अपने विरोधियों पर हमले शुरू कर दिए। पूरे देश में अफ़रा-तफ़री का माहौल बन गया। चुनांचे हर पुरानी और फ़र्सूदा चीज़ को तबाह किया जाने लगा। 1 August 1966 CE को आठवीं सेंट्रल कमेटी का 11वां इजलास Eleventh Plenum of the Eighth Central Committee था जिसमें माओ ने अपना इन्क़िलाबी एजेंडा पूरी ताक़त से रखा और जब उसने देखा कि पार्टी के लोग उस का पूरी तरह साथ नहीं दे रहे हैं तो उसने पार्टी पर यह इल्ज़ाम बार-बार लगाया कि वो अपने नज़रियात से दूर होती जा रही है। जब सदर लियू शाओची ने सेंट्रल कमेटी के इजलास में अपनी उद्घाटन भाषण दिया तो इस दौरान माओ लियू शाओची की खुलेआम निंदा करता, वो लियू शाओची को तक़रीर के दौरान बार-बार टोकता और अपमानजनक व्यवहार करता।[599]

चार पुरानी चीज़ें Four Olds

माओ की इस अपील का चीन की नौजवान पीढ़ी ने बहुत तेज़ी से पालन किया और देश भर में नौजवानों, मज़दूरों और किसानों ने मिलकर लाल रक्षक या रैड गार्ड्स Red Guards फ़ौज बनाई और हर उस शख़्स और चीज़ के ख़िलाफ़

कार्रवाई की जिसको वो सही कम्युनिस्ट सिद्धांतों के ख़िलाफ़ समझते थे या कम्युनिज़्म के फैलने में रुकावट मानते थे। इस फ़ौज ने पूरे देश को अपने हाथ में ले लिया और इन्क़िलाबी गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और हर जगह कार्रवाइयां कीं, लोगों में उस का बेपनाह ख़ौफ़ तारी हो गया। जनरल लिन बाओ Lin Biao जो अब माओ का करीबी सहयोगी बन गया था उस ने रैड गार्ड्स Red Guards से यह मुतालबा किया कि चार पुरानी चीज़ों Four Olds को तबाह किया जाए। वो चार चीज़ें थीं, पुराने रस्म-ओ-रिवाज, पुरानी संस्कृति (culture), पुरानी आदतें, और पुराने ख़्यालात Old Ideas, Old Culture, Old Customs, and Old Habits.[600] क्यों कि उनका मानना था कि बुर्जुआ लोग समाज में अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए पुरानी चीज़ों और फ़र्सूदा ख़्यालात का सहारा लेते हैं। इस के नतीजे में हर पुरानी चीज़ को रैड गार्ड्स ने तबाह करना शुरू कर दिया यहां तक कि ऐतिहासिक इमारतों और आसारे-ए-क़दीमा (पुरातत्त्व) को भी नहीं बख़्शा और उनको बड़े पैमाने पर तबाह किया गया। सबसे ज़्यादा बीजिंग में तारीख़ी बाक़ियात को तबाह किया गया, शानडोंग में कन्फ्यूशियस के मंदिर को भी तबाह कर दिया गया और उस में बने कन्फ्यूशियस के मक़बरे को भी तबाह कर दिया गया और लाइब्रेरीयों में जो ऐतिहासिक पुस्तकें थीं और दूसरे प्राचीन अवशेष रखे थे उनको भी ज़बरदस्त नुक़सान पहुंचाया गया। माओ की बातें और विचारों को एक किताब की शक्ल में प्रकाशित किया गया इस किताब का नाम "छोटी लाल किताब" Little Red Book रखा गया इस में माओ ने इन्क़लाबियों को बहुत से मशवरे और निर्देश

दीये थे। इस किताब को तमाम रैड गार्ड्स में बांटा गया। दिसंबर 1976 तक उसकी ३५ करोड़ 350-million कापियां छप चुकी थीं। 22 अगस्त 1966 को मर्कज़ी हुकूमत ने एक हुक्मनामा पुलिस को भेजा जिसमें हुक्म दिया गया था कि पुलिस, रैड गार्ड्स की कार्रवाई में कोई दख़ल अंदाज़ी न करे और जिन पुलिस अफ़सरों ने इस की ख़िलाफ़वर्ज़ी की उनको इन्क़लाब मुख़ालिफ़ का नाम दिया गया और उनको भी दंड दिया गया। इस हुक्मनामे से इन्क़लाबियों के हिम्मत बेपनाह बड़ा गई और उन्होंने खुले आम अपने विरोधियों पर ज़ुल्म-ओ-सितम करना शुरू कर दिया। अगस्त और सितंबर 1966 में सिर्फ बीजिंग में 1772 लोगों को क़त्ल किया गया इस से ज़्यादा लोगों को शारीरिक यातना का निशाना बनाया गया। शंघाई में सितंबर में 704 लोगों ने आत्महत्या की और वूहान में 62 लोगों ने। छात्रों की इन बेक़ाबू होती कार्रवाइयों को रोकने के लिए, माओ ने दिसंबर 1968 में 'देहात की तरफ़ कूच' Down to the Countryside Movement का हुक्म दिया जिसमें सारे फ़ारिग़ होने वाले छात्रों को यह हुक्म दिया गया कि वो देहातों में जाकर वक़्त गुज़ारें। जिससे शहरों में जो इन छात्रों ने हंगामा बरपा कर रखा था वो कम हो गया 1970 के आख़िर में उनको अपने घरों को लौटने की अनुमति मिल गई।

पाँच लाल दल (सुर्ख़) Five Red Categories

पाँच लाल दल, लोगों के वो पाँच वर्ग थे जिनको सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के दौरान, रैड गार्ड्स में भर्ती होने की अनुमति थी इनके अलावा कोई भी रैड गार्ड्स में भर्ती नहीं हो सकता था।[601] वो पाँच वर्ग यह हैं।

• कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता Communist Party Workers

• ग़रीब और निचले औसत दर्जे के किसान Poor and lower-middle peasants

• क्रांतिकारी सैनिक Revolutionary soldiers

• क्रांतिकारी कार्यकर्ता Revolutionary cadres

• इन्क़लाब के शहीदों के घर वाले The dependents of revolutionary Martyrs.

पाँच काले दल (स्याह) Five Black Categories

पाँच काले दल वो वर्ग थे जिनको माओ ज़ेडोंग अपना और कम्युनिस्ट नज़रियात का दुश्मन मानते थे और उनको सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के लिए रुकावट मानते थे, उनके ख़िलाफ़ कार्रवाइयां की जाती थीं और ज़ुल्म-ओ-सितम का निशाना बनाया जाता था।[602] वो पाँच वर्ग यह हैं

• जमींदार Landlords

• धनी किसान Rich farmers or peasants

• इन्क़लाब विरोधी Counter-revolutionaries

• शरपसंद अनासिर Bad elements

• दाएं बाज़ू के राजनेता Rightists

संघर्ष सत्र Struggle sessions

संघर्ष सत्र (जद्द-ओ-जहद की मजालिस) Struggle sessions या निंदा रैलियां denunciation rallies, वो सम्मेलन होते थे जिनमें जनता के एक बड़े हुजूम के सामने इन्क़लाब विरोधी लोगों को लाया जाता था और उनको तरह तरह से यातना दी जाती थी और बेइज़्ज़त किया जाता था। इन लोगों पर "दुश्मन तबक़े" Class enemies होने का इल्ज़ाम लगाते हुए उन लोगों की सर-ए-आम अपमान किया जाता, और उनके क़रीबी लोगों के ज़रिये उनको मारा पीटा जाता। "छात्रों को उनके शिक्षकों के ख़िलाफ़ खड़ा किया जाता, और छात्रों से पिटवाया जाता, दोस्तों पति-पत्नी पर एक दूसरे को धोका देने और मार पीट करने के लिए दबाओ डाला जाता और बच्चों को अपने माता पिता की जासूसी के लिए इस्तेमाल किया जाता।[603] और उन लोगों को मजबूर किया जाता कि वो जनता के सामने अपने नाकर्दा जरायम (अकृत्यित अपराध) का इक़रार करें, अपने आपको बुरा-भला कहें और माफ़ी मांगें। यह संघर्ष सत्र अक्सर पीड़ित के काम करने की जगह आयोजित किए जाते जैसे स्कूल, यूनिवर्सिटी, ऑफ़िस, फ़ैक्ट्री वग़ैरह लेकिन अगर वो कोई मशहूर आदमी होता तो मैदान या स्टेडियम में भी आयोजित होते थे ताकि बड़ी तादाद में लोग देख सकें। लोगों को जमा करना, उनकी राय बनाना और हुजूम को माओ के हक़ में करने के लिए पहले से लोगों को ट्रेनिंग देना। उन मजालिस का मक़सद माओ के दुश्मनों की पहचान करना और माओ के पैरोकारों में क़ुर्बानी का जज़्बा पैदा करना होता था। माओ का मानना था कि इन्क़लाब की कामयाबी के लिए लोगों पर सख़्ती करना ज़रूरी

है, अगर वो मुजरिम है तो वो सुधर जाएगा और अगर वो मुजरिम नहीं है तो वो और ज़्यादा बेहतर शहरी बन जाएगा। बाद में यह रैलियां भी दिन-ब-दिन हिंसक होती चली गईं जिनको 'हिंसक संघर्ष' Violent Struggle कहा गया जिनमें हज़ारों कम्युनिस्ट विरोधियों को यातनाएं देकर कर क़त्ल किया गया, इस दौरान बड़े पैमाने पर क़त्ल और सामूहिक क़त्ल के वाक़ियात पेश आए जिनका ज़िक्र नीचे किया जा रहा है।

कुछ हिंसक घटनाएं

सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के दौरान बड़े पैमाने पर लोगों का नरसंहार किया गया। यह शिकार होने वाले वो लोग थे जिनको पाँच काले समुदाय या पाँच काले दल Five Black Categories कहा गया, उनको दुश्मन वर्ग class enemies भी कहा जाता। चुनांचे 1968 से 1969 के बीच माओ ने कम्युनिस्ट दुश्मनों के सफ़ाए की मुहिम शुरू की जिनको पाँच काले दल कहा जाता है। इस मुहिम को 'तबक़ाती जमातों का सफ़ाया' Cleansing the Class Ranks का नाम दिया गया जिसमें बड़े पैमाने पर नरसंहार के कई वाक़ियात पेश आए, उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं।

1. गुआंगशी नरसंहार Guangxi Massacre: जब 1966 में माओ ज़ेडोंग ने सक़ाफ़्ती इन्क़लाब की शुरूआत की तो गुआंगशी में फ़ौज और जनता में दो ग्रुप हो गए एक ग्रुप ने इस इन्क़लाब की ग़ैर मशरूत हिमायत की और 1. गुआंगशी के चेयरमैन वी गोचिंग Wei Guoqing का साथ दिया उस को यूनाइटेड हेडक्वार्टर्स United Headquarters कहा गया

जिसका तर्जुमा 'केंद्र के इत्तिहादी' किया जा सकता है। जब कि दूसरा गिरोह कहता था कि हमें खुल कर सब कम्युनिस्ट विरोधियों के ख़िलाफ़ कार्रवाइयां नहीं करनी चाहिऐं और उन्होंने वी गोचिंग से कहा कि हमें पहले आत्मचिंतन करनी चाहिए, इस ग्रुप को 4.22 कहा गया। यूनाइटेड हेडक्वार्टर्स को माओ ज़ेडोंग और वी गोचिंग की पुश्तपनाही हासिल थी इस लिए यह ताक़तवर ग्रुप था जब कि 4.22 को प्रीमीयर ज़ू एनलाई Zhou Enlai की पुश्तपनाही हासिल थी इस लिए कमज़ोर था सिवाए गुईलिन Guilin शहर के। चुनांचे फ़रवरी 1968 में गुआंगज़ू मिलिट्री रीजन Guangzhou Military Region में यह हुक्मनामा जारी किया गया कि जो फ़ौजी 4.22 के हामी हैं वो इस इलाक़े से निकल जाएं और अप्रैल 1968 में गुआंगज़ू मिलिट्री रीजन के अध्यक्ष हुआंग योंगशेंग Huang Yongsheng ने हुक्म दिया कि 4.22 एक "प्रतिक्रियावादी संगठन "reactionary organization" है इस लिए बड़े पैमाने पर उनके ख़िलाफ़ क़त्ल-ओ-ग़ारत शुरू हो गई और फिर यह तबाही देहात से गुआंगशी के शहरों में भी फैल गई।[604] सरकारी रिकॉर्ड के मुताबिक़ इस दौरान गुआंगशी में 100,000-150,000 के दरम्यान लोग क़त्ल हुए जिन्हें मुख़्तलिफ़ दर्द-नाक तरीक़ों से मारा गया जैसे "सर क़लम करना, ज़िंदा दफ़न करना, डुबोना, उबालना, सामूहिक गला काटना, पत्थर मार कर क़त्ल करना, आंत, दिल, जिगर या यौन अंग निकालना, गोश्त काटना, बारूद से उड़ा देना, वग़ैरह। इस के

अलावा इनसानी गोश्त खाने के बेशुमार वाक़ियात भी देखने में आए। 1968 में एक मामला सामने आया कि वूशुआन मिडिल स्कूल Wuxuan Middle School की जुग़राफ़िया (भूगोल-शास्त्र) की एक टीचर वू शूफांग Wu Shufang को छात्रों ने सामूहिक हिंसा mob lynching के ज़रिये मार डाला। इस के बाद उस की लाश को खींच कर चियान नदी Qian River के चपटे पत्थरों पर ले जाया गया और दूसरे टीचर को बंदूक़ की नोक पर मजबूर किया गया कि उस का दिल और जिगर निकाले। इस के बाद स्कूल वापस जा कर छात्रों ने इन अंगों को भून कर खाया।[605]

2. शादियान वाक़िया Shadian incident: युन्नान के शादियान इलाक़े में, 1975 में PLA के नेतृत्व में हुई मुसलमानों का नरसंहार हुआ जिसमें 300 बच्चों समेत 1,600 से ज़्यादा मुसलमान मारे गए और 4,400 घर तबाह हुए। इस का तफ़सीली ज़िक्र आगे दिया जाएगा
3. डाओशियान नरसंहार Daoxian Massacre: 13 अगस्त से 17 अक्तूबर 1967 के दरम्यान हुनान Hunan सूबे में डाओशियान नरसंहार हुआ जिसमें कुल 7,696 अफ़राद मारे गए, 1,397 अफ़राद को जबरी आत्महत्या कराई गई, और 2,146 अफ़राद मुस्तक़िल तौर पर (permanently) विकलांग हो गए।[606]
4. लाल अगस्त, बीजिंग नरसंहार Beijing massacre (Red August): 1980 में सरकारी सूत्रों द्वारा खुलासा किया गया कि अगस्त से सितंबर

1966 के दरम्यान रैड गार्ड्स के हाथों कम अज़ कम 1,772 अफ़राद हलाक हुए, जिनमें कई स्कूलों के उस्ताद और प्रिंसिपल भी शामिल थे। इस के अलावा 33,695 घरों में तोड़ फोड़ की गई और 85,196 ख़ानदानों को शहर छोड़ने पर मजबूर किया गया। खासतौर पर 27 अगस्त से 1 सितंबर 1966 के दरम्यान 325 अफ़राद का क़त्ल हुआ, उस को डाशिंग Daxing नरसंहार कहा जाता है। मारे गए सबसे बुज़ुर्ग व्यक्ति की उम्र 80 साल थी और सबसे छोटे की उम्र सिर्फ 38 दिन थी, जब कि 22 ख़ानदानों का सफ़ाया कर दिया गया।[607]

5. **अंदरूनी मंगोलिया नरसंहार** Inner Mongolia incident: अंदरूनी मंगोलिया में सक़ाफ़्ती इन्क़लाब के बाद 1980 में सुप्रीम पीपुल्स प्रोक्यूरेटोरेट Supreme People's Procuratorate की सरकारी शिकायत के मुताबिक़, नस्लकुशी (ethnic cleansing) के दौरान 346,000 लोगों को गिरफ़्तार किया गया 16,222 लोगों को यातनाएं दी गईं या मार दिया गया, और 81,000 से ज़्यादा मुस्तक़िल तौर पर ज़ख़्मी और विकलांग हो गए।[608] सक़ाफ़्ती इन्क़लाब के बाद, इस नरसंहार को "ग़लती" माना गया और इस के पीड़ितों को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी सी पी) ने बोलुआन फ़ानज़ेंग "Boluan Fanzheng" दौर में दोबारा बसाने की कोशिश की, लेकिन इस के ज़िम्मेदार कमांडर, टेंग हाईचिंग Teng Haiqing को कोई सज़ा नहीं दी गई। इसलिए कि सी सी पी की

मर्कज़ी कमेटी का ख़्याल था कि उसने माज़ी में जंगों के दौरान क़ाबिल-ए-क़दर कामयाबियां हासिल की थीं।[609]

6. गुआंगडोंग नरसंहार Guangdong Massacre: फ़रवरी 1968 में गुआंगडोंग इन्क़िलाबी कमेटी Guangdong Revolutionary Committee स्थापित की गई जिसके चेयरमैन हुआंग योंगशेंग Huang Yongsheng थे। हुआंग, गुआंगज़ू मिलिट्री रीजन के कमांडर भी थे और निजी तौर पर ईस्ट विंड धड़े East Wind faction की हिमायत करते थे। लेकिन उस का मुख़ालिफ़ रैड फ्लैग धड़ा उस की मुख़ालिफ़त करता रहा। इसी दौरान माओ ने 1968 में 'तबक़ाती जमातों का सफ़ाया' Cleansing the Class Ranks नाम की मुहिम जारी की जिसमें कम्युनिस्ट विरोधियों को हिंसक तरीक़ों से रोकने का हुक्म दिया गया। चुनांचे उस के नतीजे में हिंसक संघर्ष Violent Struggle की शुरूआत हुई।

   जुलाई 1968 से, गुआंगडोंग की इन्क़िलाबी कमेटी के साथ साथ गुआंगडोंग की फ़ौज ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की मर्कज़ी कमेटी की दो दिशा निर्देशों (3 जुलाई पब्लिक नोटिस और 24 जुलाई पब्लिक नोटिस) का फ़ायदा उठाते हुए रैड फ्लैग धड़े के ख़िलाफ़ क्रैक डाउन किया और उनका सामूहिक नरसंहार किया।[610] 1968 में जुलाई से अक्तूबर तक नरसंहार चरम सीमा पर रहा। इस में से बहुत से विदेशी संबंध रखने वाले अफ़राद को भी मौत के घाट उतारा गया।

7. रुई जिन नरसंहार Ruijin Massacre: रुई जिन में लोगों की कमयून्ज़ people's' communes और प्रोडक्शन ब्रिगेडज़ production brigades ने मुक़ामी मलेशिया के साथ मिलकर पाँच काले दल के लोगों का नरसंहार किया, उनके साथ उनके रिश्तेदारों को भी निशाना बनाया गया। 23 सितंबर से लेकर अक्तूबर 1968 के शुरू तक 1070 से ज़्यादा लोग मारे गए Ruijin County में 300 से शिंगुओ काउंटी Xingguo County में 270 के क़रीब और यूदू काउंटी Yudu County में 500 से ज़्यादा लोग मारे गए। मरने वालों में सबसे बूढ़े की उम्र 80 साल थी, जबकि सबसे छोटे की उम्र 11 साल थी।[611]
8. यांगजियांग नरसंहार Yangjiang Massacre 11 से 15 मई 1968 को, ज़ांगजियांग Zhanjiang, गुआंगडोंग के इलाक़ों से इन्क़िलाबी कमेटियों के डायरेक्टरों को हाईकांग Haikang में एक मीटिंग में बुलाया गया, जिसमें उनसे कहा गया कि वो "वामपंथियों", "अवसरवादी ", और "अलगाव वादियों" ("leftists", "opportunists", "separatists") के ख़िलाफ़ मुहिम शुरू करें। इस के नतीजे में यांगजियांग के इलाक़े में बड़ा नरसंहार हुआ। यह नरसंहार मुक़ामी मिलिट्री कमेटियों Local military committees, लोगों की कमयून्ज़ people's communes और प्रोडक्शन ब्रिगेडज़ production brigades के ज़रिये किया गया, जिसमें पाँच काले दल के लोग और उनके रिश्तेदारों (दूध पीने वाले बच्चों समेत) को निशाना बनाया

गया।[612] उस वक़्त, बहुत सी लाशें मोयांग नदी (漠阳江) पर तैरती हुई देखी जा सकती थीं। 1968 के गर्मियों के शुरू होते ही, हालात क़ाबू से बाहर हो गए। हालात पर क़ाबू पाने के लिए CPC की मर्कज़ी कमेटी और मुक़ामी फ़ौजी कमेटियों ने पीपुल्स लिबरेशन आर्मी PLA के ज़रिये हस्तक्षेप कर के हालात पर क़ाबू पाने की कोशिश की, लेकिन जनवरी 1969 के मध्य तक नरसंहार मुकम्मल तौर पर नहीं रुका। इन वाक़ियात में तक़रीबन 3573 लोग मारे गए जिनमें यांगजियांग में 909 और यांगचुन शहर Yangchun County में 2664 लोग मारे गए। क़त्ल के तरीक़ों में डंडों और फावड़ों से मारना, गोली मारना, डुबोना, चाक़ू से गोदना, पत्थर मार कर क़त्ल करना, पटाख़ों के ज़रिये उड़ाना, ज़िंदा दफ़न करना वग़ैरह शामिल थे।[613]

9. गुआंगज़ू लाओगाई फ़ान वाक़िया Guangzhou Laogai Fan Incident: याद रहे लाओगाई उन क़ैदियों को कहा जाता है जिनको अनुशासन के लिए मज़दूर कैम्पों में रखा जाता है और जबरी मज़दूरी कराई जाती है। अगस्त 1967 में गुआंगडोंग और गुआंगज़ू में यह अफ़वाह (rumour) फैली कि बहुत सारे लाओगाई क़ैदी, अपने क़ैद-ख़ानों से भाग गए हैं और वो लूट मार कर रहे हैं। चुनांचे मुक़ामी लोगों ने अपनी सुरक्षा की ख़ातिर अजनबियों के ख़िलाफ़ इंतहाई हिंसक विरोध प्रदर्शन किया। जिसमें हर अजनबी संदिग्ध शख़्स को क़त्ल कर

दिया गया और कई की लाशों को पेड़ों या खंबों पर टांग दिया गया। इस में 187-197 के दरम्यान लोग मारे गए।

10. पेंग पैई विरोधी घटना Anti-Peng Pai Incident (反彭湃事件): याद रहे पेंग पैई चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सदस्य में से एक था जिसने चीन में सबसे पहली सोवियत बनाई जिसका नाम था हाई लू फेंग सोवियत Hai-Lu-Feng Soviet. जब चियांग काई शेक ने 12 अप्रैल 1927 को कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ नरसंहार की शुरूआत की जिसमें हज़ारों कम्युनिस्ट मारे गए, जिस को सफ़ैद आतंक White Terror कहा जाता है। तो उस की प्रतिक्रिया में पेंग पैई ने हाई लू फेंग सोवियत के साथ मिलकर चियांग काई शेक के लोगों का नरसंहार किया जिसको लाल आतंक Red Terror कहा जाता है। इस की वजह से बहुत से लोग उस से नफ़रत करने लगे और उस से बदला लेने का मौक़ा ढूंढने लगे। लेकिन पेंग पैई का 30 अगस्त 1929 को क़त्ल हो गया। चुनांचे सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) में लोगों ने उस के रिश्तेदारों को निशाना बनाया। इस मौक़े पर पेंग पैई को "ग़द्दार" और "मौकापरस्त" क़रार दिया गया। चुनांचे गुआंगडोंग के शानवी Shanwei में सक़ाफ़्ती इन्क़लाब के दौरान अगस्त 1967 से, एक नरसंहार शुरू हुआ और लगभग आधे महीने तक जारी रहा, जिसमें 160 से ज़्यादा पेंग पैई के रिश्तेदार और लवाहिक़ीन मारे गए। इस के अलावा, 800 से ज़्यादा ज़िंदगी-भर के लिए विकलांग और 3000 से

ज़्यादा ज़ख़मी हुए। पेंग पैई की माँ को जेल में डाल दिया गया, और उस के तीसरे बेटे पेंग हांग (彭洪) को क़त्ल कर के ख़ुफ़िया तौर पर दफ़न कर दिया गया। पेंग पैई के एक कज़न और भतीजे को भी क़त्ल किया गया और भतीजे का सर खम्भे पर लटका कर तीन दिन तक जनता को दिखाया गया।

11. डान काउंटी नरसंहार Dan County Massacre: सक़ाफ़्ती इन्क़लाब के दौरान, हाईनान जज़ीरे Hainan Island की डान काउंटी और डोंगफ़ांग काउंटी Dongfang County में नरसंहार फूट पड़ा, जो उस वक़्त गुआंगडोंग सूबे का एक इंतजामी डिवीज़न था। मार्च 1967 में, मुक़ामी मिलिट्री कंट्रोल कमीशन Local Military Control Commission ने ऐलान किया कि डान काउंटी में तीन बड़े संगठन "इन्क़लाब विरोधी संगठन" हैं। चुनांचे अप्रैल 1968 में, मुक़ामी इन्क़िलाबी कमेटी Local revolutionary committee स्थापित की गई और अगस्त में, मुक़ामी फ़ौज ने इन्क़लाब विरोधी संगठनों के सदस्यों को निशाना बनाते हुए नरसंहार शुरू किया, जिसमें मोटे तौर पर 700 से ज़्यादा अफ़राद हलाक हुए। इसके अलावा 50,000 से ज़्यादा लोग (कुछ कहते हैं कि 5,000 लोग) जेलों में डाले गए, तक़रीबन 700 मकानात को जला दिया गया, और हज़ारों लोग मुस्तक़िल तौर पर विकलांग हो गए।[614]

12. ज़ाओ जियानमिन जासूसी केस Zhao Jianmin Spy Case: मार्च 1967 में, युन्नान में कम्युनिस्ट पार्टी के इस वक़्त के सूबाई सेक्रेटरी ज़ाओ जियानमिन ने कांग शेंग Kang Sheng को निजी तौर पर लिखा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) को सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के मसाइल को लोकतांत्रिक तरीक़ों से हल करना चाहिए, लेकिन कांग ने इस का फ़ौरी कोई जवाब नहीं दिया। ताहम, कांग शेंग (उस वक़्त के पार्टी की आंतरिक खुफिया एजेंसी के केंद्रीय सामाजिक मामलों के विभाग के प्रमुख) ने बाद में ज़ाओ के बारे में माओ ज़ेडोंग को एक ख़ुफ़िया रिपोर्ट भेजी, जिसमें उसने शिकायत की कि ज़ाओ ने CCP की केंद्रीय समिति, चेयरमैन माओ और सक़ाफ़्ती इन्क़लाब का विरोध किया है।

अगस्त 1967 में, माओ ज़ेडोंग के साथ साथ CCP की केंद्रीय कमेटी ने इस बात की मंज़ूरी दी कि क़ौमी और मुक़ामी मीडिया चीन के आला सूबाई अधिकारियों में से उन लोगों पर जो "सरमायादाराना निज़ाम" को दाख़िल करने वाले हैं Capitalist inroaders पर खुल कर आलोचना कर सकता है। इसके अलावा ज़ाओ जियानमिन समेत कुल 55 आला ओहदेदारों के ख़िलाफ़ कार्रवाई की मंज़ूरी दी गई। 1968 में, ज़ाओ जियान मिन को कांग शेंग और उस के इत्तिहादियों ने "क्योमिनटांग" (KMT) का जासूस और "ग़द्दार" क़रार दिया। और उसे चीन के दूसरे सदर लियू शाओची का "स्थानीय समर्थकों" में से एक

बताया। याद रहे लियू शाओची को "सरमाया दारा न निज़ाम को दाख़िल करने वाला" capitalist inroader और "ग़द्दार" कह कर 1969 में मौत के घाट उतार दिया गया था। चुनांचे ज़ाओ जियानमिन को 8 साल के लिए क़ैद कर दिया गया।

इसी के साथ ही, एक फ़र्ज़ी युन्नान की ज़ाओ जियानमिन क्योमिनटांग जासूसी एजैंसी "Zhao Jianmin KMT Spy Agency in Yunnan" के सदस्यों की बड़े पैमाने पर तलाशी और सफ़ाए का काम शुरू कर दिया गया, जिसके नतीजे में 1.38 मिलियन (13 लाख अस्सी हज़ार) से ज़्यादा शहरियों और अहलकारों को गिरफ़्तार किया गया और उन पर टॉर्चर किया गया।[615] पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के एक संगदिल लेफ़्टीनेंट जनरल टान फ़ूरेन Tan Furen को माओ ज़ेडोंग और सी सी पी की मर्कज़ी कमेटी ने इस सफ़ाए की मुहिम के लिए नियुक्त किया।[616] ताहम बाद में टान फ़ूरेन और उस की बीवी को 17 दिसंबर 1970 को मृत्यु दंड दे दिया गया और ज़ाओ जियानमिन को बोलुआन फ़ानज़ेंग Boluan Fanzheng दौर में बहाल कर दिया गया और उस को मशीन बनाने की तीसरी वज़ारत Third Ministry of Machine Building का वाइस डायरेक्टर बना दिया गया।[617]

13. शाओयांग काउंटी नरसंहार Shaoyang County Massacre: इस को "काली क़त्ल की आंधी" Black Killing Wind भी कहा जाता है। मई 1966 में, माओ ज़ेडोंग ने जब सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति)

का आरंभ किया तो 1967 में, सूबा हुनान की डाओ काउंटी Dao County में कम्युनिस्टों ने "ब्लैक किलिंग टीम" (黑杀队) Black Killing Team का शब्द गढ़ा, जिसमें 21 किस्म के लोग शामिल थे, उनमें पाँच काले दल Five Black Categories के सदस्य और उनके रिश्तेदार भी शामिल थे। जुलाई 1968 में, "ब्लैक किलिंग टीम" के सदस्यों को पकड़ने और क़त्ल करने का आंदोलन शाओयांग में शुरू हुआ। यह आंदोलन 4 अगस्त को तब एक नरसंहार में बदल गया, जब एक ज़मींदार के बेटे डेंग बाओमिन 邓保民) Deng Baomin के पूरे ख़ानदान को क़त्ल कर दिया गया। यह नरसंहार शाओयांग काउंटी में किसानों ने किया था और इस का नेतृत्व मुक़ामी मलेशिया और प्रोडक्शन ब्रिगेड ने किया। नतीजे के तौर पर, अगस्त से अक्तूबर 1967 तक, डाओशियान नरसंहार Daoxian Massacre जारी रहा, जिसमें 'ब्लैक किलिंग टीम' के सदस्यों को निशाना बनाया गया। कुल 7,696 लोग मारे गए और बाक़ी 1,397 को जबरन आत्महत्या कराई गई। इस के अलावा नरसंहार के दौरान 702 निजी जेलें और 1,587 प्राइवेट हथकड़ियां बनाई गईं। 1974 में सरकारी आकड़ों के मुताबिक़, "ब्लैक किलिंग विंड" Black Killing Wind के दौरान कुल 11,177 अफ़राद को गिरफ़्तार किया गया जिनमें से 7,781 क़ैद और 113 को मुस्तक़िल तौर पर विकलांग कर दिया गया। शाओयांग नरसंहार में, क़त्ल के तरीक़ों में ज़िंदा दफ़न करना, संगसार करना, जलाना, नदियों या पानी

के टैंकों में डुबोना, कुदाल या फावड़ों से मारना, बाँस से टुकड़े टुकड़े करना वग़ैरह शामिल हैं।[618] पीड़ित औरतों को क़त्ल करने से पहले हिंसा और यौन हिंसा का निशाना बनाया गया, कुछ के निपल या यौन अंग निकाले गए या लोहे की तारों से छेदे गए।[619] क़ातिलों ने न सिर्फ बहुत से मृतकों की लाशों को ढांपने से इनकार कर दिया बल्कि मृतकों के रिश्तेदारों को लाशें जमा करने से भी मना कर दिया। लाशों के ढेर तेज़ी से बढ़ने लगे इस लिए, बहुत सी लाशें बिल-आख़िर ज़ी Zhi नदी में बहा दी गईं और दरिया में तैरने लगीं। यहां तक कि कुछ लाशें मुक़ामी पानी साफ़ करने वाले प्लांटस के अंदर मौजूद वाटर पंप्स में फंस गईं और उनको बंद कर दिया, इस के नतीजे में मुक़ामी शहरियों ने लगभग आधे महीने तक नल का पानी नहीं पिया। जब शाओयांग शहर के अधिकारियों ने मुक़ामी पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो को दरिया में तैरती हुई लाशों को दफ़नाने का हुक्म दिया तो शाओयांग के देही इलाक़ों से रज़ाकारों को दरिया से तैरती लाशों को निकालने और दफ़न करने के लिए कहा गया और हर लाश निकालने के बदले 10 युआन का इनाम रखा गया।[620]

आमों का बुख़ार

सक़ाफ़्ती इन्क़लाब में माओ की शख़्सियत एक मज़हबी पेशवा या ख़ुदा की हैसियत इख़्तियार कर गई। बहुत से लोग माओ को ख़ुदा का मुक़ाम देने लगे थे और उस के मानने वालों ने एक मज़हब की शक्ल

इख़्तियार कर ली जिसको माओ का मज़हबी फ़िर्क़ा Mao Zedong's cult of personality का नाम दिया गया। यह लोग माओ की ज़रा ज़रा सी बात को बढ़ा चढ़ा कर पेश करते और उस को मज़हबी रंग देने की कोशिश करते। इस के बहुत से वाक़ियात पेश आए जिनमें से एक वाक़िया आमों बुख़ार Mango fever के नाम से जाना जाता है।

हुआ यह कि 4 August 1968 CE में पाकिस्तान के विदेश मंत्री Foreign Minister सय्यिद शरीफ़ुद्दीन पीरज़ादा Syed Sharifuddin Pirzada ने ख़ैर सगाली के तौर पर आमों की कुछ पेटियां बतौर उपहार gift माओ को भेजीं। 5 अगस्त को माओ ने वो आम टिंगहुआ यूनिवर्सिटी Tsinghua University की प्रोपेगेंडा टीम को भेज दिए। यह टीम रैड गार्ड्स के कुछ धड़ों के दरम्यान झगड़े को ख़त्म करने के लिए वहां तैनात की गई थी। यह आम, पार्टी के लीडरों और कार्यकर्ताओं में बाँटे गए। उनमें से बहुत से लोगों ने पहली बार आम देखे थे तो इस को शुभ शगुन माना गया। चूँकि चीन में यह धारणा है कि अगर कोई नया जानवर, फल, फूल यह क़ुदरती मंज़र दिखता है तो वो उज्ज्वल भविष्य की अलामत है। तो उन आमों को माओ की लंबी उम्र की अलामत माना गया। जिन लोगों को यह आम मिले उन्होंने ख़ुशी में रोते हुए गाने गाए। बाद में इस पर कविताएँ लिखी गईं, माओ की हज़ारों साल की उम्र की दुआएं की गईं, अख़बारों में लेख प्रकाशित हुए। अफ़सरान ने अपने अपने वर्क यूनिटों को फ़ोन कर के इस ख़बर को ज़्यादा से ज़्यादा फैलाने का हुक्म दिया, पूरे देश में लोगों ने मुख़्तलिफ़

तरीक़ों से जश्न की तक़रीबों का आयोजन किया जिनमें पूरी पूरी रात जश्न मनाया जाता।

एक आम बीजिंग की कपड़ा फ़ैक्ट्री भी भेजा गया जहां इन्क़िलाबी कमेटी ने उस के सम्मान में रैलियां निकालीं। माओ के विचारों को जनता के सामने पढ़ा गया। ऊंचे मेंबर पर आम को सजाया गया। कुछ दिन बाद जब उस का छिलका सूखने लगा तो उस का छिलका उतार कर उसे उबाला गया और उस के उबले हुए पानी का एक एक चम्मच सबको प्रसाद के तौर पर दिया गया। इस के बाद इन्क़िलाबी कमेटी ने आम की मूर्ति बना कर उस को नुमाइश के लिए फ़ैक्ट्री में रखा। इस के बाद जगह जगह नकली आम बना कर लगाए जाने लगे। लोग दूर दूर से उन आमों के नमूनों को देखने आते।

जब इन नमूनों को चैंगडू ले जाया गया तो लाखों लोगों ने उनके दर्शन किए। इसके अलावा लाखों की तादाद में बिल्ले और पोस्टर इन आमों के प्रकाशित किए गए जिनमें आम और माओ की तस्वीर होती थी।[621] आमों का सम्मान इतना बढ़ गया कि एक गांव में एक दाँतों के डाक्टर ने आम के बारे में यह कह दिया कि आम कोई ख़ास चीज़ थोड़ी है बस शकरकंद के मज़े का एक फल है। चुनांचे इस जुर्म की पादाश में उस पर मुक़द्दमा चलाया गया और मुजरिम पाने पर उस को पूरे क़स्बे में घुमाया गया और सर में एक गोली मार कर सज़ा-ए-मौत देदी गई।[622] कहा जाता है कि माओ ने आम का इस्तेमाल अपने पैरोकारों के आपसी झगड़े मिटाने और उनको दोबारा एकजुट करने के लिए किया।

सांस्कृतिक क्रांति में इस्लाम मुख़ालिफ़ कार्रवाइयां

चुनांचे सक़ाफ़्ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के दौरान सारी मस्जिदें और मदारिस बंद कर दिए गए। याद रहे सभी धर्मों के पूजा स्थलों को बंद किया गया जिनमें मस्जिदें भी शामिल थीं। इस के अलावा धार्मिक प्रथाओं के पालन पर पाबंदी लगादी गई कोई दाढ़ी नहीं रख सकता था, बुर्क़ा या स्कार्फ़ नहीं पहन सकता था, खुले में नमाज़ या क़ुरान नहीं पढ़ सकता था। इस्लामी शिक्षा नहीं दी जा सकती थी, वगैरह।

शादियान नरसंहार

ह वाक़िया 1975 CE के जुलाई और अगस्त के महीने में, युन्नान सूबे Yunnan Province के गीजिऊ शहर Gejiu City के शादियान क़स्बे Shadian Town में पेश आया।[623] इस वाक़े में एक अंदाज़े के मुताबिक़ 1600 हुई मुसलमान मारे गए जिनमें से 300 बच्चे भी थे, उनमें से आधे से ज़्यादा शादियान के वासी थे और 4000 घर तबाह हुए।[624] दर असल यह एक टकराव था शादियान के हुई मुसलमानों और कम्युनिस्ट हुकूमत के बीच।

पस-ए-मंज़र

शादियान क़स्बा एक हुई मुस्लिम बहुल इलाक़ा था जहां तक़रीबन 7200 मुसलमान आबाद थे। सक़ाफ़्ती इन्क़लाब के दौरान पूरे चीन की मस्जिदें बंद कर दी गई थीं जिनमें शादियान की भी थीं। 1970 CE की दहाई के शुरू में इस इलाक़े में कुछ सांप्रदायिक टकराव शुरू हो गया था।[625] लेकिन असल टकराव तब हुआ जब 1974 में शादियान के लोगों को एक सरकारी हुक्मनामा मौसूल हुआ जिसमें हुक्म दिया गया था कि इलाक़े की सारी मस्जिदें बंद कर दी जाएं। इस के रद्द-ए-अमल में 1000 से ज़्यादा मुसलमान ट्रेन में सवार हो कर बीजिंग शिकायत करने पहुंचे।

इस के बाद 1974 के अख़ीर में 800 मुसलमान शादियान से धरना प्रदर्शन करने के लिए सूबाई राजधानी कुनमिंग Kunming पहुंचे, उन लोगों की मांग थी के संविधान में जो उनको अधिकार दिए गए हैं वो बहाल किए जाएं। लेकिन सूबाई हुकूमत ने उन लोगों पर बदअमनी फैलाने का इल्ज़ाम लगाया और यह कि वो कम्युनिस्ट पार्टी के मुक़ामी लीडर की मुख़ालिफ़त कर रहे हैं। इस के नतीजे में मुस्लिम मिलिशिया रेजिमेंट Muslim Militia Regiment और शहर के अधिकारियों के बीच टकराव हो गया।[626] 1975 CE के शुरू में दोनों पक्षों को मर्कज़ी हुकूमत ने बीजिंग बुलाया ताकि दोनों में समझौता कराया जा सके। लेकिन यह समझौता तब नाकाम हो गया जब शादियान के मुसलमानों

के पास अवैध असलहे की अफ़वाह (rumour) उड़ी और शादियान के मुसलमानों और हुकूमत के बीच इस असलहे को क़ाबू करने पर विवाद हो गया।[627] मज़ीद हालात तब और ज़्यादा ख़राब हो गए जब शादियान के लोगों ने ज़बरदस्ती एक मस्जिद खोलने की कोशिश की और विरोध प्रदर्शन के लिए, अनाज का लगान देने से इनकार कर दिया।[628]

नरसंहार

चुनांचे 5 July 1975 CE को सेंट्रल कमेटी ने इस सिलसिले में एक हुक्मनामा जारी किया जिसको ज़ोंगफ़ा १५ "Zhongfa 15 [1975]" कहा जाता है। इस पर माओ के दस्तख़त थे और इस में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी People's Liberation Army (पी एल ए को हुक्म दिया गया था कि वो शादियान के हालात को कंट्रोल करे और अगर सारे तरीक़े नाकाम हो जाएं तो फिर बलपूर्वक शादियान के हालात को क़ाबू में किया जाए। चुनांचे हुक्म पाते ही सूबाई हुकूमत ने 10,000 पी एल ए फ़ौज लेकर शादियान और आस-पास के गांवों पर हमला बोल दिया और लोगों को अंधाधुंध क़त्ल करना और उनके घरों को लूटना और तबाह करना शुरू कर दिया। पी एल ए ने इस में बंदूक़ो, तोपों और ग्रेनेड का इस्तेमाल किया और हवाई जहाज़ों से बमबारी भी की।[629] यह ख़ूनी कार्रवाई एक हफ़्ते तक जारी रही। हुकूमती अफ़सरान का कहना है इस में 130 लोग मारे गए जब कि मुक़ामी लोगों का मानना है कि इस में 1600 लोग मारे गए।

बाद के हालात

माओ ज़ेडोंग के इंतिक़ाल के बाद जब डेंग शियाओपिंग चीन के सर्वोच्च नेता (Paramount Leader) बने तो उन्होंने शादियान के लोगों को दोबारा बसाने के आदेश जारी किए और फ़रवरी 1979 CE में सरकारी तौर पर इस वाक़े के लिए माफ़ी मांगी। उन्होंने कहा कि यह वाक़िया सक़ाफ़ती इन्क़लाब (सांस्कृतिक क्रांति) के बदतरीन और हिंसक वाक़ियात में से एक है जिसमें अल्पसंख्यकों minorities को निशाना बनाया गया, जिसका ज़िम्मेदार चार की टोली Gang of Four है, ख़ासकर जियांग चिंग। याद रहे जियांग चिंग Jiang Qing, माओ की छोटी बीवी थी और सक़ाफ़ती इन्क़लाब की सबसे सक्रिय अफ़सरान में से थी और बे-इंतिहा ज़ालिम, क्रूर और संगदिल थी। इसी ने माओ को शादियान पर कार्रवाई के लिए उकसाया था और ख़ुद शादियान में फ़ौज की कमान संभाली थी।

बाद में हुकूमत ने वहां 800 शहीदों के लिए जिनकी पहचान हो पाई, एक यादगार मक़बरा भी बनवाया और एक बड़ी मस्जिद बनाने के लिए फ़ंड भी दिया, यह मस्जिद 2009 CE में बन कर तैयार हुई जिसको शादियान की बड़ी मस्जिद कहा जाता है और क़स्बे का केंद्र की हैसियत रखती है।[630]

कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ मुस्लिम मुज़ाहमती तहरीकें

Muslim resistance movements against communist government

क्योमिनटांग इस्लामी विद्रोह

Kuomintang Islamic Insurgency

क्योमिनटांग इस्लामी विद्रोह, वो मुज़ाहमती तहरीक है जो चीन में 1949 CE में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम होने के बाद बरपा हुई। इस विद्रोह में ज़्यादातर पूर्व मा क्लीक़ के बचे खुचे मुसलमानों ने हिस्सा लिया। यह लोग क्योमिनटांग के वफ़ादार थे और क्योमिनटांग की हुकूमत जिसका नाम 'चीनी गणराज्य' Republic of China था, को दोबारा बहाल करना चाहते थे, हालाँकि क्योमिनटांग का चीन से सफ़ाया हो चुका था और उसने ताइवान में जाकर हुकूमत क़ायम कर ली थी लेकिन फिर भी वो मा क्लीक़ के मुसलमानों के राब्ते में थी। यह मुज़ाहमती तहरीक 1950-1958 CE तक चली। जिन इलाक़ों में यह मुज़ाहमत (विरोध) चली वो थे गान्सू, चिंगहाई, निंगशिया, युन्नान और शिंजियांग Gansu, Qinghai, Ningxia, Xinjiang, Yunnan. यह दर असल कोई नई तहरीक नहीं थी बल्कि 1949 CE से पहले से जो क्योमिनटांग और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच लड़ाई चली आरही थी उसी का सिलसिला continuation था और मुसलमान क्योमिनटांग की तरफ़ से लड़ रहे थे। बिल-आख़िर कम्युनिस्ट पार्टी की जीत हुई। इस में एक तरफ़ कम्युनिस्ट पार्टी की

फ़ौज थी दूसरी तरफ़ क्योमिनटांग की फ़ौज और मुस्लिम जनरल थे उनमें से कुछ के नाम हैं चियांग काई शेक, मा हूशान, मा युआन शियांग, मा लियांग, उसमान बातूर, युलबर्स ख़ान, ली मी, मा चुनकू, मा शूयी, टैंग वेन सियांग, ली पिन पू, ये चीनान, हान यू चिंग और ली वैन हुआन वग़ैरह।

Chiang Kai-shek, Ma Hushan, Ma Yuanxiang, Ma Liang (POW), Ospan Batyr, Yulbars Khan, Li Mi, Ma Chun-kuo, Ma Shou-yi, Teng Wen-hsiang, Li Pin-pu, Yeh Chih-nan, Han Yu-ch'ing, Li Wen-huan.

तफ़सीली हालात

इस मुज़ाहमत में ज़्यादातर लड़ने वाले मा बुफ़ांग Ma Bufang के साथी थे। याद रहे मा बुफ़ांग, मा क्लीक़ के आख़िरी शासक थे। बहुत से मा हूशान के साथी थे, मा हूशान ने पहले शिंजियांग में सोवियत यूनियन के ख़िलाफ़ जंग में हिस्सा लिया था। और कुछ लोग वो थे जो दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में क्योमिनटांग की तरफ़ से लड़े थे जैसे मा युआन शियांग, जो जनरल मा बियाओ Ma Biao के मातहत लड़े थे और हुआई यांग की जंग Battle of Huaiyang में ज़ख़मी भी हुए थे जिसमें जापानी फ़ौज को शिकस्त हुई थी। और कुछ लोग वो थे को शिंजियांग की इली विद्रोह Ili Rebellion में शरीक हुए, जो 1944 CE में एक मुस्लिम विद्रोह था रूस के ख़िलाफ़। ज़्यादातर मुस्लिम फौजियों का संबंध हुई, सालार और डोंगशियांग Hui, Salar, or Dongxiang नसली गिरोहों से था। जैसा कि ऊपर बयान किया गया कि 1950 में मा बुफ़ांग ने ऐलान किया कि चीन में क्योमिनटांग इस्लामी मुज़ाहमत जारी रहेगी, चुनांचे यह मुज़ाहमत 1950

से 1958 तक जारी रही। 1951 में एक मुस्लिम जनरल बाई चोंगशी Bai Chongxi ने तक़रीर की और उस में कहा कि रूस के ख़िलाफ़ हम जंग जारी रखेंगे, बाई ने यह भी कहा कि हिन्दुस्तान के वज़ीर-ए-आज़म जवाहर लाल नेहरू का साथ न दिया जाए क्यों कि वो कम्युनिस्टों के हामी हैं और यह भी कहा कि माओ और स्टालिन तीसरे विश्व युद्ध की साज़िश रच रहे हैं। मा बुफ़ांग के फ़रार होने के बाद कम्युनिस्ट हुकूमत ने मा बुफ़ांग के तमाम साथियों को माफ़ कर दिया और किसी भी तरह की पूछ-गछ न करने का वादा किया। चुनांचे मा बुफ़ांग के एक क़रीबी मुस्लिम सालार जनरल हान यीमू Han Yimu ने 1951-1952 के दौरान कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ गुरिल्ला जंग जारी रखी उन्होंने समूह प्रणाली collectives के ख़िलाफ़ भी आवाज़ उठाई लेकिन 1958 में उनको सज़ा-ए-मौत देदी गई। इसी तरह मुस्लिम जनरल मा हूशान Ma Hushan ने भी 1950 से 1954 तक कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ गुरिल्ला जंग जारी रखी और सैंकड़ों पी एल ए के फौजियों को मार गिराया। उसको भी 1954 में लांज़ू Lanzhou में सज़ा-ए-मौत देदी गई। उसमान बातूर Ospan Batyr जो एक तुर्क कज़ाख़ जनरल था वो भी शिंजियांग में क्योमिनटांग की तरफ़ से लड़ता रहा और शिंजियांग में कम्युनिस्टों के क़ब्ज़े के ख़िलाफ़ मुज़ाहमत (विरोध) करता रहा लेकिन 1951 CE में उस को भी सज़ा-ए-मौत दे दी गई। मा होंगबिन का बेटा मा डुनजिंग Ma Dunjing जिसका संबंध ८१ मुस्लिम कोर 81st Muslim Corps से था, वह पाला बदल कर कम्युनिस्ट पार्टी में चला गया।[631] इस के अलावा बहुत से मुस्लिम जनरलों और फौजियों ने कम्युनिस्ट

पार्टी से गठबंधन कर लिया। एक सालार जनरल हान यूवेन Han Youwen भी कम्युनिस्ट फ़ौज में भर्ती हो गया उस के अलावा मा ज़ांशान Ma Zhanshan ने भी कम्युनिस्टों से गठबंधन कर लिया।

जनरल मा लिन का बड़ा बेटा मा बूरोंग Ma Burong भी कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया और चीनी फ़ौज को कोरिया की लड़ाई में 10,000 युआन की इमदाद दी। मा बुफ़ांग के दूसरे कज़न मा चैंगशियांग Ma Chengxiang के मातहत जनरल मा फ़ुनचेन Ma Funchen ने भी कम्युनिस्ट हुकूमत से गठबंधन कर लिया।

बिल-आख़िर 1980 CE की दहाई में इन लोगों पर से पूरी पाबंदी हटा ली गई और आम माफ़ी का ऐलान कर दिया गया।[632]

इसी तरह उइग़ूर जनरल युलबर्स ख़ान ने भी कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ गुरिल्ला जंग जारी रखी और उस की कम्युनिस्टों से एक जंग भी हुई जिसको यीवू की जंग Battle of Yiwu कहा जाता है जिसमें युलबर्स ख़ान को शिकस्त हुई तो उसके ज़्यादातर फ़ौजी कम्युनिस्टों की तरफ़ चले गए तो वो फ़रार हो कर हिन्दुस्तान के शहर कलकत्ता आ गया लेकिन वहां पर दलाई लामा के लोगों ने उस पर हमला कर दिया। ताहम वो बच निकलने में कामयाब हो गया और एक स्टीमर में सवार हो कर ताइवान चला गया और वहीं उसका 1970 की दहाई में इंतिक़ाल हुआ। उसकी यादगारें 1969 में छपीं।[633]

जनरल मा लियांग Ma Liang जो मा बुफ़ांग के रिश्तेदार भी थे उन्होंने भी कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ गुरिल्ला जंग जारी रखी उनके मातहत 2000

चीनी मुस्लिम फ़ौजी थे, चियांग काई शेक ने उनकी बहुत मदद की और अमेरिका की ख़ुफ़िया एजैंसी सी आई ए CIA ने भी हवाई जहाज़ से उनके लिए हथियार, रेडियो और सोना, नागचुका Nagchuka के इलाक़े में गिराया।[634] मा लियांग के साथ दूसरे जनरल मा युआनशियांग Ma Yuanxiang ने भी अपने हमलों से कम्युनिस्टों में ख़ौफ़ पैदा कर दिया, इस लिए माओ ज़ेडोंग ने 1953 में मा युआनशियांग को सज़ा-ए-मौत देदी।[635]

क्योमिनटांग बर्मा में

चीन में शिकस्त के बाद तक़रीबन 12000 क्योमिनटांग फ़ौजी जिनमें से अक्सर मुसलमान थे बर्मा भाग गए और वहां से दक्षिणी चीन पर हमले करते रहे। उन का नेतृत्व जनरल ली मी Li Mi कर रहे थे और क्योमिनटांग गवर्नमेंट उन्हें बाक़ायदा तनख़्वाह देती थी और एज़ाज़ी तौर पर ली मी को युन्नान का गवर्नर Governor of Yunnan बना रखा था। लेकिन 1953 में जब बर्मा की हुकूमत ने संयुक्त राष्ट्र संघ से उन लोगों को क़ाबू करने की विनती की तो अमरीकी हुकूमत ने ताइवान हुकूमत पर दबाव डाला कि वो अपने इत्तिहादियों को वापस बुलाए, चुनांचे 1954 में 6000 क्योमिनटांग सिपाहियों ने बर्मा को छोड़ दिया और ली मी ने अपनी फ़ौज के ख़ातमे का ऐलान कर दिया। तिब्बत के आमडो Amdo के इलाक़े में जब चीनी हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह हुआ तो चीनी हुकूमत ने मा बुफ़ांग के उन्हीं मुसलमान मुजाहिदीन का इस्तेमाल तिब्बत के विद्रोह को कुचलने के लिए किया।[636]

अध्याय 18
वर्तमान चीन में इस्लाम का पुनरुद्धार

第十八章
伊斯兰教在当今中国的复兴

Chapter Eighteen
Resurgence of Islam in Present day China

दस्तावेज़ संख्या 19

माओ ज़ेडोंग के इंतिक़ाल के बाद जब डेंग शियाओपिंग चीन के सर्वोच्च नेता (Paramount Leader) बने तो उन्होंने मज़हबी आज़ादी को दोबारा बहाल किया और जो लोग या ग्रुप ज़ुल्म का शिकार हुए थे उनको दोबारा बसाने की और उनके ग़मों को दूर करने की कोशिश की और माओ के दौर में जो गलतियां और मज़ालिम (अत्याचार) हुए उनका प्रायश्चित्त करने की कोशिश की जिसमें मज़हबी आज़ादी को बहाल करना भी शामिल था, इस लिए इस दौर को बोलुआन फ़ानज़ेंग Boluan Fanzheng दौर कहा जाता है। चीन में इस्लाम 5 मान्यता प्राप्त धर्मों में से एक है। यह धर्म हैं बुद्ध मत, टाओ, इस्लाम, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक। 1982 CE की सेंट्रल कमेटी के दस्तावेज़ नंबर 19 में मज़हबी आज़ादी को तफ़सीली तौर पर बयान किया गया और मज़हबी आज़ादी के बहाल करने का हुक्म-जारी दिया गया। हालाँकि यह पूरा दस्तावेज़ ही बहुत अहम है और कम्युनिस्टों की मज़हब के बारे में विचारधारा, पर भरपूर रोशनी डालता है ताहम लंबा होने के कारण पूरा पेश नहीं किया जा रहा, बल्कि विषय से संबंधित अनुच्छेद यहां पेश किए जा रहे हैं।

Religion is a historical phenomenon pertaining to a definite period in the development of human society. It has its own cycle of emergence, development, and demise. Religious faith and religious sentiment, along with religious ceremonies and organizations consonant with this faith and sentiment, are all products of the history of society. The

earliest emergence of the religious mentality reflected the low level of production and the sense of awe toward natural phenomena of primitive peoples. With the evolution of class society, the most profound social roots of the existence and development of religion lay in the following factors: the helplessness of the people in the face of the blind forces alienating and controlling them in this kind of society; the fear and despair of the workers in the face of the enormous misery generated by the oppressive social system; and in the need of the oppressor classes to use religion as an opiate and as an important and vital means in its control of the masses. In Socialist society, the class root or the existence of religion was virtually lost following the elimination of the oppressive system and its oppressor class. However, because the people's consciousness lags behind social realities, old thinking and habits cannot be thoroughly wiped out in a short period. A long process of struggle is required to achieve great increases in production strength, great abundance in material wealth, and a high level of Socialist democracy, along with high levels of development in education, culture, science, and technology. Since we cannot free ourselves from various hardships brought on by serious natural and man-made disasters within a short period of time; since class struggle continues to exist within certain limits; and given the complex international environment, the long-term influence of religion among a part of the people in a Socialist society cannot be avoided. Religion will eventually disappear from human history. But it will disappear naturally only through the long-term development of Socialism and Communism, when all objective requirements are met. All Party members must have a sober-minded recognition of the protracted nature of the religious question under Socialist conditions. Those who think that with the establishment of the Socialist system and with a

certain degree of economic and cultural progress, religion will die out within a short period, are not being realistic. Those who expect to rely on administrative decrees or other coercive measures to wipe out religious thinking and practices with one blow are even further from the basic viewpoint Marxism takes toward the religious question. They are entirely wrong and will do no small harm.[637]

तर्जुमाः "मज़हब इनसानी समाज की तरक़्क़ी के एक ख़ास दौर का तारीख़ी वाक़िया है। उस की अपनी स्थापना, तरक़्क़ी और ख़ातमे का एक निज़ाम है। मज़हबी अक़ीदे, मज़हबी जज़्बात, धार्मिक उत्सव और संगठन, यह सब समाज की पैदावार हैं। पैदावार की कमी और पुराने लोगों का प्राकृतिक आपदाओं से ख़ौफ़ मज़हब की शुरूआत की वजह बनी। वर्ग समाज (class society) के फलने-फूलने के साथ मज़हब की तरक़्क़ी हुई। मज़हब के वजूद और तरक़्क़ी का राज़ इन चीजों में छिपा है। इस किस्म के समाज में अंधी शक्तियों के सामने लोगों की बेबसी और उन पर क़ाबू पाना। दमनकारी सामाजिक व्यवस्था की वजह से पैदा होने वाले ज़बरदस्त निर्दयता के सामने मेहनतकशों के ख़ौफ़ और मायूसी से मज़हब वजूद में आया। और ज़ालिम तबक़ों ने मज़हब को अफ़ीम के तौर पर इस्तेमाल किया ताकि जनता पर अपना कंट्रोल बरक़रार रख सकें। सोशलिस्ट समाज में जाबिराना निज़ाम और उस के जाबिर तबक़े के ख़ातमे के बाद तबक़ाती निज़ाम या मज़हब का वजूद लग-भग ख़त्म हो चुका था। ताहम, चूँकि लोगों का शऊर समाजी हक़ायक़ से पीछे रहता है, इसलिए पुरानी सोच और आदात को थोड़े समय के भीतर पूरी तरह से मिटाया नहीं जा सकता। पैदावारी क़ुव्वत में ज़बरदस्त इज़ाफ़ा, माद्दी दौलत की बोहतात, और शिक्षा,

संस्कृति (culture), साइंस और टेक्नोलॉजी में आला तरक़्क़ी के साथ, सोशलिस्ट जमहूरियत के आला दर्जे की मूल्यों के हुसूल के लिए एक लंबे संघर्ष की ज़रूरत है। हम अपने आपको बहुत कम वक़्त में क़ुदरती और मानवीय आपदाओं की वजह से आने वाली मुख़्तलिफ़ मुश्किलात से आज़ाद नहीं कर सकते और तबक़ाती जद्द-ओ-जहद कुछ न कुछ बाक़ी है। और जटिल अंतरराष्ट्रीय माहौल को देखते हुए, समाजवादी समाज में लोगों के एक वर्ग पर धर्म के दीर्घकालिक प्रभाव को टाला नहीं जा सकता है। मज़हब बिल-आख़िर इनसानी तारीख़ से मिट जाएगा। यह क़ुदरती तौर पर सोशलिज़्म और कम्युनिज़्म की तवील मुद्दती तरक़्क़ी के ज़रिये ही ख़त्म होगा, जब तमाम मारुज़ी तक़ाज़े पूरे हो जाएंगे। तमाम पार्टी सदस्यों को सोशलिस्ट हालात के तहत मज़हबी सवाल की जटिल स्थिति को समझना चाहिए। जो लोग यह समझते हैं कि सोशलिस्ट निज़ाम की स्थापना और मआशी और सक़ाफ़्ती तरक़्क़ी के साथ, मज़हब थोड़ी ही मुद्दत में ख़त्म हो जाएगा, वो हक़ीक़तपसंद नहीं हैं। वो लोग जो मज़हबी सोच और तर्ज़-ए-अमल को एक ही प्रहार से ख़त्म करने के लिए सरकारी निर्देशों या दूसरे ज़बरदस्ती इक़्दामात पर निर्भर करते हैं, और मार्क्सवाद मज़हबी सवाल से मुताल्लिक़ (संबंध में) जो बुनियादी दृष्टिकोण (नुक़्ता-ए-नज़र) रखता है उस से भी आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, वो मुकम्मल तौर पर ग़लत हैं और वो कोई मामूली नुक़सान नहीं करेंगे।"
इसी दस्तावेज़ में आगे एक दूसरी जगह दर्ज है।

“Party committees on each level must adopt toward the religious question an attitude in accord with what Lenin said, "Be especially alert," "Be very strict," "Think things through thoroughly." To overestimate the seriousness or complexity of the question and so to panic, or to ignore the existence and complexity of the actual question and so let matters drift, would be equally wrong”.[638]

तर्जुमा “हर सतह पर पार्टी कमेटियों को मज़हबी सवाल के बारे में लेनिन के कहने के मुताबिक़ रवैया अपनाना चाहिए, "खासतौर पर होशियार रहो, सख़्त रहो, चीज़ों को अच्छी तरह से सोचो। सवाल की संगीनी या पेचीदगी को बढ़ा चढ़ा कर पेश करना और घबराना, या असल सवाल के वजूद और पेचीदगी को नज़रअंदाज़ करना और मामलात को आगे बढ़ने देना, इतना ही ग़लत होगा”.

इस्लाम की बहाली

बहर हाल, माओ ज़ेडोंग के इंतिक़ाल के बाद डेंग शियाओपिंग के दौर में आई ए सी (IAC: Islamic Association of China) को दोबारा क़ायम किया गया। मस्जिदों और गोंग बी को दोबारा खोलने और तामीर करने की अनुमति दी गई। 1982 CE की सेंट्रल कमेटी के दस्तावेज़ नंबर 19 के मुताबिक़ चीन में मुसलमानों की तादाद उस वक़्त एक करोड़ (10 Million) थी लेकिन अब 2.5 करोड़ (25 million) हो गई है। ज़ी जियांग सूबे का यीवू शहर जहां 1982 CE में मुसलमानों की तादाद 400 थी और बढ़कर अब 2012 CE में 35,000 हो गई है। सिर्फ इंडोनेशिया, इंडिया और पाकिस्तान में मुसलमानों की तादाद यहां से

ज़्यादा है। यानी चीन मुसलमानों की तादाद के एतबार से चौथा सबसे बड़ा मुलक है। यहां पर मुसलमानों के कई नसली गिरोह है जिनको तादाद के एतबार से बतदरीज यहां बयान किया जा रहा है। सबसे ज़्यादा हुई, उइग़ूर, सालार, कज़ाख़, किर्गीज़, बोनान, डोंगशियांग वग़ैरह।

इस्लामिक एसोसिएशन ऑफ़ चाइना IAC के मुताबिक़ चीन में 40,000 मस्जिदें हैं जिनमें से आधी से ज़्यादा शिंजियांग हैं और 50,000 इमाम हैं जिन्हें अहोंग ahong कहा जाता है। यहां पर कई इलाक़ों में मुसलमानों की तादाद कसरत से है जैसे शिंजियांग, गान्सू, चिंगहाई, युन्नान, नानजिंग, बीजिंग वग़ैरह। गान्सू के शहर लिनशिया Linxia 临夏 में मुसलमानों की इतनी घनी आबादी है कि उसे छोटा मक्का "Little Mecca" कहा जाता है।

चुनांचे मज़हब पर से पाबंदी हटने के बाद इस्लामी की बहाली यहां देखने में आई। लोगों ने मस्जिदों में बा-जमात नमाज़ पढ़ना शुरू की, मस्जिदें आबाद होने लगीं, टोपी पहनना, दाढ़ी रखना, बुर्क़ा और स्कार्फ़ पहनना शुरू किया। ख़ासकर नई पीड़ी ने इस्लामी धार्मिक प्रथाओं को तेज़ी से अपनाया, मदरसे आबाद हुए और उनमें दोबारा क़ुरान-ओ-हदीस की शिक्षा का सिलसिला शुरू हुआ, यहां तक कि छोटे देहात और कस्बों में भी मस्जिदें और मदारिस तामीर हुए। निंगशिया के इलाक़े को हुई लोगों के लिए आरक्षित कर दिया गया। इस लिए इस को निंगशिया हुई ऑटोनोमस इलाका Ningxia Hui Autonomous Region का लक़ब दिया गया, इस को क़ुरान बेल्ट Quran Belt भी कहा जाता है क्यों कि यहां जा-ब-जा सड़कों के किनारे मस्जिदें और मदारिस नज़र आते

हैं जिनमें क़ुरान की शिक्षा दी जाती है। याद रहे चीन में अगर किसी जगह कोई जाति या मज़हबी गिरोह के लोग बड़ी तादाद में आबाद होते हैं तो उनके लिए उस इलाक़े को आरक्षित कर दिया जाता है जिसको ज़ीज़ीचू Zìzhìqu कहा जाता है जिसका मतलब होता है ख़ुद-मुख़्तार इलाक़ा या ऑटोनोमस इलाक़ा (स्व-संप्रभु क्षेत्र) Autonomous region और इस इलाक़े में उस समुदाय को विशेषाधिकार हासिल होते हैं। चीन में कुल 5 ऑटोनोमस रीजन हैं। इसी तरह उइग़ूर लोगों के लिए शिंजियांग को आरक्षित कर दिया गया है क्यों कि वहां उइग़ूर लोगों की आबादी ज़्यादा है इस लिए इस को शिंजियांग उइग़ूर ऑटोनोमस रीजन Xinjiang Uygur Autonomous Region (Xinjiang weiwu'er zìzhìqu) कहा जात है। नए तर्ज़ के इस्लामी स्कूल भी क़ायम किए गए जिनमें बड़ी तादाद में मुस्लिम बच्चों ने दाख़िला लिया, जहां आधुनिक शिक्षा के साथ इस्लामी शिक्षा भी दी जाती है। कुछ थोड़ी संख्या में हान लोग भी मुसलमान हुए जिनमें से कुछ मज़हबी शौक़ की वजह से और कुछ शादी के लिए।

इस के अलावा बहुत सी नई इस्लामी किताबों का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया गया जिनसे इस्लाम के बारे में लोगों की मालूमात और बढ़ी और चीनी ज़बान में इस्लामी पत्रिकाएँ और रिसाले जारी किए गए। 60 से ज़्यादा इस्लामी रिसाले या पत्रिकाएँ चीन में छपते हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया भी एक बड़ा ज़रिया बन गया है लोगों को इस्लाम से मुताल्लिक़ मालूमात उपलब्ध कराने का और लोगों में इस्लामी जागरूकता पैदा करने का। इस के अलावा मुस्लिम प्रोसेसर

और शोधकर्ता चीन की मुख़्तलिफ़ यूनिवर्सिटियों और इदारों में इस्लामी शिक्षा देते हैं और इस्लामी विषयों पर शोध करते हैं। मुस्लिम तन्ज़ीमों और अशराफ़िया की तरफ़ से समय - समय पर इस्लामी कॉन्फ्रेंसों, सेमिनारों और वर्कशापों का आयोजन किया जाता है।

इस के अलावा बहुत से छात्रों ने विदेशों का रुख किया इस्लामी शिक्षा हासिल करने के लिए जैसे मिस्र, सऊदी अरब, पाकिस्तान, इंडोनेशिया वग़ैरह। पिछले 30 सालों में तक़रीबन 12,000 चीनी छात्रों ने विदेशों में इस्लामी शिक्षा हासिल की जब कि चीन में मदारिस के छात्रों की तादाद तक़रीबन 100,000 है। हर साल तक़रीबन 10,000 लोग चीन से हज को जाते हैं।

चीनी इस्लाम में सूफ़ियों का भी काफ़ी योगदान रहा है। सूफ़ी ख़ानक़ाह को यहां क़ुब्बा या गोंग बी कहा जाता है जिसमें सूफ़ियों का आवास, इबादत करने की जगह, मस्जिद और कब्रिस्तान होता है। बड़ी तादाद में लोग इन ख़ानक़ाहों का रुख करते हैं और सूफ़ी के इंतिक़ाल के बाद उस को वहीं दफ़ना दिया जाता है जो एक मज़ार बन जाता है और लोग उस की ज़ियारत (दर्शन) के लिए आते हैं। ख़ोजा आफ़ाक़ का मज़ार सबसे मशहूर है जहां लाखों लोग हर साल ज़ियारत के लिए हैं।

अध्याय 19
चीन में मुस्लिम जातियाँ: उनकी जनसंख्या और बस्तियाँ

第十九章
中国的穆斯林社区及其人口和定居点

Chapter Nineteen
Muslim Communities in China, their Population and Settlements

2020 की जनगणना के अनुसार चीन में मुस्लिम जातीय समूह और उनकी जनसंख्या

English Name	Population in 2020	जाति
Han (non-Muslim)	1, 284,446,389	हान (बहुसंख्यक, गैर-मुस्लिम)
Uyghur	11,774,538	उइग़ूर
Hui	11,377,914	हुई
Kazakh	1,562,518	कज़ाख़
Dongxiang	774,947	डोंगशियांग
Kyrgyz	204,402	किर्गीज़
Salar	165,159	सालार
Tajik	50,896	ताजिक
Bonan	24,434	बोनान
Uzbek	12,742	उज़्बेक
Tatars	3,544	तातार
Total	25,951,094	कुल जनसंख्या

चीन में तक़रीबन56 नसली गिरोह (जातियां) है जिनमें लगभग 10 गिरोह मुसलमानों के हैं जिनके नाम हैं हुई, उइग़ूर,कज़ाख़, डोंगशियांग, किर्गीज़, सालार, ताजिक, उज़्बेक, बोनान और तातार।

Hui, Uyghurs, Kazakhs, Dongxiangs, Kyrgyz, Salar, Tajiks, Uzbeks, Bonan and Tatars.

हुई Hui

हुई गिरोह सबसे बड़ा है, 2020 जनगणना के एतबार से जिसकी तादाद 20,586,087 है।[639] इनकी आबाद उत्तर पश्चिमी सूबों में ज़्यादा है जैसे निंगशिया, गान्सू चिंगहाई Ningxia, Gansu and Qinghai। इस के अलावा ज़ोंगयुआन Zhongyuan इलाक़े में भी कुछ पाए जाते हैं।

इनके पूर्वजों के बारे में मुख़्तलिफ़ राय पाई जाती हैं। ज़्यादातर लोगों का मानना है कि यह उन ताजिरों की औलाद हैं जो रेशम मार्ग के रास्ते चीन आए और यहीं बस गए और चीन की मुक़ामी औरतों से शादियां कर लीं जिसके नतीजे में यह जाति वजूद में आई। ताहम वक़्त के साथ इन लोगों ने चीनी तहज़ीब में ख़ुद को ढाल लिया, चीनी रहन सहन, खाने पीने, लिबास और भाषा अपना ली यहां तक कि इस्लामी नामों को भी बदल कर चीनी तर्ज़ पर कर दिया जैसे मुहम्मद को मा, हसन को हा, हुसैन को हू और सईद को सा वग़ैरह। कुछ का कहना है कि यह ख़्वारिज़्म शाही लोग थे जिनको मंगोलों ने शिकस्त दी तो उन्होंने चीन का रुख किया, उन्हीं लोगों की औलाद को हुई कहा जाता है। यह मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में फैले हुए हैं और किसी एक जगह इकट्ठे नहीं हैं जबकि उइग़ूर लोग सब एक जगह शिंजियांग में रहते हैं। आम तौर से चीनी हुकूमत का रवैया हुई लोगों के साथ बहुत नरम और दोस्ताना है जब कि उइग़ूर लोगों के साथ बहुत कठोर है।

उइग़ूर Uyghurs

उइग़ूर या उइगर एक तुर्क मुस्लिम जाति है जो ज़्यादा तर शिंजियांग सूबे में आबाद है। यह हुई के बाद सबसे बड़ी मुस्लिम जाति है। यह लोग मध्य एशिया से आए हैं जैसे कज़ाख़िस्तान, तुर्की, किर्गिस्तान, और उज़्बेकिस्तान वग़ैरह और उन देशों में भी पाए जाते हैं। चीनी हुकूमत के मुताबिक़ उनकी तादाद चीन में 11,774,538 है।[640] उनकी 80 प्रतिशत आबादी शिंजियांग के तरीम बेसिन इलाक़े में आबाद है इस के अलावा हुनान Hunan सूबे के टाओयुआन शहर Taoyuan County में भी आबाद हैं। हुई लोगों की तरह उन्होंने ख़ुद को चीनी तहज़ीब में नहीं ढाला बल्कि मध्य पूर्वी संस्कृति को ही बरक़रार रखे हुए हैं। यह लोग शिंजियांग को चीन का हिस्सा नहीं मानते इस लिए अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे हैं इसी लिए चीनी हुकूमत का रवैया भी उनके साथ निहायत सख़्त है। यह लोग अपना अलग देश चाहते हैं जिसको 'पूर्वी तुर्किस्तान' का नाम देते हैं। इस लिए अक्सर शिंजियांग सूबे में हिंसक वाक़ियात और हुकूमत और उइग़ूर लोगों के बीच मुठभेड़ होती रहती हैं।

कज़ाख़ Kazakhs

कज़ाख़ भी एक मुस्लिम नसली गिरोह (जाति) है। 2020 की चीनी जनगणना के अनुसार, चीन में उनकी जनसंख्या 1,562,518 है। जब चिंग हुकूमत ने ज़ुंगर ख़ानियत का ख़ातमा किया तो उनकी जगह शिंजियांग में दूसरे लोग आबाद हो गए जिनमें कज़ाख़ लोग भी थे यह लोग दर असल रूस के इलाक़ों से आए

थे। 19 वीं सदी में रूस ने कज़ाख़ लोगों पर हमला कर दिया और उनको चीन में पनाह लेने पर मजबूर कर दिया। कहा जाता है कि रूस ने कज़ाख़ लोगों को चीन में इस लिए ढकेला क्यों कि वो यह समझता था कि चीन और रूस की बीच अगर लड़ाई हुई तो कज़ाख़ लोग उस के लिए ख़तरा बन सकते हैं। चुनांचे 1916 CE में रूस के नरसंहार से बचने के लिए बहुत से कज़ाख़ लोग चीन में शरणार्थी हो गए। यह वाक़िया बसमाची तहरीक Basmachi movement कहलाता है। हुआ यह था कि पहले विश्व युद्ध के मौक़े पर रूस ने 1916 CE में, रूस में बसने वाले मुसलमानों को जबरन फ़ौज में भर्ती करना शुरू कर दिया। इस के बाद 1917 CE में रूस में बोल्शेविक Bolsheviks इन्क़लाब आ गया जिससे पूरे देश में गृहयुद्ध फूट पड़ा। तुर्किस्तान के मुसलमानों ने अपनी अलग हुकूमत क़ायम कर ली जिस की राजधानी वादी फ़र्ग़ाना Fergana Valley में ख़ोक़न्द Kokand थी। लेकिन इस के ख़िलाफ़ 1918 CE में बोल्शेविक हुकूमत ने फ़ौजी कार्रवाई कर के 25, 000 मुसलमानों को क़त्ल कर दिया, और बहुत से जान बचा कर इधर उधर फ़रार हो गए जैसे चीन वग़ैरह। इस वक़्त मुसलमानों के लीडर अनवर पाशा Enver Pasha और इस के बाद इबराहीम बेग Ibrahim Bek बने।[641]

1936 CE में शेंग शिकाई Sheng Shicai ने 20,000 और कुछ रिवायत में 30,000 कज़ाख़ लोगों को शिंजियांग Xinjiang से निकाल कर चिंगहाई Qinghai भेज दिया जहां पर मा बुफ़ांग की हुकूमत थी।[642] मा बुफ़ांग जो एक मुसलमान था

उसने उन कज़ाख़ लोगों का नरसंहार किया यहां तक कि उनकी तादाद सिर्फ 135 रह गई।

दूसरी रिवायत में है कि 1934-1938 CE के दरम्यान 18,000 कज़ाख़ लोगों ने क़ुमिल एलिसक़ान Qumil Elisqan के नेतृत्व में गान्सू और चिंगहाई की तरफ़ हिजरत की।[643] बाद में इन लोगों ने रूस की पुश्तपनाही हासिल कर के एक विद्रोह कर दिया जिसको इली विद्रोह कहा जाता है और इस के नतीजे में तीन शहरों, गुलजा Ghulja, अल्ताई Altay और तरबगाते Tarbagatay पर हुकूमत क़ायम कर ली जिसको दूसरी पूर्वी तुर्किस्तान हुकूमत कहा जाता है लेकिन बाद में वो भी ख़त्म हो गई।

चीन में अब शिंजियांग के अंदर एक कज़ाख़ प्रीफ़ेक्चर है जिसको 'इली कज़ाख़ ऑटोनोमस प्रीफ़ेक्चर' Ili Kazakh Autonomous Prefecture कहा जाता है। इस के अलावा कुछ शहर भी कज़ाख़ लोगों के लिए आरक्षित हैं जैसे गान्सू Gansu में अक्साई कज़ाख़ ऑटोनोमस काउंटी Aksay Kazakh Autonomous County और शिंजियांग Xinjiang में बरकोल कज़ाख़ ऑटोनोमस काउंटी Barkol Kazakh Autonomous County और मोरी कज़ाख़ ऑटोनोमस काउंटी Mori Kazakh Autonomous County. कज़ाख़ लोग आम तौर पर चीनी ज़्यादा अच्छी नहीं बोल पाते बल्कि वो अपने पूर्वजों की भाषा कज़ाख़ Kazakh language बोलते हैं। चीनी हुकूमत कज़ाख़ लोगों को उइग़ूर लोगों के साथ शुमार करती है और उस का उनके साथ वही रवैया है जो उइग़ूर लोगों के साथ है।

डोंगशियांग Dongxiangs

डोंगशियांग भी एक मुसलिम जाति है जो चीनी हुकूमत से मान्यता प्राप्त 56 नसली गिरोहों में से एक है। 2010 CE जनगणना के एतबार से उनकी तादाद 621,500 है। यह लोग ज़्यादातर गान्सू में रहते हैं। गान्सू सूबे के लिनशिया शहर में उनका एक आरक्षित इलाक़ा भी है जिसको डोंगशियांग ऑटोनोमस काउंटी Dongxiang Autonomous County कहते हैं।

इतिहास

डोंगशियांग को मंगोल Mongol की एक शाखा माना जाता है जो मंगोर Monguor और बोनान Bonan के क़रीबी है। 13 वीं सदी ईसवी में यह मुसलमान हो गए थे। कहा जाता है कि जब चंगेज़ ख़ान ने चीन पर हमला किया तो हीज़ू में जो मंगोल फ़ौजी ठहरे हुए थे उनकी औलाद हैं डोंगशियांग। कुछ का कहना है कि जो मंगोल फ़ौजी लिनशिया और पश्चिमी गान्सू में ठहरे हुए थे, यह उनकी औलाद में हैं।[644] यह लोग चीनी ज़बान के बजाय मंगोल ज़बान बोलते हैं। मुक़ामी लोग उनको सांता Santa कहते हैं। मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang की फ़ौज में कई डोंगशियांग जनरल थे।[645] इस के अलावा बॉक्सर विद्रोह Boxer Rebellion के दौरान बहुत से डोंगशियांग फ़ौजी मा फ़ूलू Ma Fulu और मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang के मातहत लड़ रहे थे जिसने लांगफांग Battle of Langfang की जंग में 8 मुल्कों के फ़ौजी गठबंधन Eight Nation Alliance को शिकस्त दी। इस के बाद मा फ़ूलू Ma Fulu और उस के साथ 100 डोंगशियांग

फ़ौजी बीजिंग में ज़ेंगयांग गेट की लड़ाई Zhengyang Gate में इत्तिहादी फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ते हुए मारे गए।[646]

दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में भी मा बियाओ Ma Biao की मातहती में हुई, बाओआन, डोंगशियांग, सालार और तिब्बती फौजियों ने जापान के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी। मशहूर डोंगशियांग लोगों में मा वानफ़ू हुए जो यहवानी सूफ़ी सिलसिले के संस्थापक माने जाते हैं और चिंग मुख़ालिफ़ विद्रोह में शरीक रहे। इस के अलावा मा डाहान हुए यह भी चिंग मुख़ालिफ़ विद्रोह में शामिल थे। चीनी हुकूमत के आकड़ों के मुताबिक़ डोंगशियांग सबसे कम पढ़े लिखे अल्पसंख्यकों minorities में शुमार होते हैं क्योंकि डोंगशियांग लोगों में स्कूल जाने का औसत 1.1 साल है। इस की एक वजह यह भी है कि डोंगशियांग भाषा की कोई लिपि नहीं है और यह कि इस में बहुत कम अलफ़ाज़ हैं। 2004 CE में फ़ोर्ड फाउंडेशन ने ३०,००० अमरीकी डॉलर US $ 30,000 की इमदाद इस मक़सद के लिए दी कि स्कूलों में दो भाषाएँ bilingual यानी मन्दारिन और डोंगशियांग में शिक्षा दी जाए। इस प्रोजेक्ट में डोंगशियांग और चीनी ज़बान की एक डिक्शनरी भी तैयार की गई, इस के अलावा स्कूलों में छात्रों की तादाद में भी इज़ाफ़ा हुआ।

किर्गीज़ Kyrgyz

किर्गीज़ का अर्थ है ४० क़बीले 40 tribes या ४० लड़कियां या बहनें 40 Girls. किर्गीज़ भी एक मुसलिम अल्पसंख्यक समुदाय है जो चीन में 56 जातीय समूहों में एक है। इन लोगों के लिए शिंजियांग के दक्षिण पश्चिम में एक इलाक़ा भी

आरक्षित है जिसको किज़िलसू किर्गीज़ ऑटोनोमस प्रीफ़ेक्चर Kizilsu Kirgiz Autonomous Prefecture कहा जाता है, इस के अलावा आस पास के दूसरे इलाक़ों में रहते हैं जैसे उचतुरफ़ान, अक्सू, यरकंद, यंगीसार, ताशकुरगान, पीशान। Uqturfan, Aksu, Yarkant, Yengisar, Taxkorgan and Pishan. चीन के पांचवीं जनगणना के एतबार से उनकी तादाद चीन में 160,875 है।

तारीख़

तीसरी सदी ईसा पूर्व में शियोंगनू क़बीले ने किर्गीज़ क़बीले को फ़तह किया। यह लोग ख़ैरगास झील Khyargas Lake के पास आबाद थे जो पश्चिमी मंगोलिया में है। लेकिन उस वक़्त उनको जी कुन Ge Kun कहा जाता था। 7 वीं सदी ईसवी में यह लोग तुर्कों की ज़ेर हुकूमत रहते थे। उस वक़्त उनको चीगू Qigu कहा जाता था। जब टांग हुकूमत ने तुर्कों को शिकस्त दी तो उस वक़्त यह लोग यानरान की प्रोटेक्टोरेट Protectorate of Yanran में आबाद थे। बाद में इस इलाक़े को हुईही ख़ानियत Huihe Khanate ने फ़तह कर लिया और इस का नाम शीगास Xigas रख दिया। 9 वीं सदी ईसवी में शीगास धीरे धीरे कर के मज़बूत हो गया और 840 CE में ख़ान ज़गलोब Khan Zhugluob को क़त्ल कर दिया और टुवा Tuva इलाक़े में शीगास ख़ानियत Xigas Khanate को मुंतक़िल कर दिया। 10 वीं सदी ईसवी में खीतान Khitan हुकूमत के उदय के बाद शीगास उस की लगानदारी बन गई।

किर्गीज़ के अलग अलग नाम

हान हुकूमत के दौर में उनको जीकुन Gekun या जियानकुन Jiankun कहा जाता था। जिन हुकूमत के दौर में उनको चीगू Qigu कहा जाने लगा और टांग और सोंग हुकूमतों के दौर में जियानकुन Jiankun, जीकासी Jikasi या चिलीचीसी Qiliqisi कहा जाने लगा। युआन और मिंग हुकूमत के दौर में उनको जिरजीसी Jirjisi या चिरजीसी Qirjisi कहा जाने लगा। चिंग हुकूमत के दौरान उनको बुलूत Bulute कहा जाने लगा जिस का मतलब होता है पहाड़ी लोग।[647]

किर्गीज़ लोगों का रहन सहन

किर्गीज़ लोग रिवाज के अनुसार मवेशी पाल कर अपना गुज़र चलाते थे, जैसे घोड़े, भेड़, बकरी वग़ैरह। वो लोग ख़ेमों में रहा करते थे जिनको यर्ट yurt कहा जाता है। सर्दियों में वो गारे मिट्टी से बने मकानों में रहते थे। उनका पसंदीदा खाना गोश्त, दूध, चावल और गेहूं हैं। उनके कई त्योहार होते हैं जैसे नूलाओज़ी Nuolaozhi, गुर्बांग Gurbang और रोज़ी Rouzhi. इन त्योहारों के दौरान वो कई खेल खेलते हैं जैसे घोड़ों की रेस, भेड़ पकड़ना और कुश्ती। उनकी एक दास्तान की किताब भी है जिसको मनासी Manasi (Manas) कहा जाता है यह लगभग दो लाख लाइनों 200,000 lines पर आधारित है। यह दुनिया की सबसे लंबी कविता मानी जाती है जिसमें प्राचीन किर्गीज़ शहज़ादों और साहसी लोगों Adventurers की बहादुरी के वाक़ियात ज़िक्र है। यह किर्गीज़ संस्कृति (culture) का सबसे बड़ा दस्तावेज़ मानी जाती है।

सालार

सालार भी एक अहम मुसलिम अल्पसंख्यक समुदाय है। इस के तफ़सीली हालात ऊपर मिंग हुकूमत के ज़माने में इस्लाम के विषय में दिए जा चुके हैं।

ताजिक Tajik

ताजिक एक निज़ारी इस्माइली शिया मुस्लिम नसली गिरोह है चीन में। यह भी चीन की 56 मान्यता प्राप्त जातियों में से है। यह लोग ज़्यादातर शिंजियांग की ताशकुरगान ऑटोनोमस काउंटी Tashkurgan Tajik Autonomous County में रहते हैं। 2015 CE के अंदाज़े का मुताबिक़ इस एक मुसलिम अल्पसंख्यक समुदाय वक़्त चीन में ताजिकों की तादाद 50,265 है जिनमें से 60% प्रतिशत ताजिक ताशकुरगान में रहते हैं। यह लोग ज़्यादातर पूर्वी ईरानी भाषा सारिकोली Sarikoli बोलते हैं और कुछ कम तादाद में वाखी Wakhi बोलते हैं। प्राचीन ज़माने में शिंजियांग का ताशकुरगान क़स्बा Tashkurgan Town सारिकोली हुकूमत Sarikol kingdom का केन्द्र था। यह लोग ज़्यादातर पामीर पहाड़ों Pamir Mountains पर आबाद थे। बाद में इस इलाक़े में जब तुर्क लोगों की बहुसंख्या हो गयी तो यह लोग तुर्क समाज में ढल गए।

यह लोग बाद में निज़ारी इस्माइली हो गए क्यों कि नासिर ख़ुसरो Nasir Khusraw ने अपने चार शागिर्दों के साथ उनको इस्माइली बनाने की मुहिम छेड़ी थी। यह शागिर्द थे सय्यिद हसन ज़राबी, सय्यिद सुराब वली, सय्यिद जलाल बुख़ारी और जहान मलिक शाह Sayyid Hassan Zarrabi, Sayyid

Surab Wali, Sayyid Jalal Bukhari and Jahan Malikshah. याद रहे नासिर ख़ुसरो फ़ारसी के मशहूर सफ़रनामे travelogue ‘सफरनामा’ Safarnama का लेखक भी है। आज के ताजिक पीर pirs (holy men) उन ही लोगों की औलाद में अपने को मानते हैं।[648]

चिंग हुकूमत के दौरान ताजिक लोग शिंजियांग में बेग Begs लोगों की हुकूमत के मातहत रहे लेकिन बाद में चिंग हुकूमत ने इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया जिसको तगदुंबश पामीर Taghdumbash Pamir कहा जाता है। चीनी हुकूमत ने ताशकुरगान नाम का शहर ताजिकों के लिए आरक्षित कर दिया जो इतिहास के अनुसार ताजिकों का निवास रहा था और इस का नाम ताशकुरगान ताजिक ऑटोनोमस काउंटी कर दिया और 1761 CE में हुनज़ा के मीर Mir of Hunza को इस इलाक़े का शासक बना दिया।[649] सुन्नी लोग शिया ताजिकों को ग़लचा Ghalcha कहते हैं।[650] ताजिक लोग असल में ग़ुलामी के कारोबार में भी मशगूल हुआ करते थे और ग़ुलामों की ख़रीद-बेच किया करते थे। उनमें से कुछ ग़ुलाम सुन्नी भी होते थे जिनको किर्गीज़ लोगों के हमले जिनको “किर्गीज़ ग़ुलामों के छापे” कहा जाता था की प्रतिक्रिया में ग़ुलाम बनाया जाता था। यह ग़ुलाम आम तौर से हुनज़ा, गिलगित और चित्राल Hunza, Gilgit, and Chitral इलाक़े से लाए जाते थे। इन ग़ुलामों को भी ग़लचा कहा जाता था।[651] सुन्नी लोग भी ताजिक शिया ग़ुलामों को बेचा करते थे जिनको सर्फ Serfs कहा जाता था।[652]

उज़्बेक Uzbeks

उज़्बेक भी एक मुसलिम अल्पसंख्यक समुदाय है जिसकी तादाद चीन में 1990 CE में 14,592 थी। यह लोग ज़्यादातर शिंजियांग में रहते हैं, तिजारत पेशा होते हैं और बहुत कम किसानी पेशा इख़्तियार करते हैं। आजकल ज़्यादातर यह लोग फ़ैक्ट्री वर्कर, टेक्नीशियन और व्यापार में मशग़ूल हैं। शिंजियांग में यह सबसे ज़्यादा शिक्षित लोग माने जाते हैं। चूँकि इनकी तादाद चीन में कम है इस लिए यह लोग आम तौर से उइग़ूर और सालार लोगों में भी शादियां कर लेते हैं, इस लिए दोनों में फ़र्क़ करना काफ़ी मुश्किल है।

बोनान Bonan

बोनान एक छोटा मुस्लिम समुदाय है चीन में। इस वक़्त इनकी तादाद 22,500 मानी जाती है। 95% प्रतिशत बोनान गान्सू के जीशिशान Jishishan शहर में रहते हैं। यह बोनान ज़बान बोलते हैं जिसमें 26 व्यंजन (consonants) और 11 स्वर (vowels) होते हैं। ताहम इस की कोई लिपि नहीं है।

तारीख़

कहा जाता है कि यह लोग इन मंगोल फौजियों की औलाद हैं जो युआन हुकूमत के दौरान चिंगहाई Qinghai में तैनात थे।[653] यह लोग या तो किसानी करते हैं या फिर छुरियां बनाते हैं। बाद में इन लोगों ने हुई, हान और तिब्बतियों में शादियां कीं। यह लोग हुई लिबास पहनते हैं। यह भी कहा जाता है कि यह लोग लामा लोगों की औलाद में हैं। याद रहे लामा तिब्बती बुद्ध मज़हब के रहनुमा

को कहा जाता है। यह लोग 1585 CE के आसपास चिंगहाई के टोंगरेन शहर Tongren County में रहा करते थे। यहीं पर उन्होंने बाओआन Bao'an नाम का क़स्बा आबाद किया। बाद में यह लोग मुसलमान हो गए और उत्तर की तरफ़ शुनहुआ शहर Xunhua County में मुंतक़िल हो गए। कहा जाता है कि यह लोग हुई सूफ़ी मा लाईची Ma Laichi (1681– 1766) की कोशिशों से मुसलमान हुए। बाद में डुंगन विद्रोह के दौरान यह लोग बहुत दूर पूरब में जीशिशान की तरफ़ मुंतक़िल हो गए जो गान्सू में है और उस को बोनान, डोंगशियांग और सालार लोगों के लिए आरक्षित कर दिया गया और आज उस का नाम जीशिशान बोनान, डोंगशियांग और सालार काउंटी Jishishan Bonan, Dongxiang and Salar Autonomous County है। बाद में बॉक्सर विद्रोह के दौरान बोनान लोग भी मा फ़ूलू और मा फ़ूशियांग की फ़ौज में शामिल हुए औ र8 देशों के गठबंधन को लांगफांग Battle of Langfang की जंग में शिकस्त दी। और दूसरी चीन-ओ-जापान जंग Second Sino-Japanese War के दौरान इन लोगों ने मा बियाओ Ma Biao के मातहत जापानी हमलावरों के ख़िलाफ़ भी जंग की।[654]

तातार Tatar

तातार भी एक छोटा मुस्लिम समुदाय है जो दर असल तुर्क हैं और इनकी तादाद 2010 CE में 3,556 मानी गई थी। यह लोग भी ज़्यादा तर शिंजियांग के शहरों में रहते हैं जैसे यिनिंग, ताचेंग, उरुमची Yining, Tacheng and Urumqi वग़ैरह। इनके लिए एक इलाक़ा भी आरक्षित है जिसको डाचुआन तातार नसली क़स्बा

Daquan Tatar Ethnic Township कहा जाता है। यह गांव कताई शहर में है, जो चांगजी हुई ऑटोनोमस प्रीफ़ेक्चर Changji Hui Autonomous Prefecture का हिस्सा है। यह लोग बुनियादी तौर पर रूस के मूल निवासी हैं। सबसे बड़ी खेप 1851 CE में गुलजा शहर Ghulja में आई। यह लोग अपने साथ कुछ आधुनिक विचार भी लाए और उन्होंने शिंजियांग में मुसलमानों के लिए जदीदी तहरीक की तर्ज़ पर कई स्कूल और तालीमी इदारे खोले।[655] याद रहे जदीदी तहरीक एक शैक्षिक आंदोलन था जो 19 वीं सदी में रूस के मुसलमानों ने शुरू किया। यह लोग ज़्यादातर सुन्नी मुसलमान हैं और तातार भाषा बोलते हैं।

अध्याय 20
चीन में मुस्लिम संस्कृति
第二十章
中国穆斯林文化

Chapter Twenty
Muslim Culture in China

चीन में इस वक़्त लगभग 2 करोड़ 20 लाख 22 million मुसलमान हैं जो चीनी आबादी का तक़रीबन 1.6 % हैं। पूरे चीन में लगभग 35,000 मस्जिदें हैं और 45,000 अहोंग Ahong (इमाम) हैं, अहोंग शायद अखुंद Akhund की बिगड़ी हुई शक्ल है। शिंजियांग सबसे ज़्यादा मुस्लिम आबादी वाला इलाक़ा माना जाता है इस के अलावा गान्सू, निंगशिया, चिंगहाई, युन्नान, बीजिंग और शंघाई में भी बड़ी तादाद में मुसलमान रहते हैं। शिंजियांग में काशग़र और तुरपान मुस्लिम सांस्कृतिक केंद्र हैं। गान्सू के लिनशिया Linxia शहर को यहां का छोटा मक्का कहा जाता है। गान्सू में दूसरा इलाक़ा निंगशिया हुई ऑटोनोमस रीजन Ningxia Hui Autonomous Region है इस में भी मुसलमानों की बड़ी आबादी है और बहुत से सूफ़ी मक़बरे हैं जिनको चीन में गोंगबी Gongbei कहा जाता है। शायद यह फ़ारसी लफ़्ज़ गुंबद की बिगड़ी हुई शक्ल है। क्यों कि यह इलाक़ा हुई समुदाय के लिए आरक्षित किया गया है इसी लिए उसे क़ुरान बेल्ट Quran Belt भी कहा जाता है।[656] चीन में मुस्लिम तहज़ीब एक अलग संस्कृति (culture) है जो इस्लामी रहन सहन और चीनी संस्कृति से मिलकर बनी है। बुनियादी तौर पर चीन में मुस्लिम आबादी दो गिरोहों में बटी हुई है। एक वो गिरोह जिसने अपने को चीनी संस्कृति में ढाल लिया और चीनी ज़बान, खाने, लिबास, नाम वग़ैरह अपना लिए। इस समुदाय को हुई कहा जाता है। और दूसरी मुस्लिम आबादी वो है जो तुर्क या उइग़ूर है और उसने अपनी मध्य पूर्व संस्कृति बाक़ी रखी और चीनी संस्कृति में ख़ुद को नहीं ढाला बल्कि वो अपने को चीनी नहीं मानते और अलग देश बनाने के लिए लड़ रहे हैं। यह लोग ज़्यादा तर

शिंजियांग में आबाद हैं इनमें कई जातीय समुदाय हैं जिनमें सबसे बड़ा उइग़ूर है इस के अलावा उज़्बेक, ताजिक, किर्गीज़, कज़ाख़, बोनान और डोंगशियांग हैं। यह लोग अपने पूर्वजों की भाषा बोलते हैं और वसती एशियाई तर्ज़ के लिबास, खाने और रहन सहन के तरीक़े अपनाते हैं।

1949 CE जब कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम हुई तो शुरू में मुसलमानों को काफ़ी मज़हबी आज़ादी से रहने का मौक़ा मिला। चुनांचे 1953 CE में इस्लामिक एसोसिएशन ऑफ़ चाइना Islamic Association of China (IAC) की बुनियाद रखी गई यह मुसलमानों की मदद के लिए एक संस्था थी जो कुछ मुस्लिम प्रख्यात लोगों ने बनाई। लेकिन जब सक़ाफ़्ती इन्क़लाब Cultural Revolution (1966-1976) (सांस्कृतिक क्रांति) आया तो सारी धार्मिक प्रथाओं के पालन पर पाबंदी लगा दी गई जिसमें इस्लाम भी शामिल था। जो कोई भी मज़हब पर अमल करता पाया जाता उस को सख़्त सज़ा दी जाती, सारी मस्जिदें बंद कर दी गईं। लेकिन माओ ज़ेडोंग के इंतिक़ाल के बाद चीनी हुकूमत ने डेंग शियाओपिंग के नेतृत्व में मज़हब के बारे में नरम पॉलिसी अपनाई तो मस्जिदें दोबारा खोली गईं और इस्लामी धार्मिक प्रथाओं का पालन करना आसान हुआ।

खाने

चीन में ख़िंज़ीर का गोश्त और नूडल्स noodles खाने का बहुत रिवाज है और नूडल्स की कई डिशों में ख़िंज़ीर का गोश्त शामिल किया जाता है। मुसलमान भी कई तरह के नूडल्स की डिशें बनाते हैं लेकिन इस में ख़िंज़ीर के गोश्त की जगह हलाल गोश्त इस्तेमाल किया जाता है। बाज़ार में जो रेडीमेड खाने बकते हैं उनमें भी कई को हलाल सर्टिफ़िकेट के साथ बेचा जाता है। हलाल खाने को चीन में चिंगजेनकाई qingzhencai (清真菜) कहा जाता है जिसका मतलब होता है ख़ालिस सच्चा खाना pure truth food. जानवरों को इस्लामी हलाल तरीक़े पर ज़िबह किया जाता है। ताहम चीनी हुकूमत कई दफ़ा उस की मुख़ालिफ़त भी करती है। चुनांचे 2018 CE में चीनी हुकूमत ने एक हलाल मुख़ालिफ़ तहरीक चलाई जिसमें अहलकारों को हुक्म दिया कि वो हलाल सामान बेचने वालों पर सख़्त कार्रवाई करें। कुछ मुस्लिम डिशों के नाम हैं लामियान Lamian, बीफ नूडल सूप Beef noodle soup, चुआर Chuanr, सुआन काई Suan cai, नॉन्ग Nang, नियांग पी Niang pi वग़ैरह।[657]

शादी

चीनी मुसलमानों में शादी ब्याह के अपने अलग रस्मो रिवाज हैं। यहां पर उनमें से कुछ को नक़्ल किया जा रहा है। शादी की रस्मों को तीन हिस्सों में तक़सीम किया जा सकता है। पहली मंगनी दूसरी शादी की तैयारी और तीसरी निकाह।

मंगनी अक्सर बूढ़ी औरतों के ज़रिये से होती है। पहले वो लड़की वालों को आमादा करती है कि वो अपनी लड़की की शादी फ़ुलां लड़के से कर दें। वो लड़के के अख़लाक़ बयान करती है, फिर उस के वालिद की शख़्सियत और उस की ख़ानदानी और माली हालत का ज़िक्र करती है, फिर उस से आइन्दा जो उम्मीदें वाबस्ता हैं उनका इज़्हार करती है। उधर लड़के के वालदैन को भी आमादा करती है कि अपने लड़के की शादी फ़ुलां लड़की से कर दें, उनके सामने वो फ़ुलां बिंत-ए-फ़ुलां के अख़लाक़, हुसन और चाल चलन वग़ैरा का की तारीफ़ करती है। अगर तरफ़ैन के वालदैन राज़ी हो गए तो शादी की तारीख़ नियुक्त करने के लिए कुछ रस्में होती हैं। उमूमन उनको लोग "हाथ मिलाना" कहते हैं, क्यों कि इस रोज़ तरफ़ैन के बुज़ुर्ग एक जगह जमा होते हैं, बसा-औक़ात मौजूदा फ़ैशन के मुताबिक़ होटल में जमा होते हैं, दावत का इंतिज़ाम वहीं होता है जिसमें तमाम दोस्त-ओ-अहबाब मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम बुलाए जाते हैं। इस मौक़े पर लड़के का वली कुछ ज़रूरी ज़ेवरात जिनमें अँगूठी, कंगन और घड़ी शामिल होते हैं एक छोटी सी मगर निहायत ख़ूबसूरत डिबिया में रखकर अपने साथ लाता है, इस डिबिया के ऊपर और चारों किनारों पर सुनहरी फूल बने होते हैं और लड़की का वली भी अपने साथ एक छोटी सी शीशे की डिबिया लाता है जिसमें एक सुर्ख़ काग़ज़ के ऊपर उस लड़की का नाम सुनहरे हुरूफ़ से लिखा होता है, जो फ़ुलां इबन फ़ुलां के साथ रिश्ता क़ायम करने के लिए राज़ी है। ये रस्म उमूमन जुमा के रोज़ अदा की जाती है। लड़के का वली ज़ेवरात लड़की के वली के सपुर्द करता है और लड़की का वली वो ज़रीन

काग़ज़ जिस पर लड़की का नाम लिखा होता है सपुर्द कर देता है, इस के बाद फ़रीक़ैन के बुज़ुर्ग एक दूसरे से हाथ मिलाकर आदाब बजा लाते हैं, फिर दावत खाकर अपने अपने घर चले जाते हैं।

शादी की तैयारी हाथ मिलाने की रस्म के अदा होने के बाद तरफ़ैन शादी की तैयारी करते हैं, लड़के वाले लड़की वालों से लड़की का नाप मांगते हैं, ताकि वो मुनासिब लिबास तैयार करें, इस मौक़ा पर लड़की का ख़ानदान ये मुतालिबा करता है कि लिबास की वज़ा क़ता ऐसी होनी चाहीए, कपड़े का रंग ऐसा होना चाहीए, कपड़ों की तादाद इतनी होनी चाहीए। लिबास तैयार होने के बाद लड़की वालों के यहां पेश कर दिए जाते हैं और लड़की वाले लिबास मिलने के बाद रिश्तेदार औरतों को बुलाते हैं, कि लिबास को देखें कि मुनासिब है या नहीं, अगर वो कहती हैं कि मुनासिब है तो ठीक, वर्ना बदलवाने की कोशिश करते हैं

निकाह से पहले लड़के का घर ख़ूब सजाया जाता है, लड़की को अपने घर में लाने के लिए लड़का ख़ुद नहीं जाता बल्कि उस के रिश्तेदार जिनके साथ शानदार जुलूस होता है, लड़की के घर जाते हैं, ताकि लड़की को लाएं। निकाह उस वक़्त होता है जब लड़की, लड़के के घर आजाती है। जुलूस के साथ मुतअद्दिद सेडान कुर्सियाँ (जिनको मज़दूर कंधों पर उठा कर चलते हैं) होती हैं। ये देखने में संदूक़ की तरहा होती हैं, उन पर रोग़नी कपड़ा चढ़ा होता है, इन कुर्सियों में से बाज़ को द-ओ-आदमी, बाज़ को चार आदमी और बाज़ को आठ आदमी उठा कर चलते हैं। शादी के मौक़े पर उमूमन ऐसी तीन कुर्सियाँ

जुलूस के साथ लड़की के घर जाती हैं, उनमें दो कुर्सियाँ दो दो आदमियों के उठाने की होती हैं और एक कुर्सी चार आदमियों के उठाने की होती है। ये कुर्सी दुल्हन के लिए होती है और जो कुर्सियाँ दो दो आदमियों के उठाने की होती हैं उनमें से एक दुल्हन की ख़ादिमा के लिए होती है और एक दुल्हन के भाई या क़रीबी रिश्तेदार के लिए जो दुल्हन के साथ दूल्हा के घर आता है। इस जुलूस के साथ ढोल, बाजे, झंडियां भी होती हैं और बाज़ ऐसे बच्चे भी होते हैं जो रंगीन लिबास पहने हुए जुलूस के साथ ख़ुशी का नारा लगाते जाते हैं। जब ये जुलूस दुल्हन के घर पहुंचता है तो दुल्हन की मामाएं और ख़ादिमाएं दुल्हन की आराइश-ओ-ज़ेबाइश में मशग़ूल हो जाती हैं, उस के बाल सँवारती हैं, उस के चेहरे पर सफ़ैद ग़ाज़ा मिलती हैं, लिबास बदलवाती हैं और ज़ेवरात पहनाती हैं। जब इन सब कामों से फ़राग़त होती है तो दुल्हन की रस्मे "तक़दीस" अदा करने के लिए मौलवी-साहब को बुलाया जाता है बल्कि ये समझिए कि मौलवी-साहब पहले से मौजूद होते हैं। इस के बाद दुल्हन का क़ाफ़िला रवाना हो जाता है। दुल्हन के साथ एक सन रसीदा ख़ातून भी जाती है, ताकि दूल्हा के घर एक हफ़्ता या नौ-रोज़ तक उस की ख़िदमत करे, और दुल्हन का भाई भी होता है जैसा कि ऊपर बयान किया गया। जब दुल्हन का जुलूस दूल्हा के घर पहुंचता है तो दूल्हा के घर में से एक सन रसीदा ख़ातून निकलती है जिसके हाथ में पानी और तौलिया होता है, वो दुल्हन के पास जाकर उस की आँखें और हाथ साफ़ करती है, क्योंकि दुल्हन जब अपने माँ बाप से जुदा होती है तो ख़ूब रोती है, बाज़-औक़ात उस का रोना बिलकुल सच्चा होता है, लेकिन बाज़

वक़्त वो बनावटी और रस्मी तौर पर रोती है। दुल्हन आँख और हाथ साफ़ करने के बाद उस वक़्त तक अपनी डोली के अंदर बैठी रहती है जब तक कि निकाह पढ़ाने के लिए मौलवी-साहब न आजाऐं।

जब लो शियु (मौलवी-साहब) आकर कुर्सी पर बैठ जाते हैं तो दूल्हा को कमरे से बुलाया जाता है, इस के बाज़ुओं को दो आदमी सहारा देते हैं और वो झुका हुआ आहिस्ता-आहिस्ता महफ़िल-ए-उरूस में आता है। महफ़िल-ए-उरूस के सदर मुक़ाम पर एक मुरब्बा नुमा मेज़ होती है जिसके तीन तरफ़ दो दो कुर्सियाँ रखी होती हैं, लेकिन एक तरफ़ ख़ाली होती है। ये मेज़ उमूमन बड़े हाल के सदर मुक़ाम पर रखी जाती है और सामने की तरफ़ मौलवी-साहब कुर्सी पर तशरीफ़ फ़र्मा होते हैं, मेज़ के दोनों जानिब की कुर्सियों पर मुअज़्ज़िज़ मेहमान होते हैं। कुछ दूर हाल के दोनों पहलूओं की दीवारों के बराबर और बहुत सी कुर्सियाँ लगी होती हैं जो आम मेहमानों के लिए रखी जाती हैं, दूल्हा आकर मेज़ के इस तरफ़ मख़मल के फ़र्श पर दो ज़ानूँ बैठता है और दुल्हन दाएं तरफ़ की एक कुर्सी पर बैठती है जिसके पहलू में एक ख़ादिमा खड़ी होती है। उस वक़्त मुहल्ले के तमाम लोग उस हाल के दरवाज़ा के पास इस उम्मीद पर जमा होते हैं कि कुछ "शि-कु" मिल जायें। शि के मअनी ख़ुशी और कु के मअनी फल के हैं, शि-कु इन फलों को कहते हैं जो महफ़िल में ख़ास मौक़ों पर फेंके जाते हैं। मौलवी-साहब एक तरफ़ "अल-निकाहु मिन सुन्नती" का ख़ुतबा पढ़ते हैं और दूसरी तरफ़ उन फलों को जो ख़ूबसूरत कश्ती में मेज़ पर रखे होते हैं, हाथ में लेकर दूल्हा के सिर पर फेंका जाता है। जब वो फल ज़मीन पर गिरते हैं तो मजमा एक

दूसरे को ढकेलता हुआ, उनको उचकने की कोशिश करता है। ख़ुतबा निकाह के बाद दूल्हा को फ़ौरन वहां से हटना पड़ता है वर्ना मजमे का इस पर टूट पड़ने का अंदेशा होता है, क्यों की तमाम शि-कु उस के पास फ़र्श पड़ गिरे होते हैं। दूल्हा के उठते ही लोग फलों पर गिरते हैं, किसी को खजूर मिलती है किसी को बादाम, किसी को अखरोट और किसी को मिठाई। उस वक़्त अजीब मंज़र होता है, शि-कु छीनने में अगर किसी ने चोट भी खाई तब भी वो ख़ुश-नज़र आता है।

ख़ुतबे से पहले मौलवी-साहब दूल्हा से दरयाफ़त करते हैं कि महर कितना होगा, अगर दूल्हा का घर मामूली है तो दो डालर कहता है, अगर अच्छा घराना है तो पाँच या ज़्यादा से ज़्यादा दस डालर महर होता है। ख़ुतबा निकाह के बाद मुआहिदा-ए-निकाह बाक़ायदा तहरीर किया जाता है, कि फ़ुलां बिंत-ए-फ़ुलां का बतारीख़ फ़ुलां इबन फ़ुलां के साथ फ़ुलां फ़ुलां गवाहों के सामने इतने इतने महर पर निकाह किया जाता। इस के बाद मजमा मुंतशिर हो जाता है और दुल्हन को उस के कमरे में जो उस के लिए मख़सूस होता है उस की ख़ादिमा ले जाती है।

मग़रिब के बाद दुल्हन के कमरे से दुल्हन की मामा जो खुतब-ए-निकाह के बाद से अब तक उस के पास रही है हाल में बुलाई जाती है जहां दूल्हा की तरफ़ से दावत के खाने चुने गए होते हैं, इस मौक़े पर दूल्हा अपनी दुल्हन की ख़ादिमा को झुक कर एज़ाज़ी सलाम करता है इस रस्म के बाद दुल्हन की ख़ादिमा दूल्हा को दुल्हन के कमरे में ले जाती है और दुल्हन से उस की मुलाक़ात कराती है।

इस वक़्त दूल्हा को ये लाज़िम है कि वो दुल्हन के सर पर जो ताज या ज़ेवरात या इस किस्म की और चीज़ें हैं एक एक कर के उतार दे और उनको डिब्बे में निहायत एहतियात से रख दे, गहने रखने के बाद फिर अपनी टोपी से उस को ढाँके उस वक़्त दुल्हन की मामा वहां से हट कर दूल्हा और दुल्हन को तनहाई में छोड़ देती है।[658]

इस के नौवीं रोज़ दुल्हन के घर से कुछ मर्द उसे देखने आते हैं वो अपने साथ मुख़्तलिफ़ किस्म के तोहफ़े और उपहार लाते हैं इस रोज़ लड़के वालों को दावत का इंतिज़ाम करना पड़ता है, फिर नौ-रोज़ के बाद यानी शादी के अठारवें दिन मुराजअत होती है। मुराजअत से मतलब ये है कि दूल्हन दूल्हा के साथ अपने घर जाती है। रुख़स्त होते वक़्त वो अपनी ससुराल से इजाज़त माँगती है कि कितने रोज़ तक वो अपने घर रह सकेगी, बाज़ लोग निसफ़ माह की और बाज़ लोग एक हफ़्ता की इजाज़त और बाज़ लोग तीन दिन की इजाज़त देते हैं। ये तमाम रस्में अदा होने के बाद शादी मुकम्मल होती है।

दूल्हन जब गर्भवती होती है तो उस के वालदैन वक़तन फ़वक़तन हर किस्म की मिठाईयां, फल, मुक़व्वी ग़िज़ाएँ वग़ैरा उस के पास भेजते रहते हैं। पैदाइश के वक़्त उस की वालिदा और दाया नोमोलूद बच्चे का इस्तिक़बाल करती है अगर लड़का पैदा हुआ तो दाया बुलंद आवाज़ से मुबारकबाद कहती है, अगर लड़की पैदा हुई तो वो ख़ामोश रहती है। पैदाइश के तीसरे रोज़ दावत होती है जिसमें तमाम अइज़्ज़ा-ओ-अक़ारिब शरीक होते हैं, बच्चे और माँ के लिए तरह तरह के तोहफ़े लाते हैं इस रोज़ बच्चे के लिए दो नाम तजवीज़ किए जाते

हैं एक चीनी दूसरा अरबी। चूँकि वो मुल्क-ए-चीन में पैदा हुआ है इस लिए उस का अरबी नाम राइज नहीं हो सकता इस लिए चीनी नाम रखना ज़रूरी है अगर वो आइन्दा बड़ा शख़्स हुआ तो ये नाम मशहूर हो जाता है और अगर गुमनाम रहा तो भविष्य में गुम हो जाता है। अरबी नाम सिर्फ अपने ख़ानदान में महफ़ूज़ रहता है, बाहर के लोग इस से कम वाक़िफ़ होते हैं। अरबी नाम शादी के मौक़ा पर बहुत कारामद होता है, लड़की का अरबी नाम अगर लड़के वालों के हवाला न किया जाये तो शादी क़बूल नहीं हो सकती। लड़की का अरबी नाम लड़के वालों के हवाले हो जाना गोया शादी का पैग़ाम क़बूल करना है, बग़ैर उस के शादी की बातचीत आगे नहीं बढ़ाई जा सकती।

जनाज़ा

मरीज़ की हालत जब निहायत ख़राब और ईलाज से बिलकुल ना-उम्मीदी हो जाती है तो घर वाले लो शियु (मौलवी-साहब) को बुलाते हैं ताकि वो मरीज़ से तौबा करा सके। इस के लिए मौलवी-साहब बिस्तर-ए-मर्ग के क़रीब बैठ कर अस्तग़फिरुल्लाह का विर्द करते हैं। बाज़ लोग नज़ा की हालत में मरीज़ के पास सूरह यासीन तिलावत करते हैं या कलिमा तय्यिबा और कलिमा शहादत मरीज़ को याद दिलाते हैं। जब मरीज़ की जान निकल जाती है तो सब जमा हो कर उस के पास नोहा करते हैं इस से फ़ारिग़ हो कर “मय्यत नामा” (मौत की ख़बर देने वाला ख़त) तैयार करते हैं ये भी छाप दिया जाता है और कभी लिख कर तक़सीम किया जाता है। इस मौक़े पर जो ज़रूरी चीज़ है वो मातमी लिबास है। उसे सफ़ैद कपड़ों से तैयार किया जाता है। ये मय्यत के घर की तरफ़ से तैयार

करके तमाम जुलूस वालों में तक़सीम किया जाता है। चूँकि जनाज़े के जुलूस में तीन किस्म के मुख़्तलिफ़ लोग होते हैं इस लिए रिश्ते की क़ुरबत के लिहाज़ से मातमी लिबास भी तीन तरह के दिए जाते हैं। बहुत क़रीब के अज़ीज़ों को पूरा मातमी लिबास दिया जाता है जो सर से पांव तक तमाम जिस्म को ढाँप लेता है, उनसे दूर के रिश्तेदारों को निस्फ़ मातमी लिबास दिया जाता है जो दो-गज़ का कपड़ा होता है, और तीसरा आम लोगों को एक या दो फुट का रूमाल दिया जाता है जो सर में लपेट लिया जाता है। इस मातमी लिबास की तैयारी में मामूली से मामूली ख़ानदान चार चार-सौ रुपय तक ख़र्च कर देता है। अगर मय्यत का ख़ानदान ज़्यादा मालदार हो तो अपनी बिसात के मुताबिक़ ख़र्च करता है। मातमी लिबास के अलावा दावत का इंतिज़ाम भी करना होता है ये कभी कभी मुतवातिर दो रोज़ यानी चार वक़्त तक होती रहती है जिसमें हज़ारों रुपया ख़र्च किया जाता है।

दूर और क़रीब के रिश्तेदारों को जब मातमी लिबास के कपड़े मिल जाते हैं तो वो उनको अपने हाथ से सीते हैं और वक़्त मुक़र्ररा पर मय्यत के घर पहुंच जाते हैं। मर्द मर्दों के साथ रोते हैं, औरतें औरतों के साथ रोती हैं।

मय्यत सर्दी में उमूमन दो दो रोज़ और अगर कोई अमर माने हुआ तो तीन रोज़ तक घर में रखी रहती है लेकिन गर्मी में फ़ौरन दफ़न कर दी जाती है। नाश को दफ़न करने से पहले ग़ुसल देते वक़्त मौलवी-साहब सूरह ताहा पढ़ते हैं। एक तरफ़ में तो ग़ुसल दिया जाता है दूसरी तरफ़ कफ़न को ताबूत के संदूक़ में बिछा दिया जाता है और मौलवी साहिबान जो बुलाए गए हैं उस के गिर्द जमा होते

हैं और जलती हुई ख़ुशबूदार बत्तियों को एक दूसरे के हाथों में देते हैं, तीन बार घुमाते हैं और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं इस के बाद नाश कफ़न में मलफ़ूफ़ कर दी जाती है फिर जनाज़े की नमाज़ होती है। नमाज़ के बाद चार या आठ मज़दूरों के कंधों पर ताबूत उठाया जाता है इस के साथ जुलूस होता है रिश्तेदार ताबूत के आगे चलते हैं जो सफ़ैद मातमी लिबास में सर-ता-पा मलबूस होते हैं और सफ़ैद कपड़ों से घिरे हलक़ों में रहते हैं। जनाज़े के पीछे जुलूस वाले होते हैं और उनके पीछे औरतों की जमात होती है जो ज़ोर ज़ोर से नोहा करती हुई जनाज़े के साथ थोड़ी दूर तक जाती है और तीन सौ क़दम चलने के बाद रोक दी जाती हैं और वो सिसकियाँ भर्ती हुई अपने घर वापस होती हैं। मय्यत के दफ़न होने के बाद उस के लिए उस के वारिस कम से कम चालीस रोज़ तक हर-रोज़ अलस सुबह एक मौलवी-साहब के साथ क़ब्र पर जाते हैं और मय्यत के लिए हफ़्ता और चालीसवां मनाते हैं इन मौक़ों पर क़ुरान ख़्वानी होती है और दावत की जाती है। चालीस रोज़ के अंदर कम से कम पाँच दफ़ा और कभी सात दफ़ा हफ़्ता मनाते हैं। यानी बाज़ लोग तीन रोज़ के बाद और बाज़ लोग पाँच रोज़ के बाद मय्यत की याद के लिए एक मामूली महफ़िल आयोजित करते हैं, इस को भी हफ़्ता ही कहा जाता है। जब मय्यत का चालीसवां मनाया जाता है तो वो लोग जिनको मय्यत के जनाज़े के मौक़े पर मातमी लिबास मिला था सब इस में शरीक होते हैं और वो हसब-ए-मक़दूर घर वालों को हदिया पेश करते हैं। इस मौक़े पर अगरचे मय्यत वालों को सारे मेहमानों की दावत का इंतिज़ाम

करना पड़ता है लेकिन कोई नुकसान नहीं होता क्योंकि जो हदिये उनको मिले हैं सारे खर्च के लिए काफ़ी हो जाते हैं।[659]

चीन में मस्जिदों का इंतिज़ाम

यहां मस्जिद का इंतिज़ाम अहोंग (इमाम) और मुतवल्ली के हाथ में होता है। इमाम दो होते हैं, एक इमाम और दूसरा नायब। मुतवल्ली कभी एक आदमी होता है कभी अनेक। इमाम का काम ये है कि वो नमाज़ पढ़ाए, निकाह पढ़ाए, जनाज़े की नमाज़ पढ़ाए, क़ुरान ख़वानी करे, लोगों के लिए दुआ करे और लोगों के लिए तावीज़ लिखे। नायब इमाम, इमाम की ग़ैर मौजूदगी में उस का काम अंजाम देता है। और तीसरा शख़्स वो है जो अज़ान देता है और अगर कोई मुसलमान मुर्ग़ ज़बह कराने के लिए लाए तो उसे ज़बह कर देता है। चीनी ज़बान में मुतवल्ली को "शियान लू" कहते हैं, वो मसारिफ़ और ख़र्चे का इंतिज़ाम करता है।[660]

मस्जिदों में कतबे

चीन की हर मस्जिद में ज़रूर किसी न किसी किस्म के कतबे लगे होते हैं जिन पर तहरीरें कुंदा होती हैं। ये तहरीरें क़ुरान की आयतें, हदीस, अक़्वाल ज़र्रीं, बादशाहों के फ़रमान वग़ैरा कुछ भी हो सकते हैं। ये कतबे दो तरह के होते हैं। एक चौड़े जिनको पियान (Peyan) कहा जाता है और दूसरे लंबे जिनको लयान (Lyan) कहा जाता है। ये कतबे आम तौर पर पत्थर या सिमटें के होते हैं। चौड़े

तख़्ते इवान-ए-मस्जिद या दीवार के बीच में लगाए जाते हैं और लंबे तख़्ते खंभों पर या चौड़े कतबों के दोनों तरफ़ लगे होते हैं।[661]

चीन की एक मस्जिद में एक कतबा लगा हुआ है शायद ये सूबा शानडोंग Shandong Province के चिंगज़ू Qingzhou शहर की ज़ैन जियाओ मस्जिद Zhenjiao Mosque में है, हालांकि बदरुद्दीन चीनी ने इस शहर का नाम टसन चाओ लिखा है। इस कतबे पर जो तहरीर है वो मिंग सल्तनत के तीसरे राजा योंगले बादशाह का एक फ़रमान है एक मुस्लिम इमाम कमालुद्दीन के नाम, जिनको उसने मस्जिद का इमाम नियुक्त किया था। इसको बदरुद्दीन चीनी की किताब से हम यहां नक़ल कर रहे हैं "कहावत है कि जो मुख़लिस और नेक नियत होते हैं, वो अपने ख़ालिक़ को याद करते हैं, बुज़ुर्गों का सम्मान करते हैं, नेकी की तब्लीग़ करते हैं, आसमानी क़ानून की तालीम देते हैं और अवाम को हिदायत देते हैं, ताकि आसमान से बरकात नाज़िल हों और इनसान को आराम नसीब हो। हाँ सय्यिद कमालुद्दीन मुझे इलम है कि तुम्हारा दीन मुहम्मदी है, तुम्हारा दिल निहायत पाक और साफ़ है, तुम मुस्तक़िल मिज़ाज आदमी हो, तुम नेकी की तरफ़ लोगों को बुलाते हो और ख़ुदा की इबादत करते हो, तुम वफ़ादार और ईमानदार हो, तुम मेरी तारीफ़ व तहसीन के मुस्तहिक़ हो, तुम मेरे पसंदीदा हो। अब तुम इमामत पर नियुक्त किए जाते हो, ताकि लोगों को नेकी की दावत दो, तमाम अमीरों और अफ़सरों को हिदायत करो कि मेरी नाफ़रमानी न करें वरना सख़्त सज़ा पाएंगे। ये है मेरा फ़रमान। तारीख़ तीसरी, महीना तीसरा, साल युआन लू, मुताबिक़ अप्रैल 1406 CE)"।[662]

चीनी मुसलमानों की मज़हबी शिक्षा

Religious education of Chinese Muslims

शुरू में इस्लामी शिक्षा का कोई ख़ास निज़ाम नहीं था लेकिन बाद में कुछ उलमा ने एक तालीमी निज़ाम विकसित किया जिसको जिंगटांग जियाओयू Jingtang jiaoyu कहा गया जिसका मतलब होता है सहीफ़ा (शास्त्र) हाल की शिक्षा Scripture Hall education. इस का संस्थापक हू डेंगज़ू Hu Dengzhou (1522-1597 CE) को माना जाता है। हू डेंगज़ू ख़ुद एक आलिम थे जिन्होंने पहले मुक़ामी मदरसों में शिक्षा हासिल की लेकिन बाद में वो उच्च शिक्षा के लिए मक्का गए। और जब वो लौटे तो अपने साथ बहुत सी अरबी दर्सी किताबें (textbooks/ पाठ्यपुस्तकें) भी लाए जो पहले चीन में नहीं थीं। चुनांचे वहां नया तालीमी निज़ाम क़ायम किया गया जिसमें पूरे निसाब (पाठ्यक्रम/syllabus) के दौरान 14 किताबें पढ़ाई जाती हैं इस को शीसी बेनजिंग shisi benjing कहा जाता है जिसका मतलब होता है 14 सहीफ़े (शास्त्र)। इस निसाब को लाओ जियाओ (lao jiao) 劳教 कहा जाता है जिसका मतलब होता है रिवायती इस्लाम का पुराना निसाब। यह दस साल का कोर्स है जिसमें छात्र कई शिक्षकों से अलग अलग विषयों की किताबें पढ़ता है और विषयों में गहरी मालूमात हासिल करता है। निसाब पूरा होने पर एक जशन का आयोजन होता है जिसमें तालिब-इल्म को अहोंग (उस्ताद या इमाम) का एक ख़िरक़ा या कुरता भेंट किया जाता है। इस समारोह को चुआनयी chuanyi कहा

जाता है।[663] याद रहे अहोंग शायद अखुंद akhund की बिगड़ी हुई शक्ल है। इस समारोह में छात्र चुआनयी (लंबा हरा कुर्ता) पहनता है और उस के सफ़ैद अमामा (पगड़ी) बाँधा जाता है। इन किताबों में अरबी सर्फ़-ओ-नहव, अरबी भाषा, क़ुरान की तफ़सीर, हदीस और फ़ारसी भाषा, तसव्वुफ़ (सूफीवाद) की किताबें शामिल हैं। उनमें से कुछ यह हैं।

• नजमुद्दीन राज़ी (died 1256) की मिर्सादुल इबाद مرصاد العباد: من المبدأ إلى المعاد

• अबदुर्रहमान अलजामी (1414-1492 ई.) की अल-लवाएह الوائح Flashes of Light.

• तफ़सीर जलालेन (تفسير جلالين) ।

• अबदुल्लाह बिन उमर अलबेज़ावी की तफ़सीर अलकज़ी अलबेज़ावी। تفسير القاضى البيضاوى

• शेख़ सादी की गुलिस्तान और बोसतान।

चीनी उलमा की ख़ास बात यह भी है कि वो कन्फ्यूशियस मत और इस्लाम को समकक्ष (equivalent) साबित करने की कोशिश करते हैं और उनमें से बहुत से उलमा कन्फ्यूशियस अध्ययन के माहिर भी होते हैं। इस की वजह एक यह भी है कि बादशाही दौर में सिविल सर्विस इम्तहान पास करने के लिए कन्फ्यूशियस ज्ञान में माहिर होना ज़रूरी था।[664]

हान किताब

कहा जाता है कि जब कुछ चीनी उलमा (Huiru) अरब और दूसरे एशियाई देशों से उच्च शिक्षा हासिल कर के चीन लौटे तो उन्होंने इस्लामी उच्च शिक्षा की बहुत से किताबें चीनी ज़बान में तर्जुमा कीं और कुछ अपनी किताबें भी चीनी ज़बान में लिखीं उनमें से कुछ किताबें बहुत लोकप्रिय हुईं। बाद में कई उलमा की इन तहरीरों को एक जिल्द में शामिल कर के प्रकाशित कर दिया गया और उस का नाम "हान किताब" रखा गया। हान किताब ज़्यादातर मदरसों के पाठ्यक्रम में शामिल है। याद रहे 'हान' चीन को कहा जाता है और चीनी बहुसंख्यक तबक़े को भी। हान किताब के लेखकों में कई लोगों के नाम शामिल हैं जिनमें सबसे पहले वांग डाईयू Wang Daiyu (1590-1658) हैं और सबसे मशहूर लियू ज़ी Liu Zhi (1670-1724) हैं। हान किताब के बारे में यह भी मशहूर है कि इस में इस्लाम और कन्फ्यूशियस विचारधारा को समकक्ष (equivalent) साबित करने की कोशिश की गई है। उनकी लेखनों में मज़हबी सवालात, रीति रिवाज, क़ानून, आध्यात्मिक खोज metaphysical pursuits, क़ुरान-ओ-हदीस और अरबी और फ़ारसी लेखों texts के अनुवाद भी शामिल हैं। इस किताब में व्यापक रूप से कन्फ्यूशियस धार्मिक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। और कन्फ्यूशियस, बुद्ध मत और टाओ धार्मिक विचारधाराएँ जगह जगह पाई जाती हैं।[665]

वांग डाईयू Wang Daiyu

वांग डाईयू, हान किताब के पहले लेखक हैं। उन्होंने चीनी ज़बान का इस्तेमाल करते हुए इस्लाम के बारे में लिखा है। उन्होंने बताया कि उनके पूर्वज "अरब" (तियानफ़ांग/ Tianfang) से थे और 300 साल पहले चीन पहुंचे। वो एक धार्मिक मुसलमान घराने में पले बढ़े और सहीफ़ा हाल (jingtang jiaoyu) के छात्रों की पांचवीं पीढ़ी से थे। उन्होंने नानजिंग में अपने बहुत से साथियों की तरह परंपरागत कन्फ्यूशियस साहित्य की शिक्षा हासिल नहीं की लेकिन 20 साल की उम्र से तत्त्वमीमांसा metaphysics और इतिहास पर चीनी किताबें पढ़नी शुरू कीं। कन्फ्यूशियस मत और इस्लामी उलूम पर विशेषज्ञान ने उन्हें दोनों नज़रियात को समकक्ष साबित करने के क़ाबिल बना दिया। चुनांचे उन्होंने जो किताबें लिखीं उनका मक़सद सहीफ़ा हॉल के छात्रों के लिए के लिए एक धार्मिक सामग्री प्रदान करना था। हम इसे स्पष्ट रूप से उनके मुख़्तसर लेख "इस्लाम की महान शिक्षा" “Great Learning of Islam” (Qingzhen daxue) में देख सकते हैं, जो कन्फ्यूशियस मत की चार मशहूर किताबों और पाँच क्लासिकी किताबों में से एक सीशू वूजिंग (sishu wujing) की तर्ज़ पर है, जिसे "महान शिक्षा" (Daxue) कहा जाता है। जब कि असल "महान शिक्षा" नैतिक उपदेश (Moral teachings) और आत्म सुधार पर केंद्रित है। वांग डाईयू का लेख बुनियादी तौर पर तौहीद (एकेश्वरवाद) से मुताल्लिक़ है।

वांग डाईयू की सबसे मशहूर किताब "रूढ़िवादी शिक्षा की सच्ची व्याख्या" “True Explanation of the Orthodox Teaching” (ज़ेंगजियाओ ज़ैनचुआन/Zhengjiao zhenquan) है, जो 1642 में छपी, जो हान किताब का

सबसे प्राचीन लेख (Text) है। 40 40 अध्यायों में, वांग डाईयू ने ख़ानदानी ज़िंदगी, शादी, खाना, मौत और मौत के बाद की ज़िंदगी के मामलात के अलावा ख़ुदा, इनसानों और इस्लामी तत्वमीमांसा (Islamic metaphysics) की व्याख्या की है। वांग डाईयू ने चीनी इस्लामी किताबों के लिए एक मॉडल तैयार किया जो कई नसलों तक चलता रहा।

लियू ज़ी Liu Zhi

दूसरी सबसे मशहूर शख़्सियत हान किताब के लेखकों में लियू ज़ी Liu Zhi (1660– 1739) की है। यह चिंग हुकूमत के दौर के एक आलिम हैं। लियू ज़ी को बहुत से लोग इस किताब के लेखकों में सबसे शेष दर्जा देते हैं। उनके व्यापक लेखन और धर्म पर उनकी विशेषज्ञता के कारण और इस वजह से भी कि उन्होंने ही किताब का मंसूबा बनाया था और वांग डाईयू की किताब को अपनी किताब के साथ मिला कर इस की शुरूआत की थी। वांग डाईयू की तरह, वो भी एक धार्मिक मुस्लिम ख़ानदान से ताल्लुक़ रखते थे और पहले से ही सहीफ़ा हाल के निज़ाम में शामिल थे। शुरू में उन्होंने इस्लामी तालीम अपने वालिद लियू सांजी Liu Sanjie से हासिल की, 12 साल की उम्र में उन्होंने अरबी, फ़ारसी की दर्सी किताबें युआन रूचि Yuan Ruqi से नानजिंग की फ़ौजी तरबियत गाह की मस्जिद में पढ़ीं। इसी के साथ ही उन्होंने कन्फ्यूशियस मत, डाओ और बुध विचारधारा की किताबें भी पड़ीं। उनके मुताबिक़ कन्फ्यूशियस Confucius और मैनशियस Mencius पूरब के बुज़ुर्ग हैं और हज़रत मुहम्मद ﷺ पश्चिम के बुज़ुर्ग हैं। 30 साल की उम्र में उन्होंने नानजिंग में चिंगलियांगशान

Qingliangshan पहाड़ के पास रहना शुरू कर दिया और वहां 20 साल तक इस्लामी शिक्षा दी। वो कन्फ्यूशियस विचारधारा के तहत इस्लामी किताबों की व्याख्या किया करते थे। उनका मानना था कि कन्फ्यूशियस और मैनशियस के नज़रियात इस्लाम से मिलते-जुलते हैं । मैनशियस का नज़रिया 'आसमानी मर्ज़ी' Mandate of Heaven और 'बादशाह की वफ़ादारी करना' यह दोनों नज़रियात इस्लाम में भी पाए जाते हैं। उन्होंने अपनी किताबों को लेकर कई शहरों का दौरा किया जैसे जियांगसू, शानडोंग, हेबी, ही नान , अनहुइ , ज़ीजियांग, गुआगंडोंग वग़ैरा Jiangsu, Shandong, Hebei, Henan, Anhui, Zhejiang, Guangdong ताकि वहां के मुसलमान और ग़ैर मुस्लिमों से अपनी किताब के बारे में राय ले सकें। इस के अलावा उन्होंने और किताबें भी लिखीं। उनके इंतिक़ाल के बाद उनका मक़बरा एक आदरणीय स्थान बन गया जिसकी ज़ियारत को हज़ारों लोग आते हैं। लियू ज़ी के वालिद, लियू सांजी Liu Sanjie उनके उस्ताद और अपने तौर पर एक प्रसिद्ध आलिम और लेखक थे, जिन्हों ने "इस्लाम की व्याख्या" (चिंगज़ेन जियाओशू/ Qingzhen jiaoshuo) और "मुसलमानों का आरंभ" The Origins of Muslims लिखी थी। लियू ज़ी की किताबों में धर्मशास्त्र, सूफीवाद, कानूनी सिद्धांत, जीवनी और अरबी अक्षरों के अर्थ सहित कई विषय शामिल हैं। लियू ज़ी की तीन किताबें बहुत मशहूर हैं "इस्लाम का तत्वमीमांसा" (तियानफ़ांग शिंगली/ Tianfang Xingli) जो 1704 में मुकम्मल हुई। "इस्लाम के संस्कार" (Tianfang Dianli), 1710 में पूरी हुई; और 1724 में लिखी गई "इस्लाम के अंतिम पैगंबर का सच्चा रिकार्ड" The

Real Record of the Last Prophet of Islam (Tianfang Zhisheng Shilu). यह एक सीरत की किताब है जिसका 1921 में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी Royal Asiatic Society के सदस्य इसहाक मेसन Isaac Mason द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। इस अंग्रेजी अनुवाद का शीर्षक "द अरेबियन प्रोफेट: ए लाइफ ऑफ मुहम्मद फ्रॉम चाइनीज सोर्सेज" The Arabian Prophet: A Life of Mohammad from Chinese Sources है। इन तीनों जिल्दों में ईमान, अमल और अज़ीमतरीन इनसानी नमूने के तौर पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश किया गया है जो तालीम (जियाओ), रास्ता (डाओ) और कामिल शख़्सियत (शेंग) के उच्च स्तर की एक मिसाल थे। ताहम, दूसरे हान किताब लेखकों के विपरीत, लियू ज़ी अपने मुख़्तसर किताबचों की वजह से ज़्यादा मक़बूल हुए जो मुसलमानों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी से मुताल्लिक़ मवाद पेश करने के लिए मशहूर हैं। लियू ज़ी की नज़म "चांद के पाँच अदवार" (चंद्रमा के पांच चरण) (वूगेगंयू/ Wugengyue) सबसे ज़्यादा मक़बूल हुई और अब भी आम लोगों में इस का हवाला दिया जाता है। उन की सुप्रसिद्ध किताब, इस्लाम के तीन क़दीम किरदार "इस्लाम के तीन पुराने चरित्र" Three Character Classic of Islam (Tianfang sanzijing) का मक़सद इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं से परिचित कराना था। किताब का यह नाम उस वक़्त की मक़बूल चीनी विचारधारा की किताब "थ्री कैरेक्टर क्लासिक" (sanzijing) की तर्ज़ पर रखा गया था। इस बात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि हान किताब के लेखक कन्फ्यूशियस सोचा से कितना प्रभावित थे और चीनी फ़लसफ़े

(Chinese philosophy) की कितनी मिलावट हान किताब में है। इस के अलावा, शरह अल-लतायफ़ (T'ien-fang hsing-li) The Philosophy of Arabia : यह मा लियान युआन Ma Lianyuan की किताब का तर्जुमा है जिनका पूरा नाम मोहम्मद नूरुद्दीन बिन लुक़्मान अल-सीनी Muhammad Nur al-Haqq ibn Luqman as-Sini है। और एक है आसमानी हुरूफ़-ए-तहज्जी की तशरीह T'ien fang tse mu kieh i) (वर्णमाला की व्याख्या).

लियू ज़ी की किताब हयात-ए-मुहम्मदी में मा लिनयी (Ma Linyee) पूर्व वज़ीर-ए-मआरिफ़ पेकन की प्रस्तावना है, जिसमें उसने ये साबित करने की कोशिश की है कि हज़रत मुहम्मद ﷺ के ज़हूर का कन्फ्यूशियस Confucius को इलम था और वो हज़रत मुहम्मद ﷺ को दुनिया का पैग़ंबर तस्लीम करता था। इस दीबाचे की थोड़ी से इबारत यहां नक़्ल की जा रही है। "बादशाह शियागं (Shiang) के वज़ीर की कन्फ्यूशियस से मुलाक़ात हुई, उसने ये दरयाफ़्त किया, क्या आप पैग़ंबर हैं, कन्फ्यूशियस ने जवाब दिया, मैं पैग़ंबर कैसे हो सकता हूँ। मैं सिर्फ हकीम और आलिम हूँ। पूछा क्या सान वांग (San Wang) (शुरू के तीन बादशाह) पैग़ंबर थे? जवाब दिया, वो पैग़ंबर कैसे हो सकते हैं वह केवल बुद्धिजीवियों और शरीफ़ों में से थे। पूछा वू डी (Wu Di) पैग़ंबर थे? जवाब दिया, वो रहमदिल और ख़ुश-मिज़ाज थे, पैग़ंबर न थे। पूछा "आख़िर पैग़ंबर कौन है? जवाब दिया, पैगंबर पश्चिम में प्रकट होने वाले हैं, वह शासन करेंगे, लेकिन शक्ति से नहीं, वह शांति स्थापित करेंगे, लेकिन बल से नहीं, लोग उनके शब्दों पर विश्वास करेंगे और बिना देखे उन पर विश्वास करेंगे, दल के बाद दल उनके धर्म

में प्रवेश करेगा और लहर दर लहर लोग उनकी शिक्षाओं को स्वीकार करेंगे, ये पैगंबर हैं, लेकिन मैं उनका नाम नहीं जानता।[666]

मा ज़ू

नानजिंग के अलावा एक लेखक युन्नान सूबे Yunnan Province से भी हैं जो एक और इस्लामी केंद्र था। उन का नाम मा ज़ू (1640-1711) है जिनकी ज़ख़ीम किताब (मोटी पुस्तक) 'इस्लाम का कंपास' The Compass of Islam (Qingzhen zhinan) मशहूर है। मा ज़ू, चिंग दौर में युन्नान सूबे Yunnan Province के योंगचांग फ़ू Yongchang Fu में पैदा हुए। वो अपना नाता मशहूर मुस्लिम मंगोल जनरल सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उम्र (1211-1279) से बताते थे। उनका ताल्लुक़ हनफ़ी मातुरीदी विचारधारा से था। शुरू में उन्होंने क़दीम चीनी अदब Chinese literary classics की तालीम हासिल की इस के बाद उन्होंने बीजिंग में इस्लामी शिक्षा ली। उन्होंने सहीफ़ा हाल के निज़ाम से इस्लामी तालीम हासिल की इस दौरान उनका ताल्लुक़ हान किताब के कुछ लेखकों से हुआ जिन्हों ने उनकी किताब ‘इस्लाम का कंपास’ की बहुत तारीफ़ की। उनमें लियू सानजी Liu Sanjie भी शामिल थे। उन्होंने भी कन्फ्यूशियस और इस्लाम को हम-आहंग (समकक्ष) साबित करने की कोशिश की। मा ने अपने नज़रियात में चीनी रिवायती फ़लसफ़ा 'चार जोड़े वाली शक्तियों पर भी बहस की है, वह जोड़े हैं मिंग और शिंग Ming and Xing, यिन और यांग Yin

and yang. मा के मुताबिक़, मिंग उस चीज़ को कहते हैं जो अल्लाह की तरफ़ से पहले से तय है, जब कि शिंग उस चीज़ को कहते हैं जो इनसान समाजी हालात से हासिल करता है। इसी तरह यिन उस चीज़ को कहते हैं जो इनसान अपनी मेहनत से इस जीवन में हासिल करता है और यांग उस को कहते हैं जो ख़ुदा ने पैदा की है। दोनों चीज़ें इनसान की बनावट के लिए ज़रूरी हैं। मा का यह भी मानना था कि मुस्लिम औरतों को मशहूर धार्मिक मुस्लिम महिलाओं के नक़्श-ए-क़दम पर चलना चाहिए जैसे हज़रत मरयम Moleyan (Maryam), हज़रत ख़दीजा, हज़रत आयशा और हज़रत फ़ातिमा वग़ैरा। मा का यह भी कहना था कि मुसलमान मर्द और औरत दोनों को इस्लामी तालीम हासिल करनी चाहिए।

मा डेशिन Ma Dexin

अभी तक हान किताब के लेखकों में, वांग डाईयू, मा ज़ू और लियू ज़ी का ज़िक्र हुआ है, यह सब 17 वीं और 18 वीं सदी के थे लेकिन 19 वीं सदी में एक और लेखक इस जमात में शामिल हुए जिनका नाम है यूसुफ़ मा डेशिन Ma Dexin (1794-1874)। मा डेशिन भी अपना संबंध सय्यिद अजल शम्सुद्दीन के घराने से बताते थे। मा डेशिन की परवरिश युन्नान के डाली में हुई, बाद में वो इस्लामी शिक्षा हासिल करने के लिए उत्तर पश्चिमी चीन गए और कई उस्तादों से शिक्षा हासिल की जिनमें कई हू डेंगज़ू की औलाद में थे जिन्हों ने सहीफ़ा हाल निज़ाम (व्यवस्था) की स्थापना की थी। 1841 CE में मा डेशिन हज को गए और वहां उन्होंने 8 साल गुज़ारे, इस दौरान उन्होंने कई शहरों में मुख़्तलिफ़

उस्तादों से इस्लामी शिक्षा हासिल की और जब वो वापस हुए तो उनका शुमार बड़े आलिमों में होने लगा और वो दक्षिणी चीन के सबसे बड़े 'हुईलोंग मदरसे' के मुख्य शिक्षक हो गए।

मा डेशिन ने लिखने की नई शैली (नया तर्ज़ तहरीर) की शुरूआत की, कि वो बार बार अरबी भाषा का भी इस्तेमाल करते थे जब कि पहले लेखक सिर्फ चीनी ज़बान का इस्तेमाल करते थे। मा डेशिन पहले शिक्षक थे जिन्हों ने अरबी भाषा पढ़ने लिखने पर-ज़ोर दिया और कई अरबी किताबें चीनी ज़बान में लिखीं। वो अक्सर अपनी किताबों का तर्जुमा एक ज़बान से दूसरी ज़बान में करते थे जैसे अरबी का चीनी में और चीनी का अरबी में।

मा डेशिन की शहादत

मा डेशिन 1856 में होने वाली पंथे बग़ावत में भी शरीक हुए जो मुसलमानों की एक बग़ावत थी चिंग मान्चू हुकूमत के ख़िलाफ़। इस में मुसलमानों का नेतृत्व एक हान नया मुसलमान डू वैनशियू कर रहा था और उस के साथ मा रूलोंग और मा डेशिन भी थे। इस का मुफ़स्सिल ज़िक्र पंथे बग़ावत के विषय में किया जा चुका है। शुरू में मा डेशिन ने पूरे युन्नान के मुसलमानों को बग़ावत में हिस्सा लेने का हुक्म दिया। और मा डेशिन ने मा रूलोंग के नेतृत्व में डू वैनशियू की मदद के लिए फ़ौज भेजी। और एक ख़त में डू वैनशियू को लिखा कि "मैंने पहले ही खुफ़िया तौर पर अपने शागिर्द मेनशेंग mensheng (मा रूलोंग) को (तीन दिशाओं के ग्रांड कमांडर के तौर पर) हुक्म दिया है, कि वह मा रोंग Ma Rong (मा रूलोंग के बाद दूसरे नंबर के कमांडर) को हुक्म दे, कि वह यीमेन

Yimen में अपने अड्डे से चिंग फ़ौज के पिछले दस्ते (rear guard) पर हमला शुरू करे"।[667] मा डेशिन के पास एक टेलीस्कोप था जो उन्होंने अपने सफ़र के दौरान सिंगापुर से ख़रीदा था लेकिन वो इस को इस्तेमाल नहीं
कर पा रहे है थे। चुनांचे 1867 में एक फ्रैंच जोखिमी (adventurer) एम. गार्नियर M. Garnier ने मा के लिए उस दूरबीन के शीशे को सही adjust किया तो मा उस के बहुत आभारी हुए। चुनांचे फ्रैंच यात्री की बिनती पर मा डेशिन ने उस को अपना ख़त दिया जिसमें डू वैनशियू से सिफ़ारिश की गई थी कि वो एम. गार्नियर को अपने राज्य में दाख़िल होने की अनुमति दे दे और उस से अच्छा व्यवहार करे। चुनांचे इस सिफ़ारिश की वजह से डू वैनशियू के सिपाहियों ने उसे अपने इलाक़े में दाख़िल होने दिया और उस की बहुत मेहमाननवाज़ी की।

मा रूलोंग और डू वैनशियू की अलहदगी

शुरू में तो सब साथ थे लेकिन बाद में चिंग हुकूमत के दबाओ की वजह से 1862 में मा रूलोंग और मा डेशिन पाला बदल कर चिंग हुकूमत से जा मिले और डू वैनशियू बदस्तूर चिंग के ख़िलाफ़ लड़ता रहा और एक हुकूमत भी क़ायम कर ली थी जिसको डाली सल्तनत कहा जाता है। इस के बाद मा डेशिन चिंग और डाली सल्तनत के बीच बिचौलिये का काम करने लगे और दूसरे बहुत से मुसलमानों को चिंग के आगे हथियार डालने पर आमादा किया।[668] उनका कहना था कि इस्लाम और नव-कन्फ्यूशियनवाद Neo-Confucianism के बीच समानता है। इस लिए दोनों में समझौता किया जा सकता है। धार्मिक नेता होने की वजह से दोनों ही मा डेशिन की इज़्ज़त करते थे। मा रूलोंग भी

और डू वैनशियू भी। चुनांचे मा डेशिन, मा रूलोंग और उनके साथ हुई सेना ने 1862 में चिंग हुकूमत के आगे हथियार डाल दिए और चिंग फ़ौज में शामिल हो गए। लेकिन कहा जाता है कि ये लोग दिल से चिंग के साथ नहीं थे। इस लिए मा रूलोंग ने अपनी मुहर "तीन दिशाओं का सेनापति" (Commander of the Three Directions) का इस्तेमाल जारी रखा और इस के ज़रिये अपने फ़रमान भेजना जारी रखे हालाँकि ये मुहर जब की थी जब मा रूलोंग विद्रोहियों में शामिल थे और इसी ज़माने में उनको तीन तीन दिशाओं का सेनापति का लक़ब दिया गया था। मा डेशिन ने भी चिंग हुकूमत की तरफ़ से दिया गया सिवल टाइटल क़बूल करने से इनकार कर दिया क्यों कि वो दिल से चिंग हुकूमत के साथ नहीं थे। हुई विद्रोहियों ने उन हुई लोगों को ताना दिया जो बग़ावत में शामिल नहीं हुए, उनको जाली हुई (Jia Huizi) कहा गया। ताइवान के शोधकर्ता ली शूक्रोंग Li Shoukong का दावा है कि बहुत से हुई बाग़ियों ने बग़ावत के शुरुआती सालों में हथियार डालने का ड्रामा करने के ऐसे ही पैंतरे का इस्तेमाल किया था।[669]

मा रूलोंग की वफ़ादारी को जांचने के लिए चिंग हुकूमत ने उसे जुनूबी युन्नान में लिन'आन Lin'an के नाराज़ मजिस्ट्रेट को मनाने के लिए भेजा। मा रूलोंग के शहर छोड़ने के चंद हफ़्तों बाद; मा रोंग Ma Rong और मा लियानशेंग Ma Liansheng के नेतृत्व में बाग़ी सेना ने कुनमिंग पर धावा बोल कर उस पर क़बज़ा कर लिया। इस लिए मा रूलोंग को यक़ीन हो गया कि मुसलमानों को एक जुट करने में वह कामयाब नहीं हो सकते। 1863 में मा डेशिन Ma Dexin

ने ख़ुद को दक्षिण को फ़तह करने वला बादशाह King-Who-Pacifies-the South (Pingnan Wang)" का लक़ब दिया, उन्होंने सरकारी मुहरों का उपयोग छोड़ दिया और दस्तावेज़ात पर तारीख़ डालते वक़्त चिंग हुकूमत के कैलेंडर का इस्तेमाल भी बंद कर दिया। ये इस बात की अलामत थी कि वो चिंग हुकूमत के साथ नहीं हैं। मा डेशिन का मक़सद था कि वो बाग़ी सेना को अपने मातहत मुत्तहिद रखें जब तक कि वो डू वैनशियू को इस का कंट्रोल ना दे दें।[670] लेकिन कुछ दिन बाद मा रूलोंग, चिंग फ़ौज के साथ वापस कुनमिंग आया और कुनमिंग शहर पर हमला कर दिया। उसके पूर्व अनुयायियों ने उसे शहर की दीवारों से धिक्कारा और उससे कहा कि "यदि आप केवल एक चिंग अधिकारी बनने की लालसा रखते हैं और अपने साथी मुसलमानों के बारे में नहीं सोचते हैं, तो आपको गुआनयी Guanyi में अपने घर वापस लौट जाना चाहिए।"[671] चुनांचे उसने शहर पर हमला कर के मा डेशिन को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें अपने ओहदे की मोहरें वापस करने का हुक्म दिया और उन्हें उन्हीं के घर में नज़रबंद कर दिया।[672] एक फ़्रांसीसी मिशनरी के मुताबिक़, मा रूलोंग ने "लाओ बाबा (मा डेशिन) को गिरफ़्तार किया जिसका तर्ज़-ए-अमल, जैसा कि आप जानते हैं, हमेशा से बहुत संदिग्ध रहा है। इस बूढ़ी लोमड़ी को इस के महल में क़ैद कर दिया गया जिसमें उस [मा डेशिन] का ख़ानदान रहता है।[673] मा डेशिन ने मा रूलोंग को चिंग की इस पालिसी को क़बूल करने से भी रोका जिसके मुताबिक़ "हुई को दूसरे हुई के ख़िलाफ़ लड़ाने के लिए इस्तेमाल करो"।[674]

जब मा डेशिन, डू वैनशियू से आख़िरी बार मिलने गए तो उनको यह नसीहत की "सुबाई (चिंग) हुकूमत ने मशरिक़ी हुई रहनुमाओं को सरकारी ओहदे दिए हैं ताकि हुई आपस में लड़ें, ये [चिंग] की ग़लीज़ साज़िशों में सबसे ज़ालिमाना साज़िश है। इसलिए हमें इस मंसूबे को नाकाम बना देना चाहिए ना कि हम उनके जाल में फंसें?"। यानी मा डेशिन ये कहना चाह रहे थे कि अगर तुम हथियार नहीं डालोगे तो चिंग तुम्हारे ख़िलाफ़ हुई मुसलमानों को इस्तेमाल करेगी इस लिए तुमको हथियार डाल देने चाहिऐं ताकि चिंग की हुई को हुई के ख़िलाफ़ लड़ाने की साज़िश नाकाम हो जाए। और हथियार ना डालने की सूरत में गोया हम चिंग के जाल में फंस जाएंगे और हुई को हुई के ख़िलाफ़ लड़ाया जाएगा।[675] उन्होंने डू को ये भी नसीहत की कि चिंग को हुई के जाल में फँसना चाहिए ना कि हुई को चिंग के जाल में फँसना चाहिए।

चुनांचे बाद में मा डेशिन घर में नज़रबंद रहे यहां तक कि 1874 में चिंग अहलकार चेन यूयिंग Cen Yuying ने उनके ख़िलाफ़ तफ़तीश का हुक्म दिया जिसमें उन पर अशांति फैलाने का इल्ज़ाम लगाया गया और उनको सज़ा-ए-मौत दे दी गई। लेकिन चेन यूयिंग का कहना था कि मौत से पहले वो भूक हड़ताल पर बैठे हुए थे इस लिए बहुत कमज़ोर हो गए थे और मौत के दहाने पर थे इस लिए उन्हें "इख़तिसारी तौर पर" सज़ा-ए-मौत दे दी गई "summarily executed"। लेकिन बहुत कम हुई लोगों ने चेन की इस बात पर यक़ीन किया और उनका ख़्याल है कि मा को सही हालत में सज़ा-ए-मौत दी गई।

मा डेशिन की किताबें

यूसुफ़ मा डेशिन की विभिन्न इस्लामी विषयों पर 30 से अधिक पुस्तकें हैं जैसे क़ुरान की तफ़सीर, अरबी ग्रामर, फ़िक़्ह, फ़लसफ़ा, छात्रों के लिए दिशानिर्देश वग़ैरा।

• उन्होंने चीनी ज़बान में क़ुरान का पहला तर्जुमा लिखा जिसका शीर्षक था "बाओमिंग ज़ैनजिंग ज़ीजी" (Baoming Zhenjing Zhijie)। इस का तर्जुमा है 'सच्चे सहीफ़े के क़ीमती मैंडेट की बराह-ए-रास्त वज़ाहत'। हालाँकि वो उस की पहली 5 जिल्दें ही लिख पाए। इस में उनका नाम अबदुल-क़य्यूम रूहुद्दीन यूसुफ़ Abd al-Qayyum Ruh al-Din Yusuf है। उनको मौलाना अल्हाज यूसुफ़ रूहुद्दीन मा फ़ूजूह Mawlana al-Hajj Yusuf Ruh al-Din Ma Fujuh भी कहा जाता है। यूसुफ़ मा डेशिन भी इन उलमा में शुमार होते हैं जो इस्लाम और कन्फ्यूशियस मत को समानांतर बताने की कोशिश करते हैं। उनका ये कहना है कि "इस्लाम और कन्फ्यूशियस की शिक्षाएँ बुनियादी तौर पर एक हैं। इस लिए उन्होंने क़ुरान का तर्जुमा जब लिखा तो इस में बहुत सी इस्लामी शब्दावली की जगह पर कन्फ्यूशियस शब्दावली इस्तेमाल की। चुनांचे अल्लाह के लिए उन्होंने ज़ैनज़ू zhenzhu 眞主 का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जो बुध मज़हब में रब के लिए इस्तेमाल होता है और इस का मतलब है "सच्चा राजा" या "जायज़ राजा" है। हज़रत मुहम्मद ﷺ के लिए शेंगरैन Shengren का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है जो पहले कन्फ्यूशियस के लिए इस्तेमाल होता था। इस के अलावा

मुस्लिम उलमा ने ये नज़रिया भी दिया yi ru quan jing "कि इस्लामी किताबों की व्याख्या के लिए कन्फ्यूशियस शब्दावली इस्तेमाल की जाए"।

- उन्होंने इस्लामी फ़िक़्ह और फ़लसफ़ा पर किताबें लिखीं।
- इस्लामी कैलेंडर और इतिहास पर काम किया।
- उन्होंने इस्लामी उलमा मा ज़ू Ma Zhu और लियू ज़ू Liu Zhu की किताबों का भी जायज़ा लिया।
- उनकी अरबी ग्रामर की नहव की किताबों का नाम मुत्तसिक़ Muttasiq और क़ाफ़िया Kafiya हैं।
- इस के अलावा मा डेशिन की मशहूर किताबें हैं 'इस्लाम के कंपास की शरह' The Commentary on the Compass of Islam" (Qingzhen Zhinan Yaoyan).
- "सच्ची व्याख्या का आवश्यक अभिलेख" "The Essential Record of The True Explanation" (Zhenchuan Yaolu) वग़ैरा।
- मा अनली और मा डेशिन ने 1866 में क़सीदा बुरदा का तर्जुमा चीनी ज़बान में किया जो बहुत लोकप्रिय हुआ। इस का शीर्षक है 'तियान फ़ांग शिजिंग' Islamic Book of Odes' (Tianfang shijing) 'ये 1890 में छपा। याद रहे क़सीदा बुरदा शेख़ सईद अलबुसीरी Said al-Busiri का विश्व प्रसिद्ध क़सीदा है जो उन्होंने ﷺ की शान में फ़ारसी में कहा था। मा अनली का ये तर्जुमा काव्यात्मक (poetic) है और इस में चीनी मुहावरों और शायरी का बेहद

ख़ूबसूरत इस्तेमाल किया गया है जिससे ये एक प्यारी कविता बन गई है। ये कविता दर असल चीन की प्राचीन कविता शिजिंग Book of Odes" (Shijing) की तर्ज़ पर है जो कन्फ्यूशियस फ़लसफ़े की मशहूर किताब 'चार किताबें और पाँच क़दीम उलूम' Four Books and Five Classics (sishu wujing) में भी शामिल है

• उन्होंने अपना हज का सफरनामा लिखा जिस का शीर्षक है चाओजिन टूजी Chaojin Tuji)। इस का तर्जुमा 'हज के सफ़र की आत्मकथा' किया जा सकता है। जिसका उनके शागिर्द मा अनली Ma Anli ने चीनी ज़बान में तर्जुमा किया। मा डेशिन का असर उनके बाद के उलमा पर भी बहुत है, जैसे मा लियानयुआन Ma Lianyuan (1841-1903) और मा अनली Ma Anli (died 1899) पर। मा लियानयुआन ने हान किताब की लिखाई के नीचे उस का अरबी तर्जुमा भी लिखा ताकि विदेशी लोगों तक भी हान किताब पहुंच सके।

चीन में इस्लामी संस्कृति (culture) के केंद्र

Centres of Islamic culture in China

शिंजियांग Xinijiang

शिंजियांग सबसे ज़्यादा मुस्लिम आबादी वाला सूबा है, यह चीन की पश्चिमी सीमा का आख़िरी सूबा है जिसकी सरहदें रूस और मध्यपूर्व से मिलती हैं इस लिए यहां पर ज़्यादातर लोग मध्यपूर्व middle east से आकर आबाद हुए और वही संस्कृति (culture) यहां पाई जाती है। चुनांचे 1953 में जो जनगणना हुई थी उसके हिसाब से शिंजियांग में 6 प्रतिशत हान थे और 75 प्रतिशत उइग़ूर थे लेकिन 2000 में हुई जनगणना के मुताबिक़ 40.57 प्रतिशत हान हैं और 45.21 प्रतिशत उइग़ूर। इस के अलावा यहां उज़्बेक, कज़ाख़, सालार और ताजिक मुसलमान भी आबाद हैं। शिंजियांग के बड़े शहर हैं काशग़र, खोतान, अक्सू, किज़िलसू वगैरा (Kashghar, Khotan, Aksu, Kizilsu). Urumchi उरुमची यहां की राजधानी है। एक अंदाज़े के मुताबिक़ 1950 CE में यहां 29,000 मस्जिदें, 54,000 इमाम थे लेकिन 1966 CE तक 14,000 मस्जिदें और 29,000 इमाम बचे थे। और सक़ाफ़्ती इन्क़लाब Cultural revolution (सांस्कृतिक क्रांति) के बाद मस्जिदों की तादाद सिर्फ 1400 रह गई थी ताहम बाद में 1980 CE तक फिर से 1950 CE वाली तादाद हो गई। ज़्यादातर उइग़ूर मुसलमान सुन्नी हैं, और हनफ़ी मसलक के पैरोकार हैं। इस के अलावा कुछ कम तादाद में निज़ारी इस्माईली शिया ताजिक भी हैं जो ज़्यादातर पामीर Pamir और

तियानशान Tian Shan पहाड़ों पर आबाद हैं। तियानशान के उत्तर में सुन्नी किर्गीज़ और कज़ाख़ लोग आबाद हैं। काशग़र में आफ़ाक़ ख़ोजा Afaq Khoja का मज़ार और ईद-गाह की मस्जिद लोगों को पवित्र स्थान हैं। तुरफ़ान में अमीन मीनार Emin Minaret भी आलमी शौहरत रखती है।

गान्सू Gansu

गान्सू को चीन में इस्लाम का जन्म-स्थान माना जाता है। यहीं से पूरे चीन में इस्लाम फैला। यहां पर इस्लामी इतिहास तक़रीबन 1300 साल पुराना है। गान्सू की राजधानी लांज़ू Lanzhou है। यहां पर कई मुस्लिम नसली गिरोह आबाद हैं जैसे हुई, डोंगशियांग, बाओआन, सालार, कज़ाख़ और उइग़ूर। इन सब की तादाद कुल मिलाकर 16 लाख 80 हज़ार (1.68 million) है। यहां पर मुस्लिम आबादी तकरीबन 86 शहरों में फैली हुई है। यहां पर ज़्यादातर मुस्लिम आबादी लिनशिया हुई ऑटोनोमस प्रीफ़ेक्चर Linxia Hui Autonomous Prefecture, तियानशुई शहर, पिंगलियांग शहर और लांज़ू में रहती है। Linxia Hui Autonomous Prefecture (more than 101,800 people), Tianshui city (more than 228,000 people), Pingliang city (152,000 people) and Lanzhou city (more than 97,000 people). लिनशिया Linxia को पहले हीज़ू Hezhou कहा जाता था जिसको छोटा मक्का भी कहा जाता है। कहा जाता है कि चिंग हुकूमत के ज़माने में इस्लामी केंद्र चांगान से हीज़ू मुंतक़िल किया गया। आज लिनशिया में तक़रीबन 2500 मस्जिदें हैं। यहां की इस्लामी संस्कृति (culture) काफ़ी निराली है। पूरे गान्सू में तक़रीबन 4606 मस्जिदें हैं। यहां की बड़ी मस्जिदें हैं लांज़ू की शिगुआन मस्जिद,

तियानशुई की हूजी मस्जिद, लिंटान की दक्षिणी मस्जिद और लिनशिया की नांगुआन मस्जिद। लांज़ू की शिगुआन बड़ी मस्जिद यहां की इस्लामी संस्कृति (culture) का केंद्र है।[676]

There are 4606 mosques in Gansu province, mainly including Lanzhou Xiguan Mosque, Tianshui Houjie mosque, Lintan South mosque and Linxia Nanguan mosque.
Lanzhou Xiguan Grand Mosque is the center of the Muslim religious activities in Lanzhou City. Lanzhou Qiaomenjie Mosque, located in Qiaomen Lane in the Huis region in the south of the Zhongshan Bridge, can hold one thousand people's worship at the same time.[677]

निंगशिया Ningxia

निंगशिया को निंगशिया हुई ऑटोनोमस इलाक़ा Ningxia Hui Autonomous Region भी कहा जाता है क्यों कि यह हुई मुसलमानों के लिए आरक्षित है। यह इलाक़ा चीन के उत्तर पश्चिम में स्थित है। इस की राजधानी यिनचुआन Yinchuan है। 2010 CE के एक आंकड़े के मुताबिक़, यहां पर मुसलमानों की कुल आबादी 36% है जो शिंजियांग के बाद सबसे ज़्यादा आबादी है।[678] यहां पर कई मुस्लिम नसली गिरोह रहते हैं जैसे हुई, डोंगशियांग, बाओआन, सालार, कज़ाख़ और उइग़ूर। 1914 CE में निंगशिया को गान्सू में शामिल कर दिया गया लेकिन 1928 CE में उसे फिर से अलग कर दिया। 1914-1928 CE तक मा क्लीक़ की हुकूमत रही गान्सू Gansu, निंगशिया Ningxia और चिंगहाई Qinghai के सूबों में। मुस्लिम जनरल मा होंगकुई General Ma Hongkui एक

वक़्त में इन तीनों रियासतों के शासक थे। यहां पर गान्सू में 1927-1930 CE तक लड़ाई चली जो बाद में निंगशिया तक पहुंच गई। 1934 CE में क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज के जनरल सुन डियानयिंग Sun Dianying ने मा क्लीक़ को लड़ाई के ज़रिये फ़तह करने की कोशिश की। 1949 CE में जब चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत आई तो मा क्लीक़ के बरतरफ़ हुए लीडरों ने कम्युनिस्ट हुकूमत के ख़िलाफ़ मुज़ाहमत (विरोध) जारी रखी क्यों कि यह मुसलमान कम्युनिस्ट मुख़ालिफ़ जमहूरियत पसंद पार्टी क्योमिनटांग की तरफ़ थे और इसी की हिमायत में बतौर क्योमिनटांग पार्टी कार्यकर्ता मुज़ाहमत करते रहे। इसी लिए उसे इस्लामी मज़ाहमतत (प्रतिरोध) Kuomintang Islamic Insurgency कहा जाता है। यह मुज़ाहमत 1950-1958 CE तक चली, बिल-आख़िर 1958 CE में कम्युनिस्ट हुकूमत का निंगशिया पर पूरा क़ब्ज़ा हो गया और उस को निंगशिया ऑटोनोमस बना दिया।

युन्नान Yunnan

युन्नान एक सूबा है चीन के दक्षिण पश्चिम में, इस की राजधानी कुनमिंग Kunming है। कहा जाता है कि युन्नान ही वो इलाक़ा है जहां टांग हुकूमत के ज़माने में, हुई लोग सबसे पहले आबाद हुए थे। इस वक़्त यहां पर मुसलमानों की कुल आबादी 1.4 % है। 2010 CE आंकड़े के मुताबिक़ यहां पर मुसलमानों की आबादी तक़रीबन 700,000 है। यहां पर 867, मस्जिदें हैं।

बीजिंग Beijing

बीजिंग चीन की राजधानी है। इस शहर में भी इस्लामी तारीख़ बहुत पुरानी है। बीजिंग के इन इलाक़ों में मुसलमान आबाद हैं जैसे, न्यूजी, जियाओज़ी अली, फूलों की मार्केट, चांगयिंग, मदियन, यूजियावू, डाशिंग, चांगपिंग, शुनयी, मीयुन वग़ैरह।

(Niujie, Jjiaozi Alley, Flower Market, Changying, Madian, Yujiawu, Daxing, Changping, Shunyi, Miyun).

यहां मुसलमानों के दो इलाक़े आरक्षित हैं जिनको टाउनशिप कहा जाता है, एक यूजियावू हुई टाउनशिप Yujiawu Hui Township जो टोंगज़ू डिस्ट्रिक्ट Tongzhou District में है और दूसरी चांगयिंग हुई टाउनशिप Changying Hui Township जो चाओयांग डिस्ट्रिक्ट Chaoyang District में है। यहां सबसे पुराना मुस्लिम इलाक़ा न्यूजी Niujie है जो शुआनवू डिस्ट्रिक्ट Xuanwu district में है, यह हज़ार साल पुरानी आबादी मानी जाती है। यहां पर 120,000 मुसलमान आबाद हैं जो इस शहर की मुस्लिम आबादी का 23% है। यहां पर हलाल गोश्त की मार्केट, मुसलमानों के अस्पताल और स्कूल हैं। हुकूमत की तरफ़ से भी, यहां के लिए मख़सूस क़वानीन हैं जैसे यहां होटलों में ग़ैर हलाल गोश्त पर प्रतिबंध है, जैसे ख़िंज़ीर का गोश्त, यहां तक कि जो ग़ैर मुस्लिम यहां पर काम करते हैं उनको भी यहां ग़ैर हलाल गोश्त खाना वर्जित है न कोई यहां लंच में ला सकता है।

नानजिंग Nanjing

ज्यांग्सू सूबे Jiangsu province में टांग और सोंग हुकूमतों के ज़माने से मुसलमान आबाद हैं। यहां पर सबसे पहले मुसलमान यांगज़ू Yangzhou शहर में आबाद हुए जो सिल्क रोड पर स्थित था। ज्यांग्सू Jiangsu सूबे की राजधानी नानजिंग है। नानजिंग में भी मुसलमानों की बड़ी आबादी है। युआन हुकूमत के ज़माने में यहां मुसलमानों की आबादी 100,000 तक पहुंच गई थी। दूसरी चीन-ओ-जापान जंग के दौरान जब जापानी फ़ौज ने बीजिंग पर क़ब्ज़ा कर लिया तो चीनी हुकूमत ने नानजिंग को राजधानी बना लिया। बाद में जब जापान ने नानजिंग पर भी क़ब्ज़ा कर लिया तो यहां पर दूसरे लोगों के साथ मुसलमानों का भी नरसंहार हुआ और मस्जिदें मुसलमानों की लाशों से पट गईं। 2010 CE की जनगणना के मुताबिक़ यहां इस वक़्त मुसलमानों की आबादी 130,757 है। यहां पर सैकड़ों मस्जिदें हैं जिनमें से कुछ के नाम हैं नानजिंग जिंगजू मस्जिद Nanjing Jingjue Mosque, यांगज़ू शियानही मस्जिद Yangzhou Xianhe Mosque. नानजिंग में कन्फ्यूशियस का मज़ार Nanjing Confucius Temple भी है और उस के आसपास का इलाक़ा सबसे बड़ा मुस्लिम बाज़ार है जहां हलाल गोश्त की दुकानें और मुस्लिम होटल कसरत से मौजूद हैं।

चीन में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था

चीन में धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था उमूमन इस्लाम देशों की शिक्षा की व्यवस्था जैसी है। जो इलाक़े अपनी धार्मिक शिक्षा के लिए मशहूर हैं वो हैं सूबा युन्नान (Yunnan) और गान्सू। गान्सू के होचो (Hochow) या हीज़ू (Hezhou) में दीनी तालीम का मर्कज़ (केन्द्र) है, यहां पर बहुत से दीनी मदारिस, उलमा और छात्र हैं। अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में युन्नान की राजधानी धार्मिक शिक्षा का केन्द्र थी लेकिन पंथे बग़ावत के बाद जब वहां तबाही हुई तो केन्द्र हीज़ू में मुंतक़िल हो गया जो 1928 CE तक धार्मिक शिक्षा का केन्द्र रहा लेकिन जब ईसाई जनरल फ़ंग यूशियांग ने हीज़ू पर हमला कर के वहां मुसलमानों को पामाल किया तो दीनी तालीम का केन्द्र बीजिंग क़रार पाया ताहम हीज़ू दुबारा से फला फूला।[679] आज जिस तरह जामिया अल-अज़हर (मिस्र) में तमाम दुनिया के मुस्लिम छात्र मौजूद हैं, इसी तरह हीज़ू में तमाम चीन के मुस्लिम छात्र पाए जाते हैं। दीनी तालीम हासिल करने छात्र दूर दूर से यहां आते हैं और फ़ारिग़ हो कर अपने वतन वापस जाकर दीनी ख़िदमात अंजाम देते हैं।[680]

चीन में आम तौर से धार्मिक शिक्षा के दो स्तर होते हैं एक तो मकतब की तालीम जो बहुत बुनियादी किस्म की होती है और दूसरी बड़े मदरसों की तालीम जहां लोग आलिम बनते हैं। मकतबों के निसाब (पाठ्यक्रम) में उमूमन कुछ सूरतें, नमाज़ के अरकान-ओ-अहकाम, नवाक़िज़-ए-वुज़ू वग़ैरा के मसाइल होते हैं और जिन मदारिस में आलिमियत की तालीम होती है इस में मुल्ला जामी, मुख़्तसर अल-मानी, अवामिल, मिसबाह और मिराह अल-

अर्वाह वग़ैरा पढ़ाते हैं, फ़िक़्ह में उम्दत अल-रिआया, दुर अल-मुख़्तार, हदीस की तालीम कम ही है अलबत्ता इलमुल-कलाम वल अक़ाइद का ज़ोर काफ़ी है, तफ़सीर में जलालेन, बैज़ावी बड़े मदरसों में पढ़ाई जाती हैं, फ़ारसी ज़बान में मुहिम्मात और फ़ौज़ुल नजाह पढ़ाई जाती हैं। अरबी अदब बहुत कम पढ़ाया जाता है, यही वजह है कि बाज़ चीनी उलमा बाज़ फ़िक़्ही मसाइल में तो बहुत माहिर हैं लेकिन एक लफ़्ज़ अरबी नहीं बोल सकते।[681]

चीनी इस्लामी साहित्य

हान किताब

हान किताब का तफ़सीली ज़िक्र ऊपर दिया जा चुका है। ये दर असल कई उलमा की इस्लामी तहरीरों का एक मजमूआ है जो ज़्यादा-तर दीनी हलक़ों में मक़बूल है और मदारिस के निसाब में शामिल है। हान का मतलब होता है चीन इस तरह हान किताब का मतलब हो चीन की किताब। इस के लेखकों में हैं वांग डाईयू Wang Daiyu , लियू ज़ी Liu Zhi , वू ज़ुंची Wu Zunqie , ज़ांग ज़ोंग Zhang Zhong , मा डेशिन Ma Dexin वग़ैरा। कहा जाता है कि इस किताब में कन्फ्यूशियस और इस्लामी नज़रियात को हम-आहंग दिखाने की कोशिश की गई है।

यूसुफ़ मा डेशिन की किताबें

यूसुफ़ मा डेशिन की 30 से ज़्यादा किताबें हैं जिन में से कुछ का जिक्र ऊपर "मा डेशिन की किताबें" के विषय में किया जा चुका है।

दूसरे लोगों की किताबें

बदरुद्दीन चीनी लिखता है, चीन में सबसे पहला क़ुरान का तर्जुमा एक ग़ैर मुस्लिम ने किया जिसका नाम था ली टाए शिन (Lee tae shin)। उसने 1927 CE में जापानी ज़बान से चीनी ज़बान में मुकम्मल क़ुरान शरीफ़ का तर्जुमा किया, और तियानजिन के चाइना प्रैस (China Press) से छपवाकर प्रकाशित किया, जब ली टाए शिन का तर्जुमा छपा तो मुसलमानों ने शोर मचाया कि एक ग़ैर मुस्लिम ने क़ुरान शरीफ़ का तर्जुमा क्यों किया? वो शोर मचाना जानते हैं मगर उनको ये शर्म नहीं आती कि ख़ुद तो कुछ काम कर न सके। उनको शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि एक ग़ैर मुस्लिम ने इस्लाम की ख़िदमत की है, क्यों कि इस से पहले चीन के तक़रीबन सारे मुसलमान कुरान-ए-पाक के मतलब से ना वाक़िफ़ थे, ये तर्जुमा हो जाने से कम अज़ कम कुफ़्फ़ार-ए-चीन के कानों में कुरान-ए-पाक का पैग़ाम तो पहुंचा, और शिक्षित वर्ग की तवज्जा इस्लाम की तरफ़ हुई, और अब वो इस्लाम से दिलचस्पी लेने लगे। इस से पहले कुफ़्फ़ार-ए-चीन, इस्लाम और मुसलमानों को अच्छा नहीं समझते थे और बराबर उनको बुरा कहते थे, मगर अब अगर वो क़सदन इस्लाम के ख़िलाफ़ कुछ लिखना भी चाहें, तो उनको निहायत गहराई से क़ुरान शरीफ़ और दीगर मज़हबी किताबों

का मुताला करना पड़ेगा, इस का नतीजा ये होगा कि क़ुरान शरीफ़ पर जितना ग़ौर किया जाएगा, उतनी ही हक़ीक़त और सच्चाई नज़र आएगी, मेरा अनुमान है कि भविष्य में चीन में ऐसी एक मज़हबी जमात पैदा होगी जो कन्फ्यूशियस की तालीम और इस्लाम की क़ाइल होगी। एक दूसरे ग़ैर मुस्लिम ने जिसका नाम जीज़ूमी (Jeezumi) था उसने 1931 CE में एक मुकम्मल तर्जुमा शंगहाई से छपवाया। इस के तर्जुमे और प्रकाशन के लिए एक यहूदी ने जिसको अंग्रेज़ी नागरिकता हासिल थी माली इमदाद ख़ूब पहुंचाई, उस का नाम हारून (Haroon) था जो अगस्त 1931 CE में इंतिक़ाल कर गया। ये शंगहाई का सबसे बड़ा साहूकार था।

किसी मुसलमान के ज़रिये पहला तर्जुमा जो किया गया वो यूसुफ़ मा डेशिन का है, इस का तफ़सीली ज़िक्र यूसुफ़ माडेशिन की तसानीफ़ में कर दिया गया है

वांग जियांगज़ई Wang Jingzhai (1879-1949) ने 1927 and 1932 CE के दरम्यान क़ुरान का तर्जुमा किया ये दूसरा तर्जुमा माना जाता है यूसुफ़ मा डेशिन के तर्जुमे के बाद। कहा जाता है कि उन्होंने इस तर्जुमे की शुरूआत एक आलिमा (Female Islamic Scholar) डिंग युनहुई Ding Yunhui के बेटे के अनुरोध पर की थी।[682] डिंग युनहुई ने पहले एक क़ुरान का ना-मुकम्मल तर्जुमा किया था जिस का शीर्षक था ओमुदाई Omudai. ये तर्जुमा इस लिए ना-मुकम्मल रह गया क्यों कि वो इस्लामी यौन मसाइल Islamic sexual jurisprudence को लिखने से कतरा रही थीं।

• मुहम्मद मा जियान ने 1987 CE में क़ुरान का एक और तर्जुमा क्या, ये सबसे लोकप्रिय तर्जुमा माना जाता है। इस को प्रमाण की हैसियत हासिल है और विश्व प्रसिद्ध है यहां तक कि मदीना की किंग फ़हद होली प्रिंटिंग प्रैस Medina-based King Fahd Holy Qur'an Printing Press से जो चीनी तर्जुमे के साथ क़ुरान छपता है उस में चीनी तर्जुमा के तौर पर उसी को छापा जाता है।

• अंग्रेज़ी में भी कुछ किताबें लिखी गईं हैं जैसे यूसुफ़ लियो बाओजुन ने A Glance at Chinese Muslims" जिसका तर्जुमा 'चीनी मुसलमानों पर एक नज़र' किया जा सकता है, इस के अलावा मन्दारिन में "To Know Islam" लिखी, दूसरी किताब मन्दारिन में "Understanding Confucianism in Islamic perspective" "इस्लामी परिप्रेक्ष्य में कन्फ्यूशीवाद को समझना लिखी"। अंग्रेज़ी में Great Chinese Envoy Cheng Ho (Zheng He)" "महान चीनी दूत चेंग हो लिखी" जो 2004 CE में छपी।

• कुछ ग़ैर मुस्लिमों ने भी अरबी या इस्लामी लिटरेचर चीनी ज़बान में तर्जुमा किया जैसे शी रो Xi Ruo ने अल्फ़ लयलह व-लयलह Alf Laylah wa-Laylah का 1930 में तर्जुमा किया बाद में ना शुन Na Xun ने 1957 में एक और तर्जुमा किया और बिंग शिन Bing Xin ने ख़लील जिब्रान की किताब दा प्रॉफिट The Prophet का तर्जुमा किया। लिन शिंगहुआ Lin Xinghua ने कलीला व दिमना Kalila wa Dimna का 1959 CE में चीनी ज़बान में तर्जुमा किया।[683]

चीनी इस्लामी फ़न तामीर (वास्तुकला)

Chinese Islamic Architecture

चीनी इस्लामी वास्तुकला दूसरे इस्लामी देशों से अलग है क्यों कि यहां इस्लामी और चीनी वास्तुकला को मिला दिया गया है। चीन का ख़ास अंदाज़ पगोडा होता है यह ख़ास शक्ल की छत होती है जो नुकीली शक्ल की ढलान वाली होती है। इसी तर्ज़ पर ज़्यादातर मस्जिदें भी तामीर की जाती है सिवाए शिंजियांग के कि वहां मध्य पूर्वी तर्ज़ तामीर को बाक़ी रखा गया है।

चीन की पहली मस्जिद

चीन में सबसे पहली इस्लामी तामीर हुआईशेंग मस्जिद Huaisheng mosque को माना जा सकता है जो चीन की सबसे प्राचीन मस्जिद मानी जाती है। यह गुआंगज़ू में स्थित है जिसके बारे में कहा जाता है कि टांग राजा गाओज़ोंग ने इस्लामी प्रतिनिधिमंडल के सम्मान में यह तामीर कराई थी, उस को "गुआंगज़ू मस्जिद" भी कहा जाता है। यह मस्जिद 7 वीं सदी ईसवी में तामीर की गई। हुआई शेंग मस्जिद की पुरानी और नई तसवीरें।

चीनी इस्लामी सुलेख

Chinese Islamic calligraphy

चीन में एक ख़ास किस्म की अरबी ख़त्ताती (सुलेख) प्रवान चढ़ी जिसको "चीनी ख़त" या "अल-ख़त अलसीनी" कहा जाता है। इसी ख़त में यहां

मस्जिदों मक़बरों पर क़ुरानी आयात, हदीसें और दूसरा मज़हबी अदब (literature) लिखा जाता है। इस के विश्व प्रसिद्ध ख़त्तात हाजी नूरदीन मी गुआंगजियांग Hajji Noor Deen Mi Guangjiang हैं, जो 1964 CE में पैदा हुए और अभी हयात हैं। हाजी नूरदीन शानडोंग Shandong सूबे में पैदा हुए, और वो हेनान के ज़ैनगज़ू Zhengzhou के इस्लामिक कॉलेज में लेक्चरर हैं और "हेनान एकेडमी ऑफ साइंसेज" Henan Academy of Sciences में एक शोधकर्ता के तौर पर काम करते हैं। 1997 CE में हाजी नूरदीन को "अरबी सुलेख का मिस्री प्रमाणपत्र" Egyptian Certificate of Arabic Calligraphy दिया गया और वो मिस्री सुलेख की एसोसिएशन Association of Egyptian Calligraphy के मेंबर भी हैं।[684]

शियाओ अरजिंग Xiao'erjing

चीनी मुसलमान चीनी ज़बान को अरबी लिपि में लिखने की कोशिश करते हैं। इस लिपि को शियाओ-अरजिंग Xiao'erjing 小儿经 कहा जाता है। इस का मतलब होता है बच्चों की लिखाई या छोटी लिखाई। चीनी ज़बान के अलावा मुसलमान इस लिपि में कुछ क्षेत्रीय और क़बाइली ज़बानें भी लिखते हैं, जैसे डुंगन ज़बान, डोंगशियांग और सालार ज़बानें। कहा जाता है कि इस की शुरूआत मदारिस से हुई जब चीनी छात्र मन्दारिन ज़बान को अरबी लिपि में लिखते थे ताकि पढ़ने और याद करने में अलसानी हो, बाद में दूसरे मक़ासिद में भी इस को इस्तेमाल किया जाने लगा।

इस में ऊपर वाली लाइन में मन्दारिन, बीच वाली में अरबी और नीचे वाली में शियाओ अर्जिंग है।

जिंगटांग जियाओयू (लिपि)

Jingtang jiaoyu (script)

चीन में सुन्नी हनफ़ी गदीमू Hanafi Sunni Gedimu लोग अपने मदारिस में अरबी या फ़ारसी ज़बान को चीनी लिपि में लिखते हैं इस को जिंगटांग जियाओयू लिपि कहा जाता है जैसे सलाम को 赛俩目 जिसका उच्चारण है Sai lia mu यह शियाओ अर्जिंग का उल्टा है, शियाओ अर्जिंग में चीनी ज़बान को अरबी लिपि में लिखा जाता है।[685] जबकि जो दूसरे रूढ़िवादी लोग जैसे यहवानी लोग इस पर एतराज़ करते हैं कि इस से अरबी के अलफ़ाज़ का उच्चारण बिगड़ जाता है। यहवानी लोग सही अरबी बोलने पर गर्व करते हैं जबकि सुन्नी हनफ़ी गदीमू चीनी रस्म-ओ-रिवाज और Jingtang jiaoyu शिक्षा से सख़्ती से चिमटे हुए हैं। वो असली अरबी उच्चारण जानते हुए भी अपने परंपरागत उच्चारण का इस्तेमाल करते हैं। एक सुन्नी इमाम ने कहा कि गदीमू अपने पूर्वजों की परंपराओं की अंधी पैरवी करते और हान और बुद्ध मत के रस्म-ओ-रिवाज से प्रभावित हैं।[686] नीचे दी गई टेबल से उसे अच्छी तरह समझा जा सकता है।

Arabic	Arabic romanization	Jingtang jiaoyu	Pinyin	Xiao'erjing	English meaning
क़ुबूल	qabul	蓋布勒	gaibulei	قَيْ بُ لوِ	acceptance
नफ़ी व इसबात	nafy wa-’ithbat	乃非 - 伊司巴提	naifei yisibati	نَيْ فوِ ءِ سِ بَ تِ	denial and confirmation
सलाम	salam	赛俩目	sailiangmu	سَيْ لِيَا مُ	peace, salutation, concord

अध्याय 21
प्रसिद्ध चीनी मुस्लिम हस्तियाँ

第二十一章
中国著名穆斯林名人

Chapter Twenty One
Chinese Muslim Celebrities

उलमा Muslim Scholars

चीन में 1300 साला इस्लामी तारीख़ में बेशुमार मुस्लिम उलमा गुज़रे हैं लेकिन यहां कुछ मशहूर उलमा का ज़िक्र किया जा रहा है। याद रहे कुछ उलमा का पहले हान किताब के विषय में भी ज़िक्र किया जा चुका है जैसे वांग डाईयू, लियू ज़ी, मा ज़ू, मा डेशिन वग़ैरा।

हू डेंगज़ू Hu Dengzhou 1522-1597

हू डेंगज़ू एक और आलिम थे जिन्हों ने नानजिंग में पहला मदरसा शुरू किया, जिसमें क़ुरान, हदीस और इस्लामी फ़िक़्ह की शिक्षा दी जाती थी, उस को जिंगटांग जियाओयू Jingtang Jiaoyu का नाम दिया गया, जिसका मतलब होता है सहीफ़ा हाल की शिक्षा। यह निसाब एक 13 किताबों के कोर्स की शक्ल में प्रवान चढ़ा जिनको १३ प्राचीन किताबें Thirteen classics कहा जाता है। इस के ज़रिये अरबी और फ़ारसी की शिक्षा दी जाती है, यही पुराना मदरसे का निज़ाम है जिसके ज़रिये ज़्यादातर छात्र इस्लामी शिक्षा हासिल करके इमाम बनते हैं या दूसरे मज़हबी ओहदों पर नियुक्त होते हैं।

मुहम्मद मा जियान Muhammad Ma Jian

मुहम्मद मा जियान, चीनी ज़बान में सबसे मक़बूल तर्जुमा क़ुरान के लेखक हैं। वो 6 June 1906 CE में युन्नान के Gejiu गीजियू के शादियान इलाक़े में पैदा हुए और 12 अगस्त 1978 CE में बीजिंग में इंतिक़ाल हुआ। वो इस्लाम और मार्क्सवाद को हम-आहंग बताने वालों में गिने जाते थे।[687] मा जब 6 साल के

थे तो उनको शिक्षा के लिए सूबे की राजधानी कुनमिंग Kunming भेज दिया गया जहां उन्होंने 19 साल की उम्र में माध्यमिक स्तर की शिक्षा मुकम्मल की। ग्रेजुएशन की शिक्षा मुकम्मल करने के बाद वो शादियान वापस चले गए और एक चीनी-अरबी प्राइमरी स्कूल में उस्ताद नियुक्त हो गए जहां उन्होंने 2 साल पढ़ाया लेकिन उनका दिल नहीं लगा। इस के बाद वो निंगशिया चले गए जहां उन्होंने गूयुआन Guyuan में हू सोंगशान Hu Songshan के मातहत उच्च शिक्षा हासिल की। इस के बाद वो शंघाई चले गए जहां उन्होंने 2 साल तक शंघाई इस्लामिक नॉर्मल स्कूल में शिक्षा हासिल की।[688]

क़ाहिरा में शिक्षा

जब 1937 में दूसरी चीन-ओ-जापान जंग हुई तो मा को चीनी हुकूमत ने मिस्र के क़ाहिरा में अल-अज़हर विश्वविद्यालय भेज दिया ताकि वो चीन और मिस्र के बीच बेहतर संबंध बनवा सकें। वो उन छात्रों की पहली पीढ़ी में शामिल थे जिसको चीनी हुकूमत ने मिस्र में शिक्षा हासिल करने भेजा था, इस ग्रुप में ना ज़ोंग Na Zhong भी शामिल थे जो बाद में चीन में मशहूर इस्लामी और अरबी आलिम (विद्वान) के तौर पर मशहूर हुए।[689] मिस्र में उनका संबंध इख्वानुल मुस्लिमीन के एक प्रकाशक "सलफ़ी पब्लिशिंग हाउस" से हो गया जिसने 1934 में मुहम्मद माजियान की एक अरबी किताब छापी जिसका विषय था चीन में इस्लाम Islam in China.[690] एक साल बाद उन्होंने कन्फ्यूशियस की किताब "साहित्य का संग्रह" Analects का अरबी में तर्जुमा प्रकाशित किया। क़ाहिरा में रहने के दौरान उन्होंने मुहम्मद रशीद रज़ा की मदद से मुहम्मद अबदुह की

कई किताबों का चीनी में तर्जुमा किया। चीनी हुकूमत ने अपने मुफ़ादात के हुसूल के लिए 27 छात्रों को 1939 CE में हज पर भेजा जिनमें मुहम्मद माजियान भी शामिल थे। वहां पर इब्न सऊद से उन्होंने विनती की कि वो जापानी हुकूमत के ख़िलाफ़ चीनी हुकूमत का साथ दें।[691]

चीन वापसी

1939 CE में माजियान चीन वापस आ गए और उन्होंने एक अरबी-चीनी डिक्शनरी लिखी इस के अलावा उन्होंने क़ुरान का और अन्य धार्मिक किताबों का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया। 1946 CE में वो पीकिंग यूनिवर्सिटी में अरबी और इस्लामियात के प्रोसेसर नियुक्त हो गए और चीनी आला तालीमी इदारों में इस्लामी अध्ययन (Islamic studies) के सुपरवाइज़र supervisor नियुक्त हुए।[692] पीकिंग यूनिवर्सिटी में उन्होंने कई होनहार छात्रों को शिक्षा दी जैसे ज़ू वैली Zhu Weilie 1948 CE में उनका क़ुरान का तर्जुमा 8 जिल्दों में मुकम्मल हुआ और 1948 CE में पीकिंग यूनिवर्सिटी प्रेस से छपा। 1949 में कम्युनिस्ट हुकूमत क़ायम होने के बाद वो "पीपुल्स पॉलिटिकल कंसल्टेटिव कॉन्फ्रेंस" People's Political Consultative Conference के मेंबर नियुक्त हुए। 1952 CE में उनके तर्जुमा क़ुरान का दूसरा एडिशन शंघाई की कमर्शियल प्रेस Shanghai's Commercial Press से प्रकाशित हुआ। मा जियान इस्लामिक एसोसिएशन ऑफ चाइना Islamic Association of China के संस्थापकों में से थे।[693] उस के अलावा उन्होंने बहुत से मज़ामीन, इस्लाम के बारे में चीनी अख़बारात में प्रकाशित किए जैसे पीपुल्स डेली People's Daily और गुआंगमिंग डेली

Guangming Daily में। उन्होंने 1958 में त्जित्ज़े डे बोअर Tjitze de Boer की किताब इस्लामी फ़लसफ़े की तारीख़ History of Philosophy in Islam का चीनी तर्जुमा प्रकाशित किया। वो आला चीनी ओहदेदारों के मुतर्जिम भी रहे जैसे ज़ू एनलाई Zhou Enlai जब बांडुंग कॉन्फ्रेंस Bandung Conference में मिस्र के जमाल अबदुल नासिर से मिले तो माजियान ने मुतर्जिम (translator) का काम अंजाम दिया। इसी वजह से माजियान, सक़ाफ़्ती इन्क़लाब में चीनी हुकूमत में आला ओहदों पर नियुक्त रहे हालाँकि इस दौरान बड़े पैमाने पर मुसलमानों पर मज़ालिम (अत्याचार) हुए। उन्होंने पी के हिट्टी की किताब "अरबों का इतिहास" Philip K. Hitti's History of the Arabs का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया जो उनके इंतिक़ाल के बाद 1979 में कमर्शियल प्रैस से प्रकाशित हुआ।

सूफ़ी Sufis

आफ़ाक़ ख़ोजा Afaq Khoja

आफ़ाक़ ख़ोजा (1626-1694 AD) चीन के सब से पहले मशहूर सूफ़ी माने जाते हैं। उनका मक़बरा शिंजियांग के अयज़ीरेत Ayziret में है। आफ़ाक़ ख़ोजा नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले में के मशहूर सूफ़ी अहमद कासानी के पड़-पोते थे। उन के पिता का नाम यूसुफ़ ख़ोजा और माँ का नाम ज़ुलेखा बेगम Zuleiha Begum था। वो कुमूल Kumul में पैदा हुए और 12 साल की उम्र में अपने बाप के साथ काशग़र Kashgar आ गए। यरकंत ख़ानियत Yarkant Khanate के

शासक अबदुल्लाह ख़ान Abdullah Khan (1638–1669) ने उनको बशकरिम Bashkerim नाम का गांव दे दिया। बहुत जल्द इस गांव के लोग यूसुफ़ ख़ोजा के पैरोकार बन गए और इशक़िया सूफ़ी सिलसिले Ishkiyya Sufi order से जुड़ गए जिसकी बुनियाद ख़ोजा आफ़ाक़ के दादा ख़ोजा कलां Khoja Kalan ने डाली थी और यह नक्शबंदी सिलसिले की एक शाख़ा थी। ख़ोजा आफ़ाक़ की कई लड़ाइयां भी हुई आसपास के हाकिमों से जैसे यरकंत ख़ानियत के इस्माईल ख़ान Ismail Khan से और इसहाकी ख़ोजा Ishaki Khojas और मुहम्मद अमीन से। मुहम्मद अमीन ख़ान Muhammad Imin Khan को शिकस्त देने और क़त्ल करने के बाद आफ़ाक़ ख़ोजा ने अपने बेटे यहया ख़ोजा Yahiya Khoja को तरीम इलाक़े Tarim Basin का ख़ान बना दिया और कई शहरों पर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली जैसे यरकंत, कोरला, कूचा, अक्सू और काशग़र Yarkand, Korla, Kucha and Aksu and Kashgar आफ़ाक़ ख़ोजा का 1694 CE में इंतिक़ाल हो गया, उनके बेटे यहया ख़ोजा को आफ़ाक़ ख़ोजा की दूसरी बीवी ख़ानम पादशाह Khanam Padshah ने क़त्ल करवा दिया जो तुरपान Turpan और चालिश Chalish के सुलतान साद बाबा की बेटी थी। 1713 में ज़ुंगर के ख़ान Dzungar Khan त्सेवांग रबटन Tsewang Rabtan (यह मुसलमान नहीं थे) ने इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया।

ची जिंगयी Qi Jingyi

ची जिंगयी (1656–1719) एक मशहूर सूफ़ी हैं जिन्हों ने चीन में क़ादरिया सूफ़ी सिलसिले की बुनियाद डाली।[694] कहा जाता है कि वो 16 साल की उम्र में 1672 CE में आफ़ाक़ ख़ोजा से शिनिगं Xining में मिले और उनसे विनती की कि वो उनको अपने मुरीदों में शामिल कर लें जिस पर ख़ोजा आफ़ाक़ ने जवाब दिया कि में आपका उस्ताद नहीं हूँ। मेरी पुरानी शिक्षा आप तक न पहुंचाई जाए। आपके उस्ताद पहले ही पूर्वी समुद्र पार कर के पूर्वी सरज़मीन पर पहुंच चुके हैं। इसलिए आपको जल्दी घर लौटना चाहिए, और आप अपने देश में एक मशहूर उस्ताद बन जाएंगे'।[695] उस के बाद वो ख़्वाजा सय्यिद अबदुल्लाह के मुरीद हो गए जो 1764 CE में चीन में दाख़िल हुए थे, कहा जाता है कि वो हज़रत मुहम्मद ﷺ की 29 वीं पीढ़ी से थे।[696]

मा लाईची Ma Laichi

मा लाईची (1681–1766 CE) भी एक मशहूर चीनी सूफ़ी हैं जो चीन में ख़ुफ़िय्या सूफ़ी सिलसिले के संस्थापक माने जाते हैं। ख़ुफ़िय्या सिलसिला, नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले की एक शाख़ा है।

शुरू में मा लाईची ने जिस सूफ़ी सिलसिले की बुनियाद रखी थी उस को ख़ुवासी Huasi कहा जाता था ये दरअसल मा लाईची का लक़ब था जिसको लोगों ने सूफ़ी सिलसिले का नाम बना दिया, लेकिन बाद में ये सिलसिला

ख़ुफ़िया के नाम से मशहूर हुआ। ये सिलसिला बादशाह चियानलौंग के ज़माने में वजूद में आया।[697] मा लाईची के बाद उनका बेटा मा गोबाओ Ma Guobao उनका जांनशीन बना और इसके बाद मा वूयी Ma Wuyi.[698]

कहा जाता है कि मा लाईची के पिता मा जियाजुन Ma Jiajun चिंग दौर में एक सरकारी फ़ौजी अफ़सर थे जिन्हों ने शाही इम्तिहान imperial examinations पास कर के नौकरी हासिल की थी। वो 40 साल की उम्र तक बेऔलाद थे लेकिन एक बेटे के ख्वाहिश मंद थे। इसी दौरान काशग़र के मशहूर नक्शबंदी सूफ़ी आफ़ाक़ ख़ोजा, शिनिगं के दौरे पर आए तो मा जियाजुन उनसे बेटे की दुआ कराने गए तो आफ़ाक़ ख़ोजा ने उनको कुछ वज़ीफ़े बताए और उनको मशवरा दिया कि हीज़ू Hezhou वापस जाकर फ़ुलां ग़ैर मुस्लिम ख़ातून से शादी करें। इस ख़ातून के पहले कई दफ़ा रिश्ते लग चुके थे लेकिन हर बार उस के मंगेतर का इंतिक़ाल हो जाता था। चुनांचे मा जियाजुन ने उस 26 साला ख़ातून से शादी कर ली जिससे उनके एक बेटा पैदा हुआ। इसी दौरान मा जियाजुन के घर में आग लग गई जिससे उनका सारा माल-ओ-अस्बाब जल गया। इस लिए उन्होंने बच्चे का नाम लाईची Laichi रखा जिसका मतलब होता है "देर से आने वाला"। मा लाईची ने आफ़ाक़ ख़ोजा के शागिर्द मा ताई बाबा Ma Tai Baba के मदरसे में पढ़ा जो मिलागू Milagou के इलाक़े में स्थित था। 18 साल की उम्र तक मा लाईची ने उस मदरसे में पढ़ाया जाने वाला कोर्स पूरा कर लिया। इस लिए उनको अहोंग (इमाम) का दर्जा मिल गया और मा टाई बाबा ने उनको बरकह barakah (आशीर्वाद) (एक ख़ास किस्म की नवाज़िश होती है जो पीर

अपने मुरीद को देता है और उसे पाने के बाद मुरीद भी उसी सिलसिले का पीर बन जाता है जिसको भारत में ख़िलाफ़त कहा जाता है) दिया जो उन्होंने आफ़ाक़ ख़ोजा से पाया था।

1728 CE में वो हज को गए और 1728-1733 CE तक वहां रह कर मक्का और यमन के कई अरब के सूफ़ियों के मातहत रुहानी शिक्षा हासिल की कुछ इतिहासकारों ने क़ाहिरा और दमिशक़ जाना भी लिखा है। हज में जाने से पहले उन्होंने गुआंगज़ू Guangzhou के एक मशहूर अहोंग आलिम से 3 महीने शिक्षा हासिल की इस के बाद वो वहीं से समुद्र के रास्ते हज के सफ़र पर रवाना हुए लेकिन वापसी में वो ज़मीन के रास्ते आए और बुख़ारा में कुछ दिन शिक्षा हासिल की। मक्का में उन्होंने ख़ुफ़िय्या ज़ाविए Khafiya zawiya में मुहम्मद जिबूनी अहमद अजिलाई Muhammad Jibuni Ahmad Agelai से शिक्षा ली। उनके अलावा जिस उस्ताद ने उन्हें सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वो थे मौलाना मख़दूम Mawlana Makhdum जिन्हों ने मा लाईची को अबुल-फ़ुतूह Abu 'l-Futuh का लक़ब दिया। जोसफ फ़्लेचर Joseph Fletcher का ख़्याल है कि मौलाना मख़दूम एक हिन्दुस्तानी थे।[699] लेकिन अपनी वापसी पर वह ज़मीन के रास्ते आये और कुछ दिनों तक बुखारा में अध्ययन किया।

हज से वापसी पर

हज से वापसी पर मा लाईची ने एक मस्जिद तामीर की जिस का नाम खुआसी या हुआसी Hua Si रखा जिसका मतलब होता है रंग-बिरंगी मस्जिद और इस मस्जिद में उन्होंने अपना सूफ़ी सिलसिला क़ायम किया जिसको मेनूहान

Menuhan कहा जाता है। यह सूफ़ी सिलसिला बाद में ख़ुफ़िय्या Khufiyya सिलसिला कहलाया जिसका मतलब होता है 'ख़ामोशी' क्यों कि यह लोग ख़ामोशी से ज़िक्र करने की तलक़ीन करते थे, इस के मद्द-ए-मुक़ाबिल (प्रतिद्वंद्वी/rival) जहरिय्या सिलसिला था जिसके संस्थापक मा मिंगशिन थे जिनका ज़िक्र नीचे आर हा है। ख़ुफ़िय्या सिलसिला ख़िदमत-ए-ख़लक़ पर ज़ोर देता है और बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और उनके मक़बरों की जियारत (दर्शन) करने पर आस्था रखता है।[700] मा लाईची ने 30 साल तक लोगों को तसव्वुफ़ की शिक्षा दी ख़ासकर गान्सू और चिंगहाई के सालार मुसलमान उनके ज़्यादा मोतक़िद थे। इस के अलावा हज़ारों की तादाद में तिब्बती Tibetan, मंगोल Mongol और मंगोर Monguor भाषा बोलने वाले उनकी कोशिशों से मुसलमान हुए। ख़ासकर जब मा लाईची मुक़ामी ज़िंदा बुद्ध local "Living Buddha" से मुनाज़रे (debate) में जीत जाते तो बहुत लोग इस्लाम क़बूल करते। याद रहे बुद्ध मज़हब के मौजूदा अध्यक्ष को ज़िंदा बुद्ध कहा जाता है। आज भी बहुत से लोग मा लाईची को इस लिए मानते हैं क्यों कि उनके पूर्वज मा लाईची के हाथ पर मुसलमान हुए थे।[701]

मा लाईची के इंतिक़ाल के बाद उनके बेटे मा गोबाओ Ma Guobao सिलसिले के प्रमुख बने जिसकी जहरिय्या सिलसिले के संस्थापक मा मिंगशिन ने ज़बरदस्त आलोचना की। मा गोबाओ के बाद मा वूयी Ma Wuyi उनके ख़लीफ़ा बने। मा लाईची का मक़बरा गान्सू के लिनशिया शहर Linxia City में है। उनके मक़बरे को खुआसी गोंगबी Hua Si Gongbei कहा जाता है जो अब

भी ख़ुफ़िय्या सिलसिले का केंद्र है। याद रहे चीन में मक़बरे के साथ जो इमारत होती है जिसमें मज़हबी कामों को अंजाम दिया जाता है या किसी सूफ़ी सिलसिले की ख़ानक़ाह या मज़ार होता है उसे गोंगबी कहा जाता है।

मा मिंगशिन Ma Mingxin

मा मिंगशिन (1719–1781) चीन में जहरिय्या सूफ़ी सिलसिले के संस्थापक माने जाते हैं जो नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले की एक शाख़ा है। उन्होंने 16 साल मक्का और यमन में इस्लामी शिक्षा हासिल की। वो मक्का के नक्शबंदी सूफ़ी शेख़ अबदुल-ख़ालिक़ के शागिर्द थे। अबदुल-ख़ालिक़ शागिर्द थे ज़ैद बिन मुहम्मद Zayn b. Muhammad के जिनको अबदुलबाकी अल-मिज़जाजी Abd al-Baqi al-Mizjaji (1643/44-1725) भी कहा जाता है जो यमन के ज़ाबिद Zabid के क़रीब मिज़जाजा Mizjaja के इलाक़े के रहने वाले थे। मा मिंगशिन के तफ़सीली हालात ऊपर "मा मिंगशिन" के उनवान में दिए जा चुके हैं।

मा वानफ़ू Ma Wanfu

मा वानफ़ू (1849–1934) हीज़ू के गो यान गांव के एक इमाम थे जिनका संबंध डोंगशियांग नसली गिरोह (जाति) से था। उन्होंने मक्का में शिक्षा हासिल की थी और आकर 1888 CE में एक तहरीक की बुनियाद डाली जिसको को इख़वान Ikhwan या यहवानी Yihewani कहा जाता है। उनकी तहरीक असल में सूफ़ी सिलसिलों के ख़िलाफ़ एक जद्द-ओ-जहद थी। जब डुंगन विद्रोह हुआ तो मा वानफ़ू ने पहले डुंगन का साथ दिया जिनमें दूसरे नेता थे जैसे मा डाहान

और मा योंगलिन, लेकिन चिंग हुकूमत ने दूसरे मुसलमानों की मदद से इस विद्रोह को कुचल दिया। यह लोग थे मा फ़ूशियांग, मा अनलियांग, डोंग फ़ूशियांग, मा फ़ूलू और मा गोलियांग। लेकिन बाद में मा वानफ़ू ने चिंग हुकूमत की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और दूसरे डोंगशियांग लीडर मा डाहान का साथ छोड़ दिया।[702] 1915 CE में मा अनलियांग और यांग ज़ेंगशिन Yang Zengxin ने मा वानफ़ू को गिरफ़्तार कर लिया और क़त्ल के लिए रवाना कर दिया लेकिन मा ची Ma Qi ने दख़ल देकर के उन्हें बचा लिया और वापस शिनिगं Xining ले आए।[703]

मा चीशी Ma Qixi

मा चीशी, शीडाओटांग Xidaotang सूफ़ी सिलसिले के संस्थापक माने जाते हैं। मा चीशी ताओज़ू Taozhou इलाक़े के एक अहोंग के बेटे थे जिनका संबंध बीज़ुआंग मेनूहान (सूफ़ी सिलसिले Beizhuang menhuan से था। 11 साल की उम्र में उन्होंने एक ग़ैर मुस्लिम उस्ताद से शिक्षा हासिल करनी शुरू की इस के बाद वो दूसरे उस्ताद के ज़ेर-ए-तालीम रहे जिनका नाम फ़ान शेंगवू Fan Shengwu था और जो नए ताओज़ू में एक स्कूल चलाया करते थे। मा ने पूरे नए ताओज़ू New Taozhou में दूसरी पोज़ीशन हासिल की और गोंगचांग Gongchang के प्रीफ़ेक्चरल लेवल इम्तिहान में चौथी पोज़ीशन हासिल की। उन्होंने नए कन्फ्यूशियस अदब Neo-Confucian texts की शिक्षा हासिल की और हान किताब भी पढ़ी। मा चीशी का मानना था कि मुसलमानों को चीनी तहज़ीब की रोशनी में इस्लाम को समझना चाहिए। 1905 में मा चीशी और

उनके बहुत से शागिर्द जैसे मा यिंगकाई, मा जियान युआन और डिंग ज़ोंगही Ma Yingcai, Ma Jianyuan, and Ding Zhonghe हज करने गए लेकिन वापसी में वो समरक़ंद में फंस गए और तीन साल, वहां बाईशान Baishan के पहाड़ पर जिसको सफ़ैद पहाड़ भी कहा जाता है गुज़ारे और लोगों को सूफ़ीमत की शिक्षा दी। मा यिंगकाई का रास्ते ही में इंतिक़ाल हो गया।[704] 1909 CE में वो चीन वापस हुए जहां लिंटान Lintan में उनके शागिर्दों डिंग चुआंडी और उस के बेटे डिंग योंग शियांग Ding Quande, Ding Yongxiang ने मा चीशी का स्वागत किया। वहां लिंटान में मा चीशी ने अपना एक तालीमी इदारा खोला जो एक गोंग बी Gongbei भी था। इस का नाम जिनशिंग टांग Jinxing Tang रखा गया जिस का मतलब होता है सुनहरे सितारों का हाल Gold Star Hall. इस में उन्होंने अपना नया तालीमी निसाब Syllabus तैयार किया जिसमें इस्लाम के साथ चीनी तहज़ीब-ओ-फ़लसफ़ा भी पढ़ाए जाते थे जैसे कन्फ्यूशियस और टाओ नज़रियात। उन्होंने अपना एक आज़ादाना तालीमी निज़ाम क़ायम किया जिसकी वजह से ख़ुफ़िय्या सूफ़ी लोगों ने उनको गुमराह या काफ़िर क़रार दिया। यह लोग चीनी तहज़ीब से इतना लगाओ रखते थे कि जब 1912 में चिंग हुकूमत का ख़ातमा हुआ तो इस के सोग में उन लोगों ने अपनी चोटियां काट दीं और औरतों ने अपने पैर खोल दिए।[705] याद रहे चीन में औरतों के पैर छोटे होना हुस्न की अलामत समझा जाता था इस लिए पैर छोटे करने के लिए उनके पैर किसी छोटे जूते में रखकर कसकर बांध दिये जाते थे जिसको पैर बांधना Feet binding कहा जाता था। इन लोगों में मत भेद इतना बढ़ा कि 1902 CE में दोनों

बीज़ुआंग और ख़ुफ़िय्या लोग जिनको खुआसी (Hausi) भी कहा जाता था अदालत चले गए। ताओज़ू के शासक ने मा चीशी की शिक्षा को वर्जित क़रार दिया और उस के पैरोकारों की पिटाई करवाई। लेकिन आला अदालत ने इस फ़ैसले को उलट दिया क्यों कि वो शीडाओटांग से लगाओ रखते थे। बाद में उन्होंने अपनी मस्जिद और जमात का नाम जिनशिंग टांग से बदल कर एक मशहूर डाओ फ़लसफ़ी (philosopher) लाओज़ी Laozi के नाम पर "शीडाओटांग" कर दिया जिसका मतलब होता है पश्चिमी डाओ का हाल Hall of the Western Dao यानी इस से मुराद इस्लाम है। इस को हानशू पाई Hanxue pai भी कहा गया जिसका मतलब है "हान तालीमी फ़िर्क़ा" Han Studies Sect.[706] मा चीशी अपनी तहरीक की स्थापना में लियू ज़ी और मा मिंगशिन का बड़ा किरदार मानते और इन अलफ़ाज़ में उन्हें श्रद्धांजलि पेश करते {'जी लियान' Jielian (लियू ज़ी) ने बीज डाला, गुआन चुआन Guanchuan (मा मिंगशिन) ने फूल खिलाए और मैं ने फल खाए}।[707] जो भी इस संप्रदाय से जुड़ता वो अपना सारा मालो दौलत और जायदाद, जमात के लिए वक़्फ़ कर देता जिसको संप्रदाय के बुजुर्ग मुनासिब तिजारत में लगाते और सब मिल-जुल कर तिजारत करते, जिसकी वजह से यह काफ़ी कामयाब तिजारती बिरादरी बन गई। कहा जाता है कि एक वक़्त में इस से जुड़े अफ़राद की तादाद 3500 तक पहुंच गई थी। शीडाओटांग का शुमार गान्सू के तीन बड़े मालदार घरानों में होता था, बाक़ी दो हैं यांग जीचिंग Yang Jiqing (the Tibetan tusi at Choni) और दूसरा लाबरांग की लामासिरी का मुख्य रिनपोछे

chief rimpoche of the great Lamasery at Labrang.[708] ताओज़ू में शीडाओटांग का एक बड़ा केंद्र था जिसके बीच एक मस्जिद थी जिसको रंग-बिरंगी मस्जिद कहा जाता था, यह मस्जिद शीडाओटांग का गोंगबी (ख़ानक़ाह) मानी जाती थी। इस केंद्र में तहरीक के तक़रीबन 400 सबसे चोटी के लोग रहा करते थे और मिल-जुल कर काम करते थे। हर आदमी को उस की क्षमता के एतबार से काम सौंपा जाता था। इस के अलावा बाक़ी मेंबरान आम आबादियों में रहते थे और जमात के लिए मुख़्तलिफ़ व्यापार चलाया करते थे, उनमें जमात के वो मेंबरान भी शामिल थे जो जमात से जुड़े तो थे लेकिन उन्होंने अपनी सारी संपत्ति जमात के लिए वक़्फ़ नहीं की थीं बल्कि ख़ुद मालिक थे। लेकिन चिंग हुकूमत के खात्मे के बाद जब 1914 CE में युआन शिकाई की हुकूमत क़ायम हुई तो बहुत से लोगों ने इस के ख़िलाफ़ भी विद्रोह किया जिसमें बाईलॉग Bai Lang नाम का एक जनरल भी था जिसने युआन शिकाई के ख़िलाफ़ मोर्चा खोल दिया लेकिन यह लोग आधे फ़ौजी और आधे डाकू थे इस वजह से सब मुसलमान उनके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए और उन का मुक़ाबला किया जिसमें हुई जनरल मा ची Ma Qi और मा अनलियांग Ma Anliang भी थे। मा ची और मा अनलियांग को क्योमिनटांग की पुश्तपनाही हासिल थी और युआन शिकाई की भी। युआन शिकाई ने मा अनलियांग को गान्सू का शासक बना रखा था इस लिए मा अनलियांग ने गान्सू में युआन शिकाई के किसी भी दुश्मन को घुसने नहीं दिया। एक दफ़ा बाईलॉग ने मा चीशी के शीडाओटांग के इलाक़े पर भी हमला कर दिया लेकिन मा अनलियांग ने मा चीशी की मदद करने के बजाय

उन पर हमला कर दिया, क्यों कि पहले ज़िक्र किया जा चुका है कि ख़ुफ़िय्या लोगों ने शीडाओटांग को गुमराह और काफ़िर क़रार दिया था। मा अनलियांग ने शीडाओटांग पर यह इल्ज़ाम लगाकर हमला किया कि उन्होंने बाईलॉंग से साज़-बाज़ कर रखा है। इस तरह शीडाओटांग के लोग दो लोगों के हमले का शिकार हुए बाईलॉंग के और मा अनलियांग के। इस लड़ाई में मा चीशी और उनके पूरे ख़ानदान को क़त्ल कर दिया गया। यह भी कहा जाता है कि मा अनलियांग ने अपने इलाक़े लांज़ू Lanzhou और हीज़ू Hezhou (Linxia) की रक्षा तो की लेकिन बाईलॉंग को शीडाओटांग पर हमला करने की पूरी छूट दे दी और उस की रक्षा नहीं की। 1928 CE में मा ची के ख़ानदान के एक जनरल मा ज़ोंगयिंग Ma Zhongying ने दोबारा ताओज़ू पर हमला कर दिया। शीडाओटांग के मेंबरान अपने घर, दुकानें और खेतियां छोड़कर वहां से चिंगहाई Qinghai की तरफ़ फ़रार हो गए। मा ज़ोंगयिंग ने उनके केंद्र पर क़ब्ज़ा कर लिया जिसको रंग-बिरंगी मस्जिद कहा जाता था और इस में आग लगा दी। शीडाओटांग के लोगों ने अपना नया ऑफ़िस ज़ांगजियाकू Zhangjiakou में खोल लिया जो बीजिंग के उत्तर पश्चिम में एक बंदरगाह के क़रीब था।

जब बाद में अमन क़ायम हो गया तो 1932 में शीडाओटांग के लीडरों ने क्योमिनटांग से अमन मुआहिदा कर लिया। चुनांचे जब दूसरी चीन-ओ-जापान जंग हुई तो शीडाओटांग ने जापान के ख़िलाफ़ क्योमिनटांग की मदद की और क्योमिनटांग को चमड़े की चीज़ें सप्लाई कीं। चुनांचे चोंगचिंग की लोकतांत्रिक हुकूमत Nationalist Government in Chongqing ने ताओज़ू के लोगों को

विशेषाधिकार दिए, इस लिए ताओज़ू में बड़े पैमाने पर चमड़ा बनाया जाता था। मा मिंगरेन Ma Mingren जो शीडाओटांग के तीसरे जियाओज़ू jiaozhu (प्रमुख) थे वो 1941 CE में चोंगचिंग गए जहां क्योमिनटांग मुस्लिम लीडर बाई चोंगशी Bai Chongxi ने उनकी मुलाक़ात क्योमिनटांग के सदर चियांग काई शेक से कराई आजकल शीडाओटांग के लोग लिंटान, हीज़ेंग, चिंगहाई, शिंजियांग और सिचुआन में आबाद हैं।

Lintan, Hezheng County in Gansu, Qinghai, Xinjiang, and Sichuan.

यह लोग तरीक़त (daocheng 道乘) से ज़्यादा शरीअत (jiaocheng 教乘) पर-ज़ोर देते हैं और सुन्नी हनफ़ी मसलक से संबंध रखते हैं। शिक्षा और तिजारत पर उनका ख़ास ध्यान रहता है। उनके यहां मौलूदुन नबी ﷺ बड़े ज़ोर-ओ-शोर से मनाया जाता है जिसको मवलिदिन नबी Mawlid an-Nabi कहा जाता है। मा चीशी की हर साल बरसी भी मनाई जाती है। ताहम मा चीशी का मक़बरा नहीं बनाया गया।

राजनेता और सैन्य जनरल

Politicians and Military Generals

सय्यिद सूफ़ीर Su fei-erh

सय्यिद सूफ़ीर बुख़ारा से संबंध रखने वाले एक अमीर थे जो सोंग हुकूमत के ज़माने में अपने क़ाफ़िले के साथ चीन पहुंचे। सूफ़ीर असल में चीनी लफ़्ज़ है लेकिन उनका अरबी नाम किया था इस बारे में कोई मालूमात उपलब्ध नहीं है यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि शायद उनका नाम सफ़र या सफ़ीर या ज़ुबैर हो सकता है।

उनकी तारीख़-ए-पैदाइश और वफ़ात के बारे में भी मालूमात नहीं है ताहम इतना मालूम है कि 1070 CE में सोंग राजा शेनज़ोंग Emperor Shenzong of Song (25 May 1048 – 1 April 1085) ने बुख़ारा से मुसलमानों को आमंत्रित किया चुनांचे लगभग ५३०० (5300) मुसलमान बुख़ारा से हिजरत कर के चीन पहुंचे। शायद सोंग राजा ने उनको अपनी दुश्मन लियाओ हुकूमत Liao dynasty जो खीतान Khitan क़बाइली लोगों की एक हुकूमत थी, के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए बुलवाया था। बाद में यह लोग सोंग राजधानी काईफेंग Kaifeng और येनचिंग के बीच रहने लगे। येनचिंग को आज बीजिंग कहा जाता है Yenching is modern day Beijing. कहा जाता है कि सोंग ने उनको अपने और लियाओ हुकूमत के बीच एक आड़ buffer zone के तौर पर बसाया था। इन बुख़ारा के

लोगों के अमीर, शहज़ादा सय्यिद सूफ़ीर Prince Amir Sayyid "So-fei-erh" थे।[709] उनको चीन में मुसलमानों का सरदार माना जाता था। बाद में 1080 CE में भी 10,000 लोग जिनमें मुसलमान मर्द और औरतें शामिल थे चीन आए और सय्यिद सूफ़ीर के साथ शामिल हो गए और उत्तर और उत्तर पूर्वी सूबों में ठहरे। सय्यिद सूफ़ीर से पहले इस्लाम को टांग और सोंग दौर में, डाशी फ़ा Dashi fa 大食法 कहा जाता था जिसका मतलब है अरबों का क़ानून Law of the Arabs लेकिन सय्यिद सूफ़ीर ने उसे बदल कर हुईहुई जियाओ Huihui-jiao 回回教 कर दिया जिसका मतलब है हुई हुई का मज़हब the religion of the Huihui. इसी लिए बाद में मुसलमानों को हुई कहा जाने लगा।[710] कहा जाता है कि इस ज़माने में कुछ सोंग अहलकारों ने अरब औरतों से शादियां भी कीं।

सय्यिद सूफ़ीर की औलाद में बहुत से लोगों को आला सियासी ओहदे मिले। सूफ़ीर के एक बेटे को शानडोंग का गवर्नर बनाया गया और उस के पोते शमस शाह Shams Shah को तातार का मुहाफ़िज़ "Protector of the Tatars" का लक़ब दिया गया। उस के पर-पोते कमालुद्दीन को सोंग राजा गाओज़ोंग Emperor Gaozong ने फ़ौज का कमांडर-इन-चीफ़ बनाया। कमालुद्दीन के बेटे महमूद को युन्नान और शांक्सी Yunnan and Shaanxi का गवर्नर बनाया गया। फ़ा सियांग का मानना है कि सय्यिद अजल शम्सुद्दीन भी सूफ़ीर की औलाद में से थे लेकिन इस की तसदीक़ (पुष्टि) नहीं हो पाई।[711]

सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उमर

सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उमर (1211-1279) Sayyid Ajjal Shams al-Din Omar: सय्यिद अजल शम्सुद्दीन उमर अल-बुख़ारी, युआन हुकूमत के ज़माने में युन्नान सूबे के पहले गवर्नर थे। वो बुख़ारा के रहने वाले थे, कहा जाता है कि उनका संबंध ख़्वारिज़्म शाही सल्तनत के एक सय्यिद घराने से था जिसका शिजरा नसब हज़रत अली (र) से मिलता है।[712] उनके पिता का नाम कमालुद्दीन था और दादा का शम्सुद्दीन अल-बुख़ारी। जब चंगेज़ ख़ान ने ख़्वारिज़्म शाही सल्तनत पर हमला किया तो सय्यिद अजल शम्सुद्दीन के ख़ानदान ने चंगेज़ ख़ान के आगे हथियार डाल दिए। मंगोल जनरल मुंगके ख़ान की सिचुआन की मुहिम के दौरान वो रसद के प्रभारी In charge of logistics रहे। बाद में, वो 1259 में शाही मालियात के इंचार्ज बना दिए गए।[713] 1274 में क़ुबलाई ख़ान ने जब डाली की सल्तनत को फ़तह किया तो उस के बाद सय्यिद अजल को युन्नान का गवर्नर बना कर भेजा। वो 1274 से 1279 में अपने इंतिक़ाल तक युन्नान के गवर्नर रहे।[714] इंतिक़ाल के बाद उनको ज़ोंगयी Zhongyi का लक़ब मिला जिसका मतलब है 'माननीय वफ़ादार'।

शम्सुद्दीन ने युन्नान में बहुत से कन्फ्यूशियस मंदिर तामीर किए, और कन्फ्यूशियस की शिक्षा को बढ़ावा दिया। उन्होंने युन्नान सूबे को चीनी संस्कृति में ढालने में सबसे अहम भूमिका निभाई। इस के अलावा उन्होंने युन्नान में बहुत सी मस्जिदें भी बनाईं और इस्लाम को बढ़ावा दिया।[715]

उनके इंतिक़ाल के बाद उनके बेटे नासिरुद्दीन Nasir al-Din या नसरुद्दीन (Nasruddin) युन्नान के गवर्नर बने। नसरुद्दीन (Nasruddin) जिनको चीनी ज़बान में Na-su-la-ding कहा जाता था उनकी औलाद में चार ख़ानदान हुए सबने उनके नाम के एक एक टुकड़े को अपना ख़ानदानी नाम बना लिया एक ने न Na, दूसरे ने सू su, तीसरे ने ला la और चौथे ने डिंग ding.[716]

कहा जाता है कि उन्हें के पोते ने 1335 में बादशाह से इस्लाम को 'सच्चा ख़ालिस मज़हब "True and Pure Religion "का नाम दिलवाया जो आज तक चला आ रहा है। और दूसरे लवाहिक़ीन ने 1420 में बादशाह से चांगान (Changan) और नानजिंग में मस्जिद तामीर करने की इजाज़त हासिल की।[717]

कहा जाता है कि सय्यिद अजल शम्सुद्दीन और उनकी औलाद ने युन्नान में इतनी तेज़ी से इस्लाम फैलाया कि वहां की अक्सर आबादी मुसलमान हो चुकी थी या मुसलमानों की अकसरियत हो चुकी थी। चुनांचे क़ुबलाई ख़ान के ज़माने में वसती एशिया से इतनी बड़ी तादाद में मुसलमान आए और युन्नान में ठहरे कि मार्को पोलो जो 1275 से 1292 के दरमियान चीन में रहा, उस ने लिखा कि तालीफ़ू Talifu जो युन्नान की राजधानी थी वहां मुसलमानों की अकसरियत थी। इब्न-ए-बतूता जो 14 वीं सदी के वस्त में पानी के जहाज़ के ज़रिये चीन पहुंचा उसने लिखा है कि वहां उस के हम मज़हबों ने उस का गर्मजोशी से स्वागत किया और हर क़स्बे और शहर में मुसलमानों के मख़सूस मुहल्ले होते थे जहां उनकी मस्जिदें होती थीं और चीनी लोग उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे। ताहम मंगोल हुकूमत के ख़ातमे के बाद इतनी बड़ी तादाद में मुस्लमान कभी चैन नहीं पहुंचे।

ज़ेंग हा Zheng He

ज़ेंग हा (1371 – 1433 or 1435) मिंग हुकूमत के योंगले राजा का एक मुसलमान किन्नर अफ़सर था। वो अपने नौसैनिक अभियानों के लिए मशहूर है। राजा ने उस को अपनी आस-पास की हुकूमतों से बेहतर संबंध बनाने के लिए कई बहरी मुहिमों पर भेजा था। यह अभियान (1405-1433 CE) के दरम्यान हुए जिनकी तादाद कुल 7 है, उनको मिंग खजाना यात्राएँ Ming treasure voyages भी कहा जाता है। उनको खज़ाने की मुहिम इस लिए कहा जाता है क्यों इन मुहिमों में एक ख़ास किस्म के जहाज़ सवारी के लिए इस्तेमाल किए गए जिनको खज़ाने का जहाज़ treasure ship कहा जाता है उनकी लंबाई आम तौर पर 135 मीटर और चौड़ाई 55 मीटर होती है। इन मुहिमों में ज़ेंग हा अपने हज़ारों अफ़राद पर आधारित क़ाफ़िले को लेकर दक्षिण पूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया, पश्चिमी एशिया और पूर्वी अफ़्रीक़ा का दौरा किया। जिन हुकूमतों का दौरा किया उनके नाम हैं'चम्पा, जावा, मलक्का, पालमबांग, अरू, समुदरा, लम्बरी, सीलोन, चुईलोन, कालीकट, कोचीन, अंडमान व नोकोबार द्वीप, पाहांग, केलानतान, ज्याईले, हुर्मुज़, बिला, मालदीव, लक्षद्वीप, सुनला, लासा, अदन, मोगादिशू, ब्रावा, ज़ूबू, मलिंदी, सल्तनत बनू रसूल, दोफ़र, सुमात्रा, सियाम, त्रिंकोमाली, कोच्चि, ज़फ़ार, बंगाल, चिता गोंग, सुनारगाँव और गौड़ वग़ैरह।

(Champa[718], Java, Malacca, Aru, Samudera, Lambri, Ceylon, Quilon, Calicut, Cochin, Andaman and Nicobar, Pahang, Kelatan, Jiayile, Hormuz, Bila (Bitra Atoll), Maldive, Laccadive, Sunla (Chetlat Atoll),

Lasa, Aden, Mogadishu, Brava, Zhubu, Malindi, Rasulids and Dhofar, Palembang, Sumatra, Siam, Trincomalee, Kochi, Zufar, Bengal, Chittagong, Sonargaon, Gaur etc.[719]
ज़ेंग हा योंगले राजा की तरफ़ से दूसरे बादशाहों के लिए बहुत से तोहफ़े लेकर गया था और उन बादशाहों ने भी जवाब में चीनी राजा को बहुत से तोहफ़े भेजे जिनमें सबसे मशहूर जिराफ़ था जो बंगाल के सुलतान का पालतू जिराफ़ था जो उसे सोमालिया Somalia की अजूरान सल्तनत Ajuuraan Sultanate के सुलतान ने भेजा था, लेकिन बंगाल के सुलतान ने उसे चीन के राजा को तोहफ़े में भेज दिया। चीन में पहली बार लोगों ने जिराफ़ देखा था, इस लिए लोग दूर दूर से उसे देखने आते थे।

मा हुआन Ma Huan

मा हुआन एक चीनी मुस्लिम मुतर्जिम (translator) था जो ज़ेंग हा की 7 में से 3 यात्राओं में उस के साथ रहा। उसने बहुत सी जगहों के दौरे किए इन जगहों के जुग़राफ़िया, समाजी हालात, मौसमी हालात लिखे। किन्नर अहलकार होंग बाओ Hong Bao के हुक्म पर वो बतौर चीनी राजदूत कालीकट से मक्का गया। सफ़र से वापसी पर उसने अपने मुशाहिदात और प्रयोगों को एक किताब की शक्ल में लिखा जिस का विषय था यिंगया शेंगलॉन Yingya Shenglan जिसका मतलब होता है समुद्र तट का पूरा सर्वे।

याक़ूब बेग Yaqub Beg

याक़ूब बेग (1820 – 30 May 1877) एक मुजाहिद थे जिनका संबंध ख़ोक़न्द ख़ानियत से था, उन्होंने शिंजियांग में इस्लामी हुकूमत स्थापित की जो 1865 से 1877 तक क़ायम रही। उनका तफ़सीली ज़िक्र ऊपर शिंजियांग में डुंगन विद्रोह और याक़ूब बेग की इस्लामी हुकूमत के विषय में गुज़र चुका है।

मार्शल आर्ट Martial Arts

वांग ज़ी पिंग Wang Zi-Ping

वांग ज़ी-पिंग (1881-1973) एक चीनी रिवायती कुश्ती के माहिर थे और रिवायती दवा से इलाज करने वाले एक चिकित्सक भी। वो कई चीनी कुश्तियों shuai-jiao (Chinese wrestling) के माहिर थे जैसे वूशू, शाओलिन, हुआ चुआन, पाव चुआन, बाजी चुआन और ताई ची चुआन वग़ैरह wushu, shaolin, huaquan, pao chuan, bajiquan, t'ai chi ch'uan.[720] 1928 CE में वो मार्शल आर्ट्स इंस्टीट्यूट के शाओलिन कुंग फ़ू Shaolin Kung Fu डिवीज़न के सदर रहे और चीनी वूशू एसोसिएशन Chinese Wushu Association के नायब चेयरमैन भी रहे।

उनकी शुरु की ज़िंदगी के बारे में तो कोई ज़्यादा मालूमात नहीं है ताहम वो अपनी नौजवानी के दिनों में बॉक्सर विद्रोह में 8 मुल्कों के गठबंधन Eight-Nation Alliance के ख़िलाफ़ लड़े। बॉक्सर विद्रोह के बाद वो यांग होंगशियू

Yang Hongxiu के मातहत चाचुआन Chaquan कुश्ती सीखने लगे। वांग ने रूसी, अमरीकी, जर्मन और जापानी पहलवानों के ख़िलाफ़ बहुत सी कुश्तियाँ जीतीं।[721] वांग ने एक रूसी पहलवान कांग टाइर Kang Tyre को 1918 में बीजिंग में दो दफ़ा हराया, और एक अमरीकी और एक जर्मन पहलवान को चिंगडाओ Qingdao में हराया और 1919 में एक जापानी पहलवान साटो Sato को जीनान Jinan में शिकस्त दी।

वांग ने जियाओजी Jiaoji में एक जर्मन अफ़सर को वज़न उठाने के मुक़ाबले में हरा दिया। जब जर्मन चिनज़ू Qinzhou की मस्जिद के प्राचीन दरवाज़े antique doors ले जाना चाह रहे थे तो वांग ने इन दरवाज़ों की रक्षा की तब जर्मन फौजियों ने उसे वज़न उठाने के मुक़ाबले में चुनौती दी तो वांग ने इस मुक़ाबले में भी इन को हरा दिया जिसके बाद वो वहां से चले गए।[722]

चीनी कुश्ती के मशहूर इतिहासकार टांग हाओ Tang Hao ने अपनी किताब शाओलिन वूडांग काओ Shaolin-Wudang Kao में लिखा था कि यह दावा ग़लत है कि शाओलिन Shaolin कुश्ती की शुरूआत बौद्ध भिक्षु बोधिधर्म Bodhidharma ने की थी और ताई जी चुआन Taijiquan कुश्ती की शुरूआत ज़ांग सानफेंग Zhang Sanfeng ने की थी। जिस पर लोगों ने उस की ज़बरदस्त आलोचना की क्यों कि आम लोगों का ऐसा ही मानना था। तब वांग ज़ी पिंग और ज़ू गोफ़ू Zhu Guofu ने टांग हाओ के इस दावे का बचाओ किया।[723] बल्कि कुछ लोग टांग हाओ के ख़िलाफ़ साज़िश करने का मंसूबा बना रहे थे तो वांग ने उनको रोक दिया।[724] लियू जिन शेंग Liu Jin Sheng और ज़ाओ

जियांग Zhao Jiang जिन्हों ने मशहूर किताब "चिन ना की तरकीबें" Chin Na Methods लिखी वो दोनों वांग के शागिर्द थे।[725] छठे राष्ट्रीय खेल Sixth National Games में वो कुश्ती के जज judge बने।[726] जब ज़ू एनलाई Zhou Enlai बर्मा गए तो 80 साला वांग भी उनके साथ थे, वहां वांग ने अपनी कुश्ती के करतब दिखाए। वांग का इंतिक़ाल 93 साल की उम्र में हुआ।[727]

वांग जूरोंग Wang Ju-Rong

वांग जूरोंग (1928-2006) एक ख़ातून चीन मार्शल आर्ट और वूशू कुश्ती की माहिर थीं जो शंघाई इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिज़िकल एजुकेशन Shanghai Institute of Physical Education में प्रोसेसर थीं। जूरोंग मशहूर चीनी पहलवान वांग ज़ी पिंग की बेटी थीं जिनका ज़िक्र ऊपर गुज़रा। 1955 में वांग की शादी वू चेंगडे Wu Chengde से हुई जो उनके पिता के शागिर्द थे और पेशे से चीनी रिवायती जड़ी बूटियों के एक चिकित्सक थे। उनकी तीन बेटियां हुईं, हेलेन वू, ग्रेस वू और वू शियाओपिंग Helen Wu (XiaoRong), Grace Wu (Xiao Go) and Wu Xiaoping.

हेलेन भी बाद में मार्शल आर्ट में गईं और टोरंटो, कनाडा में बस गईं। जूरोंग ने 5 साल की उम्र में अपने पिता वांग ज़ी पिंग से कुश्ती सीखनी शुरू की। उन्होंने कई कुश्तियाँ सीखीं जैसे टान टुई, चा चुआन, हुआ चुआन, बाजी चुआन, पाव चुआन और टाजी चुआन Tan Tui, Chaquan, Huaquan, Bajiquan, Pao Chuan and Taijiquan. बचपन में वो एक दिन में 6 घंटे मश्क़ किया करती थीं जिनमें ज़्यादातर उनकी लात मारने की मश्क़ होती जिसको पाई डाई Pai Dai

कहा जाता है, वो अपनी क्लास के लड़कों के साथ मश्क़ करतीं। उनकी विनती पर उनके पिता ने उनको भारी तलवार चलाने की मश्क़ की अनुमति दे दी। 1952 CE में उन्होंने शंघाई की अरोरा यूनिवर्सिटी Aurora University से ग्रेजुएशन किया। बाद में वो ईस्ट चाइना फिज़िकल एजुकेशन कॉलेज की पहली प्रोसेसर बनीं जिसको शंघाई फिज़िकल एजुकेशन कॉलेज भी कहा जाता है। वहां उन्होंने 36 साल पढ़ाया। उनकी सरपरस्ती में पहली बार दो छात्रों ने ताई जी चुआन कुश्ती में मास्टर ऑफ़ मार्शल आर्ट्स की डिग्री हासिल की।[728]

चांग डोंगशेंग Chang Dongsheng

चांग डोंगशेंग (1908–1986) चीन के एक मशहूर मुसलमान मार्शल आर्टिस्ट थे। वो चीनी कुशती जिसे शुआई जियाओ Shuai jiao कहा जाता है के माहिर थे। वो 1908 CE में बाओडिंग, हेबेई Baoding, Hebei में पैदा हुए। चांग शुरू से ही मज़बूत जिस्म के मालिक थे। उनके घर के लोग तंदूरी मुर्ग़ बेचा करते थे। मा ने निजी तौर पर ज़ांग फ़ैनयेन Zhang Fenyen नाम के एक ताजिर से मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग लेनी शुरू कर दी जो शुआई जियाओ कुश्ती के माहिर माने जाते थे, उन्होंने यह पिंग जिनयी Ping Jinyi से सीखी थी। चांग बहुत जल्द उनके क़ाबिल शागिर्दों में शुमार होने लगे। वांग को तरबियत के लिए इस तरह लात मारनी सिखाई गई थी कि वो ज़मीन पर उड़ रहे कीड़ों को लात मारते थे और हाथ फैलाए रखते थे तो कीड़े उनकी हाथ में आ जाते थे। 20 साल की उमर में उन की शादी अपने उस्ताद की दूसरी बेटी से हो गई। इस के बाद वो नानजिंग चले गए और कू शू Kuo Shu नाम के एक कुश्ती की तरबियत देने

वाले इदारे में 5 साल तरबियत हासिल की। 1933 CE में चांग ने 5 वां क़ौमी कोशू टूर्नामेंट 5th National Kuo Shu Tournament में पहली पोज़ीशन हासिल की हालाँकि उस में कई सौ उम्मीदवार थे जिस में मशहूर पहलवान लियू चियू-शेंग Liu Chiou-Sheng भी था जिससे उनका सबसे ज़बरदस्त मुक़ाबला हुआ। इस के बाद उनको लोहे की तितली Iron Butterfly का ख़िताब दिया गया। चांग ने बहुत से मुक़ाबले जीते बाद में वो चीन की फ़ौज में मुलाज़िम हो गए जो क्योमिनटांग के मातहत थी इस तरह वो क्योमिनटांग के मेंबर बन गए। उनका एक ज़बरदस्त मुक़ाबला नेपाल की पहलवान हुकली Hukli से भी हुआ जिसका क़द 7 फुट था और वज़न 181 किलो था। चांग ने उसे कई दफ़ा पटख़ी दी हालाँकि वो जसामत में चांग से बड़ा था। चांग बाद में 'नानजिंग सेंट्रल कुओशू इंस्टीट्यूट' Nanjing Central Kuoshu Institute में कुश्ती के उस्ताद हो गए उस वक़्त वो सबसे कम उमर उस्ताद थे। चांग ने पूरे चीन का दौरा किया और तक़रीबन 70 उस्तादों से शिक्षा हासिल की। वो हर उस्ताद से एक आम छात्र की तरह अपना परिचय कराते ताकि वो ज़्यादा से ज़्यादा उस से तरबियत ले सकें। दूसरी चीन-ओ-जापान जंग के दौरान उन्होंने क्योमिनटांग की फ़ौज में लोगों को शुआई जियाओ की तरबियत दी जिनमें लाल दीवार फ़ौजी Red Wall paratroopers भी शामिल थे। जंग के दौरान वो अकसर इन कैम्पों में चले जाते जहां जापानी जंगी क़ैदी रखे गए थे और उन क़ैदियों में से जो कुश्ती के माहिरीन थे उनसे मुक़ाबले करते। इस दौरान उन्होंने कई जापानी जूडो माहिरीन को शिकस्त दी जैसे हाईडो टाकायामा, कूमा हीसा और मासाओ हीची Haido

Takayama, Kuma Hisa and Masao Hichi. 1948 में चांग ने कई मुक़ाबलों में चीन की नुमाइंदगी की उनमें कई तरह की कुश्ती के मुक़ाबले थे जैसे शुआई जियाओ, चिन ना shuai jiao, Chin Na और सब में दूसरों को शिकस्त दी। जब क्योमिनटांग को चीन में शिकस्त हुई और उस को ताइवान में पनाह लेकर वहां अपनी हुकूमत क़ायम करनी पड़ी तो चांग भी ताइवान मुंतक़िल हो गए जहां उनको कुश्ती के सीनियर उस्ताद का एक ओहदा दे दिया गया। चांग ने वहां 30 साल कुश्ती की तरबियत दी। चांग जल्दी ग़ुस्सा हो जाने के लिए मशहूर थे। उनके कई वाक़ियात इस से मुताल्लिक़ हैं। एक मौक़े पर, एक आदमी ताइपे नेशनल पुलिस यूनिवर्सिटी आया और चांग के साथ ट्रेनिंग करने को कहा। जवाब देने के बजाय, चांग ने उस पर हमला कर दिया और उसे नीचे गिरा दिया, और उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर किया कि वो वाक़ई तरबियत के बाद उसे चैलेंज करने आया था, जो चांग ने पहले ही जान लिया था। इसी तरह रॉबर्ट डब्ल्यू स्मिथ Robert W. Smith ने शियांग का एक-बार चांग शेंग का इंटरव्यू लेने के लिए और उनके साथ ट्रेनिंग करने के लिए ताइवान का सफ़र किया, लेकिन जब उसने जांग से कहा कि वो उसे अपनी कुछ महारतें दिखाये, तो चांग ने स्मिथ को कमर में लात मार दी। चांग एक बा-अमल मुसलमान थे।[729] चांग अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं हारे और 1986 में गले के कैंसर से इंतिक़ाल हुआ।

मा शियान्डा Ma Xianda

मा शियान्डा (1932–17 June 2013) चीन के एक मुस्लिम पहलवान थे जो वूशू wushu की मार्शल आर्ट के माहिर थे। उन्होंने 2002 CE में वूशू के ९वें डुआन Wushu Ninth Duan का ख़िताब हासिल किया, याद रहे यह वूशू का सबसे ऊंचा ख़िताब होता है जिसके लिए कम से कम उमर 50 साल होनी चाहिए और 35 साल की मश्क़ होनी चाहिए।[730]

मा शियान्डा 1932 CE में एक मुस्लिम हुई ख़ानदान में हेबेई Hebei में पैदा हुए। उनके ख़ानदान में मार्शल आर्ट की पुरानी रिवायत चली आरही थी। मा ने शुरू में अपने पिता फेंगटू Ma Fengtu और चचा मा यिंगटू Ma Yingtu से कुश्ती की तरबियत ली। वो दोनों ही मार्शल आर्ट के माहिर माने जाते थे।

1949 CE में चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम होने के बाद 1952 CE में पहली दफ़ा मार्शल आर्ट के मुक़ाबले हुए। उस वक़्त मा की उम्र 19 साल थी और उन्होंने कुश्ती के मुक़ाबलों में 3 ख़िताब जीते।

यह तीन मुक़ाबले निम्नलिखित हैं।

- ली टाई चैंपियनशिप Lei Tai Champion: इस में मा ने टोंगबी Tongbei मास्टर डेंग होंगज़ाओ Deng Hongzhao और चूजियाओ Chuojiao मास्टर ली शयूवैन Li Xuewen को हराया।
- शॉर्ट वेपन फ़ाइटिंग चैंपियन Short Weapon Fighting Champion.
- वूशू परफॉर्मेंस ग्रैंड चैंपियन Wushu Performance Grand Champion.

- 1953 में हुआबी शॉर्ट वेपन टूर्नामेंट Huabei Short Weapon Tournament में सारे मुक़ाबलों में जीत हासिल की जिसमें उनके मद्द-ए-मुक़ाबिल (प्रतिद्वंद्वी/rival) कई शहरों से थे जैसे बीजिंग, तियानजिन, हेबेई, शांक्सी और अंदरूनी मंगोलिया Beijing, Tianjin, Hebei, Shaanxi, and Inner Mongolia.[731]

अनय लोग

फ़ी शिन Fei Xin

यह भी ज़ेंग हा के साथियों में था जो ज़ेंग हा की समुंदरी यात्राओं में उस के साथ रहा। उसने अपनी 4 समुंदरी यात्राओं पर किताब भी लिखी जिसका विषय है शिंगचा शेंगलॉन Xingcha Shenglan जिसका मतलब होता है सितारों के बेड़े की तफ़सील Description of the Starry Raft जिसके मुक़द्दमे पर 1436 की तारीख़ है।

चिंग दौर के जनरल

डोंग फ़ूशियांग (1839-1908)

Dong Fuxiang

डोंग फ़ूशियांग ने बॉक्सर विद्रोह के दौरान पश्चिमी देशों के ख़िलाफ़ हुई मुस्लिम फ़ौज का नेतृत्व किया जो चिंग हुकूमत की हिमायत में लड़ रहे थी। फ़ूशियांग की फ़ौज को कान्सू के बहादुर Kansu Braves कहा जाता था। यह दुश्मन को सबसे ज़्यादा ख़ौफ़-ज़दा करने वाली फ़ौज थी।

मार रूलोंग

Ma Rulong (मा जूलुंग Ma Julung)

एक हुई जनरल थे जिनको मा जूलुंग Ma Julung भी कहा जाता है। उन्होंने 1860 CE में डू वैनशियू के साथ चिंग हुकूमत के ख़िलाफ़ विद्रोह किया जिसको पन्थे विद्रोह कहा जाता है। लेकिन बाद में 1862 CE में मार रूलोंग ने चिंग हुकूमत से गठबंधन कर लिया।

मा शिनयी Ma Xinyi

चिंग हुकूमत के एक फ़ौजी जनरल।

लोकतांत्रिक दौर के जनरल

मा ज़ानचांग Ma Zhancang

मा ज़ानचांग 36 वें डिवीज़न के एक चीनी मुसलमान जनरल थे। जिसने जनरल मा ज़ोंगयिंग और मा हूशान Ma Zhongying and Ma Hushan के मातहत जंगें लड़ीं। काशग़र की जंग 1933) में, उसने शामी अरब तौफ़ीक़ बे Tawfiq Bay के नेतृत्व में उइग़ूर के हमले को पसपा कर दिया, जिससे तौफ़ीक़ ज़ख़मी हो गया। उसने किर्गीज़ और उइग़ूर लोगों के ख़िलाफ़ जंग लड़ी और काशग़र में उइग़ूर और किर्गीज़ जंगजुओं को शिकस्त देने के बाद पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत को ख़त्म कर दिया। इस के बाद यरकंद और यंगीसार की जंगों में जो 1934 CE में हुईं उसने किर्गीज़ और उइग़ूर लोगों को शिकस्त दी।[732] उसने उइग़ूर रहनुमा तैमूर बेग, अबदुल्लाह ब़गरा और नूर अहमद जान ब़गरा Timur Beg, Abdullah Bughra and Nur Ahmad Jan Bughra को क़त्ल किया।[733]

मा फ़ूयुआन Ma Fuyuan

मा फ़ू युआन भी नेशनल रिवोल्यूशनरी आर्मी के 36 वें डिवीज़न का अफ़सर था। वो भी काशग़र, यरकंद और यंगीसार की जंगों में पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत के ख़िलाफ़ लड़ा और उस को ख़त्म किया।[734] जंग के बाद मा फ़ूयुआन ने ऐलान किया कि उनका संबंध नानजिंग की लोकतांत्रिक हुकूमत से है और मा शाओवू Ma Shaowu काशग़र के नए टाओयिन Taoyin (गवर्नर) हैं।

मा ज़ानहाई Ma Zhanhai

मा ज़ानहाई चीनी मुस्लिम बटालियन के कमांडर थे जिसके अफ़सर आला मा बुफ़ांग थे। मा ज़ानहाई चिंगहाई तिब्बत जंग Qinghai Tibet War के दौरान लड़ते हुए मारे गए।

बाई चोंगशी Bai Chongxi

बाई चोंगशी, चियांग काई शेक के क़रीबी साथियों में से थे। शुरू में वो गुआंगशी Guangxi के जंगी सरदार थे और ली ज़ोंगरैन Li Zongren के साथ मिलकर उन्होंने गुआंगशी पर हुकूमत की। वो चीन के गणराज्य के पहले रक्षा मंत्री थे जो 1946-1948 तक अपने ओहदे पर रहे लेकिन जब चीन पर कम्युनिस्टों का क़ब्ज़ा हो गया तो वो ताइवान चले गए जहां 1966 CE में उनका इंतिक़ाल हुआ।

मा चिंग चियांग Ma Ching-chiang

मा चिंग चियांग चीनी लोकतांत्रिक फ़ौज के एक जनरल थे और चियांग काई शेक के क़रीबी सलाहकार थे।

अबदुल्लाह ब़गरा Abdullah Bughra

अबदुल्लाह ब़गरा एक उइग़ूर थे और पहली तुर्किस्तान जमहूरियत के एक अमीर थे और मुहम्मद अमीन ब़गरा के छोटे भाई थे और नूर अहमद जान ब़गरा के बड़े भाई थे। यह तीनों भाई पहली पूर्वी तुर्किस्तान के बड़े लीडरों में थे। नूर

अहमद ब्रगरा यंगीसार की 1934 CE जंग में लड़ते हुए मारे गए। हुई मुस्लिम फ़ौज जिसका नेतृत्व मा ज़ानचांग Ma Zhancang कर रहे थे ने उनका सर क़लम किया और उनके सर से फुटबॉल खेली गई। जब 1949 में चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की हुकूमत क़ायम हुई तो उनके बड़े भाई अमीन ब्रगरा हिन्दोस्तान चले गए और वहां से तुर्की चले गए, जहां 1965 CE में उनका इंतिक़ाल हुआ।

ख़ोजा नयाज़ Khoja Niyaz

ख़ोजा नयाज़ (दौर-ए-हुकूमत November 12, 1933–April 16, 1934) एक उइग़ूर जनरल थे और पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरियत के पहले सदर थे। बाद में उन्होंने शेंग शिकाई से गठबंधन कर लिया। काशग़र की जंग में शिकस्त के बाद शेंग शिकाई ने उन्हें जेल में क़ैद कर दिया जहां 14 महीने क़ैद में रहने के बाद उनको गला घोंटकर क़त्ल कर दिया गया।

साबित दमोला Sabit Damolla

साबित दमोला पहली तुर्किस्तान जमहूरियत के पहले वज़ीर-ए-आज़म थे जबकि ख़ोजा नयाज़ सदर थे।

ईसा यूसुफ़ अलप्तेकिन

Isa Yusuf Alptekin

ईसा यूसुफ़ अलप्तेकिन एक उइग़ूर लेकिन चीनी क़ौम परस्त थे, और क्योमिनटांग के एक अहम अफ़सर थे। उन्होंने पहली पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरिया और दूसरी पूर्वी तुर्किस्तान जमहूरिया दोनों की मुख़ालिफ़त की और उनके

ख़िलाफ़ लड़े। लेकिन जब शिंजियांग, कम्युनिस्ट कंट्रोल में आया तो अलप्तेकिन 1949 CE में चीन से जिला वतन हो गए। वो लद्दाख, कश्मीर होते हुए तुर्की चले गए और 1949 CE में वहीं उनका इंतिक़ाल हुआ।

मसूद साबरी Masud Sabri

मसूद साबरी, उइग़ूर नेता थे जिन्हों ने इली विद्रोह के दौरान शिंजियांग के गवर्नर के तौर पर ख़िदमात अंजाम दीं। उन्होंने कुलजा Kulja और इस्तंबोल में शिक्षा हासिल की। वो बीसवीं सदी में किसी भी चीनी सूबे के पहले ग़ैर हान गवर्नर नियुक्त हुए जिन को चियांग काई शेक ने नियुक्त किया था।

बुरहान शाहिदी Burhan Shahidi

वो 20 वीं सदी के दौरान शिंजियांग, के एक सियासी रहनुमा थे। 17 दिसंबर 1949 को शिंजियांग की सूबाई अवामी हुकूमत क़ायम हुई और बुरहान चेयरमैन बन गए। सैफ़ुद्दीन अज़ीज़ी डिप्टी चेयरमैन थे। उन्होंने साल के आख़िर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में शमूलियत इख़्तियार की। 1952 में, उन्होंने शिंजियांग उइग़ूर ऑटोनोमस इलाक़ा Xinjiang Uyghur Autonomous Region बनाने के लिए तैयारी कमेटी की अध्यक्षता की।

तैमूर बेग Timur Beg

वो शिंजियांग में 1933 में उइग़ूर फ़ौज के प्रमुख थे। वो 1933 की काशग़र की जंग में शामिल थे और इस से पहले तुरपान विद्रोह (1932) Turpan Rebellion में हिस्सा लिया था। वो तुर्क क़ौम परस्त नौजवान काशग़र पार्टी Young

Kashgar Party में शामिल हुए और अपने आपको "तैमूर शाह" का लक़ब दिया। वो और दूसरे उइग़ूर रहनुमा जैसे ब़गरा बिरादरान चीन से अलग होना चाहते थे। अगस्त 1933 में उनकी फ़ौजों पर जनरल मा ज़ानचांग के नेतृत्व में क़ौमी इन्क़िलाबी फ़ौज के 36 वें डिवीज़न ने हमला कर दिया। मा ज़ानचांग ने तैमूर को काशग़र में गोली मार कर क़त्ल कर दिया।

मा क्लीक़ के जंगी सरदार

Warlords of Ma clique

वैसे तो मा क्लीक़ के जंगी सरदारों के तफ़सीली हालात ऊपर बयान कर दिए गए हैं लेकिन यहां पर मुख़्तसर परिचय पेश किया जा रहा है।

मा बुफ़ांग Ma Bufang

मा क्लीक़ के आख़िरी और सबसे मक़बूल शासक थे।

मा ज़ोंगयिंग Ma Zhong Ying

उनको मा चुँगयिंग Ma Chung-ying भी कहा जाता है। वो क्योमिनटांग की मुस्लिम फ़ौज के 36 वें डिवीज़न के कमांडर थे। 1930 CE के दौरान और शिंजियांग में क्योमिनटांग की हुकूमत क़ायम करने के लिए जिन शूरेन के ख़िलाफ़ लड़े।

मा होंगकुई Ma Hongkui

मा होंगकुई चीनी लोकतांत्रिक इन्क़लाब के दौरान एक मशहूर फ़ौजी सरदार थे जिन्हों ने निंगशिया पर अपनी हुकूमत स्थापित की उनकी हुकूमत का ज़माना

13 June 1931–23 September 1949 है। 1950 के दौरान वो अमेरिका चले गए जहां 1970 में उनका इंतिक़ाल हुआ।

मा होंगबिन Ma Hongbin

मा होंगबिन भी मा क्लीक़ के गान्सू के गवर्नर रहे उस के बाद दो दफ़ा निंगशिया के गवर्नर बने।

मा लिन Ma lin

मा लिन 1931-1938 तक चिंगहाई के गवर्नर रहे वो मा ची के भाई थे।

मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang

मा फ़ूशियांग एक हुई जनरल थे चिंग के आख़री दौर में मा क्लीक़ के गवर्नर रहे। उन्होंने तीनों हुकूमतों के मातहत काम किया। शुरू में वो चिंग हुकूमत के जनरल थे। बाद में जब लोकतांत्रिक इन्क़लाब आया तो वो 1912 CE लोकतांत्रिक हुकूमत के चिंगहाई के गवर्नर बन गए और 1928 चियांग काई शेक के साथ शामिल हो गए। बॉक्सर विद्रोह के दौरान वो डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज कान्सू ब्रेव्स में शामिल थे जिन्हों ने लांगफांग की जंग में 8 देशों के गठबंधन को शिकस्त दी।

मा ची Ma Qi

मा ची, मा क्लीक़ के एक जंगी सरदार थे जो 1915-1928 तक मा क्लीक़ के चिंगहाई के गवर्नर रहे।

मा डुनजिंग Ma Dunjing

मा डुनजिंग, मा होंगकुई के बेटे थे। वो भी अपने पिता के साथ थे बाद में अमेरिका चले गए जहां वो चीन की असल ज़मीन को दोबारा हासिल करने की कमेटी Recovery of the Mainland Research Commission के 1954 में सदस्य नियुक्त हुए और 2003 CE में इंतिक़ाल हुआ।

मा हूशान Ma Hu-shan

मा हूशान, मा ज़ोंगयिंग के बहनोई थे। उन्होंने दक्षिणी शिंजियांग पर 1934-1937 तक हुकूमत की।[735] उस इलाक़े को डुंगनिस्तान भी कहा जाता था क्यों कि उस में डुंगन Dungan की आबादी ज़्यादा थी। इसी लिए मा हूशान को डुंगनिस्तान या टुंगनिस्तान का शहंशाह King of Tunganistan का लक़ब दिया गया।

मा चियानलिंग Ma Qianling

मा चियानलिंग भी मा ज़ानाओ के साथ चिंग हुकूमत के साथ आ गए थे डुंगन विद्रोह के दौरान।

मा फ़ूशू Ma Fushou

मा फ़ूशू, मा चियानलिंग के बेटे थे और मा फ़ूचाई, मा फ़ूलू और मा फ़ूशियांग के भाई थे।

मा फ़ूलू Ma Fulu

मा फ़ूलू भी उन लोगों में थे जिन्हों ने डुंगन विद्रोह के दौरान पाला बदल कर चिंग हुकूमत से गठबंधन कर लिया और डोंग फ़ूशियांग की फ़ौज में शामिल हो गए जिसने डुंगन विद्रोह को कुचलने में चिंग हुकूमत की मदद की। याद रहे डुंगन विद्रोह वो विद्रोह है जिसमें मुसलमानों ने चिंग हुकूमत के मज़ालिम (अत्याचारों) के ख़िलाफ़ विद्रोह किया लेकिन बाद में इन्हीं में से कुछ मुसलमानों ने पाला बदल कर चिंग हुकूमत से गठबंधन कर लिया और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगें लड़ कर इस विद्रोह को खतम किया।

मा अनलियांग Ma Anliang

मा अनलियांग (1855 – November 24, 1918) का इस्लामी नाम अबदुल मजीद था। वो मा ज़ानाओ के बेटे थे और मा गोलियांग उनके छोटे भाई थे। उनका संबंध ख़ुफ़िय्या नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिले से था। मा अनलियांग को इस बात के लिए जाना जाता है कि उन्होंने उन मुसलमानों का नेतृत्व किया जो डुंगन विद्रोह के दौरान पाला बदल कर चिंग हुकूमत से जा मिले थे और अपने ही मुसलमान भाइयों का ख़ून बहाया। मा अनलियांग ने याक़ूब बेग के ख़िलाफ़ भी जंगें लड़ीं और उस को हरा कर पूर्वी तुर्किस्तान के इलाक़े पर चिंग हुकूमत को दोबारा क़ब्ज़ा हासिल करने में मदद की। इस के बदले चिंग हुकूमत ने उन्हें शिंजियांग जनरल Xinjiang General और हीज़ू कर्नल Hezhou Colonel का लक़ब दिया। उन्होंने यहवानी सूफ़ी सिलसिले के प्रमुख मा वानफ़ू के क़त्ल में

भी चीनी हुकूमत की मदद की। उन्होंने बाईलॉंग विद्रोहियों के ख़िलाफ़ भी मोरचा लिया इसी दौरान शीडाओटांग के संस्थापक मा चीशी और उनके पूरे ख़ानदान को क़त्ल किया। इन ख़िदमात के बदले उनको 1912 में चीनी लोकतांत्रिक हुकूमत ने सारी उत्तर पश्चिमी northwestern मुस्लिम रियासतों का शासक बना दिया। वो 1918 तक उस ओहदे पर रहे। 1918 में उनके इंतिक़ाल के बाद मा फ़ूशियांग Ma Fuxiang उनके ओहदे पर नियुक्त हुए।[736]

मा बूचिंग Ma Buqing

मा बूचिंग, मा बुफ़ांग के छोटे भाई थे और चिंगहाई के फ़ौज के जनरल थे।

मा बुकांग Ma Bukang

मा ज़ोंगयिंग के ग़ायब होने के बाद मा बुकांग पश्चिमी गान्सू की फ़ौज के जनरल नियुक्त हुए। चीन में कम्युनिस्ट हुकूमत के क़ायम होने के बाद वो भी मा बुफ़ांग के साथ मिस्र चले गए।

मा जीयुआन Ma Jiyuan

मा जी युआन चीन के गणराज्य के दौर में मा क्लीक़ के जंगी सरदार थे, वो मा बुफ़ांग के इकलौते बेटे थे। उन्होंने उत्तर पश्चिमी सूबे चिंगहाई पर हुकूमत की। उन्होंने चीनी गृहयुद्ध के दौरान हीशुई अभियान, मेरिडियन रिज अभियान, और लांज़ू अभियान Heshui Campaign, Meridian Ridge Campaign, and the Lanzhou Campaign में कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ लोकतांत्रिक फ़ौज का नेतृत्व किया। मा ने 28 साल की उम्र में 1948 में हीशुई अभियान में पी एल ए के

30,000 सिपाहियों को शिकस्त दी। बाद में वो भी अपने पिता के साथ मिस्र चले गए और 27 February 2012 को मक्का में उनका इंतिक़ाल हुआ। उनके इंतिक़ाल पर सऊदी अरब में चीनी हुकूमत के कांसुलेट ने अफ़सोस का इज़हार किया।[737]

मा चैंगशियांग Ma Chengxiang

मा चैंगशियांग, मा चिंग के बेटे थे और मा बू चिंग और मा बुफ़ांग के कज़न थे। मा बूचिंग की बेटी से उनकी शादी हुई थी। वो क्योमिनटांग की ५ वीं घुड़सवार फ़ौज 5th cavalry army के कमांडर थे।

मा हाईयान Ma Haiyan

मा हाईयान भी उन लोगों में थे जो डुंगन विद्रोह के दौरान पाला बदल कर चिंग हुकूमत से जा मिले थे।

नेशनल रिवोल्यूशनरी आर्मी के 36 वें डिवीज़न के जनरल

मा शेंग कुई Ma Sheng-kuei

मा शेंग कुई भी 36 वें डिवीज़न के एक जनरल थे। 1933 CE में उन्होंने मा ज़ोंगयिंग और मा हूशान की फ़ौज में शमूलियत इख़्तियार की और डुंगन फ़ौज की दूसरी ब्रिगेड Tungan 2nd brigade के कमांडर बने जो खोतान में थी। बाद में उन्होंने पाला बदल कर शिंजियांग के गवर्नर शेंग शिकाई से गठबंधन कर लिया और मा हूशान के ख़िलाफ़ हो गए। माना जाता है कि वो बाद में गान्सू लौट आए।

मा चिनशू Su Chin-shou

यह भी 36 वें डिवीज़न के अफ़सर थे, पहले यह मा ज़ोंगयिंग और मा हूशान के मातहत काम कर रहे थे। बाद में वो यामेन Yamen शहर को ख़ाली कर के बाहर निकल गए और मा ज़ानचांग से जा मिले।[738] उनकी बिरादरी का नरसंहार हुआ जिसको किज़िल नरसंहार Kizil massacre कहा जाता है।[739]

पाई ज़ू ली Pai Tzu-li

यह भी 36 वें डिवीज़न के अफ़सर थे और मा ज़ोंगयिंग और मा हूशान के मातहत थे। उन्होंने ही मा हूशान को 1937 में काशग़र पर हमला करने के लिए

उकसाया था। बाद में वो मा हूशान के साथ हिन्दोस्तान की तरफ़ फ़रार हो गए लेकिन कहा जाता है कि रास्ते में उनको मा हूशान ने क़त्ल कर दिया।[740]

डू वैनशियू Du Wenxiu

डू वैनशियू, मा हुआ लौंग Ma Hua Long और मा ज़ानाओ वग़ैरह, पन्थे विद्रोह Panthay Rebellionके मुस्लिम लीडर थे। उनके ज़्यादातर साथियों ने हथियार डल दिए लेकिन डू वैनशियू ने हथियार नहीं डले और युन्नान Yunnan के शहर डाली में अपनी इस्लामी हुकूमत स्थापित की जिसको डाली सल्तनत Dali sultanate का नाम दिया गया। बाद में चिंग फ़ौज ने उनको शिकस्त दी, डू ने अफ़ीम खाकर ख़ुद को फ़ौज के हवाले कर दिया जिस ने उन्हें क़त्ल कर दिया और पूरे डाली शहर का नरसंहार किया जिसमें 40,000 से ज़्यादा मुसलमान मारे गए।

मा शेंगलिन Ma Shenglin

यह मा शाओवू Ma Shaowu के चचा थे और पन्थे विद्रोह के एक सरदार थे।

मा ज़ांशान Ma Zhanshan

मा ज़ांशान ने दूसरी चीन-ओ-जापान जंग में गुरिल्ला जंग की।

ज़ू बाओगूई Zuo Baogui

एक मुस्लिम चिंग जनरल थे। वो शानडोंग Shandong में पैदा हुए और कोरिया के पिंगयांग Pingyang की जापानियों से रक्षा करते में मारे गए।

मज़हबी शख़्सियात

Religious personalities

ची जिंगयी Qi Jingyi

एक सूफ़ी थे जिन्हों ने चीन में क़ादरिया Qadiriyyah सूफ़ी सिलसिले की बुनियाद रखी।

मा युआनज़ांग Ma Yuanzhang

जहरिय्या सूफ़ी Jahriyya Sufi लीडर थे।

वांग जिंग ज़ाई Wang Jingzhai

लोकतांत्रिक दौर के मशहूर इमाम हैं।

हू सोंगशान Hu Songshan

यह भी लोकतांत्रिक दौर के एक चीनी देश-भक्त थे और यहवानी Yihewani सुधारक थे।

लेखक

बाई शोयी Bai Shouyi

बाई शोयी (February 1909 – March 21, 2000) एक चीनी इतिहासकार थे जिन्हों ने हालिया चीनी इतिहास लेखन में इन्क़लाब बरपा किया और साईंसी खुदाइयों और रिपोर्टों की बुनियाद पर तारीख़ लिखने के लिए मशहूर हैं। उनकी किताब An outline history of China बहुत मशहूर है जो 2003 CE में बीजिंग की Zhonghua Book Company से छपी।

तिवाती तनियाज़ Tohti Tunyaz

इतिहासकार

ज़ांग चैंग ज़ी Zhang Chengzhi

एक इस्लामी लेखक।

पाई सेन-युंग Pai Hsien-yung

एक इस्लामी लेखक और बाई चोंगशि के बेटे हैं।

यूसुफ़ लियू बाओजुन Yusuf Liu Baojun

एक इस्लामी लेखक और इतिहासकार हैं।

अहलकार

मा शिनयी Ma Xinyi

चिंग हुकूमत के आख़िरी दौर के एक मुस्लिम मिलिट्री जनरल।

मा लिनयी Ma Linyi

गान्सू के शिक्षा मंत्री।

टांग केसान Tang Kesan

शिकांग Xikang में क्योमिनटांग Kuomintang के सदर।

ख़त्तात Calligrapher

नूर दीन मी गुआंगजियांग Noor Deen Mi Guangjiang

चीन में एक विशेष प्रकार की अरबी सुलेख विकसित हुई, जिसे चीनी लिपि या अल-सीनी लिपि कहा जाता है। इसी पत्र में मस्जिदों और कब्रों पर कुरान की आयतें, हदीसें और अन्य धार्मिक साहित्य लिखे गए हैं। उनके प्रसिद्ध समकालीन सुलेखक हाजी नूर दीन मी गुआंगजियांग हैं जिनका जन्म 1964 ई. में हुआ था और वे अभी भी जीवित हैं। हाजी नूर दीन का जन्म शानडोंग प्रांत में हुआ था, और वह हेनान, ज़ेंगज़ू के इस्लामिक कॉलेज में प्रोफेसर हैं और हेनान एकेडमी ऑफ साइंसेज में एक शोधकर्ता हैं। 1997 ई. में, हाजी नूर दीन को अरबी सुलेख में मिस्र में प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया और वह मिस्र सुलेख संघ के सदस्य भी हैं।[741]

Bibliography

Books

1. A. Acharya (2010). R.Gunaratna, W. Pengxin. *Ethnic Identity and National Conflict in China*, Springer, ISBN 9780230107878.
2. Johan Elverskog (2010). Buddhism And Islam on the Silk Road. University of Pennsylvania Press. ISBN 978-0-8122-4237-9.
3. Ahmad Hasan Dani (2003). Vadim Mikhaĭlovich Masson. UNESCO (2003-01-01). *History of Civilizations of Central Asia: Development in contrast: from the sixteenth to the mid-nineteenth century*. UNESCO. ISBN 9789231038761.
4. Eric Schluessel (2020). "Chinese Men Purchasing Musulman Brides". Land of Strangers: The Civilizing Project in Qing Central Asia. Columbia University Press. ISBN 978-0231552226.
5. Alastair Lamb (1991). *Kashmir: A Disputed Legacy, 1846-1990*. Roxford Books. ISBN 978-0907129066.
6. Alexander Mildred Cable (1944). Francesca French. *The Gobi desert*. Hodder and Stoughton. ISBN: 978-1138583566.
7. Aliya Ma Lynn (2007). *Muslims in China*. University of Indianapolis Press. ISBN 978-0-88093-861-7.
8. Allen S. Whiting (1958). Sheng Shih-ts'ai. *Sinkiang: Pawn or Pivot*? Michigan State University Press.
9. American Academy of Political and Social Science (1951). *Annals of the American Academy of Political and Social Science*, Nabu Press, ISBN: 978-1271324354.
10. Amier Saidula (2011). "The Nizari Ismailis of China in Modern Times". In Daftary, Farhad (ed.). *A Modern History of the Ismailis:*

Continuity and Change in a Muslim Community (Ismaili Heritage). London: I.B. Tauris. ISBN 9781845117177.

11. Andreas Gruschke (2001). *The Cultural Monuments of Tibet's Outer Provinces: The Qinghai part of Amdo*. White Lotus Press. ISBN 974-7534-59-2.
12. Andrew Forbes (1997, 2011). David Henley. *Traders of the Golden Triangle (Hui Muslims of Yunnan)*. Bangkok: Teak House, 1997; republished Chiang Mai: Cognoscenti Books, 2011. ASIN: B006GMID5K
13. Andrew D. W. Forbes (1986). *Warlords and Muslims in Chinese Central Asia: A Political History of Republican Sinkiang 1911–1949*. Cambridge University Press. ISBN 0-521-25514-7.
14. Andrew G. Walder (2015). *China Under Mao*. Harvard University Press. ISBN 978-0-674-05815-6.
15. Angela Schottenhammer (2009). The East Asian 'Mediterranean': Maritime Crossroads of Culture, Commerce and Human Migration (East Asian Economic and Socio-Cultural Studies) Otto Harrassowitz Verlag. ISBN 978-3447058094.
16. Anthony Best (2009). Michael Partridge, Paul Preston. *British documents on foreign affairs: reports and papers from the Foreign Office confidential print*. From 1951 through 1956. Asia, 1955. Burma, China and Formosa, Japan, and Korea, LexisNexis. ISBN 978-0-88692-723-3.
17. Anthony J. Howell (2009). Population Migration and Labor Market Segmentation: Empirical Evidence from Xinjiang, Northwest China. Michigan State University. ProQuest. ISBN 1-109-24323-5.
18. Anwar Rahman (2005). *Sinicization Beyond the Great Wall: China's Xinjiang Uighur Autonomous Region*. Matador. ISBN 9781904744887.

19. Arienne M. Dwyer (2007). Salar: A Study in Inner Asian Language Contact Processes, Part 1 (illustrated ed.). Otto Harrassowitz Verlag. ISBN 978-3447040914.
20. Arnold Henry Savage Landor (1901). China and the Allies. Andesite Press. ISBN: 978-1297596582.
21. Arthur Waldron (2003). *From War to Nationalism: China's Turning Point, 1924–1925 (illustrated, reprint, revised ed.).* Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-52332-5.
22. B. J. Ter Haar (2006). *Telling Stories: Witchcraft And Scapegoating in Chinese History*. Brill. ISBN 978-90-04-14844-4.
23. Bai Shouyi (2002). *An Outline History of China*. Beijing: Foreign Language Press. ISBN 7-119-02347-0.
24. Bai Shouyi (2003). *A History of Chinese Muslim*. Beijing: Zhonghua Book Company. ISBN 7-101-02890-X.
25. Badruddin Chini (1935). *Chini Musalman*. Maarif Press. Azamgarh, India.
26. Badruddin Chini (1949). Cheen-o-Arab Ke Taalluqat aur unke Nataij, Anjuman Taraqqi Urdu, Karachi, Pakistan, available on, https://www.rekhta.org/ebooks/detail/chin-o-arab-ke-taalluqat-aur-unke-nataij-badruddin-chini-ebooks retrieved on 14 March 2025.
27. Bo Yang (2000). *The Chinese Historical Outline*, People's Literature Publishing House. ISBN: 978-7020095186.
28. Brian Kennedy (2008). Elizabeth Guo, eds. *Chinese Martial Arts Training Manuals: A Historical Survey* (2, illustrated ed.). Blue Snake Books. ISBN 978-1583941942.
29. C.E. G. Bosworth (1995). van Donzel, E.; Heinrichs, W.P.; In Bosworth, C. E.; van Donzel, E.; Heinrichs, W. P. & Lecomte, G. (eds.). *The Encyclopaedia of Islam, New Edition, Volume VIII*: Chuang-Kuan Lin (1995). "P'u Shou-keng". Ned–Sam. Leiden: E. J. Brill. ISBN 978-90-04-09834-3.

30. C.T. Subairath (2011). "Calicut: A Centri-petal Force in the Chinese and Arab Trade (1200–1500)". *Proceedings of the Indian History Congress*. Vol. 72, Part-II (2011). pp. 1082–1089.
31. Cheng Gek Nai (1997). Osman Bakar (ed.). *Islam and Confucianism: A civilizational dialogue*. Centre for Civilizational Dialogue of University of Malaya by University of Malaya Press. ISBN 978-983-100-038-0.
32. Chih-yu Shih (2002). Zhiyu Shi. *Negotiating ethnicity in China: Citizenship as a response to the state*. Psychology Press. ISBN 978-0-415-28372-4.
33. Christian Tyler (2003). *Wild West China: The Taming of Xinjiang*. Rutgers University Press. ISBN 978-0-8135-3533-3.
34. David Brophy (2016). *Uyghur Nation: Reform and Revolution on the Russia-China Frontier*, Harvard University Press, ISBN: 978-0674660373.
35. David D. Wang (1999). *Under the Soviet shadow: The Yining Incident – Ethnic Conflicts and International Rivalry in Xinjiang, 1944-1949*. Hong Kong: The Chinese University Press. ISBN 962-201-831-9.
36. David G. Atwill (2005). The Chinese Sultanate, Islam, Ethnicity and Panthay Rebellion in Southwest China, 1856-1873. Stanford University Press California.
37. David J. Dallin (2013). "The Second Drive to the Pacific, Section Port Arthur" in *The Rise of Russia in Asia*. Read Books Ltd. ISBN 978-1473382572.
38. Dean King (2010). *Unbound: A True Story of War, Love, and Survival (illustrated ed.)*. Hachette Digital, Inc. ISBN 978-0-316-16708-6.
39. Demetrius Charles Boulger (1878). *The Life of Yakoob Beg, Athalik Ghazi and Badaulet, Ameer of Kashgar*. London: W. H. Allen. ISBN 0-7661-8845-0.

40. Dieter Heinzig (2015). *The Soviet Union and Communist China 1945-1950: The Arduous Road to the Alliance*. Routledge. ISBN 9781317454496.
41. Dudoignon Stéphane (2006). Hisao Komatsu, Yasushi Kosugi. *Intellectuals in the modern Islamic world: transmission, transformation, communication*. Taylor & Francis. ISBN 978-0-415-36835-3.
42. Dun J. Li (1978). *The Ageless Chinese*. Charles Scribner's Sons.
43. E. Bretschneider (1871). On the Knowledge Possessed by the Ancient Chinese of the Arabs and Arabian Colonies, and Other Western Countries, Mentioned in Chinese Books. London, Trubner & co.
44. E. Bretschneider (1888). Medieval Researches from Eastern Asiatic Sources: Fragments Toward the Knowledge of the Geography and History of Central and Western Asia from the 13th to the 17th Century, Volume 2. Legare Street Press. ISBN: 978-1017672183.
45. E. Ralph Perkins (1947). "Unsuccessful attempts to resolve political problems in Sinkiang; extent of Soviet aid and encouragement to rebel groups in Sinkiang; border incident at Peitashan". The Far East: China . Foreign Relations of the United States, 1947. Vol. VII. Washington, DC: United States Government Printing Office. Documents 450–495.
46. Edward L. Dreyer (2007). *Zheng He: China and the Oceans in the Early Ming Dynasty, 1405–1433*. New York: Pearson Longman. ISBN 978-0-321-08443-9.
47. Eric Shipton (1997). *The 6 Mountain-Travel Books*. The Mountaineers Books. ISBN 978-0-89886-539-4.
48. Erik Mueggler (2011). *The Paper Road: Archive and Experience in the Botanical Exploration of West China and Tibet.* A Philip e Lilienthal Book in Asian Studies, ACLS Humanities E-Book

(illustrated ed.). University of California Press. ISBN 978-0520269026.

49. Familiar The Moslem World (1941). Vol: 31. Hartford Seminary Foundation.
50. Frank Dikötter (June 06, 2017). *The Cultural Revolution: A People's History, 1962—1976*. Bloomsbury Publishing USA. ISBN 978-1-63286-423-9.
51. Fred Harris (2007). *The Arabic Scholar's Son: Growing Up in Turbulent North China (1927–1943)*. AuthorHouse. ISBN 978-1-4343-3692-7.
52. Frederic Wakeman (1986). *The Great Enterprise: The Manchu Reconstruction of Imperial Order in Seventeenth-Century China*. University of California Press. ISBN 978-0520048041.
53. Frederick Starr (2004). *Xinjiang: China's Muslim Borderland*. Routledge. ISBN 0-7656-1318-2.
54. Gardner Bovingdon (2010). *The Uyghurs: Strangers in Their Own Land*. Columbia University Press. ISBN 978-0-231-51941-0.
55. Gavan McCormack (1977). *Chang Tso-lin in Northeast China, 1911–1928: China, Japan, and the Manchurian Idea (illustrated ed.).* Stanford University Press. ISBN 978-0804709453.
56. Georg Vasel (1937). *My Russian jailers in China*. Translated from the German by Gerald Griffin. London: Hurst & Blackett.
57. George J. Scott (1900). & J. P. Hardiman. Ethnology with vocabularies. In *Gazetteer of Upper Burma and the Shan States*, 475-727. Rangoon: Superintendent of Government Printing of Burma.
58. Great Britain. Parliament. House of Commons (1871). *Accounts and papers of the House of Commons*.
59. Guo Jian (July 23, 2015). Yongyi Song. *Historical Dictionary of the Chinese Cultural Revolution*. Rowman & Littlefield. ISBN 978-1-4422-5172-4.
60. Joint Committee on Chinese Studies (U.S.) (1987).

61. H. Karpat Kemal (2001). *The Politicization of Islam: Reconstructing Identity, State, Faith, and Community in the Late Ottoman State*. Oxford University Press US. ISBN 0-19-513618-7.
62. Henry George Wandesforde (1969). Woodhead, Henry Thurburn Montague Bell. *The China yearbook*. Kraus Reprint. 1921.
63. Hisao Kimura (1990). Scott Berry. *Japanese Agent in Tibet: My ten years of travel in disguise*. Serindia Publications. ISBN 978-0906026243.
64. Hodong Kim (February 25, 2004). *Holy War in China: The Muslim Rebellion and State in Chinese Central Asia, 1864-1877*. Stanford University Press. ISBN 9780804767231.
65. Hok-lam Chan (1998). "The Chien-wen, Yung-lo, Hung-hsi, and Hsuan-te reigns, 1399–1435". *The Cambridge History of China, Volume 7*: The Ming Dynasty, 1368–1644, Part 1. Cambridge: Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-24332-2.
66. Hung-mao Tien (1972). Government and Politics in Kuomintang China, 1927–1937. Stanford University Press. ISBN 0-8047-0812-6.
67. Ildiko Beller-Hann (2016). *Situating the Uyghurs Between China and Central Asia*. Routledge. ISBN 978-1351899895.
68. *Inner Asia* (2002). Volume 4, Issues 1-2. The White Horse Press for the Mongolia and Inner Asia Studies Unit at the University of Cambridge.
69. Insight Guides (2017). Insight Guides China (Travel Guide with Free eBook). APA Publications Services. ISBN-139781786716361.
70. J. V. G. Mills (1970). Ying-yai Sheng-lan: 'The Overall Survey of the Ocean's Shores' [1433]. Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-01032-0.
71. Jacques Gernet (1996). *A History of Chinese Civilization*. UK: Cambridge University Press, ISBN 978-0521497817.

72. James A. Millward (1998). *Beyond the Pass: Economy, Ethnicity, and Empire in Qing Central Asia, 1759–1864 (illustrated ed.)*. Stanford University Press. ISBN 978-0804729338.
73. James A. Millward (2007). *Eurasian Crossroads: A History of Xinjiang*. New York: Columbia University Press. ISBN 978-0-231-13924-3.
74. James A. Millward (2014). "*The Chinese Border Wool Trade of 1880–1937*" University of Arizona. https://www.academia.edu/27070547/THE_HUI_AND_THE_CHINESE_BORDER_WOOL_TRADE_OF_1880_1937_1?sm=b retrieved on 10 July 2014.
75. James Frankel (2021). *Islam in China (Islam in Series)*. I.B. Tauris. ISBN 978-1784539818.
76. James Hastings (1916). John Alexander Selbie, Louis Herbert Gray. *Encyclopedia of religion and ethics*. *Volume 8*. Edinburgh: T. & T. Clark. Original from Harvard University.
77. Jane E. Elliott (2002). *Some Did It for Civilisation, Some Did It for Their Country: A Revised View of the Boxer War*. Hong Kong: Chinese University Press. ISBN 9622019730.
78. Jay Levenson (1991). National Gallery of Art (U.S.). *Circa 1492: Art in the Age of Exploration*. Yale University Press. ISBN 978-0-300-05167-4.
79. Jay Taylor (2009). *The Generalissimo: Chiang Kai-shek and the Struggle for Modern China*. Belknap Press of Harvard University Press. ISBN 978-0-674-03338-2.
80. Joanne Smith Finley (2013). *The Art of Symbolic Resistance*. BRILL. ISBN 9789004256781.
81. John Biddulph (2004). *Tribes of the Hindoo Koosh*. Adamant Media Corporation. ISBN: 978-1402152726.
82. John E. Wills (1998). "Relations with Maritime Europeans, 1514–1662". *The Cambridge History of China, Volume 8, Part 2: The*

Ming Dynasty, 1368-1644. Part 2. Cambridge: Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-24333-9.

83. John E. Young (2016). *Learning of the Way (Daoxue): Self-Cultivation Through Neo-Confucian Learning, Kungfu, and Martial Arts*. Archway Publishing. ISBN 978-1-4808-3049-3.
84. John King Fairbank (1978). The Cambridge History of China: Late Ch'ing, 1800-1911, pt. 2. Cambridge University Press. ISBN 978-0-521-22029-3.
85. John S. Guy (1986). *Oriental Trade Ceramics in South-East Asia, Ninth to Sixteenth Centuries (illustrated, revised ed.)*. Oxford University Press. ISBN 978-0195825930.
86. John W. Dardess (2012). *Ming China, 1368-1644: A Concise History of a Resilient Empire*. Rowman & Littlefield Publishers. ISBN 978-1-4422-0491-1.
87. Jonathan Karam Skaff (2012). *Sui-Tang China and Its Turko-Mongol Neighbors*. Oxford University Press. ISBN 978-0199734139.
88. Jonathan N. Lipman (2011). *Familiar Strangers: A History of Muslims in Northwest China*. University of Washington Press. ISBN 978-0295800554.
89. Joseph Fletcher (1980). *China's Inner Asian Frontier: Photographs of the Wulsin Expedition to Northwest China in 1923*. Harvard University Press. ISBN 0674119681.
90. Joseph Mitsuo Kitagawa (2002). *The religious traditions of Asia: religion, history, and culture (2, illustrated ed.)*. Psychology Press, ISBN 978-0-7007-1762-0.
91. Joseph Needham (1971). *Science and Civilisation in China.* Cambridge University Press. ISBN 978-0521057998.
92. Joseph W. Esherick (1987). *The Origins of the Boxer Uprising*. University of California Press. ISBN 0-520-06459-3.

93. Joseph W. Esherick (2006). Paul G. Pickowicz, Andrew G. Walder. *The Chinese cultural revolution as History*. Stanford University Press. ISBN 978-0-8047-5350-0.
94. Joy R. Lee (2006). *"The Islamic republic of eastern Turkestan and the formation of modern Uyghur identity in Xinjiang".* M.A Dissertation. Kansas State University.
95. Julia Ching (1993). *Chinese religions*. Macmillan. ISBN 978-0-333-53174-7.
96. Jun Jing (1998). *The Temple of Memories: History, Power, and Morality in a Chinese Village*. Stanford University Press. ISBN 0-8047-2757-0.
97. Justin Matthew Jacobs (2011). Empire besieged: the preservation of Chinese rule in Xinjiang, 1884-1971. San Diego, CA: University of California, San Diego. ISBN 9781124814070.
98. Kathleen Kuiper (2010). *The Culture of China*. The Rosen Publishing Group. ISBN 978-1-61530-140-9.
99. Kenneth Bourne (1992). Ann Trotter, Christopher Seton-Watson. British documents on foreign affairs--reports and papers from the Foreign Office confidential print - Part 2 From the First to the Second World War Series F Europe 1919 - 1939 Volume 5. University Publications of America. ISBN 0-89093-613-7.
100. Kenneth De Courcy (1948). Imperial Policy Group Great Britain. *Intelligence digest, Volumes 11-12*. Intelligence Publishing Company.
101. Kenneth Scott Latourette (1964). The Chinese, Their History and Culture, Volumes 1–2 (4, reprint ed.). Macmillan. ISBN 978-1017475814.
102. Lanny B. Fields (1978). *Tso Tsung-t'ang and the Muslims: statecraft in northwest China, 1868-1880*. Limestone Press. ISBN 9780919642850.

103. Lanxin Xiang (2003). *The Origins of the Boxer War: A Multinational Study*. Psychology Press. ISBN 0-7007-1563-0.
104. Larry Clinton Thompson (2009). *William Scott Ament and the Boxer Rebellion: Heroism, Hubris, and the "Ideal Missionary"*. Jefferson, NC: McFarland. ISBN 978-0-78645-338-2.
105. Leong H. Liew (2004). Shaoguang Wang. *Nationalism, Democracy and National Integration in China*. Taylor & Francis. ISBN 0203404297.
106. Lillian Craig Harris (1993). *China considers the Middle East*. I.B. Tauris. ISBN 1-85043-598-7.
107. Lin Bin (2005). Zheng He's Voyages Down the Western Seas. Compiled by the Information Office of Fujian Provincial People's Government. ISBN 9787508507088.
108. Lin Hsiao-ting (2010). *Modern China's Ethnic Frontiers: A Journey to the West*. Abingdon-on-Thames: Routledge. ISBN 9781136923920.
109. Linda Benson (1988). *The Kazaks of China: Essays on an Ethnic Minority*. Ubsaliensis S. Academiae. ISBN 978-91-554-2255-4.
110. Liu Xiaoyuan (2004). *Frontier passages: Ethnopolitics and the Rise of Chinese Communism, 1921-1945*. Stanford University Press. ISBN 0-8047-4960-4.
111. Louise Levathes (1996). *When China Ruled the Seas: The Treasure Fleet of the Dragon Throne, 1405–1433*. New York: Oxford University Press. ISBN 978-0-19-511207-8.
112. M. Rafiq Khan (1963). *Islam in China*. Delhi: National Academy.
113. M. Th. Houtsma (1993). A. J. Wensinck, T. W. Arnold. *Brill's First Encyclopaedia of Islam: 1913-1936*. Brill Academic Pub. ISBN 978-9004097964.
114. Mahesh Ranjan Debata (2008). *China's Minorities: Ethnic-religious Separatism in Xinjiang*. Pentagon Press. ISBN 978-81-8274-325-0.

115. Mao Zedong (1987). Michael Y. M. Kau. Laifong Leung. *Writing of Mao Zedong, 1949-1976 Vol. 1*. Routledge. ISBN 0-87332-391-2.
116. Maria Jaschok (October 11, 2013). Shui Jingjun Shui. *The History of Women's Mosques in Chinese Islam*. Routledge. ISBN 9781136838804.
117. Maris Boyd Gillette (2000). Between Mecca and Beijing: modernization and consumption among urban Chinese Muslims. Stanford University Press. ISBN 0-8047-3694-4.
118. Marsha E. Ackermann (2008). Michael Schroeder, Janice J. Terry, Jiu-Hwa Lo Upshur, Mark F. Whitters. *Encyclopedia of World History* (Facts on File Library of World History). ISBN 978-0816063864.
119. Marshall Broomhall (1966). *Islam in China: A neglected problem*. New York: Paragon Books.
120. Martin Norins (1944). *Gateway to Asia: Sinkiang, Frontier of Chinese Far West*. New York, John Day. ASIN: B0007E87OK.
121. Mary Clabaugh Wright (1957). *Last Stand of Chinese Conservatism: The T'ng-Chih Restoration, 1862-1874*. Stanford University Press. ISBN 0-8047-0475-9.
122. Matthew Erie (2013). *The Prophet And The Party: Shari'a And Sectarianism In China's Little Mecca*. Cornell University (PHD Thesis). DOI:10.1017/9781107282063.
123. Melvyn C. Goldstein (1991). *A history of modern Tibet, 1913-1951: the demise of the Lamaist state*. University of California Press. ISBN 0-520-07590-0.
124. Meng Wei (2010). "The Advent of Islam in China: Guangzhou Fanfang during the Tang-Song Era" (2010). All Theses and Dissertations (ETDs). 814. https://openscholarship.wustl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1813&context=etd

125. Mi Shoujiang (2004). Jia You. *Islam in China*. China Intercontinental Press. ISBN 978-7-5085-0533-6. ISBN 978-1118532720.
126. Michael Dillon (1999). *China's Muslim Hui Community: Migration, settlement and Sects*. Routledge. ISBN 0-7007-1026-4.
127. Michael E. Clarke (2011). *Xinjiang and China's Rise in Central Asia- A History*. Routledge. ISBN 9781136827068.
128. Min-ch'ien Tuk Zung Tyau (1922). *China awakened*. Isha Books. Reprint 2013. ISBN 978-9332810150.
129. Morris Rossabi ed. (2014). *From Yuan to Modern China and Mongolia: The Writings of Morris Rossabi*. Brill. ISBN 978-90-04-28529-3.
130. Muhammad bin Jarir Tabari (2004). *Tareekh e Tabari* (Urdu Translation) Vol 3. Nafis Academy Urdu Bazar Karachi, (Translated by Syed Muhammad Ibraheem Nadwi).
131. Nancy Shatzman Steinhardt (1981). *Imperial Architecture under Mongolian Patronage: Khubilai's Imperial City of Daidu*. Harvard University.
132. Obaidullah Fahad (2010). *Deewar-e-Cheen ke Saye Main* (Urdu). Kolkata: Hilal Publications.
133. Ondřej Klimes (January 8, 2015). *Struggle by the Pen: The Uyghur Discourse of Nation and National Interest, c.1900-1949*. BRILL. ISBN 978-90-04-28809-6.
134. Otto. Franke (1930). *Geschichte des Chinesischen Reiches. Eine Darstellung Seiner Entstehung, Seines Wesens und Seiner Entwicklung bis zur Neuesten Zeit: I. Band: Das Altertum und das Werden des Konfuzianischen Staates*. Berlin: Walter de Gruyter & Co.
135. Owen Lattimore (1950). *Pivot of Asia: Sinkiang and the Inner Asian Frontiers of China and Russia*. Boston: Little, Brown and Company. ASIN: B000OKWM20.

136. Owen Lattimore (1972). *The Desert Road to Turkestan*. AMS Press. ISBN 0-404-03887-5.
137. Pamela Kyle Crossley (2002). *A Translucent Mirror: History and Identity in Qing Imperial Ideology*. University of California Press. ISBN 978-0-520-23424-6.
138. Parshotam Mehra (2004). *From conflict to conciliation: Tibetan polity revisited : A brief historical conspectus of the Dalai Lama-Panchen Lama Standoff, ca. 1904-1989*. Otto Harrassowitz Verlag. ISBN 3-447-04914-6.
139. Paul A. Cohen (1998). *History in three keys: Tthe boxers as event, experience, and myth*. Columbia University Press. ISBN 978-0231106511.
140. Paul Allatson (2008). Jo. McCormack. Exile Cultures, Misplaced Identities. Critical Studies. Vol. 30 (illustrated ed.). Brill Academic Pub. ISBN 978-9042024069.
141. Paul Preston (2000). Michael Partridge, Antony Best. *British documents on foreign affairs: reports and papers from the Foreign Office confidential print*. From 1946 through 1950. Asia, Volume 1. University Publications of America. ISBN 1-55655-768-X.
142. Peter Fleming (1999). *News from Tartary: A Journey from Peking to Kashmir.* Marlboro Press. ISBN 9780810160712.
143. Peter Worthing (2016). *General He Yingqin: The Rise and Fall of Nationalist China*. Cambridge University Press. ISBN 9781107144637.
144. Philip Bowring (2019). *Empire of the Winds*. London, New York: I B Tauris & Co. Ltd. ISBN 9781788314466.
145. Philip S. Jowett (2017). *The Bitter Peace. Conflict in China 1928–37*. Stroud: Amberley Publishing. ISBN 978-1445651927.
146. R. G. Tiedemann (2007). "The Church Militant: Armed Conflicts between Christians and Boxers in North China", in Robert Bickers

and R.G. Tiedemann's (eds.). *The Boxers, China, and the World*. Plymouth: Rowman & Littlefield. ISBN 978-0-7425-5395-8.

147. Rajeswary Ampalavanar (2013). Brown and Justin Pierce *Charities in the Non-Western World: The Development and Regulation of Indigenous and Islamic Charities*. Routledge. ISBN 978-1317938521.
148. Ram Rahul (1990). *March of Central Asia*. New Delhi: Indus Publishing. ISBN 9788173871092.
149. Raphael Israeli (2002). *Islam in China: religion, ethnicity, culture, and politics*. Lexington Books. ISBN 9780739103753.
150. Raphael Israeli (2017). *The Muslim Midwest in Modern China*. Wipf and Stock Publishers. ISBN 978-1532637544.
151. Ray Huang (1966). *China: A Macro History*. Routledge. ISBN-13: 9781563247309.
152. Robert B. Edgerton (1997). *Warriors of the Rising Sun: A History of the Japanese Military*. WW Norton & Co. ISBN 0-393-04085-2.
153. Robert Bickers (2007). *The Boxers, China, and the World*. illustrated ed. Seattle: Rowman & Littlefield. ISBN 0742553957.
154. Robert L. Jarman (2001). *China Political Reports 1911-1960*. Cambridge Univ Press. ISBN 1-85207-930-4.
155. Robert R. Leonhard (2004). *"The China Relief Expedition Joint Coalition Warfare in China Summer 1900"*. The Johns Hopkins University Applied Physics Laboratory.
156. Roderick MacFarquhar (2006). Michael Schoenhals. *Mao's Last Revolution*. Harvard University Press. ISBN 978-0-674-02332-1.
157. Rodney Stich (2010). *Japanese and U.S. World War II Plunder and Intrigue*, Silverpeak Enterprises, ISBN: 0932438709, 9780932438706.
158. Rongxing Guo (July 15, 2015). *China's Spatial Disintegration: Political Economy of the Interethnic Unrest in Xinjiang*. Chandos Publishing. ISBN 9780081004036.

159. S. Frederick Starr (2011). *The Rise and Fall of the Kokand Khanate. Ferghana Valley: The Heart of Central Asia*. Routledge. ISBN 9781317470663.
160. Sarah C.M. Paine (1996). "Chinese Diplomacy in Disarray: The Treaty of Livadia". *Imperial Rivals: China, Russia, and Their Disputed Frontier*. Routledge. ISBN 9781563247248.
161. Shawn M. Patrick (01 May 2010). The Uyghur Movement: China’s Insurgency in Xinjiang ARMY COMMAND AND GENERAL STAFF COLL FORT LEAVENWORTH KS SCHOOL OF ADVANCED MILITARY STUDIES.
162. Stephane A. Dudoignon (2002). Hisao Komatsu. I*slam in Politics in Russia and Central Asia*. Routledge. ISBN 9780710307675.
163. Stephane A. Dudoignon (2019). *Devout Societies vs. Impious States?: Transmitting Islamic Learning in Russia, Central Asia and China Through the Twentieth Century*: Walter de Gruyter. ISBN: 978-3879973149.
164. Stephen G. Haw (2008). *A Traveller's History of China (5, illustrated ed.).* Interlink Books. ISBN 978-1-56656-486-1.
165. Stephen G. Haw (2006). *Marco Polo's China: A Venetian in the realm of Khubilai Khan*. Routledge. ISBN 0-415-34850-1.
166. Suad Joseph (2003). *Encyclopedia of women & Islamic cultures*, Volume 1 (illustrated ed.). Brill. ISBN 9004132473.
167. Sun Xiaoli (1997). "Isa Tarjaman". In Helaine Selin (ed.). *Encyclopedia of the History of Science, Technology, and Medicine in Non-Westen Cultures*. Springer. ISBN 9780792340669.
168. Suping Lu (2004). *They Were in Nanjing: The Nanjing Massacre Witnessed by American and British Nationals*. Hong Kong University Press. ISBN: 9789622096851.
169. Susan Naquin (December 16, 2000). *Peking: Temples and City Life, 1400–1900*. University of California Press. ISBN 978-0-520-92345-4.

170. Sven Hedin (1940). The Wandering Lake. Routledge.
171. Sven Hedin (1936). *The Flight of Big Horse; The trail of war in Central Asia*. New York: E.P. Dutton and Co. ASIN: B00085T30U
172. Sven Hedin (1945). Folke Bergman; Gerhard Bexell; Birger Bohlin; Gösta Montell. *History of the expedition in Asia, 1927-1935*, *Part 3*. Elanders Boktryckeri Aktiebolag.
173. Sven Hedin (2002). *Riddles of the Gobi Desert*. George Routledge and Sons. ISBN 81-206-1614-6.
174. Sven Hedin (2009). *The Silk Road: Ten Thousand Miles Through Central Asia* (reprint, illustrated ed.). I. B. Tauris. ISBN 978-1-84511-898-3.
175. Tan Hecheng (2017). *The Killing Wind: A Chinese County's Descent into Madness During the Cultural Revolution*. Oxford University Press. ISBN 978-0-19-062252-7.
176. Tan Ta Sen (2009). *Cheng Ho and Islam in Southeast Asia*. Iseas-Yusof Ishak Institute, ISBN: 978-9812308375.
177. Thomas A. Green (2003). Joseph R. Svinth, eds. *Martial Arts in the Modern World* (illustrated ed.). Greenwood Publishing Group. ISBN 0275981533.
178. Thomas Walker Arnold (1913). *The Preaching of Islam: A History of the Propagation of the Muslim Faith* London. Constable & Company LTD.
179. Touraj Atabaki (1998). John O'Kane. *Post-Soviet Central Asia*. I. B. Tauris. International Institute for Asian Studies (1998). ISBN 9781860643279.
180. Trudy Ring (1996). Robert M.Salkin, Sharon, eds. La Boda. *Asia and Oceania: International Dictionary of Historic Places*. Vol. 5 Taylor & Francis. ISBN 978-1-884964-04-6.
181. Ulrich Marzolph (2004). Richard van Leeuwen, Hassan Wassouf. *The Arabian Nights: An Encyclopedia*. Holtzbrinck. ISBN 978-1-57607-204-2.

182. Upton Close (2022). *In the Land of the Laughing Buddha- The Adventures of an American Barbarian in China*. Legare Street Press. ISBN 978-1019273319.
183. Uradyn Erden Bulag (2002). *The Mongols at China's Edge: History and the Politics of National Unity* (illustrated ed.). Rowman & Littlefield. ISBN 0742511448.
184. Victor Purcell (2010). *The Boxer Uprising: A Background Study*. Cambridge U.P. ISBN 9780521148122.
185. Vladimir (1956). Evdokia Petrov. Empire of Fear. London: Andre Deutsch. ASIN: B0042VX032.
186. Wan Lei (2017). The First Chinese Travel Record on the Arab World: Commercial and Diplomatic Communications during the Islamic Golden Age (PDF). مركز الملك فيصل للبحوث والدراسات الإسلامية ISBN: 9786038206218. https://kfcris.com/pdf/c2508c385dd7671ac18676b7178a955a58e09505b194a.pdf
187. Warren W. Smith (1997). *The Tibetan nation: A history of Tibetan nationalism and Sino-Tibetan relations*. Westview Press. ISBN 0-8133-3155-2.
188. Werner Draguhn (12 October 2012). David S.G. Goodman. China's Communist Revolutions: Fifty Years of The People's Republic of China. Routledge. ISBN 978-1-136-13090-8.
189. Who's Who in China (2018). (Biographies of Chinese). Vol. 4. Unknown Author. Forgotten Books. ISBN 978-0366676767.
190. William J. Bernstein (2009). *A Splendid Exchange: How Trade Shaped the World (Illustrated ed.).* Grove Press. ISBN 978-08021-4416-4.
191. Wong John (2002). *China's Post-Jiang Leadership Succession*. World Scientific Publishing. ISBN 9-812-70650-X.
192. Yufeng Mao (2007). *Sino-Muslims in Chinese Nation-building. 1906-1956* (Ph.D. Thesis). George Washington University.

193. Zhang Guanglin (2005). *Islam in China*. Beijing: China Intercontinental Press.
194. Zhang Tingyu (2011). *History of the Ming Dynasty*. Volume 132, Biography of Lan Yu. Zhonghua Book Company. ISBN 978-7101003277.
195. Zhao Erxun (1927). *The Draft History of Qing, volume 529*, Revised Edition, 1977, Zhonghua Book Company.
196. Zhidong Hao (2011). *Macau History and Society (illustrated ed.)*. Hong Kong University Press. ISBN 978-9888528370.
197. Zizhi Tongjian Vol. 218.
198. Zizhi Tongjian Vol. 219.
199. Hans van de Ven (2003). War and Nationalism in China: 1925–1945. London: Routledge. ISBN 978-0-415-14571-8.
200. Wang Zhenping (2005). Ambassadors from the Island of Immortals: China-Japan Relations in the Han-Tang Period. University of Hawaii Press. ISBN 0824828712.

Journal articles, magazines and book chapters

1. Alexander Jost (2019). "He Did Not Kiss the Earth Between His Hands": Arabic Sources on the Arrivals of the Zheng He Fleet in Aden and Mecca (1419–1432)". Chapter in *Early Global Interconnectivity across the Indian Ocean World*. Volume I by Angela Schottenhammer. Palgrave Macmillan. ISBN 978-3-319-97666-2.
2. American Asiatic Association (1940). *Asia: Journal of the American Asiatic Association*. Volume 40. Asia Pub. Co.
3. Angela Schottenhammer (2015). "Yang Liangyao's Mission of 785 to the Caliph of Baghdād: Evidence of an Early Sino-Arabic Power

Alliance?". *Bulletin de l'École française d'Extrême-Orient*. 101: 177–242.

4. Austin Ramzy (2008). "Jihad in China's Far West". Time. 6 August 2008. http://content.time.com/time/world/article/0,8599,1829791,00.html?xid=feed-cnn-topics retrieved on 19 November 2017.
5. Benjamin W. Fleisher (1922). *The Trans-Pacific*: A Financial and Economic Magazine of International Service. Japan: B. W. Fleisher, (n.d.).
6. Bruno De Cordier (2016). "International aid, frontier securitization and social engineering: Soviet-Xinjiang development cooperation during the Governorate of Sheng Shicai (1933–44)". *Central Asian Affairs*. 3.
7. China Heritage Newsletter (March 2006). Hui Legends of The Companions of The Prophet, *China Heritage Quarterly*, The Australian National University, No. 5, ISSN 1833-846. China Heritage Project, The Australian National University http://www.chinaheritagequarterly.org/articles.php?searchterm=005_legends.inc&issue=005
8. China Magazine (1940).
9. China Report (1984). China Report: Economic affairs (1984). Issues 92-97. Foreign Broadcast Information Service, Joint Publications Research Service. China.
10. David Bonovia (1981). "Easing the Grip on Minorities," *Far Eastern Economic Review*, May 15, 1981: 32-34.
11. Dilnoza Duturaeva (April 2017). Chengtan and Fulin: The Seljuqs in Chinese Sources. *Crossroads*. Vol. 15: 29-48. Available at: https://www.ostasien-verlag.de/zeitschriften/crossroads/cr/pdf/CR_15_2017_029-048_Duturaeva.pdf

12. Donald Daniel Leslie (1998). "The Integration of Religious Minorities in China: The Case of Chinese Muslims". Volume 59 of *George Ernest Morrison lecture in ethnology*, ISSN 0726-2523. Archived from the original: http://islamicpopulation.com/asia/China/China_integration%20of%20religious%20minority.pdf retrieved on 14 June 2024.
13. Dorothy J. Solinger (1982). "Politics in Yunnan Province in the Decade of Disorder: Elite Factional Strategies and Central-Local Relations, 1967-1980". *The China Quarterly*. 92 (92): 628–662.
14. Dru C. Gladney (1999). "The Salafiyya Movement in Northwest China: Islamic Fundamentalism among the Muslim Chinese?" Chapter in "*Muslim Diversity*: pp. 102–149. ISBN 9781315027593.
15. Dru C. Gladney (2003). "Islam in China: Accommodation or Separatism?". *The China Quarterly*. June 2003. pp. 451-467. DOI: https://doi.org/10.1017/S0009443903000275. Available at https://library.fes.de/libalt/journals/swetsfulltext/17041746.pdf
16. Dru C. Gladney (1987). "Muslim Tombs and Ethnic Folklore: Charters for Hui Identity. *Journal of Asian Studies*, August 1987, Vol. 46 (3): 495-532; pp. 48-49.
17. Dru C. Gladney (1996). Muslim Chinese: Ethnic Nationalism in the People's Republic. Volume 149 of Harvard East Asian monographs (2 ed.). Harvard University Press. ISBN 0-674-59497-5.
18. F. Gilbert Chan (1983). "Sheng Shih-ts'ai's reform programs in Sinkiang: idealism or opportunism?". *Journal of Modern History*. 12: 365-384. Available at https://www.mh.sinica.edu.tw/MHDocument/PublicationDetail/PublicationDetail_1025.pdf
19. Ghulamuddin Pahta (1986). "The Changing Status of Turkic Muslims in China's Uighur Autonomous Region (Traditionally Called 'Eastern Turkestan)'," *Doghu Turkistan'in Sesi* Voice of Eastern Turkistan, 3:10 1986. Available at:

https://turkistanilibrary.com/sites/default/files/the-changing-status-of-muslim.pdf

20. Hamada Hagras (2019). "Xi'an Daxuexi Alley Mosque: Historical and Architectural Study". *Egyptian Journal of Archaeological and Restoration Studies* "EJARS". 1: 97–113.
21. Hamada Hagras (20 December 2019). The Ming Court as Patron of the Chinese Islamic Architecture: The Case Study of the Daxuexi Mosque in Xi'an. *Shedet.* Article 8, Volume 6, Issue 6, 2019: 134-158. doi:10.36816/shedet.006.08.
22. Hans Kuhner (2001). "The Barbarians' Writing is like Worms, and their Speech is like the Screeching of Owls - Exclusion and Acculturation in the Early Ming Period". *Zeitschrift der Deutschen Morgenlandischen Gesellschaft*. Harrassowitz Verlag. Vol. 151, No. 2 (2001). pp. 407-429. JSTOR 43380301.
23. Hilda Ecsedy (1964). Uigurs and Tibetans in Pei-T'ing (790.791 A.D.). *Acta Orientalia* Vol. 17, No. 1 (1964). pp. 83-104.
24. Howard J. Dooley (2012). "The Great Leap Outward: China's Maritime Renaissance". *The Journal of East Asian Affairs*. 26 (1): 53–76. JSTOR 23257908.
25. Inaba Minoru (2010). Arab Soldiers in China at the time of An-Shi Rebellion. *The Memoirs of the Toyo Bunko*. 68, 2010. pp. 35-61. Available on: https://toyo-bunko.repo.nii.ac.jp/record/3149/files/Memoirs68_Inaba.pdf
26. J. J. L. Duyvendak (1939). The True Dates of the Chinese Maritime Expeditions in the Early Fifteenth Century. *T'oung Pao.* Second Series, Vol. 34, Livr. 5 (1939). pp. 341-413. Brill.
27. Jangwon Lee (2010). "China's Looking Seaward: Zheng He's Voyage in the 21st Century". *International Area Studies Review*. 13 (3): 89–110. doi:10.1177/223386591001300305. S2CID 154903952.
28. Jiang Chun (2001). & Guo Yingde, *Zhong a guanxi shi*, pp. 30-33. Available at:

https://openscholarship.wustl.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1813&context=etd

29. Jill S. Cowen (July–August 1985). "*Muslims in China: The Mosque*". *Saudi Aramco World*. pp. 30–35.
30. Jingyuan Qian (2014). "Too Far from Mecca, Too Close to Peking: The Ethnic Violence and the Making of Chinese Muslim Identity, 1821-1871" (2014). *History Honors Projects*. 27. https://digitalcommons.macalester.edu/history_honors/27
31. Jingzhong Niu (June 2007). Lina Fu. "Ma Fu-Xiang, The Suiyuan Governor in the Reign of the Northern Warlords". *Journal of Inner Mongolia Normal University* (Philosophy and Social Science).
32. John S. Guy (August 2003). 'Early Asian Ceramic Trade and the Belitung ('Tang') Cargo'. *Oriental Ceramic Society*. Vol. 66: 13-27. ISSN: 0306-0926.
33. Jonathan N. Lipman (July 1984). "Ethnicity and Politics in Republican China: The Ma Family Warlords of Gansu". *Modern China*. Sage Publications, Inc. 10 (3): 308. doi:10.1177/009770048401000302. JSTOR 189017. S2CID 143843569.
34. *Journal of Chinese Martial Studies* (01.2009).
35. Kerry Brown (1 July 2007). "The Cultural Revolution in Inner Mongolia 1967–1969: The Purge of the "Heirs of Genghis Khan"". *Asian Affairs*. 38 (2): 173–187. doi:10.1080/03068370701349128. ISSN 0306-8374. S2CID 153348414.
36. Li Dianrong (2009). "Du Wenxiu's Appeal to Beijing in the Daoguang Reign". Studies in Qing History. 2008 (4). *Chinese Studies in History*. Volume 43, 2009 - Issue 2. pp. 20-32.
37. Lin Hsiao-ting (2006). "War or Stratagem? Reassessing China's Military Advance towards Tibet, 1942–1943". The China Quarterly. Vol. 186: 446-462 ISSN: 0305-7410. DOI: https://doi.org/10.1017/S0305741006000233.

38. Ma Haiyun (2006). "Patriotic and Pious Muslim Intellectuals in Modern China: The Case of Ma Jian". *The American Journal of Islamic Social Sciences*. 23 (3): 57.
39. Mark Cheng (April 2002). "Legends of Kung Fu: North Vs. South". *Black Belt. Active Interest Media*. 40 (4): 116. ISSN 0277-3066.
40. Matsumoto Masumi (2004). "The completion of the idea of dual loyalty towards China and Islam" *Etudes orientales* No.21/22 (2004).
41. Michael Flecker (2000). A 9th-century Arab or Indian shipwreck in Indonesian waters. *The International Journal of Nautical Archaeology*. Vol 29 (2): 199-217. ISSN: 1057-2414.
42. Oriental Society of Australia (2000). The Journal of the Oriental Society of Australia, Volumes 31-34. Oriental Society of Australia. pp. 35-37.
43. Patrick Fuliang Shan (2003). The Development of the North Manchuria Frontier, 1900–1931. (Ph.D Thesis) Hamilton, Ontario: McMaster University.
44. Patrick Fuliang Shan (2017). "Hero, Heroism, and Hero-worship: An Analysis of the Chinese Collective Memory of Yang Jingyu," *American Review of China Studies* (vol. 18, no. 2, Fall 2017). pp. 43-65.
45. Paul K. Nietupski (2015). "Chapter 6 Islam and Labrang Monastery A Muslim community in a Tibetan Buddhist Estate". In *Muslims in Amdo Tibetan Society: Multidisciplinary Approaches. Studies in Modern Tibetan Culture*. Lexington Books. ISBN 978-0739175309.
46. Paul Knaplund (1961). *Gladstone-gordon Correspondence, 1851-1896*. American Philosophical Society. Selections from the private correspondence of a British Prime Minister and a colonial Governor, Volume 51. American Philosophical Society. ISBN 9780871695147.
47. Rasma Silde-Karklins (1975). "The Uighurs Between China and the USSR," *Canadian Slavonic Papers*. Revue Canadienne des Slavistes.

Volume 17. 1975 - Issue 2-3. pp. 341-364. https://doi.org/10.1080/00085006.1975.11091413.
48. Haraprasad Ray (1987b). "The Eighth Voyage of the Dragon that Never Was: An Enquiry into the Causes of Cessation of Voyages During Early Ming Dynasty". *China Report*. 23 (2): 157–178. doi:10.1177/000944558702300202. S2CID 155029177.pp. 161–162
49. Robert Finlay (2008). "The Voyages of Zheng He: Ideology, State Power, and Maritime Trade in Ming China". *Journal of the Historical Society*. 8 (3): 327–347. doi:10.1111/j.1540-5923.2008.00250.x.
50. S. Enders Wimbush (1987). "The China Story: Where Now Xinjiang?" *Islamic World Review*, 6:70 1987: 5-9. For the perspective of Eastern Turkestani emigrees.
51. Sally K. Church (2004). "The Giraffe of Bengal: A Medieval Encounter in Ming China". The Medieval History Journal. 7 (1): 1–37. doi:10.1177/097194580400700101.
52. Shi Yunli (January 2003). "The Korean Adaptation of the Chinese-Islamic Astronomical Tables". *Archive for History of Exact Sciences*, Springer, 57 (1): 25–60 [26], doi:10.1007/s00407-002-0060-z, ISSN 1432-0657, S2CID 120199426
53. Tan Sen Tan (2005). "Did Zheng He Set out To Colonize Southeast Asia?". Chapter in Admiral Zheng He & Southeast Asia, Institute of Southeast Asian Studies. ISBN 978-981-230-329-5.
54. Tekin Tuncer (2019). "Hamidullah Muhammed Tarım'ın "Turkistan Tarihi-Turkistan 1931-1937 İnkılâp Tarihi" Adlı Eserinde Mehmet Emin Buğra". *SUTAD (45): 127–141*. ISSN: 2458-9071 doi:10.21563/sutad.636158. S2CID 214296176. Available at: https://dergipark.org.tr/tr/download/article-file/836482
55. The Tibet Journal (1995). Volume 20. Library of Tibetan Works & Archives. Library of Tibetan Works & Archives. 1995.

56. Toh Hoong Teik (October 2000). Shaykh Alam: The Emperor of Early Sixteenth Century China, *Sino-Platonic Paper*s. 110: 1-20. ISSN: 2157-9679. Available on: http://www.sino-platonic.org/complete/spp110_wuzong_emperor.pdf
57. W. Petro (01 April 1933). "Mongolia, Kansu, and Sinkiang as seen by a member of the Haardt-Citroën expedition". *Journal of the Royal Central Asian Society*. 20 (2): 218. doi:10.1080/03068379308725247. ISSN 0035-8789.
58. Wan Lei (February 2010). "The Chinese Islamic "Goodwill Mission to the Middle East" During the Anti-Japanese War". *Dîvân Disiplinlerarasi Çalişmalar Dergisi*. 15 (29): 139–141. ISSN 1309-6834.
59. Wlodzimierz Cieciura (April 28, 2015). "Bringing China and Islam Closer: The First Chinese Azharites". *Middle East Institute*. ISSN 1940-3461. https://www.mei.edu/publications/bringing-china-and-islam-closer-first-chinese-azharites
60. Xiaogao (July1998). Wu-Monnat Grace. "Growing up with Wang Ziping & Madam Wang Jurang". https://www.kungfumagazine.com/magazine/article.php?article=84
61. Y. P. Met (1941). "The Stronghold of Muslim China". *The Muslim World*. 31 (2): 178–184. doi:10.1111/j.1478-1913.1941.tb00924.x.
62. Yuan Julian Chen (11 October 2021). "Between the Islamic and Chinese Universal Empires: The Ottoman Empire, Ming Dynasty, and Global Age of Explorations". *Journal of Early Modern History*. Vol. 25 (5): 422–456, ISSN 1385-3783.
63. Yufeng Mao (2011a). "A Muslim Vision for the Chinese Nation: Chinese Pilgrimage Missions to Mecca during World War II". *The Journal of Asian Studies. 70 (2)*: 386–387. doi:10.1017/S0021911811000088.
64. Yufeng Mao (2011b). "Muslim Educational Reform in 20th-Century China: The Case of the Chengda Teachers Academy". *Extrême-*

Orient Extrême-Occident. pp. 143-170. November 2011. DOI:10.4000/extremeorient.193. Available at: https://journals.openedition.org/extremeorient/193
65. Zvi Ben-Dor Benite (2008). "Nine Years in Egypt: Al-Azhar and the Arabization of Chinese Islam". *HAGAR Studies in Culture, Polity and Identities.* Vol. 8 (1): 1-21.

News

1. Ahmed Rashid (14 January 2002). "They're Only Sleeping: Why militant Islamicists in Central Asia aren't going to go away". The New Yorker. https://www.newyorker.com/magazine/2002/01/14/theyre-only-sleeping retrieved on 11 June 2024.
2. Amnesty International (January 2, 2007). China: Remember the Gulja massacre? China's crackdown on peaceful protesters". https://www.amnesty.org/en/documents/asa17/002/2007/en/ retrieved on 11 June 2024.
3. Ann Riley (October 21, 2009). "China officials 'disappeared' Uighurs after Xinjiang riots: HRW". https://www.jurist.org/news/2009/10/china-officials-disappeared-uighurs/ retrieved on 11 June 2024.
4. Associated Press Cable (March 17, 1934). "Tungans sack Kashgar City, Slaying 2,000". The Montreal Gazette.
5. Bloomberg News (July 5, 2009). China Says 140 Die in Riot, Uighur Separatists Blamed".
6. China Daily News. (October 25, 2001). Xinjiang to intensify crackdown on separatists".
7. David Barboza (October 11, 2009). "China Sets Sentences in Brawl Tied to Riot". The New York Times.

https://www.nytimes.com/2009/10/12/world/asia/12china.html retrieved on 11 June 2024.

8. Evening Post (September 25, 1900). "The Powers and China". *Evening Post*. LX 74. 25 September 1900. p. 4.
9. Hannah Beech (August 21, 2014). “If China Is Anti-Islam, Why Are These Chinese Muslims Enjoying a Faith Revival?” Time, August 21, 2014, http://time.com/3099950/china-muslim-hui-xinjiang-uighur-islam/ retrieved on 11 June 2024.
10. He Qinglian (2011). "The thousands of forgotten innocent victims—the massacre of Shaoyang County, Hunan 1968". Articles by He Qinglian (何清涟). https://hqlenglish.blogspot.com/2011/09/forgotten-victims-of-shaoyang-county.html retrieved on 11 June 2024.
11. Hu Yinan (October 12, 2009). "Death for factory fight inciter". China Daily. https://www.chinadaily.com.cn/cndy/2009-10/12/content_8777654.htm retrieved on 11 June 2024.
12. Jonathan Watts (July 10, 2009). "Old suspicions magnified mistrust into ethnic riots in Urumqi. https://www.theguardian.com/world/2009/jul/10/china-riots-uighurs-han-urumqi retrieved on 11 June 2024.
13. Khalid Zainab (4 January 2011). "Rise of the Veil: Islamic Modernity and the Hui Woman". SIT Graduate Institute - Study Abroad: 8, 11. Available at: https://digitalcollections.sit.edu/isp_collection/1074/ retrieved on 11 June 2024.
14. Kristian Petersen (2021). The Rich History of China’s Islam, https://newlinesmag.com/essays/the-rich-history-of-chinas-islam/ retrieved on 11 June 2024.
15. Malcolm Moore (March 7, 2013). "How China came to worship the mango during the Cultural Revolution". The Daily Telegraph. Beijing.

https://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/asia/china/9914895/How-China-came-to-worship-the-mango-during-the-Cultural-Revolution.html retrieved on 11 June 2024.

16. Maureen Fan (January 8, 2007). Raid by Chinese Kills 18 At Alleged Terror Camp. https://www.washingtonpost.com/archive/politics/2007/01/09/raid-by-chinese-kills-18-at-alleged-terror-camp/098e6f5d-b53a-463f-9b4c-5197b42a89c1/ retrieved on 11 June 2024.
17. Middlesboro Daily News (May 14, 1938). Japanese Stalled in Drive through Mongolian Area. page XIX. https://news.google.com/newspapers?id=64VCAAAAIBAJ&sjid=E6sMAAAAIBAJ&pg=2996,3679068&dq=chinese%20japanese%20moslem&hl=en retrieved on 11 June 2024.
18. Reuters (July 6, 2009). "Labor Violations Exacerbate Ethnic Tensions in South China". GovITExpo.com.
19. South China Morning Post (May 11, 2016). How political hatred during Cultural Revolution led to murder and cannibalism in a small town in China. https://web.archive.org/web/20160516153157/https://www.scmp.com/news/china/policies-politics/article/1943581/how-political-hatred-during-cultural-revolution-led retrieved on 11 June 2024.
20. The Montreal Gazette (October 11, 1933). Fighting is Severe, Tungans and Turkish Clash in Chinese Turkestan".
21. The New York Times (March 17, 1934). "British Officials and 2,000 Natives Slain At Kashgar, on Western Border of China". The New York Times. https://www.nytimes.com/1934/03/17/archives/british-officials-and-2000-natives-slain-at-kashgar-on-western.html retrieved on 11 June 2024.
22. Time (Oct 3, 1949)."Foreign News: The Northwest Falls". *TIME*. Oct 3, 1949. retrieved on 11 June 2024.

23. Tokyo Nichi Nichi (December 13, 1937). Contest to kill 100 people using a sword. https://military-history.fandom.com/wiki/Contest_to_kill_100_people_using_a_sword retrieved on 11 June 2024.
24. Uighur Developments in the 1990s". https://www.globalsecurity.org/military/world/war/uighur-5.html retrieved on 11 June 2024.
25. Yan Hao (July 18, 2009). Geng Ruibin and Yuan Ye. "Xinjiang riot hits regional anti-terror nerve". Chinaview.cn. Xinhua. https://www.chinadaily.com.cn/china/2009-07/18/content_8445811.htm retrieved on 11 June 2024.
26. Yu Le (January 26, 2010). "China sentences four more to death for Urumqi riot". Reuters. https://www.reuters.com/article/idUSSGE60P0BZ/ retrieved on 11 June 2024.

Web pages

1. David D. Wang (1993). The USSR and the Establishment of the Eastern Turkistan Republic in Xinjiang, https://www.mh.sinica.edu.tw/MHDocument/PublicationDetail/PublicationDetail_750.pdf retrieved on 11 June 2024.
2. John W. Chaffee (2018). The Muslim Merchants of Premodern China: The History of a Maritime Asian Trade Diaspora, 750–1400" Cambridge University Press. ISBN: 978-1107684041.
3. https://www.cambridge.org/core/books/muslim-merchants-of-premodern-china/merchants-of-an-imperial-trade/2736CF75BA700D965FAA934381F261EC/core-reader#:~:text=One%20day%20in%20late%20September,storehouses%20before%20departing%20by%20sea.

4. https://en.wikipedia.org/wiki/Shunzhi_Emperor retrieved on 20 November 2024.
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Kangxi_Emperor retrieved on 20 November 2024.
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Mingxin retrieved on 26 December 2024.
7. https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 26 December 2024
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Jiaqing_Emperor retrieved on 20 November 2024.
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Aqsaqal retrieved on 11 June 2024.
10. https://en.wikipedia.org/wiki/Panthay_Rebellion retrieved on 20 March 2025.
11. http://self.gutenberg.org/articles/eng/Dungan_revolt_1862%E2%80%9377 retrieved on 17 July 2017.
12. https://en.wikipedia.org/wiki/Dungan_Revolt_(1862–1877) retrieved on 09 January 2024.
13. https://en.wikipedia.org/wiki/New_36th_Division retrieved on 23 June 2024.
14. https://en.wikipedia.org/wiki/Muslim_conflict_in_Gansu_(1927–1930) retrieved on 19 Jan 2025.
15. https://en.wikipedia.org/wiki/Yan_Xishan retrieved on 18 Jan 2025.
16. https://en.wikipedia.org/wiki/Nanjing_Massacre retrieved on 26 July 2017.
17. http://www.chinaknowledge.de/History//Qing/qing-event-1765rebellioninushturpan.html retrieved on 20 November 2024.
18. https://en.wikipedia.org/wiki/Canton_Coup retrieved on 01 July 2024.
19. https://en.wikipedia.org/wiki/Second_United_Front retrieved on 01 July 2024.

20. https://en.wikipedia.org/wiki/Proclamation_of_the_People%27s_Republic_of_China retrieved on 02 July 2024.
21. https://en.wikipedia.org/wiki/Nasr_al-Din_(Yunnan) retrieved on 27 March 2025.
22. http://www.dreadnoughtproject.org/tfs/index.php/Boxer_Rebellion_Despatches_(Royal_Navy) retrieved on 22 March 2025.
23. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Rulong_(Qing_general) retrieved on 23 December 2024.
24. https://en.wikipedia.org/wiki/Yusuf_Ma_Dexin retrieved on 24 September 2024.
25. http://www.360doc.com/content/10/0526/12/1256060_29592130.shtml retrieved on 11 June 2024.
26. https://en.wikipedia.org/wiki/Xunhua_Incident retrieved on 12 Feb 2025.
27. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Laichi retrieved on 14 Jan 2025.
28. http://www.bbc.co.uk/religion/religions/islam/history/china_1.shtml retrieved on 11 June 2024.
29. http://www.executedtoday.com/2011/12/26/1872-du-wenxiu-panthay-rebellion-leader/ retrieved on 14 July 2017.
30. http://www.iranicaonline.org/articles/ahmad-kasani retrieved on 18 July 2017.
31. http://www.rfa.org/english/multimedia/timeline/UyghurUnrest.html. retrieved on 18 November 2017.
32. https://en.wikipedia.org/wiki/Afaq_Khoja retrieved on 19 July 2017.
33. https://en.wikipedia.org/wiki/Basmachi_movement retrieved on 11 June 2024.
34. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Aksu_ (717) retrieved on 11 June 2024.
35. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Langfang 07 February 2023.

36. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Talas retrieved on 11 June 2024.
37. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Toksun retrieved on 11 June 2024.
38. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Wuyuan retrieved on 25 November 2022.
39. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Yiwu retrieved on 06 June 2023.
40. https://en.wikipedia.org/wiki/Beiyang_government retrieved on 26 June 2024.
41. https://en.wikipedia.org/wiki/Bonan_people retrieved on 09 August 2022.
42. https://en.wikipedia.org/wiki/Central_Plains_War retrieved on 15 December 2022.
43. https://en.wikipedia.org/wiki/Chiang_Kai-shek retrieved on 13 Feb 2024
44. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Sekes_Tash retrieved on 17 September 2017.
45. https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Islamic_cuisine retrieved on 10 August 2022
46. https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Muslims_in_the_Second_Sino-Japanese_War retrieved on 09 May 2023.
47. https://en.wikipedia.org/wiki/Uyghurs retrieved on 27 March 2025.
48. https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Tajiks retrieved on 29 May 2023.
49. https://en.wikipedia.org/wiki/Cultural_Revolution retrieved on 31 May 2023.
50. https://en.wikipedia.org/wiki/Dali_Kingdom retrieved on 11 June 2024.
51. https://en.wikipedia.org/wiki/Dongxiangs retrieved on 03 August 2022.

52. https://en.wikipedia.org/wiki/First_East_Turkestan_Republic retrieved on 05 April 2024.
53. https://en.wikipedia.org/wiki/First_Zhili–Fengtian_War retrieved on 21 Jan 2023.
54. https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Black_Categories, retrieved on 04 June 2017.
55. https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Punishments retrieved on 11 June 2024.
56. https://en.wikipedia.org/wiki/Four_Olds retrieved on 27 March 2025.
57. https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Red_Categories, retrieved on 04 June 2017.
58. https://en.wikipedia.org/wiki/Guangdong_Cultural_Revolution_Massacre retrieved on 11 June 2024.
59. https://en.wikipedia.org/wiki/Guangxi_Massacre retrieved on 31 May 2023.
60. https://en.wikipedia.org/wiki/Hala_Bashi retrieved on 11 June 2024.
61. https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_Islam_in_China retrieved on 11 June 2024.
62. https://en.wikipedia.org/wiki/Hui_people retrieved on 28 July 2022.
63. https://en.wikipedia.org/wiki/Inner_Mongolia_incident retrieved on 31 May 2023.
64. https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
65. https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Song_dynasty retrieved on 12 June 2024.
66. http://www.chinaknowledge.de/History/Terms/jimi.html retrieved on 20 January 2021.
67. https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_in_China retrieved on 08 June 2023.

68. https://en.wikipedia.org/wiki/Ispah_rebellion retrieved on 10 April 2024.
69. https://en.wikipedia.org/wiki/Jingtang_Jiaoyu retrieved on 09 June 2023.
70. https://en.wikipedia.org/wiki/Kazakhs retrieved on 30 July 2022.
71. https://en.wikipedia.org/wiki/Kumul_Khanate retrieved on 22 April 2024.
72. https://en.wikipedia.org/wiki/Kumul_Rebellion retrieved on 27 November 2022.
73. https://en.wikipedia.org/wiki/Lan_Yu_(general) retrieved on 27 May 2022.
74. https://en.wikipedia.org/wiki/Li_Zhi_(philosopher) retrieved on 15 July 2023.
75. https://en.wikipedia.org/wiki/Lin_Nu retrieved on 14 July /2023.
76. https://en.wikipedia.org/wiki/Liu_Wenlong retrieved on 17 May 2023.
77. https://en.wikipedia.org/wiki/Long_March retrieved on 15 September 2022
78. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Anliang retrieved on 10 November 2022.
79. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Biao_general retrieved on 24 July 2017
80. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang retrieved on 03 January 2023.
81. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang_Mansion retrieved on 24 August 2017.
82. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Fuxiang retrieved on 09 April 2024.
83. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Haiyan retrieved on 18 December 2022.

84. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Jiyuan retrieved on 18 December 2022.
85. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Qi retrieved on 01 January 2023.
86. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Xianda retrieved on 25 October 2022
87. https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Zhongying retrieved on 15 December 2022.
88. https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_conquest_of_Yunnan retrieved on 13 July 2023.
89. https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022.
90. https://en.wikipedia.org/wiki/Muhammad_Khudayar_Khan retrieved on 7 January 2023.
91. https://en.wikipedia.org/wiki/Nasr_al-Din_(Yunnan) retrieved on 19 July 2024.
92. https://en.wikipedia.org/wiki/Nasruddin_Khan retrieved on 7 January 2023.
93. https://en.wikipedia.org/wiki/Nine_familial_exterminations retrieved on 27 May 2022
94. https://en.wikipedia.org/wiki/Ningxia retrieved on 30 May 2023.
95. https://en.wikipedia.org/wiki/Noor_Deen_Mi_Guangjiang retrieved on 15 September 2022
96. https://en.wikipedia.org/wiki/Pavel_Pappengut retrieved on 12 May 2023.
97. https://en.wikipedia.org/wiki/Pu_Shougeng retrieved on 26 May 2022
98. https://en.wikipedia.org/wiki/Qi_Jingyi retrieved on 02 October 2022.
99. https://en.wikipedia.org/wiki/Revolt_of_the_Altishahr_Khojas retrieved on 19 July 2017.

100. https://en.wikipedia.org/wiki/Ruijin_Massacre retrieved on 02 June 2023.
101. https://en.wikipedia.org/wiki/Second_East_Turkestan_Republic retrieved on 01 October 2017.
102. https://en.wikipedia.org/wiki/Second_Zhili–Fengtian_War retrieved on 6 February 2024.
103. https://en.wikipedia.org/wiki/Shadian_incident retrieved on 17 September 2022
104. https://en.wikipedia.org/wiki/Shaoyang_County_Massacre retrieved on 02 June 2023.
105. https://en.wikipedia.org/wiki/Sheng_Shicai retrieved on 18 May 2023
106. https://en.wikipedia.org/wiki/Struggle_session retrieved on 07 April 2024.
107. https://en.wikipedia.org/wiki/Su_Chin-shou retrieved on 11 June 2024.
108. https://en.wikipedia.org/wiki/Su_fei-erh retrieved on 07 April 2024.
109. https://en.wikipedia.org/wiki/War_in_Ningxia_(1934) retrieved on 18 September 2024.
110. https://en.wikipedia.org/wiki/The_Hundred-word_Eulogy retrieved on 6 June 2022.
111. https://en.wikipedia.org/wiki/Turghun_Almas retrieved on 11 June 2024.
112. https://en.wikipedia.org/wiki/Wang_Ju-Rong retrieved on 11 June 2024.
113. https://en.wikipedia.org/wiki/Wang_Ziping retrieved on 08 June 2023.
114. https://en.wikipedia.org/wiki/Xidaotang retrieved on 08 October 2022.
115. https://en.wikipedia.org/wiki/Yangjiang_Massacr retrieved on 02 June 2023.

116. https://en.wikipedia.org/wiki/Yaqub_Beg retrieved on 18 July 2017.
117. https://en.wikipedia.org/wiki/Yeheidie%27erding retrieved on 26 May 2022
118. https://en.wikipedia.org/wiki/Young_Kashgar_Party retrieved on 12 May 2023
119. https://en.wikipedia.org/wiki/Zamorin retrieved on 23 June 2022
120. https://en.wikipedia.org/wiki/Zhao_Jianmin_Spy_Case retrieved on 02 June 2023.
121. https://en.wikipedia.org/wiki/Zhengde_Emperor retrieved on 11 June 2024.
122. https://en.wikipedia.org/wiki/Zhili%E2%80%93Anhui_War retrieved on 13 November 2022.
123. https://factsanddetails.com/china/cat5/4sub6/entry-4342.html retrieved on 09 August 2022.
124. https://journals.openedition.org/chinaperspectives/230 retrieved on 27 September 2022.
125. https://military-history.fandom.com/wiki/Battle_of_Baitag_Bogd retrieved on 29 May 2023
126. https://www.globaleast.org/wp-content/uploads/2020/02/Document_no._19_1982.pdf
127. https://www.thoughtco.com/the-battle-of-talas-195186 retrieved on 23 March 2016
128. https://www.topchinatravel.com/china-muslim/muslin-in-gansu.htm retrieved on 06 April 2024.
129. https://www.wushuindia.com/duanwei.html retrieved on 12 October 2022.
130. Mark Dickens (1990). The Soviets in Xinjiang 1911-1949, pp.1-33. http://www.academia.edu/398262/The_Soviets_In_Xinjiang, 27/09/2017.

131. New Long March 2 (2007). Fourth Front Army Archived September 28, 2007, at the Wayback Machine (retrieved November 23, 2006) retrieved on 15 September 2022.
132. Sha Min (March 3, 2016). Arabic Literary Translations in China: A Brief History, https://arablit.org/2016/03/03/arabic-literary-translations-in-china-a-brief-history/ retrieved on 19 June 2024.
133. Steen Ammentorp (2000–2009). "The Generals of WWII Generals from China Ma Yuanxiang". https://generals.dk/general/Ma_Yuanxiang/_/China.html retrieved on 20 June 2010.

Endnotes

[1] Marshall Broomhall (1966). p.15.
[2] Angela Schottenhammer (2015). p.179. See also Bai Shouyi (2003). p. 245.
[3] John W. Chaffee (2018).
[4] प्राचीन चीन में, कोई कैलेंडर नहीं था, इसलिए तिथियां निर्धारित करने के लिए, प्रत्येक राजा के शासनकाल को एक नाम दिया जाता था, और जो राजा लंबे समय तक शासन करते थे, उन्हें 2 या 3 अवधियों में विभाजित किया जाता था। प्रत्येक अवधि की शुरुआत किसी यादगार घटना से होती थी।
[5] ली प्राचीन चीन में उपयोग की जाने वाली भूमि का एक माप था, 1 ली लगभग 500 मीटर के बराबर होता है।
[6] Angela Schottenhammer (2015). pp. 200-201.
[7] हज़रत अबू बक्र सिद्दीकी की खिलाफत के दौरान हिरा शहर फ़तह हुआ।
[8] E. Bretschneider (1871). pp. 15-16.
[9] Muhammad bin Jarir Tabari (2004). pp. 191-192.
[10] China Heritage Newsletter (March 2006).
[11] M. Rafiq Khan (1963). p.2.
[12] Thomas Walker Arnold (1913). p. 224.
[13] Obaidullah Fahad (2010). p.14.
[14] http://www.bbc.co.uk/religion/religions/islam/history/ china_1.shtml retrieved on 11 June 2024.
[15] Badruddin Chini (1935). pp. 15-16.
[16] Ibid. p. 18.
[17] "मुहम्मद का जीवन" लियू ज़ी चीनी प्रकाशित पेकिंग 1924 See also Badruddin Chini (1935). p. 21.
[18] Badruddin Chini (1935). pp. 21-22.
[19] Thomas Walker Arnold (1913). p.223.
[20] Jonathan Karam Skaff (2012). pp. 146-147.
[21] Dilnoza Duturaeva (April 2017). p.4.
[22] Angela Schottenhammer (2015). p.192.
[23] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
[24] http://www.chinaknowledge.de/History/Terms/jimi.html retrieved on 20 January 2021.
[25] Meng Wei (2010). p.24.
[26] Ibid.
[27] Thomas Walker Arnold (1913). p.223.
[28] Badruddin Chini (1949). p.42.
[29] M. Rafiq Khan (1963). p.2-3.
[30] Badruddin Chini (1935). pp. 8-9.

[31] https://www.thoughtco.com/the-battle-of-talas-195186 retrieved on 23 March 2016.
[32] Bai Shouyi (2003). pp. 235-236.
[33] Insight Guides (2017).
[34] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Aksu_ (717) retrieved on 11 June 2024.
[35] Bo Yang (2000). p. 547.
[36] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Talas retrieved on 11 June 2024.
[37] Inaba Minoru (2010). p.40.
[38] A. Acharya (2010). p.23.
[39] Joseph Mitsuo Kitagawa (2002). p. 283.
[40] Wan Lei (2017). p. 42. See also Wang Zhenping (2005). p. 133.
[41] Inaba Minoru (2010). p. 36.
[42]M. Rafiq Khan (1963). p.4.
[43] Badruddin Chini (1935). p.12. See also M. Rafiq Khan (1963). pp.4-5.
[44] Badruddin Chini (1935). p. 11.
[45] Thomas Walker Arnold (1913). p. 223.
[46] Ibid.
[47] Zizhi Tongjian Vol. 218. p. 6998. See also Inaba Minoru (2010). p. 39.
[48] Zizhi Tongjian Vol. 219. p. 7014.
[49] Hilda Ecsedy (1964). p.89.
[50] John W. Chaffee (2018).
[51] M. Rafiq Khan (1963). p.4.
[52] Ray Huang (1966). p.117. See also Morris Rossabi ed. (2014). p. 227. Also, on William J. Bernstein (2009). p. 86.
[53] Jacques Gernet (1996). p. 289.
[54]John S. Guy (1986). p. 7.
[55] Jacques Gernet (1996). p.289.
[56] Marshall Broomhall (1966). p. 15.
[57] Otto. Franke (1930). p. 411.
[58] Bai Shouyi (2002). p. 39. See also Jiang Chun (2001). pp. 30-33.
[59] Michael Flecker (2000). See also John S. Guy (August 2003). pp. 13-27.
[60] Meng Wei (2010). p.7.
[61] Ulrich Marzolph (2004). pp. 521–2.
[62] Badruddin Chini (1935). pp. 22-23.
[63] James Frankel (2021). pp. 43–44.
[64] Badruddin Chini (1935). pp. 23-24.
[65] Badruddin Chini (1935). pp. 24-25.
[66] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Song_dynasty retrieved on 12 June 2024.

[67]Hamada Hagras (2019). pp. 97–113.
[68] Raphael Israeli (2002). pp. 283-4.
[69] Hamada Hagras (2019). pp. 97–113.
[70] Raphael Israeli (2002). p. 284
[71] Maria Jaschok (October 11, 2013). p. 74.
[72] Aliya Ma Lynn (2007). pp. 41–42.
[73] Badruddin Chini (1935). p. 16.
[74] https://en.wikipedia.org/wiki/Ispah_rebellion retrieved on 10 April 2024.
[75] https://en.wikipedia.org/wiki/Pu_Shougeng retrieved on 26 May 2022.
[76] https://en.wikipedia.org/wiki/History_of_Islam_in_China retrieved on 11 June 2024.
[77] C.E. G. Bosworth (1995). p. 341.
[78] Thomas Walker Arnold (1913). p.226.
[79] Ibid. p. 228.
[80] Aliya Ma Lynn (2007). p. 41.
[81] Sun Xiaoli (1997). p. 454.
[82] https://en.wikipedia.org/wiki/Yeheidie%27erding retrieved on 26 May 2022.
[83] Stephen G. Haw (2006). p. 69.
[84] Nancy Shatzman Steinhardt (1981). p. 222.
[85] Michael Dillon (1999). p. 24.
[86] Tan Ta Sen (2009). p. 170.
[87] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_conquest_of_Yunnan retrieved on 13 July 2023.
[88] https://en.wikipedia.org/wiki/Dali_Kingdom retrieved on 11 June 2024.
[89] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_conquest_of_Yunnan retrieved on 13 July 2023.
[90]Zhang Tingyu (2011). Biography of Lan Yu. 244.
[91] Dun J. Li (1978). p. 276.
[92] https://en.wikipedia.org/wiki/Nine_familial_exterminations retrieved on 27 May 2022.
[93] https://en.wikipedia.org/wiki/Lan_Yu_(general) retrieved on 27 May 2022.
[94] https://en.wikipedia.org/wiki/Ispah_rebellion retrieved on 10 April 2024.
[95] John W. Chaffee (2018). Chaffee. p. 157.
[96] Angela Schottenhammer (2009). Vol. 6.p. 123
[97] Hans Kuhner (2001). 412.
[98] https://en.wikipedia.org/wiki/Lin_Nu retrieved on 14 July 2023.
[99] https://en.wikipedia.org/wiki/Li_Zhi_(philosopher) retrieved on 15 July 2023.
[100] https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Punishments retrieved on 11 June 2024.
[101] Angela Schottenhammer (2009). p.121.
[102] Badruddin Chini (1935). pp. 28-29.

[103] Ibid. pp. 95-97.
[104] Donald Daniel Leslie (1998). p. 15.
[105] Thomas Walker Arnold (1913). p. 248.
[106] https://en.wikipedia.org/wiki/Nasr_al-Din_(Yunnan) retrieved on 19 July 2024.
[107] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
[108] Jill S. Cowen (July–August 1985). pp. 30–35.
[109] Paul Knaplund (1961). p. 27.
[110] Ibid.
[111] Arienne M. Dwyer (2007). p. 6.
[112] Maria Jaschok (October 11, 2013). p. 77. See also Cheng Gek Nai (1997). p. 46.
[113] Paul K. Nietupski (2015). pp. 90, 91, 264, 267, 146.
[114] The Tibet Journal (1995). p. 101.
[115] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
[116] Arienne M. Dwyer (2007). p. 17.
[117] Ibid. p. 18.
[118] Michael Dillon (1999). p. 40.
[119] Chih-yu Shih; Zhiyu Shi (2002). p.133. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Hala_Bashi retrieved on 17 July 2023.
retrieved on 17 July 2023
[120] Shi Yunli (January 2003). p.26.
[121] Maria Jaschok (October 11, 2013). p. 77. See also Cheng Gek Nai (1997). p. 77.
[122] Tan Ta Sen (2009). p. 170.
[123] Mi Shoujiang (2004). p. 35.
[124] https://en.wikipedia.org/wiki/The_Hundred-word_Eulogy retrieved on 6 June 2022.
[125] Donald Daniel Leslie (1998). p. 14.
[126] Hamada Hagras (20 December 2019). p.129.
[127] E. Bretschneider (1888). p. 258.
[128] Hamada Hagras (2019). p.134.
[129] Dru C. Gladney (1996). p. 269.
[130] Julia Ching (1993). p.14.
[131] Kathleen Kuiper (2010). p. 176.
[132] Yuan Julian Chen (11 October 2021). pp. 422–456. see also, https://en.wikipedia.org/wiki/Zhengde_Emperor retrieved on 02 January 2023.
[133] Jay Levenson (1991). p. 360.
[134] Ibid. p. 477.

[135]https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
[136] Toh Hoong Teik (October 2000). p. 02.
[137] Susan Naquin (December 16, 2000). p. 213.
[138] B. J. Ter Haar (2006). p. 4.
[139] John W. Dardess (2012). p. 47.
[140] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_during_the_Ming_dynasty retrieved on 29 May 2022.
[141] Toh Hoong Teik (October 2000). pp. 8-9.
[142] Louise Levathes (1996). p. 62. See also Edward L. Dreyer (2007). pp. 18–19.
[143] Louise Levathes (1996). pp.73.74.
[144] Edward L. Dreyer (2007). p. 9 &167.
[145] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022.
[146] Philip Bowring (2019). p.24.
[147] Robert Finlay (2008). p. 331.
[148] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 23 July 2023. See also J. V. G. Mills (1970). p.02.
[149] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022.
[150] J. V. G. Mills (1970). p.18.
[151] Ibid. p 31.
[152] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022.
[153] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022. See also J. V. G. Mills (1970). p. 32. & Edward L. Dreyer (2007). p. 128.
[154] Edward L. Dreyer (2007). pp. 30-32.
[155] Ibid. p.51.
[156] Hok-lam Chan (1998). p. 233.
[157] Edward L. Dreyer (2007). p. 53-54 & 67.
[158] Ibid. p.54.
[159] Haraprasad Ray (1987a). p. 69 & 74–75.
[160] Edward L. Dreyer (2 Ibid. p.54.007). p.59.
[161] Ibid.p.63.
[162] https://en.wikipedia.org/wiki/Zamorin retrieved on 23 June 2022. See also, C.T. Subairath (2011). p. 1083.
[163] C.T. Subairath (2011). p. 1087.
[164] Tan Sen Tan (2005). p. 45.
[165] Hok-lam Chan (1998). p. 233.
[166] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 07 January 2024.

[167] J. V. G. Mills (1970). p.11-12.
[168] Edward L. Dreyer (2007). p. 66.
[169] J. J. L. Duyvendak (1939). p. 373.
[170] J. V. G. Mills (1970). pp. 11–12.
[171] J. J. L. Duyvendak (1939). pp. 375–376.
[172] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 30 June 2022.
[173] J. V. G. Mills (1970). pp. 12–13.
[174] J. J. L. Duyvendak (1939). p. 378.
[175] Edward L. Dreyer (2007). p.82.
[176] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages. retrieved on 30 June 2022. Edward L. Dreyer (2007). 82–83 & 87–89.
[177] Alexander Jost (2019). p.85.
[178] Hok-lam Chan (1998). p. 235.
[179] Sally K. Church (2004). p.21–25.
[180] Edward L. Dreyer (2007). p. 91.
[181] Sally K. Church (2004). p. 29.
[182] Edward L. Dreyer (2007). p. 94.
[183] Ibid. p. 144.
[184] Haraprasad Ray (1987 b). pp. 161–162.
[185] Edward L. Dreyer (2007). p. 99.
[186] J. J. L. Duyvendak (1939). p. 387.
[187] Edward L. Dreyer (2007). pp. 135 & 144.
[188] J. V. G. Mills (1970). p. 57.
[189] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 27 June 2022.
[190] Edward L. Dreyer (2007). p.151.
[191] Ibid. p. 155.
[192] J. V. G. Mills (1970). pp. 18–19.
[193] Ibid. pp. 35–36 & 41–42
[194] Edward L. Dreyer (2007). p.158–159
[195] Ibid.
[196] Ibid. pp.156 &159.
[197] Ibid. p. 160. See also J. V. G. Mills (1970). p. 17
[198] Edward L. Dreyer (2007). pp. 162–163.
[199] Ibid. p. 160. See also J. V. G. Mills (1970). p. 17.
[200] Edward L. Dreyer (2007). pp.162–163. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 14 June 2024.
[201] J. J. L. Duyvendak (1939). pp. 342–343.

[202] Joseph Needham (1971). p. 522.
[203] Ibid. p. 523.
[204] Ibid.
[205] J. V. G. Mills (1970). p. 6.
[206] Lin Bin (2005). p. 45.
[207] Badruddin Chini (1935). p. 16.
[208] John E. Wills (1998). p. 335.
[209] Jangwon Lee (2010). p.104.
[210] Howard J. Dooley (2012). p.54.
[211] Zhidong Hao (2011). p. 11.
[212] Kenneth Scott Latourette (1964). p. 235.
[213] Ibid. p. 313.
[214] Stephen G. Haw (2008). p. 134.
[215] James A. Millward (1998). p. 298.
[216] Jonathan N. Lipman (2011). p. 53.
[217] Arienne M. Dwyer (2007). p. 8.
[218] Frederic Wakeman (1986). p. 802.
[219] Rajeswary Ampalavanar (2013). p.32.
[220] Michael Dillon (1999). p. 45.
[221] Trudy Ring (1996). p. 306.
[222] Dun J. Li (1978). p. 276
[223] Chih-yu Shih (2002). p. 133.
[224] Tan Ta Sen (2009). p. 170.
[225] https://en.wikipedia.org/wiki/Shunzhi_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[226] Jonathan N. Lipman (2011). p. 55.
[227] https://en.wikipedia.org/wiki/Kangxi_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[228] http://www.iranicaonline.org/articles/ahmad-kasani retrieved on 18 July 2017.
[229] https://en.wikipedia.org/wiki/Afaq_Khoja retrieved on 19 July 2017.
[230] Dru C. Gladney (1999). p.115.
[231] Johan Elverskog (2010). pp. 244–245.
[232] Badruddin Chini (1935). pp. 31-33.
[233] Badruddin Chini (1935). pp. 33-35.
[234] Badruddin Chini (1935). pp. 35-36
[235] Jonathan N. Lipman (2011). Familiar strangers: a history of Muslims in Northwest China, Hong Kong University Press, pp. 86–88, ISBN 962-209-468-6.
[236] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Mingxin retrieved on 26 December 2024.

[237] https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 26 December 2024.
[238] Jonathan N. Lipman (2011). Familiar strangers: a history of Muslims in Northwest China, Hong Kong University Press, pp. 86–88, ISBN 962-209-468-6.
[239] Badruddin Chini (1935). p. 79.
[240] Dru C. Gladney (1996). pp. 48–50.
[241] Badruddin Chini (1935). p. 85.
[242] Badruddin Chini (1935). p. 86.
[243] https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 26 December 2024.
[244] Jonathan N. Lipman (2011). p. 109.
[245] Badruddin Chini (1935). p. 80.
[246] Dru C. Gladney (1996). pp. 48–50.
[247] Badruddin Chini (1935). pp. 81-82.
[248] https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 26 December 2024.
[249] Thomas Walker Arnold (1913). p.230.
[250] J. B. du Halde (1735). p.64. See also Thomas Walker Arnold (1913). p. 230-31.
[251] Thomas Walker Arnold (1913). p.231.
[252] Ibid. p.233.
[253] https://en.wikipedia.org/wiki/Revolt_of_the_Altishahr_Khojas retrieved on 19 July 2017.
[254] James A. Millward (1998). p. 124.
[255] http://www.chinaknowledge.de/History//Qing/qing-event-1765rebellioninushturpan.html retrieved on 20 November 2024.
[256] https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[257] https://en.wikipedia.org/wiki/Jiaqing_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[258] James A. Millward (1998). pp. 206–207. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[259] James A. Millward 1998, pp. 206–207. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Qianlong_Emperor retrieved on 20 November 2024.
[260] https://en.wikipedia.org/wiki/Aqsaqal retrieved on 11 June 2024.
[261] Christian Tyler (2003). p.68.
[262] John Biddulph (2004). p. 28.
[263] Christian Tyler (2003). p.72.

[264] Badruddin Chini (1935). pp.18-19.
[265] Ibid. pp. 18-19.
[266] Jingyuan Qian (2014). p. 5.
[267] Ibid. pp. 28-29.
[268] Ibid. p. 24.
[269] Marshall Broomhall (1966). p. 231.
[270] Jingyuan Qian (2014). p. 25.
[271] Li Dianrong (2009). p. 23.
[272] http://www.executedtoday.com/2011/12/26/1872-du-wenxiu-panthay-rebellion-leader/ retrieved on 14 July 2017.
[273] Ibid.
[274] David G. Atwill (2005). p.187.
[275] Ibid. p.183.
[276] George J. Scott (1900). p. 540.
[277] https://en.wikipedia.org/wiki/Panthay_Rebellion retrieved on 20 March 2025.
[278] http://self.gutenberg.org/articles/eng/Dungan_revolt_1862%E2%80%9377 retrieved on 17 July 2017.
[279] Ibid.
[280] Ibid.
[281] याद रहे कि सीसी चीनी शाही काल के दौरान इस्तेमाल किया जाने वाला नाओ की शकल का एक धातु का सिक्का था।
[282] Hodong Kim (February 25, 2004). p. 78.
[283] Ibid. p. 80.
[284] Demetrius Charles Boulger (1878). p.79.
[285] Ahmad Hasan Dani (2003). p.138.
[286] S. Frederick Starr (2011). p. 31.
[287] https://en.wikipedia.org/wiki/Muhammad_Khudayar_Khan retrieved on 7 January 2023.
[288] https://en.wikipedia.org/wiki/Nasruddin_Khan retrieved on 7 January 2023.
[289] Great Britain. Parliament. House of Commons (1871). p. 34.
[290] Demetrius Charles Boulger (1878). pp. 118 & 220.
[291] https://en.wikipedia.org/wiki/Yaqub_Beg retrieved on 18 July 2017.
[292] Eric Schluessel (2020). "Chinese Men Purchasing Musulman Brides". Land of Strangers: The Civilizing Project in Qing Central Asia. Columbia University Press. ISBN 978-0231552226.
[293] https://en.wikipedia.org/wiki/Dungan_Revolt_(1862–1877) retrieved on 09 January 2024.
[294] Jonathan N. Lipman (2011). pp.156-57. See also. https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves retrieved on 20 July 2017.

[295] http://www.360doc.com/content/10/0526/12/1256060_29592130.shtml retrieved on 11 June 2024. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves retrieved on 20 July 2017.

[296] Joseph W. Esherick (1987). p. 182.

[297] Robert Bickers (2007). p. 150. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves retrieved on 20 July 2017.

[298] Michael Dillon (1999). p. 72. https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves 21 July 2017.

[299] Evening Post (September 25, 1900). p. 4. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves retrieved on 20 July 2017.

[300] Arnold Henry Savage Landor (1901). p. 196. See also. https://en.wikipedia.org/wiki/Kansu_Braves retrieved on 20 July 2017.

[301] James Hastings (1916). p. 893.

[302] M. Th. Houtsma (1993). p. 850.

[303] Dru C. Gladney (2003). See also, https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_in_China retrieved on 08 June 2023.

[304] Andrew Forbes (1997, 2011). See also. https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_in_China retrieved on 08 June 2023.

[305] Badruddin Chini (1935). pp. 63-64.

[306] Matsumoto Masumi (2004).

[307] https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Muslims_in_the_Second_Sino-Japanese_War retrieved on 09 May 2023. See also, Dudoignon Stéphane (2006). pp. 135 & 336.

[308] Jonathan N. Lipman (2011). p. 200.

[309] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Biao_general retrieved on 24 July 2017.

[310] Ibid.

[311] Lin Hsiao-ting (2006). p. 453.

[312] https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Muslims_in_the_Second_Sino-Japanese_War 09 retrieved on 09 May 2023.

[313] Ibid.

[314] Patrick Fuliang Shan (2017). p. 46.

[315] https://en.wikipedia.org/wiki/New_36th_Division retrieved on 23 June 2024.

[316] Tokyo Nichi Nichi (December 13, 1937). https://en.wikipedia.org/wiki/Nanjing_Massacre retrieved on 26 July 2017.

[317] Wan Lei (February 2010). p.140.

[318] https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Muslims_in_the_Second_Sino-Japanese_War retrieved on 09 May 2023.

[319] Wan Lei (February 2010). p.140.

[320] Rodney Stich (2010). pp.10-11.

[321] Ibid. pp.10-11. Also on Suping Lu (2004). pp.118-19.

[322] https://en.wikipedia.org/wiki/Beiyang_government retrieved on 26 June 2024.
[323] https://en.wikipedia.org/wiki/Muslim_conflict_in_Gansu_(1927–1930) retrieved on 19 Jan 2025.
[324] https://en.wikipedia.org/wiki/Yan_Xishan retrieved on 18 Jan 2025.
[325] Jonathan N. Lipman (July 1984). p. 308.
[326] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Anliang retrieved on 14 Jan 2024.
[327] Lanny B. Fields (1978). p. 81.
[328] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Qi retrieved on 10 November 2022. See also, Jonathan N. Lipman (2011). p. 207.
[329] Jonathan N. Lipman (2011). p. 170.
[330] Raphael Israeli (2017). pp. 71-72.
[331] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Anliang retrieved on 10 November 2022.
[332] Jonathan N. Lipman (2011). p. 168.
[333] Joint Committee on Chinese Studies (U.S.) (1987). p. 20.
[334] Jonathan N. Lipman (2011). p. 169.
[335] Henry George Wandesforde (1969). p. 841.
[336] Jonathan N. Lipman (2011). p. 171.
[337] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Fuxiang retrieved on 11 November 2022.
[338] Gavan McCormack (1977). p. 54.
[339] Benjamin W. Fleisher (1922). p. 59.
[340] https://en.wikipedia.org/wiki/Zhili%E2%80%93Anhui_War retrieved on 13 September 2024.
[341] https://en.wikipedia.org/wiki/Zhili%E2%80%93Anhui_War retrieved on 12 November 2022.
[342] Min-ch'ien Tuk Zung Tyau (1922). p. 168.
[343] https://en.wikipedia.org/wiki/Zhili%E2%80%93Anhui_War retrieved on 13 November 2022.
[344] https://en.wikipedia.org/wiki/First_Zhili–Fengtian_War retrieved on 21 Jan 2023.
[345] Ibid.
[346] https://en.wikipedia.org/wiki/Second_Zhili–Fengtian_War retrieved on 6 February 2024.
[347] Ibid.
[348] Hans van de Ven (2003). p.103.
[349] https://en.wikipedia.org/wiki/Canton_Coup retrieved on 01 July 2024.
[350] https://en.wikipedia.org/wiki/Chiang_Kai-shek retrieved on 01 July 2024.
[351] https://en.wikipedia.org/wiki/Shanghai_massacre retrieved on 30 June 2024.
[352] Ibid.
[353] https://en.wikipedia.org/wiki/Long_March retrieved on 01 July 2024.
[354] Lee Feigon (2002). pp. 64–65.

[355] https://en.wikipedia.org/wiki/Second_United_Front retrieved on 01 July 2024.

[356] https://en.wikipedia.org/wiki/Proclamation_of_the_People%27s_Republic_of_China retrieved on 02 July 2024.

[357] Arthur Waldron (2003). p. 282.

[358] Upton Close (2022). p. 269.

[359] Fred Harris (2007). p. 53.

[360] Familiar The Moslem World (1941). Volume 31. Hartford Seminary Foundation. 1941. p. 184.

[361] Jonathan N. Lipman (2011). p. 175.

[362] Hung-mao Tien (1972). p. 185.

[363] Uradyn Erden Bulag (2002). p. 47.

[364] Jay Taylor (2009). p. 93.

[365] Sven Hedin (2002). p. 138.

[366] https://en.wikipedia.org/wiki/Central_Plains_War retrieved on 15 September 2024.

[367] Ibid.

[368] https://en.wikipedia.org/wiki/Chiang_Kai-shek retrieved on 13 Feb 2024.

[369] Jay Taylor (2009). p.86.

[370] Jonathan N. Lipman (2011). pp. 174-175.

[371] https://en.wikipedia.org/wiki/Central_Plains_War retrieved on 15 December 2022.

[372] Jonathan N. Lipman (2011). pp. 174-175.

[373] Peter Worthing (2016). p.133.

[374] Ibid. p.116.

[375] Ibid. p.132-135

[376] Ibid. p.136.

[377] Owen Lattimore (1972). p. 79.

[378] Jingzhong Niu (June 2007). p.14.

[379] Yufeng Mao (2011b). p.147.

[380] Stephane A. Dudoignon (2019). p. 67.

[381] Suad Joseph (2003). p. 127.

[382] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Fuxiang retrieved on 09 April 2024.

[383] Mary Clabaugh Wright (1957). p. 406.

[384] Dudoignon Stéphane (2006). p. 251.

[385] American Asiatic Association (1940). p. 660.

[386] Philip S. Jowett (2017). pp. 216-217.

[387] https://en.wikipedia.org/wiki/War_in_Ningxia_(1934) retrieved on 18 September 2022.

[388] Philip S. Jowett (2017). p. 217.

---

[389] Lin Hsiao-ting (2010). p.40.
[390] Philip S. Jowett (2017). pp. 217-218.
[391] Lin Hsiao-ting (2010). p. 40.
[392] Liu Xiaoyuan (2004). p. 131.
[393] China Magazine (1940). p. 18.
[394] Middlesboro Daily News (May 14, 1938).
[395] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Wuyuan retrieved on 25 November 2022.
[396] Anthony Best (2009). p. 181.
[397] Erik Mueggler (2011). p. 230.
[398] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Zhongying retrieved on 05 July 2024.
[399] Matthew Erie (2013). p. 67.
[400] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 334.
[401] Jonathan N. Lipman (2011). pp. 196–197.
[402] Michael Dillon (1999). p. 119.
[403] James A. Millward (2007). p. 193.
[404] W. Petro (01 April 1933). p. 218.
[405] Sven Hedin (1936). p. 38.
[406] Peter Fleming (1999). p. 262.
[407] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Zhongying retrieved on 15 December 2022.
[408] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 108.
[409] Sven Hedin (1936). pp. 223–224.
[410] Sven Hedin (1945). p. 78.
[411] Georg Vasel (1937). p. 143.
[412] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Zhongying retrieved on 16 December 2022.
[413] Sven Hedin (1936). p. 84.
[414] Sven Hedin (1940). p. 24.
[415] Frederick Starr (2004). p. 79.
[416] Vladimir (1956). pp. 62 & 63.
[417] Who's Who in China (2018). 1973. p. 184.
[418] Sven Hedin (2009). p. 308.
[419] Jun Jing (1998). p. 25.
[420] Inner Asia (2002). p. 204.
[421] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Haiyan retrieved on 18 December 2022.
[422] Jonathan N. Lipman (2011). pp. 182-183.
[423] Uradyn Erden Bulag (2002). p. 43.
[424] James A. Millward (2014). p. 30.
[425] Joseph Fletcher (1980). p. 43.

[426] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Qi retrieved on 01 January 2023.
[427] Paul Preston (2000). p. 37.
[428] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang retrieved on 06 July 2024.
[429] Werner Draguhn (12 October 2012). p. 37.
[430] Y. P. Met (1941). p.181.
[431] Dudoignon Stéphane (2006). p. 255.
[432] Robert L. Jarman (2001). p. 311.
[433] Melvyn C. Goldstein (1991). p. 321. Also on. Parshotam Mehra (2004). p. 84.
[434] Dean King (2010). p.32.
[435] Oriental Society of Australia (2000). p. 35.
[436] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang retrieved on 04 April 2024.
[437] Andreas Gruschke (2001). p. 78.
[438] Hisao Kimura (1990). p. 232.
[439] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang retrieved on 03 January 2023.
[440] Paul Preston (2000). p. 37.
[441] Time (Oct 3, 1949).
[442] Kenneth De Courcy (1948).
[443] Lillian Craig Harris (1993). p. 66.
[444] Mao Zedong (1987). p. 34.
[445] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Bufang_Mansion retrieved on 24 August 2017.
[446] Larry Clinton Thompson (2009). p. 7
[447] Paul A. Cohen (1998). pp. 19-20.
[448] Ibid.
[449] Lanxin Xiang (2003). p. 115.
[450] Victor Purcell (2010). p. 125.
[451] Joseph W. Esherick (1987). p.77.
[452] Ibid. p.123.
[453] Ibid. p.131.
[454] R. G. Tiedemann (2007). pp. 27–28.
[455] Sarah C.M. Paine (1996). pp. 162.
[456] David J. Dallin (2013). p.14.
[457] Marsha E. Ackermann (2008). pp. 87–88.
[458] Patrick Fuliang Shan (2003). p. 13.
[459] Larry Clinton Thompson (2009). p. 12.
[460] Ibid. p.42.
[461] Ibid.
[462] Jane E. Elliott (2002). p.126.
[463] H. Karpat Kemal (2001). p. 23.
[464] Robert R. Leonhard (2004). p.12.

[465] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Langfang retrieved on 05/02/2023.
[466] Robert B. Edgerton (1997). p. 72.
[467] http://www.dreadnoughtproject.org/tfs/index.php/Boxer_Rebellion_Despatches_(Royal_Navy) retrieved on 22 March 2025.
[468] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Langfang retrieved on 07 February 2023.
[469] Jonathan N. Lipman (2011). p. 207.
[470] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 44.
[471] Ibid. p.44.
[472] Alexander Mildred Cable (1944). p. 134.
[473] https://en.wikipedia.org/wiki/Kumul_Khanate retrieved on 22 April 2024.
[474] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 42.
[475] Joanne Smith Finley (2013). p. 17.
[476] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 48.
[477] Ibid. p. 241.
[478] Ibid. pp. 98 & 106.
[479] Ibid. p. 335.
[480] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 100.
[481] Michael E. Clarke (2011). pp. 30-31.
[482] https://en.wikipedia.org/wiki/Pavel_Pappengut retrieved on 12 May 2023.
[483] Allen S. Whiting (1958). pp. 13–14.
[484] Bruno De Cordier (2016). p. 59.
[485] F. Gilbert Chan (1983). p. 368.
[486] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 27.
[487] Ram Rahul (1990). p.110.
[488] Lin Hsiao-ting (2010). p.40.
[489] https://en.wikipedia.org/wiki/Liu_Wenlong retrieved on 17 May 2023.
[490] https://en.wikipedia.org/wiki/Kumul_Rebellion retrieved on 27 November 2022.
[491] David D. Wang (1999). p. 52.
[492] Frederick Starr (2004). p. 79.
[493] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 302.
[494] Georg Vasel (1937). p. 52.
[495] Lin Hsiao-ting (2010). pp.45-46.
[496] https://en.wikipedia.org/wiki/Sheng_Shicai retrieved on 17 May 2023.
[497] Mark Dickens (1990). p. 16.
[498] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 138.
[499] David Brophy (2016). p. 240.
[500] Ondřej Klimes (January 8, 2015). p.121.
[501] Stephane A. Dudoignon (2002). p. 138.

[502] David Brophy (2016). p. 244.
[503] Ibid. p. 262.
[504] Alastair Lamb (1991). p. 66.
[505] Ibid. p. 67.
[506] Tekin Tuncer (2019). p. 130
[507] Ibid.
[508] https://en.wikipedia.org/wiki/Sheng_Shicai retrieved on 17 May 2023
[509] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Yiwu retrieved on 06 June 2023.
[510] https://en.wikipedia.org/wiki/Sheng_Shicai retrieved on 23 April 2024.
[511] Bruno De Cordier (2016). p.61.
[512] Michael E. Clarke (2011). p. 33.
[513] https://en.wikipedia.org/wiki/Sheng_Shicai retrieved on 18 May 2023.
[514] Anwar Rahman (2005). p. 39.
[515] Allen S. Whiting (1958). pp. 282-283.
[516] Justin Matthew Jacobs (2011). p. 336.
[517] Ibid. p. 349.
[518] Martin Norins (1944). p.113.
[519] Justin Matthew Jacobs (2011). pp. 352–353.
[520] Dieter Heinzig (2015). p. 37.
[521] Owen Lattimore (1950). p.81
[522] Justin Matthew Jacobs (2011). p. 380
[523] Allen S. Whiting (1958). p.128.
[524] https://en.wikipedia.org/wiki/First_East_Turkestan_Republic retrieved on 05 April 2024.
[525] Touraj Atabaki (1998). p. 270.
[526] https://en.wikipedia.org/wiki/Young_Kashgar_Party retrieved on 12 May 2023.
[527] Kenneth Bourne (1992). p. 97.
[528] https://en.wikipedia.org/wiki/First_East_Turkestan_Republic retrieved on 25 April 2024.
[529] Ibid.
[530] Ibid.
[531] Joy R. Lee (2006). p.39.
[532] https://en.wikipedia.org/wiki/Kumul_Rebellion retrieved on 27 November 2022.
[533] https://en.wikipedia.org/wiki/First_East_Turkestan_Republic retrieved on 24 May 2023
[534] David D. Wang (1999). p. 52.

[535] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 89. See also. https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Aksu retrieved on 17 September 2017.
[536] https://en.wikipedia.org/wiki/First_East_Turkestan_Republic retrieved on 19 May 2023.
[537] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 87.
[538] https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Toksun retrieved on 12 May 2023.
[539] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 111.
[540] Ibid. p. 95. See also https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Sekes_Tash retrieved on 17 September 2017.
[541] The Montreal Gazette (October 11, 1933).
[542] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 140.
[543] The New York Times (March 17, 1934).
[544] Associated Press Cable (March 17, 1934).
[545] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 303.
[546] Ibid. p. 123.
[547] Peter Fleming (1999). p. 281.
[548] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 125 & 304.
[549] Ibid. p. 304.
[550] https://en.wikipedia.org/wiki/Second_East_Turkestan_Republic retrieved on 05 April 2024.
[551] David D. Wang (1993).
[552] American Academy of Political and Social Science (1951). p. 152.
[553] Mark Dickens (1990). p.24.
[554] https://en.wikipedia.org/wiki/Second_East_Turkestan_Republic retrieved on 27 May 2023.
[555] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 180
[556] Ibid. p.181. See also. https://en.wikipedia.org/wiki/Second_East_Turkestan_Republic retrieved on 01 October 2017.
[557] Eric Shipton (1997). p. 488.
[558] E. Ralph Perkins (1947). p. 576.
[559] Lin Hsiao-ting (2010). p.107.
[560] Ibid. p. 108.
[561] https://military-history.fandom.com/wiki/Battle_of_Baitag_Bogd retrieved on 29 May 2023.
[562] Ibid.
[563] Rasma Silde-Karklins (1975). p. 343. See also David Bonovia (1981). p. 32-34 & S. Enders Wimbush (1987). p. 6. Also, on Ghulamuddin Pahta (1986). p. 51.
[564] Anthony J. Howell (2009). p.37.

565 याद रहे कि कैडर किसी भी पार्टी का आजीवन सदस्य होता है और अपना सारा जीवन और धन पार्टी को समर्पित करता है।
566 Gardner Bovingdon (2010). p. 26.
567 Ibid. pp.141-42.
568 Frederick Starr (2004). p.13. See also Gardner Bovingdon (2010). p.138.
569 Gardner Bovingdon (2010). p.142.
570 Ildiko Beller-Hann (2016). p.37.
571 Wong John (2002). p.172. See also Leong H. Liew (2004). p.175.
572 https://en.wikipedia.org/wiki/Turghun_Almas retrieved on 16 November 2017.
573 Frederick Starr (2004). p.149.
574 Rongxing Guo (July 15, 2015). p. 27.
575 Shawn M. Patrick (01 May 2010). p. 32. See also Uighur Developments in the 1990s. www.globalsecurity.org. retrieved on 31 January 2013.
576 China Daily News. (October 25, 2001).
577 Amnesty International (January 2, 2007).
578 James A. Millward (2007). pp. 334.
579 Mahesh Ranjan Debata (2008). p.177.
580 Ahmed Rashid (14 January 2002).
581 Maureen Fan (January 8, 2007).
582 Austin Ramzy (2008).
583 Jonathan Watts (July 10, 2009).
584 Reuters (July 6, 2009).
585 Hu Yinan (October 12, 2009). China Daily.
586 David Barboza (October 11, 2009). The New York Times.
587 Bloomberg News (July 5, 2009).
588 Yan Hao (July 18, 2009).
589 Ann Riley (October 21, 2009).
590 Yu Le (January 26, 2010).
591 http://www.rfa.org/english/multimedia/timeline/UyghurUnrest.html retrieved on 18 November 2017.
592 New Long March 2 (2007).
593 https://en.wikipedia.org/wiki/Long_March retrieved on 15 September 2022.
594 https://en.wikipedia.org/wiki/Xunhua_Incident retrieved on 12 Feb 2025.
595 Ibid.
596 Ibid.
597 Roderick MacFarquhar (2006).
598 https://en.wikipedia.org/wiki/Cultural_Revolution retrieved on 31 May 2023.
599 Roderick MacFarquhar (2006).
600 https://en.wikipedia.org/wiki/Four_Olds retrieved on 27 March 2025. #

[601] https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Red_Categories, retrieved on 04 June 2017.
[602] https://en.wikipedia.org/wiki/Five_Black_Categories, retrieved on 04 June 2017.
[603] https://en.wikipedia.org/wiki/Struggle_session retrieved on 07 April 2024.
[604] https://en.wikipedia.org/wiki/Guangxi_Massacre retrieved on 31 May 2023.
[605] South China Morning Post (May 11, 2016).
[606] Tan Hecheng (2017).
[607] https://en.wikipedia.org/wiki/Cultural_Revolution retrieved on 31 May 2023.
[608] https://en.wikipedia.org/wiki/Inner_Mongolia_incident retrieved on 31 May 2023.
[609] Kerry Brown (1 July 2007). p.176.
[610] Guo Jian (July 23, 2015).
[611] https://en.wikipedia.org/wiki/Ruijin_Massacre retrieved on 02 June 2023.
[612] Joseph W. Esherick (2006). p. 42.
[613] https://en.wikipedia.org/wiki/Yangjiang_Massacr retrieved on 02 June 2023.
[614] https://en.wikipedia.org/wiki/Guangdong_Cultural_Revolution_Massacre retrieved on 02 June 2023.
[615] Frank Dikötter (June 06, 2017).
[616] https://en.wikipedia.org/wiki/Zhao_Jianmin_Spy_Case retrieved on 02 June 2023.
[617] Dorothy J. Solinger (1982). p 647.
[618] https://en.wikipedia.org/wiki/Shaoyang_County_Massacre retrieved on 02 June 2023.
[619] He Qinglian (2011).
[620] https://en.wikipedia.org/wiki/Shaoyang_County_Massacre retrieved on 02 June 2023.
[621] Andrew G. Walder (2015). pp. 280–81.
[622] Malcolm Moore (March 7, 2013).
[623] https://en.wikipedia.org/wiki/Shadian_incident retrieved on 17 September 2022.
[624] Dru C. Gladney (1996). p.61.
[625] Roderick MacFarquhar (2006). pp. 387–388.
[626] Ibid.
[627] Ibid.
[628] Dru C. Gladney (1996). p. 46.
[629] Raphael Israeli (2002). p.38.
[630] Khalid Zainab (4 January 2011).
[631] China Report (1984). p. 34.
[632] Paul Allatson (2008). p. 67.

633 Andrew D. W. Forbes (1986). p. 279.
634 Lin Hsiao-ting (2010). p. xxii.
635 Steen Ammentorp (2000–2009).
636 Warren W. Smith (1997). p. 443.
637 https://www.globaleast.org/wp-content/uploads/2020/02/Document_no._19_1982.pdf retrieved on 16 June 2024.
638 Ibid.
639 https://en.wikipedia.org/wiki/Hui_people retrieved on 28 July 2022.
640 https://en.wikipedia.org/wiki/Uyghurs retrieved on 27 March 2025. #
641 https://en.wikipedia.org/wiki/Basmachi_movement retrieved on 28 July 2022.
642 https://en.wikipedia.org/wiki/Kazakhs retrieved on 30 July 2022.
643 Linda Benson (1988). p. 195.
644 Michael Dillon (1999). p. 13.
645 Pamela Kyle Crossley (2002). p. 142.
646 https://en.wikipedia.org/wiki/Dongxiangs retrieved on 03 August 2022.
647 https://factsanddetails.com/china/cat5/4sub6/entry-4342.html retrieved on 09 August 2022.
648 Amier Saidula (2011). p. 31.
649 Zhao Erxun (1927).
650 Ildiko Beller-Hann (2016). p. 20.
651 https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Tajiks retrieved on 29 May 2023.
652 Ildiko Beller-Hann (2016). p. 20.
653 Michael Dillon (1999). p. 12.
654 https://en.wikipedia.org/wiki/Bonan_people retrieved on 09 August 2022.
655 Ondřej Klimes (January 8, 2015). pp. 80.
656 Hannah Beech (August 21, 2014).
657 https://en.wikipedia.org/wiki/Chinese_Islamic_cuisine retrieved on 10 August 2022.
658 Badruddin Chini (1935). p. 131.
659 Ibid. p. 134.
660 Ibid. p. 147.
661 Ibid. p. 155.
662 Ibid. p. 146.
663 https://journals.openedition.org/chinaperspectives/230 retrieved on 27 September 2022.
664 Kristian Petersen (2021).
665 Ibid.
666 Badruddin Chini (1935). pp. 103-104.

[667] David G. Atwill (2005). pp. 117–118.
[668] John King Fairbank (1978). p. 213.
[669] David G. Atwill (2005). pp. 125–126.
[670] Ibid. pp. 127–128.
[671] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Rulong_(Qing_general) retrieved on 23 December 2024
[672] David G. Atwill (2005). pp. 129–130.
[673] Ibid. p. 132.
[674] Ibid. p. 173.
[675] https://en.wikipedia.org/wiki/Yusuf_Ma_Dexin retrieved on 24 September 2024.
[676] https://www.topchinatravel.com/china-muslim/muslin-in-gansu.htm retrieved on 30 May 2023.
[677] Ibid.
[678] https://en.wikipedia.org/wiki/Ningxia retrieved on 30 May 2023.
[679] Badruddin Chini (1935). pp. 110-111.
[680] Ibid. pp. 110-111.
[681] Ibid. p. 112.
[682] Maria Jaschok (October 11, 2013). p. 130.
[683] Sha Min (March 3, 2016).
[684] https://en.wikipedia.org/wiki/Noor_Deen_Mi_Guangjiang, retrieved on 15 September 2022
[685] https://en.wikipedia.org/wiki/Jingtang_Jiaoyu retrieved on 09 June 2023.
[686] Maris Boyd Gillette (2000). p. 106.
[687] Yufeng Mao (2007). p. 126-127.
[688] Wlodzimierz Cieciura (April 28, 2015).
[689] Ibid.
[690] Zvi Ben-Dor Benite (2008). p. 3.
[691] Yufeng Mao (2011a). pp. 386–387.
[692] Ma Haiyun (2006). p. 57.
[693] Zhang Guanglin (2005). p.77.
[694] https://en.wikipedia.org/wiki/Qi_Jingyi retrieved on 02 October 2022.
[695] Dru C. Gladney (1996). p. 44.
[696] Dru C. Gladney (1987). pp. 48-49.
[697] Badruddin Chini (1935). pp. 78-79.
[698] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Laichi retrieved on 14 Jan 2025.
[699] Dru C. Gladney (1996). pp. 47-48.
[700] Ibid. p.15.
[701] Jonathan N. Lipman (2011). pp.65-67.
[702] Michael Dillon (1999). p. 102.

[703] Aliya Ma Lynn (2007). p. 27.
[704] Michael Dillon (1999). p. 142.
[705] Jonathan N. Lipman (2011). p. 188.
[706] https://en.wikipedia.org/wiki/Xidaotang retrieved on 08/10/2022.
[707] Jonathan N. Lipman (2011). p.199.
[708] Ibid.
[709] Hamada Hagras (2019). p.102.
[710] https://en.wikipedia.org/wiki/Islam_in_China retrieved on 08 June 2023.
[711] https://en.wikipedia.org/wiki/Su_fei-erh retrieved on 07 April 2024.
[712] Marshall Broomhall (1966). pp. 127.
[713] Thomas Walker Arnold (1913). p. 224.
[714] M. Th. Houtsma (1993). p. 847.
[715] Michael Dillon (1999). p. 23.
[716] https://en.wikipedia.org/wiki/Nasr_al-Din_(Yunnan) retrieved on 27 March 2025.
[717] Thomas Walker Arnold (1913). p.225.
[718] Edward L. Dreyer (2007). p. 47.
[719] https://en.wikipedia.org/wiki/Ming_treasure_voyages retrieved on 23 September 2022.
[720] John E. Young (2016). p. 37.
[721] Guangxi Wang (2012). p. 89.
[722] Xiaogao (July1998). p. 52.
[723] Thomas A. Green (2003). p. 24.
[724] https://en.wikipedia.org/wiki/Wang_Ziping retrieved on 08 June 2023.
[725] Brian Kennedy (2008). p. 298.
[726] Journal of Chinese Martial Studies (01.2009). p. 27.
[727] Dru C. Gladney (1996). p. 199.
[728] https://en.wikipedia.org/wiki/Wang_Ju-Rong retrieved on 16 June 2024.
[729] Mark Cheng (April 2002). p.116.
[730] https://www.wushuindia.com/duanwei.html retrieved on 12 October 2022.
[731] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Xianda retrieved on 25 October 2022
[732] Frederick Starr (2004). p. 77.
[733] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 123.
[734] Frederick Starr (2004). p. 79.
[735] Andrew D. W. Forbes (1986).
[736] Henry George Wandesforde (1969). p. 1076.
[737] https://en.wikipedia.org/wiki/Ma_Jiyuan retrieved on 16 June 2024.
[738] https://en.wikipedia.org/wiki/Su_Chin-shou retrieved on 16 June 2024.
[739] Andrew D. W. Forbes (1986). p. 89.
[740] Ibid. p. 310.
[741] https://en.wikipedia.org/wiki/Noor_Deen_Mi_Guangjiang retrieved on 15 September 2022